जीवाभि
गम
1

ए६०॥ ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमोनमः १ श्री शांतिनाथमानम्य सर्वजंतुहितप्रदं वक्ष्ये जीवाभिगमोऽर्थं तस्य वार्त्तिकं स्फुटं २ मदघुस बुधैर्नत्वा विनयाधिमलानिधंस्व शतमबोधाय सत्बुको लिखते मया २ नमस्कार हो श्री ऋषभस्वामी नै महावीर पर्यंत तनइं चउवीसे तीर्थंकरनै नमस्कार करीनैं ग्रंथनैं पारं लीपहैलो सूत्र कहै छै इहां प्रवचन तथाइं हां संसार थकु

॥ए६०॥ श्री सर्वज्ञाय नमः ॥ णमो उसभादियाणं चउवीसाए तित्थगराणं इह खलु जिणमयं

निश्चे अरिहंतजिनमत तेजोलैपुकारूपं सकलजिन जिनप्रणीत समस्त वस्तु सामान्य विशेष स्वरूप तीर्थंकर हीतजिनप्ररूपित सांसलनार मतरूप सास्त्रादिक अनुलोम अनुकूल संख्या नइं समकित प्रापति हो जिनाख्या तं जिनतीर्थंकर आचार देखाडो जिनै प्रणीत नाम तत्र अर्हं तइ:

जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीतं जिणपरूवियं जिणक्खायं जिणाणुचिन्नं जिण

आचार सीषव्या जिणै अर्थ तप जिनप्रसस्तकारी एहवा जिनमतना तेअर्थ साचा सद्दहं तेअर्थनी षरीपत्ती तेजिनमतनात्र थका देसी देखाड्यो सीषव्योनीपजायो अनुक्रम करी हेताकरी तेआलंबक रथैसि फासावता थिव

पन्नत्तं जिणदेसियं जिणपसत्थं अणुवीइ य तं सद्दहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा थेरा भ

रसगवंतबा जीवनाऽर्थ लेदअजी एहवो जीवाभिगमनामा अध्य सेत्रा पूमागधदेस प्रसिध एह वुंसेवकप्रते मगवंतकहै है त्रि २२रथ्यस्रुरू वमा ४ लेदतेहना यनकहीसइं तो जीवाभिगमते किमएह प्रतेजीव अजीव नुआगमए

॥संदेहनो बेहनो॥

गवंतो जीवाजीवाभिगमं नामज्झयणं पन्नविंसु से किं तं जीवाजीवाभिगमे जीवाजीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते

॥जाणवुं ते हना भेद कहो सिष्य केहनु॥

तेकेहा जीवाभिगम जीवनुं जाणवुं अजीवाभिगमते अजीवनुं जाणवुं तेजीवाजीवाभिगम बिं भेद कह्या हविं अजीवाभिगमते हना केतला भेद: गोत म

तं जहा जीवाभिगमे य अजीवाभिगमे य से तं जीवाजीवाभिगमे से किं तं अजीवाभिगमे गौ० अ

अजीवाभिगमना बइ भेद कह्या छै: तेकेहा एक रूपी अजीवाभिगम बीजो अरूपी अजीवाभिगम तेअरूपी के रूपबइं जेहनुं तेरूपी रूपनथी हीइं

जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते तं जहा रूवि अजीवाभिगमे य अरूवि अजीवाभिगमे य से किं तं अरूवि 1

हविं अरूपी अजीवाभिगम गोतम अरूपी अजीवाभिगमना दस भेद कह्या तेकेहा तेकहै छै धर्मास्तिकाय खंधादि त्रणि ३ भेद करतां नवदस भो काल एवं दस गतेहना केतला भेद छै छै तेदकल्याइं पन्नवणारी परें कहैवा ते तो दस दस भेद नाम छै ध

॥रूपग्रहण गंधरसादि गुण पलस्पर्शना ॥ छिति रूपण तेसंअसंत नात के अनादि तान रूपप रमाणवो लि माक्षरवक्य रसादी वरमा णवचन्नादि रसपरमाण वर्णरसादि गंधवरमाण यःवाना सीतादिस्प र्शप रमाण वःपरजाय॥

यजीवाभिगमे अरूवि अजीवाभिगमे दसविहे पन्नत्ते तं धम्मत्थिकाए एवं जहा पन्नवणाए जाव से तं अरूवि अजी

र्मास्तिकाय प्रथ तेकिं महिलगवनुं रूपी अजीवा भिगमना केहवा अर्थ तेरूपी अजीवाभिगमना च्यार भेद कह्या तिर्थ करे तेकहै छै खंधते समग्र कहै छै खंधप्रदेस तेविभा षधदेस को इं देसभाग॥ गइप्रदेश इति ३ नु

वाभिगमे से किं तं रूवि अजीवाभिगमे रूवि अजीवाभिगमे चउव्विहे पन्नत्ते तं जहा खंधा खंधदेसा खंधपएसा

॥खंधा:४ मा दे धर्मास्तिका यसोपदान ध र्मास्तिकाय प्र तिपञ्चसूत्रा श्र४ धर्मास्ति कायस्य क्रिया रपि लानयोश धारं तु माका समतीनेव ॥ ३२

सूक्ष्मते परमाणु पुद्गल अर्थ परमाणुते एकधर्म पुद्गलधर्मास्तिकायवं संखेपिं पांच भेद तीर्थंकरे कह्याते केहा वर्ण संस्थान आकारे विणतिनि बंधनकं रतांन सर्व एवंएव विधि परमाणुपुद्गलः तेहना: परणामिक सार्वपरणाम भेदइं गंधरस फास: वर्णव्याख्याः

परमाणुपोग्गला ते समासओ पंचविहा पन्नत्ता तं जहा वण्णपरिणया गंधरसफास संठाणपरिणया ए

हुं मए जिम पन्नवणाइं साख्याक सेतंरूवि तेरूपी अजीवाभि गमना भेद कह्या एतलइं रूपीअरूपी अजीवा भिगम कह्या तेकहो गुरु कहै हे तेजीवाभिगमना बइ भेद वीतरागइं कह्या ते कहै छै: सेके हा

वं जहा पन्नवणाए से तं रूवि अजीवाभिगमे से तं अजीवाभिगमे जीवाभिगमे दुविहे पन्नत्ते तं जहा

एक संसार प्रतिबंधहलानइ संसारीजी बीजो संसार थी अलगा असंसारी प्रतेसमापन्न वाभिगमकहीइं एप्रथम: वो हताएतले सीध असंसारी समापन्न जीवा हवै ते असंसार समापनसिद्धा अनंसा रसमापन्न जीवाभिगमना बिभेद

संसारसमावन्नजीवाभिगमे य असंसारसमावन्नजीवाभिगमे य से किं तं असंसारसमावन्नजीवा

कह्याते केहा तेकहइ छै: एकंतरावीना सिद्धाते अ नंतरसिद्ध संसार समयना जीवाभिगमक हीइं एपहिलो भेद बीजो परंपरसिद्ध परंपरासिद्धा ते परमसिद्धि असंसा रसमा

भिगमे दुविहे पन्नत्ते तं जहा अणंतरसिद्ध असंसारसमावन्नजीवाभिगमे य परंपरसिद्ध असंसा

॥ हवै ते जीवाभिगम ते किमछै ॥

॥से किं तं जीवाभिगमे ॥ तेहूं॥

वर्णन जीवाभिगम कहीइं | इहवइं अनंतरसिद्ध संसारसमापन्न जीवाभिगम नाम वर्णन कह्या | भणवेतइं कह्या | ते केहवा कहइ छइं

जीवाभि १

रसमावण्णजीवाभिगमे य से किंतं अणंतरसिद्धा संसारसमावण्णजीवाभिगमे २ पन्नरसविहे पण्णत्ते

तीर्थसिद्ध १ अतीर्थसिद्ध स्त्री पुरुष नपुंसक | एतलइं अणंतरसि | इहवइं परंपरसिद्ध | असंसारसमापन्न जीवा | सिद्ध एतले दर्शन घणा पर्व जीव जाणवा | द्वार कह्या

तंजहा तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा से तं अणंतरसिद्धा से किंतं परंपरसिद्धा संसारसमावण्णगा

सिद्ध मनाइं अनेक भेदे कह्या | तंजहा कहै तो | ते केहवा ते कहइ छइं | एक समय आसी धा | बीजा समयना सीधा | जालगइं अणंतसमयसि द्धा ते ह जाणवा

जीवाभिगमे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा पढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा जाव अणंतसमयसिद्धा

एह्वी जो लेइ परंपरसि द्धनो कह्यो | एतलइं परंपरासिद्ध असंसार समापन्न नो भेद कह्या | एतलइं भेदइं असंसारसमापन्नना भिं भेद कह्या श्री वीतरागइं | हवइ त्रिविध पूछइ कहइ छइं संसारसमापन्न जी

से तं परंपरसिद्धा संसारसमावण्णजीवाभिगमे से तं असंसारसमावण्ण जीवाभिगमे से किंतं सं-

वाभिगम ते किम भइं ते हवा कहोगुरु कहइं | हेवि संसारसमापन्न जीव कहइं इमानुं एह वी | नव प्रतिपत्ति एवि माहिं होति कहइ तो कहीइं छइं सविस्तरपणइं करीनइं कहीइं छइं | ते जहा कहइं ता

सारसमावण्णजीवाभिगमे संसारसमावण्णए सु णं जीवेसु इमाओ णव पडिवत्तीओ एवमाहिज्जंति

ते किम नव प्रतिपत्ति एक आचार्य इम कहइ छइं | बिभेदे संसारसमापन्न जीवा कह्या छइं | एक आचार्य इम कहइ छइं | त्रिभेदे संसारसमापन्न-

तंजहा एगे एवमाहंसु दुविहा संसारसमावण्णजीवा पण्णत्ता एगे एवमाहंसु तिविहा संसारसा- १

जीव कह्या छइं | एक आचार्य इम कहै छइं | च्यार भेदे संसारसमापन्नजीव कह्या छइं | एक आचार्य इम कहै छइं

मावण्णजीवा पण्णत्ते एगे एवमाहंसु चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता एगे एवमाहंसु पंच

पांच भेदे संसारसमापन्न जीवा कह्या छइं | अतिरागना वाम इं ४ बीर | एह बेचार पाडे करी तिहां जगे कहीइं | जिहांलगइं दस भेदे संसारसमापन्न जीव पण्णत्ता कहइ तो कह्या छइं

विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता एतेणं अभिलावेणं जाव दसविहा संसारसमावण्णगा

तिहां जे ते के तला एक आचार जइम कहै छै | बे भेदे संसारसमापन्न जीव कह्या छइं | ते किम बे भेदे ते कहै छै इम कहइ | ते मेज छइ

जीवा पण्णत्ता तत्थ जे ते एवमाहंसु दुविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु तंजहा

एक त्रस त्रास ते त्रस थिर ते थावर ना के तला भेद पूछइ कहइ | पृथ्वीकाय निर्मल रूपणा १ पृथ्वी निर्मल रूपणा हइ ते थावर कहइ वा | भेद कह्या छइं | तंजहा कं ते केहा | प्रति जास यं स शरीरं येषां ते पृथ्वी काया

तसा चेव थावरा चेव से किंतं थावरा २ तिविहा पण्णत्ते तंजहा पुढविकाइया आउक्काइया व

अपकाया जंवाला प्रति एव काय शरीरं येषां ते अपकाया वनस्पतिका | इह वे ते त्रणि थावर कह्या ते हमांहि प्रथम थावर पृ थे आदी इ जातासं | य आरे | ते देव वनस्पति तादि रूपा प्रति तस एव काय शरीर येषां ते वनस्पतो | काया स | थ्वी काय ते हना बि भेद कह्या ते कहै छै सु हम नाम कर्म | वादरनाम कर्म

णस्सइकाइया से किंतं पुढविकाइया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा सुहुमपुढविकाइया य बाय

एह्वी जो लेइ एह वि बिभेद मांडुय | ते केहा ते कहइ छइं | एक पर्याप्ता बीजा एक अ | पर्या | स्ता

रपुढविकाइया य से किंतं सुहुमपुढविकाइया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगा य अपज्ज

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

जीवाभिगम ३

एतासि णं संगहणीगाहा सरीरोगाहणसंघयणं संठाणं कसाय तह य सन्नाओ लेसिंदियसमुग्घाए

सन्नीवेए य पज्जत्ती दिट्ठी दंसण णाणे जोगुवओगे तहा किमाहारे उववाय ठिई समुग्घाए चयणगई

रागई वा २ तेसि णं भंते जीवाणं कति सरीरया पण्णत्ता गो तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा उरालिए ते

यए कम्मए १ तेसि णं भंते जीवाणं केमहालीया सरीरोगाहणा पण्णत्ता गोयमा जहण्णेणं अंगुलअसं

खेज्जतिभागं उक्कोसेण वि अंगुलासंखेज्जइभागं २ तेसि णं भंते जीवाणं सरीरा किंसंघयणा

पण्णत्ता गो छेवट्ठसंघयणा पण्णत्ता ३ तेसि णं भंते जीवाणं सरीरा किंसंठिया पण्णत्ता गोयमा ३

मसूरचंदसंठिया पण्णत्ता ४ तेसि णं भंते जीवाणं कति कसाया पण्णत्ता गो चत्तारि कसाया पण्णत्ता

तं कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोहकसाए ५ तेसि णं भंते जीवाणं कति सण्णाओ पण्ण

त्ताओ गो चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा ६ तेसि णं भंते जीवा

णं कति लेसाओ पण्णत्ताओ गोयमा तओ लेसाओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेसा नीललेसा का

उलेसा ७ तेसि णं भंते जीवाणं कति इंदियाइं पण्णत्ताइं गोयमा एगे फासिंदिए पण्णत्ते ८

तेसि णं भंते जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता गो तओ समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेदणासमुग्घा

कषायसमुद्घात २ | मरणांतसमुद्घात ३ | ९ | तेपृथ्वीकायनाजीवसंज्ञावंत संज्ञी कहीइं संज्ञा कहइ असंज्ञि कहीइं ते आवंतक कहइ | हे गौतम पृथ्वी

ए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए ९ तेणंभंतेजीवाणं किं सन्नी असन्नी गोयमा नोस

न्नहीअसं | तेभगवन पृथ्वीकायनाजीवसुं केपुरुषवेदीक केनपुंसकवेदी | हे गौतम | स्त्रीवेदनही | ज्ञीकहीइं १० | स्त्रीवेदीकस्या | स्या: | दीकस्या | म

न्नीअसन्नी १० तेणंभंतेजीवाकिंइत्थिवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया गो णो इत्थिवेया णो

पुरुषवेदी नही | नपुंसगवेदी होइं | ११ | तेभगवनपृथ्वीकायनाजीवनैकेतलीपर्याप्ति पन्नत्तानेकहइंतांकहीइं आवंतक कहे | हे गौतम: | च्यारपर्याप्ति

पुरिसवेयया णपुंसगवेया ११ तेणंभंतेजीवाणंकइपज्जत्तीओपन्नत्ताओ गोयमा चत्तारिपज्ज

वीतरागेकही | तं जहा तेकि म: | आहारपर्याप्ति प्रथम १ | सरीरपर्याप्ति २ | इंद्रीपर्याप्तित्रीजी | सासोसासपर्याप्ति चोथी जाणवी ४

त्तीओपन्नत्ताओ तंजहा आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणपाणपज्ज

१२ | तेपृथ्वीकायनाजीवनैकेतलीअपर्याप्तिपन्नत्तानेकहइंतांकहीइं ते आवंतक कहइं | हे गौतम: | च्यारअपर्याप्ति कहीइं ते जहा कहइं तां

त्ती १२ तेसिणंभंतेजीवाणंकतिअपज्जत्ताओपन्नत्ताओ सेबाहागो चत्तारिअपज्जत्तीओपन्न

तेकेही तेकहे हइं | आहारअपर्याप्ति जाव आणपाणुअपर्याप्ति होइं ते च्यार कहीइं | १३ | तेपृथ्वीकायनाजीवनइं किं समकितवंत होइं | किं मिथ्यादृष्टि होइं

त्ताओ तंजहा आहारअपज्जत्ती जाव आणपाणुअपज्जत्ती १३ तेणंभंतेजीवाकिंसम्मदिट्ठी मिच्छादि

किं समकितमिथ्यादृष्टी होइं | हे गौतम: | सम्यग्दृष्टी नही | मिश्रदृष्टि पणि नही केवलमिथ्यादृष्टि होइं | १४ | तेभगवनपृथ्वीकायनाजीवनैं सुं चक्षुदर्शनीक

ट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी गोयमा णोसम्मदिट्ठी णोसम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छादिट्ठी १४ तेणंभंतेजीवाकिंचक्खुदं

हइवा १ | केअचक्षुदर्शनी कहइवा २ | केअवधिदर्शनी कहेवा ३ | केकेवलदर्शनी कहइवा ४ | हे गौतम | चक्षुदर्शनी नो हइं | केवलअचक्षुदर्शनी होइं | अवधिदर्शनी पणि नो हइं

सणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी गोयमा नोचक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नोओहिदंसणी

केवलदर्शनी पणि नो हइं | १५ | तेभगवनपृथ्वीकायनाजीवसुं ज्ञानी होइं सुं अज्ञानी होइं ते आवंतक कहे सांभलि | हे गौतम: | ज्ञानी नही | केवलअज्ञानी होइं | वलीनिश्चैकरी बे अज्ञानी होइं

नोकेवलदंसणी १५ तेणंभंतेजीवाकिंनाणीअन्नाणी गोयमा नोनाणी अन्नाणी नियमा दुअन्ना-

तेकेहातेक हइं बोइं | मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी | १६ | तेभगवनपृथ्वीकाय नाजीवसुं मनयोगी कहेवा | केवचनयोगी कहेवा | केकाययोगी कहेवा | हे गौतम | मनयोगी नो हइं

णी तंजहा मतिअन्नाणी १६ तेणंभंतेजीवाकिंमणजोगी वयजोगी कायजोगी गोयमा नोमणजो

वचनयोगी नो हइं | केवलकाययोगी होइं | १७ | तेभगवनपृथ्वीकायनाजीवनैकिंसाकारोपयोगी होइं किंअनाकारोपयोगी होइं | हे गौतम | साकारोपयोगी होइं

गी नोवयजोगी कायजोगी १७ तेणंभंतेजीवाकिंसागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता गो सागारोवउत्त

मतिज्ञान १ श्रुतअज्ञान | अणाकारपयोगवंत कुं इं अचक्षुदर्शनरूप: | तेणं भगवान कारे सगवनपृथ्वीकायनाजीवसुं आहार आहरइवाई | हे गौतम | द्रव्यथकी अनंतप्रदेसीद्रव्य निश्चै होइं पणि संख्यात असंख्यात प्रदेसी

वि अणागारोवउत्तावि तेणंभंतेजीवाकिंमाहारंआहारेति गोयमा दव्वतो अणंतपदेसियाइं

ठीइयाइं बेत्रय असंख्यातप्रदेशावगाढ कालथकी अनेरा ज(?)घन्य मध्यम उत्कृष्ट भावथकी वर्ण
हरेनही की पुद्गल आहरइं स्थितिना समयनी स्थितिना पुद्गल आहारे वंत गंधवंत

जीवाभिगम
५

ट्ठियाइं खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं कालओ अन्नयरसमयट्ठितीयाइं भावओ वण्णवंताइं गंधवंताइं
रसवंत फरसवंत आ जे भावथकी वरणवंत पुद्गल लइं एक वरणना पुद्गल सघली आहरे किं बिवर
न हरइं आहरइं तेसूं तिक हेतो आहरे णना पु

रसवंताइं फासवंताइं जाइं भावओ वण्णवंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति दुवण्णाइं
द्गलनइं आ त्रिणि वर्णना आ च्यार वर्णना आहर पंच वर्णना पुद्गलने हे गोयम थानकनी मार्गणाइं सा
हरइं कइं नइं हरइं इं कइं आहरइं म मान्य चिंतवणाइं पडुच

आहारेंति तिवण्णाइं आहारेंति चउवण्णाइं आहारेंति पंचवण्णाइं आहारेंति गो० ठाणमग्गणं पडुच्च एग
जीवनइं एकवर्णना पुद्गल आ त्रिणि वर्ण च्यार वर्ण पंच वर्ण विधानमार्गणा विशेष चिंत स्याम वर्णना पुद्गल
हरे बेवर्ण आहरइं आहरइं आहरइं आहरइं वणा आश्रीनइं नइं आहारइं

वण्णाइं दुवण्णाइं तिवण्णाइं चउवण्णाइं पंचवण्णाइं आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च कालाइं पि आ
श्याम नीला ना किं लाल पीत स्वेत वर्ण पुद्गल जे वरण थकी काल पुद्गलने आहरइं तेसूं एक गुण काला वरण
लनइं पिण आहरइं नइं आहरइं

हारेंति जाव सुक्किलाइं पि आहारेंति जाइं वण्णओ कालाइं पि आहारेंति ताइं किं एगगुणकालाइं पि आ
यावत श्वेत अनंतगुण काला वर्णनइं आह गोयमा एकगुण काला पुद्गलनइं आ जे काला अनंतगुण
रइं वलि ते फरस कहइं हरइं काला पुद्

हारेंति जाव अणंतगुणकालाइं पि आहारेंति गोयमा एगगुणकालाइं पि आहारेंति जाव अणंतगुण ५

गलनइं आहरे तिहां एम अनंत गुण किं श्वेत आहरे भावथकी जे गंधवंत तेसूं सगध न एक गंधना पुद्गलनइं
लगइं कहीइं एम पांचे नै कहइं बु आहरइं आहरइं कइं

कालाइं पि आहारेंति एवं जाव सुक्किलाइं भावओ गंधमंताइं आहारेंति ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति दु
बइं गंधना पुद्गलने गोयमा थानक मार्गणा आश्री एक गंधनइं बे गंधना पुद्गलनै आ विधानमार्गणा विशेष चि
आहरइं ॥ नै सामान्य चिंताइं आहारइं हरइं ता आश्रीनइं

गंधाइं आहारेंति गोयमा ठाणमग्गणं पडुच्च एगगंधाइं पि दुगंधाइं पि आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च
सुगंधना पुद्गलनै आ दुर्गंधना पुद्गलनइं पिण आ जे गंध थकी सुगंध नइं आहरइं तेसूं सगध न
हरइं हरइं

सुब्भिगंधाइं पि आहारेंति दुब्भिगंधाइं पि आहारेंति जाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं आहारेंति ताइं किं एगसुब्भि
एकगुण नास गंध पुद्गल कइं जे लगें अनंतगुण सो गंध पुद्गलनइं आहा हे गोयम एकगुण नास गंध पुद्गलनइं आहरइं
नइं आहरइं रेति कहे तो आहरे म

गंधाइं आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति गो० एगगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति
जे लगइं अनंतगुण सुगंध पुद्गलनै एम दुर्गंधना पुद्गल पिण कहेवा तिम रसना पुद्गल वर्ण ज भावथकी फरस
आहरे णना पुद्गलनी परइं कहइवा जावत वंत पुद्गलनइं

जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति एवं दुब्भिगंधाइं पि रसा जहा वण्णा जाइं भावओ फासवंताइं
तेसूं सगध न एक फरसना पुद्गल जावत आठ फरसना पुद्गलनइं हे गोयम स्थानक मार्गणा आश्री
आहरइं नइं आहरइं आहरइं मः नइं सामान्य चिंताइं

ताइं आहारेंति ताइं किं एगफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं आहारेंति गोयमा ठाणमग्गणं पडु

जीवाभिग ६

एककरसनइं आहरइं नहीवि परीतपणावत्ती | बइंफरसनै आहरइं नही विपरीतवत्ती | त्रणिफरसनइं आहरैनही विपरीतवत्ती | च्यारफरसनइं आहरइं नही संयोगवत्ती

वनो एगफासाइं आहारेंति नो दोफासाइं आहारेंति नो तिफासाइं आहारेंति चउफासाइं आहारेंति

पांचफरसनाउफलनें आहरइं | ठाणांगें आचफरसनाउफलनइं आहरइं तिहांलगें कहेंउं | विधानमार्गणा आश्री नइं विशेषचिंताइं | कर्कशादुफलनि आहरइं

पंचफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं पि आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइं पि आहारेंति जाव

जिहांलगें लुखाफरसउफल इफरस वको नइं आहरइं | कर्कशाउफलनइं आहरइं | तेसुं एकगुणकर्कशाउफलनइं आहरइं

लुक्खाइं पि आहारेंति जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति [illegible] ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आ

जिहांलगइं अनंतगुणकर्कशानाउफलनें आहरइं हेगोतम एकगुणकर्कशनाउफलनें आहरइं इहांलगिंवली

हारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति गोयमा एगगुणकक्खडाइं पि आहारेंति जाव अणंतगु

अनंतगुणकर्कशनाउफल नइं आहरइं | इमजांलगें लुखोतिहांलगें करसजाणवो | तोतेजीवनसुं आत्मप्रदेश नइं फरस्या आहरइं | कें आत्मप्रदेशनें अणफरस्याउफलनें आहरें आत्मप्रदेशनें अल्प…

णकक्खडाइं पि आहारेंति एवं जाव लुक्खा नेयव्वा ताइं भंते किं पुट्ठाइं आहारेंति किं अपुट्ठाइं आहारेंति गोयमा पु

हेगोतम फरस्याउफलनें आहरइं | पणिअणफरस्याउफलनइं आहरइं नही | हेगोतम जीवना आत्मप्रदेश फरस्या आहरइं | तेसुंजीवनइं अवगाढ आत्मप्रदेशमांहिं एकक्षेत्रीवसा पुद्गलनें आहरैं

ट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति जाइं भंते पुट्ठाइं आहारेंति ताइं भंते किं ओगाढाइं आहारेंति अणोगा

जीवनसुं पोताना प्रदेशनें अवगाहतेहनें आहरइं

प्रदेशफरस्या आहरइं

६

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

केएकक्षेत्रे रह्या तेहनें आहरै

केअनोगाढइं | हेगो आत्मप्रदेशमांहें एकक्षेत्र… नइं | तमः बाहिरिआहरइं न | आत्मप्रदेशमांहें एकक्षेत्र बाहिरि नइं आहरइं नही | तेजीवन तेसुं | अंतरारहित एकक्षेत्रे रह्या नइं आहरइं

ढाइं आहारेंति गोयमा ओगाढाइं आहारेंति नो अणोगाढाइं आहारेंति ताइं भंते किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति

कइं परंपरावगाढ अनुक्रमे | हेगोतम अनंतरावगाढ एकक्षेत्रमांहिं रह्यानइं आहरइं | पणि परंपरावगाढ अनुक्रमि आहरइं नही | तेजीवनसुं सूक्ष्मनें आहरइं

परंपरोगाढाइं आहारेंति गोयमा अणंतरोगाढाइं आहारेंति नो परंपरोगाढाइं आहारेंति ताइं भंते किं अणूइं

कइं बादरनि आहरइं | हेगोतम सूक्ष्मनइं आहरइं | बादरनें पणि आहरइं | तेजीवनसुं ऊंचा थकानाउफलनइं आहरइं

आहारेंति बायराइं आहारेंति गोयमा अणूइं पि आहारेंति बायराइं आहारेंति ताइं भंते किं उड्ढं आहारेंति

कइं हेठानाउफलनें आहरैकइं | हेगोतम ऊंचाउफलनइं आहरइं | हेठानें आहरइं | तिर्छानें पणि आहरइं | तेजीवनसुं पहिलो आदि … आहरइं तथा

अहे तिरियं च आहारेंति गोयमा उड्ढं पि आहारेंति अहे वि तिरियं पि आहारेंति ताइं भंते किं आदिं पि आ

पहिला … आहरइं | केमध्यप्रदेशनें आहरइं | कइं पर्यवसानि छेहला पुद्गल आहरइं | हेगोतम पहिला समयनां … आहरइं | मध्यनानें आहरैं | छेहलानें आहरैं

हारेंति मज्झे वि आहारेंति पज्जवसाणे आहारेंति गोयमा आदिं पि आहारेंति मज्झे वि आहारेंति पज्जवसाणे वि

… तेजीवन … आहरइं | अस्वोचित … | हेगोतम स्वोचित … आहरइं | पणि अस्वोचित आहरइं नही

आहारेंति ताइं भंते किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति गोयमा सविसए आहारेंति नो अविसए आहा

जीवाभिगा
९

ते भगवन ते पुद्गल अनुपूर्वीइं आहरइं अथवा के अनुपूर्वि विना ते तिये गम अथवा तीये अनुक्रम आहरइं हे गौतम अनुपूर्वीइं आहरइं विण अनुपूर्वी विना

वेज्ज ताइं भंते किं अणुपुव्विं आहारेति अणाणुपुव्विं आहारेति गो० अणुपुव्विं आहारेति नो अणाणु

आहरइं नहीं — ते भगवन पृथ्वीकायना जीव नइं केटली दिसिनो आहार करइं — हे गौतम — अलोकना व्याघात विना — व्याघात आश्री — बहु दिसिनो आहार लेइं — चिहुं दिसे एक — नो आहार अ

पुव्विं आहारेति ताइं भंते कति दिसिं आहारेति गो० निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघातं पडुच्च सिय तिदिसिं

न निकलण आश्री नइं किंवारइं च्यार दिसिनो आहार करइं — किंवारइं पांच दिसिनो आहार करइं — उसन्न कारण आश्री वर्णथकी काला नीला जाव — लागिं धोला आहरइं — गंधथकी सुगंध आ हरइं

सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं उस्सन्नकारणं पडुच्च वण्णओ काला नीला जाव सुक्किलाइं गंधओ सुब्भिगंध

दुरगंध पलि आहर — रसथकी तिखो ज्यां लगै मधु रोति हलगे आहरइं — फरसथकी कर्कश जांलगै स्निग्ध लरवा नइं आहरइं — ते आहरता पुद्गलना पराणे आगला वर्णगंध रस गुं

इं दुब्भिगंधाइं रसतो तित्त जाव महुराइं फासओ कक्खड मउय जाव निद्ध लुक्खाइं तेसिं पोराणे वण्णगुणे

ण जां लगै फरसगुण नइं वय परल वालटी नइं — परिपालना फरसनइं — परिसीस वालटी नइं विशेष — पछी सीनें एच्यार प्रत्येक अर्थ — विशेष वर्ण अनेरा अपूर्व नवा वर्णगुण — गंधगुण

जाव फासगुणे विपरिणामइत्ता परिपालइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता अण्णे अपुव्वे वण्णगुणे गंधगु

जां लगइं फरसगुण नवला — आत्मप्रदेश क्षेत्र नामधेर स्पर्शे उपनल — सर्वथा आतमा सर्वत्र पुद्गल आहरइं — ते भगवन पृथ्वीकायना जीव किंहांथकी उपजइं

णे जाव फासगुणे उप्पाएत्ता आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारेति तेणं भंते जीवा कतो हिंतो उ

अनुक्रम लव रिवाया

आत्मप्रदेश फरसना पर विण दिसे पुद्गल आहार — आदि ... लना वे

९

कंशुलगाव नरकीयकी उपजइं कइं — तिर्यंच मांथकी उपजे के मनुष्यथकी उपजइं — के देवतामांथकी उपजे — पृथ्वीमांहि उपजे — कहइ हे गौतम नरकीमांथकी पृथ्वीमां न उपजइं

ववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्ख मणु देवेहिंतो उववज्जंति गो० नो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरि

तिरयंच योनियामांहिंथकी उपजे — तिर्यंच योनीया पर्याप्ताथकी पृथ्वीकायमां उपजइं — पृथ्वीमांहि उपजे — मनुष्य अपर्याप्ता पर्याप्ताथकी पृथ्वीमां उपजइं — विशेष

क्खजोणिएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणियपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो अकम्मभू-

युगलिया अंतरद्वीपना असंख्याता आउखाना मनुष्य ति इंम सर्व पंच वर्जीनइं — पृथ्वीकायमां उपजइं — लवणनै विषै पंडवादु — जिम कहयं छै तिम जाणवुं — जां लगइं ते सूक्ष्म काल — १९ — पृथ्वीकायना जीवनें

मिग असंखेज्जवासाउयवज्जेहिंतो उववज्जंति वक्कंति उववातो भाणियव्वो १९ तेसिं णं भंते जीवाणं

केतला कालनी स्थिति आयुष्यानी कहइ हे — जघन्य अंतर्मुहूर्तनो आ — ते सूक्ष्म पृथ्वीकायना जीवनइं मरण होइं ते कहो स्वामी तिवार जगर्व — गौतमः — मणी अनइं — २० — समुद्घात तेस

केवतीयं कालं ठिती पण्णत्ता गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं २० तेणं भंते मारणंतियसमुग्घाएणं

समोहाइं ल काल ति मरइं — कें असमोहणि काली गते मरइ सादंत कहे — हे गोम: — समोहाइं ल काल ति मरइं अने — असमोहणि काली गति पिण मरइं

समोहया मरंति असमोहयावि मरंति गो० समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति २१ तेणं

ते भगव सूक्ष्म पृथ्वीकायना जीव न अंतर रहित तिहांथी — चवी किंहां उपजइं — किंहां जाइं ते कहो स्वामी — शिष्य पूछे छै स्वामी नारकीमां पृथ्वी कइं — तिर्यंच योनि कांइ उपजइं

भंते जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्ख

मोहे मरीने ते जीव समुद्घात करीने ते जीव मरे ते समुद्घात कीधा वि जीव मरे ते असमुद्घात कीधा विना मरे

॥ जवन्न ओ अणि अंतमुहूर्तनो आउ ॥
॥ उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ॥

जीवाभि
८

याम्हां उपजइं कइं मनुष्यनी योनिमां उपजइं केइ देवतानें विषइं उपजइं हे गोतम नारकीनइं विषे पृथ्वीकाइया तिर्यंचयोनिया मांहि उपजइं न जायइं

णिएसु मणुस्सेसु उववज्जंति देवेसु उववज्जंति गो नो नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु

मांहि उपजइं मनुष्यमां पृथ्वीना जीव उपजइं पिणि देवतामांहि उपजइं नही २२ ते तेहनइं पृथ्वीना जीव आंतरा विना चवीनइं किहां उपजइं

उववज्जंति मणुस्सेसु उववज्जंति नो देवेसु उववज्जंति २२ ते णं भंते जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं

किंहा किहां सूक्ष्म एकेंद्रिनइं विषे उपजइं ज्ञालगि पंचेंद्री तिर्यंचयोनिमां उपजइं हे गोतम पलिअसंख्या जायइं

उववज्जंति किं एगिंदिएसु उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति गो असंखेज्ज

तावर्षना तिर्यंच वर्जीनइं सघलेइ पर्याप्ता अपर्याप्तामांहि उपजइं २३ ते हे गौतम पृथ्वीना जीव केतली गति थी आवइं अनइं केतली गति जाइं

वासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जंति २३ ते णं भंते जीवा कतिगतिया कतिआ

एहवें गति थी पृथ्वीकायमां आवे ते सूक्ष्म पृथ्वीकायना जीव वली एक सरीर असंखि केतली गति [illegible] हे गोतम तिर्यंच मनुष्यमांहि आवइं [illegible] जायइं २४

गतिया पन्नत्ता गो दुगतिया दुआगतिया २४ परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता समणाउसो सेत्तं सुहुम

[illegible] ते सूक्ष्म पृथ्वी हवें बादर पृथ्वीकाइयानो कहइं ते बादर पृथ्वीना भेद कह्या ते केहा सुहाली पृथ्वीकाय [illegible] पृथ्वीकाय कह्या

पुढवीकाइया से किं तं बादरपुढविकाइया २ दुविहा पन्नत्ता तं जहा सण्हबादर

पर्याप्ता अपर्याप्तामांहि सघले अनें मनुष्य अकर्मभूमिना अंतरद्वीपना असंख्याता वर्षना आउखावाला जीवनइं [illegible]

[illegible] पज्जत्तएसु उववज्जंति मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउ [illegible]

[illegible] खरबादर पृथ्वीकाय [illegible] स्फटिक [illegible] ते पृथ्वीकायना केतला भेद [illegible] सातभेद कह्या ते केहा

पुढवीकाइया य खरबादरपुढवीकाइया य से किं तं सण्हबायरपुढवीकाइया २ सत्तविहा पन्न

काली माटी आदि १ नीली माटी २ [illegible] माटी ३ राती माटी ४ पीली माटी ५ पांडरी माटी ६ [illegible] पर्याप्ता एक [illegible] ते संक्षेपि ते हना भेद कह्या तं जहा किहिं तो ते केहा १

त्ता तं जहा कण्हमत्तिया एवं जहा पन्नवणाए जाव ते समासओ दुविहा पन्नत्ता तं जहा पज्जत्तगा य

बीजो भेद अपर्यो २ हवें ते बादर पृथ्वीकायना जीवनइं केतला सरीर कह्या [illegible] हे गोतम त्रणि सरीर कह्या ते केहा

अपज्जत्तगा य तेसि णं भंते जीवाणं कति सरीरा पन्नत्ता गो तओ सरीरगा पन्नत्ता तं जहा उ

उदारि १ तेजस २ कार्मण ३ ते चेव सर्व [illegible] पिण एतलो विसेष छै जे तेजो लेस्या अधिकी [illegible] ते सर्व सूक्ष्म पृथ्वीकायनी परि

रालिए तेयए कम्मए तं चेव सव्वं नवरं चत्तारि लेसाओ अवसेसं जहा सुहुमपुढवीका

सर्व कहेवो ज्यां लगे निश्चे छ दिसिनो आहार करइं ते मारइ तिर्यंच मनुष्य योनिमां [illegible] देवता [illegible] भवनपति [illegible] उपजइं देवता [illegible] जाव [illegible]

इयाणं आहारो जाव णियमा छद्दिसिं उववाओ तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिंतो देवेहिंतो

[illegible] पृथ्वीका थिति [illegible] अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टी बावीस हजार वरसनुं आउखु

वसाउ धरीसा [illegible] विती [illegible] अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ते णं जीवा

तेणंवाक्कालंकारेहेसावनतेपृथ्वीकायना ईलकाणति काइंअसंतोह्नाकेतहः हेगोम समोहेएमरेतेमरइं अ
ज्ञीवमरणसमुद्घातकरीस्कंसमोह्ना करीमरइ नीगतिकरीनइमरे म आनइं

द्विवालि ७ मारणंतियसमुग्घाएणं किंसमोहतामरंति असमोहतामरंति गोयमा समोहतावि मरंति अस
समो हेमरणेपणि तेपृथ्वीकाय आंतरारहितवीनइं केहीगतिंनप पृथ्वीकाइयाजीवकिं किंसुनारकीमां
मरइं नाजीव किंहांजाइं जाइ तेउपजइं उप

मोहतावि मरंति तेणंभंतेजीवा अणंतरंउवट्टित्ता कहिंगच्छंति कहिंउववज्जंति किंनेरईएसु
दे एहवुंपूछमते नारकीमांउपजैनही तिर्यंचयोनियामां पृथ्वीकाइया मनुष्यमांपिणउपजंति
थकइं गुरुकहइं उपजइं जीव कहेतां उपजइं

उववज्जंति पुच्छा नोनेरईएसुउववज्जंति तिरिक्खजोणिएसुउववज्जंति मणुस्सेसुउववज्जं
तिमज असंख्यातावर्षनांआयुषावाजीनइंबीजइं तेसतवनपृथ्वीकायमाजीवकेतली केतलीगतिमां
सघलइं उपजइं गतइंजाइं आवइं

ति नोदेवेसु उववज्जंति तेणंभंतेजीवा कतिगतिया कतिआग
इमकेतलीआगति हेगो बेगतितिर्यंच मनुष्यतिर्थीआवै प्रत्येकशरीरीअसंख्यातपुदे अहोश्रमणआ एतलेबादरपृ
कहइं सम मनुष्यगतिदेवतादुगुणति रीडमांणकइं युषवंतः

तियापन्नत्ता गोयमा दुगतिया तिआगतिया परित्तअसंखेज्जापन्नत्ता समणाउसो सेत्तंबायर
थवीकायकह्या एतलइसूक्ष्मपृथ्वीबादर हवइंअपकायकेहइंबइं तेअपकायनाकिंभेदकह्याकेहातं
तेपृथवीकायकह्या जहा

पुढविकाया सेत्तंपुढविकाइया सेकिंतंआउकाइया आउकाइयादुविहापन्नत्ता ७

तंजहातेकिम सूक्ष्मअपकायएकभेद१ बादरअपकायनोबीजो हवेसूक्ष्मअपकायनाबि पर्याप्ता१ एकअप
भेद भेदकह्यातेकेहा

७ तंजहा सुहुमआउकाइयाय बायरआउकाइयाय सुहुमआउकाइयादुविहा पं तंजहापज्जत्ताय अप
र्याप्ता२एं तेअपकायनाजीवनेभगवनकेतलांशरीरकह्यांतेके त्रणिशरीरकह्यां एकउदारीक१ तेजस२ कार्मण३
बेभेद हेगोतम

ज्जत्ताय तेसिंणंभंतेजीवाणं कतिसरीरयापन्नत्ता गोयमा तओसरीरा पं तंजहाओरालिए तेयए कम्मए
जीमनिश्चेसूक्ष्मपृथ्वीकायनेकह्यं एतलोवि जलबुदबुदनेसंस्थानेंछइं बाकतांसर्वतिम आंतरोभेगतिजाइं
तिमसूक्ष्मअपकायजाणवी शेष जपृथ्वीनेपरइं

जहेवसुहुमपुढविकाइया णवरं थिबुगसंठिया पं सेसंतंचेव जावदुगतिया
दुइंगतिथीआवइं प्रत्येकशरीरीअसंख्यातलोकाकाश एतलइंसूक्ष्मअपकाईयाकह्या हवइंबादरअपकायतेकेहा
प्रदेशप्रमाणछइं ॥

दुआगतिया परित्तअसंखेज्जापन्नत्ता सेत्तंसुहुमआउकाइया सेकिंतंबायरआउका इ
गुरुकहइतेबादरअपकायनाअनेक भेदकेहा हेमसंसवारसंधि ओसजेअनेतरातप्रकारना तेसंक्षेपिंबिभेदकह्या तंजहा
भेदकह्याछइं तंजहा तेकिम ॥

याबायरआउकाइयाअणेगविहापन्नत्ता तंजहा हिमजाव जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमासओदुविहा पं तंप
एकपर्याप्ता१ एकअपर्याप्ता२ निश्चेसर्वपृथ्वीनीपरइं एणवरं एतलोवि शेष जलबुदबुदनेआकारइंछइं लेस्याचारएहेजीहोइ आहारनिश्चेछदिशानोछइं

ज्जत्ताय अपज्जत्ताय तंचेवसव्वं णवरं थिबुगसंठिया चत्तारिलेसाओ आहारोनियमा

वनवाउंक तिर्यंचयोनियामां मनुष्यदेवनाथकी स्थितिजघन्यअंतर्मुहूर्त उत्कृष्टसातहजार
किं ताउपजवे थकीउपजइ उपजे होइ

डाबपनि
१०
बादरपृथ्वी
...

वट्टिसि नरवाने तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं स

वरसनुंआउखुं जिमबादरपृथ्वीकायनीपरिं जांणवुं बेगतिजाइ त्रणिगतिथीआवइ प्रत्येक
होइ मनुष्य१ तिर्यंच२ तिर्यंच१मनुष्य२देवता३ सरीरी

त्तवाससहस्साइं जहा बायरपुढविकाइयाणं जाव दुगतिया तिआगतिया परित्ता असं

असंख्यातजीवना अहोश्रमणोआयुषावंत सांभलो एतलेअपकायकही हवइवनस्पतिकायना बेभेदकहइछइ तेवनस्पतिकाय तेकिम

खेज्जा पन्नत्ता समणाउसो से त्तं आउकाइया से किं तं वणस्सइकाइया दुविहा पं तं जहा

एकतोसूक्षमवनस्पतिकाय१ बीजीबादरवनस्पतिकाय२ हवैंसूक्ष्मवनस्पतिकायनाबिभेदकहइ
पहिलोभेद१ २ छइ

सुहुमवणस्सइकाइया बादरवणस्सइकाइया से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया दु

तेजहाकेहतां पर्याप्तीसू अपर्याप्तीसू तिमजसूक्ष्मपृथवीनी नाना प्रकारनइ संकरी बइंगतिआ
तेकिमः सूवनस्पती वनस्पती२ पुरइएतलोविशेष स्थानेनास्तिते छइ इ

विहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तहेव सव्वं नवरं अणित्थंथसंठिआ पं दुगतिआ दु

बेगतिथीआ प्रत्येकसरीरीअनंता बीजुंसघलुंसर्वपृथ्वीकायनइकह्युं सूक्ष्मवनस्पतिकायक
वइंजीव लोकाकाशप्रदेशप्रमां तिमवनस्पतिनइकेहवुं एतलो हीइहां

आगतिया अपरित्ता अणंता पं अवसेसं जहा पुढविकाइयाणं से त्तं सुहुमवणस्सइका 10

णछइ अपरिताअवी
नस्पतिकहारिरणअनं
तका इसमर्थः ॥१

हवइबादरवनस्पतिकहइछइ तेबादरवनस्पतीना तेकि प्रत्येकजूजूआसरीरनाबादरवनस्पति साधारणग
बेभेदकह्या ॥ म काइयाजांणवा

इया से किं तं बादरवणस्सइकाइया दुविहा पं तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सतिकाइया साहा

कशरीरइअनंताजीवनसाधारण हवइंतेप्रत्येकसरीरबादरवनस्पतिकायतेकहइतेकहइछइ तेबादरवनस्पतीनाबा
वनस्पतीकायकहाइ२ रभेदकह्याछे ॥

रणसरीरबादरवणस्सतिकाइयाय से किं तं पत्तेयसरीरबादरवणस्सतिकाइया दुवालसविहा

वृक्षआंबादिक गुच्छवृक्ष गुलममा लताचं वलिको पर्वगसिंजमीह तणद वलिट हरीतंदल ओषधिसाल जलयनका कुफनसूमीफोडा
१ डिक२ लिका३ परगादि हल५ लादि७ ८ ९ १०॥ दि ११ १२

पं तं रुक्खा गुच्छा गुम्मा लता य वल्ली य पव्वगा चेव तणवलयहरितओसहिजलरुहकुहणाय बो

एबारभेदजांणवाहवइं कंदछइतेनाबेभेद तेकिम एकास्थिकतरू बहुबीजकु हवइंतेएकास्थिकनाअनेकभेदजांणवा
वृक्षतेकिमछइ गुरू कह्याछइ॥ छइ रीकादि वादिक तेकह्याछइ अनेकतेकेहा॥

धव्वा से किं तं रुक्खा रुक्खा दुविहा पं तं एगट्ठियाय बहुबीयाय से किं तं एगट्ठिया रुक्खा अणेग

लिंबडो आंबु आलंपपुनागरूनामा मवननामा तिमजअसोक जेएहवाबीजा अनेरातथाप्रकारना तेवृक्षादि
१ २ वृक्ष३ वृक्ष४ वृक्ष५ मूलइअ

विहा पं तं निंबंबजंबुजाव पुन्नागरुक्खे सीवन्नी तहासोगय जे यावन्ने तहप्पगारा तेसिं णं

नेकजीवहोयतातकथंके अनेकजीवकि कंदा इमरवं तयाको मलीकूशसालपवालटी फलेअनेदाजीवहोइएतलेएकबीजनारक्ष
अहोइ तेउपरीगाथाबइकहइछइंइम। अ मांपत्रा पंत्रभांषत्येक जीवमाह कहाइफुलनाअनेकजीव बीजनाअनेकपाणि होइं

४

मूलावि असंखेज्जजीविया कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेयजीवा पुप्फाइं अणेगजी

इहसगलसरमवाणी मलेमभिमांणचहूयाभीम पत्तेयसरीराणी साहारणसरीराणि संघाया १ मकलमर्थपस्थानीयाप्रत्येकसरीरा इहत्रेयस्थानयोरा
गहछापदनी नथाविधकर्मतेनवनतिश्रुतिः

जीवाभिग
११

फलना अनेक जी एतलें एक बीजना हवें बहुबीजनां र तेबहुबीजना अनेकने हेवइं अस्ति तेंदुक उंबरना
वहोइं रूकसा॥ रुकइइलइं दकसातेकेला तेक क मा
वाइं फलाइं गाढिया सेत्तं एगाढिया सेकिंतं बहुबीयाइ अणेगविहा पं तं अत्थिय तेंदुय उंबर क
कोठ आमल फणस दाडम नग्रोधवड कालुंबरीनामा तिलकवृक्ष लोइवृक्ष धवड जेएहवानधाप्रकारना
वं
विठ आमल फणस दाडिमणग्गोधकाउंबरीय तिलकलउय लोद्ध धवे जेयावण्णेत्तहप्पगारा
एवृक्षना मूला असंख्याताजीवकह्या जावफलनाएकजीव अनेक वृक्षनाबिनेदकह्याइम जीमपन्नवणाइं विस्तारकह्योछइं
बीजनाहोइं एतलइं बहुबी
एतेसिंणं मूलावि असंखेज्जविया जावफला बहूबीया सेत्तं बहूबीयका सेत्तं रुक्खा एवं जहा
तिमजइहांजां तथाप्रकारेणसांणिय ओलगेअनेराजतथाप्रकारनाएहवाबारनेदकहणेंलि अनेकसंस्थानजांणवां तेरुक्ष
एवो वेक॰ जांणवुं॥ जाकहाना नाप्रकारना
पन्नवणाए तहा ताणियव्वं जाव जे यावण्णेतहप्पगारा सेत्तं कंदरुहा णाणाविहसंठाणा रुक्खा
कसरीरइं एकजजीवकह्या खंधिएकजीवतेकिंम ताड सरलखजूरी नालीयरी एमवनइंएकसरीरेंएकजीव शालिविकणंइयोंमि
वजिमसघलासरसवएक॰ आकीधालिम सरसव
तेएग जीविया पं खंधेवि एजीवो तालसरल नालिएरीण जहसगलसिरसवणवन्नंय
एकवारुइं तिमप्र यथाजिमतिलसंकुली आणाधाथी पुन्नव एमलेंप्रत्येक सरीरीबादरवनस्पतिकायनाबारभेद तेइंणकहीरह्या
तेक जीवजांणवा= णाइं कहितें तिहांयाथस्वरूपकहेवो हवेंसाधारणनुंस्वरूपकहेवराइंछें॥
सरीराणंगाहा जहावातिलसंकुलियागाहा सेत्तं पत्तेयसरीरबायरवणस्सईकाईया से
तथाजिमतिलनीपापडीमांतिलनोसंघात तिमप्रत्येकजीवजांणवा एगाथापन्नवणाइं कहीछइं तिमजांणवा= ११

हवेंसाधारणसरीरिएंकसरीरें अनंताजीवतेसाधारणकहीयेंतेसाधारणबादरवन
स्पतिना अनेकभेदकह्याछइं गुरुक कइ विशेष कहे
तं पत्तेयसरीरवणस्सईकाईया सेकिंतं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया२ अणेगविहा
तेकिं म रतालु १ मूला २ आंगबेर ३ आदुं हलदर ५ धनोली तिविशेष मरलीवनस्पतिविशेष मसिरलीवनस्पतिविशेष कसिहतावनस्पतिविशेष बीरिकावनस्पतिविशेष धीरलीवनस्पतिविशेष बारलीकावनस्पतिविशेष
पं तं आलूए मूलए सिंगबेर हरिलि सिरिलि सस्सिरिलि कच्छिया बीरिया छिरिविराली
कृष्णकंद १ वनकंद २ सुरणकंद ३ खीलोफांतोछ सीहइ ४ कमरासवनस्पतिविशेष॥ सइमोथिछ सिंह पीलीहरीडा जोहलीवनस्पतिविशेष कुंतिवनस्पति
यां कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खेलूडे किमिरासि लहमोच्छा इहालिड्डा लोहाणी कुंति कुंठवनस्पति
कुंहि×
अश्वकर्णी वनस्पति सीहकरणीवनस्पतिविशेष मसुढवनस्पतिविशेष जेअनेराइंतथाप्रकार नीवनस्पतिमेंछेपधको बिंनेदपंनताकहेंतां कह्याछइं तेजहाने केता एकतोपर्यामा १
स्स अस्सकण्णी सीहकण्णी मसुंढी जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं तं पज्जत्तगाय नं+
एक अपर्याप्ता २ तेसघवनमाधारणवनस्पतिमांजीवतेंकेतलांसरीरकं हिछे ? तेगौतम त्रणिसरीरकह्यां तेकेहा उदारिक १ तेजस २
अपज्जत्तगाय तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरगा पं गो तओसरीरगा पं तंउरालए तेयए
कार्मण ३ तिमजजिमबादरपृथ्वीकायनेंकहुं तिमजनिमेंजेबादरवनस्पतिकायनेंकहितुं॥ एवरंएतलोविशेष सरीरनी अवगाहना जघन्यतो अंगुलनें असंख्यातमें भागसरीरहोइं
कम्मए तहेव जहा बादरपुढविकाइयाणं णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स अ

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

जीवाजी
12

अनइं कुरू अंतो कांइक अधिक सहस्त्रयोजन अनइं वनस्पतीनइं अनेक प्र स्थिति आउषानी जघन्य
नहोइं सरीर तेउपरी न होयते पृथवीनी परें जाणवूं कारनी संस्थान बइं ॥ तो अंतर्मुहूर्त्तनी कहइं

संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं अणित्थंथसंठिया विती जहन्नेणं अंतोमुहु

उत्कृष्टी तो दस हजार वरस आउषानी जे पांचमे वैमानिक तिर्यंच मनुष्य ते प्रत्येक बादरनी विपरीत ते ए वनस्पतिनाइ भाग बइं ॥
स्थिति जाणवी इं तिर्यंच मनुष्य २ वै नारक देव तिर्यंच स्परीस अनेक लोकाकाश एतले बादर

त्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं डोचउगतिया तिआगतिया अपरीत्ता अणंता पं सेतं बाय

वनस्पती कायकह्या एतले त्राण भेदे हवे त्रस तेत्रस नाम त्रणि तेकेहा तेजस्काय वाउकाय उदारिक त्र
थावर काया कहेइं भेदकहा तइं १ २ स प्राणते त्रि

रवणस्सइकाइया सेतं थावरा से किं तं तसा तिविधा पं तं तेउकाइया वाउकाइया उराला

जा भेद बेंद्री पंचेंद्री यावत् उदारा स्काराउदा बे भेद कु एक सूक्ष्म तेजस्का एक बादर तेजस्काय २
यावत् ॥ सपर उदारिक हवे तेउकायना भेद कहे इं य १

तसा पाणा से किं तं तेउकाइया दुविहा पं तं सुहुमतेउकाइया य बादरतेउकाइया य से किं

हवे सूक्ष्म तेउकायने जिम सूक्ष्म पृथवीकाय कहीइं एतले एतलो विशेष सरीर सूइने कलाप समोहनि संस्थानि
तिम जसर्व इं इहां कहेवुं सरीर होइं

तं सुहुमतेउकाइया य २ जहा सुहुमपुढवीकाइयाणं नवरं सरीरगा सूइकलावसंठिया

एकगतिति तिर्यंच बेंगतिथी आवइं प्रत्येक सरीरी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाणे सेस पाछले तो प्रथम एतले सूक्ष्म तेजस हवे बादर तेज
मां जाइं तुष्य तिर्यंच २ बीनं परें कायकही

एगगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पं सेसं तं चेव सेतं सुहुमतेउकाइया से किं तं 12

सकायकहीइं ते बादर तेजसकायना अनेक भेद कह्या तेजहाने अगाराध जल अनल मोमरला ज्वाला सूरजकांत मणि
तेकेहा किम मविना संबध मक नी निश्चा सूर्यकिरण

बादरतेउकाइया २ बादरतेउकाइया अणेगविहा पं तं इंगाले जाले मुम्मुरे जाव सूरकंतम

करण घर्षकी जे हवा ते अनेरा प्रकारना ते संक्षेपिं बिं भेद तेकेहा पर्याप्ता अपर्याप्ता ते अग्निकायना जीव
उपजे तथा प्रकारना कह्या १ २

णिनिस्सिते जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं तं पज्जत्ता य अपज्जत्ता य तेसिं णं भंते

नइं सगवनकेतला सरीर एतलाकं हे गौतम त्रणि सरीर तेजहाने उदारीक तेजस कार्मण सेसं तं चेव पाछल सरीर सूइकला
तो कह्या म कह्या किम १ २ ३ पं छबीनें परें

जीवाणं कति सरीरगा पं गो तओ सरीरगा पं तं उरालिए तेयए कम्मए सेसं तं चेव सरीरगा

परेंसमोहनइं संस्था त्रणि लेस्या स्थिति आउषो उत्कृष्टी तो त्रणि दिवस त्रिरात्र तुं कहइं तिर्यंच मनुष्य मां
नइं कह्या ॥ कही जघन्य

सूइकलावसंठिता तिन्निलेसा ठिति जहन्नेणं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं तिरियमणुस्स

उपजवुं होइं सेष पाछ लुं सर्व बादर पृथवी बेंगतिथी आवे तिर्यंच प्रत्येक सरीरी असंख्यात लो एतले तेजसकायना
कायनी परें जाणवुं आलगे तिर्यं १ मनुष्य २ काकास प्रदेश प्रमाण भेद कह्या ॥
नो गति जाइं ।

हिंतो उववाओ सेसं तं चेव एगगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पं सेतं तेउकाइ

हवे वाउकायना कहे छे हवे ते वाउकाय तेकिम एकनी सूक्ष्म वाउकाय बादर वाउकाय बीजो सूक्ष्म वाउकायने सर्व
ना बे भेद कह्या छइं तं जहा प्रथम भेद १ ए भेद २ तिम जिम तेजसकायने

या से किं तं वाउकाइया दुविहा २ पं तं सुहुमवाउकाइया बादरवाउकाइया य सुहुमवाउ

जीवाभिग
१३
आरोग्यविजय

कहकेतिषा... एवरंएतलो विशेष सरीरपडागध्वजानइं संस्थानइंछइं एकगतितिर्यं चमांजाइं बेगतिथीआवइं तिर्यंचमनुष्यहं प्रत्येकसरीरीअसंख्यातलोकाकाशप्रदेशप्रमाण

काइया इहतेउकाइया णवरं सरीरपडागासंठिया एगगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा

एतलेसूक्ष्मवाउकाय कह्या॥ हवइंबादरवाउकायना अनेकभेद कहइछइं श्रीवीरस्वामीइं तिवारइंगौतम कहइ स्वामीकहो किमकह्याछइं पूर्वदिसनोवाउ पश्चिमदिसिनोवाउ एवंजेअनेरा

सेतंसुहुमवाउकाइया सेकिंतंबायरवाउकाइया २ पं तं पाईणवाए पडीणवाए ते एवंजेयावन्ने

तथाप्रकारना वायुजाणवा तेसमासंखेपिथकी तेहंदकह्यातेजहा तेकिम एकपर्याप्ता १ एकअपर्याप्ता २ तेहनिरवाउकायनाजीवनेकेतलासरीरकह्याछइं

तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तेसिंणंभंते जीवाणं कतिसरी

तेकिम ऊदारीक १ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ४ सरीरपताकानइंसंस्थानइं कहितंछइं॥ तेवाउकायनाजीवनेच्यारसमुद्घातकह्याछइं

रगा पं तं उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए सरीरा पडागासंठिता पं चत्तारिसमुग्घाता पं वे

वेदनासमुद्घात १ जाणवो बीजोकषायसमुद्घात कह्यो २ त्रीजोमरणांतसमुद्घात ३ चोथोवैक्रीयसमुद्घात ४ आहारनिर्व्याघातपणेअंतरायरहीत छइंदिसनो आहारहोइं वाउकायनें॥

यणासमुग्घाते कसायसमुग्घाते मारणंतिय वेउव्वियसमुग्घाए आहारेणिव्वाघाएणं छद्दिसिंवा

व्याघातआश्रीनइंकिवारत्रणदिसनोपणिआहारहोइं किवारिंच्यारदिसनोपणिहोइ किवारिंपांचदिसनोपणिहोइं देवतामनुष्यनारकीमांहिंउपजवूं वाउकायनेंनथी

विवघायंपडुच सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं वंनदेवामणुस्सनेरइएसु
वा।

१३

लक्षणविविधा विसेषविकी या सम्बा नव निक्रियाय द श्द को नू त्वानेकासव नीतिविकी या=

स्थितिजघन्यआउखानी अंतर्मुहूर्त्तनीलहइ वाउकायनी॥ उत्कृष्टथीत्रणसहस्रवरसनुंआयुषुंवाउकायनुंकह्युंछइ बाकीसर्वपृथ्वीनीपरेंजाणवु एकतिर्यचनीगतिमांजाइ बेगति

णत्थि ठितीजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंतिन्निवाससहस्सं पं सेसंतंचेव एगगतिया दु

मनुष्यअनेतिर्यंचमांथीआवें प्रत्येकसरीरीअसंख्यातलोकाकाशप्रदेसप्रमाणछेंजाहोश्रमण एणें आयुषावंतसांभलो जेएतलइंबाउकायनाभेदकह्याएतलेवाउकायनोसंपूर्णअधिकारकह्योएकेंद्रीनोजाणवो हविउदारत्रसथीएकछेछइं

आगतिया परित्ता असंखेज्जा समणाउसो सेत्तं बादरवाउकाइया सेत्तं वाउकाइया सेकिंतंउराला

विस्तारपणेंकरानेंतेउदार त्रसप्राणनाआरंभदकह्याछइ बेइंद्रीछइंतेहनेंबेइंद्री त्रणिइंद्रीजेहनेंतेतेंद्री च्यारइंद्रीजेहनेनेंचउरंद्री पांचइंद्रीजेहनेनेंपचेंद्री हविबेंद्रीनाअनेकभेदकह्याछइ तीर्थंक

तसापाणा चउव्विहा पण्णत्ता तं बेइंदियाय तेइंदियाय चुरिंदीयाय पंचेंदियाय सेकिंतंबेइं

रलगवानेंपनजाकहेतोकह्याछइं तेकिमछइंशिष्यपूछेछइं पुलककमतेलैजलसमीपनाकमीकोडानाजीवंलगइंसमुद्रमाहलीलघुमलनीजाति॥ जेवानेपीनथाप्रकारनाजे अनेरानेद तेसंक्षेपथकीत

दिया अणेगविहापण्णत्ता तं पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा जेयावन्ने तहप्पगारा तेसमासउ

इंदकह्या तेकिम पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ छइं तेबेइंद्रीजीवनेंभगवनकेतलासरीरकह्याछइंहेगौतम त्रणिसरीरकह्या उदारि पुछेछे वलीकहेछे

दुविहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तेसिंणंभंतेजीवाणं कतिसरीरका पं गो तओसरीरका उरा

क १ तेजस २ कार्मण ३ तेबेइंद्रीजीवनेंभगवन केवडीमोटीसरीरनीअवगाहनाकहीछइं तेकिमजाणवी ज घन्यथीउत्कृष्टमांअंगुलनोअसंख्यातमोभागसरीरहोइंबेइंद्रीनुं

लए तेयए कम्मए तेसिंणंभंतेजीवाणं केमहालियासरीरोगाहणा पं जहन्नेणंअंगुलअसंखेज्जा

जिवाभिग
१४
असन्नी होइ
असणी+

मात्र मासादि न होइ ... सम्यग्दृष्टी होइ ते माटे जे मिश्र न होइ

उत्कृष्टनो बार योजनुं सरीर होइ | छेवठसंघयणी कहीइं | हुंडकसंस्थानी कहीइं | कषायच्यार होइं बेंद्रीनइं | च्यार संज्ञा होइ बेंद्रीनइं

साणाइं उक्कोसेणं बारसजोयणाइं सेवट्टसंघयणी हुंडसंठिता चत्तारि कसाया चत्तारि सण्णाओ त

त्रणि लेस्या होइ | बेंद्री होइ | त्रणि समुद्घात होइ | संज्ञा नही नपुंसकवेदी होइ सम्यग् पर्याप्ता मान विना छिमपणा वली | पांच पर्याप्ति होइं | पांच अपर्याप्ति होइं

तिलेसाओ दोइंदिआ तओसमुग्घाता नोसन्नी नपुंसकवेदका पंचपज्जत्तीओ पंचअपज्जत्तीओ स

दृष्टधर मीसम्यग्दृष्टि होइ | मिथ्यादृष्टि होइ | मिश्रदृष्टी नो हि किं मधटानी नालमा सबदा ते उपनें समाइन सम्यक्त्व पाकतें कोइ बेंद्री मांडे पुर्जे तिवारइं अपर्याप्ता समय च आवली | चक्षुनाअभावमाटे चक्षुदर्शन नही | बेंद्रीने अचक्षुदर्शनी कहीइं | अवधिदर्शनी न कहीइं एहने | केवल

म्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि नो सम्मामिच्छादिट्ठी नोचक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नोओहिदंसणी नोके

दर्शनी पणि न कहीइं | ते बेंद्री जीव भगवन ज्ञानी होइं | किं वास्कं अज्ञानी होइं स्वामी कहइं | ज्ञानी स्वामादन माटें | अज्ञानी मीथ्यादृष्टी माटें | जे ज्ञानी होइ ते निश्चें बे ज्ञानी होइ ते किम

वलदंसणी तेणंभंतेजीवा किंनाणीअन्नाणी गोयमा णाणीवि अण्णाणीवि जेणाणी ते नियमा दुनाणी

मतिज्ञानी होइ २ | श्रुतज्ञानी होइ | जे अनाणी होइ ते निश्चें बे अज्ञानी होइ भगवान कहइं ते के हो | एक तो मति अज्ञानी जाणवो

तं आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय जेअन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी मतिअन्नाणीय सु

श्रुत अज्ञानी २ | मनयोगी न होइ | वचनयोगी होइ | काययोगी होइं | साकार उपयोग वंत होइ मति २ श्रुति २ ज्ञान | अज्ञानवंत अनाकार उपयोगवंत कहइं अचक्षुदर्शन वली | आहार निश्चे

तअन्नाणीय नोमणजोगी वयजोगी कायजोगीवि सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि आहा १४

इं छ दिसिनो होइ जे त्रस नाडिमाहि जनमावतीनइं | उपजइं तिर्यंच मनुष्य थकी होइं | नारकी तिर्यंच देवता असंख्यातवर्षना आउखाना मनुष्यनइं वरजीनइं संघलइं होइ | थितिजघन्य तो अं

रोणियमा छद्दिसिं उववाओ तिरियमणुस्सेसु नेरईयदेवअसंखेज्जवासाउयवज्जेसु ठिईजहन्नेणं

तमुहूर्तनी होइं बेंद्रीनी | उत्कृष्ट थिति बार संवछरनी बेंद्री नी जाणवी | समोहया समुद्घातपणइं मरइं | असमोहया असमुद्घातपणें मरइं | बेंद्री ते मरीनइं किहां जाइं | नारकि १

अंतोमुहूत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराणि समोहयावि असमोहयावि मरंति कहिंगच्छंति नेरइ

देवता र असंख्यात वाला ३ एत्र णि ठाम वर्जीनइं संघलें जाइं | बे गति जाइं ति १ म २ | बे गति थी आवे तिर्यं च १ मनुष्य २ | प्रत्येक सरीरी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश ... | एतलें बेंद्री बोलीस द्वार कह्या

यदेवअसंखेज्जवासाउयवज्जेसुगच्छंति दुगतिया दुआगतिया परित्ताअसंखेज्जा सेत्तंबेइंदिया

हवे तेंद्री कहइ छइं ते तेंद्रीना अनेक भेद कह्यावइं | ते किम भावनजीव विशेष | रोहिणजीव विशेष | हस्तिसोड मबीया दिजे | अनेरा तथा प्रकारना बीजाइं पणि जीव | तेंद्री ते समासथी

सेकिंतंतेइंदियाउ अणेगविहा पंतं ओवइया रोहिणिया हत्थिसोंडा जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमास

विस्तेदकह्या छइं | ते केहा पर्याप्ता १ | अपर्याप्ता २ | तिमज सर्व बेंद्रीने कह्या तिमज इहां पणि कहेवा | एतलुं एतलो विशेष | सरीरनी अवगाहना | जघन्यतो अंगुलनो

ओदुविहा पंतं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तहेवजहाबेइंदियाणं नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अं

असंख्यातमा भाग सरीर होइ | उत्कृष्टी तो त्रणि गाउनी अवगाहनानुं सरीर मानवाहोइं | इंद्री त्रणि होइ स्पर्श मुख नासिका ३ | थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी होइं | उत्कृष्टी तो उगण

गुलासंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिन्निगाउयाइं तिन्निइंदियाइं ठितीजहन्नेणं अंतोमुहूत्तं उक्कोसेणं

पंचासरात्रनी थिति एवइं चउरंद्री तेचउरंद्रीनाअनेकं भेद तेकिम आंधलजीवाविशेषथी जां लगें गोमरीरखीए जेएहवा अनेरा तथाप्रकार
कहीइ कहइं तइं दक कहावइं तकजीवविशेष कीडा नाचउरंद्रीजीव तसंक्षेप

जीवाभि
१५

एवं णं एवमंसरा ते चउरिंदिया २ अणेगविहा पं० तं० अंधिया पोत्तिया जाव गोयमकीडा जे यावण्णे तहप्प
थकी बेभेदे कह्या तेकेहा पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ तेचउरंद्रीना जीवनइं भगवन केतला सरीर हेगोतम
कह्यां छे तेकहा स्वामीकहे

कारा ते समासओ दुविहा पं० तं० पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तेसिं णं भंते जीवाणं कति सरीरका पं० गो० त
त्रणि सरीर तिमज बेंद्रीनी परें कहेवुं पणि एतलो विशे उत्कृष्टी चउरंद्रीनइं चारगाउनी इंद्रीपांचइ चारहोइ चक्षुदर्शनी होइ
कह्या पजे सरीरनी अवगाहना अवगाहना होइं

ओ सरीरगा पं० तहेव णवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं इंदिया चत्तारि चक्खुदंसणी
अचक्षुदर्शनी होइं स्थिति उत्कृष्टी छमासनी होइं थाकतुं सर्व बेंद्रीनी परें जां जां लगें प्रत्येक सरीरी असंख्याता एतले चउरंद्री
चउरंद्रीनइं लघु ॥ लोकाकाशप्रमाण कह्या कह्या

अचक्खुदंसणी ठिती उक्कोसेणं छम्मासा सेसं जहा बेंदियाणं जाव परित्ता संखेज्जा पं० से तं चउरिं
हवें पंचेंद्री कहे छे तेपंचेंद्रीना च्यार भेद कह्या तेकेहा एकतो नारकी बीजा तिर्यंचयोनीया २ मनुष्य देवता हवें ते नारकी कहइं
१ ३ ४ छइं

दिया से किं तं पंचिंदिया २ चउव्विहा पं० तं० णेरतिया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा से किं तं णेरति
तेनारकीना सात भेद तेके रत्नप्रभा पृथ्वी नारकी जां लगें हेठी सातमी पृथ्वीना नारकी तेसंक्षेपं करीनइं बेभेद कह्या छइं
कह्या छइं ॥ १ ते कहा कहेता

या २ सत्तविहा पं० तं० रयणप्पभापुढवी णेरइया जाव अहेसत्तमापुढविणेरइया समासओ दुविहा १५
रोषथाकती बीजी सर्व बेंद्रीनीपरइं बेंगतिथी आवें बइंगतिजाइं प्रत्येक सरीरी असंख्याता लोकाकास प्रदेस प्रमाण छइं एतलां चउरंद्री
इहां त्रेइंद्रीनी करवु २ सहारकरी तेंद्रीजीव कह्या

...तिंदियाणं ठिती सेसं तं चेव दुगतिया दुआगतिआ परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेतं तेइंदिया से किं तं च...

तेकिम पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ तेभगवन नारकीना जीवनें केतला सरीर कह्यां छइं एहनइं त्रणि सरीर कह्या तेकेहा
छइं भगवंत कहे छे हे गोतम सांभली छइं

पं० तं० पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तेसिं णं भंते जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता गो० तओ सरीरा पण्णत्ता तं०
वैक्रीयसरी तेजस कार्मण तेनारकीना जीवनें भगवन केवडी सरीरनी अवगाहना कहिइं हे गोतम बेभेदे सरीरनी अवगाहना
रपथम १ २ ३ तिवारइं स्वामी कहे छे स्वरूप वतना कहेता कही

वेउव्विए तेयए कम्मए तेसिं णं भंते जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पं० गो० दुविहा सरीरोगाहणा
तेजहा ते स्वधारणीक सरीर उत्तरवैक्रीय सरीर बीजुं तिहां जेने स्वधारणी तेनो जघन्यनो अंगुलनें असंख्यातमें भाग
कही १ २ सरीर हुइं उत्कृष्टु तो पांचसि धनुष्यनुं

णा पं० तं० भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलअसं
सरीर हुइं सातमी नारकीनुं ए हुइं जाइं एकं ठीने सर्वात तिहां जे उत्तरवैक्रीय सरीर तेनो जघन्य अंगुलनइं असंख्यातमें भागं सरीर होइं
संहनन होइं तिहां किहां अस्थि बंधन छे इहां उदारीक नारकीनुं
नो संघयणवो

खेज्जति भागं उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्ज
उत्कृष्टु तो पांचसइ धनुष सरीर होइं तेनारकीना जीवनें भगवन सरीरने संघयण कस्युं कहे छे ते कहि छे छ संघयणमां एकं संघयण नोइ
सातमीनी उपरकाइं कस्युं छइं भगवन गोतम अस्थि नहि छ पते संघयण कहीइं

तिभागं उक्कोसेणं धणुसहस्सं तेसिं णं भंते जीवाणं सरीरा किं संघयणा पं० गो० छण्हं संघयणाणं अ
तेहनो तो इहां असाइं अस्थि नथी चर्मादिक तेहनइं अनावइं संघयण पणि नही तेपुद्गल अनिष्ट नें इष्ट अनिष्ट अप्रीयत अकसा
नमानथी नथी अकांत अकमनीय प्रीय अशुभ

संघयणी णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू णेव संघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अपिआ असु

जीवाभि
१६

मननेगमता आमनोज्ञमन तेनेहनं संघातसरीरनं परीणमइ परि तेसगवन नारकीना जीवनें सरीरसुं संस्थान कहिउं देगौतम ना
दकारीनहा नेउबवती णमइ छइ रकीनासं

ता अमणुन्ना अमणामा तेसिं संघायत्ताए परिणमंति तेसि णं भंते जीवाणं सरीरा किंसंठिया पं० गो० दु-

स्थाननाबिंभेद एकतो भवधारणीय १ उत्तरवैक्रीयसरीर २ तिहांजेने भवधारणी सरीर तेह तेहुंडक संस्थान भवधारणी
कह्या छइ तेकिम हुंडक संस्थानें होइ कनइ

विहा पं० तं० भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया ते-

तिहांजे उत्तरवैक्रीय सरीर होइ तेहनें पिण हुंडक संस्थान नारकीनें कषाय च्यार संज्ञा च्यार होइ त्रणिलेसा होइ
होइ होइ

णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पं० चत्तारि कसाया चत्तारि सण्णाओ तिण्णि लेसाओ

इंद्री पांच होइ पहिला च्यार समुद्घात सनीहोइ गर्भथी उपनावती असन्नि पणि कहइ समुर्छिमथी उपनाते दोहोइ छ पर्याप्ती होइ ते वलि
होइ नारकीनइ असन्नी कहीइ नपुंसकवे वीपरीत छ अपर्याप्ति होइ

पंचेंदीया चत्तारि समुग्घाता आइल्ला सन्नी असन्नि वि णपुंसकवेदका छपज्जत्तीओ तिवि-

दृष्टिहोइ केवलविना दर्शन ज्ञानीहोइ अज्ञानीहोइ जेज्ञानी होइ तेनि त्रणिज्ञानी हो मतिज्ञान संज्ञात अपर्याप्तावस्थाइं
त्रणि होइ श्रुइ इतेकिम बेज्ञान होइ

हदीठी तिण्णि दंसणा णाणी वि अन्नाणी वि जे णाणी ते णियमा तिन्नाणी आभिणिबोहियनाणी

श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञानी ३ जे अनाणी होइ केतलाएकनें बेअज्ञान केतलाएक नारकीनें त्रणि अज्ञान पणि होइ असंज्ञी पर्या
पर्याप्तावस्थाइं ते असंज्ञी अ बेज्ञान होइ होइ प्तावस्थाइं जेहनइं बेइ अज्ञान होइ
त्रणिज्ञान पर्याप्तावस्थाइं

सुयनाणी ओहिनाणी जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी जे दुअन्नाणी

१६

तेहनइं निश्चइं मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ जेहनें त्रणि अज्ञान तेहनें निश्चें त्रणि अज्ञान होइ श्रुतअज्ञानी होइ विभंगज्ञा
होइ मतिअज्ञानी १

ते णियमा मतिअन्नाणी सुयअन्नाणी य जे तिअन्नाणी ते णियमा मतिअन्नाणी सुयअन्नाणी य विभं-

कार १ अना
कार बेहोइ
त्रणि तेहमा
कार पणि हो
इ त्रणि तेहि
अनाकार होइ

अज्ञानी होइ योग त्रिहरे मन १ वचन २ काय ३ उपयोग बे आहार छदिसनो त्रस बहुकारणें जाणीनइं पडु वरणथकी कालथ आलेषपूर्व
३ २ एत्र त्रणि योग होइ नारकीनइं बे होइ नाडीमां उपजवामाटे बहुकरण आश्रीनइं की

गनाणीय तिविहे जोगे दुविहे उवओगे छद्दिसिं आहारो ओसण्णकारणं पडुच्च वण्णओ कालाइं जाव आ-

लीयरं आहार उपजवुं गर्भजतिर्यंच मनुष्य थकी आउखानी स्थितिजघन्य नार दसहजार वरसनी उत्कृष्टी तेत्रीससागरोपमनी थितिहोइ
अधिकार असंख्यातवर्षायु वर्जीनें होइ रत्नप्रभानी अपेक्षाइं सातमीनी अपेक्षाइं

हारं आहारेंति उववातो तिरियमणुस्सेसु ठिती जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोव-

समोहता असमोहता उदवर्त्तननापदनीपरें जेगतिथी आवें तेगतें उपजे पणि समुर्छिमनुं निषेध नारकी मरी समुर्छिममां नावें समु
बेहु मरइ कहिवो र्छिमपणि नारक न थाइ उपजइ बेगति आइ ति मरी बेगति वीआवें

माइं दुविहा मरंति उव्वट्टणा भाणियव्वा जतो आगता नवरं संमुच्छिमेसु पडिसेहो दुगतिया दुआगतिया

प्रत्येक सरीरी असंख्यात लोका एतलें नारकीनो हवइ तिर्यंच पंचेंद्री तेसी तिर्यंच पंचेंद्रीना बे भेद कह्या छइ ते केहा संमुर्छिम पंचेंद्री तिर्यं
काशप्रमाण छै अधिकार कह्यो कहइ छइ

परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता सेत्तं नेरइया से किं तं पंचेंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पं० तं० संमुच्छिमपंचेंदि-

च योनीआ केतलाक ह्या बे भेद गर्भज पंचेंद्री तिर्यंच योनीआ तेह ना केतला भेद छइ मेसइ प्रमाण छेद प्रसीद्ध समुर्छिम पंचेंद्री ति
र्यंच योनीआ ना केतला भेद तिवारें भगव

या तिरिक्खजोणिया य गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया य से किं तं संमुच्छिमपंचेंदियतिरि-

Dr. BHAU DAJI

तकहें हे गौतम त्रिणि भेद तेकेहा जलेचरतीजल चरा १ इमथलचरा २ इमखचरा ३ हवइंजलचरकहे छै तेजलचरना पांच भेदकहाछइ एकतोम छ १

स्स जोणिया तिविहा पं तं जलयरा थलयरा खहयरा से किं तं जलयरा पंचविहा पं तं मक्ष

काछवा २ मगरम छ ३ ग्राहक ४ सुसमार ५ एतलेंमछकह्या इमसर्वलेदजिमपन्नवणाइं कह्याछइंतिमजाणवु जांलगेंजेअनेरातथाप्रकार तेहनासं नालेदसर्व

गाकछभा मगरागाहा सुसमारा सेकिंतं मछा एवं जहा पणवणाए जावजेयावणे तहप्पगारा तेस

संखेपथीबेभेद तेकेहा कह्याछइं पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ तेमच्छना जीवने भगवन केतलाशरीर कह्याछइ तिवारेभगवंतकहे हे गौतम त्रणिशरीरकह्याछइ

मासओ दुविहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरगा पं गो तउसरीरगापण्ण

तेकेहा उदारिक १ तेजस २ कारमण ३ सरीरावगाहनाशरीरनुंमान जघन्यपणइं अंगुलनेंअसंख्यातमेंभागेदेहमान होइ उत्कृष्टुं तोयोजनसह स्त्रमानहोइ

त्ता तं ओरालए तेयए कम्मए सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयण

सरीरमां सेवर्तसंघयणजाणवु हुंडकसंस्थान होइं च्यारकषायहोइं संज्ञाचनारीसंज्ञा च्यार लेस्यात्रणिहोइं इंद्रीपांचहोइं

सहस्सा सेवट्टसंघयणा हुंडसंठिता चत्तारिक साया सन्नाचत्तारि तउलेसाउ इंदियापंचस

समुद्घातत्रणिहोइं संज्ञीनहीं असनी होइं नपुंसकवेदीजाइं पर्याप्तिपांच होइं अपर्याप्ति पांचहोइं दृष्टिबेंमिश्रदृष्टी १ मिथ्यादृष्टी बेंदरशन १ बेज्ञानमति १ श्रुति २

मुउ तासिनि णोसनिं असनी णपुंसकवेदा पज्जत्ती अपज्जत्ती पंचदो दिठीउ दो दंसणा दो णाणा दो १७

बेइंअज्ञान मति १ श्रुति २ योगबेंवचन १ काया २ आहारछदिसनो असनाछिमांउपजवावति उपजबुं तिर्यचमनुष्यथकीहोइं नारकीसमुर्छिममांउपजै नहीं तिर्यच

अन्नाणं दुविहे जोगे णो आहारो छदिसिं उववातो तिरियमणुस्सेहिंतो नोनेरइएहिंतो ति

मांनहीं असंख्यातावर्षायुवर्जीनइं जाति सेसथाकताजीव अकर्मभूमीना अंतरद्वीपना असंख्याता वर्षायुवर्जीनइं मनुष्य असंख्याताआउखानासंमुर्छिममांनउपजे बीजामनुष्यमां संघले उपजें

नो ७ रिएहिंतो संखिज्जवासाउ अविज्जेहिं अकम्मभूमक अंतरदीवक असंखिज्जवासासू अवज्जेसु मणुस

स्थितिजघन्यनी अंतमुहूर्तनीहोइं उत्कृष्टुं तोपूर्वकोडीनुं आउखुहोइं मरणांतसमुद्घातबेंनेंदे समोहया विमरंति असमोहया विमरंति अंतरारहि

सु ठितीजहन्नेणं अंतोमुहूत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी मारणंतीयसमुग्घाएणं दुविहा विमरंति अणं

ततिहांथकी चवीनइं केहि नरकिंउपजइं केसुंतिर्यचयोनीमांजइनइं उपजइं केसुंमनुष्यमांत इं उपजइं केसुंदेवतामां उपजइं नारकीमां तिर्यचमांनेसमु र्छिमजलचरत

तरंउवट्टित्ता किहिंनेरईएसुवि तिरिरकजोणिएसुवि मणुसेसुवि देवेसुवि नेरईएसु रयणप्पा

रकें आभीरत्नप्रभापहेलीपृथवीइंउपजें आघोनिषेधबीजेंनरकेंनउपजें नहीतिर्यचसघलायमांउपजइं संख्यातवर्षआउखामांउपजें पणिअसंख्यातवर्षना आउखामां

चउपदमांउपजइं चउप्पएसु ती पंखीमांउपजै पखीसुवि ७ हाए सेसेसुपडिसेहोतीरिरक एसुसवेसो उववजंती संखेजवासाउएसुवि असंखेजवासा

नउपजइं मनुष्यमांउपजइं सघलाकर्मभूमीनामनुष्यमांउपजइं पणि अकर्मभूमिनामनुष्यमां नउपजइं अंतरद्वीपमांमनुष्यमां नउपजइं पर्याप्तामां

उएसु विमणुसेसु सव्वेसु कम्मभूमएसु नो अकम्मभूमएसु अंतरदीवएसु विपज्जत्तएसु वि:

अपर्याप्तामांउपजइ देवतामांवाणमंतरलगेंउपजइं च्यारगतिथीआवें बेंगतिंजाइं तिर्यंच पुत्तेकशरीरीअसंख्या एकहाबइ एतलेंजल
निप्पइ २ ३ नारक मनुष लोकाकाशप्रमाण चरसमूर्छिमप

अववक्कंतएसुवि देवसुजाववाणमंतरा चउगतिया दुआगतिया परित्ताअसंखेज्जा प० सेतंजलय

चेंद्री तिर्यंच कह्यानगवंतइंसविस्तर सेकिंहवेंथलचरसमुर्छिमपचेंद्रीतिर्यंचकहेंछइं तेसंमुर्छिमथलचर कहेंछे एकचउप्पदथ
वर्णवइं रपंचेंद्रीनाबिनेदकह्याछइं तेकेहाजाणवा इ लचरसंमुर्छि

रसमुच्छिमपंचिंदियातिरिक्ख सेकिंतंथलयरसमुच्छिमपंचिंदियातिरि२दुविहा पं० तं० चउप्पदथ

मपंचेंद्री अश्वगजादिकें उरपरिसर्पभुजपरिसर्पसमुर्छिमपचेंद्रीहवें थलचरचउपदसमुर्छिमपचें तेकेहा एकखुराअ बेंखुरा
द्रीनाच्यारनेदकह्याछइं श्वादि गवा

लयरसमुच्छिमपंचेंदियपरिसप्पसमु सेकिंतंथलयरसमुच्छिम२ चउव्विहा पं० तं० एगखुरा दुखु

दि गंडीपदह सणप्पद वाघश्वा ज्यांलगेंजेअनेराअतथाप्रकारनाजीव तेसंक्षेपथकी बेंनेद तेकेहा पर्याप्ता १ अपर्याप्ता
स्त्यादि पदादि कह्याछइं तेजहांकहेंला नेद २

रा गंडीपया सणप्पदा जावजेयावण्णेतहप्पगारा तेसमासतोदुविहा२ पं० तं० प० ज्जत्ताय अपज्ज

नेचउपदनेंत्र अवगाहना थीजघन्यतो गनीदेहहोइं अपर्यामावस्थाइं उत्कृष्टजोगाउप्रथकअव थिति आउषानीज
ि शरीर अंगुलना असंख्यातमाना गाहनाहोइं घन्यतो अंतमुहूर्त

त्ताय तओसरीरा ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणंगाउयपहुत्तं ठितीजहण्णे

तंप्रमाणहोइ उत्कृष्ट चोरासिसहस्रवरसनीथितिकहइं शेषथाकतुंसर्वजलचरनी ज्यांलगेंच्यारगतिजाइं बेंगतिथी
परिकहिंवुं

णं अंतोमुहूत्तं उक्कोसेणं चउरासीतिवाससहस्साइं सेसंजहाथलयराणं जावचउगतिया दुग

कहवेपरि
समुर्छिमवि
चारी

ऋह्यतेंजेत्र
साती असमु
र्छिमइतिपन
वणपाठपंच
दसकर्मभूमी
मुखरूपर्यक्ष
लंकषावरेमु
भमाअसल
कासमुर्छिम
अतगाहना
क्षादसयोज
नप्रमाणहो
इं अमनो
समुर्छिमव
तीः

आवेंति१ पुत्तेकसरीरीअसंख्यातलोका एतलिंथलचरसमुर्छिमचउपदकह्या हवेंथलचरउरपरिसर्पभुजपरिसर्पसमुर्छिमनाबेंसें
मनुष२ काशप्रमाणकह्याछइं

तियागतिया संखेज्जापन्नत्ता सेतंथलयर२चउप्पदसमुच्छिम सेकिंतंथलयरपरिसमुच्छिमादु

द कह्याछइं तेकिम उरपरिसर्पसमुर्छिमपचेंद्रीभुज बेंनेदकह्याछइं तेकि देवीनाफण म मउलीफण तेसर्पदेवीकरना अन
जपरीसर्पसमुर्छिमपचेंद्री रूज म फणाकरता विना कं नेदतिर्यंचकरेकह्या

विहापन्नत्ता तं उरपरिसप्पसमुच्छिमतं अहीडविहा२ पं० तं० दव्वीकरायमउलिणाय सेकिंतंदव्वीक

अनेकवि विषसरपजाएतलेंज्यांदेवीकराकह्या हवइंफणविनासरपकहेंछें तेदसरपनाअनेकने देवसरप गोणसरपति
ध दंश दकह्याछइं तेकेहा तेष

रा२ पं० तं० आसीविसी जावसेतंदीव्वीकरा सेकिंतंमउलिणो२अणेगविहा पं० तं० दिव्वा गोणसा

मालगयएतमुलिणीसरपफणविनाति हवेंअजगरनोएकनेदकह्याछइं एतलेअजगर सेकिंतअसालियाकहेंछइं तेअ
कह्या एतलेकह्या॥ कह्या सालीयानोनेद

जावसेतंमउलिणसेतंअही सेकिंतंअयगरा२एगागारा पं० सेतंअयगरा सेकिंतंआसालिया२

जिमपनवणाइंक केपइंकहेंवा तेअसालीयोजामइहापाठलपाठ तेमहोरगजावत्पनवणाइंकह्योछइं एहवाजेअनेरात
ह्योछइंतिमइहांम कह्या तिहांथीजाणवो हवेंमहोरगकहेंछइं तिमजाणवो एतलेंजेंमहोरगकह्या थाप्रकारनानेद

जहापण्णवणाए सेतंआसालिया सेकिंतंमहोरगा२ जहापण्णवणाए सेतंमहोरगा जेयावण्णेत

नासंक्षेपथकीबेनेद पननाकहिनेकहवें पर्याप्ता अपर्याप्ता२ तीमजसर्वजाणवुंएतवरं
तेकिस्या २ एतलोविशेषशरीरनी

हप्पगारा ... तेसमासओदुविहा पं० तं० पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तंचेवणवरंसरी
स

मिथ्यादृष्टीछइं
सासदतुमण
कपणेनारि
डेंवएरेंआयु
जलपाथीतना
लगजईतेथ
अंतरजीणीना

परिसर्पसमु
सेकिं तेपरीस
र्छिमहवेंउरपरी
पसमुर्छिमा२
सर्पसमुर्छिमने
चउविहापंतंअ
हिअयगराअ
अजगर
दीअयगराअ
असालीमहो
या रा
सालियामहोर
सर्प नसर्पहि
गासेकिंतं

जीवाभिग १९

अवगाहना जघन्य आंगुलनें असंख्यातमें भागइं कहूं उत्कृष्टो तो एक योजन थकी नव योजन कहूं स्थिती आउखुं जघन्य अंत मुहूर्त्त उत्कृष्टो ते

रीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइं उक्कोसेणं जोयणपुहुत्तं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं ते

त्रन सहस्र वरसनी स्थिती होइं थाकतुं सरवजलचरनी परइं जांणवुं इहां आगतिमां जाइं देव१ ति२ मनुष्य३ नारक४ तेसमुर्छिमथी आवें ति१ मनुष्य२ सरीरी असंख्याता लोकाकासप्रमाणें एतलें उरपरीसर्प कह्या

वन्नं वाससहस्साइं सेसं जहा जलयराणं चउगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पं० से तं उरपरि

हवि भुजपरीसर्प समुर्छिम थलचर भगवान कहइं अनेक प्रकारना भेद कह्या छइं तं जहा कहतां ते किहा जांणवुं तेनो लप्रसीद्ध जाव जे अनेराप्रकारना तेहना

सप्पा से किं तं भुयपरिसप्पा समुच्छिम थलयरा २ अणेगविहा पं० तं० गोहा णउला जाव जे यावन्ने तह

संक्षेपथकी बें भेद कह्या छइं ते जहा नाम ते किहा पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ सरीरनी अवगाहना जघन्य तो आंगुलनें असंख्यातमें भागइं देहमान

प्पगारा ते समासतो दुविहा पं० तं० पज्जत्ता य अपज्जत्ता य सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलासंखेज्ज

उत्कृष्टो एक धनुष थकी नव धनुष लगइं होइं आउखानी स्थिति उत्कृष्टी बयांलीस सहस्र वरस सप्तमांण आउखानुं सेष थाकतुं जलचरनी परें जांणवुं जां लगें आगतिं जाइं

उक्कोसं धणुपुहुत्तं ठिती उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं सेसं जलयराणं जाव चउगति

बेंगतीथी आवइं प्रत्येकसरीरी असंख्याता लोकाकासप्रमाण एतलें भुजपरीसर्प कह्या एतलें समुर्छिम थलचर कह्या हवइं खचर कहइं छइं तेषचरना

या दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पन्नत्ता से तं भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा से किं तं खहय १९

चउविहा कहतां च्यार भेद कह्या छइं ते किहा चरमनी पांषछइं जेहनें ते चरमपंखी १ रोमनी पांषते रोमपंखी २ सरषीएक बीपांषछें तेने समुग्गपंखी विस्तीर्ण पांषवाली विततपंखी हवें चरमपंखी कहें छइं ते चरमपंखी तेहना अनेक भेद कह्या छइं ते किम

र० २ चउविहा पन्नत्ता तं० चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विततपक्खी से किं तं चम्मपक्खी अणेगविहा पं०

वग्गुली प्रमुख जां लगें ते अनेरा प्रकारना भेद ते चर्मपंखी कह्या हवें रोमपंखी ते किम जांणवा ते किम ढंक पंखी १ कंकपंखी २ तेलोमपंखी अनेक भेद कह्या छइं

तं० वग्गुली जाव जे यावन्ने तहप्पगारा से तं चम्मपक्खी से किं तं लोमपक्खी २ अणेगविहा पं० तं० ढंका कंका

जां लगें जे अनेरा तथा प्रकारना होइं तेहनइं रोमपंखी कहीइं डिब्बप्र मुखें छइं स्वामी समुग्गपंखी ते किम तेहनो एक जनेर मनुष्यथी बाहिरलें द्वीपइं होइं सघलीरीतइं इंसवितत पंखी पणि कहेंवा

जाव जे यावन्ने तहप्पगारा से तं लोमपक्खी से किं तं समुग्गपक्खी एगागारा पन्नत्ता एवं विततपक्खी वि

जां लगें जे अनेरा तथा प्रकारना भेद कह्या छइं ते संक्षेपथी बें भेद ते किहा एकदेनांकह्याछें पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ जघन्य तो अंगुलनें असंख्यातमे

श्रीपन्नवणा नीपरइं जांणवुं एवं पन्नवणा ए० सरीरनी अवगाहना सरीरोगाहणा

जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पं० तं० पज्जत्ता य अपज्जत्ता य जहन्नेणं अंगुलस्स असं

भागइं होइं उत्कृष्टो एक धनुष थकी नव धनुष लगइं सरीरमान स्थिति आउखुं उत्कृष्टो बहुत्तर सहस्र वरसनुं होइं सेष थाकतुं सर्व जलचरनी परें जांणवुं

खिज्जइभागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ठिती उक्कोसेणं बावत्तरि वाससहस्साइं सेसं जहा जलयरा जा

जां लगइं च्यार गतें जाइं बेंगतीथी आवइं प्रत्येकसरीरी असंख्याता लोकाकासप्रमाण छइं एतलइं खचर समुर्छिम पंचेंद्रीतिर्यंचयोनीया कह्या सविस्तर पणइं

व चउगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पं० से तं खहयरसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया से

हवेगर्भजगर्भनाउपनाप तेगर्भजतिर्यंचयोनीआ नात्रिणभेदकह्याछइ तेकिहा जलचर थलचरगावा खचरपंखीया हवेगर्भजजल
चंद्रीतिर्यंचकहइछइ थमादि २ चरपंचेंद्रीना

जीवाभि 20 किं तं गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणीया २ तिविहा पं० तं० जलयरा थलयरा खहयरा से किं तं जल

पांचभेदकह्याछइ तेकेहा मछ १ काछवा २ मगर ३ ग्राहक ४ सुसमार ५ एमसर्वभेदसमुर्छिमनाकह्याछे तिम गर्भजनाकहेवा जावअलगइ

यरा २ पंचविधा पं० तं० मच्छा कच्छभा मगरा गाहा सुसमारा सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो जाव जे या

प्रकारनाजलचर होइ तेजलचरनासंखेपथी कोवनेरकह्याछइ तेकहा पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ तेगर्भजपंचेंद्रीनाजीवनेंभगवनकेतलासरीर कह्याछैस्वामीकहे

वन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं० तं० पज्जत्ता य अपज्जत्ता य तेसिं णं भंते जीवाणं कति सरीरगा पं०

हेगोतम च्यारसरीरकह्यां तेकहुंछआलखां उदारीक १ वैक्रीय २ तेजस ३ कारमण ४ सरीरनीअवगाहनाजघन्यतो अंगुलनेंअसंख्यातमेभागेंहोइ

गो० चत्तारि सरीरगा पं० तं० उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स अस

सरीरमांन उत्कृष्टीतीनोहजारयोजनीअवगाहनाहोइ छएसंघयणीहोइ तेकेहा वज्रऋषभनाराचसंघयण १ ऋषभनाराचनामा बीजोसंघयण

खेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं छव्विहसंघयणी वइरोसभनारायसंघयणी उसभनारा

नाराचनाराच संघयण ३ अर्द्धनाराचसंघयण ४ कीलीकासंघयणपांचमुं ५ छेवटुंसंघयणछठुं ६ छसंस्थानहोइ तेकेहा समचउ

यसंघयणी अद्धनारायसंघयणी कीलियासंघयणी छेवट्ठसंघयणी छव्विहसंठिया सम 20

रंससंस्थान प्रथम १ न्यग्रोधपरीमंडलसंस्थान २ साइसंस्थान ३ कुब्जसंस्थान ४ वांमनसंस्थान ५ हुंडक ६ कषायक्रोधादिक च्यार संज्ञाआहारादिक च्यार लेस्याछहोइ

चउरंससंठिया णग्गोहपरिमंडल साई खुज्जा वामणा हुंडे चत्तारि कसाया चत्तारि सण्णाओ छ लेसा

पांचइंद्रीहोइ समुद्घातपांचपहिला आहारकेवलवीना संज्ञीगर्भजवनी पणिअसनी नहोइ वेदधारेंत्रणिवेद होइ पार्याप्तछहोइ अपर्याप्तछहोइ

पंचेंदिया पंच समुग्घाया आदिल्ला सण्णी नो असण्णी तिविहवेया छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ दि

दृष्टित्रणिहोइ केवलदरसणटालीत्रणिदरसनहोइ ज्ञानीहोइ अज्ञानीपणहोइ केतलाएकबेंज्ञानीहोइ केतलाएकत्रणिज्ञानीहोइ जेबेंज्ञानीहोइ तेहनइं निश्चे

ट्ठी तिविहा तिन्नि दंसणा नाणी वि अन्नाणी वि अत्थेगतिया दुनाणी अत्थेगतिया तिनाणी जे दुनाणी ते

गर्भजमांहेंथकिछपनोहोइ तेहनइं मतिज्ञाननहोइ श्रुतज्ञानपणिहोइ तेहनइंत्रणिज्ञानहोइ तेनइंनिश्चइं आभिणीबोहियनाणीतेहनो अर्थ मतिज्ञाननहोइ श्रुतज्ञानंहोइ

नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य जे तिनाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य

अवधिज्ञानंहोइ अज्ञानीइंसमुर्छिमसांउपनो होइ तेहनइंअज्ञानपणइमज लीइ योगत्रणि होइ उपयोग २ होइ

>सणि८ जे तिनाणी ते नियमा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी य एवं अन्नाणी वि जोगे तिविहे उवउ

साकारस्वरूप १ अनाकारस्वरूप २ आहारछदिसिनोत्रम नाहिमांउपजवावती उर्जवुंनारकीमांहें सातमीनरकसुंधी मानमीइंउपजइं तिर्यंचयोनीमांउपजइं सर्वनइंविषइं पणिअसंख्यातवर्षनाआ

ओगे दुविहे आहारो छद्दिसिं उववाओ नेरइएहिं जाव अहेसत्तमाए तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु असंखे

जीवाभि. २१

मुवासाउयवज्जेसु मणुस्सेसु अकम्मभूमगअंतरदीवगअसंखिज्जवासाउयवज्जेसु देवेसु जाव सहस्सा
रो ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी दुविधा मरंति अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु जा
व अहेसत्तमा तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारो चउगतिया चउआगति
या परित्ता असंखेज्जा पं. सेत्तं जलयरा दुविहा से किं तं थलयरा दुविधा पं. तं. चउप्पदा य परिस
प्पा य से किं तं चउप्पदा चउव्विहा पं. तं. एगखुरा सो चेव भेदो जाव जे यावन्ने तहप्पगारा ते समा
सतो दुविधा पण्णत्ता तं. पज्जत्ता य अपज्जत्ता य चत्तारि सरीरगा ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स अ २१

संखे उक्कोसेणं छग्गाउयाइं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं नवरं उव्व
ट्टित्ता नेरइएसु चउत्थपुढवी गच्छंति सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया चउआगतिया परित्ता असंखिज्जा
पं. सेत्तं चउप्पदा से किं तं परिसप्पा दुविधा पं. तं. उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य से किं तं उर
परिसप्पा २ तहेव आसालियवज्जो भेदो भाणियव्वो चत्तारि सरीरा ओगाहणा जहन्नेणं अंगुल
स्स असंखेज्ज उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टि
त्ता नेरइएसु जाव पंचमं पुढविं ताव गच्छंति तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारो

जीवाभि
२१

से संजहा जलयराणं ... जाव चउगतिया दुयागतिया परित्ता असंखेज्जा पं० से तं
उरपरिसप्पा । से किं तं भुयपरिसप्पा? भेदो तहेव चत्तारि सरीरगा ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलअ-
संखेज्ज० उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी सेसेसु ठाणेसु जहा उ-
रपरिसप्पा णवरं दोच्चंपुढविं गच्छंति से तं भुयपरिसप्पा से तं थलयरा । से किं तं खहयरा?
चउव्विहा पं० तं० चम्मपक्खी य जाव तं चेव भेदो ओगाहणा जहन्नेणं अंगुलअसंखे० उक्कोसेणं ध-
णुपुहत्तं ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं सेसं जहा जलयराणं २१

णवरं जाव तच्चं पुढविं गच्छंति जाव से तं खहयर पंचेंदियतिरिक्खजोणिया से
तं तिरिक्खजोणिया । से किं तं मणुस्सा? दुविहा पण्णत्ता तं० संमुच्छिममणुस्सा गब्भवक्कंतियमा-
णुस्सा य । से दो जहा पण्णवणाए तिहिं निरवसेसं भाणियव्वो जाव छउमत्थकेवली य ते समासओ
दुविहा पण्णत्ता तं० पज्जत्ता य अपज्जत्ता य तेसि णं भंते जीवाणं कति सरीरा पं० गोयमा पंच ओरालिए जाव
कम्मए सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्ज० उक्कोसेणं तिन्नि गाउयाइं छव्विहसंघय-
णी छव्विहसंठिता ते णं भंते जीवा किं कोहकसाई अकसाई गोयमा सव्वेवि ते णं भंते किं कोहजी

कइंनोसंग माविनरागादिक इं तिवारें भगवंतकहें ते गर्नजमनुष्यनाजीवनें कषायलेस्यादिक केटलाकहुं नोइं ज्यां लगइंअलेसी
हेगोतमसरवइं होइं गर्नजमनुष्यनें गोतम कहीइंहे गोतम

वा किं आहारसरीरलोवउत्ते जाव लोभसाववत्ता गो. सवेवि ताव तं तेजी दा किं कण्हलेस्सा जाव अले

सरव इंद्रीसहितकहीइंकइं ज्यांलगेनोइंद्रीकेवलपणोहोइं सातसमुदघात होइंतेकेहा वेदना१ कषाय२ मरण३ वैक्रीय४
होइं तेजस५ आहारक६ केवली७

स्सा गो. सवेविसोइंदियोवउत्ता जाव नोइंदियोवउत्तावि सत्तसमुग्घाया प तं वेयणासमुग्घा

सातसमुदघातजो संज्ञीहोइं असंज्ञी असन्नीपणिजा स्त्रीवेदीकहें त्रणिवेदीपुरुष१ अवेदीपणि पांचपर्या
लवा होइं लवा वा स्त्री२नपुंसक३ जाणवा सिहोइं

या जाव केवलसमुग्घाया सन्नीविनोसन्नि असन्निविइत्थिवेदावि तिन्निविजाव अवेदवी प

प्तपर्याप्तिपणिहो दृष्टीत्रणि जाणवा चारदर्शनजाणवा ज्ञानीहोइंसम जेज्ञानी तेकेतला बइंज्ञानी तेमध्येकेतला
इ वा ईजमनुष्यनें कितमाटें होइं एक होइं एकत्रणि

चपज्जत्तापज्जत्तीने तिविहसंदिट्ठी चत्तारिदंसणा नाणीवउ नाणी तेअत्थेगतिदुअनाणी तेअत्थेग

ज्ञानीपणिजाणवा चारज्ञानीकइंतेमन केतलाएकज्ञानीकइंएत जेबइंज्ञानीहो मतिज्ञानी आभिणिबोहियनाणी
केतलाएक पर्यवज्ञानसहितहोइं तेकेवलज्ञानीहोइं इंतेनिश्चइं कइं कहेंतोमतिज्ञानी१

तिनाणी अत्थेगतिया चउनाणी अत्थेगतिया एगनाणी जेदुनाणी तेनियमा आभणिबोहीय

बीजोश्रुतज्ञानीहो जेहनेत्रणिज्ञा तेकेहात्रणिज्ञानआभिणिबोहियनाणीकहेंतोमतिज्ञान१ अथवाबीजोवली
इ नहोइं श्रुतज्ञान२ अवधिज्ञान३ नेह

नाणीय सुअनाणीय जेतिनाणी तेआभणिबोहियनाणी सुतनाणी ओहीनाणीय अहवा आभ 23

एकमतिज्ञान१ बीजुंज्ञानजाणवुं२ मनपर्यवज्ञानत्रीजुंजो जेहनेंचारज्ञान तेनिश्चइं मतिज्ञान१ श्रुतज्ञान२
श्रुतज्ञान लवुं३ होइं

णिबोहियनाणी सुतनाणीय मणपज्जवनाणीय जेचउनाणीय तेनियमा आभणिबोहियनाणी

अवधिज्ञा मनपर्यवज्ञान४ जेहनेंचारज्ञानहोइं तेनिश्चइं मतिज्ञान१ श्रुतज्ञान२ अवधिज्ञान
न३

सुतनाणी ओहिमणपज्जवनाणीय जेचउनाणीय तेनियमा आभिणिबोहियनाणी सुतनाणी ओहि मण

मनपर्यवज्ञानी जेएकज्ञानी तेनिश्चें केवलज्ञानीहोइं इमअज्ञानकहें कोइंबिअज्ञा कोईत्रणिअज्ञानीयोगवा
४ होइं बइं नी ज्ञानी रेम

पज्जवनाणीय जेएगनाणी तेनियमा केवलनाणी एवं अनाणी विदुअनाणी तिअनाणी मण

नायोगी वचनयो काययोगीपणि अयोगीसलेसी उपयोगबे साकार आहारछदिसनो उपजवुंनारकीमा हेवइं
गी होइं प्रतिपन्न कहें नाकार कइं हइं सा

१७८ जोगिवि वइजोगी कायजोगिवि अजोगीवि दुविहेउवउत्ते गो. आहारो छदिसिं उववानेरइएहिं अ

तमीवर्जीनइंउपज तिर्यंचयोनीआमांउपज असंख्यातावर्षनाआउषानावर्जीनइं बीजामनु मनुष्यअकर्मभूमिना
वुं होइं वुं होइंपणि ष्यमांउपजइं

हेसत्तमावज्जेहिं तिरिक्खजोणीएहिं तन्नवान्नं असंखेज्जवासाउयवज्जेहिं मणुस्सेहिं अ

पअंतरद्वीपना मनुष्यदेव असंख्यातावर्षनाआउषानादेव थितिजघन्यतोअंतर्मुहूर्त उत्कृष्टोतोत्रणिपल्योपमनोआ
तामांहेंउपजइं तामनुष्यजवर्जीनइंउप र्तनीहोइं उखोकह्यो

कम्मभूमग अंतरदीवग असंखवासाउयवज्जेहिं वितीजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिनि

जीवाभि
२४

बेते देसमो हाणसमोहया मनुष्यमांथी नइं नरकेसघले अनुत्तरविमानलगें केवलाएकसीकइं जावाइं
मरइ नीकली जावाइं उपजइं

[illegible]पुलिंउवमाइं दुविधमरंती उववज्जा नेरइएसु जाव अणुत्तरोववाइएसु अणेगा तीयासी अंता

अनेकरइं मोक्षइं तेमनुष्यनाजीव केतलीगति केतलीगतिथी आ हे गौतम पांचगतिजा मोक्षनीगतिपचाएण
जाइं सागवंत जाइं वइं इं तिथीआवइं

जाव अंतं करेंति ते णं भंते जीवा कतिगतिया कतिआगतिया पं. गो. पंचगतिया चउआगति-

प्रत्येकशरीरी असंख्याता एतलइं मनुष्य हवइं देवताक तेदेवताके तेजहा भवनप वाणव्यंतर जोतिसी ३
लोकाकासप्रमाणछै कह्या हइंवइं ए तेकेहा ति १ २२

या परित्ता संखेज्जा पं. से तं मणुस्सा से किं तं देवा २ चउव्विहा पं. तं. भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया

वैमानिक हवें तेभवनपतिनादससेरकह्यालइं असुरकुमारथीमांडीआवत एभवनवासीकह्या हवइं व्यंतरकहेछइं
४ तेकहइंछे थनितकुमार१०

वेमाणिया से किं तं भवणवासी दसविहा पं. तं. असुरा जाव थणीया से तं भवणवासी से किं तं

एमसर्वदेवतानोभेदश्रीपन्नवणानी आलगेंसघलोबसेदकह्या तेजहा एकतेपर्याप्ता अपर्याप्ता एवेंभेदहोइ
पदेसरवकहेवो वइ तेकेहा १ २

वाणमंतरा २ देवभेदो भाणियव्वो जाव समासतो दुविधा पं. तं. पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य तओ

त्रणिसरीरदेव वैक्रीय तेजस कारमण अवगाहनालइं एकभवधारणीक १ एकउत्तरवैक्रीय २
तानेहोइ १ २ ३ तेदेकहइं

सरीरगा वेउव्विए तेयए कम्मए ओगाहणा दुविधा १ भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य १४

तिहांजेभवधारणीकहइं तेजघन्यअंगुलनेअसंख्यातमेभागें आ उत्कृष्टेसातहाथनो तिहांजेउत्तरवैक्रीयदेह
रीरहोइ देहहोइ

जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुल. स्स असंखेज्जा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उत्तरवेउव्विया

जेतेजघन्यअंगुलनइं असं उत्कृष्टुलाखयोजनप्रमाणसरीर छइंसंघयणमांहेंएकेंसंघय देवतानेहाडनेबसंघय
संख्यातमेंभागेंहुइं देवतानुंजाणवुं णनही णनेहाडअस्थिन

जहन्नेणं संखेज्जती उक्कोसेणं जोयणसतसहस्सं सरीरगा छण्हं संघयणाणं असंघयणी

हाडण नसाजालबंध तेमाटेंसंघयणविणनहीजेपुद्गल इष्टकांत कांतकमनी जावसर्वसंघातपणें तानइं
नही नही त य जाणइं तेदेव

णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारु नेव संघयणंमत्थि जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव ते सिं संघयणत्ताए प-

परणमइं तेदेवतानेंसंस्थान गौतमदेवतानेंबे तेकेहा भवधारणी उत्तरवैक्रीयएबेंतेदुआ तिहांजेतेभवधारणीसरीर
नहोइ तेदकह्या क१ रीरनाजाणवा

रिणमंति किं संठिया गो. दुविहा पं. तं. भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य तत्थ णं जे ते भव-

तेसमचउरंससंस्थानइंकरीसंठयाकहेता तिहांजेतउत्तरवैक्रियसरी तेअनेकसंस्थानेंसहीतश्रीवीतराग देवतानें
संस्थित एतलेंसहीतः रहोइ तेकहें

धारणिज्जा ते णं समचउरंससंठिया पं. तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते णं णाणासंठाणसंठिया पं.

कषायच्यार लेस्याछइं पांच इंद्रीपांचहो समुद्घातपांचहो सन्नीअसन्नीहोइं नारकीनीपरे स्त्रीवेदहोइ पुरुषवेदहोइ
कह्या मीइं इं इं जेहवेउपजेतेहवोहोइ

चत्तारि कसाया छ लेसाओ पंच इंदिया पंच समुग्घाता सन्नि वि असन्नी वि इत्थीवेदा वि पुरिस

पिणदेवतानेंपुंसकवेद पर्याप्तअपर्याप्तपांचहो नएक समहोइ दृष्टी त्र दर्शनत्रणिहोइ सम्यक्त्वती मिथ्यात्वीवतीत्र
नोहइ इत्ताधाम लिहोइ देवताने ज्ञानी होइ ज्ञानी होइ

जीवाभिग वेदावि नो नपुंसकवेदावि पज्जत्ती पज्जत्तीउ पंच दीट्ठि तिविहा तिन्नि दंसणा नाणीवि अन्नाणीवि त्र
२५
जेग ज्ञानी होइ ते निश्चें त्रणि ज्ञानी होइ अज्ञानी नी भजना होइ उपयोग बेसेर होइ योग त्रणे आहार निश्चें छदिसनो
सा१ ना२ म१ व२ का३ जाणवो त्रसनाडि वती

नाणीवि तिन्नाणी ते नियमा तिन्नाणी अन्नाणी भयणाए दुविहे उवओगे तिविहे जोगे आहारो नियमा
उसन्नपाइ आहार निकारलें जोली पीलो वर्ण धोलो वर्ण ते हनें जालजें आहार आहरइ आवइ उपजवो तिर्यंच मनु
वर्णवकी ष्यथकी हुइ

छदिसि उसन्नं कारणं पडुच्च वन्नओ हालिद्द सुक्किलाइं जाव आहारमाहरेंति उववाओ तिरिय
थितिआउखा नीजघन्य दस सहस्र वरसनी हुइ उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपम नुं पांच अनु मरणो आअसमोहामर
वंतर नी उपजाइ होइ त्तरनी उपजे हुइ इ

मणुस्सेसु ठिति जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दुविहा मरंति
चवीनइ नारकी नासवधुतइ उ तिर्यंच मनुष्यमांहे उप वधुतिनइ देवतामांहे नउपजइ पृथवी१ अप२ वनस्पति३
नउवजइ जइ पांचइंद्रिके उपजइ देवता मनुष्य४ तिर्यंच५ बिगतिथी

उव्वट्टित्ता नो नेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहासंभवं नो देवेसु गच्छंती दुगतिया दुआग
आवइ बेगतिजाइ प्रत्येक एतलें देवतानो अधिकार कह्यो हवे तेउ वाउ त्रस बोल तेत्र समास मकराइ केत
सरीरी असंख्यात कह्या पंचेंद्रीनो अधिकार कहेंछइ कह्या जकालनी

तिया परित्ता असंखिज्जा पं० से तं देवा से किं तं पंचेंदिया से ते इंदिया लीत साधारण तसस्स णं भंते २५

कायस्थिति कहो हे गो० जघन्यतो अंतर्मुहूर्तनी स्थि उत्कृष्टी तो तेत्री सागरोपमनी स्थिति हुइ थावरनीत
तम: तिहुइ बेंद्री आश्री देवता नारकीनी उत्कृष्टी स्थिति आश्री कहीछइ गवनसामा

केवतीयं कालं ठिती पं० गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं ठिति पं० थावरस्स णं
समुद्रइ भगवंत केतला कालनी स्थि हे गो० थोडीतो थावरनी जघन्य अं उत्कृष्टीतो बावीस सहस्र वरसनी थि
तिपणन्नामां मकहीवइ तम तर्मुहूर्तनी स्थिति हुइ तिपृथवीकायनी उपजे हुइ

भंते केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ठिती पं०
हवइ त्रसकायनो जीव त्रसपणें रहितो केतला हे गो० जघन्यतो अंतर्मुहूर्त त्रसमां उत्कृष्टीतो असंख्यातो काल त्रसमां रही
कालसधी रहइ भगवंत कहइ तम रहीवली थावरमां उपजे वली थावरमां उपजइ असंख्याती उत्स

तसे णं भंते तसेत्ति कालओ केवच्चिरं होति गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखि
र्पिणी२ कालएके त्रसकायपणें रहे पुणइ क्षेत्रथकी असंख्यात लोकाकाशप्रदेशप्रमाण हवे थावरकायनें थावरपणइ कालथकी
वली थावरमां आवइ एकालधी कह्यो एके समें हरतें असंख्याती उत्सर्पिणी प्रमाणइ केतलो काल थावरपणइ रहे तिवारे

ज्जाओ उसप्पिणीओ कालतो खेत्तओ असंखेज्जा लोगा थावरस्स णं भंते थावरेत्ति कालओ केवचिरं होति
स्वामी कहे: जघन्यतो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो तो कालरहै तो कालथकी अनंति उत्सर्पिणी कालनी क्षेत्रथकी अनंता लोकाका
हे गोतम: प्रमाण त्रसमां रही वर अनंतकाल थावर रहइ रहइ थावरपणमां शप्रमाण संहरइ तो निर्लेपथाइ

...जीथावरप
णुं पांमइं

गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंता उसप्पिणीओ कालतो खेत्ततो अणंता लोया
हवइ त्रसनि पुद्गलपरावर्त ते पुद्गलपरावर्त आवलीने असंख्यातमे भागे जेतला समय तेतला समय प्रमाणे पुद्गलपराव
केतला प्रमाण हुइ र्तकीधा संसारमां जीव कस्या त्रसपणे हवे अंतरो कहे छे तेतला वनथावरपणीमां जे थावरनइं

असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जतिभागे तसस्स णं भंते केवतीयं

जघन्यकालरहितबिन्तरलोअंत रोहोइ | थावरनैथावरपणामुंकीकेतलेकाले त्रसपणोपामइ एवचिकेतलाकालनोअंतरोहोइ | जिमरहेवानोकाल कालकह्योतिमः | आंतरोपिणतोलवोहवे अल्पबहुत्वकहेछे

कालं अंतरं होत्ती वणस्सतीकालो थावरस्सणं केवतीयं कालं अंतरं होति जहा तसाचट्ठाणएएसे

सामान्यपणेएहनोसावनत्रस निकायनइथोभाधिपणु | केहनैंरअधिका नेगा | थोडाहि इ | घणाहे इ | सरिषा होइ | केविशेषाधिक होइ | हेगोतम:

सिणंसेत्ते तस्सणंथावरसणय कतरेरहिंतो अपावा बहूपावा तुल्लावा विसेसाहियावा गो सव

सर्वथोडात्रसछेत्रसथकीथावरअनंतगुणाहोइ जघन्योत्कृष्टअनंतानंतकाल | एतलइंविनेदेसंसारसमाप नजीवनगर्वतेकह्या | एतलेंविविधप्रतिपत्तिसमाप्ता:

थोवातसाथावरा अनंतगुणासेत्तेदुविधसंसारसमावणगजीवा पं दुविहापडिवत्तीसम्मत्ता

तिहांजेकेतलाएकआचार्य दूमकहइछइं | त्रिणिभेदसंसारसमापनजीवक ह्याछेतेसलीपनता | कहेतांइमकहइछइं आहेसकहइतां | स्त्रीवेद१पुरुषवेद२नपुंसकवेद३

तत्थजेतेएवमाहंसु तिविधासंसारसमावणगाजीवा पं तेएवंमाहंसु इत्थी पुरीसाणपुंसगा

हवेस्त्रीवेदीजीवनाकेतलाभेद कह्याछइं | तेके हा | तिर्यंचयोनिनीस्त्री १ | मनुष्ययोनिनीस्त्री २ | देवतास्त्री ३ | हवइंतिर्यंचयोनीनी

सेतेणा सेत्तंइत्थीउतिविधाउ पं तं तिरिक्खजोणिइत्थी मणुस्सइत्थी देवइत्थीसेकिंतंतिरिक्खजो

स्त्रीनाकेतलाभेद कह्याछे | त्रणिभेदकह्या छइं | तेके हा | जलचरनी स्त्री१ | थलचरनीस्त्री २ | षेचरनीस्त्री ३ | हवइंतेजलचरनीस्त्रीनापांचभेद कह्याछइं

णइत्थीउतिविधाउ पणत्ताउ तं जलयरीउ थलयरीउ खहयरीउ सेकिंतंजलयरीउपंचविधा उ

२६

तेके हा: | माछलीजांलगेंसुसमारी एतलइंजलचरीतेंक हीसंक्षेपेंकरीनइं | हवेथलचरीक हइछे | तेथलचरीनाभइं भेदकह्याछइं | तेके हा | चउपदनीस्त्री १

उ पं तं मछीउजावसुसमारीउसेतंजलयरीउसेकिंतंथलयरीउ२दुविहा पं तं चउपदीय उर

उरपरिसर्पनीस्त्री २ | भुजपरिसर्पनीस्त्री ३ | तेचउपदनीस्त्री ४ | आरतेदेक होछेः | तेकेहा२ आलवी | एगखुरीयादिजांलगेंसणपदी व्याघ्रादि

परीसप्पिय भुयपरिसप्पीय सेकिंतंचउपदीउ२चउविहापं तं एगखुरीउजावसणफईउ

हवइंपरिसर्पनी स्त्रीकहेछइं: | परीसर्पनीस्त्री नाबिभेदकह्या | तेके ही | हीइंचालेतेउरपरिस वी | भुजाइंचालेतेभु जपरीसर्पी | हवइंउरपरिसर्पनीस्त्रीनात्रणि भेदकह्याछे:

२ सेकिंतंपरिसप्पीउ२दुविधाउ पं तं उरपरिसप्पीउ भुयपरिसप्पीउ सेकिंतंउरपरीसप्पीतिवि

तेकहा तेकेहा | अहीने हा | उरगो: नौलीउ | गृहगोधा गिरोली | मविशेष | सर्पनी | मविशेष | सरटीनी | नामविशेष | सरबीनामविशेष | विशेष | वरानाम | छंचलाजीवविशेष | चतुपद कोना

धाउ पं तं गोही नउलीउ गोधाउ सत्लाउ सरडीउ सरीवीउसवाउ खराउ पंचलाईयउ चउपाई

मविशे ष | मूंसकीउ सिद्ध | मगुशिकानाम विशेष | घीरोलीकावि शेष | योधिकानी मविशेष | छिरविरालीनाम विशेष | एतलीनांमभुजपरिसर्पनी मकहीयां

याउ मूंसियाउ मगोसियाउ घरोलयाउ जोहयाउ छिरवरालियाउ सेकिंतंभुयपरिसप्पीउ से

हवेमनुष्यनीस्त्रीकहेछे तेमनुष्यनीस्त्रीनात्रणि भेदकह्याछइं: | तेके हा | कर्मभूमिनी नपनी १ | अपनअंतरदीपनी २ | मनपनी | अकर्मभूमिनी उपनी ३

किं तं मणुस्सित्थीयाउ२तिविधाउ पं तं कम्मभूमीआउ अंतरदीवीआउ अकम्मभूमिआउ

हवेखेचरी कहेछेतेषेचरीनाचारभेद कह्याछइं | तेकेहा: | चामरबंधीनी स्त्री | ज्यांलगेंसमुद्रपंखीलगें कहवी | एतलेंतिर्यंचनोअधिकारकहीउ

सेकिंतंखहयरी चउविहाउ पं तं चम्मपक्खीउ जावसेतंखहयरीउ सेत्तंतिरिक्खजोणिणीउ ८ त्वरमीगउ

जीवाभिग १७

तेअंतरद्वीपनीस्त्रीनाके तलाभेद / स्यातचक्केअठावीसभेद कुंइतेकेहा / एकरुचक द्वीपनी / अत्रासीकद्वीपनी नुपनी / इणेलगइंअठावीसमाशुद्ध दंतद्वीपनीस्त्री

सेकिंतंअंतरदीवयाअठ्ठवीसंतिविहाउ पं तं एगरूईत्ते अत्तासियाउ जावसुधिदंताउ सेतंअं

तरद्वीपनी तेअंतरद्वीपनी स्त्रीकही / हवइंअकर्मभूमिनीस्त्री कहइछइं / तेअकर्मभूमिनीस्त्री नाभ्रीसभेदकह्या / पांचहेमवंतक्षेत्रनी स्त्री १ / पांचएरण्यवतक्षेत्रनी स्त्री २

तरदीवीयाउ सेकिंतंअकमभूमीयाउ तीसविहाउ पं तं पांचसुहेमवए पंचसुएरण्णवएसु पंच

पांचहरीवर्षक्षेत्रनी स्त्री ३ / पांचरम्यकवंतक्षेत्रनी स्त्री ४ / पांचदेवकुरुक्षेत्रनी स्त्री ५ / पांचउत्तरकुरुक्षेत्रनी स्त्री ६ / एहएमतीत्रीसअकर्मभूमिक ही

सुहरिवासेसु पांचसुरमएसु पंचसुदेवकुरासु पंचसुउत्तरकुरासु सेतंअकमभूमीयाउ

हवइंकर्मभूमिनीस्त्री कहइछे / तेकर्मभूमिनीस्त्रीना पनरभेदकह्या / तेकेहा / पांचभरतक्षेत्रनीस्त्री १ / पांचएरवतक्षेत्रनी स्त्री २ / पांचमहाविदेहक्षेत्रनी स्त्री ३

सेकिंतंकमभूमीयाउ पनरसविहाउ पं तं पंचसुभरहेसु पंचसुएरवएसु पंचसुमहाविदे

एत्रणिविधेथइंपनरकर्मभूमि निस्त्रीकही / एतलेंमनुष्यस्त्री कही / हवेंदेवतानीस्त्रीकहेछे / तेदेवतानीस्त्रीनाच्यारभेद कह्या / तेके हा

ते हेसु सेंकम्मभूमगमणुस्सीउ सेतंमणुस्सीउ सेकिंतंदेवत्थियाउ चउविहाउपन्नत्ता तं भव

भवनपतीदेवतानी स्त्री १ / वांणव्यंतरदेवतानीस्त्री २ / ज्योतिषीदेवतानीस्त्री ३ / वैमानिकदेवतानीस्त्री ४

णवासीदेवत्थियाउ वाणमंतरीदेवत्थियाउ जोतिसीयदेवत्थीयाउ वेमाणियदेवत्थीया १७

हवेंभवनवासीदेवनीस्त्रीनेंकहीइंछे / तेभवनवासीदेवतानीस्त्रीनादसभेदकह्या तेकेहा / असुरकुमारभवनवासीदेवतानीस्त्रीथकी ज्यांलगइं

उ सेकिंतंभवणवासीदेवत्थीयाउ दसविहाउ पं तं असुरकुमार भवणवासिदेवत्थीयाउ जा

दशमीथनितकुमारभवनवासीदेवतानीस्त्रीसघलीक हइंवीएतलइदसभेदकह्या / एतलेंभवनवासीनीस्त्रीनादशभेद कह्या / हवेंवांणव्यंतरदेवतानीस्त्रीनाभेद कहइछे

वथनितकुमार भवणवासिदेवत्थीयाउ सेतंभवणवासीदेवत्थियाउ सेकिंतंवाणमंतरादेव

तेवांणव्यंतरदेवतानीस्त्रीना आठभेदकह्या तेके हा / पिसाचवांणव्यंतरादेवतानीस्त्री १ / इहांलगइंआठवांणव्यंतरस्यांलगइंआठइंस्त्रीकहेवी एतलें वांणव्यंतरनीस्त्रीकही

त्थीयउअठविहाउ पं तं पिसायवाणमंतरादेवत्थियाउ जावसेतंवाणिमंतरदेवित्थियाउ

हवेज्योतिषीदेवतानीस्त्रीकहइछेः / तेज्योतिषीनीदेवीनापंचभेदकह्याछेः / तेके हा / चंद्रविमाननीज्योतिषीदेवतानीस्त्री १

सेकिंतंजोतिसीयाउदेवत्थियाउ पंचविहाउ पं तं चंदविमाणजोतिसियदेवत्थियाउ सूर

इंमसूर्यनी २ ग्रहनी ३ नक्षत्रनी ४ ताराविमाननीस्त्री देवताज्योतिषीनी / एतलेंपांचेंतेदेवज्योतिषीनी कही / हवेंवैमानिकनीस्त्रीकहेछइं

गहनखत्ततारविमानजोतिसियदेवत्थियाउ सेतंजोतीसीयाउ सेकिंतंवेमाणियदेवत्थीया

हवेंतेवैमानिकदेवतानीस्त्रीनाबेभेदकह्याछइं / तेके हा / सोधर्मकल्पवैमानिकदेवतानीस्त्रीनोएकभेद / ईसानकल्पवैमानिकदेवतानीस्त्री

उ वेमाणसदेवत्थीयाउदुविहाउ पं तं सोहम्मकप्पवेमाणियदेवित्थियाउ ईसांणकप्पवेमा

जीवाभिग
२८

एवं लेइ कहा छइ | सुधर्मा पणइं करीनइं देवस्त्रीनी स्थिति आश्री कहइ | एक आदेसइं एक प्रकारइं जघन्य अंतर्मुहूर्तनी स्थिति कहइ लोकाकालनी स्थिति कही छइ | भगवंत कहइ हे गौतम | मनुष्य तिर्यंचनी स्त्री नी उपरांइं देवलोकनी अंतर्मुहूर्त नी स्थिति न घटे ते माटे तिर्यंच मनुष्य कह्या

णियदेवित्थियाउ इत्थीणं भंते केवतिकालं ठिती पं. गो. एगेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उ

उत्कृष्टायु तो पंचावन पल्योपमनी स्थिति छइ ईशान कल्पनी अपरिग्रहीतनी उप | ईहां एक आदेसइं एक प्रकारइं जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी स्थिति छइ तिर्यंच मनुष्यनी स्थिति ते पछइ | उत्कृष्टायु नव पल्योपमनी स्थिति छइ ईशाननी परिगृहीत देवीनी उपरांइं

क्कोसेणं पलिओवमपलिओवमाइं एकेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं णवपलि

एक आदेसइं एक प्रकारइं जघन्य अंतर्मुहूर्तनी स्थिति छइ तिर्यंच मनुष्यनी उपरांइं | उत्कृष्टी तो सात पल्योपमनी स्थिति होइ सुधर्मइं परिगृहीत देवी | त्रीजइ प्रकारइं एक आदेसइं एक प्रकारइं जघन्य अंत

ओवमाइं एकेणं आएसेणं जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं एकेणं आएसे

र्मुहूर्तनी स्थिति छइ ति | तिर्यंच मनुष्यनी उपरांइं | उत्कृष्टायु तो पंचास पल्योपमनी सुधर्मकल्पनी अपरिग्रहीतनी उपरांइं एतली देवीनी स्थिति कही | हवे तिर्यंचनी स्त्रीनें भगवन केतला कालनी स्थिति कहइ | भगवंत कहइ

णं जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं पणासं पलिओवमाइं तिरिक्खजोणित्थीणं भंते केवतीयं का

हे गौतम | जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी स्थिति ... | उपरांइं उत्कृष्टी तो त्रण पल्योपमनी स्थिति कही देवकुरुनी उपरांइं | जलचर तिर्यंचनी स्त्रीनी विशेष पछइ हे भगवन

लं ठिती पं. गो. जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं जलयरतिरिक्खजोणीयत्थी

केतला कालनी स्थिति कही स्वामी कहइ | हे गौतम | जघन्य अंतर्मुहूर्तनी स्थिति कही | उत्कृष्टी तो पूर्व कोडिनी स्थिति जाणवी उपरांइं | चतुष्पद थलचरनी

णं भंते केवतीयं कालं ठिती पं. गो. जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी चउप्पदियथलय २८

तिर्यंचयोनिनी स्त्रीनी भगवन केतला कालनी स्थिति कही | जिम तिर्यंच योनिनी स्त्रीनें समुदाइं कही तिम जाणवो उरपरिसर्प तिर्यंचयोनिनी स्त्री नि भगवन केतला कालनी

र तिरिक्खजोणित्थीणं भंते केवतीयं कालं ठिति पं. जधा तिरिक्खजोणित्थिएणं उरपरिसप्प थल

स्थिति कही छइ | तिवारइं श्री वीर विशेष प्रकाश तो न हवो मोकलो | हे गौतम | जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी ||

यरतिरिक्खजोणीत्थीणं भंते केवतीयं कालं ठिती पं. [illegible] उरपरिसप्प

जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी स्त्री | उत्कृष्टी तो पूर्व को

थलयर तिरिक्खजोणीत्थीणं भंते केवतीयं कालं ठिती पं. गो. जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं

डि स्त्री पछइ छइ | ईम भुजपरिसर्पनइं पण कहेवो | ईम खेचर पंखी तिर्यंचनीनें जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी स्थि | ति होइ उत्कृष्टायु तो पल्योपमनो

पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि एवं खहयर तिरिक्ख जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स

असंख्यातमो भाग जाणवो | मनुष्यनी स्त्रीनी स्थिति पछइ छइ | भगवन केतला कालनी स्थिति कही छइ ते प्रकाशो स्वामी कहइ | हे गौतम | क्षेत्र आश्री जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी | उत्कृष्टी तो स्थिति

संखेज्जतिभागो मणुस्सित्थीणं भंते केवतीयं कालं ठिती पं. गो. खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमहु

कही उत्कृष्टी तो त्रणि पल्योपमनी स्थिति होइ उत्कृष्टा आराना | उपरांइं धर्मनुं सेववुं तेह आश्री जघन्य तो अंतर्मुहूर्त ते ज्ञाता पच्चखाण लेवा आश्रि | उत्कृष्टी तो आठ वरस ऊणी पूर्व कोडि

त्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पु

तिन्नि पल्योपम सरिखाव कर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनइं साधवनइं केतला का- हे गोतम क्षेत्र प्रतइं पामी आश्री जघन्य अंतर्मुहू-
आश्री पलेइं मजताणावु ळनी थिति कही छै म नइं जे क्षेत्र र्त्तनी थिति कहइं
पुव्वकोडी। कम्मभूमयमणुस्सीणं भंते केवतियं कालं ठिती पं०? गो० खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमु-

उत्कृष्टी तो त्रणि पल्योपमनी थिति कही धर्मनी प्राप्त पामीनइं जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी थि उत्कृष्टी तो कांइंक
तिकहइं उणी पूर्व
हुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

कोडिनी थिति हवे भरत ऐरवत कर्मभूमनी स्त्रीनें साधवनें केतला कालनी थिति कही छइं हे गोतम क्षेत्र पामीनें
कहइं श्री वीरस्वामी कहै छइं क्षेत्र आश्रीय
देसूणा पुव्वकोडी। भरहेरवयकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केवतियं कालं ठिती पं०? गो० खेत्तं पडु- क्षे०

जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी तो त्रणि पल्योपमनी थिति कहइं उत्कृष्टाइं धर्मनी प्राप्त जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी
थिति कहइं इंहां जा आरानी आश्री थिति कहइं
च्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमु-

उत्कृष्टी तो आठ वरसे ऊणी पूर्व कोडिनी पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह कर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनइं साधवनइं केत
थिति कहइं ह देह नी लाकालनी
हुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। पुव्वविदेह अवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते के-

थिति कहइं हे गोतम क्षेत्र प्रतइं पामी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थि उत्कृष्टी तो पूर्व कोडिनी थि धर्मचरण प्रतें
नइं तिकहइं तिकहइं पामीनइं
वतियं कालं ठिती पं०? गो० खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, धम्मचर- २८

जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी थिति उत्कृष्टी तो पूर्व कोडि आठ वरसे अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनइं साधवनइं केतला काल
होइं ऊणी थिति होइं नी थिति पल्या कहे छै तो कही छइं
णं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। अकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केवति-

हे गोतम अकर्मभूमि जन्म आश्रीनइं जघन्य कांइंक ऊणी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ऊणो ते पल्योपम
नइं असंख्यातमइं भागे ऊणो पल्योपमनी थिति कहइं हेरण्यवंत हेमवंत क्षेत्रनी उत्कृष्टी तो पल्योपमनी थिति कहइं
यं कालं ठिती पन्नत्ता? गो० जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊ-

उत्कृष्टी तो कांइंक ऊणी पूर्व कोडि जीव हेमवंत ऐरण्यवंत क्षेत्र अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनी जघन्य उत्कृष्टी तो कांइंक
जे क्षेत्र स्त्रीनी ते क्षेत्र आउखे जाइ छइं श्रीनइं जन्मनें पामीनइं पलें कांइंक ऊणु पल्योपमनी थिति कहइं ऊणी पूर्व कोडि वर
णगं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वको-

सनी थि हेमवंत क्षेत्रइं जन्म आश्रीनइं जघन्य तो देसे ऊणु पल्योपमनी थिति कहइं पल्योपमनें असंख्यातमइं भागइं ऊणु पल्योपमनी थिति होइं हेमवंत हिरण्यवंत क्षेत्रनें
डी। हेमवएरण्णवए पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणं उक्कोसे-

कृष्टी तो पूर्व पल्योपमनी थिति कहइं संहर जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनें संहरी उत्कृष्टी तो कांइंक ऊणु पूर्व हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रनी
णा तिहां कर्मभूमि आश्री पाछी फेरकहइं कोडि रहइं त्र
णं पलिओवमं, संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। हरिवासरम्मगवास-

अकर्मभूमिमनुष्यनी स्त्रीनइं केतला कालनी थिति कही हे गोतम जन्म आश्री जन्म जघन्य पलें कांइंक ऊणां बे पल्योपम
हेमवंत छै पामीनइं नी थिति होइं
अकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केवतियं कालं ठिई पं०? गो० जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं दो पलि-

पल्योपमने असंख्यातमे भागइं ऊणां वे पल्योपमनी थिति होइ उत्कृष्टी पूरां त्रिणि पल्योपमनी थिति कहइ अकर्मभूमिनी स्त्री कर्मभूमिइं आणी कहइ ते आश्री जघन्य अंतर्मु

हिमवासिनी उ वमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणाइं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं संहरणं पडुच्च जहन्ने

30 र्हूर्त्त राखी पाछी संहरी मुकइ उत्कृष्टी ऊणी पूर्व कोडि रहइ देवकुरु उत्तरकुरुनी अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनें हे भगवन्

णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सइत्थीणं भंते

केतला कालनी थिति कही हे गौतम जन्म आश्री जघन्य कांइक ऊणां त्रिणि पल्योपमनी थिति होइ एक पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणा एतलइं ऊणा

केवतीयं कालं ठिती पं० गो० जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स

त्रणि पल्योपमनी थिति कहइ उत्कृष्टो पूरां त्रणि पल्योपमनी थिति कहइ कर्मभूमि संहरी आणी आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्त राखी पाछी मुकइ उत्कृष्टी तो कांइक ऊणी पू

असंखेज्जतिभागेणं ऊणगाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो० उक्कोसेणं

र्व कोडिनी थिति कहइ अंतरद्वीपना अकर्मभूमक मनुष्यनी स्त्रीनइं हे भगवन् केतला कालनी थिति कही हे गौतम जन्म आश्री

देसूणा पुव्वकोडी अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते केवतियं कालं ठिती पं० गो० जम्म

आश्री जघन्य कांइक ऊणो पल्योपमने असंख्यातमो भाग उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग पल्योपम एतली थिति होइ

णं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊ 30

उत्कृष्टी तो असंख्यातमो भाग ऊणो पल्योपमने असंख्यातमे भागइं संहरण कर्मभूमि आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्त राखी पाछी मुकइ उत्कृष्टी तो कां

णाइं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसे

इक ऊणी पूर्व कोडि प्रमाण थाइ देवतानी स्त्रीनी भगवन् केतला कालनी थिति कही हे गौतम जघन्य तो दस सहस्र वरसनी थिति होइ भवनपति व्यंतरनी

णं देसूणा पुव्वकोडी देवित्थीणं भंते केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता गो० जहन्नेणं दस वासा

न अवधिस्त्री सहनी जोइ उत्कृष्टी तो पंचावन पल्योपमनी थिति होइ इस्यां ईशान देवलोकनी स्त्री आश्री कहइ भवनपतिनी स्त्रीनइं हे भगवन् जघन्य तो दस सहस्र वरसनी थिति होइ उत्कृष्टी

सहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं भवणवासीदेवित्थीणं भंते जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उ

साढाच्यार पल्योपमनी थिति कहइ बलेंद्रनी स्त्रीनी अपेक्षाइं एहमज असुरकुमारनी भवनवासी देवतानी स्त्रीनइं एमज आपवी थिति कही नागकुमार भवनवासी

क्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं एवं असुरकुमारभवणवासदेवित्थीयाएणं नागकुमार

देवस्त्रीनइं केतली थिति कही जघन्य दस सहस्र वरसनी थिति कहइ उत्कृष्टी तो कांइक ऊणा एक पल्योपमनी थिति होइ इम घाक ... देवतानी स्त्रीनें थिति कही

भवणवासदेवित्थीयाए जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं एवं सेसाण वि

जाव थणीय कुमारीस्यां व्यंतरनी स्त्रीनें केतली थिति कहइ हे वा जघन्य तो दस सहस्र वरसनी थिति कहइ उत्कृष्टी तो अर्द्ध पल्योपमनी थिति कहइ

जाव थणियकुमारीणं वाणमंतरीणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्को अद्धपलिओवमं

जीवाभि
३१

योतिषीनीस्त्रीनइं जघन्यनो पल्योपमनो आठमो भागतली थितिकहइं उत्कृष्टो तो आधापल्योपम पंचास सहस्र वरस अधिकजोतिषीनी स्त्रीनी थिति कहइं

जोतिसीणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं

हवइं चंद्रमाना विमाननी योतिषीस्त्रीनइं जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो अर्द्धपल्योपम पंचास सहस्र वरसे अधिक थिति कहइं उत्कृष्टी तिणीपरइं

अब्भहियं चंदविमाणजोतिसियदेवत्थियाए जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं तं चेव

सूर्यविमाननी योतिषीनादेवतानी स्त्रीनइं जघन्य तो पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो अर्द्धपल्योपम पांचसें वरस अधिक तेतला कालनी थिति कहीइं

सूरविमाणजोतिसियदेवत्थियाए जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं

ग्रहनाविमाननी योतिषीनादेवतानी स्त्रीनइं जघन्य तो पल्योपमनो चोथो भाग उत्कृष्टो पल्योपम थिति कहइं

ससेहिं अब्भहियं गहविमाणजोतिसियदेवत्थीणं जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अ

अर्द्ध नक्षत्रनी योतिषीनादेवतानी स्त्रीनी थिति जघन्य तो पल्योपमनो चोथो भागतली थिति जाणवी उत्कृष्टी तो

द्धपलिओवमं णक्खत्तविमाणजोतिसियदेवत्थियाए जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं

इं किंचित् अधिक पल्योपमनो चोथो भाग ताराना विमाननी जोतिषीदेवतानी स्त्रीनइं जघन्य तो पल्योपमनो आठमो भागनी थिति कहइं

साहियं चउभागपलिओवमं ताराविमाणजोतिसियदेवत्थियाए जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवं ३१

उत्कृष्टी तो काइंक अधिक पल्योपमनो आठमो भागनी थिति कहइं हवें वैमानिकनी देवीनी स्त्री जघन्य एक पल्योपमनी थिति कहइं उत्कृष्टी पंचावन पल्योपमनी थिति

मं उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभागपलिओवमं वेमाणियदेवत्थियाए जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं

कहइं हवें सौधर्मे देवलोके वैमानिक देवतानी स्त्री जघन्य तो पल्योपमनी थिति कहइं उत्कृष्टी तो

पणपण्णपलिओवमाइं सोहम्मकप्पवेमाणियदेवीणं भंते केवतियं कालं जहण्णेणं पलिओवमं

ईशान देवलोके देवस्त्रीनइं जघन्य काइंक अधिक पल्योपमनी थिति कहइं उत्कृष्टी तो नव पल्योपम परिग्रहीतनी

उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ईसाणे देवीणं जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं णवप

स्त्रीनी स्त्रीपणें स्त्रीवेदकालथी केतला काल रहइं तिहां एक आदेसे एक प्रकार जघन्य तो एक समय स्त्रीवेदनो उदय कहइं

लिओवमाइं इत्थीणं भंते इत्थिकालओ केवच्चिरं होति गोयमा एक्केणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उ

उत्कृष्टो तो एकसो दस पल्योपम परिग्रहीत पंचावन पल्योपम देवीपणें रहइं पूर्वकोडि पृथक्त्व अधिक

मयं उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियं एक्केणं

हवें बीजो प्रकार एक प्रकार जघन्य अढार पल्योपम पूर्वकोडि पृथक्त्व अधिक रहइं

देसेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठारस पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं एक्केणं आदे

DR. BHAU DAJI
उबई प्रांतीय शाखा रायल एशियाटिक सोसायटी

जहणेणं

जीवाजिव
३३

संजघन्यतो एकसमय ... स्त्रीवेद नी स्थिति कहइं उपसमश्रेणि करतां इं | उत्कृष्टो तो चउद पल्योपम सो धर्मपरिग्रहीतदेवीनी अपेक्षाइं | कोडि पृथुत्क अधिक कल्प वेदवलोकइं | चोथइं प्रकारइं यो ... इं जघन्य

सेणं एक्कं समयं

तो एकसमय पमाण स्त्रीवेद नी स्थिति होइ उत्कृष्टो तो | एक पल्योपम सो धर्म अपरिग्रहीतनी अपेक्षाइं पूर्वकोडि पृथुत्क अधिक कइं पूर्वनी परइं भावना करवी

उक्कोसेणं चउद्दस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं

एक्केणादेसेणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसे णं पलिओवमसयं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भ

पांचमइं आदेसइं | एकं समयइं | उत्कृष्टो पल्योपम पृथुत्क पलइं | पूर्वकोडि पृथुत्क नी स्थिति होइ

हियं एक्केणादेसेणं जह एकसमयं उक्को पलिओ वमपहुत्तं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं

हवे तिर्यंच योनियानी स्त्रीनइं कालइं केतलो का ज स्त्रीवेद पलइं रहि तिवारे भगवंत कहे छे गौतम | जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति रहीबीजेवेदें उपजइं | उत्कृष्टो त्रणि पल्योपम पूर्वकोडि पृथुत्क अधिक कइं

तिरिक्खजोणित्थि णं भंते तिरिक्खजोणित्थि त्ति कालओ केवच्चिरं होति गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओ

सात तसव पूर्वकोडि ना आउखामें सवें देवकुरु इं उपजी एम करइ इं मजगल | चरनी जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति कइं उत्कृष्टु पूर्वकोडि | पृथुत्क सात तस आउखा भवइं उत्तर कुरु जलचरी थाइं

वमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं जलयरीए जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीपु ३३

चउपद थलचर तिर्यंच जिम कह्या इं अनइं तिर्यंच कह्या तिम जजोणवाइ हां पलि विस्तारे करी | उरपरिसर्पी भुजपरिसर्पनी स्त्रीनइं | जिम जलचरी

हुत्तं चउप्पदथलयरी तिरिक्खजधा उहिता तिरिक्खा उरगपरिसप्पिभुयपरिसप्पित्थीणं जं

नी स्थिति कही तिम जजोणवी ... खेचरीनि बिलीनइं | जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति कइं | उत्कृष्टो पल्योपमनें असंख्यातमें भागि | पूर्वकोडि पृथुत्क इं सात तस वक

हा जलयरणी खहयरी जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं पु

री आउखामें संचरें खचरी ति मनजाणवी | हवइं मनुष्यनी स्त्रीनें भगवन स्त्रीवेद पलइं केतलो काल रहइं | तिवारें भगवंत कहे हे गौतम | पांच क्षेत्र आश्री जन्म पामीनइं | जघन्य अंतर्मुहूर्त्त नी स्थिति रही

व्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं मणुस्सित्थीणं भंते कालतो केवच्चिरं होति गो खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अं

उत्कृष्टी तो त्रणि पल्योपम उपरि पूर्वकोडि पृथुत्क अधिक कइं सात तसव पूर्वकोडि ना आउखामें स्त्रीवेद वक्कुराइं उपजइं इम पाछली परइं जाणवु | धर्मचरणनइं आश्रीनइं | जघन्यतो एक समय उपसमश्रेणि

तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं धम्मचरणं पडुच्च जहन्ने

करतइं कइं उत्कृष्टो तो आठवरस उणो पूर्वकोडि बालपणाम | सव आश्री ला चारित्र पलें इंम कर्मभूमिनी स्त्रीनें जाणवु | इम भरत ऐरवतनी स्त्रीनें जाणवु | एतलो विशेष क्षेत्रने आश्रीनें देवकुराइं

णं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी एवं कम्मभूमियावि भरहेरवयावि णवरं खेत्तं पडु

जघन्य एक समय उप जइं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति कइं उत्कृष्टी तो त्रणि पल्योपमनी स्थिति कइं उपरि कांइं उणी पूर्व | कोडि अधिक नी स्थिति कइं पाछिलास वनी स्थिति से लता | धर्मचरणआश्रीनइं

च्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाइं पुव्वकोडीअब्भहियाइं धम्मच

जघन्यतो एकसमय ख्यायो पश्चा उत्कृष्टी तो कोइक ऊणी पूर्वकोडिनी थिति कहइ। पूर्वमहाविदेह पश्चिममहाविदेहनी मनुष्यनी स्त्रीनें
मसाहरण आश्री नइं

जीवाभि० रणं पडुच्च जहन्नेणं एकसमयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी पुव्वविदेहअवरविदेहीणं

३३

क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति होइ उत्कृष्टी तो पूर्वकोडि पृथक्त्वनी थिति होइ तत्त्व आश्री धर्माचरण आश्री जघन्य तो एकसमय उपरी मश्रोलि करतें उत

संतेखेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एकं स

कृष्टी तो आठवरस ऊणी पूर्वकोडिनी थिति कहइ। अकर्मभूमिमनुष्यनी स्त्रीनइं भगवान केतला कालनी थिति कहइ हे गौतम जन्मआश्री नइं

क मयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी अकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केवतिं गो जम्मणं पडु

जघन्य कोइक ऊणो पल्योपमनी थिति पणि केतलइ ऊणुं पल्योपमनें असंख्यातमें भागइ ऊणो पल्योपम उत्कृष्टें तो त्रण पल्योपमनी थिति कहइ

च्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणं उक्कोसेणं पलिओवमा

पूर्वकोडि अधिक थिति कहइ हेमवंत क्षेत्र एरण्यवंत क्षेत्र अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनें भगवन केतला कालनी

इं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं हेमवतएरण्णवत अकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केव

थिति कहइ हे गौतम जन्मआश्री नइं जघन्य कोइक ऊणी पल्योपमनी थिति असंख्यातमें भागइ ऊणी उत्कृष्टी तो पल्योपम

तीयं गो जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणं पलिओवमं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं उक्कोसेणं प ३३

संहरण कर्म आश्री ... उत्कृष्टी तो त्रण पल्योपमनी थिति कोइक ऊणी ×

*संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिउवमाइं। (उ.५

नी थिति कहइ संहरण आश्री जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी थिति होइ उत्कृष्टी तो कोइक ऊणुं पूर्वकोडि अधिक एतलीनी थिति होइ

लिओवमं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहि

हरीवर्ष क्षेत्र रम्यक क्षेत्र अकर्मभूमिनी स्त्रीनइं भगवन केतली थिति कहइ हे गौतम जन्म आश्रीनें जघन्यतो कोइक ऊणी बे पल्योपम

यं हरिवासरम्मवास अकम्मभूमगमणुस्सीणं भंते केवतिं गो जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणा

पम केतलें ऊणां पल्योपमनें असंख्यातमें भागें ऊणां बे पल्योपमनी थिति होइ उत्कृष्टी तो बे पूरा पल्योपम संहरवानी थिति कहइ

इं दो पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगाइं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं सं

जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त ... उत्कृष्टो तो बि पल्योपम उपरि कोइक ऊणी पूर्वकोडिनी अधिक थिति होइ उत्तरकुरुक्षेत्र

हरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणपुव्वकोडिअब्भहियाइं उत्त

देवकुरुक्षेत्र जन्म आश्री जन्मपामीनें जघन्यतो कोइक ऊणां त्रणि पल्योपम केतलइ ऊणां

रकुरु देवकुरुस जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्ज

संहरण करतां ... आश्रीनइं जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त संहरइ उत्कृष्टो तो त्रिणि पल्योपम

तिभागऊणाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं त्ति

जिवाभिग
३४

उपरि कांइक ऊणी पूर्वकोडि अधिक एतली थिति होइ। अंतरद्वीपनी अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनइं जन्मनेंआश्रीनइं केतली थिति कही जन्मयामीनइं

लिपलिउवमाइं देसूणाइं ... अंतरदीवगअकम्मभूमगमणुस्सीणं जम्मणं पडु

जघन्यतो कांइक ऊणउ पल्योपमनें असंख्यातमइं भागइं पल्योपमनें असंख्यातमें भागें ऊणु एतली उत्कृष्टी तो पल्योपम
भाग पल्योपम थिति होइ

डुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिउवमस्स असंखिज्जतिभागं पलिउवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणं उक्कोसेणं प

नें असंख्यातमा भागनी थिति संहरणआश्री जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तइं उत्कृष्टु तो पल्योपमनो असंख्यातमो भाग थिति
कूइं संहरइ कूइं

लिउवमस्स असंखेज्जतिभागं संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं पलिउवमस्स असंखेज्ज

उपरि कांइक ऊणी पूर्वकोडि अधिक एतली देवतानी स्त्रीनें सगवनकायस्थिति संसारवजे पूर्वइं संचिट्ठणा रहवानी
थिति होइ सामान्य विशेष सर्व स्थिति कही तिम ज ते ... थिति कही हवइं

तिभागं देसूणपुव्वकोडीए अब्भहिया देवित्थीणं भंते देवित्थिति कालो केविच्चिरं होइ संचिट्ठ

अंतर कहइ स्त्रीनें सगवन स्त्रीपणुं पामीनइं स्त्रीवेद मूकी वली गोत(म) जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनुं अंतरु उत्कृष्टु तो वनस्प
नइं स्त्रीपणो केतलेंकालें पामें केतलो अंतर होइ हे म तीनी परें अनंता

णा सा ठिइत्ति भाणियव्वा इत्थीणं भंते केवतीयं कालं अंतरं होति गो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणं

कालनुं अंतरु होइ धर्म इम सर्व तिर्यचनी स्त्रीनें जा मनुष्यनी स्त्री क्षेत्रआश्रीन जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनुं अंतर
चरणआश्रीनइं णवु नइं इ रुं होइ उत्कृ

तकालं वणस्सतीकालो एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीणं मणुस्सित्थीए खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

कांइक ऊणी ... स्त्रीनें ... पूर्वकोडि ... पल्योपम ... कोइ स्त्री ... अंतर्मुहूर्त्तइं ... [illegible]

३४

ष्टु तो वनस्पतीनी परें अनंता धर्मचरणआश्री जघन्य समय उत्कृष्टु तो अनंता काल ओलगी कांइक ऊणो अप
कालनुं अंतरु इं मरह इं नइं नेआश्रीनें लनुं अंतरु होइ र्द्ध पुद्गल परावर्त्त लागइं

उक्कोसेणं वणस्सतिकालो धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्ग

चारित्रनी ... इम जांणो पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेहनी अस्त्री ... अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्रीनें सगवनकेत
मरहोइ हइं अंतर कहे

लपरियट्टं देसूणं एवं जाव पुव्वविदेह अवरविदेहियाओ अकम्मभूमगमणुस्सित्थीणं भंते के

लोकालनुं अंतरु होइ स्त्रीवेद ... जन्मआश्रीनें जघन्य तो दस सहस्र वरस ... जघन्य थिति देवतानी थाइं
... स्त्रीवेद ... केतलो ... तो एतलो अंतर ते किम अकर्मभूमिनी स्त्री तिहांथी चवी कर्मभूमि

वतियं कालं अंतरं होति गो जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं

मनुष्यपणें अवतरइं तिहांथी चवी अंतर्मुहूर्त्तइं अकर्म जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं अंतरु कइं अकर्मभूमिनी कर्मभूमिं संहरी ते
... स्त्री पणें थाइं उत्कृष्टु तो वनस्पतीनी परें काल ... ते ... [illegible]

उक्कोसेणं वणस्सतिकालो संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो

... [illegible] ... उत्कृष्टु तो वनस्पतिनी परें अ
... नंता कालनुं अंतरु होइ

एवं जाव अंतरदीवियाओ देवित्थियाणं सव्वासिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति

वे स्त्रीना ... केहोर ... केहोर ... बहु ... सरिखी ... विशेष अ
... तिर्यचनी स्त्रीनें ... देवनी स्त्री नि ...

कालो एतासिं णं भंते ... हिंतो अप्पा वा ... तुल्ला वा वि

कांइ काम ... अनंतक ... छै ...
मा अंतर ... आश्री नइं ...
... विशेष ... मनुष्य ... स्त्री ...

धिकहोइ हेगोतम सरवथकीथोडीमनुष्यनीस्त्रीसंष्यात तिर्यंचजोनिनीजातिनीस्त्रीअसंष्यातगुणीघणीदीपघणाअनइंवकोडाकोडिवलीतेथकी नीसमुद्रअसंष्याताते माटेतेपणिअसंष्यातिकुइं तेथकीदेव

सेसाहियाओ गो सव्वथोवाओ मणुस्सित्थियाओ तिरिक्खजोणित्थीयाओ असंखेज्जगुणाओ देवित्थि

स्त्रीअसंष्यातगुणी ज्योतिषीसौधर्मसातिप्रसेकअसंष्याआश्रीरासि जीजोतिर्यंचीनोअलपक खचरी एत्रणिसेदमा भवनपतिव्यंतर प्रमाणतेसामान्यअलबहुत्वकह्यातेनेतर हेजैजलचरी १ थलचरी २ ३ हेथकी

याओ संखेज्जगुणाओ एतासिणं भंते तिरिक्खजोणियाणीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरी

केहीस्त्रीथोडीकुइंघणीहोइं सरषीहोइं विशेषाधिकहोइं हेगोतम सर्वथकीथोडी षचरतिर्यंचयोनीयानीस्त्रीकुइं

णय कतरा २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा गो सव्वथोवा खहयरति

ससावइं तेथकीथलचरतिर्यंचयोनियानीस्त्रीस्वतावे असंष्यातगुणीअधकीहोइं तेहथकीजलचरतिर्यंचनीस्त्रीसंष्यातगुणीकुइंलवणकालोदधिस्वयंभूरमणमत्स्यअसंष्यातावतीहवि

रिक्खजोणीया थलयरा तिरिक्खजोणियाओ संखेज्जगुणाओ जलयरी तिरिक्खजोणि संखे

मनुष्यस्त्रीतेत्रीतुअलपबहुत्वकहीइं ष्यनी स्त्री नइं कर्मभूमनी १ अकर्मभूमनी २ अंतरद्वीपनी ३ एहमांकेहीस्त्रीथोडीथ एहनासाटवत्नमनु

ज्जगुणाओ एतासिणं भंते मणुस्सीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाण य कय

लीहोइं हेगोतम सर्वथीथोडी अंतरद्वीपनी अकर्मभूमनीमनुष्यनीस्त्रीकुइं क्षेत्रनाअल्पपणावती देवकुरुक्षेत्र उत्तरकुरुक्षेत्र अकर्मभूमी

रा २ गो सव्वथोवाओ अंतरदीवगा अकम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म

नीमनुष्यनीस्त्रीएवेसरषीकुइं अनइंअंतरद्वीपथीसंष्यातगुणीकुइं हेमवंतक्षेत्र हरीवर्षक्षेत्रहेरण्यवतक्षेत्र रम्यकवर्षक्षेत्र नीअकर्मभूमि नीमनुष्यनीस्त्रीएवेसरिषीछेसामान्यवती तइंसामान्यक्षेत्रवतीहेम

भूमगमणुस्सित्थिओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ हेमवय हिरण्णवयवासि कम्मभूमगमणुस्सि

वंतनेरणय उपेरुकुइंसंष्यातगुणीकुइंपणिअसस्थितिवतीउसनिघणीकुइंतेमाटेसंष्यातगु एबेबोमेसंष्यातगुणीस्यामाटेंक वंतनी लीबेएहक्षेत्रअल्पसरनक्षेत्रहेरवतक्षेत्रकर्मभूमिनीमनुष्यनीस्त्री र्मभूमिवतीघणीउपजइं

याओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ हरिवास रम्मयवास अकम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि संखिज्ज

पूर्वविदेहपश्चिम करमभूमीकमनुष्यनीस्त्रीस्वतो एबेसरषीक्षेत्रवतीसंष्यातगुणीसमा उपजेहवेदेवीनोथोडाअल विदेह वइंकरीनइं टइंअजितनाथनेसमसाधिघणी पबहुत्वकहेछइं

गुणाओ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि संखिज्जगुणाओ एतासिणं भंते दे

एहनेसाभवनपतिदेवस्त्रीनेभवनवासीनीस्त्रीनइंवाण वैमानिकनीस्त्रीनइं एहमांकेहा२थकीथोडीघणीहोइंअल हेगोतम मंतरनीस्त्रीनेजोतिषीनीस्त्रीनइं पबहुत्वपणे४

वित्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणीयाण य कतराओ कतरेहिंतो अप्पा

सर्वथीथोडीवैमानीकदेवनी तेथकीभवनपतिनीस्त्रीअसंष्यातगुणीअधिकीअंगुलमात्रक्षेत्रप्रदेशरासिप्रथमवर्गमूलगुणीतेवी स्त्रीस्यामाटेंअंगुलक्षेत्रप्रदे नरासिजेनलीप्रदेशराशितेतलीश्रेणिप्रदेशरासिमात्रीसतेथकीजोतिषीनीस्त्रीअसंष्यात शप्रमाणकइं तेवती गुणीसंष्यातयोजनप्रमाणकश्रेणीमात्रखंडप्रमाण

वा ... सव्वथोवाओ वेमाणियाओ भवणवासिदेवित्थीयाओ असंखेज्जगुणाओ जोतिसियदेवित्थी

४मितानाहीमनेप्रमाणमाटइं एहनइंसनव तिर्यंचयोनिनीस्त्रीन जलचरनीस्त्रीन थलचरनीस्त्रीनें खचरीनें मनुष्यनीस्त्रीनइं ११ १२ ३ ४ ५

याओ संखेज्जगुणाओ एतासिणं भंते तिरिक्खजोणियाणं जलयरीणं खहयरीणं मणुस्सित्थी

श्रीजीवाभिगमः ३६

कर्मभूमिनी स्त्री नइ ६ अकर्मभूमिनी स्त्री नइ ७ अंतरद्वीपनी स्त्री नइ ८ देवनी स्त्री नइ ९ भुवनपतिनी स्त्री नइ १० व्यंतर

याणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमिआणं अंतरदीविआणं देवत्थीयाणं भवणवासिणीयाणं वा-

नी स्त्री नइ ११ ज्योतिषीनी स्त्री नइ १२ वैमानिकनी स्त्री नइ १३ एहमांकेही २ थकी थोडी घणी सरखी विशेषाधिक हुइ ४ हे गोतम सर्वथी थोडी अंतरद्वीपनी अकर्मभूमिनी मनुष्यनी

णमंतरीणं जोतीसणीणं वेमाणीणीय कयरे२हिंतो अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा अंतरदीवग-

स्त्री हुइ खेत्र नाथोडा वतीथोडी होइ १ देवकुरुखेत्र उत्तरकुरुखेत्रनी मनुष्यनी स्त्री एबेसंख्यातगुणी अधिकी बहुखेत्रना बाहुल्यपणा वती २ एजाणवी

अकम्मभूमगमणुस्सत्थियाउ देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमगमणुस्सत्थियाउ दोवि संखिज-

बेसंख्यातगुणी हरीवर्षखेत्र रम्यकखेत्र अकर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्री एबइ संख्यातगुणी अधिकी हुइ ३ हेमवंतखेत्र ऐरण्यवतखेत्र

गुणाउ हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमगमणुस्सत्थीयाउ दोवि संखेजगुणाउ हेमवंतएरणव-

अकर्मभूमिमनुष्यनी स्त्री एबेसंख्यातगुणी अधिकी हुइ ४ भरतखेत्र ऐरवतखेत्र कर्मभूमिकमनुष्यनी स्त्री बेसंख्यातगुणी आजितनाथ वतें वारें घणी उपजे माटें असंख्यातगुणी कही ५

सि अकम्मभूमिग दोवि संखेजगुणाउ भरहेरवयवास कम्मभूमगमणुस्सत्थीउ दोवि संखेज-

पूर्वमहाविदेह पश्चिममहाविदेहनी कर्मभूमिकमनुष्यनी स्त्री एबे असंख्यातगुणी अधिकी हुइ ६ कर्मभूमि वती घणी उपजइ ७ तेथकी वैमानिकदेवस्त्री असं

गुणाउ पुव्वविदेह अवरविदेहवास कम्मभूमिकमणुस्सत्थियाउ दोवि संखिजगुणाउ वे- ३६

ख्यातगुणी हुइ ७ तेथकी भुवनपतिदेवस्त्री असंख्यातगुणी हुइ ८ तेथकी खेचरतिर्यंचयोनिनी स्त्री संख्यातगुणी कही हुइ श्रीनीरविकुजीइं बोध हे हुइ ९

वेमाणियदेवत्थियाउ असंखेज्जगुणाउ भवणवासिदेवत्थियाउ असंखिज्जगुणाउ खहयरति-

तेथकी थलचरतिर्यंचनी स्त्री असंख्यातगुणी होइ १० तेथकी जलचरतिर्यंचियोनियानी स्त्री

रिक्खजोणिणीयाउ संखेजगुणाउ थलयरतिरिक्खजोणिणीयाउ असंखेजगुणाउ जलयरतिरि-

असंख्यातगुणी हुइ ११ तेथकी वाणव्यंतरदेवनी स्त्री असंख्यातगुणी हुइ १२ तेथकी ज्योतिषीनी स्त्री संख्यातगुणी हुइ १३

क्खजोणिथियाउ संखेजगुणाउ वाणमंतरदेवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ जोतिसियदेवत्थियाउ

हवे स्त्रीवेद नामें मोहनी कर्मनी प्रकृतिनी केतला कालनी बंधनी स्थिति कही जघन्यतो सागरोपमना साढा सातसा गपल्योपम नें असंख्यातमें भागइं ऊ

संखेजगुणाउ इत्थिवेदस्स णं भंते कम्मस्स केवतियं कालं ठिती पं० गो० जहन्नेणं सागरोवमस्स दिव-

न स्थिति हुइ ते किम स्त्रीवेद कर्मनी उत्कृष्ट सत्तरसागरोपमनी कोडाकोडिनें भागइं विहचें जे आवें ते पल्योपमअसंख्य एभागन्यून उस्थिति बंधनि मिथ्यात्वनी उत्कृष्टी स्थिति घस्थितिकही उत्कृष्टीपनरकोडाकोडिसागरोपमनी स्थितिकही अनइ पनर

डोसत्तभागे पलिओवमस्स असंखिज्जतिभागेण ऊणो उक्कोसेणं पनरससागरोवमकोडाकोडीओ

सवससनी अबाधा उत्कृष्ट वरसजाइं विपाक उदयनावइ अबाधा कालपरिहीन कर्मस्थिति पोतइ रहें कर्म निषेक कर्मदलकनी रचना रहइ हवें स्त्रीवेदकर्मनो स्यो प्रकार कह्यो ते संस्वरूपें कहीइ तिवारें भगवंत क हें

पणरसवाससयाइं अबाधा अबाऊणीया कम्मतिती कम्मणिसेउ इत्थिवेदे णं भंते किंपकारे

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी संग्रहालय

हेगो ऊफकरावरत्रीसाषाकही एमजेह्नीनाविषयनो हवेपुरुषनात्रणिभेदकह्याछेकेहजाणवा मनुष्ययोनियापु
नम ऽत्रिसमाननरनेदाहस्यकही अधिकारकह्यो तिर्यंचयोनियापुरुष१ रुष२

पं.णं उक्कोसेणं तिन्नि समाओ पं. सेत्तं इत्थियाओ सेकिंतं पुरिसा तिविहा पं. तं तिरिक्खजोणियपु

देवतानापुरुष ३ हवेतिर्यंचयोनिया पुरुषनात्रणिभेदकह्याछइ तेजहातेकेहा जलचरपुरुष१

रिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा सेकिंतं तिरिक्खजोणियपुरिसा तिविहा पं. तं जलयरा थ

थलचरपु खचरपुरु इमस्त्रीवेदनीपरेंभेदकहेंवो यावतखेचरलगें तेखचरतिर्यंचयोनीयापुरुषलगें कहेंवुं
रुष२ ष३ कहेंवु एतलेतिर्यंचपुरुषकह्या

लयरा खहयरा इत्थिभेदो भाणियव्वो जाव खहयरा सेत्तं खहयरतिरिक्खजोणि

हवेमनुष्यपुरुषकहेंछइ तेमनुष्यपुरुषनात्रणि कर्मभूमिनापुरु अकर्मभूमिनापु अंतरद्वीपनापुरुष३
भेदकह्या तेजहाकहेंता तेकेहा ष१ रुष२

यपुरिसा सेकिंतं मणुस्सपुरिसा तिविहा पं. तं कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगाय

अकर्मभूमिना३० भेदनापुरुष छपनभेदअंतर एवंएकसोएकभेदमनुष्यपुरुषकहइ हवेदेवपुरु तेपणि स्त्रीभेदनी
पनरभेदकर्मभूमिनापुरुष१५ द्वीपनामनुष्य५६ षकहेंछइ तेदेवपुरुषनाच्यारभेदकह्या परेंभेदकहेंवा

अकम्मा ३० कम्मभूमग १५ अंतरदीवा ५६ सेत्तं मणुस्सपुरिसा चउव्विहा पं. तं इत्थिभेदो भा

जांसर्वार्थसिद्धजगें पुरुषवेदनेंकहिंवो केतलाकालनी थितिकहीछें भगवं जघन्यतो अंतर्मुहूर्तनीथिति
पुरुषवेदनेंभगवन तकहेंछेगोतम होइ

णियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धा पुरिसस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती पं. गो. जहण्णेणं अंतोमु

उत्कृष्टीतोतेत्रीससागरोपमनीतत्वस्थिति तिर्यंचयोनिआपुरुषनीयोनि मनुयावतउद्धे नि अजेस्त्रीनीथितिक
उइंपंचानुत्तरनीपेरुखाइ यापुरुषनी होइ कहेंवी

हुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं मणुस्सपुरिसाणं जाचेव इत्थिण

तिमपुरुषनीथिति देवपुरुषनीजाणगइ सर्वार्थसिद्धिलगेंजेहवीथितिछइ तेहवीजाणवी तिमपनअणाइकहीव
रतिकहेंवी

ठिती सच्चेव भाणियव्वा देवपुरिसाणवि जाव सव्वट्ठसिद्धाणं ठिती जहा पण्णव

तिमपुरुषनीथिति पुरुषनेंभगवनपुरुषपणें केतलाकाललगें कायस्थिति जघन्यतो अंतर्मुहूर्तपुरुषवेदमारही
कहेंवी रहइभगवंतकहइ हेगोतम अनेरेवेदइंजाइ

णाए तहा भाणियव्वा पुरिसे णं भंते पुरिसेत्ति कालओ केवच्चिरं होति गो. जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

उत्कृष्टुंशतसागरोप एकसोथीमांडीनवसेंजगेंपु तिर्यंचयोनीयापुरुषनेंभ कालथकीकेतलाकालनीथितिकही
मपृथुत्क रुषवेदरहइ गवन तिवारेंभगवंतकहें

उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं तिरिक्खजोणियपुरिसे णं भंते कालओ केवच्चिरं ति

होगो जघन्यअंतर्मुहूर्तपु उत्कृष्टीतोपूर्वकोडिपृथुत्क अधिकत्रणिपल्योपमनीथितिछइ इमतिमजसंचिठणाकही
इमः रुषपणिरहि साधनापाछलीपरइजाणवी तेकहीनें

ठे. जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तमब्भहियाइं एवं तहेव सं

तिमकहेंवो जां खचरतिर्यंचयोनियापुरुषलेपलितिमजजघन्यपणइ पूर्वनीपरें मनुष्यपुरुषनेंभगवन कालथकीके
लगइ थितिकहेंवी

चिट्ठणा जहा इत्थीणं जाव खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसस्स संचिट्ठणा मणुस्सपुरिसाणं भंते का

जीवाभि
३८

तलाकालनी स्थिति कहइं हे गौतम क्षेत्र आश्रीनइं जघन्य पुरुषवेदनी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइ उत्कृष्टी तो पूर्वकोडि पृथक्त्व कांइ अधिक त्रणि पल्योपमनी स्थिति कहइ देवकुरु उत्तरकुरुनी

लतो केवच्चिरं होति गो खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वको

अपेक्षाइं करीनइं धर्मचरण आश्री एका पोग्रामनो वधकी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति कहइ उत्कृष्टी तो आठ वरसे ऊणी पूर्वकोडि षायक सार्थ कहइ

डिपुहत्तमब्भहियाइं धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी

इम धर्मचरण आश्री सर्वविरति आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति कहइ उत्कृष्टी तो आठ वरसे ऊणी पूर्वको जिसर्व विरति रहे इम सघले कहीइं जां लगइं महाविदेह

एवं धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी सव्वत्थ जाव महाविदे

पश्चिम माहि विदेह अकर्मभूमिक नामइं मनुष्य पुरुषनइं जिम अकर्मभूमिनी स्त्रीनइं स्थिति कही तिम अकर्म भूमिना पुरुषनी जां लगइं अंतरद्वीपनो जाग इं कहइ वो स्थिति पल्यो पुरुषनो

ह अवरविदेह अकम्मभूमकमणुस्सपुरिसाणं जहा अकम्मभूमकमणुस्सइत्थीणं जाव अंतर

देवपुरुषनें जिम स्थिति कही छइं जतिवें सर्वनइं रहेवानो काल जां सर्वार्थसिद्धि लगइं कहेवो पुरुषवेद मूकीनइं लगइ वनवली पुरुषवेद केतलइं अंतरें

दीवकाणं देवपुरिसाणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाणं पुरिसस्सणं भंते

पामइं स्वामी कहे छइं सांभलो हे गौतम जघन्य तो एक समय उपसमश्रेणि चढति × उत्कृष्टी तो वनस्पतीनी परें अनंता कालनो अंतरो होइ तिर्यंच योनीया पुरुषनें

केवतिकालं अंतरं होति गो जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो तिरिक्खजोणिय ३८

थकें नहीं तो स्त्री नपुंसक थया रपि श्रेणि तो नरतवति

जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनो अंतरो होइ उत्कृष्टी तो वनस्पतिनी परें अनंता कालनो अंतरो होइ इमज खचर तिर्यंच योनिया पुरुष आनइं व नइं

पुरिसाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो एवं जाव खहचरतिरिक्खजोणियपुरिसा

णी मनुष्य पुरुषनइं हे तावत केतला कालनो अंतरो होइ स्वामी कहे हे गौतम क्षेत्र आश्रीनें पामी नइं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो अंतरो होइ

णं मणुस्सपुरिसस्सणं भंते केवतियं कालं अंतरं होति गो खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

उत्कृष्टुं तो वनस्पतिनी परें अनंता कालनो अंतरो होइ धर्मचरण आश्री द्रव्य लाव चारित्रवंत मीमें जघन्य एक समय पाल्यक भाव वरतनइं उत्कृष्टो तो अनंता कालनो अंतरो होइ अनंती उ

उक्कोसेणं वणस्सतिकालो धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंता

सर्पिणी अवसर्पिणी काल कहइ ज्यां लगें अवड्ढ कांइक ऊणो पुद्गल परावर्त्त का अंतरो होइ कर्मभूमिनइं जां माताविदेह लगइं सां लगइं धर्मचरण एक एक समय मुहूर्त्त अंतर का

ओसप्पिणीउस्सप्पिणीओ जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं कम्मभूमिकाणं जाव विदेह जाव धम्म

यक त्वाव त पन्नाम श्रेणि कहइ सर्वजिम स्त्रीनेक वाकतो स्थिति म अंतरद्वीप लगइं कहेवो देवपुरुषनें जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं मनुष्य पर्याय पामइ वली अंतर्मुहूर्त्तइं देवता थाइ उत्कृष्टी तो वनस्पतिनी परें

चरणे एक्को समओ सेसं जहित्थीणं जाव अंतरदीवगाणं देवपुरिसाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं व

अनंता कालनुं अंतर होइ भवनपति देवपुरुषनइं ति हां लगइं जिहां सहस्रारपर्यन्त तेनउं नरो जघन्य तिम अंतर्मुहूर्त्तनो अंतरो होइ उत्कृष्टुं तो वनस्पतीनी परें अनंता काल

णस्सतिकालो भवणवासिदेवपुरिसाणं ताव जाव सहस्सारो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ

जीवाभि

२५

थई आठमिं वरसे चारित्र पामी वली आन्तर कालें उपजई ते माटे वर्ष पृथक्त्व कहं बुं॥

नोआंतरो होइ आनतदेवलोकना देवपुरुषनइं केतला कालनो आंतरो हुइं हे गोतम जघन्य तो वर्ष पृथक्त्व ते किम चारित्र विना सिद्धौ उपजवुं नो होइ तिहां
भगवन्
कोसेणं वणस्सतिकालो अणंतदेवपुरिसाणं गेवेज्जकेवतराणं कालो अंतरं होती गो जहन्नेणं वास
थीमरी उत्कृष्टुं तो वनस्पतिनी परइं अनंता काल ग्रैवेयकदेवपुरुषनो लगइं कहेवुं अनुत्तरवासी देवपुरुषनें जघन्य आंतरु
मनुष्य ५ जन्म आंतरु होइं इम जोलगइं तेनव वरसनो होइं चारित्र पामीनें काल जेतलो आंतरो हुइं
पहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो एवं जाव गेविज्जदेवपुरिसस्स सविज्जणुत्तरोववातियदेवपुरिस
उत्कृष्टुं संख्याता सागरोपम साधिक एक सर्व अपराजित लगइं जाणवुं सर्वार्थसिद्धि एकनो अवतार करें ते वली आव वरस जघन्य ते वली जायें उत्कृष्टो पूर्व कोडि नो तो नवी मोक्षे जायें एकज आलावो जाणवो
जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं साइरेगाइं अणुत्तराणं अंतरं एक्काम
हवे अल्पबहुत्वपणुं वेदे देखाडें जिम स्त्रीनइं कहिउं यावत् हुइं तेसामा बहुत्वपणुं वेनो तिहां पहिलो अल्पबहुत्व बाणव्यंतरदेव
तेतिम जाणवो सर्वथी अल्प हे भइ देव भगवन देवपुरुषनें भवनपतीनइं पुरुषनइं
लो वज्ज अप्पबहुया णि जहेव इत्थीणं जाव एतेसिणं भंते देवपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतरा
ज्योतिषीदेवपुरुषनइं वैमानिकदेवपुरुषनें एआर पुरुष मांहे केहा हे गौतम कोण थकी थोडा घणा होइ म सर्वथी थोडा वैमानिक देवपुरुष तेथकी ताव ताप्रायु नजीया भवन
णं जोतिसियाणं वेमाणियाण य कतरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा वेमाणिया देवपुरिसा भवण
पतीदेवपुरुष असं तेथकी वाणव्यंतरा देवपुरुष तेथकी ज्योतिषी देवपुरुष असंख्याता गुणा बई एहनो पाव
ख्यात गुणा बई असंख्यात गुणा बई स्त्रीनाइ अल्पबहुत्वनी परें
वती देवपुरिसा असंखेज्जगुणा वाणमंतरा देवपुरिसा असंखेज्जगुणा जोतिसिया देवपुरिसा
भाव नापाव्लीपरें

आ ईस पलाद मरस अंतर सणं यं मल्लते आय हस्स गर अनुयं अणुंतर दिल्मा सन वे १ थाव र काउ केयो मवइ काय तनउ व वाउ दो असा विजया एक हनि अंतरं जिलरका यं ३ . ४ ५ ३ नीगां मा बइ।

३२

कहें थोडा बेवाबहुत्व मामि अल्प बहुत्व कहें छें तेनइं एहनें ति जलचारीपुरुष थलचारीपुरुष खचरपुरुष मनुष्यपुरुषनें ५
थे च योनिया पुरुषनें १ नें २ अलि ३ ४४
संखेज्जगुणा एतेसिणं भंते तिरिक्खजोणियपुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्सपुरिसाणं
कर्मभूमिपुरुष ६ अकर्मभूमिक पुरुष ७ अंतरद्वीप देवपुरुष भवनवासीपु वाणव्यंतरपुरु ज्योतिषीपुरुषनइं
कपुरुष ८ ष ९ रुषनें १० षनइं ११ १२
णं अकम्मभूमिकाणं अंतरदीवकाणं देवपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसीयाणं वि
वैमानिकपुरुष सौधर्मनइं जोलगें सर्वार्थसिद्धिनइं एहमांहे केहा श्व कीथी सर्वथी थोडा अंतरद्वीपना मनुष्यपुरुष षेत्र
नइं १३ नायणा हुइं तिवारें भगवंत कहें हे गौतम थोडा वली
माणियाणं सोधम्माणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाण य कतरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वत्थोवा अंतरदीवगमणुस्स
तेथकी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्य एविसंख्यात गुणा अधिका षेत्रना वि स्तारवती हरिवर्षषे रम्यकष अकर्मभूमिना
रु पुरुष त्र त्र मनुष्यपुरुष
पुरिसा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दो वि असंखेज्जगुणा हरिवासरम्मवासअ
एबे संख्यातगुणा हेमवंत हरण्यवंत अकर्मभूमिना मनुष्य पुरुष एबे संख्या तथा भरतषेत्र कर्मभूमिना मनुष्यपुरुष एबे
बइं षेत्र षेत्र तगुणा बे षेत्र विस्तारवती ऐरवतषेत्र संख्यातगुणा स्त्री साथे घणा
कम्म दो वि संखेज्जा हेमवंतहेरण्णवंतवासअकम्म दो वि संखेज्ज भरहेरवयवासकम्मभूमिगमणु स्स
थवजइं ते पूर्वविदे अकर्मभूमिपु पश्चिमविदेहना मनुष्यपुरुष एबे संख्यातगुणा अति सीदेवपुरुष असंख्यातगुणा अप
मात इ ह रुष नेमा घने बारइं घणा ज जना नली तेथकी अनुत्तरवा सीप मन आमे ख्यसागर वसें न ह
दो वि संखेज्जा पुव्वविदेह अकम्मभूमि अवरविदेहकम्म दो वि संखेज्जगुणा अणुत्तरोववातियदेवपु

जीवाभिग
४०

कालपाक्षिक स्वरूप जे सिम नहु पोग्गलपरि यट्टो समस उयसे सारो त सुजवं बोयारखतु अ होत वुलहलव काय

अनुत्तरविमानवासी देवना पुरुष थकी उपरला ग्रैवेयकदेवपुरुष असं मध्यमग्रैवेयकना देवपुरुष असंख्यातगुणा विमानना
ख्यातगुणा वहुवेला पल्योपम संख्यातमा भाग वर्त्ततइं ग्रैवेयक राशि प्रमाण घणा माटइं तेह थकी हेठला ग्रैवेयकदेवपुरुष अ

रिसा असंखेज्जगुणा उवरिमगेविज्जदेवपुरिसा संखे मज्झिमगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्ज हेट्ठि

संख्यातगुणा विमानना बाहुल्यपणा वती तेह थकी आरण अच्युतना देवपुरुष असंख्यातगुणा विमानना बाहुल्यपणा
वती दक्षिण दिसि कृष्णपक्षिया घणा उपजइं महाशुक्र कल्पदेवपुरुष असंख्यातगुणा दक्षिण दिसि कृष्णपक्षिया घणा

मगेविज्जदेवपुरिसा संखेज्ज आरणच्चुतकप्पदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा महासु

उपजे विमान घणा वती लांतक माहेंद्र कल्प देवपुरुष असंख्य पुरुष असंख्यातगुणा बार लाख विमानवती तथा कृष्ण
तगुणा आठ लाख विमानवती सनत्कुमार देव पक्षी दक्षिण दिसे घणा उपजे तेह थकी ईशान क

क्ककप्पदेवपुरिसा संखेज्जा जाव माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखे सणंकुमारकप्पे देवपुर

ल्पदेवपुरुष असंख्यातगुणा अठ्ठा तेह थकी सौधर्मकल्पदेवपुरुष असंख्यातगु तेह थकी भवनवासी देवपुरुष असंख्यात
वीस लाख विमानवती घणा कह्या णा बत्रीस लाख विमानवती गुणा सात कोडि बहुत्तर लाख भुवनवती

सा संखेज्ज ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जा सोहम्मकप्पे देवपुरिसा संखेज्जा भवणवासीदेव

असंख्यातगुणा तेह थकी खेचर तिर्यंच योनिया पुरुष असंख्या तगुणा तेह थकी थलचर तिर्यंच योनिया पुरुष असंख्यातगुणा
असंख्याता

पुरिसा असंखेज्जा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जा थलयरतिरिक्खजोणीया सं

द्वीपसमुद्रवती संख्या वाणव्यंतरदेवपुरुष असंख्यातगुणा असंख्यात गणवती तेह थकी ज्योतिषी देवपुरुष असंख्यातगुणा ज्योतिषी असंख्याता वती प्रदेश राशि प्रमाण

खे जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा वाणमंतरदेवपुरिसा असंखेज्जगुणा जोतिसीयदेवपु ४०

पुरुषवेद नामा मोहनी कर्मनी प्रकृति नइं केतला कालनी बंधस्थिति कही छै हे गौतम जघन्य तो आठ संवत्सर बंधस्थि
तणावंत कहे तिकाल

सा असंखेज्जगुणा पुरिसवेदस्स णं भंते कम्मस्स केवतियं कालं बंधठिती पं गो जहन्नेणं अट्ठ संवच्छ

उत्कृष्टी तो दस कोडाकोडि सागरोपमनी दस सेंकडा वरसनी अबाधा नाम कर्मनी स्थिति अनुद कर्म स्थिति रहित कर्मनिषेक
बंधस्थिति कही याकाल कहइं कर्मदलनी रचना रहइं

राणि उक्कोसेणं दस सागरोवमकोडीउ दसवाससयाइं अबाहा अबाहूणीया कम्मठिती कम्मणिसे

देवपुरुषवेदनो स्यो प्रकार कह्यो हे गौतम वनदवनी परं ज्वाला सरिखो एतलै पुरुष कह्या हवै नपुंसक कहे छइं नपुंसक
मो स्वरूप कह्यो तणावंत कहे म पुरुषवेद कह्यो नामलिंग भेद कह्या तेह कह्या जाणवा

गो पुरिसस्सवेदे णं भंते किंपगारे पं गो वणदवग्गिजालासमाणे पं से तं पुरिसा से किं तं णपुंसगा २ तिवि

नारकीनपुंसक १ तिर्यंचयोनीया नपुंसक २ मनुष्यनपुंसक ३ हवै नारकी नपुंसकना सात भेद कहइ तेह कहइ

हा पं तं णेरईया णपुंसगा तिरिक्खजोणियणपुंसगा मणुस्साणपुंसगा से किं तं णेरईयणपुंसका

जाणवा विस्तारइं रत्नप्रभा पृथ्वीना नारकी नपुंसक २ जाव सातमी नारकीना नपुंसक एतलइं सात भेद कह्या
कहइ गवानइं एतलै नारकीनपुंसक कह्या

२ सत्तविहा पं तं रयणप्पभापुढविणेरईयणपुंसका जाव अहेसत्तमापुढविणेरईणपुंसका य

हवै तिर्यंचयोनीया नपुंसक कहे छै ते तिर्यंच नपुंसकना पांच भेद कह्या ते कहइ एकेंद्री तिर्यंच योनिया नपुंसक एतलै
तेजल काय भेद

से तं णेरईयणपुंसका से किं तं तिरिक्खजोणीयणपुंसका २ पंचविधा पं तं एगिंदियतिरिक्खजोय

जीवाभिग ४१

भांगोअसमसे बेंद्री २ तेंद्री ३ चउरेंद्री ४ पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक ५ हवइं एकेंद्री नपुंसक ति योनीया ना अ
२१ र्यंच
णयणपुंसका बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदीय पंचेंदियतिरिक्खजोणीयणपुंसका से किं तं एगिंदियति-
नेक भेद कह्या पृथवी आदि १ एकेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक कह्या हवे बेंद्री नपुंसकना अनेक भेद कह्या
रिक्खजोणिया २ अणेगविहा पं से तं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका से किं तं बेंदियनपुंसका अ-
तेंद्री तिर्यंच कह्या इम तेंद्री कहेवा चउरेंद्री कहेवा इम पंचेंद्री कहेवा हवे पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंस
दि णेगविहा पं से तं बेंदियतिरिक्खा एवं तेइंदियावि चउरिंदियावि पंचेंदियावि से किं तं पंचेंदियतिरिक्ख-
कना त्रणि भेद कह्या छइं ते केहा जलचर पंचेंद्री तिर्यंच थलचर पंचेंद्री खचर पंचेंद्री एतले जलचर स्युं कह्या संमूर्छिम सर्व भेद स्त्रीनी परे
संमूर्छिम आसालिया
जोणियणपुंसका तिविधा पं तं जलयरा थलयरा खहयरा से तं जलयरा २ सो चेव पुव्विं भेदो
सहित ते स्युं घणो कहेवो ते पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक कह्या हवइं मनुष्य नपुंसक कहे छइं ते मनुष्य नपुंसकना
आसालीया नाम जाणवो त्रणि भेद कह्या
आसालियसहित्तो भाणियव्वो से तं पंचिंदियतिरिक्खजोणीयाणपुंसका से किं तं मणुस्सणपुं-
ते केहा कर्म्मभूमीना अकर्मभूमीना अंतरद्वीपना इम स्त्रीनी परे भेद कहेवा हवे नपुंसक वेदनइं
१ २ ३
सका तिविधा पं तं कम्मभूमिका अकम्मभूमिका अंतरदीवका भेदो इत्थी णं वि णपुंसकवेदस्स ४१

भगवन केतला कालनी स्थिति कही हे गोतम जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी उपजइ उत्कृष्टी ने तित्रीस सागरोपमनी स्थिति
संमूर्छिम स्थिति तिर्यंच मनुष्यनी छइं सातमी नरकना नारकीनी
णं भंते केवतियं कालं ठिती पं गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं ने-
रइया विशेषपणइं नारकी नपुंसकनइं भगवन केतला काल हे गोतम जघन्य तो दस सहस्र वरसनी स्थिति छइं रत्नप्र
नी स्थिति कही छइं भाना प्रथम प्रतरनी उपजइ छइं
रइयनपुंसकस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती पं गो जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसे-
उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपम छाइं इम सर्वनी स्थिति कहेवी रत्नप्रभा आदि सातमी सीम लगें हवे तिर्यंचयोनी
मनी छइं सातमी नरगनी उप सर्व नारकीनी स्थिति जाणवी या नपुंसकनें
णं तित्तिसं सागरोवमाइं एवं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहेसत्तमा पुढवी नेरइया तिरि-
भगवन केतला कालनी स्थिति कही जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी तो पूर्व कोडि एकेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुं
स्थिति छइं अनें वली नी छइं सकनें सम मा भरइं
जोणियणपुंसकस्स णं भंते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एगिंदियतिरिक्खजोणि-
जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टी तो बावीस सहस्र वरसनी स्थिति पृथवीकाय नपुंसकनी उपजइ हवे विशेषपणे पृथवी
नी स्थिति होइ काय एकेंद्री तिर्यंचयोनिया नपुंसकनें भगवन केतला कालनी स्थिति होइ जघन्य तो अंतर्म
यानपुंसकस्स जह अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं पुढविकाइयएगिंदियति-
हूर्त्तनी स्थिति होइ. उत्कृष्टी तो बावीस सहस्र वरसनी स्थिति होइ. इम अप २ तेउ ३ वाउ ४ वनस्पती ५
रिक्खजोणीयणपुंसकस्स णं भंते जह अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं सव्वेसिंपि

सर्व नी जे हवी थिति बीसे हवी कहेवी। इवे पंचेंद्री तिर्यंच योनिया नपुंसक भगवन केतला कालनी थिति कही भगवंत कहे
कोने

एगिंदियणपुंसकस्स णं ठिती जाणियव्वा पंचेंदीयतिरिक्खजोणियणपुंसकस्स णं भंते केवतियं का

हे गौतम जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी तो पूर्व कोडिनी थिति इम जलचर तिर्यंच चउपद थलचर तिर्यंच
थिति कही

लं ठिती पं० गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं जलचरतिरिक्खचउप्पदथलयरा

उरपरि तिर्यंच भुजपरि तिर्यंच एवं सर्व तिर्यंच नइं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति उत्कृष्टी तो पूर्व कोडिनी थिति मनुष्य नपुंसक ने
कहइं होइ

उरपरिसप्पा भुयपरिसप्पा खहयरतिरिक्खस्स वि सं जहन्नेणं अंतो उक्कोपुव्वकोडी मणुस्स

भगवन केतला कालनी थिति कही छइं भग हे गौतम षेत्र आश्री नइं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति होइं उत्कृष्टी तो पूर्व कोडिनी थिति
वंत कहे कहइं

णपुंसकस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती पं० गो० खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं पुव्वकोडी

धर्मचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति उत्कृष्टी तो काइंक ऊ कोडिनी थिति होइं जन्म आश्री जन्म पामी जघन्य अंतर्मुहू
नइं होइं णी पूर्व नइं र्त्तनी

धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणपुव्वकोडी जम्मणं पडुच्च जहन्ने

थिति होइं उत्कृष्टी तो काइंक ऊणी पूर्व को कर्मभू भरत ऐरवत क्षेत्र सर्व महाविदेह पश्चिम वि मनुष्य नपुंसक
डिनी थिति कहइं मि क्षे क्षे क्षे देह देह

णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणपुव्वकोडी कम्मभूमगभरहेरवयपुव्वविदेह अवरविदे ४२

अकर्मभूमि मनुष्य नपुंसक नो मनुष्य भूमि भ(?) जन्म आश्री जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त (?)

नैं तिमज सर्वजीणवु अकर्मभूमि ना मनुष्य नपुंसक भगवन केतला कालनी थिति कही हे गौतम
नइं

ह मणुस्सणपुंसकस्स वि तहेव अकम्मभूमिकमणुस्सणपुंसकस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती

जन्म आश्री नइं उपज जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति कहइं उत्कृष्टी पणि अंतर्मुहूर्त्तनी थि संहरण आश्री जघन्य तो
वा आश्री ने तिकहइं समूर्छिम वर्त्ती नइं

पं० गो० जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अं

अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी काइंक ऊणी पूर्व कोडिनी इम अंतरद्वीपना लगें कहेवुं नपुंसक वेदनी भगवन नपुंसक वे
थिति होइं थिति कहइं

तोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणपुव्वकोडी एवं जाव अंतरदीवकाणं णपुंसए णं भंते णपुंसए

द पणैं काल थकी केतलो काल रहइं हे गौतम जघन्य तो एक समै उपशम श्रेणि समाधइं नपुंसक वेद खे नारकी नपुंसक
पीने उपशम श्रेणि थकी पडतो नपुंसक वेद षय करी मरइंथ ने भगवन काल

त्ति कालतो केवच्चिरं होती गो० जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो णेरइयणपुं

थकी केतलो कालनी थिति देषइं जघन्य तो दश सहस्र वरसनी थिति कहइं प्रथम नरगनी उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपमनी थिति
उपजवा इहां णवु कहइं सातमी नरगनी उपजवाइं

सए णं भंते कालओ केवच्चिरं गो० जहन्नेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमा

इम सातें पृथ्वीना नारकी नपुंसकनी थि तिर्यंच योनीया नपुंसक काल थकी केतलो काल नपुंसकपणि तिवारें भगवंत कह
तिकहवी रहइं हे गौतम

इं एवं पुढवीए ठिती जाणियव्वा तिरिक्खजोणीयणपुंसए णं भंते त्ति कालओ केवच्चिरं गो०

नपुंसक वेद पणा पामइं ४

उत्कर्ष नोंद्रग्ग न ला च एर्वका द्वाग ना निन ना संहरणासं ख्यात स र्वक्षे तकस्य तजन्म संहरणं प्रता ति मेव व क्तव्यं

जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थितिरहइ उत्कृष्टुं तां वनस्पतिनी परें अनंतो काल रहइ एम एकेंद्री नपुंसकनें वनस्पतिनी परें अनंतो काल नपुंसकपणें रहइ इंमथाकहता सर्वनइं एकेंद्रि नपुं
जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो एवं एगिंदियणपुंसकस्सवि वणस्सतिकाइयस्सवि
सकनि जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी रहइ उत्कृष्टो तो असंख्यातो काल नपुंसकपणें रहइ केतलो काल असंख्याती उत्सर्पिणी काल असर्पिणी लगइ रहइ कालथकी खेत्रथकी असंख्याता लोकाकाशप्रमा
एवामेव सेसाणं जहन्नेणं अंतो उक्कोसं असंखिज्जं कालं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ का
ण संहरीइं तो नीर्लेपकइं इंम बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री नपुंसकनें जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी थिति कइं उत्कृष्टी तो
लतो असंखेज्जा लोया बेंदिय तेंदिय चउरिंदिय नपुंसका णय जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोस
संख्याता मासनी थिति कइं पंचेंद्री तिर्यंच जलचरादिक नपुंसकनें नगर्भज काल थकी केतला काल नी थिति कइं तिवारें नगवंत कहइ हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी थिति कइं उत्कृष्टी
णं संखेज्जं कालं पंचेंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसए णं भंते णो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसे
तो पूर्वकोडि पृथक्त्वनी थिति होइं इंम जलचर तिर्यंच चउपदनइं थलचर उरपरिसर्पनइं भुजपरिसर्पनइं महोरगादिनि जघन्य अंत
णं पुव्वकोडिपुहुत्तं एवं जलयरतिरिक्खचउप्पद थलयरउरपरिसप्पा भुयपरिसप्पा म
र्मुहूर्त्त उत्कृष्टी तो पूर्वकोडिनी थिति कहइं वी॥ मनुष्य नपुंसकनें नगवन ष्येन आश्रीनइं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थिति कइं उत्कृष्टी तो पूर्वकोडि पृथक्त्वनी थिति कइं
होरगाण वि मणुस्स णपुंसकस्स णं भंते खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतो उक्कोसं पुव्वकोडीपुहुत्तं :

धर्मचरण आश्रीनें जघन्यतो एक समयनी थिति थाय कर्त्ताव्य पामवानइं समयनइं उत्कृष्टी तो आठवरसे ऊणी पूर्वकोडिनी थिति होइं इंम कर्मभूमि भरत ऐरवत पूर्वमहाविदेह
धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी एवं कम्मभूमग भरहेरवई विदे
पश्चिम महाविदेहइंम अकर्मभूमिना मनुष्यनें नपुंसकनें समवन जन्म पामीनइं जन्म आश्री जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी थिति होइं उत्कृष्टी मुहूर्त्त पृथक्त्वनी
हा अवरविदेहसु वि अकम्मभूमकमणुस्सणपुंसए णं भंते जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो उक्कोसेम
थिति कइं संहरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त्त कोइक कर्मभूमिक मनुष्यनें अंतर्मुहूर्त्त राखी पाछो मुंकइं उत्कृष्टी तो कोइंकनें एकवली पूर्वकोडिनी थिति होइं इंम सर्वनइं अंतरद्वीपलगें कहें बोल वइं अंतरो कहइं छइं
हुत्तं संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो उक्कोसं देसूणा पुव्वकोडी एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीवगाणं णपुं
नपुंसकवेद निरगवंतनें केतला कालनो अंतरो होइं हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त नुं आंतरुं होइं उत्कृष्टी तो कोइंक अधिक सागरोपम शत पृथक्त्वें अंतरो वेरें वेदें रही वली नपुंसकवेद जइं
सकस्स णं भंते केवतियं कालं अंतरं होति गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहु
नारकी नपुंसकनें नगवनकें केतला कालनो आंतरो होइं तिवारें नगवंत कहइ हे गौतम सो सलो मुहूर्त्त पर्यायी मनुष्य तिर्यंच जघन्य अंतर्मुहूर्त्त पर्यायी मनुष्य
त्तं सातिरेगं णेरइयणपुंसकस्स णं भंते केवतियं कालं अंतरं होती गो जहन्नेणं अंतोमुहु
वली नारकी नपुंसकनी नीपरें अनंतो काल नो आंतरो होइं उत्कृष्टो तो वनस्पती नी परें अनंता कालनो आंतरो होइं नरकना आंतरा
त्तं उक्कोसे तरुकालो रतणप्पभा पुढवी नेरइय नपुंसकस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

जीवाभि ४४

मर्वकहेवाओलगेहेवीमातमी तिहाल तिर्यंचयोनीयानपुंसक जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनोअंतरोहोइ उत्कृष्टोतो का
गइकहिवो नइ

तस्स कालो एवं सव्वेसिं जाव अहेसत्तमी ति तिरिक्खजोणियणपुंसकस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को-

इक अधिकसागरोपमनो एकेंद्रितिर्यंचयोनीयानपुंसकनइ जघन्यअं इइमजओलवुपल्कनेवने उत्कृष्टोतो वेस
अंतरोहोइ तर्मुहूर्त्तनुं अंतरहो करीनइ हससागरोपम

से सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ-

संख्यातवर्षअधिकअंतरोहोइ एतलोकालत्रसपणोपामीवली इमपृथवीअपतेउ जघन्यअंतेमुहूर्त्तनुं अंतरहोइ
एकेंद्रीयाइ तेसेंसहोसागर वाउनइ

क्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं पुढविआउतेउवाउ जहन्नेणं अंतो-

उत्कृष्टोतोवनस्पतीनीपरेंअनंताकालनो इमवनस्पतिकायनें जघन्यतोअंत वनस्पतीनपुंसक उत्कृष्टोतोअसंख्याता
अंतरोहोइ मुहूर्त्त पछेवली माउपजइ कालनोअंतरोसोलगें

मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो वणस्सतिकाइयाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असं-

असंख्यातालोकाकाशप्रदेशप्रमाणहइ शेषथाकतानपुंसकबेंद्री गइखचरनपुंसकनेंजघ न्यमुहूर्त्तनोअंत उत्कृष्टोव
आदिओल न्यअंतर्म रहोइ नस्पती

खेज्जं कालं जाव असंखेज्जा लोया सेसाणं बेइंदियाणं जाव खहयराणं जहन्नेणं अंतो-

नीपरेंअनंताकालनोअं मनुष्यनपुंसकनेंक्षेत्रआश्रीनें जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनो उत्कृष्टोतोवनस्पतीनीपरेंअ
तरोहोइ एतलेंक्षेत्रपामीनइ अंतरोहोइ नंताकालनोअंतरोहोइ

क्कोसेणं वणस्सतिकालो मणुस्सणपुंसकस्स णं भंते खेत्तं पडुच्च जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वण- ४४

धर्मचरणआश्रीनइ जघन्यएकसमयनोअंतरोहो उत्कृष्टोतोअनंतकालप्रमा अंतगैकाइकदेशउणोअर्द्धपुद्गलपरावर्त्त
इजेजघन्यसमे देशसंनिगोदछावा कालनोअंतरोहोइ

स्सतिकालो धम्मचरणं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं

इमकर्मभूमिनेंवि भरतक्षेत्र एरवतक्षे पूर्वमहाविदे पश्चिममहाविदेहनेंविष अकर्मभूमिनामनुष्यनपुंसकनइ भगव
षइ त्र ह इअंतरोजाणवो न्तनोअंतरोहोइ

एवं कम्मभूमगस्स वि भरहेरवयस्स पुव्वविदेहअवरविदेहस्स वि अकम्मभूमकमणुस्सणपुंसक-

केतलाकाल जन्मपामीनइ जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनोअंतरोहोइ उत्कृष्टोवनस्पतीनी संहरणआश्रीन जघन्यतोअंतर्मुहू
परेंअनंताकालनोअंतरोहोइ इ र्त्तनोअंतरो

स्स णं भंते केवतियं जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं वणस्सतिकालो संहरणं पडुच्च जहन्नेणं अंतो-

उत्कृष्टोतो पूर्वको इमअंतरद्वीपजाइअंतरो हवेंअल्पबहुत्वकहें बइएह रकीनपुंसकनइ तिर्यंचयोनीयानपुंसकनइ
डिनोअंतरोहोइ जघन्योत्कृष्टकहेवो नेसगवन्तनो

उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी एवं जाव अंतरदीवगा ति एतेसिं णं भंते नेरइयनपुंसकाणं तिरिक्खजोणियनपुं-

मनुष्यनपुंसकनें एहमांकेहा२थकीथोडाघणाकइकइसरि हेगोतम सर्वथीथोडामनुष्यनपुंसकनेंश्रेणि तेथकीनारकीनपुं
थाविशेषाधिकहोइसगवंतकहें ४ संख्यातेसागरवर्गप्रदेशराशिप्रमाण सकअसंख्यातगु

सकाणं मणुस्सनपुंसकाण य कतरे २ अप्पा वा ४ गोयमा सव्वथोवा मणुस्सनपुंसका नेरइयनपुं-

णाअंत्रवाकुलपणा तिर्यंचयोनीयानपुंसकअनंतगुणानिगोदता हवेंनारकीनोबीजोअल्पबहुत्वकहेंछेंएहनें तेमीपृथवी
मारइ नेथकी जीवबस्तिजाणवा भगवननारकीनपुंसकनेंजावसा नानार

सका असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणियनपुंसका अणंतगुणा एतेसिं णं भंते नेरइयनपुंसकाणं जाव रयण

कीनपुंसकनै एहमांकेहा२ घकीथोडाघणासरिषाविशेषाधि कहेहेगो सर्वथोडाहेगीसातमी पृथ्वीनानारकीनपुंसकअसं
ककीहा तुल्याछेवा ४ भगवंत नम तरस्रेणिमंष्यातस्तावजुत्तिनप्रदेशराशिप्रमा
मपुढविनेरइयनपुंसकाणकयरेरहिंतो अप्पावाबगो सव्वथोवाअहेसत्तमपुढविनेरइयन
णतेथ कीछठीपृथ्वीनानारकीनपुंसकअसंष्यातगुणा इंमजांजाइबीजीपृथ्वीनानारकीनपुंसक असंष्यातगुणा
छइं
पुंसका छठ्ठपुढविनेरइयनपुंसकाअसंखगुणा जावदोचापुढविनेरइयनपुंसकाअसं
तेथकीवीजीथिकीपहिलीरत्नप्रभापृथ्वीनानार, एहनीतावनापूर्वनीपरइंजांणवीहवेत्रीजोअल्पबहुत्वतिर्यंचएकेंद्रीआं
कीनपुंसकअसंष्यातगुणा जणिपंचेंद्रीनपुंसकनोअल्पबहुत्वकहेछे एहनइंभगवन
खेज्जगुणा इमीसरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयनपुंसकाअसंखेज्जगुणाएतेसणंभंतेतिरिक्ख
तिर्यंचयोनीयानपुंसकनइं, एकेंद्रीतिर्यंचयोनी नपुंसकनइं बेंद्रीतिर्यंचयोनीआनपुंसकनइं२ तेंद्रीतिर्यंचनपुं
आ सकनै३
जोणियनपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणंपुढविकाइय जाववणस्स
चउरेंद्रीतिर्यंचनपुंसकनइं४ पंचेंद्रीतिर्यंचयोनीआनपुंसकनैं ५

एकेंद्रीतिर्यंचयोनीयानपुंसकनइं. पृथ्वीकाय१ अपकाय२ तेउकाय३ वाउकाय४ वनस्पतीकाय५

तिकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं बेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं तें
जलचरनइं६ थलचरनै७ षचरनैएहमांकेहाकेहाथकीथो
डाघणाछेइ.४
इंदियचउरिंदिय पंचेदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं जलयरथलयरखहयराणयकतरे

हेगोतम सर्वथीथोडा षचरतिर्यंचयोनीयानपुंसकछइं तेथकी थलचरतिर्यंचयोनीयानपुंसक संष्या
२ अप्पाबाबगो सव्वथोवा खहयरतिरिक्खजोणियणपुंसका थलयरतिरिक्खजोणियनपुंस
तगुणाछइं तेथकीजलचरतिर्यंचयोनीनपुंसकअसंष्या तिमाटैंतेथकीचउरेंद्रीनपुंसकविशे तेंद्रीनपुंसकवि
तगुणा लवण१ कालोदधि२ स्वयंभू३ उत्प बाधिकछइं विसेसाहियाइंमत्तली, शेषाधिकछे इं
कासंखेज्जा जलयरतिरिक्खजोणिय संखेज्जा चउरिंदियतिरिक्खविसेसाहियातेंदियविसेसा
तेथकीबेंद्रीविशेष तेथकी सूक्ष्मबादरतेद्रिंतिन्नपणेंतेअसंष्यातावइं तेथकी पृथ्वीकायएकेंद्रीनपुंस
छइं लोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणछइअसंष्याता कवि शेषाधिकछइं
हिया बइंदीयविसेसाहिया तेउक्काएएगिंदियतिरिक्खअसंखेज्जापुढविकाइयएगेंदियतिरि
इंमअपकाय वाउकायवि तेथकीवनस्प तिर्यंचयोनियानपुंसकअनंतगुणानिगोदमांछिंजेता हवि
शेषाधिकछइं तीएकेंद्री
सेसाहियाएवंआउवाउवणस्सइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाअणंतगुणा
मनुष्यनपुंसकनोथोथोअल्पबहुत्वकहेछइं कर्मभूमीकानइं अकर्मभूमीकानेइं२ अंतरद्वीपनेइं३ ग्रणि घणाछइंवस
एहनइंभगवनमनुष्यनपुंसकनइ मनुष्यनइंनपुंसकमांकुणकेहाथकीथोड विसमुविम
एतेसणंभंतेमणुस्सणपुंसकाणंकम्मभूमयाणं अकम्मभूमयाणं अंतरदीवकाणयकतर

याकर्मभूमिनाजेवाX

नपुंसककहैं हेगोतम सर्वथीथोडाअंतरद्वीप बलीखेत्रथोडावतीमनुष्यनपुंसक देवकुरुउत्तराउत्तरकुरुआ
वा तथासंख्यी४ नामनुष्यनपुंसकछैस्या थोडाछाइं तेथकी
रअप्पाबा४गो सव्वथोवाअंतरदीवगा अकम्मभूमगमणुस्सणपुंसकादेवकुरुउत्तरकुरुः

अकर्मभूमीना मनुष्य नपुंसक संख्याता छइ । इम अंतरद्वीप सर्व माहाविदे विदेह कर्मभूमिना नपुंसक सं वर्ष नारम्य कवर्ष ऐरवत
क्षेत्रविस्तार वती एवं संख्याता ... हरिवास रम्यक ... संख्यातगुणा इम हरी ... ऐरवत एम सर्व

अकम्मभूमगा दोवि संखेज्जा एवं जाव पुव्वविदेहकम्मभूमगा दोवि संखेज्जगुणा एवं हरिवासरम्म

संख्यातगुणा जाणिवा ... एह सर्व समुदाय नी अल्पबहुत्व कहइ छइ रत्नप्रभा पृथवीना नारकीना नपुंसकनें
तथा कहेवा ... एहनें भगवन नारकीना नपुंसकनें

गवासहेरण्णवय ... एतेसि णं भंते नेरइयनपुंसकाणं रयणप्पहापुढविनेरइयन

इम यावत सातमी नारकीना नपुंसकनें इम सामान्य नारकना नपुंसक नइं तिर्यंचयोनीया नपुंसकनइं एकेंद्री तिर्यं

पुंसकाणं एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणियनपुंसकाणं

च पृथवीकाययोनीया नपुंसकनइं एवो विहती इम यावत वनस्पती नपुंसकनइं बेंद्रीनइं तेंद्रीनइं च
बेकीवइ इम ... उरं द्रीनइं

एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइयाणं जाव वणस्सतिकाइय बेइंदिय तेइंदिय चउ

पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसकनइं जलचर नपुंसकनइं थलचर नपुंसकनइं खेचर नपुंसकनइं मनुष्य नपुंसकनइं

रिंदिय पंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणु

कर्मभूमिना नपुंसकनइं अकर्मभूमिना नपुंसकनइं अंतरद्वीपना नपुंसकनइं एहमांहे कोण २ थकी थोडा घणा हे गौतम
होइ ४

स्सणपुंसकाणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमिकाणं अंतरदीवकाण य कयरे २ अप्पा वा ४ गो०

गर्भव्युत्क्रांत
क मनुष्य नपुं
सकानां नामसं
ग्रहाय मृत्युना
भुकर्मभूमीनां
नमस्तवउपर्याय

सर्वथी थोडा हे गौतम सातमी नारकीना नपुंसक छइ । तेह थकी ... जाणवी तेहथकी नपुंसक असंख्यातगुणा इम यावत
छठी पृथवीना नारकी

सव्वथोवा अहेसत्तमापुढविनेरइयनपुंसका छट्ठापुढवीनेरइयनपुंसका असंखेज्जा जाव दो

तावत बीजी पृथवीना नारकीना नपुंसक असं तेहथकी अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणा ते किम नरकमांस
ख्यातगुणा कहेवा मुर्छिम मनुष्य नपुंसक नथी इहां समुर्छिम मनुष्य लीजे तेमाटे असंख्य

गुणा

च्चापुढविनेरइयनपुंसका असंखेज्जा अंतरदीवगमणुस्सनपुंसका असंखेज्जगुणा देवकु

ते किम नरकमांस मुर्छिम मनुष्य नपुंसक नथी इहां
तेहथकी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्म मनुष्य नपुंसक एवं बेमें
संमुर्छिम मनुष्य लीजें तेमाटें असंख्यगुणा
गुणा ... बीजी अकर्मभूमिकें बेहु संख्यात

इहवे पूर्वविदेह पश्चिमविदेह कर्मभूमिना म नुष्य

र

रुउत्तरकुरु अकम्मभूमि दोवि संखेज्जगुणा जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणु

नपुंसक एवं संख्यातगुणा छइ तेहथकी रत्नप्रभा पृथवीना नारकीना नपुंसक असंख्यातगुणा जाणवी तेहथकी ख
सावना पाछली परें

स्सणपुंसका दोवि संखेज्जगुणा रयणप्पभापुढविनेरइयणपुंसका असंखेज्जगुणा खह

चरपंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेहथकी पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक असंख्यातगुणा जलचरा
दिशा ... नजलतई तेहथकी

यरपंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं असंखेज्जगुणा पंचेंदियतिरिक्खा असंखेज्जगुणा

जलचर नपुंसक असंख्यातगुणा तेहथकी थलचर संख्यात चौरेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक विसेषाधिक छइ तेहथकी ते
गुणा तेहथकी

जलयरा असंखेज्जगुणा थलयरा संखेज्जगुणा चउरिंदियातिरिक्खजोणिय विसेसाहि

डी विशेषाधिक जाणवा ते थकी बेंद्री विशेषाधिक ते थकी तेजस्काय एकेंद्री नपुंसक असंख्यातगुणा ते थकी प्रथवीकाय

या तेइंदियविसेसाहिया बेइंदियविसेसाहिया तेउकाइयएगिंदिया असंखिज्जगुणा पुढवि

एकेंद्री विशेषाधिक जाणवा ते थकी अपकाय नपुंसक विशेषाधिक जाणवा ते थकी वाउकाय नपुंसक वि शेषाधिक जाणवा ते थकी वनस्पतीकाय एकेंद्री

कायएगिंदियाविसेसाहिया आउकाइयविसेसाहिया वाउकाइयविसेसाहिया वणस्स

तिर्यंचयोनीया नपुंसक अनंतगुणा निगोद मांहें ते लेवा थकइं नपुंसक वेदनइं भगवन केतला कालनी बंधस्थिति कहइं हे गोतम

इकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका अणंतगुणा णपुंसकवेदस्सणं भंते केवति

जघन्यतो सागरोपमना सातीया बे पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणी उतकृष्टी तो वीससागरोपम कोडाकोडिनी स्थिति होइं

णो जहण्णेणं सागरोवमस्स दो सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगा उक्कोसे

स्थिति कहइं बेसहेंसनी अबाधा अनुदयकाल होइं कर्मनी धाक नी थिति करमनार जकरवानी रचना कहइं नपुंस

णं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ दोण्णियवाससहस्साइं अबाधा अबाहूणीया कम्मठि

क वेदनो भगवान सो प्रकार कह्यो भगवंत कहइं हे गोतम मोटो नगर बलतें घणा दिन लगें बलें तिम नपुंसक नइं कंदर्पदाघ एहवो होइं

तीकम्मणिसेओ णपुंसकवेदेणं भंते किंपकारे पण्णत्ते गो महाणगरदाहसमाणे पण्णत्ते सम ४७

इं वनवेदे ऽस्य बहूत्वकहें छे स्त्रीपुरुषनपुं सकनो १ तिर्यं चस्त्रीपुरुषनपुं सकनो २ नारकी देवमिश्रनो ३ तीर्यंमनुष्यदेव पुरुषनपुंसक नो ४ पांचमो ति र्यंचमनुष्यदेव मिश्रनो ५ वाकी एकेंद्री जीव ६ सातमो कर्मनो मश्रनरदीप स्त्रीपुरुषनपुं सक ७ आठमो देवस्त्रीपुरुषना रकीनपुंसक मि श्रनो ८ नोमाना रकीमनुष्य वे दस्त्रीपुरुषनि र्यंचमनुष्यनो

आयुष्यमणसमाणे पण्णत्ते हवें एहनानवेदे अस्य बहूत्वकहें छे १ एहनइं भगवन् एहमांके हथकी थोडा घणा कहइं सर्वथी एतले नपुंसक कह्या न स्त्रीनइं १ पुरुषनइं २ नपुंसकनइं ३ हे गोतम

णगसोसे तं णपुंसगा एतेसिणं भंते इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसकाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ गो स

थोडा पुरुष ते थकी स्त्री संख्यातगुणी सत्तावीसगुणी अधिकी माटे ते थकी नपुंसक अनंतगुणा निगोद मांहें लेवा हवें बीजो तिर्यंचनो अस्य बहूत्व कहें छे एहनें भगवन तिर्यंचयोनियानी स्त्रीनइं १

व्वत्थोवा पुरिसा इत्थीओ संखेज्जगुणा नपुंसका अणंतगुणा एतेसिणं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं

तिर्यंचयोनीया पुरुष तिर्यंचयोनिया नपुंसकनें एहमांके हथकी थोडा घणा कहइं हे गोतम सर्वथी थोडा तिर्यंचयोनिया पुरुष थाइं ते थकी

तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियानपुंसकाण य कयरे २ गो सव्वत्थोवा तिरिक्ख

तिर्यंचयोननी स्त्री संख्यातगुणी त्रिगुणी वली तिर्यंचयोनीया नपुंसक अनंतगुणा निगोदना जीव मांहें घालवा हवइं बहूत्वक त्रीजो अस्य हें कहइं

जोणियपुरिसा तिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणा तिरिक्खजोणियणपुंसका अणंतगुणा एते

एहनें भगवन मनुष्यनी स्त्रीनें १ मनुष्यना पुरुषनइं २ मनुष्य नपुंसकनें ३ एहमांके हथकी थोडा घणा कहइं भगवंत कहें हे गोतम सर्वथी थोडा मनुष्य पुरुष संख्यात कोटाकोटि

सिणं भंते मणुस्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुयनपुंसकाण य कयरे २ गो सव्वत्थोवा मणु

प्रमाण ते थकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी सत्तावीसगुणी वली ते थकी मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणा समूर्छिम मनाजे वा थकी हवें चोथो अस्य बहूत्व नारकी देव मिश्रनो कहें छे एहनें

स्सपुरिसा मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा एतेसिणं भंते देव

मिश्र ए एनव अस्य बहूत्व ॥

तावनदेवस्त्रीनइं नारकीनपुंसक एहमांकेहा २ थकी थोडा घणा सरिषा विशे सर्वथी थोडा नारकी नपुंसक तावनाथा व
देवपुरुषनइं नइं षाधिक जांणवा ४ हे गोतम जीवरइं जा णवी

जीणं देवपुरसाणं नेरईयनपुंसकाणय कयरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा नेरइयानपुंस

तेथकी देवपुरुष असंष्यातगुणा प्रतरसं तेथकी देवस्त्री असंष्यातगु इवेपांचनो अल्पतिर्यंचमनुष्यदेवतानारकीमि
बेयलागवती श्रेणिना आकाश प्रदेश प्रमाण लावकी सगुणी वती श्रनो अल्पबहुत्व कहे छइ एहनइं लागवनति

का देवपुरसा असंषेजगुणा देवत्थीउसंखेजगुणाउ ४ एतेसणं संततिरिक्खजोणिजीए:

र्यंचयोनिनी स्त्रीनइं तिर्यंच तिर्यंचयोनिया नपुंसकनइं मनुष्यनि स्त्रीनइं मनुष्यपुरुषनइं मनुष्यनपुंसक
योनीया पुरुषनइं नइं

तिरिक्खजोणियपुरसाणं तिरिक्खजोणिनपुंसकाणं मणुंसजीणंमणुंस्सपुरिसाणं मणुंस्सनपुं

देवतानी स्त्रीनइं देवपुरुषनइं नारकीनपुंसकनइं एहमाहे केहा २ थकी थोडा घणा सरिषा वि सर्वथोडा मनुष्यपुरुष
ते षाधिकछइं तावंतकहे छे गोतम कोटाकोटिप्रमाण

सकाणं देवजीणं देवपुरसाणं नेरईयनपुंसकाणय कयरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा मणुं

तेथकी मनुष्यस्त्री संष्यातगुणी सत्तावीस तेथकी मनुष्यनपुंसक असंष्यगुणा संमु तेथकी नारकी नपुंसक असंष्यात
गुणावती छिमना लेवाधी गुणा असंष्य श्रेणि

स्सपुरसा मणुंसजीउसंखेयगुणाउ मणुं णपुंसक असंख्यजगुणा नेरइआनपुंसका असं

आकाश प्रदे तेथकी तिर्यंचयोनीया पुरुष असंष्यातगुणा प्रत तेथकी तिर्यंचयोनीयानी स्त्री संष्यातगुणी त्रिगुणावती
शप्रमाण रसंषिज लागवती श्रेणिदे शेरा शिप्रमाण तेथकी देवपुरुष असंष्यातगुणा प्रतरसंषिज

खेजगुणा तिरिक्खजोणीयपुरसा असंखेजगुणा तिरि क्खजोणयत्थियाउसंखेजगुणाउ देवपु

लागवतिश्रेणिनि आकाश तेथकी देवस्त्री संष्यातगुणी बत्री तेथकी तिर्यंचयोनिया नपुंसक इविबहु अल्पबहुत्व एकें
प्रदेशप्रमाण छै सगुणी अधिकावती अनंतगुणा निगोदना लेवाथकी द्रीबेंद्रीतेंद्रीचउरेंद्री

रसा असंखेजगुणाउ देवत्थीयासंखेजगुणाउ तिरिक्खजोणियनपुंसका अणंतगुणा एतेसि

पंचेंद्री संबंधी अल्पबहुत्व कहे छै एहनइं लागवनतिर्यंचयोनिनी स्त्रीनै थलचरनी स्त्रीन तिर्यंचयोनिया पुरुषनइं
जलचरनी स्त्रीनइं थलचरनी स्त्रीनइं इ

णं संते तिरिक्खजोणीजीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरसाणया:

जलचरनइं थलचरनइं खचरनइं तिर्यंचयोनीयान पुंसकनइं एकेंद्रीनइं तिर्यंचयोनियान

जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियंणपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजो

पुंसकनइं पृथ्वीकाय एकेंद्री तिर्यंचयोनिया नपुंसकनइं जोलगइं वनस्पतीकायना एकेंद्रीन बेंद्री तिर्यंचयो
पुंसकनइं नियानपुंसक

णिय नपुंसकाणं पुढविकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं जाववणस्सतिकाइ

नइं तेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसकनइं चउरेंद्री पंचेंद्री तिर्यंचयोनिया नपुंसकनइं पणि केहजाणे वा पंचेंद्री तिर्यंच
तिर्यंचयोनिया नपुंसकनइं

याबेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं तेंदियचउरंदियपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणी

जलचरनइं थलचरनइं खचरनइं केहा २ थकी थोडा घणा सरिषा विशेषा सर्वथी थोडा खचर तिर्यंचयोनिया पुरुषछइं
धिककेहा ४ हे गोतम तावनाथा बलीपरइं कहे छै

जलयराणं थलयराणं खहयराणं कंतरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा खहयरा तिरिक्खजो-

तेथकी खचरतिर्यंचयोनियानी स्त्री संख्यातगुणी त्रिगुणी वली तेथकी जलचरतिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यातगु
णा
णियउरीसा खहयरतिरिक्खजोणिणियाओ संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखे
तेथकी थलचरतिर्यंचयोनिनी स्त्री संख्यातगुणी त्रगुणी वली तेथकी जलचरतिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यातगुणा जोण
वा
ज्जगुणा थलयरतिरिक्खजोणिणिओ संखेज्जगुणाओ जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुं
तेथकी जलचरतिर्यंचयोनिनी स्त्री संख्यातगुणी त्रगुणी वली तेथकी खचरपंचेंद्री तिर्यंच पंचेंद्री योनिया नपुंसक असंख्यातगुणा छइं ति
र्यंचयोनिया नपुंसक असंख्यातगुणा छै तेथकी थलचर
णा जलयरतिरिक्खजोणियाओ संखेज्जगुणाओ खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसका
पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक असंख्यातगुणा छइं तेथकी जलचर तिर्यंचयोनिया नपुंसक पंचेंद्री असंख्यातगुणा छइं
तेथकी जलचर तिर्यंचयोनीया नपुंसक पंचेंद्री
असंखिज्जगुणा थलयरपंचेंदीयतिरिक्खजोणियनपुंसका संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्खजो
असंख्यातगुणा छइं तेथकी चउरिंद्रि नपुंसक तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक छइं कह्या तेथकी तेंद्री नपुंसक विशे
छइं
णीयनपुंसकपंचेंदियासंखेज्जगुणा चउरिंदियनपुंसकतिरिक्खजोणिया विसेसाहिया तेइंदि
षाधिक छइं तेथकी बेंद्री नपुंसक विशेषाधिक छइं तेथकी तेजस्काय एकेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसक असंख्यात
गुणा छइं
यनपुंसका विसेसाहिया बेंदियनपुंसगविसेसाहिया तेउकायएगेंदियतिरिक्खजोणियनपुं ४८

तेथकी पृथवी नपुंसक विशेषाधिक छइं सक विशे तेथकी अपनपुं तेथकी वाउ विशेषाधिक छै तेथकी वनस्पती एकेंद्री
षाधिक छइं नपुंसक अनंत गुं
सका संखेज्ज पुढवि नपुंसका विसेसाहिया आउविसेसाहिया वाउविसेसाहिया वणफति ए-
णा निगोद मांहे छे एवं सातमो अलपबहुत्व मनुष्यनुं कर्मभूमिनुं पनुं पुरुष स्त्री भूमनी नपुंसक बुंएक हिवइं एकनइं सर्वनम
तेणा अकर्मभूमि त्रिनु आं तर द्वी
गिंदियनपुंसा अणंतगुणा एतेसिणं भंते मणुस्सइत्थीणं कम्मभूमीयाणं अकम्मभूमिआणं अंतरदी
मनुष्य पुरुषनइं नुष्य स्त्रीनइं कर्मभूमिनी अकर्मभूमनी अंतरद्वीपनी मनुष्य पुरुषनइं कर्मभूमिना पुरुषनइं हे गौतम सर्वथो
अस्त्रीनइं अकर्मभूमिना पुरुषनइं अंतरद्वीपनी स्त्रीनइं
मणुस्सपु वयाणं मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमयाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाणं कयरे २ ओ सव
कर्मभूमिनापु वा अंतरद्वीपना अकर्मभूमिना मनुष्यनी स्त्री छइं तेहना अंतरद्वीपना मनुष्य पुरुष थोडा छइं एहवे पुरुष तेथकी देव उत्तरकु
पसरीषा छइं कुरु रु
रिसाणं कम्म थोवा अंतरदीवका अकम्मभूमकमणुस्सइत्थियाओ मणुसपुरसाणं एतेणं दोण्णवि तुल्ला देवकु
रुषनइं अक अकर्मभूमिक मनुष्यनी स्त्रीनइं मनुष्य पुरुष युगलधर्म मनुं णी अधिका छइं तेथकी हरिवर्ष क्षेत्र रम्यक षे अ
भूमिकाणं मा छइं बेसरिषा छइं॥ अंतरद्वीपथकी संख्या
मभूमिनापु रुउत्तरकुरु अकम्मभूमकमणुस्सइत्थीयाओ मणुस्सपुरसाय एतेणंदोण्णवि तुल्ला संखेज्जगुणा:
अकम भू कर्मभूमि मनुष्य स्त्री अनइं मनुष्य पुरुष एवे युगलधर्म मांहइं सरीषा छइं संख्यातगुणा अनेवली देवकुरुषे त्रणी संख्यातगुं
सकनइं अंतर णा छइं तेथ कीहेमवंतषेत्र
मिकाणं हरिवासरम्मवासा अकम्मभूमकमणुस्सइत्थियाओ मणुस्सपुरसाय एतेणं दोण्णवि तुल्ला संखेज्ज
द्वीपना नपुंसक नेमनुष्य नपुंसकनेएहमां सरावना कर्मभूमिना अकर्मभूमिना अंतरद्वीपना एहमां कउण स्त्रीथोडा
अंतरदीव काणं मणुस्सणपुंसकाणं कम्मभूमयाणं अंतरदीवयाणं २ घणाकुइं ४

तथा हिरण्यवत क्षेत्र अकर्म भूमिना मनुष्यनी स्त्री अनइ मनुष्य पुरुष बेइ युगलधर्मवती सरीषा छइ हरिवास क्षेत्रथकी संख्यातगुणा छइ

गुणा हेमवतहेरण्णवतअकम्मभूमकमणुस्सइत्थीओ मणुस्सपुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा

तेथकी भरतैरवत कर्मभूमिना मनुष्य पुरुष एबे संख्यातगुणा छइ घणाउपजइ भरतऐरवत कर्मभूमिनी मनुष्यनी स्त्री एबे संख्यातगुणी छइ सत्तावीसगुणी अधिकी छइ तेमाटइ संख्यातगुणा छइ तेथकी

भरहेरवतकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा भरहेरवतकम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दो

तेमाटइ जाणवी तेहथकी पूर्वमाहाविदेह पश्चिममाहाविदेह कर्मभूमिक मनुष्यनी स्त्री अनइ पुरुष एबइ संख्यातगुणी छइ सत्तावीसगणा माटइ

वि संखेज्जगुणाओ पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा पुव्व

तेहथकी अंतरद्वीपना अकर्मभूमीना मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणा छइ

विदेहअवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सपुरसा दोवि संखेज्जगुणा अंतरदीवकअकम्मभूमग

अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसक एबे असंख्यातगुणा युगलधर्म घणा संमुर्छिम नपुंसक लेसइ थकइ देवकुरुक्षेत्रना उत्तरकुरुक्षेत्रना तेथकी तेहनी संमुर्छिम घणा उपजइ हरिवास रम्यकना संमुर्छिमनेसवास

मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमकमणुस्सणपुंसका दोवि

हिरण्यवतना नपुंसक असंख्यातगुणा अधिक जाणवा पूर्वमाहाविदेह पश्चिममाहाविदेह कर्मभूमिकना मनुष्य नपुंसक एबे असंख्यातगुणा सोल नपुंसक लिपरे कहेवा कहेवा

असंखेज्जगुणा एवं तहेव जाव पुव्वविदेहअवरविदेहकम्मभूमगमणुस्सणपुंसका दोवि असंखेज्ज ५०

हवे आठमो अल्पबहुत्व देवपुरुष देवस्त्री नारकी नपुंसक मिश्र आठमो अल्पबहुत्व कहेछे एहनो अर्थ देवपुरुषनइ वतानी स्त्रीनें भवनपतीनी स्त्री ने वाणव्यंतरीनें जोतिषीनी नइ वैमानिकनी नइ

गुणा एतसणं भंते देवइत्थीणं भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसीणं वेमाणीणं देवपुरिसाणं

भुवनपतिना पुरुषनइ जावतें वैमानिकना पुरुषनइ सौधर्मदेवपुरुषनइ जावतें ग्रैवेयक देवपुरुषनइ तथा अनुत्तरोववातिदेवपुरुषनइ तथा नार

भवणवासीणं जाव वेमाणियाणं सोधम्मकाणं जाव गेवेयकाणं अणुत्तरोववाइआणं णे

कीनपुंसकनइ रत्नप्रभापृथ्वीना नारकी नपुंसकनइ जावतें तमतमा सातमी पृथ्वीना नारकीनइ एहमांके ताथको थोडा

रइयणपुंसकाणं रयणप्पभापुढवीनेरइयनपुंसकाणं जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइया

घणाकुणइ हेमंतम सर्वथोडा जाणता अनुत्तरवासीदेवपुरुष छइ पांचवती विमान तेथकी उपरला ग्रैवेयकना देवता असंख्यातगुणा अधिका छइ एकसोत्रणिविमाननी उपेक्षाइ

णं कतरे २ णो सव्वथोवा अणुत्तरोववातियदेवपुरिसा उवरिमगेविय देवपुरिसा संखे

तिमजमध्य ग्रैवेयकना देवता पुरुष कहेवा जावतें आनतकल्पे देवपुरुष कीधेथी सातमी पृथ्वीना नारकी नपुंसक असंख्यातगुणा अधिका छइ च्यारसे विमाननी उपेक्षाइ तेथ

ज्जगुणा तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरसा संखेज्जगुणा अहेसत्तमापुढवीए नेरइयनपुंस

नगुणा अधिका छइ तेथकी छट्ठी पृथ्वीना नारकी नपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेथकी सहस्सारे देवपुरुष असंख्यातगुणा छइ तेथकी मांहेंद्र

कासंखेज्जगुणा छट्ठाए पुढवीए नेरइआ असंखेज्जगुणा सहस्सारेकप्पे देवपुरिसा असंखेज्ज

ख

देवता असंख्यातगुणा छइ तेथकी पांचमी नारनारकीनपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेथकी लांतकके देवपुरुष अ
गुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए नेरईय नपुंसका असंखेज्जगुणा
संख्यातगुणा छइ तेथकी चोथी पृथवीनानारकीनपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेथकी ब्रह्मकल्पे देवपुरुष असंख्यातगुणा छइ
लंतए कप्पे असंखेज्जगुणा चउत्थीए पुढवीए नेरईआ असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवपुरिसा
तेथकी त्रीजी पृथवीनानारकीनपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेथकी माहेंद्रकल्पे देवपुरुष असंख्यातगुणा छइ तेथकी स
असंखिज्जगुणा तच्चाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखिज्ज
नतकुमारदेवपुरुष असंखिज्जगुणा अधिका छइ तेथकी बीजी पृथवीनानारकीनपुंसक असंख्यातगुणा अधिक छे तेथकी देवपु
गुणा सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखिज्जगुणा दोच्चाए पुढविनेरईआ असंखेज्जागुणा ई
रुष ईशानना असंख्यातगुणा अधिक छइ तेथकी ईशाननी देवस्त्री संख्यातगुणी अधिक छे बत्रीसगुणी वती तेथकी सोधर्मकल्पे देवपुरुष असंख्यातगुणी छइ
साणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणे कप्पे देवत्थीआओ संखेज्जगुणाओ सोधम्मे कप्पे
तेथकी सोधर्मे देवलोकनी देवस्त्री संख्यातगुणी छइ बत्रीसगुणी वती तेथकी भवनपतीना देवपुरुष असंख्यातगुणा छइ
देवपुरिसा असंखेज्जा सोधम्मे कप्पे देवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ भवणवासिदेवपुरिसा असंखि

तेथकी भवनपतिनी स्त्री संख्यातगुणी छइ बत्रीसगुणी वती तेथकी भवनपतिना देवपुरुष असंख्यातगुणा अधिक छइ
ज्जगुणा भवणवासीदेवत्थीयाओ संखिज्जगुणाओ भवणवासीदेवपुरिसा असंखिज्जगुणा
तेथकी रत्नप्रभा पृथवीना नारकीनपुंसक असंख्यातगुणा छइ तेथकी वाणव्यंतरदेवपुरुष असंख्यातगुणा छइ तेथकी वाणव्यंतरदेवना
इमीसे रयणप्पभाए पुढवी नेरइया असंखेज्जगुणा वाणिमंतरा देवपुरिसा असंखिज्जगुणा वा
नी स्त्री संख्यातगुणी अधिकी छइ तेथकी ज्योतिषी देवपुरुष असंख्यातगुणा अधिक छइ तेथकी ज्योतिषीनी देवस्त्री संख्यातगुणी बत्रीसगुणी वती
णमंतरदेवत्थीयाओ संखेज्जगुणाओ जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा जोतिसिदेवत्थीयाओ
हविं मो अल्पबहुत्व नारकीनपुंसक देवपुरुष अस्त्री मनुष्यस्त्री पुरुषनपुंसक तिर्यंचस्त्री पुरुषनपुंसक नो कहे छे
संखेज्जगुणा एतसेणं तेत्ति तिरिक्खजोणि थीणी जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं ति
एहनें सामान्य तिर्यंचयोनिनी स्त्री जलचरीनइं थलचरीनइं खचरीनइं तिर्यंचयोनीया पुरुषनइं जलचरपुरुषनें थलचरपुरुषनइं खचरपुरुषनें तिर्यंचयोनियानपुंसकनइं
रिक्खजोणियपुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियनपुंसका
एकेंद्री तिर्यंचयोनीयानपुंसकनइं पृथवीकायना एकेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसकनइं अपकाय एकेंद्री ति
णं एगेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं पुढविकाइय एगेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका

जीवाभिग

५२

वेंद्री तिर्यंचयो

वेंद्रियतिरि

नियानपुंस

रकजोणिय

कनइं

णपुंसकाणं

र्यंचयोनीया नपुंसकनइं सोलगरवायतेजस्कायवनस्प तीएकेंद्री तिर्यंचयोनीयानपुंसकनइं

णं आउक्काइयएगेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जाव वणस्सइएगेंदियतिरिक्खजोणि

तेंद्री तिर्यंचयोनीया नपुंसकनइं तथा चउरेंद्री तिर्यंचयोनियानपुंसकनइं तथा पंचेंद्री

णयणपुंसकाणं तेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं

तिर्यंचयोनीयानपुंसकनइं जलचरनपुंसकनइं थलचरनपुंसकनें

णं तेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जलयरा

खचरनपुंसककनइं मनुष्यनीस्त्रीनइं कर्मभूमिनीस्त्रीनइं अकर्मभूमिनीस्त्रीनइं अंतरद्वीपनानपुंसकनइं

णं थलयराणं खहयराणं मणुस्सइत्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाण

मनुष्यपुरुषनें कर्मभूमिनापुरुषनें अकर्मभूमिनामनुष्यनइं अंतरद्वीपनापुरुषनइं मनुष्यनपुंसकनइं देवस्त्रीनइं

णं मणुस्सपुरिसाणं कम्मभूमीकाणं अकम्मभूमिकाणं अंतरदीवकाणं मणुस्सणपुंसकाणं

भवनवासीनइं वाणव्यंतरीनइं जोतिषणीनें वैमाननीनें देवपुरुषनइं भवनपतीदे

दीइत्थीणं भवणवासीणीणं वाणमंतरीणं जोतिसीणीणं वेमाणीणीणं देवपुरिसाणं भव ५२

वपुरुषनइं व्यंतरदेवपुरुषनइं ज्योतिषीदेवपुरुषनइं वैमानिकदेवपुरुषनइं सौधर्मदेवपुरुषनइं सोलगें ग्रैवेयकदेवपुरुषनइं अनुत्तरवा

णवासीणं वाणमंतरीणं जोतिसीयाणं वेमाणीयाणं सोधम्मकाणं जाव गेवेज्जकाणं अणुत्तरो

सीदेवपुरुषनइं नारकीनपुंसकनइं रत्नप्रभाप्रथ्वीनानारकीनपुंसकनइं सोलगइं हेठी सातमीनानारकीनपुंसकनें

ववाइयाणं नेरइयणपुंसकाणं रयणप्पभापुढवीनेरइयणपुंसकाणं जाव अहेसत्तमाए

एहमांकेहाकेहाथकीथोडाघणासरीषाविशेषाधिकहोइं ४ हेगौतम सर्वथीथोडीअंतरद्वीपनीअकर्मभूमिनीमनुष्यनी

पुढवीएनेरइयनपुंसकाण य कयरे २ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा अंतरदीवगअकम्मभूमकम

स्त्रीअनइं मनुष्यनापुरुषनइं एयुगलधर्मवतीएवेस्त्रीपुरुषसरषीनइं इमदेवकुरुनइं उत्तरकुरुनइं अकर्मभूमिनीस्त्रीअनेंमनुष्यपुरुषएवेयुगलधर्म

णुस्सइत्थीओ मणुस्सपुरिसा य एतेणं दोण्णिवि तुल्ला देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमगमणुस्सइत्थी

वतीसरिषांवेअनेंअंतरद्वीपथीसंख्यातगुणाअधिकाछइं इमहरीवर्षनइं रम्यकवर्षनइं इमहेमवंतनइं हिरण्यवंतनइं भरतक्षेत्र

मणुस्सपुरिसा य एतेणं दोवि तुल्ला संखिज्जगुणा एवं हरिवासरम्मवासएवं हेमवंतेरण्णवंते

ऐरवतक्षेत्र कर्मभूमिनामनुष्यपुरुषएवेसंख्यातगुणाअधिकाछइं तेथकीभरतक्षेत्रऐरवतक्षेत्रनीस्त्री एविसंख्यातगुणीवेत्रीसगुणीवली

भरहेरवतवासकम्मभोमगमणुस्सपुरिसा एतेदोवसंखे भरहेरवइकम्ममणुस्सइत्थीओ दोवि सं

तेहथकी पूर्वमाहाविदेह पश्चिममाहाविदेह कर्मभूमिनामनुष्यपुरुष एवें संख्यातगुणा तेहथकी पूर्वमाहाविदेह कर्मभूमि

खेज्जगुणा पुव्वविदेहय अवरविदेहय कम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दो वि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह कम्म

नामनुष्यपुरुष एवें संख्यातगुणा तेहथकी पूर्वमाहाविदेह पश्चिममाहाविदेह कर्मभूमिनामनुष्यपुरुष एवें संख्यातगुणा

मणुस्सपुरिसा दो वि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्ममणुस्सपुरिसा दो वि संखिज

तेहथकी पूर्वमाहाविदेह पश्चिममाहाविदेह कर्मभूमिनामनुष्यनी स्त्री एवें संख्यातगुणी सत्तावीसगुणी तेहथकी अनुत्तरविमानना देवपुरुष

गुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्ममणुस्सइत्थीओ दो वि संखेज्जगुणाओ अणुत्तरोववातीदेव

असंख्यातगुणा छइं तेहथकी उपरला ग्रैवेयकना देवपुरुष असंख्यातगुणा छइं ज्यां लगें मध्यम हेठिम अच्युत १२ आरण ११ प्राणत १०

पुरिसा असंखिज्जगुणा उवरिमगेविज्जा देवपुरिसा संखिज्जगुणा जाव आणते कप्पे देव

देवपुरुष छइं असं तेहथकी सातमी पृथ्वीना नारकीना नपुंसक असंख्यातगुणा कहें वा तेहथकी छठी नारकी नपुंसक असंख्यातगुणा कहें वा

पुरिसा संखेज्जगुणा अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयणपुंसका असंखेज्जगुणा छट्ठाए पुढवी

गुणा छइं तेहथकी सहस्सार कल्पदेवपुरुष संख्यातगुणा छें तेहथकी महाशुक्र कल्पना देवता असंख्यातगुणा छइं तेहथकी छठी नारकीना नपुंसक

ए नेरइयनपुंसका असंखे सहस्सारे कप्पे देवपुरिसा संखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देव असं ५३

असंख्यातगुणा छें तेहथकी पांचमी पृथ्वीना नारकीना नपुंसक असंख्यातगुणा छइं तेहथकी लांतक देवपुरुष असंख्यातगुणा छइं

खेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए नेरइया नपुंसका असंख्याता लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा

तेहथकी चउथी पृथ्वीना नारकीना नपुंसक असंख्यातगुणा छें तेहथकी ब्रह्मदेवलोकना देवता असंख्यातगुणा छइं तेहथकी त्रीजी पृथ्वी

चउत्थीए पुढवीए नेरइया असंखिज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा तच्चाए पुढवी

नारकी असंख्यातगुणा छइं तेहथकी माहेंद्र ४ ना देवपुरुष असंख्यातगुणा छें तेहथकी सनत्कुमारना देवपुरुष असंख्यातगुणा छइं

ए नेरइया असंखिज्जे माहिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखिज्जगुणा सणंकुमारे कप्पे देवपुरिसा सं

तेहथकी बीजी पृथ्वीना नारकीना नपुंसक असंख्याता छइं तेहथकी अंतरद्वीपना अकर्मभूमिनामनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणा छइं संमुर्छिमना लेवा थकी

खेज्जगुणा दोच्चाए पुढवीए नेरइया नपुंसका असंख्याता अंतरदीवग अकम्मभूमगमणुस्सणपुंस

असंख्याता कह्या तेहथकी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिनामनुष्य नपुंसक एवें क्षेत्रे असंख्यातगुणा छइं इम ज्यां लगें पूर्वविदेह पश्चिमविदेह लगें इम पाछली परें असंख्यातगुणा

का असंखेज्जगुणा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमगमणुस्सणपुंसका दो वि संखेज्जगुणा एवं जाव वि

कहिंवा पश्चिमविदेह थकी ईशानकल्पदेवपुरुष असंख्यातगुणा छइं तेहथकी देवस्त्री असंख्यातगुणी छइं बत्रीस गुणी वली तेहथकी सोधर्मदेवपुरुष असंख्यातगुणा छइं

देहेति इसाणे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा देवइत्थीओ संखेज्जगुणाओ सोधम्मे कप्पे देवपु

तेहथकी सोधर्मकल्पदेवस्त्री संख्यातगुणी वइ बत्रीसगुणी वती । तेहथकी भवनपति नादेवपुरुषअसंख्यातगुणा वै । तेहथकी भवनपती नि देवस्त्री संख्यातगुणी वै बत्रीसगुणी

सा संख सोहम्मे कप्पे देवित्थीआओ असंखिज्जगुणाओ भवणवासिदेवपुरसा असंखेज भवणवासिदे

वती अधीसे कहेतां । तेहथकी पृथ्वी ना नारकी नपुंसक असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी खचर तिर्यंच योनिया पुरुष आरत्नप्रस्ता

वत्थीआओ संखेज्जगुणाओ अमीसे रयणप्पभाए णेरइए नपुंसका असंखेज्जगुणा खहयर तिरिक्ख

असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी खचर तिर्यंचयोनियानी स्त्री संख्यातगुणी वइ त्रिगुणवती । तेहथकी थलचर तिर्यंच योनीया पुरुष वइ

जोणिय पुरसा संखेज्जगुणा खहयरतिरिक्खजोणित्थियाओ थलयरतिरिक्खजोणियपु

असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी थलचर तिर्यंच योनियानी स्त्री संख्यातगुणी वै त्रिगुणवती । तेहथकी जलचर तिर्यंच पुरुष असंख्यातगुणा असंख्याता द्वीपसमुद्र वती

रसा असंखेज्ज थलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयरतिरिक्खपुरिसा असंखे

तेहथकी जलचर तिर्यंच योनियानी स्त्री संख्यातगुणी वै त्रिगुणवती । तेहथकी वाणमंतर देवपुरुष असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी व्यंतर स्त्री संख्यात

ज्ज जलयरतिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ वाणवंतरदेवपुरसा संखेज्जा वाणवंत

गुणी वइ बत्रीसगुणी वती । तेहथकी जोतिषी नादेवपुरुष संख्यातगुणा वइ । तेहथकी जोतिषी देवनी स्त्री संख्यातगुणी अधिकी वइ बत्रीसगु

रदेवित्थियाओ संखेज्ज जोइसीयदेवपुरसा संखेज्ज जोइसीयदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ खह

संखेज्जगु णाओ

५४

लीवती तेहथकी खचर पंचेंद्री तिर्यंच योनिया नपुंसक असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी थलचर नपुंसक असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी जलचर नपुंसक असंख्यातगुणा वइ ।

यरपंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका असंखेज थलयरनपुंसका संखेज जलयरनपुंसका सं

तेहथकी चउरेंद्री विशेषाधिक वइ । तेहथकी तेंद्री विशेषाधिक वइ । तेहथकी बेंद्री विशेषाधिक वइ । तेउकाय एगिंद्रि

खेज्ज चउरिंदियाणं विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिया तेउकाइया ए

यंच योनिया नपुंसक असंख्यातगुणा वइ । तेहथकी पृथ्वीकाय विशेषाधिक वइ । तेहथकी अपकाय नपुंस

गिंदियातिरिक्खजोणियनपुंसका असंखेज्ज पुढविविसेसाहिया आउनपुंसका विसे

क विशेषाधिक वइ । तेहथकी वायु नपुंसक विशेषाधिक वै । तेहथकी वनस्पतीकाय एकेंद्री तिर्यंचयोनिया नपुंसक अनंतगुणा वइ निगोद मांहि लेतां । एहना कारण पाछली परे कहेवा जिम कह्या वे तिम

साहिया वाउविसेसाहिया वणप्फइकाय एगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसका अणंत

कहेवा पनवणाइं अल्पबहुत्वनाअधिकारे । नीविविक एकआदेशे पंचावनजिम पर्व पन्नवणाइं मकछिउ तिम कहेवा ह वेरगवृत स्त्री वेदने केतला कालनो अंतर जीवनी दुमवुद्रुप वेदनी थिति इम नपुंसक वेदनी र

गुणा इत्थीणं संतकेवतीयाकालं विइ पं गो एगेणादेसेणं जहा पुव्वं भणीयं एवं पुरसा स्स

हे वानि थिति वली तिम जकहीहे वे त्रणिनि स्त्री पुरुष नपुंसकपाबाजिक स्पानि मकहेवी । आंतरां त्रणिनिं जि

विनपुंसगस्सवि संचिठाणं पुण रवि तिएहं पउच्चाणं नपुंसक पुविभणीया अंतरत्तिएहंपि

व हेपुरुष पि स्पः स्त्रीय संख्येयगुणा इत्युक्तं तत्र कासीय स्त्रा जानि पुरुषा पक्षेया क निंगुणा इति प वका आमा संकाजंनि रू पणार्थ माह मारुतितिरिक्ख जोणित्थीओ तिरिख जोनि यपर. सई तो

मपाठलिंकह्यांतिमकहेवो तिर्यंचनी स्त्री तिर्यंचयोनीयापुरुष रूपेंकरी तिर्यंचपुरुषथकी मनुष्यनी
पथकी त्रगुणीछइ त्रणिगुणी रूपहाइं स्त्री

इत्थीउ विनत्तीया तिरिक्खजोणियाउ जोणियपुरिसेहिंतो तिगुणाउ तिरूवाहियाउ मणुस्सइत्थी

मनुष्यपुरुषथकी सत्तावीसगुणी गुंणीछइं अने सत्तावीसगुणी पुरुषथकी देवतानी स्त्री देवपुरुषथ
सत्ताविसगुणी अधकजांणवी पञ्चधकीबइ कीबत्री गुंणी

याउ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाउ सत्तावीसइरूवाहियाउ देवइत्थियाउ देवपु

अधिकीछइ वृद्धाचार्येरपितगुं बत्रीसगुणुं रूपअधिकुं होइ एतलेत्रणि भेदेसंसारसमापन्नजीवकह्या एतलेत्र
णारूप कहिया। इतिपाठ तिभेदनी प्रतिपत्तिसमाप्तथई

रिसेहिंतो बत्तीसगुणाउ बत्तीसइरूवाहियाउ सेतं तिविधा संसारसमावण्णगा जीवा प-

एतलोबीजोअधिकारसंपूर्ण थोइहु तिहांजेतेकेतलाएक आचार्यइम कहेछइ च्यारभेदेसंसारसमापन्नजीवएक कह्याछे

ण्णत्ता तिविहा पडिवत्ती सम्मत्ता छट्ठजेते एवमाहंसु चउविधा संसारसमावण्णगा जी

तेएहवाच्यारभेदकहेछइ तेकेहा नारकी १ तिर्यंचयोनी २ अनेवली मनुष्य ३ देवता ४ एवैनारकीकहेछेतेनारकीनासातभेदक
ह्याछइ तेकहाजांणवा

वा पं. ते एवमाहंसु तं नेरतिया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा से किं तं नेरईया सत्त

पहिलीपृथ्वीनानारकी १ बीजीपृथ्वीनानारकी २ त्रीजीपृथ्वीनानारकी ३ चोथीपृथ्वीनानारकी ४

विहा पं. तं पढमपुढविनेरईआ दोच्चापुढविनेरईआ तच्चापुढविनेरईआ चउत्थापु ५५

पांचमीपृथ्वीनानारकी ५ छठीपृथ्वीनानारकी ६ सातमीपृथ्वीनानारकी ७ पहिलीपृथ्वीनुंहभगवनसुं

ढविनेरईया पंचमापुढविनेरईआ छट्ठापुढविनेरईआ सत्तमापुढविनेरईया पुढमाणं भंते

नामकहिउं संगोत्रकहिउं हेगोतम घम्माएहवुंनामकहिउं रत्नप्रभाएहवोगोत्रकह्यो पण्णाकहेंता बीजीपृथ्वीनुंभगवनसुंनामकहीवं

पुढवी किंनामा किंगोत्ता गो. घम्मा नामेणं रयणप्पभा गोत्तेणं पण्णत्ता दोच्चाणं भंते पुढवि किंना

सुंगोत्रकह्युं हेगौतम वंसाएहवुंनामकहिउं सक्करप्पभाएहवुंगोत्रकहीउं एमएणेंअभिलावेंकरीपांचमीपृथ्वीलगेंकहिवुं अप्रश्नकरवो एहवइंनामकहेछइ

मा किंगोत्ता गो. वंसा नामेणं सक्करप्पभा गोत्तेणं एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वेसिं पुच्छा नामाणि

सेलानामेंत्रीजीपृथ्वी ३ अंजणानामेंचोथी ४ रिट्ठानामेंपांचमी ५ मघानामेंछठी ६ माघवतीनामेंसातमी ७ सातमीनुंतमतमागोत्रकहिउं

इमाणि सेला तच्चा अंजणा चउत्थी रिट्ठा पंचमी मघा छट्ठी माघवती सत्तमा तमतमा गोत्तेणं

हेभगवनरत्नप्रभापृथ्वी केतलेंबाहल्यपणेंविस्तारपणेंवंतकहीछै हेगौतम एरत्नप्रभापृथ्वीनोबाहल्यपणोकहेछइ

पं. इमीसेणं भंते रयणप्पभा पुढवीके वतिय बाहल्लेणं पण्णत्ता गो. इमाणं रयणप्पभा पुढवी

एकलाखनेअसीहजारजोजनविस्तारेंकही इमएणेंअभिलावेंकरीएगाथाधीम घणीपृथ्वी नुंमानजाणतांतहांनामजांणवुं

असीउत्तर जोयणसतसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा:

तच्चानामगोत्र च्यारदोसवनेघ अनादिकाल प्रसिद्धिमन्व येरहतनामा सावर्णवुंनाम गोत्रमतीपर्या यः

एकलाष एकलाषब एकलाषअ एकलाषवीसयो एकलाषनेअ एकलाषनेसोल एकलाषनेआठसहसयोज मानतो एम
असीयो १ बत्रीसयो २ अठावीसयो ३ जन ४ ठारयो ५ सहसयो ६ नमीतमीतु ६ बन

असीत बत्तीसं अट्ठावीसं तहहवंति वीसं च अट्ठारस सोलसगं अट्ठोत्तरमेव हिट्ठिमया इमा णं

रत्नप्रभापृथ्वीनाकेतलाभेदकह्याछेतिवारे हेगोतम त्रणिभेदकह्या खरकठिननभेदहुमिलागजेहनो पंकब अप्पबहुल
सगवंतकहे तेकेहा फलेकंडहुमीसाग कांड

भंते रयणप्पभा पुढवी कतिविधा पं गो तिविधा पं तं खरकंडे पंकबहुलकंडे आउब

एहवइलागवनरत्नप्रभापृथ्वीनइ खरकांडनाकेतलाभेदकह्याछेतीर्थंकरे तम हेगोतम सोलभेदकह्या तेसोलभेदते
केहातेकहेछे

हुलकंडे इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पं गो सोलसविधे पं तं

रत्नकांडपहिलो वीजोवज्रकांड २ लोहिताकांडचो मसारगल्लकांड हंसगर्भकां पुलककरत्नो सोगंधिकर योतिसरत्न अंज
जो १ वैडूर्यकांडत्रीजो ३ थो ४ पांचमो ५ उ ६ कांड ७ नकांड ८ कांड ९ न

रयणकंडे वइरे वेरुलिए लोहियक्खे मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए सोगंधिए जोईरसे अं

पुलकरत्नकांड इ जातिरूपरत्न अंकरत्न फटिकां रिष्टकां वज्ररत्नकां एहगवनरत्नप्रभापृथ्वीइ पहिलोरत्नकां
नकांड १० रसमो ११ कांड १२ उ १३ उ १४ ड १५ ड १६

जणपुलाए रयए जातिरूवे अंके फलहे रिट्ठे कंडे १६ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढ

डनाकेतलाभेद कह्या हेगोतम एकभेदकह्यो इमअप्पबहुलकांडनाकेतलाभेदकह्या हेहेगौत एकभेदक
स्वामीभगवंतक म ह्यो

वीए रयणकंडे कतिविधे पं गो एगागारे पं एवं जाव बहुलेकंडे कतिविधे पं गो एगागा

रत्नप्रभायांपृथ्वीस्तटे पूर्वादिपुदिदु४ नरकावासाः मध्ये सीमंतकाख्यो नरकेंद्रक एवं प्रतेकेकस्य निपंचपर्यायसप्तमे पर्यायः

पृथ्वीतलथीइका
लो सावरेण
अपक्षिमसमा
लकालोरोरो
हलयासेम
नरयासेमरो
पेम १

सर्करप्रभापृथ्वीनाभगवनकेतलाभेदकह्या हेगोतम एकभेदक इमजावसातेतिसातमीलगेंकहेवो इमरत
ह्यो

रेपभते सक्करप्पभाएणं भंते पुढवी कतिविधा पं गो एगागार पं एवं जाव अहेसत्तमाए इ

गवनरत्नप्रभापृथ्वीइ केतलालाषनरकावासानीसंष्याकही हेगौतम त्रीसलाषनरकावासास्ग
वंते

मीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए केवतियं निरयावाससतसहस्सा पं गो तीसं णिरयावास

कह्या इमएणेंअभिलाबेंकरीसघलानरकावासानीपूछाकीधी सघलानरकावासानीसंष्या लानरकेत्री बीजीइव पच त्रीजी
एगाथाथी जाणवीपहि सलाष १ वीसलाष २ इ

सतसहस्सा पं एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वेसिं पुच्छा इमा गाहा अणुगंतव्वा तीसा य पणवीसा पं

पन्नरला चोथीइदस पांचमीइत्रणिलाष छठीइएकलाषपांचे सातमीइपांचनरकावा इमजांजगेंतेतीसातमीइं पंचमोटाब
५ ३ नर लाष १० नें नरकावासा५ऊइ उणानरकावासा ६ सामोटाऊइ

णरसदसेव तिन्नियहवंति पंचूणसतसहस्सं पंचेव अणुत्तरा णरगा एवं जाव अहेसत्तमाए पंच

कोमोटानर मोटीलरागेकह्या तेजहातेके कालनो महाकालनामो रोरूनामो महारोरूचोथो ४ वइएलगवनरत्नप्रभा
कावा ला मा १ बीजो २ त्रीजो ३ अपइठाणपांच ५ पृथ्वीनइस्हे

अणुत्तरमहतिमहालया णरगा पं तं काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे अत्थिणं

हेवलिघनोदधिनामावरीछीलो पांणीछे एकबेनसमजीछेवायपिंडीज तेकेतनवातसुषिम कइआकासअंतरा
अघनाघनोदधिघनवात लावा वातछे छइ

भंते इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे घणोदधीति वा घणवातेति वा तणुवाईएवा तणुवाई

लि

भगवंतकहेंछेगोतमएआरबोजेहें इमहेवीसातमीलोजाव एरत्नप्रभापृथ्वीइं खरकांडनोकेतलोबा
लगाकहवुंकीकहेवो

एवाउवासंरेईवारंता अच्छिएवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणंतेरयणप्पभाए पुढवीए

हल्यपणो कह्यो भगवंतकहें हेगोतम सोलसहस्रयोजनप्रमाणबाहल्यपणोकहीउं एरत्नप्रभा

खरकंडेकेवतियंबाहल्लेणंपनते गो सोलसजोयणसहस्साइं बाहल्लेणंपनत्ताइं इमी

पृथ्वीइं रत्ननाकांडनोकेतलोबा हल्यपणोभगवंतेंकह्यो हेगोतम एकसहस्रयोजनप्रमाणबहुल
पणिंकहिउं

सेणंरतेरयणप्पभाए पुढवीएरयणकंडेकेवतियंबाहल्लेणंपनत्ते गो एक्कंजोयणसहस्सं

इमजांरीष्टस्कधीकहेवो एरत्नप्रभापृथ्वीनइंविषें बीजोपंकबहुलकांडनोकेतलोबाहल्यपणोपन
नाकहेंता

बाहल्लेणं पं एवंजावरिट्ठे इमीसेणंरतेरयणप्पभाएपुढवीए पंकबहुलेकंडेकेवति

कह्योभइंभगवं हेगोत चोरासीहजारयोजननोबाहल्यपणोकहिउंभइं एतलें एरत्नप्रभापृथ्वीइं
तकहैं म एकलाखयोजनपृथ्वीया

यंबाहल्लेणं पं गो चउरासीतजोयणसहस्साइंबाहल्लेणंपन्नता इमीसेणंरतेरयणप्पभा

अपबहुलकांडनोभगवनकेतलोबाहल्यपणोकहिउं असीसहस्रयोजननोबाहल्यपणोकहीउंएतलेंएक
लाखअसीसहस्रयोजनपृथ्वी

एपुढवीए अबहुलेकंडेकेवतीयंबाहल्लेणंपनत्ते गो असीतियोयणसहस्साइंबाह ५७

बाहल्लेणं अनुमान: एरत्नप्रभापृथ्वीइं घनोदधिनावलयनुंकेतलुंबाहल्यपणुंकहिउंछें हेगोतम वीसह

ल्लेणंपनत्ताइं इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए घणोदधिकेवतियंबाहल्लेणंपनत्ते गो वीसं

जारयोजननुंबाहल्यपणुंकहिउं एरत्नप्रभानामापहिलीपृथ्वीइं घनवातनुंकेतलुंबाहल्य

जोयणसहस्साइं बाहल्लेणंपनत्ताइं इमीसेणंरतेरयणप्पभाएपुढवीए घणवातेकेव

पणुंकहीनुं हेगोतम

तियंबाहल्लेणं पं गो वीसंजोयणसहस्साइंबाहल्लेणंपनत्ताइं इमीसेणंरतेरयणप

असंख्यातायोजनलाखतथा सहस्रनुंबाहल्यपणुंकहिउंछइं

भाएपुढवीए घणवातेकेवतीयंबाहल्लेणं पं गो असंखेज्जाइंजोयणसहस्साइंबाहल्ले

इमतनवातनोअसंख्यातसहस्रयोजननोबाहल्यपणोइम लिजाण हवेसर्करप्रभापृथ्वीइंलगा घनोदधिनोकेतलोबाहल्य
अवकाशंतरव वो वन

णंपनत्ताइं एवंतणुवातेवि उवासंतरेव सक्करप्पभाएणंरतेपुढवीए घणोदधिकेवति

पणोकहिउं हेगोतम तीससहस्रयोजननोबाहल्यपणोकहिउं सर्करप्रभापृथ्वीइंघनवातनोकेतलोयोजननो

यंबाहल्लेणंपनत्ते गो वीसंजोयणसहस्साय बाहल्लेणंपनत्ताए सक्करप्पभाएपुढवीए:

स्त्रीनीरत्ना नरकपृथ्वी घनोदधी

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जीवाभि
५८

बाहुल्यपणो कहिउं हे गौतम असंख्याता हजार योजननो बाहुल्यपणो कहिउं | इमतनवातओ असंख्याता योजनइं अवका
शांतर असं
घणवाते केवतियं गो असंखेयाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पन्नत्ताइं एवं तणुवातेउ
ख्याता योजन | इम जिम सर्करप्रभा पृथवीइं कह्यो | तिम सातमी जगें कहेंवो | एतलावरत्नप्रभा पृथवीइं एकलाख असी
न
वासंतरेवि इमा सक्करपभाए पुढवीए एवं जाव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते रयणप
सहस्रयोजनप्रमाण बाहुल्यपणे करीनइं क्षेत्रनी | प्रतरकांडनि विभागें छेदातइं अस्ति निपातइं हो | नाइं अस्ति इ
बहुवचन आलि
छिद्यमान बुद्धि
भाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्साइं बाहल्लाए खेत्तछेएणं छिज्जमाणीए अत्थि द
वर्णथकी काला १ नीला २ राता ३ पीला ४ | धोला पांचइ द्रव्य छैं गंधथकी सुगंध दुर्गंध छइं | रसथकी तीखो १ कडुओ २ कसायलो ३
व्वाइं वण्णतो काल नील लोहिय हालिद्द सुक्किल्लाइं गंधतो सुरभिगंधाइं रसतो तित्तकटुकसा
खाटो ४ मधुर ५ छइं | फरसथकी कर्कश १ मउउंसुहालो २ भारे ३ हलुउ ४ ताढा ५ उन्हा ६ चोपडो ७ लुखो ८ | संस्था
य अंबिल महुराइं फासतो कक्खड मउय गुरुय लहुय सीत उसिण णिद्ध लुक्खाइं सं
नथकी परिमंडल १ वृत्त २ त्र्यंस ३ चउरंस ४ आयत ५ | संस्थानपरिणत छइं | अन्योन्यसंबद्ध छइं | अन्योन्यफरस्या छैं सर्वमात्रा पिलातां
ठाणतो परिमंडल वट्ट तंस चउरंस आयतसंठाणपरिणयाइं अन्नमन्नबद्धाइं अन्नम ५८

अन्योन्यपरस्परें अवगाढ छैं यत्र एकइ आकाश अवगाढ तत्रानि परे ... | अन्योन्यसें घटता ... स्नेह ... पर ...
वगाढमिसर्व | अन्योन्य स्नेहइं प्रतिबद्ध छइं | घटछैं ... स्वामी परइं ...
न्नपुट्ठाइं अन्नमन्नओगाढाइं अन्नमन्नसिणेहपडिबद्धाइं अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति
संबंध छइं रहे छैं हे | एतलावरत्नप्रभापृथवीइं | खरकांडनइं | सोलहजार योजननो बाहुल्यपणो छ
गौतम
हंता अत्थि इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कंडस्स सोलसजोयणसहस्सबा
ल्लनो क्षेत्रछेदें छेदतें थकइं | छय द्रव्य एहवा | वर्णथकी काला वर्णपरिणत इ हा गौतम द्रव्य संबंध छइं पा
ल्ली परइं
हल्लस्स खेत्तछेदेणं छिज्जमाणस्स अत्थि दव्वाइं वण्णतो काल जाव परिणताइं हंता अ
एतलावरत्न प्रभापृथवीनइं | रत्ननामकांडनि | योजन सहस्र बाहुल्यपणइं | ते क्षेत्रछेदें
त्थि इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए रयणनामस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस
छेदतइं थकइं चेव निश्चें | तिमज वर्णथकी काला वर्णनां द्रव्य छैं इम जाजगें रिष्टकांड | एतलावरत्नप्रभापृथवीइं
उमाजगें कहिवो
खेत्तछेएणं छिज्जमाणस्स तं चेव जाव हंता अत्थि एवं जाव रिट्ठस्स इमीसेणं भंते रयणप्प
पंकबहुलबीजो कांड चोरासीसहस्रयोजननो जाडो कहिउं तिमज पाछली परिं कहेंवो | क्षेत्रछेदनतिमज जाणवो
भाए पुढवीए पंकबहुलस्स चउरसीतिजोयणसहस्साइं बाहल्लस्स खेत्तं तं चेव

जीवाभिगम ५७

इमअपबहुलकांडनें असीसहस्रयोजननो बाहुल्यपणो छइ तेहनें वेअन्ते एतावनरत्नप्रभापृथ्वीनइं विषइं घनोद
यु पाञ्चली परें कहिवो

एवं आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्स बाहल्लस्स इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणो

धिनो वीससहस्र योजन बाहुल्यपणइं जाव पणें वेअन्ते दृष्टांत इमजणवो इमघनवाननइं असंख्यातयोजन सहस्र
पाञ्चली परें जाणवो

दधिस्स वीस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेदेणं तहेव एवं घणवातस्स असंखेज्जजोयणस्स

बाहुल्यपणेंछइ इमतनवातनें असंख्यायो तिमज अवकाशांतर तिमज असंख्यसहस्र इमसर्करप्रभापृथ्वीनइं भगवन
जन योजनखेत्रछेद्य तिमज

सहस्सबाहल्लस्स एवं तणुवातस्स तंचेव उवासंतरस्सवि तंचेव सक्करप्पभाएणं भंते पुढवी

एकलाख बत्रीस हजार योजन बाहुल्यपणइं खेत्रछेदइं छेदीनें बुककइं तिमज जांणवो छइं इत्यादि तिमज वर्णादिकी
ज

ए बत्तीसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए खेत्तछेदेणं छिज्जमाणीए अत्थिदव्वाइं वण्णओ

जांजगें असमोसरपरसइं घटइ यत्न सुपरस्स इमघनोदधिवीस सहस्रयोजन बाहुल्यपणेंइमघनवातनो
रसंबंधरहें छइं इत्यादि छइं

जाव घडत्ताए चिट्ठंति हंता चिट्ठंति एवं घणोदहिस्सवीसजोयणसहस्स बाहल्लस्स घणवातस्स

असंख्यात सहस्रयोजन बाहुल्यपणो इमघनवातअसंख्ययोजन इमतनवातअसंख्य इमअवकाशांतर असंख्यायो
जोजन जन कहिवे

असंखेज्जजोयणसहस्सबाहल्लस्स एवं घणवाए एवं तणवाए एवं जाव उवासंतरस्स ५७

इयं प्रभा कुतः पत्तसमानाभिभितानाकालेसत पर्याय

इमअसर्करप्रभाइंकहि लाइं स्यावस्तवा पृथ्वीकु एअसहुरत्नप्रभापृथ्वीसइं कहीछइं हेगौतम फालरनि
वंतिम इमजसातमी हेवा आकार

ॐ जाहासक्करप्पभाए एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए किंसंठिता पं गो

आकारें कहीछें विस्तीर्ण एतावनरत्नप्रभापृथ्वीइं खरकांडसइं आकारें कहीछइं भगवन कहें हेगौतम फालरनें आ
वलयाकारवती कारेंकहोवि

झल्लरिसंठिया पं इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे किंसंठिते पं गो झल्ल

लीर्णवल काव एतावनरत्नप्रभापृथ्वीइं रत्ननोकांडसें आकारें कहिए हेगौतम फालरनें आकारें कहिव
या ती

रिसंठिते पं इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किंसंठिते पं गो झल्लरिसंठिते

इमघनोदधि इं कहीइं

इमरिष्टकांडलों इमपंकबहुलेंक इमअपबहुलेंक इमघनवातेंक इमतनवातेंकहीइं इमअ
कहीइं लाइं होइं होइं वका

पं एवं जाव रिट्ठे एवं पंकबहुले आउबहुले घणोदधीवइ घणोवातए वतणुवाए वि उ

सांतरलगें सर्वफालरनें संस्थानें कहावि एवइं सर्करप्रभापृथ्वीसें आकारें कहीछें निवारें त हेगौतम फालरिनेंसंस्था
लीर्णवलयाकारवती गवरु कहइ

वासंतरेवि सव्वे झल्लरिसंठिया पं सक्करप्पभाएणं भंते पुढवी किंसंठिया पं गो झल्लरि

नेंकहीइं सर्करप्रभापृथ्वीइं भगवन घनोदधिसेंसंस्थानें कहिवे हेगौतम फालरनिंसंस्थानेंकहि
वे

संठियापण्णत्ता सक्करप्पभाएणं भंते पुढवीए घणोदधि किंसंठिए पं गो झल्लरिसंठिया पं

इमस्योलोगोअरकारोन रनोसंस्थानइमज कहिवउ | जिमसर्करप्रभापृथ्वीनी वक्तव्यता कही बड. तिमज्जा | लगइहेठीसातमीलगो कालरिनो संस्थान कहेवो एसालग

भ०सि० ६० एवंजावउवासंतरे ॥ इहा सक्करप्पभाए पुढवीए वत्तव्वा एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसे णं

रत्नप्रभापृथ्वीइं पूर्वनी पासा नो चरमंत छेहडो तिहांथकी केतली अबाधा मर्यादाइं लोकांतलो कनो अवधिछेहडो कहि उ

भंते रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ केवतियं अबाहाए अंतरे लोयंते

हेगोतम बारयोजननी अबाधाइं लोकनो छेहडो कहिउ | इमदक्षिणदिसिं | पश्चिमदिसइं | उत्तरदिसिं १२

पं० गो० दुवालसहिं जोयणेहिं अबाहाए लोअंते एवं दाहिणिल्लाओ पच्चच्छिमिल्लाओ उत्तरि

योजन कहेवा | सर्करप्रभापृथ्वीइं लागवन | पूर्वनापासानिछेहडैं | केतली मर्यादाइं लोकांत कह्या हेगोतम

ल्लाओ सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ केवतीयं अबाहाए लोए

एकयोजननात्रिणिभागकीजैं एहवुं एकभाग तेरमायोजननो बारयोजन एतलीअबाधाइं लोकांत कहेवउ | इम च्यारिदसैं कहेवो | वालुकप्रभाइं भगवन पृथ्वीइं

ते पं० गो० तिभागूणेहिं तेरसजोयणेहिं अबाहाए लोएंते पं० एवं चउद्दिसिं वालुयप्पभाए णं भं

पूर्वनिछेहडैं केतली मर्यादाइं कहिउं लोकांत | हेगोतम | तेरयोजनतेरमानोबीजोभाग | एतली अबाधाइं लोकांत कहिउ छइं

ते पुढवीए पुरच्छिमिल्लाओ पुच्छा गो० सतिभागेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाहाए लोयं ६०

केतली अबाधा त्रिभाग सहित योजनाधिक हा दशा तिर्यग् जैन रखगतम | पर्याय

इमच्यारदिसिं कहेवो | इमसर्वनइं च्यारदिसिनें विषें विदिसिनें विषें पुछवुं | हवे पंकप्रभापृथ्वीइं परा चउद योजननी

ते पं० एवं चउद्दसवि एवं सव्वासु चउसु दिसासु विदिसासु पुच्छीयव्वं पंकप्पभाए चउद्दसहिं जो

अबाधाइं लोकांत कहिउ | पांचमी धूमप्रभापृथ्वीइं त्रीजीभागें ऊणा पनरयोजननी मर्यादाइं लोकांत कहिउ | छठीतमप्रभाइं

यणेहिं अबाहाए लोअंते पं० धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पनरसहिं अबाहाए लोयंते पं० छट्ठीए सति

कत्रीभागइं पनरयोजननी अबाधा मर्यादाइं लोकांत कहिउ | सातमी तमतमाइं सोलयोजननी अबाधा मर्यादाइं लोकांत कहिउ

भागेहिं पनरसहिं जोयणेहिं अबाहाए लोयंते सत्तमाए सोलसहिं जोयणेहिं अबाहाए

इमसातनरकनी च्यारदिसानी मर्यादा कहेवी | रत्नप्रभापृथ्वीइं पूर्वनिछेहडैं केतले वलयकह्यातेहवे तकहें

लोयंते पं० एवं जाव उत्तरिल्लाओ इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए पुरच्छिमिल्लाओ चरिमं

कतिविधा कतिप्रकारइ सर्व ॥ हेगोतम त्रिणि प्रकारना केहा घनोदधिवलय १ घनवातवलय २ तनवातवलय ३ रत्नप्रभा

ते कतिविधे पं० गो० तिविधे पं० तं० घणोदधिवलए घणवातवलए तणुवातवलए इमीसे णं भं

त्नाप्रथ्वीइं दक्षिणनें छेहडैं केतला प्रकारना वलय कहैं | हेगोतम त्रिणि प्रकारना कह्या इमसर्वनीपरैं सोलउत्तरदिसि कहेवा

ते रयणप्पभाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरमंते कतिविधे पं० गो० तिविधे पं० तं० एवं चेव जाव उत्तरिल्ले

जीवाभिग
६१

इमसर्वनोजांजोगें हेठीसातमीसां लगइं उत्तरादि तम तमवनरत्नप्रभाप्रथवीइं घनोदधिनोवलय
क आरद शि कहेवा

एवंसव्वेसिंजावअहेसत्तमाएउत्तरिल्ले इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए घणोदधिवलए

केतलोजाडपणेक हिंत हेगोतम छयोजननजाडपणेंक हिंत सर्करप्रभाप्रथवीइंभगवन घनोदधिना

केवतियंबाहल्लेणंपं गो छज्जोयणाणिबाहल्लेणं पं सक्करप्पभाएणंभंतेपुढवीए घणोदधि

वलयनोकेतलोजाडपणोक हिंत गोतम छयोजनतेहमांएकगाउअनेंगाउनात्रीजो भागघातीइं एतलोजाडपणोकहिंत वालुकप्रभाप्रथवीनो प्रश्नकीधो

थं वलएकेवतिंबाहल्लेणं पं गो सतिभागाइं छज्जोयणाइंबाहल्लेणं पं वालुयप्पभाएपुच्छा

छयोजनउपरिबेंगाउनेंगाउनात्रीजीयाबइंभाग एतलोजाडपणोकहींतें इमइंणंअभिलाषेंपंकप्रभाइं छरांसात योज नडरांसात योजननोजा

तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेणं एवंएतेणंअभिलावेणं पंकप्पभाए सत्तजोयणा

डपणोकहिंत धूमप्रभाइं सातयोजनएकगाउनोअरीउभाग एतलोजाडपणोकहिंतें तमप्रभाइं सातयोजनबेंगाउअनेंगाउनात्रीहियाबइंभाग एतलो

इंबाहल्लेणं धूमप्पभाएसतिभागाइं सत्तजोयणाइं तमप्पभाए तिगुणाइं अद्धजोयणाइंबाह

जाडपणोहोइं हेठीसातमीइंतमतमांइं साववयोजननोजाडपणोकहिंत हेगोतम भगवन रत्नप्रभाइं प्रथवीइं घनवातनाव

ल्लेणं अहेसत्तमाएअद्धजोयणाइंबाहल्लेणं गो इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए घण ६१
य

लयनो केतलोबाहुलपणोकहिंत गोतम साढाच्यारयोजनबाहुलपणोकहिंत इमसर्करप्रभानोप्रश्नकीधो

वातवलए केवतियंबाहल्लेणं गो अद्धपंचमाए जोयणाइंबाहल्लेणं सक्करप्पभाएपुच्छा

एककोशेंऊणोपांचयोजननोजाडपणोकहिंत ऊणोपांचयोजनथाउ इमएलेअभिलावेंकरीवालुकप्रभाइंप्रभानोप्रश्नकीधो
साढाच्यारयोजनमांएकगाउघातताकोसें

कोसूणाइंपंचजोयणाइं बाहल्लेणं एवंएतेणं अभिलावेणंवालुयप्पभाए पं

इंसवापांचयोजननोजाडपणोबाहुल्यवचनेकहिंत पंकप्रभाइंपांचयोजनउपरिएककोसएतलो

चजोयणाए बाहल्लेणंपन्नत्ताइं पंकप्पभाएसेको पंकप्पभाएसकोसाइंपंचजोयणा

जाडपणोकहींत धूमप्रभाप्रथवीइंसाढापांचयोजननोजाडपणोकहिंतपांचयोजनसकोसएउपरिकोसमूकहिंसाढापांचयोजनथाइं तमप्रभाइंकोसइंऊणो

इंबाहल्लेणंपन्नत्ताइं धूमप्पभाएअद्धछट्ठाइंजोयणाइंबाहल्लेणंपन्नत्ता तमप्पभा

नयोजननाबाहुल्यजाडपणोकहिंतबइं सातमीतमतमाइंसवाछयोजननाबाहुल्यइंघनवातवलयनोमानकहिंत एतणवनरत्नप्रभा

एकोसूणाइं छज्जोयणाइंबाहल्लेणं सत्तमाएछज्जोयणाइंबाहल्लेणंपन्नत्ताइं इमीसेणं

प्रथवीइं तनवातनोवलयकेतलेमानिंजाडपणो कहिंत हेगोतम च्यकोसजाडपणोकहिंतएत

भंते रयणप्पभाएपुढवीए तणुवातवलएकेवतियंबाहल्लेणंपन्नत्ते गो छक्कोसे

जिवाभिग ६२

छे दोढ योजन जाडपणो इमइं अभिलापइं सर्करप्रभा छकोस ३ परि कोसनो त्रीजो एक भाग एतलो बाहल्यपणो क
कहिउं प्रथ्वीइं हिउं गोतम

बाहल्लेणं पन्नत्ते एवं एतेणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभागं छक्कोसे बाहल्लेणं पन्न

वालुकप्रभाए सातकोस कोसनें त्रीजो भाग ऊणो एतलो जाडपणो कहीउं पंकप्रभा प्रथ्वीइं सातकोस पूरो जाडपणो क
हीउं

त्ते वालुयप्पभाए तिभागूणे सत्तकोसे बाहल्लेणं पन्नत्ते पंकप्पभाए पुढवीए सत्तकोसे बा

धूमप्रभाइं सातकोसनो त्रीजो एक भाग एतलो जाडपणो कहीउं तमा छठी प्रथ्वीइं सातकोस कोसना त्रीजा भाग ऊणा आठ
कोस एतलो जाडपणो कहिउं

हल्लेणं पन्नत्ते धूमप्पभाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेणं पं० तमाए तिभागूणे अट्ठकोसे बा

हवी सातमी प्रथ्वीइं आठ कोस पूरा एतलो ६ योजन जाडपणो कहिउं हवें रत्नप्रभा प्रथ्वीइं

हल्लेणं पन्नत्ते अहेसत्तमाए पुढवीए अट्ठकोसे बाहल्लेणं पन्नत्ते इमीसे णं रयणप्पभाए पु

घनोदधिनें वलयैं ६ योजन बाहल्यविस्तार क्षेत्र निछेद्य छेदितइं थकइं वर्णादिकी कालोव
रण

ढवीए घणोदधिवलयस्स छज्जोयणबाहल्लस्स खेत्तछेएणं छिज्जमाणस्स अत्थि दव्वाइं व

ण्णादिकं गोतम सारखा छैं सर्करप्रभाप्रथ्वीइं घनोदधिनो वलय ६ योजन एक कोसनो त्रीजो एक भाग एतलो बा
तिहांलगइं हल्यपणो

ण्णकाल जाव हंता अत्थि सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए घणोदधिवलयस्स सतिभाग छज्जो ६२

क्षेत्रछेद्य छेदीतइं वर्णादिक द्रव्य छैं थकइं हा छइं गोतम ॥ इम छेवी सातमी लगें कहेंवो जेजेहनुं बाहल्यपणुं तेतेहनुं क
हेंवुं

यणबाहल्लस्स खेत्तछेदेणं छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि एवं जाव अहेसत्तमाए जं जस्स बाहल्लं इ

रत्नप्रभा प्रथ्वीइं घनवातनो वलय साढाच्यार योजननो बाहल्यपणो कहेंवो क्षेत्रछेद्य वर्णादिकें उपपेत छैं
हा गोतम वली

मीसे णं भंते रयणप्पभाए घणवायवलयस्स अद्धपंचजोयणबाहल्लस्स खेत्तछेदेणं

दिकें उपपेत छ इम जो लगें छेवी सातमी सी लगें कहि जेजेहनो बाहल्यपणो तेते इम तनवातनो वलय कहेंवो जां लगें
इ छैइं हनो कहेंवो हेवी सातमी सां लगइं कहेंवो

छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि एवं जाव अहेसत्तमाए जं जस्स बाहल्लेणं एवं तणुवातवलयस्स जाव

जेजेहनुं बाहल्यपणुं तेते हनुं कहइं रत्नप्रभा प्रथ्वीनइं विषइं घनोदधिनो वलय सें संस्थानें छैं

अहेसत्तमा जं जस्स बाहल्लेणं इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए किंसं

गोतम वाटलो वलयकारनें संस्थानें संस्थित कह्यो जे एहनें रत्नप्रभा प्रथ्वीनइं सघलें चोकफेर वेंटीनें रही

ठिते पन्नत्ते गो० वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए पन्नत्ते जे णं इमं रयणप्पभं पुढविं सव्वतो स

छ लइं इम जो लगइं छेवी सातमी प्रथ्वी लगें घनोदधिनो वलय कहेंवो पणि एतलो विशेष आपापणी प्रथ्वीनि घ

मंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठंति एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदधिवलए णवरं अप्पाण

जिवाभिग ६२

नोदधीविंटीनइं रहें छइं । आरत्नप्रभापृथवी नइं विषे हे तणवात घन । वातवलीजावलयनुं संस्थान कहीउं गोतम

पणं पुढविं संपरिखिविताणं चिट्ठंति इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए किं

वाटलुं वलयाने आकारइं जे वलय रत्नप्रभापृथवीनें विषें घनोदधीना वलयानइं सघलें चोकफेर

संठिते पण्णत्ते गोवट्टे वलयागारे जाजेणं रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलये सव्वतो समं

वींटीनें रहित छइं । इम जो हवी सातमी लगइं । घनवातनो जो वलय कहें वो । ए रत्नप्रभापृथवीनें विषे

तासंपरिखिविताणं चिट्ठइ एवं जाव अहेसत्तमाए घणवातवलयं इमीसेणं रयणप्पभाए

तेनुवातनो वलयसंसंस्थानें कहिउ वाटलुं वलयाकार कहीइं जो जोइं रत्नप्रभापृथवीनुं घनवातना वलयसें

तणुवातवलये किंसंठिते पं० गो० वट्टे वलयागारसंठाणे जाव जेणं इमीसे रयणप्पभा

सघलें चोफेर जो वलय विंटीनें रही छइं इम जां हवी सातमी लगें तनुवातवलय सघलें कहें वो । ए रत्नावनरत्न

एपुढवीए घणवातवलयं सव्वतो समंता संपरिखिवत्ताणं चिट्ठंति एवं जाव अहेसत्तमाए

प्रभापृथवी । केतलें मानें लांबपणें पहुलपणें कही । हे गोतम । असंख्याता योजन

तणुवातवलयं इमाणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए केवतियं आयामविक्खंभेणं गो० असंखे ६२

नो सहस । संघेपइं जो लांबपणें पोहोलपणें । असंख्याता योजननां सहस परिधि फरती कही । इम हवी सातमी लगइं

ज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं प

जो लांबपणें पहुलपणें फरती असंख्याता सहस योजन कहें वो ए रत्नावनरत्नप्रभापृथवीनें अंत छेहडइं मध्य विचें सघलें सरखी छइं परिसरे

ण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए इमाणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए अंते य मज्झे य सव्वत्थ

अजाडपणा चिंताइं हे गोतम ए रत्नावन सर्करप्रभापृथवीइं अंतें छेहडें नवा मध्यें विचें सघलें सरखी छइं इमजो

समा बाहल्लेणं पं० हंता गो० इमाणं भंते सक्करप्पभाए पुढवीए अंते य मज्झे य सव्वत्थ

जो हवी सातमी लगें कहें वो । ए रत्नावनरत्नप्रभापृथवीइं सर्वजीव कालक्रमें अनुक्रमें उपनासें वइं तथा स

समा बाहल्लेणं एवं जाव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा

मकालें उपना । गोतम । ए रत्नावन रत्नप्रभापृथवीइं सर्वजीव पृथवी रासामा उपनें कालक्रम इंमसार अनादि वार २

उववन्नपुव्वा जीवा उववन्ना गो० इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववन्ना

पूर्वइं आना एवाइं असंव्यवहार दिसमां इंमया वतराश्री हवी सातमी लगें कहें वो ए रत्नावनरत्नप्रभापृथवीइंस र्वजीव कालक्रमें पूर्वइं

पुव्वा नो चेव णं सव्वजीवा उववन्ना एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमाणं भंते रयणपभा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

वर्त्ते छइ । वलि सकल कीधा छइ सं सर्व जीवे युगपत् समकाले स गो । ए रत्नप्रभा पृथ्वी ना सर्व जीव नइं
क्या छइ । कीधा

पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा सत्ता सव्वजीवेहिं जढा गो इमाणं रयणप्पभाए पुढवी

संव्यवहारइं कालक्रमे सर्वे वलि असंव्यवहारिइं समकाले सकल नथी कीधा तिनकर्म । एतावता रत्नप्रभा पृथ्वी
मूकी धा छइ । ते इत्यादि इम छेहली सातमी लगें कहेवो । वाई सर्व पुद्गल सर्व

ए सव्वजीवेहिं पुढवी नो चेव णं सव्वजीवेहिं विजढा एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते र

लोकोदरविवरवर्ती कालचक्रमि प्रविष्ट सर्व तेलि पुद्गल समकाल इं ताव पइठा सर्वे । इम सातमी लगें
ताव परणांस सर्व तथा सर्व । एक काल तावे परणम्या । कहेवो

यणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा सव्वपोग्गला पविट्ठा एवं जाव अहेस

एतावता रत्नप्रभा पृथ्वीइं सर्व पुद्गले कालक्रमे परिणामी छइ । कोई सर्व पुद्गल एक काले परिणमी ओ
छोडी सर्वई । छोडी सर्व

त्तमाए पुढवीए इमाणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा सव्वपोग्गल

इम सातमी नरक पृथ्वी पर्यंत नरक । एतावता रत्नप्रभा पृथ्वी सुं सास्वती छइ । किं अस्वास्वती हे भगवन् गोयमा
लगें कहेवो

विजढा एवं जाव अहेसत्तमाए इमाणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए किं सासता किं असासता

कासास्वती छइ । का असास्वती छइ । ते किम इत्यादि पृच्छा हे भगवन् । सास्वती छइ । कोई असास्वती गोयमा
इम कहो छइ काई

गो सियसासता सियअसासता से के[illegible] एवं वुच्चइ सियअसासता सियअसासता

स्यात् कथंचित् सास्वत स्यादशाश्वत सर्व पर्याय

६४

द्रव्यार्थकी सास्वती ते किम सास्वती । वर्णार्थकी वर्ण पर्याय करी । गंध पर्याइ करी । रस पर्याइ करी । फरस पर्याइ करी । असास्वती अनंत छइ । गोयमा

गो दव्वट्ठयाए सासता वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता गो

ते माटइं ते गोयमा । इम कही ते निश्चै कोई सास्वती कोई अ सास्वती । इम यावत् छेहली सातमी लगें कहेवो । एतावता रत्नप्रभा पृथ्वीइं

से तेणट्ठेणं गो एवं वुच्चति तं चेव सिय असासता एवं जाव अहेसत्तमाए इमाणं भंते रयणप्प

कालथकी केतलो काल रहे सइ । अतीतकाल विं ताइं नथी कहीइं । इम नथी सदा वर्त्तइ अनागत । कहीइं इम कइं नथी अनागतकाल ते विनास पर्याय सम छइ

भा पुढवीए कालतो केवच्चिरं होति गो ण कदाए आसि ण कदापि णत्थि ण कदाइ ण भविसंति

आसत् अतीत काल वर्त्तनइं वर्त्त । तवि पंत अनागत ध्रुव छे निश्चल सास्वती तीर्थं धर्मास्तिकायनी परे स्वरूप ... मान काल वर्त्तनइं । ति अपर्यव ... पुंडरीक दह नाजल नी परे अव्यय स्वस्वप्रमाण अवस्थित छइ

भुविंच भवति य भविस्सति य धुवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिता णिच्चा एव

सूर्यमंडल सदिव आवस्थित तेजी वमर पनी परे नितिं आनंत काल व । उपरला चरमांत प्रदेश नइं । हेठला चरमांत प्रदेश नइं
ती इम छेहली सातमी लगें कहेवो । एतावता रत्नप्रभा पृथ्वीइं

जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरि

एह नैं केतली अबाधाइं एकला व्याघात रु । केतो नम । असी सहस योजन नी अबाधाइं आंतरो कह्यो छइ । इमीसेणं
पक्ष आंतरो कह्यो

मंते एस णं केवतीयं अबाधाए अंतरे पं गो असिउत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधा अंतरे पं

कहे ता रत्नप्रभा पृथवी इं । उपरला चरमांत रत्नकांड थकी । खरकांड थी हेठला चरमांत । रिष्टकांडनी नप

इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरमंताउ खरकंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते

ताइं हेठलि चरमांतें एहनैं केतलो अ । सोलसहस्र योजननो अबाधा मर्यादाइं आंतरो कहीउं । इमीसे णं एतावत

बाधाइं आंतरो कहीउं

एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पं० गो० सोलस जोयणसहस्साए अबाधाए अंतरे पणंत्ते

रत्नप्रभा पृथवी इं । उपरला चरमांत थकी । रत्नकांडना चरमांत थकी हेठला वज्रकांडना वेहुं

इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरिमंताउ वइरस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चर

एहनो केतलो मर्यादाइं आंतरो कहिउ । गोयमा । एकहजार योजननी मर्यादिं आंतरो कहीउं । एत्ता

मंते एस णं केवतियं अबाधाए अंतरे पणत्ते गो० एकं जोयणसहस्सं अबाधाए अंतरे पं०

गवन रत्नप्रभा पृथवीनइं । उपरलइं । चरमांत वेहुं इं । वज्रकांडनइं उपर अनैं हेठला चरमां

लैं चरमांतनइं नैं

इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढविए उवरिल्लाउ चरमंताउ वयरस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले परिमं

वैडूर्य कांड एहनी अबाधाइं आंत । गोयमा । एहनैं एकसहस्र योजननी अबाधाइं आंतरो कहीउं । एत्ता

एकेतलो कहिउं

ते एस णं केवइयं अबाधाए अंतरे पणत्ते गो० एकं जोयणसहस्सं अबाहाए अंतरे पं० इ ६५

एतावन रत्नप्रभा पृथवी इं उपरलैं चरमांतइं अनैं वज्रकांडनइं हेठिलैं चरमांत वेहुं । एहनैं केतली अबाधा मर्यादाइं आंतरो

मीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाए वयरस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले अ सि णं केवतं

कहिउं । गोयमा । बेसहस्र जोयननो आंतरो अबाधा मर्यादाइं । इम जो रिष्टकांड लगे कहेवो । उपरलो पनरसहस्र योजन

कह्यो

तियं अंतरे गो० दो जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पं० एवं जाव रिट्ठस्स उवरिल्ले पन्नरस

हेठिलो चरमांत थकी सोलसहस्र योजननी मर्यादाइं । हेठलो चरमांत । एकलाख योजन ना

जोयणस हस्साइं हेट्ठिल्ले चरमंते सोलस जोयणसहस्साइं हेट्ठिल्ले चरमंते एकं जो

भाग । अपबहुल कांड । मर्यादाइं उपरलो चरमांत एकसहस्र योजन । हेठिलैं वेहुं चरमांतें एहनैं एकलाख अ

सीसहस्र योजन

यणसयं सहस्सं आउबहुलस्स उवरिं एकं जोयणसहस्सं हेट्ठिल्ले चरमंते असीउत्तरं

ननो आंतरो कहिउं वइं । घनोदधिनैं उपरलैं चरमांतें । एकलाख असीसहस्र योजननो आंतरो वइं । हेठिलैं वेहुं

जोयणसतसहस्सं घणोदधिस्स उवरिल्ले चरमंते असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं हेट्ठि

वेलाख योजननो आंतरो होइं वीसस । एतावन रत्नप्रभा पृथवी इं घनवातनइं । उपरिलैं चरमांते करी । बेलाख

हस्रना इं घणनाथका

ल्ले चरमंते दो जोयणसहस्साइं इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणवातस्स उवरि-

योजननो आंतरो होइ घनोदधीमा हेठिला चरमांतथकी असंख्याता योजननुं आंतरुं होइ घनवातइ एम गववु
हेठलानो करीनइ

ह्रेचरिमंते दो जोयणसहस्साइं हेट्ठिल्लेचरिमंते असंखेज्जाइं जोयणाइं सहस्साइं इमी
रत्नप्रभा पृथवीइ तनुवातवलयें तेहनें उपरलें चरमांतइ असंख्याता सहस्रयोजननी अबाधाइ
से णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए तणुवातस्स उवरिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयणसह
मर्यादाइं आंतरो हेठिलें चरमांतें असंख्याता योजनना सहस्र आंतरो होइ इम असंख्याता योजनना सहस्र अचका
संतर होइ एवं सर्करप्रभा पृथवीइं
स्साइं अबाधाइं हेट्ठिल्ले वि असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं एवं जाव सत्तरेवं सक्करप
उपरला वेहला धीथी चरमंतथी हेठिला चरमांत लगइ एहनें केतली मर्यादाइं आंतरो कह्यो
भाए णं भंते पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते एस णं केवतियं अबाधाए
गोयमा एक लाख बत्रीस सहस्र योजननी मर्यादाइं आंतरो कहिउं सर्करप्रभा पृथवीइं हे तनव
न
अंतरे पं गो बत्तीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाधाए अंतरे पं सक्करप्पभाए णं भंते पु
उपरिनइं चरमांतइं थकी हेठिलें चरमांतइं एक लाख बत्रीस सहस्र योजननी मर्यादाइं आंतरो कहिउं
ढवीए उवरि घणोदधिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते बत्तीसुत्तरं जोयणसयसहस्सं अबा ६६

घनवाततनइं असंख्याता योजननी अबाधाइं आंतरो कहिं इम असंख्याता आंतरनो आंतरो इम हेठी सातमी लगइं आ
उ कहिवो पाथ ला तहनइं
घणवातस्स असंखिज्जाइं जोयणसहस्साइं पन्नत्ताइं एवं जाव उवासंतरस्सवि जाव अहेसत्तमं च
केतली मर्यादाइं आंतरो केतलो कह्यो एतलो विशेष जेहनें तेह घनोदधिसुं संबंध करी नइं बुद्धि इंजो सर्करप्रभा
गोयमा बाहुल्य म्हु
रिमंते केवतियं अंतसमाए णं वरं वीअस्स बाहल्लं तेणं घणोदहीसंबंधइयव्वं बुद्धीए सक्कर
नें अनुसारइं घनोदधि सहीत प्रमाणना जोमी कहेवुं इम वालुकप्रभाइं एक लाख अठावीस सहस्र योजननुं
लीजे
पभाए अणुसारेणं घणोदधी सहिसहिं तालंइमं पमाणं वालुयप्पभाए अट्ठावीसुत्तरं जोयणे
आंतरुं कहेवुं इम पंकप्रभा पृथवीइं एक लाख वीस हजार योजननुं आंतरुं कहेवुं धूमप्रभा पृथवीइं एक लाख नइं
लक्ष
सतसहस्सं पंकप्पभाए पुढवीए वीसोत्तरं जोयणसतसहस्सं धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठार
अढार सहस्र योजननो आंतरो होइ तमा नामा छठी पृथवीइं एक लाख नें सोल हजार योजननुं आंत हेठी सातमी पृथवीइं
रुं होइ
सुत्तरं जोयणसतसहस्सं तमाए पुढवीए सोलसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अहेसत्तमाए
एक लाख नें आठ सहस्र योजन एतलो इम सातमी पृथवीनें विषें जाणवुं उपरलो चरमांतथकी
आंतरो होइ
पुढवीए अट्ठुत्तरं जोयणसतसहस्सं जाव अहेसत्तमाए णं भंते पुढवीए उवरिल्लाओ च

६६

जीवाभिगम
६७

कैविस्तारेंसुंस रषीछइं १ विस्तारेणकिं किंवजोघइंहीली छइं २ तुल्ला विसेसा कइंसंष्यातगुण इं हिया संखेज्ज हीणछइं ३ गुणाहीणाणं

वरमांतरमीअवकासंतर नइं हेठिलेचरमांतइं एहनेंकेतलीमर्यादाइंआंतरोकेत लोकहिउं गोयमा असंष्यातायोजननालाष

रिमंताउ उवरिमंतरस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते केवतियं अबाधाए अंतरे पं० गो० असंखिज्जाइं जोय

षनी अबाधामर्यादाइंआंतरोकहोउंभगवंतें एरत्नप्रभा एथवीइं बीजीप्रथवीनेंआश्रीनइं

णसयसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते इमा णं भंते रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढविं प

बाहूल्यपणइं सुंसरषीछइं १ कइंविसेषाधिक नइं कइंसंष्यातगुणें अधिकछैं गोतम एरत्नप्रभाएथवीइं बीजीएथ

णिहाय बाहल्लेणं किं तुल्ला विसेसाहिया संखेज्जगुणहीणा गो० इमा णं रयणप्पभा पु

वीनीअपेक्षाइंबाहूल्यपणें सरषीनही १ विशेषाधिकछैंबांधल्यानीअपेक्षाइं ४ पलिसंष्यातगुणोंन हीछै कोइंकविशेषाधिक छइं २

ढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय बाहल्लेणं नो तुल्ला विसेसाहिया नो संखेज्जगुणहीणा एवं

पलिसंष्यातगुणइंहीणीन हीं २ इमबीजीप्रथवीथकीत्रीजी नेंआश्रीनइं ३ एथवीबीजाइंत्रण बनबाहूल्यप लोकत्रोत्रीजीएथवीनीअपेक्षाइंबाहू अपणुजाहपलेंसुंसरषीछइं

नो तुल्ला १ विसेसाहिया २ णो संखेज्जगुणहीणा ३ दोच्चा णं तेते तच्चं पुढविं पणिहाय बा

इमबाहूल्यपणइंकहेवाइंमबाहूल्यपणानाविस्तारनाबोलकहेवा ३ इमत्रीजी चोथी ४ पांचमी ५ छठी ६ तमतमप्रथवी सातमीनइंआश्रीनइं थकी

हल्लेणं तुल्ला एवं चेव भाणियव्वा एवं तच्चा चउत्थी पंचमी छट्ठी णं तेते पुढवी सत्तमं पुढवि

पहेलीइंबोल आचार बीजोइंबोलआ इसमाहेविशे षाधिकछइं

६७

जाहपणें सुंसरषीछइं १ किंविशेषाधिकछइं २ किंसंष्यातगुणा छइं ३ एमरत्नप्रभानीपरइं कहिवो गोतमतेहतिकही विस्तरइं

पणिहाय बाहल्लेणं किं तुल्ला किं विसेसाहिया संखेज्जगुणा एवं चेव भाणियव्वं सेत्तं नेर-

नारकोनाअधिकारपहिलोउद्देसो समाप्त्यो १ केतलीहेंभगवन प्रथवी कही भगवंतइं गोतम सातप्रथवी कही तेकेहवी रत्नप्र

तिनिरइयउद्देसओ समत्तो १ कइ णं भंते पुढवीओ पण्णत्ताओ गो० सत्त पुढवीओ पं० तं रयण

भाईयावत छठीसातमीलगइं कहवुं एभगवनरत्नप्रभाप्रथवी एकलाषअसीसहस्स योजनजाडपणें तेहमां

पभा जाव अहेसत्तमा इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाह्ल्ल स

उपरीकेतलीसुंइंमुकीनइं हेठलिकेतलीसुंइंवर्जीनें मध्यविचिंकेतलालाषनरकावासा भगवंतकह्या

ए उवरिं केवतियं ओगाहित्ता हेट्ठा केवतियं वज्जेत्ता मज्झे केवतिया निरयावाससयसहस्सा पं

गोतमः एरत्नप्रभानामप्रथवीनइंविषइं एकलाषअसीसहस्सयोजननुं बाहूल्यपणुं उपरितेहमां एक

य गो० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरं जोयणसहस्सं बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणंस

सहस्रयोजनअवगाही नइंमुकीनइं हेठलिसहस्रयोजनवर्जीनें वचल्यांएकलाषअठोतरसहस्स विचइं तिहां

यसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वि एगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ

रत्नप्रभापृथवीइं नारकीना त्रीसलाखनरकावासा हे भगवंतें कह्या छैं इम रूंपणि कह्युं छ्हुवंती घें कुरें इम कहि
णं रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया णं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया ते
तेनरगावासा केहवा छैं बाहिरपीवपरिवर्त्त मांहिं वाटला छइ सहितचउखूणा ज्यां लगइं असुभ छइं ते नरकनी वेदनापणि असातावे
णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा जाव असुभा णरएसु वेयणा एवं एएणं अभिलावेणं उवउं
सर्वउपजनादिकमर्व पन्नवणानइं बीजा ठाणपदनें कहेवा सारइं जेहनुं जे बाहल्य जिहां जेतला नरकावासा लाखगमे संख्यावीनेम कहिवा इहां
जिऊण भाणियव्वं ठाणप्पयाणुसारेणं जत्थ जं बाहल्लं जत्थ जत्तिया वा नरयावाससयसहस्सा
ज्यां लगें छट्ठी सातमीनिहांसुधी कहेवुं छट्ठी सातमी मध्यइं नइं केवडा केतला मोटापइं मोटा नरकावासा कह्या प
सा जाव अहेसत्तमाए पुढवीए अहेसत्तमाए मज्झे केवतियं कति अणुत्तरा महतिमहा
इंमपूछिवेइ एवं पूछ्यानो उत्तर ति निमजे छट्ठी सातमीनइं करीनइं बीजा अगनिनें वरणें सर्व कहे मजकहिवो वा
णरया पं० एवं पुच्छितव्वं वागरेयव्वं पि तहेव छट्ठीसत्तमासु काउ अगणिवण्णा लितवा
भगवन रत्नप्रभापृथवी नरकसें संस्थानइं कह्या गौतम नारकीना बें भेद कहिया
इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णरका किंसंठिता पण्णत्ता गो० दुविहा पण्णत्ता तं आ

तेके आवलीप्रविष्ट भना १ ॥ आवली बाहिरणा नरकावासा तेहमां जे आवली प्रविष्ट तेहना त्रणि भेद कह्या तेह
वलियपविट्ठा य आवलीयबाहिरा य तत्थ णं जे ते आवलीयपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता
हा वाटला १ त्रिखूणा २ चउरंसनरकावासा ३ तिहां जे तेआवलीबाहिर नानानरकावासा तेहनें केहवां संस्थानइं संस्थितछइ ते कहे छइं लोहनाकोठा
तं वट्टा तंसा चउरंसा तत्थ णं जे ते आवलियबाहिरा ते णाणासंठाणसंठिता पण्णत्ता तं अ
तेनें संस्थानइं संस्थित छै पचनकवडहलाने संस्थानि कंदूपाक स्थाननें संस्थानइं लोहकढानिं संस्थानि तिमज कढाइ लघुपुडाजननवि ग्रैवस्थालनें संस्थानइं
यकोट्ठसंठिता पिट्ठपयणगसंठिया कंदूसंठिया लोहीसंठिया कडाहसंठिया थालीसं
पिंडिहयं जन्तरपूलजननोपधानपवीइं तेहना मुबनइं संस्थानइं जनकरलाउवटनें आकारइं नेटारइंगनें संस्थानइं माटीनामादलनें संस्थानइं सुघोषनें संस्था
ठीयापिहडगसंठिया कलसुइसंठिया उडसंठिया मुइंगसंठिया आलिंगसंठिया सुघो
नेंघंटावि जोकेंदरदरवाजित्र पणववाजित्रविशेष पडहनइं संस्थानें भेरीढकानें संस्था झालरिनें संस्थानइं कसुंबकसंघ शेषरेव विशेषवदेहनें संस्थानइं थनें संस्थानइं नइं दायाद
सकसंठिया दद्दरसंठिया पणवसंठिया पडहसंठिया भेरीसंठिया झल्लरिसंठिया कुतु
वान नाडीघडिनइं संस्था नितिघानाजी आयु धनें संस्थानें इमसमतमाजगें कहेंवो हवे हे वीसा तमीइं भगवन नरकावासानइं सें संस्थानें कह्या
बकसंठिया नालिसंठिया एवं जाव अहेसत्तमाए णं भंते पुढवीए नरगादिकसंठिया

डाक्टर भाऊदाजी स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जीवाभिगम
६९

गोतम बेसंस्थान वाटलो त्रंससंस्था इणरत्नप्रभाए नरकावासाकेतलाइंबाहल्लपणेबाहल्लेतेसप्रडताळवडसे
कहा संस्थान न पृथवीइ थइस्थ केतलोजाडपणे

पं गो दुविहा वट्टाय तंसाय इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णरया केवतिए बाहल्लेणं

कह्या त्रणिसहस्रयोजननुंजाडपणुं कहर्छे तेकिम हेठिलेछेहडेपीठमध्यसारघणसहस्त्रछइं मध्येकहतांमह

पं गो तिन्नि जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पन्नत्ता तं हेट्ठि घणा चरिमंते घणं सहस्सं मज्झे सु

त्सछइं उपरिसंकोचपामस्थानकसह इमहेठीसातमीलगेंकहेंवउं एतागवन रत्नप्रभा पृथवीइ
त्सछइं

सिरा सहस्सं उप्पिं संकुइया सहस्सं एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढ

नरकावासा केतलालांबपणें पिहुलपणेंकह्या केतलापरिधिबकह्यापरिधइं गोयमा नरकावासा
बेंतेदेबेते

वीए नरगावासा केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पन्नत्ता गो दुविहा

केतुएकसंख्यातविस्ता [illegible] तिहांजेते संख्यातविस्तारनरका
रछइं एकअसंख्यातविस्तारछइं तिहांजेते संख्यातविस्तारछइं तेसंख्याता सहस्रजोजन

पं तं संखेज्जवित्थडा असंखेज्जवित्थडा तत्थणं जे से संखेज्जवित्थडा तेणं संखेज्जाइं जोयण

लांबपणेंपहिलपणेंछइं संख्याता सहस्रजोजन परिधेपिपरधिकहीवीतरागें तिहांजेतेअसंख्यात

सहस्साइं आयामविक्खं लेते संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पन्नत्ता तत्थणं ६९

विस्तारनरकावासाछइं तेअसंख्यातासहस्रयोजनलांबपणें पिहुलपणेंछइं असंख्यातसहस्रयोजनपरिधि

जे ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं

कहीवीतरागइं इमसातमींलगेंकहेवोइती साताम्नीलापञ्च गौतमबेतेदकह्यातेकह्या एकसंख्यातविस्तारन
रकावासा

इं परिक्खेवेणं पन्नत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए णं भंते पुच्छा गो दुविहा पन्नत्ता तं संखेज्जवित्थ

एकअसंख्यातविस्तारनर तिहांजेतेसंख्यातविस्तारनरका तेकेवहुंछइं एकलाखयोजन लांबपणइं
कावासा वासा इपइठाण

ड। डाय असंखेज्जवित्थडाय तत्थणं जे से संखेज्जवित्थडे सेणं एकं जोयणसयसहस्सं आयाम

पिहुलपणेंछइं त्रणिलाखयोजनसहस्र नपरिबिसइं सत्तावीसयोजन उपरित्रणिकोसतें उपरिअठा
ण

विक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं दोन्निय सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोसे अट्ठा

वीसधनुषनासे तेउपरितेरआंगुलो तेउपरिअर्धआंगुलकांईकविशेषाधिकएतलीपरिधिजंबूद्वीपनीपरइंएत
लोनरकावासानोमानकहिउं

वीसं धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलयं च किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं पन्नत्ते

तिहांजेअसंख्यातविस्तारैत्यारनरका तेरहेअसंख्यातयोजननालाबपमाण लांबपणेंपिहुलपणेंकह्या
वासाकाजमाहाकालरोरुमहा

तत्थणं जे ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं

असंख्यातयोजननो मोटो परिधि कह्या | एरत्नप्रभापृथ्वीइं नरकावासानो केहवो वर्ण कह्यो

जीवाभिगम ७०

असंखेज्जाइं जाव परिक्खेवेणं पन्नत्ता इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरया केरि

तेहना वर्ण केहवा छै तेनावं काला कालीजेहनी इति उत्तकृष्ट निंवर्णि भीमरो नरकनाजीवनें त्रासन नकरइ हेगौतम छइ आभाकांतिछै रोमहर्षघणा छै इवइ इवेगछै नरकावासादिक

गंभीररोमरो स्करोमहर्ष नयवराज जेस्तेगंभीर रोमहर्ष पर्याय

सया वन्नेणं पन्नत्ता गो० काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया पर

परमउत्कृष्टसोमवर्णछइ इमजांहेबीसातमीलगेंवर्ण एरत्नप्रभापृथ्वीइं नरकावासानाकेह (लकरवो)

मकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए

वागंधकह्याछेनरकावासा हेगौतम तेयथादृष्टांतइ सर्पनामकनाजेवागंध (होइ) स्वाननामकाजे मंजा (वागंध) (रना)

णरका केरिसिया गंधेणं पन्नत्ता गो० से जहानामए अहिमडेति वा सुणगमडेइ वा मंजा

मकाजेवा (गंध) मनुष्यनामकाजे (वागंध) मूषकनामकाजेवा (गंध) आस्वनामकाजेवा हाथीनामकाजेवासीहना (मकाजेवा) वाघनाम

रमडेति वा मणुस्समडेति वा मूसगमडेति वा आसमडेति वा हत्थिमडेति वा वग्घम

काजेवागंध विगडमगविशेषनामका (जेवा) दीपीचित्रकनामका (जेवा) मयाकोहया घणाकालना (विलङा) कुथितकुहितविहसा (दुर्गंध बइ)

डेति वा सीहमडेति वा विगडमडेति वा दीवियमडेति वा मयकुहियचिरविणट्ठकुणिमवावण्णदुब्भिगंधे ७०

अमसमोहिसंसक्तमत्रि (नबइ) अशुचिअपवित्रदेखवाअयोग्य वि बीभत्सजेहनुं रूपछै (बल) एज्यातेनरकावासानुंएहवोदुर्गंधकू (इ गौतम नामर्थ समर्थ)

किंमिकुलाउलसंसत्ते असुइअपवित्तदिसयगंधबीभच्छदरिसणिज्जे भवेयारूवे सि०

एअर्थसमर्थनही एरत्नप्रभापृथ्वीइं नरकावासा (ना) एगंधथकी अतिअनिष्टअकं (तागंधकहइ छेवनिष्टइं) तोजगेंअमनो (ज्ञनरकहइ)

णो तिणट्ठे समट्ठे गो० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतराचेव जाव अम

एहवागंधन (ली) रनाकानइकह्या इमजांहेबीसातमीलगेंक (हिवा) एरत्नप्रभापृथ्वीइं तेनरकावासा

णामतराचेव गंधेणं पन्नत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पु

नाकेहवाफरसस्पर्श कह्याछै हेगौतम तेयथानामइष्टांत (नइ) खड्गनीधाराजेहवी (होइ) छुरानीधाराजेहवी (होइ) कदंबचारकानामलि (विशेषनोफर)

ढवीए णरया केरिसया फासेणं पं० गो० से जहानामए असिपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा कदंबची

सजेहवोहो इमद (सस्त्रविशेष) बरछीनुंअग्र तोमरशस्त्रविशेषनाअग्र (विशेष) भालायतथा (कूनाअग्र) लकुटनोअग्र भिंडमालअग्र (लविशेष)

रियपत्तेइ वा सत्तग्गेइ वा तोमरग्गेति वा नारायग्गेति वा सूलग्गेति वा लउडग्गेति वा भिंडिमाल

सूचिकलापनोअग्र कपिकछुविशेषजालवो विंछुनोकांटोजेहवो निर्धूमाग्निजे (हवी) ज्वालाअग्निसंबंधामुमुर (कुफादिसपाग्नि)

ग्गेति वा सूचिकलावेति वा कविच्छूति वा विंछुयकंटएति वा इंगालेति वा जालेति वा मु

अर्चिः प्रभृतिभिर्भिन्न आलोकवा सुनिर्मलः॥ अथ जिके हवी तेहवी नरकावासानो फरस होइ एअर्थ गोयमा
ज्वाला योग्य अग्निविशेषाः वस्तुमर्द न. हो मा

इतो इट्ठतराए चेव अकंततराए चेव जाव अमणामतराए चेव फासे पन्नत्ते इमीसे णं भंते

रत्नप्रभा पृथ्वीना नरकावासा एहवा पतिरूप निष्ठ स्पर्श आलोगेघणुस्समोज्ञ अणगमतो फरस
नामा नो होइ

इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा केमहालया पन्नत्ता गोयमा अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव

कहो इमया वतराश्रक ही दिवीसा तमीलांइ कहेवो रत्नगवन रत्नप्रभा पृथ्वीइ नरकावासा केवडामोटाक

रोवंपकला एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका

ह्या गोयमा आजंबुद्वीपजे वृत्त सर्वद्वीपसमुद्र सर्वलीतिर आदि सर्वथकीनानो वाट तेलना पुडा
उपलक्षित वलादि वृत्त नोकेहवो नेसंस्थानइ

के महालया पन्नत्ता गोयमा अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्ला-

संस्थितव वाटलो रथना पईडानिसंस्थानेसंस्थितवइ कर्णिकानेसंस्थानेसंस्थितवइ वाटलो प्रतिपूर्ण
इ वाटलो कमलनी

पूयसंठाणसंठिए वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए

नाचंद्रमानेसंस्थानेसंस्थितवे इम कलाखयोजनलांबपणो विस्तारपणो जाजेरो परिधि पावलिकहीबे तेहु हो क

वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं जाव किंचि

हवी अस्ती परिधिबैतिहां कोइदेवसामंचाकडा अवधिनो देवामहवो कहेवइ इमकरीनीर मिराने चु एहवो केवल कल्पपरि
केकोरेमहर्द्धिक एहवा काल तो नोचप्पुटिका उद्भेयायिता वइ नि कला पथम पूर्णजेबुद्वीपपूरबइ

विसेसाहिए परिक्खेवेणं देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्टु इमं केवलकप्पं

चोकफेरो ताणिचुपट्टी करी ज्ञलिसातां एकवीसवार स्रुवि जंबुद्वीप पाछलीयां छूसीघुपोतो तेदेवतागतऊत्कृष्ट
फेरइ फिरीनइ नीसम घडिइ आवे तावि छुयोनी गति

जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा से णं देवे ता

त्वरीनतता चली तिवेनक्रोधारय शीघ्रतनऊत्कोवेगतो धूलरजवत केरिमर्पनाकहरदेवतानी जातिबकइजा
ग गति जयणाजेरले कोमोकचीनस गति विनी युजन तिबकइ

ए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे

जघन्य एक बइ दिवस पछ मास उत्कृष्ट छम्मासचलतो अजमानाने जातिबकइ केतलेक नरकावासे जाइ न सकइ
दिवस होतो

जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जा अत्थेगइए वीईवएज्जा अत्थेगतिया णरगे णो वीई-

एहवा मोटा नरकावासाछइ गोयमा रत्नगवनरत्नप्रभा पृथ्वी नरकावासाकेहवामो इमजाहेगी सातमीलगेंक
इ टाकहरा छइ हेवो

वएज्जा एमहालया णं गोयमा इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा पं० एवं जाव अहेसत्तमा

केतलेसंख्याति विस्तारें नरकें जइ सकें केतलेअसंख्याने विस्तारें जइ न सकइ इमरत्नगवनरत्नप्रभा पृथ्वीइ

ए अत्थेगतियाणं संखेज्जे अत्थेगतियाणं असंखेज्जे ... इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पु

नरकावासा सामें कह्यालइ गोयमा सर्व वज्रमइ कह्यालइ तिहां घणा जीव पुद्गल कीवा उपजी जीव पुद्गल ना
इलइ
ढवीए णं भंते किंमया पन्नत्ता गो सव्वं वइरामया पन्नत्ता तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य व
चवइ लइ उपजइ लइ सास्वता ते णरकावासा वणिद्रव्य थकी वर्णपर्याइं करी गंधपर्याइं करी फासपर्याइं करी
कह्या
क्कमंति चवंति उववज्जंति सासता णं ते णरगा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं फासप
रसपर्याइं करी असास्वता बीजे माटे पर्याइं करे इमज्यां हेठी सातमी जाइं कहइ वो एवं सगवन
लइ
ज्जवेहिं रसपज्जवेहिं असासता एवं जाव अहेसत्तमाए एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसे णं भं
रत्नप्रभा पृथवीइं नारकी किहां थकी उपजे लइ उपजवुं सर्वपाछलि कही उवे तो तिर्यंच असनी थ
स्फ
ते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कओहिंतो उववज्जंति किं असण्णीहिंतो उववज्जंति सरीसिवेहिंतो उववज्जंति पक्खी
को ऊपजइ कइ सरीसर्प थकी ऊपजइ एद के चउप्पद थकी ऊप के उरपरिसर्प थकी ऊपजइ
जइ
हिंतो उववज्जंति चउप्पएहिंतो उववज्जंति उरगेहिंतो उववज्जंति
के स्त्री थकी ऊपजइ के मछ थी तथा मनुष्य थी ऊपजइ हे गोतम सामान्य असनि थकी ऊपज
इ
हिंतो उववज्जंति इत्थियाहिंतो उववज्जंति मच्छमणुएहिंतो उववज्जंति गो असण्णीहिंतो उव

जाइं मछ मनुष्य थकी पिण ऊपजइ एणइ आलावइ परिरूपवी साई थपा असनी निश्चे पहिली नरकें ऊपजइ
कहेंवी
वज्जंति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जंती एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाहा घोसेयव्वा अ
सरीसृप दूजी गो भूदि पंखी त्रीजी इ ऊ चोथी थकी सीहादिक ऊपजइ उरपरिसर्पादिक पांचमी इं ऊपजें
बीजी इ ऊपजइ पजइ
स्सीखलु पढमं दोच्चं च सिरीसवा तिय पक्खी सीहा जंति चउत्थी उरगा पुण पंचमी
२ छठी इं स्त्री मरी ऊपजइ मछ अनइ मनुष्य सातमी इ इम हेवी सातमी लगइ एह वालेद कहेंवो नारकी असनी
ऊपजइ उपजवा नो
जंति १ छट्ठी च इत्थीयाओ मच्छा मणुया य सत्तमिं जंति जाव अहेसत्तमा पुढवी णेरति
थकी ऊपजइ नही स्त्री थकी पिण सातमी इं ऊपजइ नही मछ मनुष्य थकी सातमी इ ऊपजइ
या णो असण्णीहिंतो उववज्जंति जाव णो इत्थीयाहिंतो उववज्जंति मच्छमणुएहिंतो उवव
एसगव रत्नप्रभा पृथवीइं नारकी एक इं समइ केतला ऊपजै हे गोतम
ज्जंति इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतिया एकसमएणं केवतीया उववज्जंती
जघन्य थको तो एक ऊपजे बे ऊपजे उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता पणि नरकनें इम हेवी सातमी जो
तो विषइ ऊपजइ अनें नरा रहित
गो जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा असंखेज्जा उववज्जंति एवं जा

जीवाभिग
७३

उपजवुं कहेवुं एरणवत रत्नप्रभापृथ्वीइ नारकी एकेकइसमइएकेकोनारकीअपहरतइथकइं
केतलइकालइंअपहरीरहइकेतेरहइं
व अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया समए २ अविहीरमाणा २ केव
तिबारेंसणवंतकहे देगोतम तेअसंख्यातसमयेंअसंख्यातानारकीअपहर असंख्याती उत्सर्पिणी
म नइथकइ
तिकालेणं अविहिता गो ते णं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि
अवसर्पिणी होइं पिण अपहरनो पिण अपहरी सकाइं नहीं एत जाहे वीसा तमी लग एरणवत रत्नप्रभा
णानारकीलइं इम
अवसप्पिणीहिं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया जाव अहेसत्तमा इमीसे णं भंते रय
पृथ्वीइं नारकीनइं केवडीमोटी सरीरनीअवगाहनीते तेकिमकइं शरीरनीअवगाहनाबेंभेदेकही
देहमानकेहवीकहीलइं लइ तेकेही
णप्पभाए पुढवीए णेरतियाणं केमहालया सरीरोगाहणा पं तं दुविहा सरीरोगाहणा पं तं
एकभवधारणीशरीर १ एकउत्तरवैक्रीय २ तिहांजेतेभवधारणीकशरीर तेजघन्यतोअंगुलनोअ
संख्यातमोभागएतलोशरीरहोइं
भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से जहण्णेणं अंगुलस्स अ
उत्कृष्टुतोसातधनुषत्रणिहाथउपरि अंगुलएतलोदेहमानकइं तिहांजेतेउत्तरवैक्रीयशरीर
संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिन्नि रयणीओ छच्च अंगुलाइं तत्थ णं जे से उत्तरवेउ

तेजघन्यतोअंगुलनइंसंख्यातमइंभागेवैक्रीयनोपारंभकइं तत्कृष्टुंतोपनरधनुषअढीहाथएतलोउत्कृष्टोदेहमा
नबीकेकइं उक्तंच देवनरअहियलक्खंतिरियाणं नवयजोयणसयाइं दुगुणंतुनारयाणं
व्विए से जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं पन्नरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ
तणीयंभवउव्वियसरीर १ बीजीनुंभवधारणीकशरीर पनरधनुषअढीहाथ बीजीइंउत्तरवैक्रीयेएकत्रीसधनुषउप
प्रमाणदेहमान रिएक
दोच्चाए भवधारणिज्जे पन्नरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ उत्तरवेउव्विया एकतीसं ध
हाथ तजोसरी त्रीजीइंभवधारणीक एकत्रीसधनुषउपरिएकहाथशरीर त्रीजीइंउत्तरवैक्रीय बासठिधनु
रकइं सरीर
णूइं इक्का रयणी तच्चाए भवधारणिज्जे इक्कतीसं धणूइं इक्का रयणी उत्तरवेउव्विया बाव
षउपरिबइंहाथएतलो चोथीइंभवधारणीकसरीर बासठिधनुषहोइं उपरिबइंहाथहोइं उत्तरवैक्रीयएकसो
देहीकइं
ट्ठिं धणूइं दोण्णि य रयणी चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठिं धणूइं दोण्णि रयणीओ उत्तरवेउ
पचवीसधनुषकइं पांचमीइंभवधारणीकसरीर एकसोपचवीसधनुषहोइं उत्तरवैक्रीय अढीसेंध
व्विया पणवीसं धणुसयं पंचमीए भवधारणिज्जे पणवीसं धणुसयं उत्तरवेउव्विया
नुषदेहीकइं छठीइंभवधारणीकसरीर अढीसइं धनुषहोइं उत्तरवैक्रीयपांचसइंधनुषहोइं
अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं छट्ठीए भवधारणिज्जे अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उत्तरवेउव्विया पंच
मेप्रथमीहोइउत्सेहो पनरसधणुतिन्निहत्था पयरे पदहाथ ५ सोनेवंयला॥

॥रयणाए पढम पयरे हत्थतिय देह उस्सेहउत्तरणीय वप्पन्न अंगुल सड्ढा पयरे २ हवइ बुद्धी ?
... नवयवीयाए पढमे पयरंमी होइ उस्सेहो ह सत्तिय तिन्नि अंगुलपयरे २ पन्नहाय रसा
... पढम पयरंमि होइ उस्सेहो म ... रयणी अंगुला गुणवीसा ... हत्थ ३ सा ... पढमे पयरंमी
होइ उस्सेहो ... धनुवी ... अंगुलपयरे २ ... हाथ ४ साव ... पंचमीए पढ

जीए पढमे पयरेमि होइ उस्सेहो ... बासठिधणुय सड्ढा पयरे २ प वड्ढी ६ ... सप्तम्या प्रथम अर्द्धि गुण प्रमाणवर्णः ... सप्त ... यम॥

७३

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

सातमीइं सवधारणीकसरीरपांचसेंधनुषहोइ. उत्तरवैक्रीयनेंसहस्रधनुषदे हहोइ एमावतरत्नप्रभाइपृथिवी
धणुंसयाइं सत्तमाए णं भवधारणिज्जे पंचधणुंसयाइं उत्तरधणुसहस्सं इमीसेणं भंते र
नारकीनांशरीरनुं स्यूंसंघयणकहीउंछइ गोयमा छयसंघयणमांहिएकेसंघयणहोइ
यणप्पभाए नेरइयाणं सरीरया किंसंघयणी पण्णत्ता गो छण्हं संघयणीणं असंघ
अस्थिनहोइ नसाजालप तिणिहो निश्चेसंघयण प्रमुखनहीपुरु नहीमाटेंनारकीनेंसंघयणनहीनेरइयाआ संघयणीइतिवचनात् जेपुद्गलअनिष्ट अमनोज्ञअमणाम तापुद्गलतेनार
यणीणेवट्टी णेवछिराणेवण्हारूणेवसंघयणमत्थि जेपोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिंसरी
कीनेंसरीरेंसंघा तपणें एकवाइंथइ रणमइं इमहेवीसातमीलगइंक हेंवो एमावत रत्नप्रभाइपृथिवीइं नारकीनेंस्यूं
रसंघायत्ताए परिणमंति एवं जाव अहे सत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए
संस्थानकहिउं गोयमा बेभेदेकह्यांशरीर तेकेहा एकभवधारणीक एकउत्तरवैक्रीयसरीर तिहांजेनेभवधारणीकेशरीर
नेरइयाणं किंसंठिया पं गो दुविहा तं भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य जे ते भवधारणिज्जे ते
तेहुंडकसंस्थानेकह्या तिहांजेते उत्तरवैक्रीयशरीरतेपणि हुंडकसंस्थानेकह्या
भवधारणीज्जा हुंडसंठिया पं तत्थणं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पं एवं ७४

इमहेवीसातमीलगेंयावत्ता हमारइंकहेंवो एमावत रत्नप्रभाइपृथिवीइं नारकीनांशरीरनो केहवीरीतिनांवर्णकह्याछइं
जाव अहे सत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतीयाणं सरीरया केरि
गोयमा कालावर्णकालीछइंकांतिनेंकमी आवत्तत्राइपृथवीपरमकृष्णकांतिवर्णकहेंवो मांहेंवीसा तमीलगेंवर्णकहेंवो
सिता वण्णेणं पं गो काला कालोभासा जाव परमकिण्हा वण्णेणं पं जाव अहे सत्तमाइ
एमावतरत्नप्रभाइपृथवीइं नारकीनेंकेहवागंधकह्याछइं गोयमा जेयथाइवृत्तजतइं सर्पनाम
मीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं केरिसया गंधेणं पं गो से जहा णामए अहि
डाजेवाम्रूइं तिमयावत्तत्राइपृथीहेवीसातमीलगेंकहेंवो एमावतरत्नप्रभाइपृथवीइं नारकीनांशरीरनो केहवो
मडेतिवा जाव अहे सत्तमाइ मीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाणं सरी
फरसकहिउं गोयमा कठीणशरीरनीत्वचातथा छिद्रवालेंहना तथाप्रकारतिसंबरपुरुषनांमैलथछायाजुसिरसमसमे कालिनकविनमर्दछइंएहवाफरसकह्या
रयाणं केरिसया फासेणं पं गो फुडितच्छविविच्छविया खरफरुसझुसिरा फासे
इमनांहेवीसातमीलगेंहेवो एमावतरत्नप्रभाइपृथवीइं नारकीनें केहवापुद्गल
णं पण्णत्ता एवं जाव अहे सत्तमा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं के

२६०कनाविचारअस्वर्गावावीरवरत्नायाचावी॥

स्यामसमासयणि परिणामघडे गोयमा जेवृक्षलक्षनिश्चलागग मोअमनोज्ञ तेहवापुक्षलतेनार
मला माग कीनई
रिसियापोग्गलानुसासत्ताएपरणमंति गो जेपोग्गलाअणिट्ठाजावअमणामातेनेसि
उसासयणई परिण इमजाहेवीसातमीलग इमजाहेवीसातेनरकेपणिआहार एतावनरत्नप्रभा
मई इकहेवो स्वरूपईमजकहै
उसासत्ताएपरणमंति एवंजावअहेसत्तमाए एवंआहारासववसएहवि इमीसेणंभंते
पृथ्वीई नारकीनेकेतलीलेस्याकही गोयमा एककापोतलेसाकही एवंसर्क
नेरयणपत्ताए पुढवीएणेरइयाणं कइलेसाउ पं गो एकाकाउलेसाउंवालु
रपसाईकापोतलेस्या कही हवेवालुकप्रभानोप्रश्नकी गोयमा बेईलेस्याक तेकेही नीलले आगईकापो
धी ही जोणवी स्याए त
ए एवंसक्करपत्ताए वालुयपत्ताएपुच्छा गो दोलेसाउपणत्ताउ तंनीललेसाय
लेसा२ तिहांघणानारकीनेकापोतले नीललेस्यानानारकीथोडाछे इमपंकप्रभानो
स्याकही
काउलेसाय तेबहुउलेसाय तराजेतेकोतिथोवतरकाजोणीललेस्सा एवंपंक
प्रश्नकीधो पंकप्रभाईएकनीललेस्या इमधूमप्रभानोप्रश्न गोयमा बेईलेस्याक तेकेहि एकनीललेस्या
कही कीधो हीछेई
पलाएपुच्छा एकाणीललेसापं धूमपत्ताएपुच्छा गो दोलेस्साउ पंतंकिणहलेसायः
एककृष्णले
सा

उमुकानवयन
इयाए मीसया
नीलयाचबहु
या पंचमीस्त्रीअ
नीसा कणहलेसा
परमकहे

तेनारकीघणाकह्या जेनीललेस्यानानारकी अनेजेकृष्णलेस्यानानारकीइमतावनापाछलीपरेजाण
वई तेथोडा वीहवेतमानोप्रश्न
नीललेसाए तेबहुतरका जेनीललेस्सातेथोवतरकाजेकणहलेसातमाएपुच्छा
कीधोतमाएपृथ्वीईएक देवीसातमीपृथ्वीईए परमएतलोविशेषपरमउत्कृ एतावता रत्नप्रभापृथ्वीई
लीकृष्णलेस्याछई कलीकृष्णलेस्याछई ष्टीकृष्णलेस्या छई
गो एगाकिणहलेसा अहेसत्तमाए एकापरमकिणहलेस्सा पं इमीसेणंभंतेरयण
नारकीसंसम्यगदृष्टीछई किंमिथ्यादृष्टीछई किंमिश्रदृष्टीछई गोयमा सम्यदृष्टीछई
पत्ताएपुढवीए नरतिरक्खा किंसमादिट्ठी मिछदिट्ठी किंसमामिछदिट्ठी गो समदिट्ठी
मिथ्यादृष्टीछई सम्यगमिथ्यादृष्टीछई इमजावतमतमापृथ्वीकीमिश्रदृष्टीपणिछई एतावता रत्नप्रभा
मिछादिट्ठीवि ठीविसमामिछादिट्ठीवि एवंजावअहेसत्तमाए वि इमीसेणंभंते रयणप
पृथ्वीई नारकीस्युंज्ञानीहोइ केअज्ञानीहो गोय ज्ञानीहो अज्ञानी जेज्ञानीछ तेनिश्चेत्रणिज्ञानीहोइ
इ मा इ होइ इ
त्ताएपुढवीएनेरतयाकिंनाणीअनाणी गो णाणीविजेनाणीअनलयाणिवी तेनियमातिं
तेकेहा मतिज्ञानी श्रुतज्ञानीछे अवधिज्ञानी जेअज्ञानीहोइतेनिश्चेत्रणि केतलाएकबेअज्ञानीहोइअपर्या
१२ ३ अज्ञानहोइ प्तावस्थाइ
नाणी तं आभणीबोहिनाणी सुयनाणी उहीनाणी जेजेअनाणी तेअत्थेगतियाउअनाणी

केतलाएक अणि अज्ञानीछइ५ जेबइं अज्ञानी तेनिश्चे अथ स्याइं मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानीछइ२ जेअणि अ
यथावस्थाइं होइ यथाव होइ१

अन्नाणीतिआतिअन्नाणी जेदुयनाणीतेनियमामतिअन्नाणीय सुयअन्नाणीय जे

ज्ञानीछइ५ तेनिश्चयें मतिअज्ञानीहो श्रुतअज्ञानीहो विभंगज्ञानीहोइ३ एमहेठीसातमीजोगें थाकेंतेम
यथावस्थाइ इ१ इ२ कहेवुं वंनर

जेऽनांणीय तेनियमामतिअन्नाणी सुतअन्नाणी विभंगनांणी एवंअहेसत्तमाए स

केज्ञानीअणिहोइ पयथावस्थाइं अज्ञानअणि इंमयावत्तहेठीसातमीजोगेंक मनयोगीछइ वचनयो
होइअपयथावस्थाइं हेंवउं

ाणेणाविर्तिनिविअनाणातिन्निवि एवंजावअहेसत्तमाए कैंमणयोगी वय

गीछइ काययोगीछइ इंमअणियोगछइइंमहेठी एरतनप्रभापृथ्वीइं नारकीसं सकारोपयो
सातमीजोगेंकहेवुं

जोगी काययोगी एवंअहेसत्तमाए अमीसेणंतंतेरयणपभाएपुढवीएनेरईया

गसहितछइंकइं अनाकारोपयोगसहित गोयमा साकारोपयोगसहि अनाकारोपयोगपणिछइ इंमहेठी
छइ छइ

किंसाकरोवउत्ता अणागारोवउत्ता गो सागरोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि एवं

सातमीजगइंकहेवुं एरतनप्रभापृथ्वीइं नारकीअवधिज्ञानेंकरीके तलुंखेत्रजांणेंना

जावअहेसत्तमाएपुढवीए इमीसेणंतेतेरयणपभाएपुढवीएनेरतियाओहिणांणीएं

कारोपयोगइदेवें साकारोपयोगइं गोयमा जघन्यतोअर्धगाउदेषइं उतकृष्टुंतोच्यारगाउजांणइंदेषइं

केवतीयंखेत्तंजाणंतिपासेती गो जहन्नेणंअद्धगाउयाइं उक्कोसेणंचत्तारिगाउ

सर्करप्रभापृथ्वीइं जघन्यत्रणिगाउदेषइं उतकृष्टुंतोसाढाउगाउदेषइं एमसघलीपृथ्वीइं

आइं सक्करप्पभाएपुढवीए जहन्नेणंतिन्निगाउयाइं उक्कोसेणंअद्धुट्ठाइं एवंअद्धगा

अर्ध२गाउघटाडीइं सातमीसातमीजगइंकहेवुं जघन्यअर्धगाउदेषइं उतकृष्टुंएकगाउदेषें एरतनप्रभा

उयं२परिहायंतीयं२जावअहेसत्तमाएजहन्नेणंअद्धगाउयं उक्कोसेणंगाउइमी

रत्नप्रभापृथ्वीइं नारकीनेंकेतलासमुद्घातकह्या गोयमा च्यारसमुद्घातकह्यालेकेता

सेणंतंतेरयणप्पभाएपुढवीएनेरतियाणंकतिसमुघाताषंगो चत्तारिसमुघाता पं

वेदनासमुद्घात१ कषायसमुद्घात२ मरणसमुद्घात३ वैक्रीयसमुद्घातवोथो ४ इंमज्योजगेंहेठीसातमीसाज
प्रथम१ बीजो२ त्रीजो३

तं वेदणासमुग्घाते कसायसमुग्घाए मरणसमुग्घाते वेउव्वियसमुग्घाए एवंजावअ

गइंकहेवो एरतनप्रभापृथ्वीइं नारकी केह्वी रूपतरस ज्ञोगवीनाविहरेंती कहेंसो क्विकरेंज्ञे गोयमा

हेसत्तमाए इमीसेणंतेतेरयणप्पभाएनेरतियाकेरिसंयखुहपिवासंपच्चणुब्भवमांणा

एकेकें रत्नप्रभा पृथ्वीना नारकीना असद्भावस्थापनाइं आसरी सर्व उदधिसमुद्रनां पाणी वकसनाइं नासर्व पुद्गल

विहरंति णं एगमेगस्स णं रयणप्पभा पुढविनेरतियस्स असब्भावपट्ठवणाए सव्वोदधी

तेसर्वनो जीमुखमां घालइं पाइं तोहिंपणि रत्नप्रभानानारकीनी त्रृषा उपसमेनहीं तोहिंजतेत्रृप

वा सव्वपोग्गले वा आसयंसि पक्खिवेज्जा णो चेव णं से रयणप्पभापुढवीए नेरईए वित्तिते

तिनपणंमइं विशेषपणेकरीनइं एहवी गोतम रत्नप्रभाप्रथवीनानारकीक्षुधात्रृषाताजेनहीं एहवीत्रृषाक्षुधानवनावि चरेछइं

वा सिया वितिण्हे वा सिया एरिसयं णं गोयमा रयणप्पभापुढवीए णेरइया खुप्पिवासं पच्चणुब्भवमाणा

इमहवीसातमी लगें कहि इमरे भगवन रत्नप्रभाप्रथवीनाना रकीस् एकरूपविकुर्वीतें समर्थछइं कइंप्रचुरकरूपवि

विहरंति एवं जाव अहेसत्तमा इमीसे णं भंते रयणप्पभापुढवीए नेरतया किं एकत्तं पभू

कुर्वीतें समर्थ छइं प्रचुरकरूपवि एकरूपविकुर्वी प्रचुरकघणारूपपणिविकुर्वीतो एकमोटो मुद्गरनोरूप कुर्वानी गोयमा

उव्विउव्वित्तए पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए गोयमा एगत्तंपि पभू पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए एगत्तं वि

विकुर्वें मुसुंढशस्त्री विकुर्वइं इमसुद्गररूप इममुसुंढरूप एममुद्गररूपेंमुसुंढरूपइं करवत्तितखा कलंककर

उव्वमाणे एगं महं मोग्गररूवं वा मुसुंढिरूवं वा एवं [illegible] मुसुंढिरूवं वा एवं मोग्गर ७७

पत्रमात खड्गसहित गदामुसलचक्रना कुंतनाजा तोमर त्रिसूल लकुट भिंडमालाबाहर ओलाइं भिंडमालरूप विशेष विकुर्वइं

मुसुंढि करवत असि सत्ती हल गदा मुसल चक्क णाराय कुंत तोमर सूल लउड भिंडमाला

जो प्रचुरकघणारूपविकुर्वेता घणा मोग्गर मोटा रूवाइं यावत् सर्व तेसंख्याता पणिअसंख्याता विकुर्वानी शक्तिनही मेंबंधस्वाशरीरसंलग्न करें पणि स्वशरीर असंलग्न नहीं पोताना

य जाव भिंडमालारूवं वा जाव पुहुत्तं विउव्वमाणे मोग्गररूवाणि वा जाव ताइं संखेज्जाइं णो अस

ना शरीर सरिखांपणि अधिकाकरवानी शक्ति नहीं एह प्रहरणादि प्रकें परस्पर संबद्धकइं असरिसमस्तप वा शस्त्र विकुर्वीनइं अन्यो अन्यमांहोमांहें मारि

खेज्जाइं संबद्धाइं णो असंबद्धाइं सरिसाइं णो असरिसाइं विउव्वंति रत्ता अन्नमन्नस्स का

कारेहणता वेदनाप्रते उदार तेउपायें वधारतइं कडूसीवेदनासरवसरीरें उजलउं दुखकारी विपुल विस्तीर्ण अतीवरूपकर्कश कडुकनिष्ठुर चंडरुद्र तीव्र

यं अभिहणमाणा अभिहणमाणा वेदणं उदीरेंति उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरु

दुःखदायी दुःखें अहीयासवा योग्य दुःखें करी सर्वप एवी पांचमीधूमप्रभा लगीं इं छठीसातमी प्रथवी इं समकहेंवो

सं णिट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं एवं जाव धूमप्पभाए पुढवीए छट्ठसत्तमासु णं पुढवी

नारकी घणा मोटा रातांकंथुनइं रूपइं वज्रमें मुखछइं जे गोमय कीडासरीखां रूप विकुर्वइं वि कुर्वी

सु नेरईया बहू महंताइं लोहियकुंथुरूवाइं वइरामयतुंडाइं गोमयकीडसमाणाइं वि

योजनमांनमुखलेवा वधापारकर्कशघर एस्वशरीरबंधं पकलेकलामतिसाव खानिमारयति उत्तजीव नामपर्याय

असाता आसें मोहोमाहइं कायानपरइं अस्थनीपरइं चडीबिसइं मोहोमाहइं कालइंथकेंडकुनाकमिनीपरइं मोहिंरथें स स्वकराभीरमधश्र लाचालतावका

नवत्ता अणमसिकायं समरत्तु रंगेमाणा २ खोयमाणा २ सयपोरकमयो इव दाजेमाण

सागसंचरलोचालताधका उदारवेदनावेदन कोइवीनेजतीडषरूपज्यानेगेडषेअ एतगवनरनअस्तोष्टथवीइ नपायइं होयासेजोअतावोकहीइं

अंतो अणवधिसमाणा २ वेदणं उदीरेति इंगलेद्भावहु रं यांसंइमीसेणं तलेरयणप्पला

नारकीसुंसीतनवेदनावेदइंछइं केउष्णवेदनावेदइंछइं केसीतोष्णमिश्रवेदनावेदनावेदइंछइं गोयमा सीत

पुढवीए नेरतिया किंसीतवेदणं वेदेंसि उसिणवेदणं वेदिंती सीओसिणवेदणं वेदेंति गोयमा णो उसि

नवेदनानथीवेदता उष्णवेदनावेदइंछइं सीतोष्णवेदनापणिनथीवेदतास्यामाटेसीतोष्ण फरसनरकमांछइंनेहीसीतोष्णफ इंमवालुकप्रसानेगेन हेतु

सीयं वेदणं वेदेंति उसिणं वेदणं वेदंति नसीओसिणवेदणं वेदेंति एवंजाववालुयपभाए उसि

वालुकप्रसाइंसीतनवेदरेनीवेदइं उष्णवेदनावेदइंछइं रसतोष्णनानथीइहेमाटे जेनष्णवेदनावेदइंछइं तेनारकी घणाछइं

सीयं वेदणं वेदेंति उसिणवेदणं वेदेंति लोउसिणवेदणं वेदंती इंउसिणं वेदणं वेदेंती

जेसीतवेदनावेदइंछइं तेनारकीघणाछइं इंमधूमप्रसाइंप्रश्नकीधो गोयमा सीतवेदनावेदइं

तेथोवतरगा इसीतंवेदणं वेदेंती तेवहुतरगा धूमपभाएपुच्छा गोयमा सीतंपि वेदणं ७८

पणिसीतोष्णवेदनानवेदइंतेघणाछइंना तेथोडाछइं जेउष्णवेदना तेतोअल्पवीरविरलाइंथोडाकछ रकीजेसीतवेदनावेदइंछइं वेदइंछइं

वेदेंती णोसीतोसिणं तेबहुतरगा सीतंवेदंती तेथोवतरका इंउसिणवेदणं वेदेंति

तमाछडीनो गोयमा तमाइंसीतवेदनावेदइंछइं पणिउष्णवेदनानथीवेदता पणिसीतोष्णवेदनानथीवेदतानारकीपण प्रश्नकीधो तेवेदनानथी

तमाए पुच्छा गो सीयवेदणं वेदेंति नोउसिणवेदणं वेदेंति नोसीओसीणवेदणं वेदंती

इंमज्ञांहेवीसातमीलगेंकहेंवोपणिणवरंएत एतगवनस्तनप्रस्तोष्टथवीइ नारकीकेहवोनरकनोनवत्तोगव ओविन्नाबजेवरमउत्तरूपसीतवेदनावेदइं

एवंअहेसत्तमाए णवरंपरमसीयं इमीसेणंतेरयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाकेरि

नाथकाथवर्त्तइंछइं विचरइंछइं गोयमा तेतिहांनिसेंबीहतायकेत्र पजातकर्मकत्वात् निसइंसर्वकालनिनरकअधिका रेंविचित्रछैं

संनिरयालवं पच्चणुभवमाणा विहरंति गो तेणंतत्थ निच्चंभीता णिच्चंतसिया णिच्चंतस

नितोपरमाक्षामी निसेंसर्वकालेंअसुखत्रजुकूल अतनिरंतरअसुपचितनरक इंमविन इंमज्ञांहेवीसातमीलगे धीत्रासपामेछइं माहोमा हेअसुवेधन्र नोसवलोगवतानारकी रइंछइं कहेंव तें

यानिच्चंपरमसुभमतुलमणुबद्धं निरयलवं पच्चणुभवमाणा विहरंती एवंजावअहेसत्त

हेवीसातमीपृथवीइं पांचमोटाअक्रष्टा मोटापेंमोटापांचनरकावासाकस्ता तेकेहा कालनामा २ महाकालनामा २

माए अहेसत्तमाए णं पुढवीए पंचअणुत्तरा महतिमहालया महाणरगा पं तं कालोमहाकालो:

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊ दाजी पुस्तकालय

रोरु ३ महारोरु ४ अपइठाणो ५ तिहां पांच पुरुष तेलइ उत्कृष्ट परिणामे करी कर्म बंध पाम्या मरण समे

रोरुए महारोरुए अपतिठाणे तत्थइमा पंचमहापुरिसा अणुत्तरेहिं दंडसमादाणेहिं का

इं मरण करीनइं अपयठाणनामा नरकावासे नारकीपणइं उपना छइं तेके ते पंच पुरुष तं जहा परशुराम जमदग्नि ऋषि पुत्र १

लमासे कालंकिच्चा अप्पतिठाणे नरये नेरइयत्ताए उववण्णा तंजहा रामे जमदग्गि

दाढायु लच्छी नो पुत्र २ वसु राजा उपरिचर स्फटिक सिंहासन कोरव गोत्री ब्रह्मदत्त नामा १२ मो चक्रवर्ती चुलणी नो पुत्र ५
जीव संभूम आठमो चक्रवर्ती ४

ते १ दाढाउलेच्छतीपुत्ते २ वसूउवरिचरे ३ सूभूमे ४ कोरवे ५ बंभदत्ते चुलणीपुत्ते

ते पांचइं नरक मांहि नारकी पणइ उपना काला काली बहु आभा उजलइं उत्कृष्ट स्थानकइं श्री वीर विस्तारइं काला वर्णइं
नारकीके हवा छै कांति जेहनी ते सांजलो कहिवो

५ ते णं तत्थ नेरइया जाया काला कालोभासा जाव परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता

ते तिहां वेदना वेदइ उजल जाजुसमोन विपुल विस्तीर्ण सांजलो दुरहियासवा उष्णवेदना जावत् तुणां कालं कारी भगवंत

ते णं तत्थ वेदणं वेदेंति उज्जलं विउलं जाव दुरहियासं उसिणवेदणीजेसु णं भं

नारकीके हवी उष्णवेदना सही भोगवता प्रकाशि विचरइ छइं गोयमा ते जिम कोई कुमार दार कलो हो कारनो बालक

ते नेरतिया केरिसयं उसिणवेदणं पच्चणुभवमाणा विहरंति गोयमा से जहानाम

नाम कोइ निर्दिष्ट नाम कहइ ते बालक तरुण यौवन शरीर बल समर्थ छइं स्थिर जेहि हस्त सरिखां जेहनां हाथ पग पासां हद तर छै
योवली केहवो छइं अ थी वध सो छइं जे अजीरण रोगहवइ सफेद दुष

मएकम्मारदारए सिया तसणे बलवं जुगवं अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणिपादपास

उरु हद तर छै संघात नसकल अंग कविणकार्यनु उलंघवु पवन वेग धानु जे हतु व हस्ति नास मी चालि छै युगल छै
इंपरणी तबइं जेद तइं इहवा चल अनिमन ते हने विषे समर्थ छइं चली ते हस्त प्रदेश अफल जहनी

पिठंतरोरुसंघायपरिणए लंघणपवणजइणवायामणसमत्थे तलजमलजुयलफलि

सोगलपरे बलेंघणनिवड छइं व लिनकहे ला एहवा बार चमेष्टि मुष्टिमुष्टिसमाहतइं करी सरीरने विषे की धा छै
प्रले पलाइनो समु छइं व लाणालि बंध छइं कं सबल जेहनो उरस्थितव

हनिसबाहूघणणिचय वट्ठ पालिबंधे चम्मेठगदुघणमुठियसमाहय नि

बल नरहित्वा नो उपनो बलमेणइं करीस तदपाक प्रष्टवाचा कुसलजै निपुण सांनवां निपुण क्रियाकु
हित छइं छेक विरूढतर ७२ कलांनां लो ल विज्ञो छै जाण छे न जाल निपुणशि

चियकंचसत्ते उरसबलसमण्णागए छेदे दक्खे पठे कुसले नितुणे मेहावी णिउणसिप्पो

ल्पण ते एक मोटो लो हपिंड लोह नापाणी ना घडा सम लोहपिंड ले इंनि कूटी २ घणमाही चूर्णक जो ल
एहवो ३ रीवड ताची २ नइं नइं २ नइं २ इं

वगए एगंमहं अयपिंडं उदगवारसमाणं गहाय तंताविय कोट्टित २ लिट्टित २ चुण्णियं

गइं एक वार बइं वार त्रणि वार उत्कृष्टु तो अर्द्ध मास लगे सम्पूर्ण ताकिनइं सेमाग धीतु पाणे वा कालइं कारसी
ते त तम इं श्रु क इ

जाव एगाहं वा दुयाहं वा तिति तियाहं वा उक्कोसेणं अधमासं साहणिज्ज सेणं तं सीतं सीतभूयं

समारोयते कर्म पतिता तेमारा कालि कर्मा फाद नरकवटमा दंड समा नो दंड दय पा लय प रो पण अवसा यह पा पर्याय

रा अहा दे हनार वा बीज रादि सा वः

जीवाभिग
८०

जेहा नो सांडसो लेइ नइं असद्भाव कल्पनाइं करीनइं उष्णवेदना ना नरक नैं वि तेनरकमांगोलाय रवि विद्या बई नाम करीई

अयमयं संडासएणं गहाय असब्भावपट्ठवणाए उसिणवेदणिज्जेसु णरएसु पक्खिवे

निवारे ते हवो वांछितवी जेण कमे थोन मेषमांडे फिरीनइं पाछो लेई सइं मचिंतवी पश्चलीनमे वनवनी लमिव मांषणनी करीनइं परइं वीघ सोणओ देखइ

ज्जा से णं तं उम्मिसियणिमिसियंतरेण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि त्तिकट्टु पविरायमेव पासि

नेवी घरी नगली नेदेखीनइं पाछोलेवा वांछइ पणिपाछो ले मारे अवलार अवली लेश्ये तेजो हणो जोगलीनइं इनसक्कइं स्या अप्रस्फुरित विद्धस्त जलरूप थइं थकइं कि

ज्जा पवीलीणमेव पासेज्जा णो चेव णं संचाएति अविरायं वा अविलीणं वा अविद्धत्थं वा

मलइ सके नहीं तेयथा नाम थी जिम मत्त द्वीपमुखइं पीईं कुंजर षष्टिहायन प्रथमसरद्काल कातीमासनें समइं माता मातंगजराथी साठिवरसनो व्ययमान कालसमयेंसवा व्हइ इलहइ ग्रीष्म

पुणरवि पच्चुद्धरित्तए से जहा णामए मत्तमातंगे दुपाए कुंजरे सट्ठिहायणे पढमसरयकालसमय

नइ कालनें उनासूर्यनइं किरणपी देवाग्निनी जालाइं पीड्यो आतुरक्लिांतइं मा पीणघयो भइ शरीरेंसूषाई सपइं घ्यो थको थको तानपीपामतो करी

सि वा चरिमनिदाहकालसमयंसि वा उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे सुसिए पिवा

दुर्बलो क्लामनाए एहवो एकमहोटी एकमोटी पुष्करणी केहवी नइं चोखुणी तें अनुक्रमिनिचि रचनरतीक्तर पामको नेदेखें तेपुष्करणी समोतीरकोगोलइं लीउंडोजलनो विप्रकेंदारको

सिए दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरणीं पासेज्जा चाउक्कोणं समंतीरं अणुपुव्वसुजाय

वावें सीतलजलनो समु ढांक्यो भइं पत्रपानें करीनइं घणाउत्पल कुमुद नलिन सुभग सोगंधिक पुंडरीक हेत साले पानीढांक्यु छइं जिहां ल र

वप्पगंभीरसीतलजलं संछण्णपत्तभिसमुणालं बहुउप्पलकुमुदनलिणसुभगसोगंधियपुंड

सतपत्र सेवें सहस्रप एसर्वेकमलनी जातिकेसरी कमलके हवांथें षटपद भमरे करी लीके हवी छें आवानिर्मलजल त्रो त्र तेणेव सति सेवतानइं तेपुष्कर जवलि पूर्णछइं

रीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवचियं छप्पयपरिभुज्जमाणकमलं अच्छविमलसलि

इति पस्ततसमतिघणाम करीआकीर्ण अनेकशकुनगणसमोहमिथुन नेणें खेलाइं प्रवर्त्ततइं एहवी पुष्कर च्छकाछवारिकतिलें व्यापछइं णीनइं हस्ती देखइ देखीनइं तेहपुष्करणी

लपुण्णं परिहत्थभमंतमच्छकच्छभाइण्णं अणेगसउणगणमिहुणपविचरीयं तं पासइ पासित्ता

तणीने अव तेअवगाहीन तेतिहां उन्होतोसापनें आत्माथकी ज्वरंपित्तावनिविण दाघनेंटा तापनइं टालइं गाहइं इं प्रकर्षइं फेडिनापनें टालइं टालइ ते

तं उगाहति तं उगाहित्ता से णं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा छुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहं दाहंपि पविणे

निद्रानइंपिण प्रचलाविशेषइं निद्रापामी सुषपा धृतिपाम सर्वांग सीतलमाहोभ्यांतर समेकीसावेजा साता टालइं सातावामइं रतिपामइं मइं इं इं तथयउं तार

णेज्जा णिद्दाएज्ज वा पयलाएज्ज वा सइं वा रइं वा धिइं वा मइं वा उवलभेज्जा सीए सीतिभूए सं

मुषसितबहुलसातवभ्यांणतें विचरइं इमएणीमेजइं गोतम असद्भावकल्पनाइं जेह उष्णवेदना ना

कसमाणे संकसमाणे सायासोक्खबहुले यावि विहरेज्जा एवामेव गोयमा असब्भावपट्ठवणाए उसिण

८०

जीवाभिग ८१

रकी नरकथकी नीकलेथकइ जेहवीमनुष्यलोकअग्निस्तइ तेकेहनाम लोहानाआगरनी

वेदणछहितो णरएहिंतो नेरतिए उव्वट्टिएसमाणे जाइंइमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति

अग्निमुसरनी इमतरुआनाआगर सीसानाआगरनी रूपानाआगरनी सुवर्णनाआगरनी अग्नि

अग्नि नीअग्नि अग्नि इग्नि

अयागराणि वा तंबागराणि वा सीसागराणि वा हिरणागराणि वा सुवण्णागराणि वा

कुंभारनानीमाहानी इटिनानीमाहानी कवेलुनानीमाहाना लोहघटितसुवर्ण लोहारनीअहेगरण यंत्र

इग्नि इग्नि अग्नि नोआगरनीइग्नि नीअग्नि वाल्हु

कुंभारागणी वा इट्टागणीइ वा कवेल्लुयागणीइ वा लोहारंबरिसेइ वा जंत

लइछुसपाक भीवानारंगवानाकुंड गोउत्रणिमूलानी कोजनीअ अगारानीअग्नि तिलोना कोलरानी

स्थानतनीइग्नि नीअग्नि इग्नि ग्नि अग्नि

वाडचुल्लीइ वा हंडियलिछाणि वा गोलियलिछाणि वा सोंडियलिछाणि वा णलागणीति वा

लसनीअगनि तमनाथवंत लेसरिषोयोतिस्तजानुसमान फूलाकेसूनीपेरेस्तव उल्कासहसने

र्स

तिलागणीति वा तुसागणीति वा तत्ताइं समजोतिभूयाइं फुल्लकिंसुयसमाणाइं उक्कस

मूंकताथका जालासहसने मुंकताथका विचरइ गोयमा तेयथानमइच्छातइ

हस्साइं विणिमुयमाणाइं जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं णवि हरंति गो सेजहानामए कु

जिमकुंभारनोबा तरुणयोवानवयल जावतसर्वबलेकरीनपाननसहीतएकएहवोमोटोअयपिंडशाउाथलेवि

लक ण्डइतेइनइ

मारिदारासिया तरुणे जुगवं बलवं जायणिप्पो व णए एगं महं अयपिंडं दगवारसमाणं

तायजासमुहनें अगारानासहस्त्रकणीयाविखरा अंतोरमाहोमाहेंपथे ज्वालारहइछैं तेदेखंदेखीनइ

करता तइथकइ सती

गहाय ताव इंगालसहस्साणि पविक्खिरमाणाइं अंतो अंतो हुहुयमाणाइं चिट्ठंति तायपा

तापनेंआनागाहैंअथवा नेतिसानापसर्वशरीरइंथकोपीहें थयापिणपीहिं कुथायिणपीहिं

होवें

सिता उमाहत्तिताइं उग्गाहेत्ता से णं तं उण्हं पिपविलिज्जा णए हं पियविलेज्जा मुहं पिपवि

शाघपिणपीहइ निशपतेंणीसानाणमइरतिप्रतिणमरे थतिपाम कुथासम अशुव मइंतेथकीथोडीइअग्नि

इ इ णा वतीसितस्तल थइ

लेज्जा दाहं पि पविलेज्जा णिद्दाएज्जा वा पयलाएज्जा वा सतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभेज्जा सीए

समकीलावइ पातासकथम बहूलपलेंविचरइछइ एहवीवेदनानरकनीसंतावीइ गोयमा नोइंसम

र्थजस

सीयभूए संकंसमाणे संकंसमाणे सायासोक्खबहुले यावि विहरेज्जा भवेयारूवे सिया णो णइ

मर्थउरघम तेउमवेदनाना नरक एथकीअनिष्टअग्निनोतापनीवेदनासोगवताविं विलसताथका

मर्थनही रकी मा वरइछइ

णट्ठे समट्ठे उसिणवेदणिज्जेसु णरएसु णेरइया एत्तो अणिट्ठतरियं चेव उसिणवेदणं पच्चणु

रहइछइ सीतवेदनानानारकी नरकमां केहवीसीतवेदनाऽनुभोगवता चिलमताथकी विचर

ढीकजीगम ८२ ञ्चवमाणाविहरंति सीयवेदणीज्जेसुणंभंतेनरएसुनेरइयंकेरिसयंसीइवेदणंपच्चणुभ

इछइ गोयमा तेजिमकोईअनेकुमारलोहारनोबालक वयेकरीवधतो जोलगइंशिल्पशास्त्रनवेत्त एक

दृष्टिनाम तरुण एहवो मो

वमाणाविहरंति गो सेजहानामए कुमारदारिए सियातरुणेजुववलवंजावसिप्पोवग

टोलोहपिंडपाणीनाकुंभनीसरिखोगहाय तावीनइ कुटीर जघन्यतो एकवार बिंवार

कहेतालेइनइ २ नइ

एएगंमहंअयपिंडंदगवारसिमाणंगहाय तावियार कुट्टियार जहणेणंएगाहंवा दुआहंवा

त्रणिवार उत्कृष्टोएकमासलगेधमी रकुटीर तेतिवारउत्पन्नघणुउष्णरत्त लोहनइं सांडसइ लेइनइं

तियाहंवा उक्कोसेणंमासंहणेज्जासेणंतंउसिणंउसिणभूयंअयामएणंसंडासएणं

असद्भावकल्पनाइं सीतवेदनानेनरकमांघालेघाली तेणइंमन्विंतव्युंएकमेषोन्मेष पाछोवली

नइं

गहायअसब्भावपट्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु णरएसुपक्खिवेज्जा सेतंउम्मिसियनिमिसियंतरेणं पुणरवि

उद्धरिलेइसेइमविनवेतिलखुकइधकइतलाजवी तेवीघरिषकइंपाछोते पलितिलणीलेवाइंजहीएहवामीत

घरीजाइंआंघलनीपरेगलीजाइं वेवोलइं प्रदेशबइघणुरजस्याकरा

पच्चुद्धरिस्सामितिकट्टु पविरायामवपासिज्जा संचेवणंजाउलोइज्जावणंसुव्वायन्छाबुणरवि

ते जिमअनेपमदष्टांतसंमत तिमजणकाजीपरेंसर्वयावकहिवउनसातासुखइ तिमतिणइं मेलइं करीजाण

मातंगहाथी विचरइरहइ बुसहो

जाव पच्चुद्धरित्तए सेजहानामए मत्तेमायंगेवीताह्वेसायवकोसकाहाले यावि विहरेज्जा एवा

गोयमा असद्भावकल्प सीतवेदनानारकीनेनरकमांहिथीकोई जेहवोइहांमनुष्यलोकइंसीतलस्थानक

नाइं काढी मूकइ

मेवणंअसब्भावपट्ठवणाए सीतवेदणेहिंतोणेरइयाउव्वट्टिएसमाणेजाइंइमाइंइहा

मनुष्यलोकइंवत्तइं तेजहा हिमपुंजनो हिमनापडलनो हिमकूट हिमपुंडलपुंजवाव्युविकूल सीतस्थानविश्रा

प्रकी तेकहेछ समाह वाली ब

माणुस्सलोएहवंतीत हिमाणि वा हिमपुंजाणि वा हिमपडलाणि वा हिमपडलपुंजाणि वा तुसारा

हिमनाकुंडजेहवाहोइं हिमकुंडनापुंजजेहवा सीतलताइमस्थानक देखइंदेखीनइंजाणी तेसीतस्थानकनइंअ

होइ नइं नइं वगाहे

णि वा हिमकुंडाणि वा हिमकुंडपुंजाणि वा सीताणि वा तांपासिति पासित्ताइं उग्गा

तेसीतलताहिनें समावइं क्षुधानइं समावइं ज्वरनइं समावइं दाघनेंसमावइं निद्रापामइं

हित्ता सेणंतत्थसीतंपि विणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा दाहंपि पविणिज्जा नि

प्रचलापामइं सोजगेनउत्पन्नसर्वपावनीपाइंजाणवो स्मृतिइंधको सातासुखपावइं

द्दाएपवलिज्ज पयलाएज्जावा जावितसिणउसिणभूए संकासमाणे सायासोक्खबहु

जीवाभिग
८३

प्रवर्त्तइं विचरइं हे गौतम सीतवेदनानानारकीनेंनरकथकी अनोपम दुस्सहवेदनानेंवि सीतवेदनालोगवता विचरें
म विनादत्तलइं जमता लेइल्ले जीवदनानी

लेयवि विहरिज्जा णो सीयवेदणं होज्जा नेरइया एत्तो अणिट्ठयरियं चेव सीयवेदणं पच्चणु

पमाकहीउन्निसंष्यात वेदनानइंकांमेंएतलो विशेषणभगवन नारकीनइंकेतलाकालनीथिति कही भगवन
लाहिवेऔनुपायें नरकप्रभापृथवीइं

ब्भवमाणा विहरंती इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं केवतियं कालं ठि

गोयमा जघन्यतो दशसहस्रवरसनी थिति जाणवी उत्कृष्टी कहीएमहेठीसातमी इमहेठीसातमीलगेंकहीइंसी
एकसागरोपमनी थिति लगें थिति कहेवी गरोपमजघन्य २२ उत्कृष्ट

ती पं॰ गो॰ जहन्नेणवि उक्कोसेणं वि ठिती भाणियव्वा जाव अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते र

उत्कृष्टसागरएभगवन नरकप्रभापृथवीइं नारकीचवीनइं अंतरइं अनेंकिहांजइउपजइं स्युंनारकीमांउपजइं
किंहांजाइं स्वामी

यणप्पभाए णेरइआ अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु

कइंतिर्यंचयोनिमांजइं उपजइं इमउद्वर्त्तनपरपनवणाइं जिमकह्यो छे तिमइंहं पिण

उववज्जंती किं तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा व

कहेंवो एमहेठीसातमीलगेंकहेंवो एभगवननरकप्रभा पृथवीइं नारकी केहवीपृथवी

क्कंतियतिहा इहविजाव अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतीया

८३

काय नाफरसनोगवताविचरइंछें गोयमा अनिष्टअकांत जांअमनोज्ञस्पर्श इमजावतहेठी
नीपरेंजालवुं सातमीलगें

केरिसं पुढविकायं पच्चणुब्भवमाणा विहरंती गो॰ अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव

गइं कहेंवुं एभगवनरत्नप्रभा पृथवीइं नारकीकेहवोअपकायनोफरसनोगवताथकाविचरइंछइं

अहेसत्तमाए इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया केरीसं आउफासं पच्चणु

हेगौतम अनिष्ट जांलगेंअमनोज्ञस्पर्श नीपरइं जांहेठीसातमीलगें कहेंवो एमजावतवनस्पतिथकीवनस्प

ब्भवमाणा विहरंति गो॰ अणिट्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमाए एवं जाव वणु

तीनोस्पर्शजांलगइंजांलगेंहेठीसातमी जांलगें एभगवनरत्नप्रभा पृथवीनीअपेक्षाइं बीजीपृथवीनोमोटापणो क
कहेंवो ह्यो

फति फासं अहेसत्तमाए पुढवीए इमा णं भंते रयणप्पभा पुढवी दोच्चं पुढवीप

सर्वमोटी बाहुल्यइं कही सर्वथीलघुपहेंलीकही गोयमा एरत्नप्र

णिहाय सव्वमहंतीया बाहल्लेणं सव्वमहंतीया बाहल्लेणं सव्वखुड्डुयासव्वंतेसु गो॰ इमा णं

भापृथवी बीजीपृथवीनइं आश्रीनइं जांसर्वथकीनानहीकहीसघलीदिसइं बीजीपृथवीथकीत्रण
वनत्रीजी

रयणप्पभाए पुढवीए दोच्चं पुढवीपणिहाये जाव सव्वखुड्डुया सव्वंतेसु दोच्चा णं भंते पुढवी

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य पुस्तकालय

पृथ्वीसर्वथकीबाहल्यपणेमोटीबाहल्यैकहीएहनोपृथ्वैलकी गोयमा बीजीपृथ्वी यावत्त्रीजीमोटीत्रीजीपृथ्वी
थकी वीथकीनाझीबीजीवइ
सव्वाणं उठविपणिहाये सव्वमहंतीयाबाहल्लेणं सुक्षंगो दोच्चाणंपुढवी जाव उडियासं
इमपलेंअलावे जोजगेबही पृथ्वीसोजोगेकहेवुं हेवीसातमीथकीछठीमाझीछेछठीथकीसातमीपृथ्वीमोटी
वंत्तीएवं एएणंअभिलावेणं जावछट्ठियापुढवीआ अहेसत्तमंपुढविपणिहायजावसव्व
छइंसघलइइमक एत्तावतरत्नप्रभापृथ्वीइ नरकावासादूकहा जेपृथ्वीकायप्रमोलइ यावत्तवनस्प
हेवउं
खुडियासंवतेसुइमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएनिरयापरिसामंतेसुजेपुढवीकाइया
तीकायनाजीव तेरत्नावतजीवमहाकर्मनाथलीहुइ केंधणाआश्रवनाथलीहोइ नेतोविपाकेंघणोवेदरनाथणी
जाववणस्फइकाइया तेणंसंतेजीवामहाकम्मतरा आसिवितरस्थेव महावेयणतर
होइहोतोसम एत्तावतरत्नप्रभापृथ्वीइ नरकावासानेढूकडीपृथ्वीकायें तिमजजोलगे महावेदनाकइ
महाआश्रवना
रावहंता गो इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए निरयसमंतेसुतहेव जावमहावयणतर
थलीहोइ इमहेवीसातमीलगेकहइ एत्तावतरत्नप्रभापृथ्वीइ त्रीसलाखनरकावासातेहमो एकेकनर
वउ
रकावेवए एवंजावअहेसत्तमाए इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए तीसाएनिरयावाससयस ८४

कावासाइ सर्वप्राणबेंद्रीयादिसर्वसत्ततरआदि सर्वजीवपंचेंद्रीयादिसर्वसत्वएकेंद्रि पृथ्वीकायपणा
यादि इ
सहस्सेसु एक्कमेक्कंसि निरयावासंसि सव्वपाणासव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढविकाइयत्ता
जेजावतवणस्पतीकायएवंसर्वजीवनरकमाहइनारकीपणे सर्वइजीवनपना हागोतमुप एकवारवेवारअथवाअनं
ना तीवारपूरवइ
एजीववणस्सतीकाइयत्ताएनेरइत्ताएनेरइयत्ताएउववण्णपुव्वा हंता गो असतिअदुवा अणं
उपना इमहेवीसातमीपृथ्वीलगइकहइवउ एत्तलोविशे जिहांजेतलीनरकेंजिहांजेतलीअवगाहना संस्थानपणान्
व नरके. पृथ्वी
तंखुत्तो एवंजावअहेसत्तमाएपुढवीएणवरं जाजतियाणंरकापुढवीउगाहत्ता नरयावासे
बाहल्यपणो विस्तारपरिक्षेपपरिधिप वर्णपणोगंधपणोर फरसप तेहनोइमोटाइप उपमाउपमानीदेहीकइ
णो सपणो णो णउ
वाणमउव्वाहल्लविक्खंभपरिक्खेवो वण्णोगंधोयफासेय १ तेसिमाहारयंसी उवमादेहेणेहो
करवानीवतु नरकमांवक्रमिउपजइसो तिमजसास्वता उपजवानोप्रमो अथवासघलोसंघयणद संस्थान
णजना स्वता ना
तिकायवा जीवाउपनाजावकमंती तहसासया उववायपरीमाणं अहवासव्वतिसव्व सं
वरण गंध फरस उसासमाहारे लेसा दृष्टी ज्ञान योग उपयोग नथासमुघात तिचारपबीविकुर्वणा
५ २ ८ ६ ६ ३ ८ ११ ७ ५
ठाणवण्णगंधफासे उसासविमाहारलेसादिट्ठीएणाणे जोगुवउगेजहसमुग्घाए तत्तोयखुप्पिवा

वेदन भय उपजवो पुरुष उपमाचेदनानयनोदस्थिति उर्द्धलना अधवोइ उपजवु

जीवाभिगम ८५ साविनुट्टणवेयणायसए उववाउपुरिसाणं उहिमवेयणउक्कोसा ठिइउवट्टणा पुढवीउववा

सर्वजीवनु एहवीसग्रहणीनीगाथाइंक बोलकहेवाएतलेजीवजेहे नागवनरतप्रसाठपधी नारकीनेकेहवाथु
रीएसातेनरकेएतला सोसमाय २ संदर्भ इ

उसव्वजीवाणं एयाउसंगहणीगाहाउ बीउउद्देसाउ२ इमीसेणंभंते रयणप्पभाए पुढवीए

कजपरिणमइ सोगविनाथकानरकमांविचरेरहइ गोयमा अनिष्टअगणाम जावअमनो इमजाहे
ता ज बीसातै

नेरतियाकेरिसियंपोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणाविहरंती गो अणिट्ठंजावअमणामं एवं यमा ४

मीजाेमावापुग्गलनेइमजानेगहेवीसातमीइंक मसरखभावाकहेवावेदनालेस्या अरति भय साक क्षुधा
गवतावियरइलै हैंथुइमपुग्गलपरिणा नामकर्म गोत्रकर्म १ २ ३ ४

जावअहेसत्तमाए एवंणेयव्वं पुग्गलपरिणामे वेयणायलेसायणामगोयए अरतीभएयसो

तृषा व्याधि पीडा उश्वास अनुताप क्रोध मान माया लोभ च्यारसंज्ञाकहीएहवापरिणामसही
५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२

गे खुहापिवासाय वाहीयउस्सासेअणुतावे कोहेय माणेय मायेय लोभेयचत्तारिसन्ना

तनरकेंनारकीहोइंच्यार एहवेनरकेकुंण२ अ मच्छयसनैं कुम्हचासवे जलचरम मंडलीकमोटाराजाजे
रसंज्ञाकहीइं वतरइतेकहेहैं सविथा वृनेसरीया आदि माहा

उ णेरतियाणंपरिणामे अहेणंकोअवतरइ णपइसत्ताउ मच्छा जलयराय रायाणोमंडलि ८५

आरंभनाकरनारकूंणवी नरकमांविकुर्वणानोकालए तिर्यंचमनुष्यनेच्यारअंतर्मुहूर्त देवतानइअर्द्धमासविकुर्व
इत्यादिनरकेउपजे कअंतर्मुहूर्तनो हूर्त्तनोकालहोइ णानोकालहोइए

याजेमहारंभकोडुंबीयकोडंबी भिन्नमुहुत्तोनरएसु तिरियमणुएसुहो चत्तारिदेवेसु

अणिम्यानकेविकुर्वणानोकालअर्द्धमास १ अशुभनामाबीजेनेरखवुनिश्चेना एहवीनारकीनीविकुर्वणासर्वनइहोइस
तोकरीनइकह्यो तेजाणवो रकीविकुर्वणाकरें स्थानपणिहोइनिश्चेंकरीनइ

अद्धमासु उक्कोसेवीउव्वणाकालियबु १ असुभाविउव्वणाखलु नेरतियाणंतुहोइसव्वेसिं

तेहनेनिश्चेंकुंडुकनामासंस्थानजाणवुंअत्र २ जेपुद्गलअनिष्टमावाहूइ निश्चेंआहारपणैमाथापुद्गलनहूइं वैक्रीय

संठाणंपिय तेसिंणियमाहुडंतुणायव्वं २ जेपोग्गलाअणिट्ठाणियमातेतेसिंहोइआहारो वेउ

शरीरतवधार संघयणनो अनेहुंडकसंस्था ३ असातोउ असाताइंनरकतवनैंरोगवेलइजुंसीतोदयहोइ
णीआथी हुइं नहुइ पनी पणिअसातानाकही

व्वियंसरीरं असंघयणंहुंडसंठाणं ३ असातोउववन्नो असायचेवजहतिनिरयभवं स

सर्वपृथ्वीयसर्व आपापणीस्थितिनेंविशेषेकरी ४ उपजवानिकालेसाताबेदनीक नारकीनिपूर्वसंगतीदेवतानाप्रभावथीनी
जीव रोगवइलइ र्मनोउदयकोइवेयें तथा र्झाइबलदेवनीमातें

ढवपुढवीसुजीवो सव्वेसुठितीविसेसेसु ४ उववावातेणविमाते नेरतितेदेवकम्मुणावावि

नघातअध्यवसायनिमितेंम असुभकर्मनइअनुभावेपण ५ नरकनीकार्मणशरीरतेजसशरीरसूक्ष्मशरीरकष्यमनोमकरमोटय
प्यन्कउपजइसातावेइ कोइयेंकोइसातावेइ जेअपर्यापताउदारिकवैक्रीआहार

अज्झवसाणनिमित्तं देवाकम्माणुभावेणं ५ तेतोकम्मसरीरा सुहुमसरिरा सुद्धजे अपज्ज
अ

रकमर्वेशरीरकायाथकिजीव परमाणुनेसंगहोइंसहसा दिसेदेंक ९ नारकीदुखेमाप्याथकी उत्कृष्टीतोपांचसइंधनुषनीदेहक
नर्कनोला रीनइंकहोइ उत्पत्तइं रइं
उत्ता जीवविप्पमुक्का वच्चंतिसहस्ससोनेइं ६ णेरइयाणुप्पत्ते उक्कोसंपंचजोयणस
उरवेकरीअतिस्तत्तपरातव घणावेदनाइंकरीनेंघणोदुष ७ आंखिमीचीउघाडीइंएतोक्षणमात्रनारकीनइंदुषकरीसहितलइं
लइं वार अनुबंधपणोही
याइं दुक्खेणअभिदुता वेयणंसयमणुहवंता ७ अच्छिनिमिलियमेत्तं नत्थिसुहंदुक्खमेवअ
नरकनइंविषइंनारकी अहनिसइंसीतोउसेकरीपचमानथ ८ अतीसीत अतिउष्णवेदना घणीलइं तृष्णाघणीछेन
नइं काथवर्त्तइंछै ना नरकमा रकमा
णुबंधं नरएनेरइयाणं अहोनिसंपच्चमाणाणं ८ अतिसीतं अतिउण्हं अतितण्हंअति
नयघणोछैनार नरकनइंविषइं दुषनासेंवी विनासेोगवेलइं ९ इहांअंतर्मुहूर्त्तमात्रपि वुफलअसक्तेकरीअसाताज
कीमा नारकीनइं सामा दुषतणी एणक्षवनही ऊइंनारकीनें
तयंच नरएनेरइयाणं दुहसयाइंअविस्सामं ९ एत्थयअतिसमइत्तो पोग्गलाअसुभाय
उपजवुतिणेअनिष्टअकांत शरीरसुफलपरिणामेंलइंदुःसरव १० एतलेनारकीनोजीजोउद्देसोसमासथयो २
अशीय जोणवु
होइ अस्साउव्वाउववाए अतिसरीरायनापचल्ली १० तइयोनारयउद्देसउसमत्तो
हवइंतिर्यंचनोअधिकारकहैछइं योनीयानापांचभेद एकेंद्रीतिर्यंचयोनीयाष्ट्वीयादिक बेंद्रीतिर्यंचयोनीयाशंखादिक
तेतिर्यंच कह्यालइं दिक जांणवा
२ सेकिंतंतिरिक्खजोणिया पंचविधापन्नता एगिंदियतिरिक्खजोणीया बेइंदियातिरिक्खजो ८६

तेंद्रीतिर्यंचयोनीयाकीडीमंकोडीप्रमुं चउरेंद्रीतिर्यंचयोनीयावीछुभमरादिक पंचेंद्रीतिर्यंचयोनीयादेवतामनुष्यादि
षजांणवा कजांणवा ५
णीया तेइंदियातिरिक्खजोणिया तेइंदियतिरिक्खजोणिया चउरिंदियतिरिक्खजोणी
हवेंएकेंद्रीतिर्यंचयोनीयाकहइंछइं तेएकेंद्रीतिर्यंचयोनीयानापांचभेदपन्नताकहेतोकह्या छइं पृथवीकाय
या पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतंएगिंदियतिरिक्खजोणीया २ पंचविधापन्नत्ता पु
एकेंद्री तिर्यंचयोनीया १ यावत्त्राछेवणस्पतीकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनीयाएपांचभेदलइं हवैपृथ
ढविकायएगिंदियातिरिक्खजोणिया जावंवणस्सतिकायएगिंदियातिरिक्खजोणीया
वीकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनीआना बेभेदकह्यालइं तेकेहा २ जांणवा एकसूक्ष्मपृथवीकायएकेंद्री तिर्यंच
घ सेकिंतंपुढविकायएगिंदियतिरिक्खजोणीया २ दुविहापन्नत्ता तंसुहमपुढवीकायएगिं
योनीयाजांणवा १ बादरपृथवीकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनीया २ हवैंसूक्ष्मपृथवीकायएकेंद्रीतिर्यं
दियतिरिक्खजोणिया बादरपुढविकायएगिंदियतिरिक्खजोणियाय सेकिंतंसुहमपुढ
चयोनीयानाबेभेदकह्यालइं तेकेहाकहइंछैं पर्याप्तासूक्ष्मपृथवी अपर्याप्तासूक्ष्मपृ तेसूक्ष्मपृथवीकायकह्या
काय थवीकाय हवैबादरपृथवी
विकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियादुविहा पं पज्जत्तासुहमअपजत्तासुहमसेकिंतंब

कायनाबिंनेदकह्याबइं तेकेहा पर्याप्ताबादरप्रथ्वीकाय अपर्याप्ताबादरप्रथ्वीकाय एतलइंबिंनेदे सूष्मबादरप्रथ्वीकायकह्यो

दरपुढविकाइयाडुविहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय सेतंबादरपुढविकाइयएगिंदि

एतलेप्रथ्वीकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनी याकह्या हवेंअपकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनीयानाबेनेदकह्याबइं इमजिमप्रथ्वीकायनिंकह्यो तेतिमसूष्मअनइंबादर

सेतंपुढविकाइयएगिंदिय सेकिंतंआउकाइयएगिंदिएडुविधा पं एवंजहेवपुढवि

तिमजपर्याप्ताअपर्याप्ताइंमनेद आरजांणवा इंमजांणइंवनस्पतीतांजाणइं कह्योइं एतलेसंबेपिवनस्पतीकायएकेंद्रीतिर्यंचयोनीयाना

काइयाणं तहेवचउक्कनेदोएवंजाववणस्सतीकाइया सेतंवणस्सइकाइया सेतं

नेदकह्या हवइबेंइंद्रितिर्यंचकहेंछें तेबेंद्रीतिर्यंचनाबइंनेदकह्या तेकेहा पर्याप्ताबेंद्रीतिर्यंच १ अपर्याप्ताबेंद्रीतिर्यंच २

एगिंदियतिरिखा सेकिंतंबेंदियतिरिखएडुविहा पं तं पज्जत्तबेंदियतिरिअपज्जत्ता

इंमचउरइंद्रीजाणइंकहेंवउं हवेंतिर्यंचपंचेंद्रीकहेंबइं तिर्यंचपंचेंद्रीनात्रणिनेदकह्या तेकेहा

बेंदियतिरि एवंजावचउरंदिया सेकिंतंपंचेंदिया तिरिखजोणियाएतिविहा पं तं

जलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीया १ थलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीया २ खचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीया ३

जलयरपंचिंदियातिरिखजोणिया थलयरपंचिंदियातिरिखा खहयरपंचिंदिति ८७

हवइजलचरपंचेंद्रीकहेंछें तेजलचरपंचेंद्रीनाबइंनेदकह्याबइं तेकेहाबेनेदकेहा एकसमूर्छिमजलचर

रिखजोणिया सेकिंतंजलयरपंचेंदीयातिरिखजोणियाएडुविधापन्नत्ता तंसमुछिमजलयरपं

पंचेंद्रीतिर्यंचयोनीयाएपहें लोनेद हवेंसमुर्छिमजलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीयानाबेनेदतेकेहा कह्याबइं तेकहेंबइं

चेंदियातिरिखजोणियाय सेकिंतंसमुछिमजलयरपंचेंदियातिरिखजोणियाएडुविधा पंतं

पर्याप्ताजलचरपंचेंद्री अपर्याप्ताजलचरपंचेंद्री समूर्छिमजलचरपंचेंद्री तेसमुर्छिमतिर्यंचपंचेंद्रीकह्योइं हविंगरभजजलचरपंचेंद्रीकहेंछें

पज्जत्तगया अपज्जत्तसमुछिमजलयर सेतंसमुछिमपंचेंदियतिरिख सेकिंतंगप्भवक्कंतिया

तेजलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीयानाबिनेदकह्याछेतेकेहा पर्याप्तागर्भजतिर्यंचपंचेंद्री अपर्याप्तागर्भजनइ एतलेजलच

जलयरपंचेंदियतिरिखजोणियाडुविहा पं तं पज्जत्तागप्भवक्कंति अपज्जत्तागप्भवक्कंताय ज

रपंचेंद्रीतिर्यंचयोनियाकह्या हवइथलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीया कहेंबइं तेहनाबेनेदकह्याबइं तेकेहा

लयर सेतंजलयरपंचेंदियातिरिसेकिंतंथलयरपंचेंदियातिरिखजोणियाडुविधा तं पं

चउप्पदथलचरपंचेंद्री कहइइबइं परिसर्पथलचरपंचेंद्रीतिर्यंचयोनीयानानेदजांणवा परिसर्प २ बेनेद उरपरिसर्पभुजपरिसर्प एबेंनें परिसर्प कहीइं तेहवेंचउपदथलचरपंचेंद्री

चउप्पयाथलयराप पं परिसप्पथलयरापंचेंदीयतिरिखजोणिया सेकिंतंचउप्पयाथल

नाबेंभेद कह्याबइं तेकेहा बइं संमुर्छिम चउपदथलच २ पंचेंद्री तिर्यंच २ गर्भजचउपद थलचर

यरपंचेंदीया चउप्पयाडुविहा पं तं संमुछिमं चउप्पया थलयरपंचेंदियाग्गभवक्कंतीय चउप

पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया एबीजो भेद जांणवो जिमजलचर कह्या तिमज च्यार २ भेद सर्व नाकेंहेंवा एतलें

याथलयरपंचेंदीयातिरिषजोणियाय जहेवजलयराणं तहविचउक्कभेदासेतंचउप्पय

चउपदथलचरपंचेंद्रीतिर्यंचकह्याइं द्वइं उरपरिसर्प थलचरपंचेंद्री कहइं बइं तेउरपरिसर्पथलचरनाबिंभेद कह्या तेकेहा उरपरिसर्प

थलयरपंचेंदीया तिरिरकतं परिसप्पाथलयर पंचेदियतिरिरक२डुविहापंतं उरपरि

थलचर पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया १ भुजपरिसर्प थलचरपंचेंद्री तिर्यंचयोनीया

सप्पाथलयरपंचिंदियतिरिरवजोणिया भुयपरिसप्प थलयरपंचिंदियतिरिषजोणि

द्वैउरपरिसर्प थलचर पंचेंद्री तिर्यंचयोनिया तेउरपरिसर्पथलचरपंचेंद्रीनाबेंभेदकह्या जिमज

या सेकिंतंउरपरिसप्पथलयर पंचेंदियातिरिषजोणया उरपरि२डुविधा पं जहेवज

जलचरसंमुर्छिम १ गर्भजर पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ४ इंमच्यारभेद भुजपरिसर्पनाकह्या तिम जांणवा एतलें भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्री

लयराणं तहेवचउक्कभेदो एवंभुयपरिसिप्पाणेवभांणीयंवं सेतंभुयपरिसप्पाथलयरपं ८८

BHAU DAJI

तिर्यंचयोनीयाकह्या एतलें थलचर पंचेंद्री तिर्यंचयोनीयापिणकह्या हवें खचरपंचेंद्रीतिर्यंच योनीया

चंदियातिरिरकजोणियासेतंथलयरा पंचेंदियतिरिरवजोणिया सेकिंतंखहयरपंचेंदीया

कहेंहवें ते खचरपंचेंद्री तिर्यंचनाबेंभेदकह्या तेकेहा समुर्छिमखचरपंचेंद्री तिर्यंचयोनीया १ गर्भजखच

तिरिरकजोणीया २डुविहा पं तं संमुछिमखहयरायपंचेंदीयातिरिरवजोणिया गब्भवक्कं

र पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया २ हवें संमुर्छिमखचरपंचेंद्री कहें बइं तेसमुर्छिमखचरपंचेंद्रीनाबेंभेदकह्या बइं

तियखहयर पंचेदियतिरिरकजोणया सेकिंतंसंमुछिमखहयरा पंचेंदियतिरिरवजो(

तेकेहा पर्याप्तासमुर्छिमखचरपंचेंद्री १ अपर्याप्तासंमुर्छिमपंचेंद्रीकहेंछे खचरपंचेंद्री तिर्यंचयोनीया

णयासमु२डुविधा पं तं पज्जत्तगासमुछिमा अपज्जत्तगासमुछिमा खहयरापंचेंदियातिरि

तेहनाबेंभेदकह्याबइं तिर्यंचयोनीयाना इंम गर्भजपंचेंद्री कहेंवा यावत् शब्दकी पर्याप्तागर्भ जति यंचअपर्याप्तागर्भज

षजोणयासमु२डुविहा पं तं तिरिरकजोणयाएवं गब्भवक्कंतियाविजावपज्जत्ता गब्भवक्कंता

गबेंभेदकह्या हवइं खचरपंचेंद्री तिर्यंचयोनीयानइं भगवन केतलेभेदे योनिसंग्रहकह्योछे गौतम

वि यं अपज्जगगब्भवक्कंतियाविखहयरापंचेंदीयातिरिरवजोणियाणंभंतेकतिविहेजोणिसंग

जीवाभिगम

८९

अलिसेरे जोनिनो संग्रह कहिउ ते किहा अंडजा मयूर आदि पोतजा वागुला दि समूर्छिम अंडजा ना त्रणि भेद कह्या स्त्री १ / पंखेरी / ते केहा

हे पन्नत्ते गो तिविहे जोणिसंगहे पन्नत्ते तं अंडया पोतया समुच्छिमा अंडया तिविधा पन्नत्ता इ

पुरुष २ नपुंसक ३ पोतजा ना त्रणि भेद संमूर्छिमक केहा स्त्री १ तिहां जे ते समूर्छिम ते सर्व नपुंसक वेदी ते सगव / कह्या तिहां जे ते / ल्या ते / पुरुष २ / हूइ / न

त्थीपुरिसनपुंसका पोयया तिविधा पं तं इत्थी पुरिस नपुंसगा ते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका ते

स्वरपंखी नइ केतली लेस्या कही गोतम छ लेस्या कही कृष्ण लेस्या ज्यां लगइ शुक्ल लेस्या हूइ ते सगवननी वस्वं सम्यग् / ते केही / इ / दृष्टी होइ

णं भंते जीवाणं कति लेसाओ पं गो छ लेसाओ पं कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ते णं भंते जीवा किं

के मिथ्यादृष्टी होइ कइ समकित मिथ्या गोयम सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यग्मिथ्यादृष्टी ते सगवननी वसं ज्ञानी / दृष्टी होइ / होइ / इ / होइ

सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी गो सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठीवि सम्मामिच्छदिट्ठीवि ते णं भंते

होइ के अज्ञानी होइ गो ज्ञानी हूइ अज्ञानी पणि पर्यायावस्थाइं त्रणि ज्ञान केइ त्रणि अज्ञान वलि होइ इ नें होइ नें को / इ / होइ / एतजनाइं को / इ नें न होइ

जीवा किं नाणी अन्नाणी गो णाणीवि अण्णाणीवि दु तिन्नि णाणाइं तिन्नि अण्णाणाइं भयणाए

जिम बे से दे गर्तजने पणि इं मजजांणवु ते सगवननी वसं मनोयोगी होइ वचयोगी के काययोगी हूइ गोयम त्रणिहे / होइ / मा रे होइ

जोहा उ विहा सुयअन्नाणवक्कं तिन्नाणं ते णं भंते जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी गो तिवि

अणागारोव उत्तो

ते सगवननी वस्वरसं साकारोपयोगी कइ अनाकारोपयोगी साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी ते सगवननी व किहां / होइ / गोयमा होइ / होइ / होइ

हावि ते णं भंते जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता गो सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ते णं भंते जीवा क

थी उपजइ सुं नारकी थकी उपजइ कइ तिर्यंच मां थकी उपजइ एह बोल प्रश्न कीधउ गोतम असंख्याता वर्षायुष्य ना मनु / ष्य

ओ उववज्जंती किं नेरतिएहिंतो उववज्जंति तिरिखजोणिएहिंतो उववज्जंति उज्जा गो असंखेज्जवा

अकर्मभूमि ना मनुष्य अंतरद्वीप ना वर्जीनइ सर्व उपजइ ते सगवननी वनइ केतला काल नी आउखानी थिति कही छइ सगवं

साउय अकम्मभूमग अंतरदीवग वज्जेहिं उववज्जंति तेसिं णं भंते जीवाणं केवतियं कालं विती

न कहि हे गो जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त नु उत्कृष्टु पल्योपमनो असंख्यातमो एतलो आउखो उतकृ सगवननी वनें केतला समुद्घा / नम / आउखु / ष्ट पले होइ

पण्णत्ता गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं तेसि णं भंते जीवाणं

त कह्या छइ तिवारे सगवंत पंच समुद्घात कह्या वेदना समुद्घातः आजीमारणांत समुद्घात ते सगवननी वनें मरणांत / कहइ हे गोतम / ते केहा

कति समुग्घाया पं गो पंच समुग्घाया पं तं वेदणा समुग्घाए जाव मारणंतिय समुग्घाए ते णं भंते जी

समुद्घात करी मरइ समोहणाइ ते कालइ मरइ के असमोहणा देहकालि मरइ ते सगवननी वस्नंतर विना सर्व जीवनइ किहां जाइ

वा मारणंतिय समुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहया मरंति ते णं भंते जीवा अणंतरं उव

अनइं वली किहांजइं उपजइं करमनइं एकनारकी मांउप जइं | इम तिर्यंचादिक आश्री गतिनो प्र श्न गौतम | इम उपजवानो ठाम जिम एतलवर्णा नै विषइ संज्ञा थइ की हां अवतरइं तेवि कीतपरेकहीतें तहई तिमहं

हिता कहिं गछंती कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिषजोणिएसु तहेव जहा वक्कंती
होयिण कहें तेजीवतें तग वन केसली जातिनी कुलकोडि योनिप्रमुख सतसहस एतलइं जाषवी वीतरागें कह्यो गोयमा
वट्ट
णीयवारा उरपरिसप्पक्कंतीए तहेव ते सिणंभंते जीवाणं कति जातिकुलकोडिजोणीपमुहसयसह
बार प्रतिकुलकोडि योनिप्रमुख सतसहस्स वीतरागें कहीअइं ऊरपरिसर्प थलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनिनी केत
पनन्ना कहेंता
स्सा पं गो बारस जातिकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्साइं पं भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदि
तेहे हे भगवन योनिनो संग्रह कहितें तिवारें भगवंत कहे हे गोतम त्रणि भेदे योनिनो संग्रह कहीउं अंडजा १ पोतजा २
तेकेह
यतिरिक्खजोणियाणं भंते कतिविहे जोणिसंगहे पं गो तिविहे जोणिसंगहे पं तं तिवि
सम्मूर्छिम ३ इम जिम खचर पंषीनइं कहीउं तिमसरव कहेंवो तिंमज विशेष एतलो आउषो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो
होइ
हे जोणिसंगहे पन्नत्ते तं अंडयाय पोयया समुच्छिमा एवं जहा खहयराणं तहेव णाणत्तं
उतकृष्टो तो पूर्वकोडिनो आउषो होइं | बीजी पृथवी लगें जायइं एवजातिकु लकोडि प्रमुष

ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढवीं गच्छंती णव जातिकु
एक योनि अनेक कुल होइं एक कुलि अनेक जाति हुयै जिम छाणनी योनिमां कृमी कुल कीटक कुल वृश्चिक कुल इत्यादि अनेक
हुइं वृश्चिक कुलमां अनेक जाति हुइं जिम छाणनी योनिमां आधार भेदकानो गरुवा करी तइं इम अनेक जाति होइं ते कुल कहीइं

माननस हस भेद भगवंतइं कह्या छइं | बीजा धाक तासर्व पाछली परइं कहेंवा | उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनी
लकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा भवंती तिमक्खातामेसं तहेव उरपरिसप्पथलयर
या नो प्रश्न कीधो जिम उरपरिसर्प सर्पनइं कहिउं तिम कहेंवो एतलो विशेष स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी होइं | उतकृष्टी तो
पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते पुच्छा जहेव भुयपरिसप्पाणं तहेव णवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमु
पूर्वकोडिनी स्थिति हुइं तिहांथी चवीनइं जाव सातमी पृथवी जगइं उपजइं | कुलकोडि विचारइं दस जातिकुलकोडि योनिप्रमुख सतसहस कह्या हवें थलचर पंचेंद्री तिर्यं
हुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता जाव अहेसत्तमं पुढवीं गच्छंती दस जातिकुलकोडिं चउप्प
चनो प्रश्न कीधो भगवंत कहइं गोयमा | थलचर पंचेंद्रीनां बे भेद कह्या तेकेह | जरायुज अंडजादि आश्री गर्भज जे ते जा सर्व जरायुज कहीइं समूर्छिम ते वडइं जरायु
यथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा गो दुविहे पन्नत्ते तं जराउया समुच्छिमाय जराउया
जना त्रणि भेद कह्या ते केहा स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३ | तिहां जे तला समूर्छिम ते तला सर्वइं नपुंसक होइं नियमा वेदः | तेना गर्भज थलचर पंचें द्रीनइं केतला ले
तिविहा पं तं इत्थी पुरिसा नपुंसका तत्थ णं जे ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसका तेसिणं भं
स्या कहीइं मधाकनाबोलइं हांसर्व पंखीयानी परें कहेंवा एतलो विशेष | अंतर्मुहूर्त्तनी होइं तर रतनी त्रेसठा उतकृष्टी तो त्रणि पल्योपमनी स्थिति हुइं देव
ते जीवाणं कति लेसाउ पन्नत्ताउ सेसं जहा पक्खीणं णवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को

कृष्ण ये त्रनी अपेक्षाइं तिहांथी चवी नइं चोथी पृथवीइंगैं जाइं ते हनी दस जाति कुलकोटी होइं हवइं जलचरपंचेंद्री तिर्यच
पजाइं

सेणं तिन्नि पलिउवमांइं उव्वहित्ता चउत्थं पुढविं गच्छेति दसजातिकुलकोडिजलयरा जल

मेंचयोनीयानो प्रश्नकी जिम कृतपरिसर्प्पनइं तिमकहें एतलो विशेषजेचवी आठेचीसातमीलगइंमत्स्यादिकेंउपजइं
थल वोइलपणि नइं अर्द्धवितायां

यरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा उरगभुयपरिसप्पाणंणवरं उव्वहित्ता जावअट्ठेस

महसयावत्सादीबारजातिकुलको वीतरागभगवानइं वचइंजीनें भगवनकेतलीजातिनीकुलकोडियोनिप्रमुखसा
डिप्रमुख कहीउं तेसहसवीतरागभगवानइं

समंपुढवीएवि अद्धतेरसजातीकुलकोडीपमुहजातपण्णत्ता चउरिंदियाणंभंते कतिजाती

प्रणत्ताकहेंताकहीविस्तरवरीं गोयमा नवजातिकुलकोडिजोणिप्रमुख सातसहस्सकही

तिकुलकोडिजोणिपमुह सातसहस्सापण्णत्ता गो णवजातिकुलकोडीजोणिपमुहं

हवइं तेइंद्रीनो प्रश्नकीधो गोयमा आठजातिकुलकोडिसंख्याकही बेंद्रीनइंकेतलीजाति

सतसहस्साविगरकया तेइंदियाणंपुच्छा गो अट्ठजाती कुलजाविगरकाया बेंदियाणंभं

कुलकोटिकहीप्रश्नकीधो सातजातिकुलकोडियोनिप्रमुखसातसहस्सवीत हवइंकेतलेसेरेगंधकह्या गंधसं
गोयमा रागेकह्या कहीइंइहांकुलकोडियोनिजा

तेकतिजातीपुच्छा गो सत्तजातीकुलकोडीजोणिपमुहमरकाति कतिणंभंते गंधपण्णत्ता

तितेथकोनानुजातिप्रसंगइंगंधकहिन्त केतलेसेरेगंधसतकह्यासातगंधकह्या केतलीभगवनफूलनीजातिकुलकोडिप्र
जातिमाटइंप्रस्तुपइंछे सातगंधनासतकह्याछे मुख

कतिणंभंतेगंधसयासायपन्नत्ता गो सत्तगंधासत्तगंधसया पं कतिणंभंते पुप्फजातीकु

सातसहेंससातहजारजेतेपण्णत्ता कहीबइं गोयमा सोलफूलनीजातिजां कुलकोडियोनिप्रमुखसातसहसकही
नाम णवी

लकोडीजोणिपमुहसयसहस्स पण्णत्ता गो सोलसपुप्फजाती कुलकोडिजोणिपमुहसय

तेकही जोणवी च्यारसहस्सजलजातिनो पुष्फ ४ च्यारसहस्सथलकोरंटकादिक च्यारसहेंसजातिमोटोवृक्षनो ४ च्यारस
कमलादिक पुष्फनी जाति ४ फूलमहूकादि हेंसना

सहस्संपण्णत्ता तं चत्तारिजलयराणं ४ चत्तारिथलयराणं ४ चत्तारिमहारुक्खायाणं ४ चत्ता

तिमहागुल्मजायज केतलीभगवनवेलिनी केतलीवेलिनासइंक गोयमा च्यारवेलिकही च्यारसइंवेलिकहीसना
इसेवंत्र्यादि ४ जातिकही ह्याछइं वेनइं

रिमहागुम्मयाणं ४ कतिणंभंते वल्लीओ कतिवेल्लसया पं गो चत्तारिवल्लीओ चत्तारिवल्ल

केतलीभगवनलताकही केतलीलतानासइंकह्या गोयमा आठलतानि आठसइंलतानेकहीसंख्यानरइं

सयापन्नत्ता कतिणंभंते लयाओ कतिलत्तासया पं गो अट्ठलताओ अट्ठलयसत्ताओपन्नत्ता

केतलाभगवनहरीकायकह्याछइं गोयमा त्रणिकायकही त्रणिहरीकायनासतकह्या मत्स्यफलबेरबुधरुतादि

कतिणंभंतेहरिकया सयापण्णत्ता गो तओहरिकाय तओहरिकायसया पं फलहित्रिंखबेर

जीवाभिगम

७२

व्यासकलजगरा जियामाजीवान योद्दष्टोतपरिले दसआजीवइहां निलेनसकुलजी वदर्जीतेतसर्वः

फलसहस्सनालिबंध तेसर्वहरीकायपलैउपजइ हरीकायतेवनस्पतीतेथावरजीव तिमजसर्वइंसमनुगोगममानआ घालोचनपलि

वुधाए फलसहस्संचणंलिंबंधणंतेविसमे हरिकायमेवसमोयरंती तएवंसमणुगम्ममा

इंमसमनआवगाहनासाक्षीदि इंमसमप्रेक्षापलइ इंमसमपचिंतवतोथको इमवेचनिश्चैचिंत कंइ

ण एवंसमणुगाहिज्जमाणा एवंसमणुपेहिज्जमाणा एवंसमणुपेहिज्जमाणा एवंसमणुचिं

वतोथकोबेरकायनैविषेवरतेअवतरइ तेकिम त्रसकायनैविषइ थावरकायनेविषइ इमसर्वपूर्व परि

तिज्जमाणाएएसुवेवदोसुकाएसुसमोयरंति तंजहा तसकाएचेव थावरकाएचेव एवामे

केहेंबोजेकैरपर्यायालोचनआ एतलेविहृंसफदृष्टांतचोरासीलाखजीवायोनिप्रमुखव्यासवैं वलीजेकुलेतेइमज सिकलव्यापतिजीवनइदृष्टांतइ समारप॰ क॰ उ॰ वं॰ ज॰ पु॰ ते॰ वे॰ कु॰ एसलीकुलकोडिवीत कहेंसे

वज्जावरलेञ्जीवियदिट्ठंतेणं चउरासीतिजाती कुलकोडी जोणिपमुहसयसहस्सा भवंतिमक्खा

लइसणवनविमानदेवनो सोस्थितमास्वताबइ स्वस्तिकावर्त्तबइ स्वस्तिकप्रभाबइ स्वस्तिककांतबइ

ता अत्थिणंभंतेविमाणाइं सोत्थियाणिसो त्थियावत्ताइं सोत्थियप्पभाए सोत्थियाकं

स्वस्तिनवर्णबइ सोस्तितलेस्यानइ सोस्तितधुजनइ स्वस्तिकसिंहनइ सोस्तितकूट सोस्तितवतंसकब इ

ताइं सोत्थियवण्णाइं सोत्थियलेस्साइं सोत्थियज्झयाइं सोत्थियासिंगाइं सोत्थियकू-

७२

स्वोस्तिकउत्तरवतंसकबइ एहवेइण्पारेनामेकुइ हागौतमहोइ तेविमानलगवनकेवडामोटांकहा गोयमा बइ

डाइं सोत्थियवडेंसकाए सोत्थुत्तरवडेंसकाए हंताअत्थिणंभंतेविमाणाकेमहालयापण्णत्ता गो

जंबूद्वीपसर्वोत्कृष्टदिवसेंसर्वास्तितिमिरमंडलेंवर्त्तमानसूर्यउदयथकी उदयस्थानआश्री रिमाणलुधकसमनाकोइदे जतलोसूर्यआथमेएतलेंखेत्रआथमा एहवात्रणिअवकासेंतरखे त्रिगुणाप वलाकोइसमइएहवो

जावतियंचणंसूरिएउदेति जावतायचणंसूरिएअत्थमेत्ति एवंतयात्तिलवासंतराइंअत्थेग

एकविक्रमपवंलतेदेवताने तेदेवतानी उत्कृष्टीगति १ त्वरितगति २ जावदिव्यगति ३ देवतानीगति ४ तिलीवयमाणो एवी नोमजातो

तिअस्सएगेविक्कमेसियाणं सेणंदेवताए उक्किट्ठाएतुरीयाए जावदिव्वाए देवगतीए वीतीव

जोजोएकदिवस बीजेदीवसैंवतरुछतोबमासलगइदेवतांहीमइजाइ अद्दिकेतलाएकमिवीमाननोपारनपामइ एहवीगति

यमाणे २ जावएकाहंवा दुयाहंवा उक्कोसेणंछम्मासेवीतीवएज्जा अत्थेगतियंविमाणंवीथी

एहवातेविमानमोटाजाणवा गोयमा मोटाविमानकह्यां बइसगवन विमान आविर अचिराचर्त्त

तीवएज्जा २ एवंमहालयाणं गोयमा तेविमाणापंणत्ता अत्थिणंभंतेविमाणाइं अच्चीणि अ

तिमजइण्पारेलेदेनामनइअचिरावतंसकसर्वपाल हागौतमबइसगवंतकहइ बइसेविमान केवडांमोटांकह्या हगौतम जीवइजइ

वरावत्ताइं तहेवजावअच्चिरावत्तवडेंसकाए हंताअत्थितेविमाणाकेमाहालयापण्णत्ता गो

ऽस्तिनिपातोत्र क्षई अर्कवसीयाना संसहस्रात्तदोलि वोलसयाजोय णांणतेसही ८ गवीससद्वी साग ककदमाइमिपं चनराः ११ ४७२६३२१ कु त्रिगुणा ६४५२८ ६५४२ त्रिगुणा २८३५८६ एहवीगतिविधि तेपांचेजर

उक्तंच जावयत्र
देइ सुरो जीवया सो
अब्भेम इअवरेणं
तियपणनवसत्त
गुणं कत्तवपत्तेय
पत्तेयं १ सीयासीय
सहस्सा दोय सया
जोयणाणत्तेवडी
इगवीससहीसाणे
कक्कइमाइं पवि
नश २० यंकुगुणं का
उगुणं जलनिपण
मसमाइहिं आग
एकत्तेवजेने क
मपरमाण थियाणं
हिं तेचत्तारि वस
कमो हवे पादिग
ईहिं जे तिब्भमासं
न कविन जंति पार
कसि विम्भराविमा
णाणं ४ अस्मान्

इमजिमस्यो। छिसलगें विशेष एतलो एतनइ पांव अवकाशांतरहोइ कोइदेवतामोटामहर्द्धिक विक्रमचंत एहवी उतकृ
कहेंवुं
यमा एवं जहा सो व्वाणणवरं एवत्तियाइं पंचउवासंतराय अब्भगतिया सिदेवसी एकविक्कमा
ष्टी गतिइं मसर्व पा | बइं सगवननिमान का मनामइं कामावर्त्तनामइं सोजगें कामुत्तरवतंसक इमइग्पारेसेदे सर्वपाछ
छलीपरइं
जीपरें कहेंवुं हा गोतम
सयाए संतंचेव अत्थिणं संते विमाणा एकामाइ कामावत्ताइ जाव कामुत्तरवडिंसताइ हंता अ
तेसगवनविमानके वलो मोटो विस्तीर्ण जिमपा स्वास्तिकादिकलाति मसर्व कहेंवो जेउदयस्तमन षेत्रसात गुणो करवो
कह्यो छैं तेकिम गोयमा छलि णवरं एतलो विशेष जाणवो
त्थि तेणं ते विमाणा केमहालयाणं पन्नं गोयमा सो च्चिणितहेव णवरं सत्तउवासंतराय विक्क
बीजोधाकतोसरं बइं सगवननविमानके विजयविमा प्रथम बीजो वेजयंत त्रीजो अपराजितछैं बइंसेविमानसगवंतके
पाछलीपरइं हवेंनामइं न० यंत२ हा गोतम हवोकेहवोविस्ती
मो सेसं तहेव अत्थिणं संते विमाणाइं विजयाइं विजयंताइं अपराजिआए हंता अत्थि तेणं तेणं
गोयमा एतनइं जेतलिंस रिजउगइं आप्रथमइं एतलो षेत्रनव सर्वतिमजजाणवउं पणि बनिश्वें एतला गतिं वालतो ते वि
गुणोकरीइं बीजोधाकतो मानने। पारनावइं
वि माणा केमहालयाणं पन्नं गोयमा जावतया सुरए उद्देयणवइयाइं नवउवासंतराइं सेसं तंचेव नो चेवणं संथि
एवमोटाविमानसगवंतनइं प.ष्मजाकहेंतो कह्या आउघावंतो एहवो अधिकारसां एतलेंवैमानिकनो पहिलो उदे
अहो श्रमणी तलो सोसमाप्त थयो
माणाए वीतीवएज्जा एवमहालयाणं ते विमाणा पण्णत्ता समणाउसो उ पढमो उद्देसो समत्तो
ता प्रतिपपत्तौ तिर्यग्योमाधिकारो।

BHAU DAJI MEMORIAL

१ केतलें तेदेत्तगवनसंसारसमापनजीवकह्या गोयमा बसेदे संसारसमापन जीव कह्या तेकेहा पृथवी
बइं
१ कतिविहाणं तेते संसारसमावण्णगा जीवा पं गो छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पन्नत्ता तं पुढं
कायआो जगइं छठीत्रसकाय हवेंपृथवीकायनाकेतलाभेद कह्या तेपृथवीकायनावें सूक्ष्मपृथवीकाय १ बादरपृथ
बइं भेद कह्या छैं तेकेहा
विकाइया जाव तसकाइया से किंतं पुढविकाइया २ दुविहा पं तं सुहुमपुढविकाइया बादर
वीकाय २ हवें तेपृथवीकायनाबिंभेद कह्या तेकेहा एकपर्याप्ता १ एकअपर्याप्ता २ तेसूक्ष्मपृथवीका
पुढविकाइया से किंतं पुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता तं पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय से तं सुहु
यकह्या हवैं बादरपृथवीकायकहइं तेबादरप्रथवीकायनावें तेकेहा एकपर्याप्ता १ एकअपर्याप्ता २ इमजिमप
बइं भेद कह्या छैं नवणा
मपुढविकाइया से किं बादरपुढविकाइया २ दुविहा पं तं पज्जत्तगाया अपज्जत्तगाय जे
इं कह्यो छइं तिम सण्हासुकमालपृथवीनासात परपृथवीना अनेकभेद कह्या जावअसंख्यातजोकाका तेबादरप
कहेंवो भेदजाणवा बइं प्रमाणछैं
हा पन्नवणाए सण्हा सत्तविहा पण्णत्ता खरा अणेगविहा पन्नत्ता जाव असंखेज्जा से तं बादरपु
पृथवीकायक एतलें सूक्ष्मअनें बादरबें इमजिमपनवणानें वि जसर्व निरवशेषपणाइं जे इमअपांपृथवीप्र
ह्या भेदबी पृथवीना भेद कह्या पइं कह्या छइं तिम नवो हजाणवा इहां कीवनस्पतीलग
ढवीकाइया से तं पुढविकाइया एवं जहा पन्नवणाए तहेव निरवसेसं भाणीयव्वं जाव वणस्स

जीवनिधाण न धारय तिनीजी वघांणा तिह्विवि मा दया: रं सावर नविधि वांणाद राधात द्य पंचेंद्रीया णं १ सावघां णा हीनदय:

गइ कहेवं तं इमजिहांएकजीवतिहांकिवारें संख्या असंख्यातापरिणिक किवारेंअनंतापि तेबादरवनस्पतीका
नाजीवहुइं वारहुइ णहोइ यकह्या
तिकायया एवंजहाकाल इसियसंवेज्जा सियअसंखेज्जा सियअणंतासेतं बादरवणस्सतिका
एतलेसर्ववनस्पतीकायकह्या हिवइंत्रसकायकहेंबइं तेत्रसकायनाच्यारभेद कह्या तेकेहा बेंद्रीजीव २ तेंद्रीजीव ३
इकाइया सेत्तंवणस्सइकाइया सेकिंतंतसकाइआ च्चउविहापण्णत्ता तं बेंदियातेंदि
चउरंद्रीजीव ३ पंचेंद्रीजीव ४ हिवेंबेंद्रीकहेंबइं तेबेंद्रीनाअनेकभेदकह्या इमजिमपनवणापदेंकह्युंछें तिमनिरवशेष तेसघलाकीपत्ति
या चउरिंदीया पंचेंदीया सेकिंतंबेंयंदीयार अणेगविहा पं एवंजहेवपण्णवणाए तहेवं
पणइंजाणीयचें कहेंतां जो ज्यांलगइंसर्वार्थसिद्धदेवतांज्यां लगेंकहीइं ज्यांलगइं अनुत्तरविद्धेंवी मानवासीत्यांलगेंक एतलेंदेवताकह्या एतलइं
नरवसेसंभाणियवं जावसव्वट्ठसिद्धगदेवा सेतंअणुत्तरोववाइया सेतंदेवा सेतंपं
पंचेंद्रीपत्ति कह्या एतलइंत्रसकायपिणकह्या हिवेंभगवननेंकितलइंभेदेंप्रथवीकही १ तिवारइंभगवंतकहइं हेगौतम छभेदेंछप्रकारेंप्रथवीकही तेकेहाछभेद
चेंदीया सेतंतसकाइया कतिविहेणंभंते पुढवीपण्णत्ता गो छविहा पुढवीपण्णत्ता
सुकमालप्रथवी १ सुद्धप्रथवी वालुकाप्रथवी ४ मनोसिलानांमाप्रथवी ४ सरकरानांमाप्रथवी ५
तंसण्हापुढवी सुद्धापुढवी वालुयापुढवी मणोसिलापुढवी सक्करापुढवीमण्ह ९४

खरप्रथवीछ सुकमालप्रथवीनें भगवनकेतलोकालनीथितिकही गौतम जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिआउखेहोइ उत्कृष्टीतोएकसहस्रवरसनी थितिहोइ हिवेंसुद्धप्रथवी
पुढविणंभंतेकेवतियंठिइ पं गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंएगंवाससहस्सं सुद्धपुढवि
नोप्रश्नकीधो गोयमा जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिहोइ उत्कृष्टीतोबारसहस्रवरसनीथितिहोइ वालुकाप्रथवीनोप्रश्नकीधो गोयमा जघन्य
पुच्छा गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंबारसवाससहस्साणं वालुयापुढवीपुच्छा गो जहन्नेणं
तोअंतर्मुहूर्त्तनीस्थिति उत्कृष्टीचउदसहेंसवरसनीथितिहुइं मणोसिलाप्रथवीनोप्रश्नकीधो गोयमा जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिहोइं
अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंचउदसवाससहस्साय मणोसिलापुढवीपुच्छा गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं
उत्कृष्टीतोसोलसहस्रवरसनीथितिहुइं इमसर्कराप्रथवीनोप्रश्नकीधोबइ गोयमा जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिहुइ उत्कृष्टीतोअढारस
उक्कोसेणंसोलसवाससहस्सा सक्करपुढवीपुच्छा गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंअट्ठार
हसवरसनीथितिहोइं इमखरप्रथवीनोप्रश्नकीधो गोयमा जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिहोइ उत्कृष्टीतोबावीससहस्रवरसनीथितिकही एतलेंप्रथ
रसवाससहस्साइं खरपुढविपुच्छा गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंबावीसंवाससहस्साइं ने
वीनाभेदकह्या हवेनारकीनिंभगवनकेतलाकालनीथितिकही गोयमा जघन्यतोदससहस्रवरसनीथितिकहीइंप्रथवीनानेरइंथितिकही उत्कृष्टीतोतेत्रीससागरोपमनीथितिकहीछइं
रइयाणंभंतेकेवतियंकालंठिती पं गो जहन्नेणंदसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसंसागरो

इमप्रज्ञवणाइं पिंति पदनी परें सर्व अजंगेसवीर्थसिद्धसोलगी हवें कायस्थिति कहें छइ सामोमस्ठपलइं जीव कालथकी रुनाव
सेद कही वो जाणवो सर्व कहइ वउ विचार नकेतलो काल रहइ सा मामयवणइं पृथवीकायमा

वमाइ विती पदं तं चेव सव्वं भाणीयव्वं जाव सव्वट्ठसिद्धदेवत्ति जीवेणं भंते जीवेत्ति कालओ केवच्चि

हवें विशेषपणें पृथ्वीकायपणें भगवन पृथवीकायनें केतलोकाल कहइ सर्वकाल लगइं कहइ इम जत्रसकायपणिक
यवलो विषइ

रं होती गो सव्वद्धा पुढवीकाइएणं भंते पुढवीकाइएत्ति कालओ केविच्चिरं होती सव्वद्धा एवं जा

हिंवा वर्तिसल पृथवीकायनाजीवनइं वर्त्तताथका केतलाकाल अपहरहें निर्लेपथाइं जीव जघन्य पदिं असंख्याति उ
भगवन गोयमा सर्पिणीइं नीवडइं

वत्तसकायए पुढविकाइयाणं भंते केवतिकालस्स निल्लेवा सिया गो जहण्णपदे अ

उतकृष्टें पदिं पणि असंख्यातीउ सर्पिणी इंनिर्लेपथाइं नीव जघन्यपदें उतकृष्टीउ सर्पिणीइं नीवडइं जघन्यपदथकी उतकृष्ट

संखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं उक्कोसियपदेवि असंखेज्जाहिं उसप्पिणीहिं जहण्णपदा

पदें असंख्यातगुणा कहइं इमजोलगें वर्त्तता प्रत्युत्पन्न वनस्पतीकायनइं भगवनकेतलें कालें एकेकोअपहरतइं केतले
काल इंनीवडइं

तो उक्कोसिपदे असंखेज्जगुणा एवं जाव पडुप्पण्णवणप्फतिकाइयाणं भंते केवतीयका

प्रत्युत्पन्न वर्त्तता वनस्पतीकायनें निर्लेपका अनंतिउ सर्पिणीप्रमाण प्रत्युत्प त्रसकायनो पअकीधो एहवो जघन्यप
ऊपजता

लस्स निल्लेवा सिया पडुप्पण्णवणप्फइकाइयाणं नत्थि निल्लेवणा पडुप्पण्ण तसकाइयाणं पु ५५

देंसागरोपम सहस्र पृथक्त्व कहइं उतकृष्टपदें सागरोपमसहस्र पृथक्त्व कहइं जघन्यपदथी उतकृष्टपदिं विशेषाधिक
होइं

वा जहण्णपदे सागरोवमसहस्सपत्तत्तं उक्कोसपदे सागरोवमसहस्सपत्तत्तस्स जहन्नपदे उक्कोसं

अविसुद्ध अवधी कृष्णलेस्या जेंनें भगवन अण वेदना समुघातइं करी पोहोतइं मरण समुघातना अविसुद्धलेसी देवदेवी
गार साधु छइ सत्त कहें वा नइं

पदे विसेसाहिया अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवि अ

देषइं जाणइं करीनइं भगवंत कहें एअर्थ समर्थ १ अकृष्णलेस्यानी भगवन अनगारसाधु वेदनादि समुघातें पुहता
नहीं

णगारं जाणीता पासित्ता नो तिणट्ठे समट्ठे १ अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे असमोहएणं अप्पा

तो ते विसुद्धलेस्यानां देव देवी तइं ते अनगार जाणें सा निराकार उपयोगइं देषें एअर्थ समर्थ अविसुद्धलेसी साधु पोतइं
ता कार उपयोगें र्थ नहीं

णाणं विसुद्धलेस्सं देवं देवि अणगारं जाणंती पासंति नो तिणट्ठे समट्ठे २ अविसुद्धलेस्सो अ

वेदनासमुद्घातें पो पोतें एह अकृष्णलेस्यानां देव देवी नइं जाणें देखइ एअर्थ समर्थ नहीं ४
होतो वजे छइ

णगारे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणंति तिणसंति नो तीणट्ठे स

अविसुद्धलेस्यानां भगव अणगार वेदना समुघातें पोहोता अणगार पोतइं अविसुद्धलेस्यानां देवदेवीनइं अणगार सा
नइं होता जाणे ते

मट्ठे ३ अविसुद्धलेसेणं भंते अणगारे समोहतासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं दे

जीवाभिगम
९६

जांणइ देषइं एअर्थसमर्थनही ५ अविसुद्धनही समर्थनही मीचीलेस्यानोअ अणगार असमोहतासमोहतानइ

वदेवि अणगारं जाणंतिपासंति णोतिणट्ठेसमट्ठे ५ अविसुद्धलेस्सा अणगारे समोहता असमोह

विसुद्धलेसी अणगारनें देवदेवीजांणइदेषइं जांनइं करीनइं एअर्थसमर्थनही ६ विसुद्धलेस्यानोसाधुभगवन

एणं विसुद्धलेसं देवदेवि अणगारं जाणंति पासंति णोतिणट्ठेसमट्ठे ६ विसुद्धलेस्सेणं भंते अ

अल वेदनासमुद्घातअ अविसुद्धलेस्यानादेवदेवीनइं जांणइदेषइं हागोतमजांणइदेषइं जिमअसुद्धलेस्या गार समुद्घातइं

णगारे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवदेविं जाणंतिपासंति हंता जाणइ पासइ जहा

नाअवालावाकह्या तिमविसुद्धलेस्यानाबआलावातिंमजकहेंवासमोहतअसमोहत२ जोलगें विसुद्धलेस्यानो समोहतअसमोहत३ सुद्धबकहेवा. अणगारसाधु

अविसुद्धलेस्सेणं छआलावगा एवं विसुद्धलेसेण वि छआलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्से

वेदनासमुद्घातपोतानइंथकइं विसुद्धलेस्यानादेवदेवीनइं जांणइं देषइं हागोतमजांणेदेषें तिहांलगइं छइं अमती कहेंवो

णं भंते अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवदेवि जाणंति पासंति हंता जाणंति पासंति

थिंभगवनइं मकिमकहेंछइं इमभाषेंछइं इमप्रकासेंछइं इमप्ररूपेंछैं इमनिश्चइं एकजीव एकइंसमइंबेंक्री याकरइछइं

अन्नउत्थियाणं भंते एवमातिक्खंति एवं भासिंति एवंपण्णवेंति एवंपरूवेंति एवंखलु ९६

अमयइथकअनतीर्थका तेकेहा सम्यक्तनीक्रीया१ मिथ्यात्वनीक्रीया२ जेसमयइं सम्यक्तक्रिया

जीवे एकसमएणं दोकिरिया उपकरेंति तं सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरीयं च जंसमयं सम्म

करैं तेसमइं मिथ्यात्वक्रीयाकरइं अनइं वली जेसमयइं मिथ्यात्वक्रीयाकरइं तेसमयइं सम्यक्तक्रीयाकरैं

किरियंपकरेति तंसमयं मिच्छत्तकिरियं पकरेंति जंसमयं मिच्छत्तकिरियं पकरेंति तंसमयं सम

सम्यक्तक्रीयाकरतेंथकइं मिथ्यात्वक्रीया करइं मिथ्यात्वक्रीयाकरतिसमस्तक्रीयाकरइं इमनि

त्तकिरियं पकरेंति सम्मत्तकिरीयापकरणताए मिच्छत्तकिरियं पकरणताए सम्मत्तकिरियं

श्चेंएकजीव एकसमयइं बेंक्रीरीयाकरइं तेकेहा सम्यक्तनीक्रीया मिथ्यात्वनीक्रीया तेकिमअ

पकरेंति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाउपकरेंति तं सम्मत्तकिरियं च मिच्छ

र्थलगवनइं मकहोउ गोयमा जेहतेणंचाक्यालंकारे अनंततीर्थकरइंमकहइछइं इमथकारौंछइं इमप्ररू

किरियं च सेकेमेहे णं भंते एवं वुच्चइ गोयमा जंणं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति एवंपण्णवेंती

पइछइं संघसन्मुषइं खलुनिश्चइं एकेंसमयें बेंक्रीयाकरइं तिमजोलगें सम्यक्तक्रीया अनेंमिथ्यात्वक्रीया

एवंपरूवेंति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाउपकरेंति तहेव जाव सम्मत्तकिरियं च मिच्छ

जे ते समकहे तैं ते मिथ्यात्व सूत्र कहैं छइ रूपणिगोयमा इम कहुं छुं इम भाख्यूं इम निश्चै एक जीव एक इ समइ
त्त किरियं च से ते एवमाहंसु तेणं मिच्छा अहं पुण गो एवमाइक्खामि जाव परूवेति एवं खलु एगे जी
जीवए क क्रीयाकरइ तेकेही समक्त क्रीयाकरैं तथा मिथ्यात्व क्रीयाकरइ जे समयें समक्त क्रीया
वे एगेणं समएणं एकं किरियं पकरेंति तं सम्मत्त किरियं वा मिच्छत्त किरियं वा जं समयं सम्मत्त किं
याकरइ तितोसमइ मिथ्यात्व क्रीया न करइ जे समइ मिथ्यात्व क्रीयाकरइ ते लइ समइ समक्त क्रीयाकरइ नही
रियं पकरेंति णो तं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेंती जं समयं मिच्छत्तं पकरेंति नो तं समयं सम्मत्त किरियं
समक्त क्रीयाकरतो मिथ्यात्व क्रीया न करैं मिथ्यात्व क्रीयाकरतो समक्त क्रीया न करइ तिलते रवतो इमति
पकरेंति सम्मत्त किरियाए णो मिच्छत्त किरियं पकरेंति मिच्छत्त किरियाए करयाए णो सम्मत्त किरियं प
श्रै एक जीव एक समें एक क्रीयाकरइ तेकेही समक्त क्रीया तथा मिथ्यात्व क्रीया २ एजसूत्र क्रियाकरइ
करेंति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेंति तं सम्मत्त किरियं वा मिच्छत्त किरियं वा
ए तले बीजो तिर्यंच नो नेद अक्के मनुष्य हरए हवइ मनुष्य एक तो समूर्छिम म बीजो गर्भज मनुष्य २ हवइ समूर्छि
सोममासघयो न नावें से रकला छइ तेकेहा नुष्य
से किं तं तिरिक्खजोणिया ३ से किं तं मणुस्सा दुविहा पं तं समुच्छिम मणुस्सा य गब्भवक्कंतिय मणुस्सा य

म मनुष्य ना के तला से रवइ एक जे तेरक हिले छइ किहां साचतन समूर्छिम मनुष्य उपजइ छइ गौतम मनुष्य क्षेत्र मा जिम पन उपजइ रणा
से किं तं समुच्छिम मणुस्सा एगागारा पन्नत्ता कहि णं भंते समुच्छिम मणुस्सा समुच्छंति गो मणुयखेत्ते
इ कहित छइ तिं पत्तलें हवे समूर्छिम मनुष्य हवे गर्भज मनुष्य कहैं छइ ते गर्भज मनुष्य ना त्रणि भेद पनर कर्म भूमि ना मजो लवी कहा इक ला बैं ते केहा
जाव करेंति से तं समुच्छिम मणुस्सा से किं तं गब्भवक्कंतिय मणुस्सा २ तिविहा पन्नत्ता तं क
त्रीस अकर्म भूमि ना छप्पन्न अंतरद्वीप ना नामे मनुष्य नो नो मजो णत्वो जिम पंचाल देस ना वासी एक रूक आगा
पुरुष ने पंचाला कहीइ हवइ अंतरद्वीप ना गर्भज मनुष्य ना अठावीस भेद कहा ते केहा १
म्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा से किं तं अंतरदीवगा अट्ठाविसति विहा पं तं एगूरुया १
षिक २ वेसालिक ३ नगूलिक ४ हयकर्ण ५ आदर्श मुष ६ अस्वमुष ७ अश्वकर्ण ८ उल्का
आभासिया २ वेसालिय ३ णंगोली ४ हयकण्णा ५ आयंसमोहा ६ आसमोहा ७ आसकण्णा
मुख ९ घनदन्त १० गजकर्ण ११ गोकर्ण १२ सकुली करण १३ मेघमुष १४ अजमुष १५
ण ८ उक्कामुहा ९ घणदंता १० गयकण्ण ११ गोकण्ण १२ संकुलीकण्ण १३ मेहमुह १४ आदमुह
गोमुष १६ अस्वमोह १७ हस्तीमुष १८ सीहमुष १९ व्याघ्रमुष २० अकरण २१ कर्णप्रावर्ण २२
१५ गोमुह १६ आसमोह १७ हत्थि १८ सीहमोह १९ वग्घमोह २० अकण्ण २१ कण्णपावरण २२
मुह

विद्युमुष २३ विद्युदंत २४ विद्युजीह २५ घनदंत २६ लष्टमुष २७ सुद्धदंत २८ एत्ल किहां सगलनर षिण
हा चौसनांम्
विज्जुमुहे २३ विज्जुदंते २४ विज्जुजीहे २५ घणदंते २६ लट्ठदंते २७ सुद्धदंते २८ कहिणं भंते दा
दिसनो एकरूकमनुष्यनो एकरुपद्वीप केहिं वाम इंकह्यो गोयमा जंबूद्वीपनैं मध्येमेरु पर्वत थकी दषिणदिसैं
हिणिल्लाणं एगूरूयमणुस्साणं एगूरूयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते गो जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स
चुल्लहिमवंत नामा वर्षधर पर्वत थकी उत्तर पूर्व नइं चरमांत थकी हुइ तिहां थकी लवणसमुद्र मांहि
दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं ति
त्रिणिसइं योजन अवगाहीइं तिहां दषिण दिसइं एकरूकनामामनुष्यनो एकरूकनामा द्वीप कह्यो ते द्वीप केहव
जइ इंति वा रइं को छइ
ण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं एगूरूयमणुस्साणं एगूरूयदीवे णामं दीवे
त्रिणिसइं योजनलांबपणइं विस्कंभपिहुलपणइं छइ नवसइं ओगणपंचास योजन कोइंक विशेष ऊणा लीपरि
षेप कहें तो परधि कही छइ
पण्णत्ते तिण्णि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं णवकुणपण्णजोयणसए किंचिविसेसूणे परि
ते एकरूकद्वीपइं एक पद्मवरवेदिकाइं एकेकें सघले परिक्षिप्त वेष्टि ते पद्मवरवेदिका आठ योजन ऊंचाइं
वन षंडइं तबइं
क्खेवेणं सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते सेणं पउम

चपणइं पांचसें धनुष पहिलपणैं छइ एकरूकद्वीपनैं पद्मवरवेदिका कही तेपद्मवरवेदिकानो एत्त
रवेइया अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं एगूरूयदीवस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता
लोवली विशेष कह्यो जिम जंबुद्वीपनी जगती उपरि जिम वरण वज्रमइं मांहि उपलो पदपि इंमवेदिकानो वरणन
नकह्यो वेतिमकरवो तेक हैं वै लतिम करवो
तीसेणं पउमावरवेइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तं जहा वइरामया णिम्मा एवं वेतिवण्णओ
जिमराजप्रश्नीइं वर्ण तिम वर्णनक ते पद्मवरवेदिकानैं एकेकइं वनषंडैं सघलें चोषफेर रवीटी छइ ते वण
नकह्यो छइ हें वा
जहा रायपसेणीए तहा भाणियव्वो सेणं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते से
षंड केहवो छै कांइंक ऊणां बें योजन विस्कंभ फरते पिहुलपणैं ते वपणि वेदिकानैं सरषी परधि एह वो वनषंड
कह्यो
परिक्खित्ता सेणं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं वेतियासमए परिक्खेवेणं
ते वनषंड केहवो कालो छइ नीलो ओसा कांइ इम जिम राजप्रश्नीइं वनषंडनो वर्णन तिम इहां पीण निरषीजोषपणैं
तिलइ कहीजैं कहैंबो
पण्णत्ते सेणं वणसंडे किण्हे किण्होभासे एवं जहा रायपसेणइय वणसंडवण्णओ तहेव णिरवसेसं
कल्ह मतीनाण काबेन
रणनो वर्णध गंधध रसथकी फासथ शब्दथकी अणिनाव वाविनो वर्ण उत्पातपर्वत पृथवी सिलापट्टनो वर
की की की पृथ्वी न नो चवणन णनविशेष पणइं
भाणियव्वं तणाण य वण्णगंधरसफासो सद्दाओ तणाणं वावीओ उप्पायपव्वया पुढविसिलापट्टगा

MEMORIAL

कहिवो जिहांतिहांघणावांणव्यंतरनादेवतादेवांगना बइसइ सूइ रमइं जोजेंगेसूषें एकरूवकदीपनइं माहिघणुंसमो
विचरइ रमणी करमवायो
जीवाभीगमस णिज्जवी जावतच्छणंबहवेवांणमंतरदेवायदेवीउ आसयंतिजावविहरंति एगरूयदीवस्सणंदीव
९९
पसलो स्पमीदेशसोनाकारी वीतरागस जेजिमकोइंद मादलमुरसरोवरजला इंमसय्यानो जिहांजोंपषवीशिला
गवानेकहित थान वर्णनकहिवो पटनेवखाणकरवो
स अंतोबहुसमरमणिज्जेभूमिगेपभसे सेजहानामंमए आलिंगपुक्खरेतिवा एवंसयणीएतोणिय
तेपषवीसिलापटनइंवि तिहांघणाएकरुकदीपइं मनुष्यमनुष्यनीस्त्री बेसइजाजगेरमेजांजेगेंसूषेंविच
षइं रेसालगोंकहेवो
हे जावपुढविसिलापट्टगंसि तत्थणंबहवेएगरूयदीवया मणुस्साय मणुसीउ आसयंतिजा
एकरूवकदीपनइं तिहां२ रमि२ तिहां२ घणा २ उद्दालिकनामा १ मोद्दालिक २ कोद्दालिक ३
२ वविहरंती एगरूयदीवेणंदीवेतत्थ२देसे तिहिं२ बहवे उद्दालका१ मोद्दालका२ कोद्दालका३
कंतमाल ४ नयमाल ५ नट्टमाल ६ संगमाल ७ संखमाल ८ दंतमाल ९ सेलमाल १० एहवेनामेकु
मगलाद
कंतमाल ४ णयमाला ५ णट्टमाला ६ संगमाल ७ संखमाला ८ दंतमाला ९ सेलमाला १० णामदुम
त्रयकारनाकह्या जसेंप्रमलोसा विसेषविस्तारेंकरी सहितविरूप मूलवंत कंदवंत स्कंधवंत मांजगें बीजसहितसोज
बइं पुषवंतो हवोवाचूषनोमूलबइं बइं छै बइं गेंकहेवो
गणापण्णत्ता समणाउसो कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो खंदमंतो जावबीय ९९

पांनडेकरीस फूलेकरीस वायाढांकी विशेषेंढांकी एहवीरूषनी सोभासोंजेंवें जातिदर घणुंसोभताप्रकारहेंबइं
हीन हिन बइं बइं
मंतो पत्तेहिंपुप्फेहिय अच्छिणपडिच्छण्णा सिरीए अतीवर उवसोभेमाणी उवसोभेमाणाचिट्ठंति
एकरुकनामाद्वीप तिहांघणा हेरूताजरूषनां सेरूतालरूषनांवन मेरूतालरूषनां सेरूतालरूषनां सालिरूष
२ वन वन वन
एगरूयदीवेणंदीवेतत्थबहवे हेरुयालवणा मेरुयालवणा मेरुयालवणा सेरुयालवणा
नांवन सरलरूषनांव सपतपर्णरूष पूगीफलनांव षजूरनांवन नालिकेरनांवन विरूपदरूषनांमूलवेंविस्तारम
न नांवन न लवइं मूलमंतोइत्यादि
सालवणा सरलवणा सत्तपण्णवणा पूतफलवणा खजूरिवणा नालियरवणा कुसविकुसवि
एकरुवकद्वीप तिहां२घणा२ तिलकरूष लवरूषविसे नग्रोधवट मांजगाइंराजरूष नंदिरूषवि नेदरूष
ष रूक्ष विशेष शेष विशेष
जावचिट्ठंति एगरूयदीवेणं तत्थबहवे तिलयालवया नग्गोहावरायरुक्खा नंदिरुक्खा नंदि
विरूपदरूषमूलछैतेसहितरहइंछइं एकरूवकद्वीपइं तिहां२घणी२पदमलता नागलता जांजाइंसांमलतासांरू
दिकहेवो
रुक्खा कुसविकुसजावचिट्ठंति एगरूयदीवेणं तत्थबहवेपउमलयाउ नागलयाउ जावसंम जेहनीवातेनाति धूलाकंपलाचा ताचाधूताप्रय गणाषासवालावि धनायमिराघा पर्याय
नेरूषकेहवाछइं निसें रंगलताइनोवर्णनजिमपवाईसूत्रेंकह्यो बइं जांलगाइंषति रूपवेंघणंरसोंजेंवें एकरूवकद्वीप
कुसुमितबें तेहनोपरेंइंहांकहेवउं
लीयाउ निच्चं कुसुमियाउ एवंलयावण्णउ कुलवउववाइए जावपडिरूवाउ एगरूयदीवेणं

तिहां रहलाइं घणा२ सेरिक नामा माहाजातिनामा वृक्ष वली पांच वर्णनां कुसुम तेणें करी कुसुमीतथ जेहवा केहवा छे जेणें वायरे
तोमइं गुलम विशेष जा नोगुलम तेणें करी कहेवो कारहइं ते कुसुम समुह कुसुममय तिहां सारइंति विधूत कंपावी बइं दूसनी
तत्थ बहवे सिरियागुम्मा जाव माहाजातिगुम्मा ते णं गुम्मा दसद्धवण्णं कुसुमं कुसुमेति जेणं वायविधुय
वली तेह एक रूचक द्वीपनो घणे सुमनोरम अलि मुक्ताजे फूलना पुंज ते हजार उपचार२ जाति मह करीक जितकहेतां सहित छे तेणें
माल कसुमीसाग कहितेंलगवंत इं घणो सोसतो धकारहें छे तेह एक रूचक द्वीप तिहां
गुसाला एगरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति एगरू
यार दिशि आरवनराजी कही तेवनराजी केहवी छइं नीलीव इंद्रपणमनीलए कराछे बइं ते माटें ते वनराजी नीलीव छें नीली
आस्ताकातिबइं आजगेरमणी कलालगेकहेंवो
यदीवे णं तत्थ तत्थ बहुसिंचवनराईओ पण्णत्ताओ ताओ णं वणराईओ किण्हाओ किण्होभासाओ जाव
माहामेहजेहवी मनुष्य लोकनी वनस्पतीदीसें छे तेथकी घणुंज चलतें छें वली केहवी छें जेहनें तोलें तीजुं प्रतिरू
आजगेंमोरी गंधिघणी गंधिनें मं कें छें जे वनराजी तनें प्रशान्तकारी छे रूपनथी प
रमाओ माहामेहणीउरंबभूताओ जाव महं तागंधद्धणिमुयंताओ पासादीयाओ अभिरूवाओ पडि
जरजस्माथ तेह एकरूचक तिहां रहेलो२ मत्तंगनाम कुमजातिविशेषनास अहो श्रमणआयु जिमसें वेदप्रसादि कमदिरा
तिरूपदी दीपइं बासे घणा२ मोहतीर्थंकरेंकह्या युष्मान मणि शिलाका
रूवाओ एगरूयदीवे तत्थ बहवे मत्तंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से चंदप्पभा मणि
बरधूधानसीतलसाढीवरथ जातिकदीपरें एहवाफल इंपणा दिनियासिसारखा छे जिमपनरवणइं कलिसेंधितरखोच
धोनचारली मदिरासकरा पकवयाछे नइं फूल घणाइं अमूलजानीम जवीते मे रीकहेवो तिनारादिकरजनइं
सलागा बरसीधुपवरवारुणी सुजाया फलपुफा विडयसार बहुदव्वजुत्तसंभार कालसंध

माधदिरसविलानि
अविशारिपचा
मवेइयाइफास
वेयवातिमइहां
निर्यासखाराछे
इइहों पिणइं मजे
हेंवोपत्रनिया
संसार इंमकडइं
वउ पर्याप्त

कालमसेधलासवेंम दिसुरसमरीवेलपांमवीलाइ सोवारसोधीपोतानो खजूरमुद्रानोसारइंहां सारशाछे लेवो एकमाधननामम मद्यवि
कमेरक मद्यविशेष सरीधो सुप्रशनसुराविशेष रूपनलोकइं अजूरसार मुद्रासारनामम मद्यइंहां तेषलइ रूपीपरेवाकी
यआसवा मकुमेरगरिडदुद्धजाति पसन्न तेल्लगा सतिवार सोधस्स खज्जूरमुद्दियासरा विसायणसु
बइं सेलफीतो प्रधानहवो वली फरसके हवीछेंवरण बलवीरजपरिणामबलहेतुते मद्यनी विधि घणीजाति विशेषें करी घणा
रसरूपीनीय फरसनोमवि गंधरसफरसेंकरीजुक्त तेउपलसहीतबइं प्रकारबइं तेमद्यनी परें मीवावडवारा
पज्जरेवायखुरसवरा सुराव णगंधरसफरसजुत्त बलवीरियपरिणामा मज्जविहीयबहुप्पगारा
मातंगनामा घणा वृष्यनां एक अनेक घणाकुणनीकाघली जातिनाव्रव छें तेमृयाछेंएहवुंसंसावीइंने हनोंतरनाएकेणे
समाहकरूएनइं नीपाया पतिनथीइं अंबरादिकविसत्रसापरल तेमद्यविधिनथीनी
तहेव तेमत्तंगणामदुमगणा अणेगबहुसमावतेहरुविहवीससापरणयाए मज्जविहीए उववेयाफ
फलपूर्णएहतेंसेंसातावपद्यइंतसाव विसकहलेवा पावृष्यनामलसहितआंजगेंरहेंबइं हवइंएकरूचकद्वीपलइंविषइंतिहांति
काफाटीनेंअवेछेंएतलेंएहवामद्यअव एतलइंएकदेरवृष्यनोकहीत १ लांघणो
ओहिं पुण्णा वि व मच्चिमिंहति कुसविकुससुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति १ एगरुयादीवेतत्थबहवे
लगांगनामिदुमनासमोहं अहोश्रमणआयुस जिमतेकरकला घटक कलस गारीसारन पारकंचनकासूर उरकसाजन
तीर्थंकरेकह्या युष्मान् जनविशेष पनो प्रतीति नविशेष लोटलविशेषन वर्द्धमा:
भिंगा णामं दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से कारगघडगकलस कक्करि पायकंचणिय उदिक
सुप्रतिष्ठिकसाजन कविष्टरना पारीसाजन लंगारना कोरंटका मारक पारंक भाजप्रती नलिकना चपलय दगवार
विशेषसरावसंपुट जनविशेष विशेष जनविशेष साजनवि साज॰ साज॰ मइं जनविशेष साजन क
वद्धणिसुपतिट्ठ कवट्टर पारीचयक भिंगार करोडिसागरपारंकपाती थालमल्लगचवलय

विचित्रभाज पट्टकभाज मणिनट्टकना सीपमा खोरसा पणकुनेजादि दिसेकेहवाबेंभाजनकांचनमणिरत्नांजेले विचित्रघणेप्रका
नविशेष नविशेष जनविशेष नीपना जन कानांकूपण भाजनें चित्रांमंडेजेहनी रीति विचित्रमनीपरइं रेसाजनहोइंसा

रयणावरक विचित्तवसेसपरक्कमणिसट्टकुसीयरखोरयणज्झ कंचणमणि रयणभत्तिचित्ते विविहवि

जननीपरेयुगली एहवेंआकारेतिमजरूगकनां मंडमनागण अनेकघणीजातिनाछ तेतेकिणेनीपाया वैडूर्यादिक
यंतेंमुखदाइं सपीहवइं कूबइं इंद्रनीपजा मोंक्सी युक्तपरि

चित्तसायणविही बहुप्पगारा तहेव तेभायणविहिए उववेया फलेहिं पुण्णा विव विससहंते

ए(?)सैपर भाजननीविधि फलेकरी पूर्णविकस्वरता शुद्धरूपनामजर्नेएसाजननाममवी एकंकूकहा तिहांघणा
पमाणै पेपेतसहितवइं जननें आकारेंरहितवइं जाकुलरूपनीजातिकहो २ पइं तुडिता

याए भायणविहियाए उववेया फलेहिं पुण्णा विव विसहंते कुसविकुसजावचिहंति २ एगुरूयदी

गनामइंडुमनासमीहकुसाते वा अहोश्रमणोआ जिमतेवाजिंत्र विशेषमा पणववारविशेषहोल दंडदेवीप नेसारे
जित्रवणोसकथरेतारहेबइं युष्मंतोसांभलो दजमाटीतेजे हवु दरदरकरटीप्रसिद्ध सिद्ध २

वेणं तत्थ बहवे तुडियंगा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहासे आलिंग मुइंग पणव पडह दद्दर करडि डिं

महाड करनविणा खरमुखाका मांदलका संखकान परलीश्रणक्ष परवादनीसमन वसष्टीनीने वीणाप्रती सांधो
का विशेष लही हबुं हीसंख लोमडीमुखवीणा त्रीवीणा वेणवंस ति षावी

डिम भंभा होरंभ किणिया खरमुहा मुयंग संखिया परिली वच्चग परिवायणि वंस वेणु वीणा स

णाविविपंचीतंत्रीमोटीवीणाम गरसकलोकतालो कांसानीतालगा संप्रयुक्तस द्यविधयासम्यग्यथोक्तविधिनी
त्रीष नीत्रीएकतंबीवीणाकनरी टाप्रमक्षलाषना यननीप्रसिद्ध हितअलो तिंकरीनिपुणडाहेतुरूषें

घोस विपंचि महति कच्छभि चित्तवीणा तालयाकंसतालयासंपउत्ता आतोज्जविहिणिउण

१०१

नारिकनासमयनैंविषइंएहवागंधर्वतेलेंहतामाचाजित्र मांकलेकनहीतेहनीपरेंतेडुमगणनाएहवाशब्दवइंएहवाअनेकजाति
विआदि १ मध्य २ अवसानएत्रणिवामे ५४ वइजेहाए मासष्णेतोकिणेनीपायावैड्र्यादिकेंनथीनीपायावीससापरिणतेंपरि
गंधव्वसमयकुसलेहिं फंदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा तहेव ते तुडिया विडुमगणा अणेगबहुविहवीससा

विततपडहादि घन स्वसीखंसा एहवाआरतेरनेंवाजित्रंकरीवाजैंवाजित्रनी एहवेफलेसंपूर्णछताजित्रनीपरेंवा
तालादि दिक विषइंअपेतसहितछे जनारहइंवइं

परिणयाते ततं विततघण झुसिराए चउविहाए आतोज्जविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विव चिट्ठंती

विस्फुरवोषामुजयकारहेंवइंएतलेत्रीजोतेरकल्परूनो तेएकरूचकद्वीपतणिगामें दीपसिखांनामेंडुमगणावृक्षसमोह
कहोहवेचोथोदीपसिखाकल्पवृक्षकहेवइं तिहां २ घणा कह्याबइं

कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंती ३ एगुरुयदीवे तत्थ बहवे दीवसिहा णाम दुमगणा

अहोश्रमणोआ जिमतेसंध्याइंविरागसमयसं नयतिचक्रवर्तिपुंतेंदीपिकानाचक्र मोहजेहवोतेचक्रवालदीवानीनेकेह
युष्मंतो ध्याकाल नवनिधि वाननिफरतालोइंवइंदीवीनोस वीबैदीवीप्रत्लूतस्नूलवारछे

पण्णत्ता समणाउसो जहा से संझविरागसमए नवणिहिपतिणो दीविया चक्कवालविंद

जेहनीप्रतिनपन्निरलेसेतेजनेंबेमहतितेजवंतज्वालाआप्रकटकी रणसरीषो जेहवोफूलपारिजातकनोवनजेहवोतेहना
षीतें तिमिरअंधकारनेंमरदवासमरथवइं कनकनाकि तषा मरिषोघणनिवडप्रकाशबैंजेहनोवली

पभूयवट्टिपलित्तणेहिं धणिउज्जालिय तिमिरमद्दए कणगणिकर कुसुमियपारिजात

कंहवावइंकांचनमणिरत्नमेंवइंविमलरख नपनीयविचित्रवर्णोपतिबक्जएहवाविचित्रदंडवइं जेहनाजेहना जेदीवीए
सोवमलरहितपरिमासवाई तेअवनेयोग्य ककालेसहसात्कारि सांमठी बालोनिंजालीनइं

वणप्पगासे कंचणमणिरयणविमलमहरिहं तवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाहिं दीवियाहिं

णितवैंइंधनु
षनीपरइंतेना
वीणादि

व

जेहवी जेवी कीधी स्निग्ध मनोहर दीप तीन जेवै जेहनो वली दीवना निर्मलग्रहना समोहर जादिकें अणटांक्या जेहवा दीसइ तेह
ना सरखी आताले तिमिर रहितजेहवो सूर्य तेहनो पसरतो विस्तरतो जेहवो उद्योत तेहनी परें जेदीवीमांसाइ छइ एटेत्री पदले
जीवाभिगम सहस्सपज्जलियवणुसवियणिद्ध तेयदित्त विमलगहगणसमप्पहाहिं वितिमिरकरसूरपसर
१०२ दीवतानो एअर्थ कहें छे जे ज्वालोज्ज्वालाजलती जे ज्वाला तेणेउ | तेहनी परें सोहता छे तिमजहो पसिधानामें उमच छइ | तेकेहवा छइ एहवा घणी जातिना उच्यछे
हसितउद्योतकारी अतिशोभ मनोहर छे
उज्जोयचिल्लियाहिं जालुज्जलपहसियाभिरामाहिं सोहमाणा तहेव ते दीवसिहा वि दुमगणा
कुंभस्वरादिकें नीपायानथी विस्रसापु फलइ पूर्णते भलाभ्यां छै एहवी उद्योतनी विधि तेणे पतेसहित एहवा फलते तेणे परि
पूर्ण छइ ते विस्फुट छ्प्पनामूल अका आलगोरहें छे एतलेण्चोथो भेद वृक्षनो कहेवो ४
अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए उज्जोयविहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विसट्टंति कुसविकुसविसुद्ध जाव
एक रुचक द्वीपति तेणेघ | जोतिषी नाम दुमगण कल्पवृक्ष सूर्यनी परें उद्योतकारी छइ | अहो श्रमणो आयुष्मंतो | जिमते अचिरोद्गतशरद सूर्यमंडल घणी वेला
दी चिट्ठंति ४ एगरूयदीवे तत्थ बहवे जोतिसिया णाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहा से अचिरु
नोउग्योसूर्यमंडलजेहवोहोइ | तथा दीपती वीजली जेहवी तथा दीप जलती कृतावह | धूमविना ज्वालाजेहवी हुइ | अग्निसंयोगें धोतसोव
पडती विस्तरती उल्कासहस्र | अग्निनी ज्वाला एहवी मुक्त तथा हुइ अग्नि
ग्गयसरयसूरमंडलपडंत उक्कासहस्स दीप्पंतविज्जुज्जलहुयवह निद्धूमजलियनिद्धंतधो
तेजेहवोतप्त तपनीय सुवर्ण जेहवो हुइ केसूतनुफूल जेहवुं राता असोक जासुलनुं फूल | जेहवुं विकसत जेहवा पुंजसमोवर हुइ मणिरत्न नाजहवा किरणहोइ | हींगुलो नो जेहवो रंगहोइ
तनिउणतवणिज्ज किंसुयासोयजासुयणकुसुमविमउलियपुंजमणिरयणकिरण हिंगुलणिकररूवा १०२

एक रुचक द्वी पइ | तिम जयोतिषी नाम दुम गण समोह बहु जेहवा जिहां एहवा अनकजाति | नो घणां प्रकारनो छप्प छइ स्वरादिकें नथी नी पायादी स्रसा पुद्गलें परिणम्या छइ | एहवा उद्योतनी विधि उपे तेणे सहित | छइ
इ रूवा तहेव ते जोतिसिया वि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए उज्जोयविहीए
रूपीलेस्या छइ | मंदलेस्या छइ मंद आतप तपनी लेस्या मंदी लेस्या छे | मंद आपतपनी लेस्या छे जेहनी | कूटादिकनी परें एक संस्थानें संस्थित रहइ छइ | अन्योन्य मांहोमाहें अवगाढम लीरह्या छइ लेस्याइं करीनइं
उववेया सुहलेस्सा मंदलेस्सा मंदायवलेस्सा कूडाइव ठाणठिया अन्नोन्नसमोगाढाहिं लेसाहिं
पोतानी प्रभाइं ते प्रदेस सघला नुसं छइ सोभइ छइ कूडादीसुइं छइ | उद्योतवित करेंता उ | उद्योत अत्रुआला अली नीपरें अतें करें छइ तपे छे सूर्य जेवि सार इइ | विशुद्ध वृक्षनां मूल वृक्ष कार एहवे एतले पांचमी जातिना कल्प | वृक्ष ५
साए पभाए ते पदेसे सव्वउ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पभासिंति कुसविकुसविसुद्ध जाव चि
कल्लग करुच करीपइ | तिहां घणा चित्रांग नामइं दुम नाग णकहें तां समो हपणन्ना कल्पीता कहया छइ | अहो श्रमणो आयुष्मंतो | जिमते पहीघरनी परइ
ट्ठंति ५ एगरूयदीवे तत्थ बहवे चित्तंगा णाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहा से पेच्छाघरे णाणावि
मलीकबूं नानाप्रकारनी विधिइं विचित्र छे मनोहर र | फूलनी दाम माला तेणें करी आकुलछे ते दीपें उज्जल ना श्वेत विकसित पुष्प नापुंज मुक्ता फूलनी आति तेह नाउपचार छइ तेणें करी कलित कहेता महित | तथा विरलाकी अ विस्तरया नथा गुंथी
हचित्तरम्मवर कुसुमदाममालाउज्जलभासंतमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए विरल्लियविचि
मालाफूलनी ना समुदाय त लांप्रगजेपरि पुष्प छइ | सतेगुंथ्याने वीड | तथा फूल पुराइंते | संघातिम नालिमां नालपरोइं मालोइं एहवा फूल छइ एतले विनागर हित जे टनइं जिहो यत्न पुंखाजे सघ | कसनिनाप रमदवेन लीदसिंकरी समक
त्त मल्लसिरिसमुदय पगब्भगंथिम वेढिम पूरिम संघाइमेण मल्लेण छेयसिप्पियविभागरिइएण

बांधवें एतलें फूलमालावांधि तथा प्रवर लंब मांन विप्रकृष्ट पंचवर्णनां फूलें करी सोभि वनमाला इं चंदनमाला इं करी नाग
वइं पणइं करी नइं तो वइं कीधें वें एत्रण इं द्रदेस इं वइं

सव्वंतो चेव समणोबद्ध पविरललंबंतविप्पइट्ठ पंचवण्णेहिं कुसुमेहिं सुसमाणे वणमालकितंथ

जेहनो एहवा दीपता थका तेहनी परइं चित्रांग नामा द्रुम नाम एहवा अनेक जातिनां वृक्ष वइं इश्वरादिकें नीपाया फूलनी
जे ह वृक्ष रहें वइं [illegible] समा हक स्या वइं नथी विससा [illegible] परणित वइं [illegible]

एचेव दिप्पमाणे तहेव ते चित्तंगा वि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए मल्लवि

रजकारनी विधिइं [illegible] प्रकार हैं वइं एवहो एक रुचक द्वीप तिहां घणा चित्ररस नामें द्रुमवृक्ष्यना समोह कह्या ते
पपेत सहित वइं [illegible] कहित नइं विचित्ररस भोजननाक ह्या आहो

वहीए उववेया कुसविकुसम विडावचिट्ठंती ८ एगरूयदीवेणं तत्थ बहवे चित्तरसा नामदुम

श्रमणो आयु जिम ते परमान्नपय सो गंधवर [illegible] गंधके तेडुल विसिष्ट पाकादिकें [illegible] एहवा [illegible]
ष मंतो हवी वइं एहवा जे कलमसालना चोषासरद रत्तिनो नीपनो घृत

गणा पन्नत्ता समणाउसो जहा से सुगंधवरकलमसालितंडुल विसिट्ठणिरुवहयदुद्धरद्धे सा

गोल खांड मधु [illegible] एहवा [illegible] करीनी वर्णवं गंधवं तथा राजा जिम चक्रवर्त्ति कुइं आर दिशनो
धिकरस [illegible] पाई जे पयाउत्तम त ते धणी

रयघय गुड खंड महुमेलिए अतिरसे परमण्णे होज्ज उत्तमवण्णगंधमंते रन्नो जहा वा वि चक्कवट्टी

तेहनें आर खें निपुण [illegible] तेणि मांई [illegible] तथा कलमसालनो नीपा
नीपाई नइं [illegible] आर दिश [illegible] रूपांमों [illegible] फूलनी परें विकसीत

सहो [illegible] निउणेहिं सूयपुरिसेहिं सज्जिए चउरं कप्पसेयसित्तेइव ओदणे कलमसालिणिव्वत्तिए विप १०३

वाफ मुक्तो कोमल [illegible] रहीत [illegible] सीथ जेहना वली अथवा [illegible] विपजादि सहित [illegible]
अनेक फल फूलनां शाक [illegible] संयुक्त सहित वइं [illegible] संस्कृत [illegible] संस्कार सहित कीधे

क्के सव्विप्फमिउ विसय सगलसित्थे अणेगसालणगसंजुत्ते अहवा पडिपुण्णदव्वुवक्खडे सुसं

वइं वरणगंधरसफ बलवीर्य परिणामइं इंद्रीनें आदि [illegible] तथा [illegible]
रसें युक्त वइं सहित वइं [illegible]

कए वण्णगंधरसफरिसजुत्तबलवीरियपरिणामे इंदियबलपुट्ठिवद्धणे खुप्पिवासमहणे पहा

तेलें वपनीत युक्त वइं तथा वली केहवो वइं [illegible] परमइं इष्ट [illegible] तेहवा ते चित्ररसना मावृक्ष्यना
जे तोजन [illegible] वइं [illegible] युक्त वें गणसमोह कह्या

णगुलकढियखंडमच्छंडि उवणीए व मोयए सण्हसमियगब्भे हवेज्ज परमइट्ठरससंजुत्ते तहे

एहवा घणी जातिना वृक्ष्यवइं इश्वरादिकें नीपजाव्या वइं नही विस्वसा नां भोजननी विधिइं उपेत कहेलो सहित वइं
[illegible] परणित वइं अनेक जाति [illegible] मूल [illegible]

वत्ती
व ते चित्तरसा वि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए भोयणविहीए उववेया कुसवि

एतलें मात जातिकल १ एक रुचक द्वीप तिहां घणा मणियांगना मेंद्रुमवृक्ष्यना समोह [illegible] श्रमणो आयुषमं जिम ते हार
[illegible] कह्या वइं तो

कुसविकुसविडावचिट्ठंति ९ एगरूयदीवेणं तत्थ बहवे मणियंगा णामं दुमगणा पण्णत्ता समणा

[illegible] कुंडल कर्णनो [illegible] मोतीनी जाली कनकनी जाली सूत्र [illegible] कडगआ
[illegible] नीजाली मणिनी जाली नीजाली [illegible]

उसो जहा से हारद्धहारवेट्ठणग मउड कुंडल वामुत्तग हेमजाल मणिजाल कणगजालग सुत्तग उ

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी [illegible] स्मारक

जीवाभिगम
१०४

खड्डुक आभरणजातिएकावलिकंठ सत्रमालादि मकरकाआभरणविशेष उरथनोआभरणविशेष उरथनोआभरणविशेषग्रैवेयकश्रेणीसू त्रकटिआभरणविशेष चूडामणिमुकुटविशेष

खिंतिक खुडुगखडुय एकावलिकंठसुत्त मगरिया उरत्थगेवेज्ज सोणिसुत्तग चूडामणि कणगतिल

कनक सुवर्णमई टीलु फूलीसिद्धार्थनामआभरणविशेष कर्णपा ली आभरण चंद सूर्य विशेष मा रवी वृषभचक्रमातितलभंगकर्णपाली आभरणविशेष त्रुटिम आभरणविशेष हस्तमाला करस्त साकल वलीयकांकण प्रालंबझुमणां

गफुल्लसिद्धत्थय कण्णवाली ससिसूर उसभचक्कगतलभंगक तुडिय हत्थमालग वलीयपा

वयस्कस्त्व सोनईयानीमाला चंद्रमालिका सूरमालिका हरिसतआभरणविशेष केऊर मुकुटविशेष वलयांजाणवो पालंपलंबाहारविशेष आंगु ठआभरणमुद्रिका दिकंचीमेखलाक टिमेखला

लंब वत्थरकं दीनारमालिया चंदसूरमालिया हरिसय केऊर वलयपालंब अंगुलेज्जग कंची

कलापस मोह सरिरशति हारकें पादजालघंटीकाघुघरें जाणवी खिंखणीघुघरी रत्नोरुजालनामाआभरणविशेष खुड्डिआभरणविशेष वरश्रेष्ठनेउरपरचरणआभरणमालियाआभरणविशेष

मेहला कलाव पयरय पद्मालघंटि..य खंखणि रयणोरुजालिखुडियवरनेउरचलण

कनकनाना निगड मालयप्रालंबादिएहवा आभरणनांनां मलोकिकपकीजे लाकांकंचन मणिरत्ननांजीत्ति चित्रामहइं एहवीभूषणनी विधिजेणे कइकारभूषण नीविधिसहितवृ क्ष

मालिया कणगणिगलमालिय पालंब कंचण मणिरयण भत्तिचित्ता वत्तूसणविही बहुप्पका

तिमजतेहवामणियांगनामे द्रुमकल्पवृक्षसमोहकल्पा एहवाआभरणरूपअनेकजातिनाकल्पवृक्षइं कोनाना पणावानधी विस्त्रसापुद्गलेंपरणीतथइं अनेकरूपफलपरिणतभूषणविधिइंतेवृक्षवेतसहितवृक्षएहवा आभरणरूपफलजनितरेंथइं विशुद्धवृक्षना

रा तेहिं वि तेमणियंगा वि दुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणयाए भूसणविहीए उववेया: १०४

मूलथकीरहइंछेइंत्लेलकआहषनी आवमाजातिकेही ८ रुकूचक तिहांघणाएहाकारनांमदुमगणकह्या समोह दीप कल्पारनगवनलीधंकरेकरीतेआले श्रमणोआयुष्मं तो जिमतेप्राकार गढतेआका

कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला ...चिट्ठंति ८ एगोरूयदीवे तत्थ बहवे गेहागारा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो

रइंगढताश्रीयेंआकारइंचरीकादारिकानीपरइंगोपरमोटोगढप्रासादतेंआकारेंआकाशतलआकाशनीपरइंमंडपतेमंडपआकार एमएकसालधित्रिचउसालआकारगर्भघरउंरडानेआकारेमोहनघरीमैकनघरवलभीघरपरइंतेगृहनस्थानक चित्रसाली

जहा से पागारट्टालग चरियदारगोपुर पासायागासतल मंडव एगसाल दुसालगघर मोहणघर वलभीघ

बेसवानीमालीयांसालघरसोहाना रांधणीवारघरथे आतंला चोखुणा नंदावर्त्तनइसंस्थानइ जाणीउंजारिपंडूरतलह सेव मुंडमालहविशेष तथाहर्म्यहविशेष

र चित्तसालिगमलय भत्तघर वट्टतंस चउरंस नंदियावत्तसंठियायत पंडरतलमुंडमाल

अथवाधवलघरजांणवांअर्द्धमागधएहविशेष विभ्रमएहविशेष सैलाद्रर्द्धसैलसंस्थान कूटनइंआकारइं सुविधकूटकोमगधदेशप्रसीद्ध तथाअनेकरूएकेनेवोलइ

हम्मिय अहव णं धवलहर अद्धमागहविब्भमसेलद्धसेलसंठियकूडागारड्डसुविहिकोट्टगअणे

जाणराह जयनमनेंनीतरथत्ति नद्वे आपणहटाकार वलीरूपकेएवाहइंवटककपोतमालीजालगनिर्यासिएकनोएकदेशअपवरणउरवाक वोतालनालीधरिचंद्रसारिकासरीएह एहवीचिकनतेहेकेलतेते

गघरसरणलयणआवणविडंगजालवंदणिज्जूह अवरककवोतालि चंदसालि विभत्तिकल

सहीतथैसवननीविधिनइकारणघणांविकल्पेतिमतेल्लीपरइंघरतेआकारेंदुमनागणसमोहकल्पानीतरागेएहवासवननीपरेंअनेकघणावृक्षबीपरिकेहवानेकहेनाकीधानथीस्वासनवेविकल्पापुद्गलइंपरणितवेकेहवानेतेवृक्षसुपाकहणकवेचदाइं

ला नवणवि..विहरूचिकप्पा तहेव ते गेहागारविदुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरिणया

सुषेराशदिकतनरइं चलीचुष्पकेहवा लइंसुषैनीकलाइंसुषेपेसाइंजेघरे दारूपावलीयांनेहनीपंक्ति अलिंनोकरीकलितकहेंतासहितछइं | अतिरिक्तएकोनमुष्य विहारइंजवस्त्रोनरापना दिविचारवो मननेगमताछेजेघर एहवात्तवननी विधिकरी सहीतते

एसुहासरणसुहोत्तारए सुहनिक्कमण विसाए ददरतिसोमाणपंति कलिताए पइरिक्काए सु

विशुद्धच्छमसुखादिसहितजेपालगेरहे छइंएतलैंगोहाकारनोमरच्छनीनवमीजातिकहीवीतरागइ ९ एकरुचकद्वीप

हविहाराए मणाणुकूलाए तवणविहिएउववेया कुसविकुसविकुसजावचिट्ठंति ९ ए ए

तिहांघणा अनाकनागंगरालैतेअनतुकनोमेंडम वच्छनागणसमोहकह्याछइं | अहोश्रमणो आयुष्मंतो | जिमतेआदीणगकमां सुंवर्मजेहवुंहोइं | स्वामिकपांसेनिफन पासलां

एगूरुयदीवेतत्थबहवे आणिगणानामंदुमगणा पं समणाउसो जहासे आदीणगणामंडुमगणा

श्रेयांइंस्त्रकं बहुजेवत्र | स्तूतप स्तूलै | कोत्रिसरतंतूनिफल कालमृगपट कालनोवर्म

पं समणाउसो जहासे आईणे खोमंतणुल कंबलदुगुल्ल कोसेज्जकालमियपट

चीनदेसैंनि फनवे | श्लक्ष्णक माल | निसुणविज्ञानीएनी पनावा | स्निग्धकं हालां | गउडाटत्थ्वकरतांपांचवर्णसहितस्फटकइंतो हिवणिएहनोअर्थकरता असमर्थछइं॥

गत्रोधंभसुप्रदायर वसानव्यक्तदने तरेनसम्प्रगपा बशुद्देरपिकर्ड मात्राक्ष्ल्वात्॥

च्चिणंसुयसुतलएद्धतिसुलणिष्पविसिसाजियपंचवरणवरकासवार वीणाणवुणसरीपवि

घणावर्णसहित पीलांनीलांधोलां राता

तिसहिंणं कल्लाणगजिणमेहल बहुवण्णरत्त पीतनीलसुक्किलमकपंमिस लोमहरफरि १०५

पदेगजातिनाक लरच्छइत्रावोनी श्रुणलीयांनेत्रा नइंआपइंतेस्तां स्तांमनेनरंतंग २तुरुयंगा३जो ३४दीव५चित्त गा६चित्तरसा७ मणियंगा८गेहा गारा९अनय ष्का१०कोला१ सायणा२पढाण ३३विपद४देव प६५कुसुम६ मा६रु७सम्म८ ग९ १०सत्तसण १०कप्पदुमारुया विणत्ता२०८ त्रइच्छदुत्रावा नोत्त्रावइं॥

नलिणनोनानी परइंजीला छइं | अहवा अनेकव रुइंचित्रामवों | एहवी वस्त्रनीविधिघ्लोतरकां रेछइं

लोइद्र अवस्तासिद्धं तुसिसदामिलवंगकलिंगकलिंगनलिण तंतुमयभत्तिचित्ता वत्थविही बहुविही

कुइंश्रीहवरअधंनपटणनानी पनां छइंजेवस्त्र | अनेकवर्णनारागरं गसहितछइं | अनेकवर्णनाराग रंगसहितछइं | तेवस्त्रनीप्रतिइंअनगुकुनोमेंडमनछ्यनास मोहत्वनवंतेकह्या अनेकघणीजातिनाछेच छइं

बहुप्पगाराहवेज्जवरपट्टणुग्गया वण्णरागकलिया तहेवतेअणियणविदुमगणा अणेगबहुविही

किलेंनीपाम्नानबीविस्सासाधुकलपरिणामेंपरला मितलेंअनेक वस्त्रनीवि धिनपपेतसहितछे विशुद्धमूलादिकेशुद्धप्रकारछै एतलेंदशोरे | रेकअरुच्छकस्रोहवइंएकरुचकद्वीपस गवनमनुष्यनइंकेहवोआका

वीससापरिणयाए वत्थविहीए उववेयाकुसविकुसविकुसजावचिट्ठंति १० एगूरुयदीवेणंभंते दवे म

रसावएरुकमनुष्यनोरूपगुणनबोलेछइं अस्मवंतधार स्वरूपसंसवलनवंतेकह्या हेगौतमा | तेमनुष्यअतिसइंअतीववरप्रधानसोमदर्शनीछइंआरूयमनोहररू पछेजेहनाउत्तमकुकाजेहनालोगाछइंरूडेसानुकरोनीपनाछइं

णुयाणंकेरिसएआगारभावपडोयारे पण्णत्ते गो तेणंमणुया अइववरसोमचारुरूवा भोगुत्त

उत्तमभोगनीनीपनाएहवांउत्तमलक्षणछइंसंश्रीकसोभायमानछइंलोगजेहना सुजातरूडानीपनाप्रमाणोपेतसरसिराप्रिपल्लत रूडंगाछइंजेहनोसुप्रतिष्ठितरुडाछइंकाछिवोनेहनीपरेंउन्नतचाचरणछेजेहना तलालो हतउत्पलपत्रनी परेंकोमलदेपत

मालोयासिलक्खणधरा भोगसस्सिरीया सुजायसव्वंगसुंदरंगा सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा रत्तुप्पल

अकर्कशमुकोमलअकठिनअतिहिंसुकमालछछपगनांतलांछइं नगपर्वत नगर मगरमच्छ चक्र अंकधरखडमादिकलक्षण अंकलचरणछइंजेहयुगलीयाना अनुपूर्वेअनुक्रमे आनरुवीनुपहीननहीएहवी उत्तमाजेहना अंगुलछेजेहनी

पत्तमउयसुकुमालकोमलतला नगणगरमगरसागरचक्कंकधरंकलक्खणंकियचलणा अणुपुव्वसु

उन तिउंचा तलोपान लाबइं म्हदु वणि रत्ता स्निग्ध नख छै जेहुना जीया | एणी हरणीनी परइं तथा कुरुविंदनी परें वर्त्तवलया कारअनु
नास्वप्रमाणि रत्ना अष्टमांसलगूढ गुप्त छै गुफ घूंटी लइं जेहनी | अनुक्रमें स्थूल पतली वाटली जंघा छै जेहनी रूडी वरप्रधान

सहावंगुलियाऊणयतणुतंबणिधणक्खा संठियसुसिलट्ठगूढगुप्फा एणीकुरुविंदवत्तवट्टाणु

तेहनी परें संपुमपुत्र प्रदेश छै जेहनो पुलोकरी व्याप्त छै अश्वनी परें निरूपम लेपरहित | अतिहि अतिरेक वाटली कोट प्रदेश छे
सरीरमल विनादेह छइं प्रकरित वर प्रधान तुरग अश्वनी परइं तथा सीहनी परें | हनो हवे उदरवर्णन छइं जेहनो संहि

पुव्वजंघा सुजातिवरतुरंगगुज्झदेसा आइण्णहयव्व निरुवलेवा पमुइयवरतुरगसीह अइरेगवट्टिय

तनसो नेदनो माउंचो कोधेपलानो मुसलकाष्ठ ते जिम तथा दर्पण नो मध्य प्रदेश तथा निगरित सारीकृत चरप्रधान स्फुवर्ण
जिन पकादिकनी मुष्टिने हनी परें तथा वरप्रधान मध्य पातलो छै प्रधान वरप्रधान वारुणस्टडा जातिके तेसरी बो विक्रम विला

उयकडिसंहयासोलंद मुसलदप्पणनिगरियवरकणगच्छसरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जुयस

समसहितजातमगति तनसुजात कालामो कमलनी स्निग्ध तेजवंत आदेयदर्शन सुजात छै जवलिम सहित सुलली | उदंषिणवर्त्त
लइं जेहनी | जन्मथकी रूडी | कंवनामरडा घदेता असीजाइं एहवी रमणीक रोमराजी लइं जेहनी गंगावर्त्तनी परइं | नातरंगनी प

समसहिततणुजातजच्चतणुकसिणणिद्ध आदेज्जलडहसुकुमालमउयरमणिज्जरोमराइं गंगावत्त

रित्रणि श्वलय ते णिकरी संगुरमनोहर छे रवी सूर्यना | किरणे करवानवा तस्की लीलाबल एहवो विकस्वर अ | कोमडोडाघांटजलावि कस्वर मांचियर मक्कमलनी परें एहवी गंभीर विकट | बाकीना लिवइं क्रम सम सुविहंगपरी लिकडा ना नीयना पीन ने पवित्तरूष छेज

त य पयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोहियअकोसायंतपउमगंभीरवियडनाभी कस

हनी मझ ना सरी भुदर छइं जे हतुं सुपवित्र लइं करलेने जा दिट्टी जेहनो वर प्रधान वारुणस्टडा जाति ते सरी बो विक्रम विलास सहि
तगंसार गति लइं जेहनी | पदमनी परें विकटविस्तीर्णना सिपवेश छेजेहनें सनते तंचानी चापासान छी समा छइं स्फरदर स्वरूप पी
सलइं सा

विहगसुजातपीणकुंछीकसीदरापत्तनेद्द निकामविजासित सीसुहंकरणयपम्ह वियडणीसी

नवजनीपरइं भ
मवलयआणि
लइं जेहदरम
ध्यप्रदेशउसम
सरिषानेत्रपान
रालवांजातिष
धानतनयानजो
उजेहना

निदेहप्रमांण छैं मतियथायोग्य आयतदी | प्रकारी पासां छैं जेहनां कनक | जेहनां पासो निर्मल स्वच्छ लालिनिर्मल छैं सुजा
र्घपीवैसा मांम लानामक रमोदयो रति स्फ | फवलीर पिनछैं | तजन्मदोषरहीत

संणतापासा संगतपासा सुंदरपासा मितमाइयपीणरइयपासा एकरंडुयकय कणगरुयगनिम्म

जावइरतिउपद्रवे रहित देहना धरनारछै प्रसस्तवत्ती सजघ | सवर्णशिलानी परइं उज्जल | प्रशस्त समस्त उपविषमोन्नतन
णनाधर णहारलइं | नीरमललइं | हीउपवितमां

लसुजायनिरुवहय देहधारी पसत्थबत्तीसलक्खणधरा कणगसीलातलुज्जल पसत्थसमतल उ

सजविस्तीर्ण लइं धनी नपेहाइं एहवो पेहलो वक्र हीउ | वाटली स्फजाव | कजेस्वरजे नागराजानि हनी परें विपुल मोटो गोलजे हवो
जेहनो नरनो वर प्रधान फल पोलीनी परइं | इंजे हपुरव | हरोइं तथा आदीय ते बाहुदेवानि फजल हट करवानें उंवुद

वचियविच्छिन्नपिहुलवच्छा उरवरफलिह वट्टियकराआवकरिंदरविउलभोगआयाणफलिह

परधिवतमणन
गरानीलवण
नवर्त्तलोवाहू
अप्यंतयूगमिव
निसानुयातउ

अग्नि नागा मणी काढी लोगलजेहवी दीर्घ दूंगा धसर सरषी वाटली विणि पछे तेरलिसफदाई वर प्रधान पुंबाहु स्फुष्टने स्थाने संस्थित लइं
उपचितमां सजघणनि वडपिर आव लक्ष्मा बंध छै स्फसिली हमां चालें करी नथी गलपाती पर्वनी सिहिजेहनी एहवाल छे जे हनां कां

उब्बूढदीहबाहू जुगसन्निभपीणरइयपीवर पउट्ठसंठियउवचिय घणथिरसुबद्ध सुसिलिट्ठ

लोहत्तलां छे उप
चितक्रमें उत्तरतां
लइं ३४

मडकाम प्रशस्त रक्तांजघपणे लोकरी स्फजाति जन्म दोषरहित छैं अछिद्र जालअं | वाटली जन्मदोष | कोमल सुकुमाल वर
ल | गुलीनी अंतरा नाम मो हरहित पर्व ताघछे जेहनापी वर पुष्ट | रहित | प्रधान अंगुली लइं

पव्वसंधीरत्ततलोवचियमउयमंसल सुपसत्थलक्खणसुजायअच्छिद्दजालपाणी पीवरवट्टियस

आताम्रकायरक्त | स्तल पातरता | स्फ लोप | रूचिरदी | स्निग्ध आपान नहीं | जेहनी नंडयानि अ | मर्यादाकारे रेषा | संष्टाकारे रेखा लइं
रतां | लो | वीन | पता | हवा नछे | कारेपाछे | लइं

जाय कोमलवरंगुलीया अयाबतंबतलिणसुइरुइलणिद्धणक्खा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा

चक्राकार रेषा छइ दिशासाथीयानी परि रेषा छै ए सर्वे समुच चंद्र १ सूर २ संख ३ चक्र ४ साथीयानी रेषा छइ जेहनइ । अनेक संख्या बंदर प्रधान जे ष्यण ऊत्तम प्रस

संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोत्थियपाणिलेहा चंदसूरसंखचक्कदिसासोत्थियपाणिलेहा अ

स्वादिक विपरीत रतिकारी पोताना करनै घणी पर परि रेषा छइ तेह कर्मे नी पाइ एहवी । वर प्रधान महीष वराह सीह सार्दूल वृषभ हस्ती वर प्रधान विपुल विस्तीर्ण ऊंनत ऊचा निर्मला स्कंध

णेगवरलक्खणुत्तमपसत्थसुचिरतियपाणिलेहा वरमहीसवराहसीहसद्दूलउसभनागवरपडिपुन्नविउलउन्नयक्खंधा चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसग्गीवा अवट्ठियसुविभत्तचित्तमंसू

ध्य रेषा छइ जेहना । पोताना चार अंगुल प्रमाण कंबुवर प्रधान संख तेहने सरषी ग्रीवा कांठ छइ जेहनी । अवस्थित अक्नेतन ते संव समसु विभक्त वि बें जेहनी मांसल सुपवती मुंछ विस्तीर्ण रूडें वालमें स्कंध तेजन्त दो घरहि

नउल उन्नतविपुल खंध चउरंगुलसुप्पमांणकंबु वरसिरीसिगीवा अविट्ठितसु मंसिलसुवि

त रुडे व पिशं संस्थित प्रशस्त प्रवर विस्तीर्ण हनु चबको छइ जेहनो उपचित परिकर्मे नी पालें उदंपुं प्रवाल तथा बिंबफल नो लोतुं फलने सरिषा अधर होठ नइ रत्त बरैं जेहना । जेयुगली याना ये पूर छै कजे कविना शसी चंद्रमा नो शकल खं

ण्णसुजातसंठियपसिठइ सद्दूलविपुलहणुया ओविचितसिलप्पवाल बिंबफलसंनिभा

ड विमल मलरहित रथी रहो सुफ घण निबिड गोषी रगाई दूधने फेन कु । मुदगरज कमलनाले हवा धूलतो लालु कुंइ ते हनी परइ धोली उजली दांत नी पंक्ति छै जे जेहनी उजली दांत के एहवा छै

अहरोट्ठा पंडुरससिसकलविमलनिम्मलदधिघणसंखगोरखीरफेणकुंद दगरयमुणालिया

खंड न थी दांत जेहना ऊजली दांत के एहवा छइ वोफिन थी जेहना दांत तने विरलान थी स्निग्ध दांत छइ जेहना । जन्म दोष रहित छइ जेहना दांत । एक दंत नी श्रेणि छै एकेकी जे लेरेखा दांतनी श्रेणि छै

धवलदंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता अविरलदंता सुसणिद्धदंता सुजातदंता एगदंतसे १०७

कता वि हु अग्नि करी धम्यो सोधु धोत सोधितु मलरहित तने तपनीय सुवर्णति हनी परें रक्त तालु ते मुष मध्य प्रदेश तथा जिह्वा जेहनी राती छइ गरुडनी परें दीर्घ ऋजु । अवक्र तुंग उंची नासिका छइ जेहनी अविदाल या सूर्य ने किरणे विकसी कमल तेहना व

ढीतणा दंता हुतवहनिद्धंत धोततत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरुलायतउज्जुतुंगणासा

त्र सरीषां नेत्र छै जेहनां कोकासित कमल नी परें विकसित धोलां प्रसन्न वर्ती अरुणी नइ जेहनी कोई देसइ कोकासित कमल कहइ छइ कोई देसइ पद्मावती लोचनके हें छइ अनामित ज गारें कनना । आरोपित जे वाषध नुमनी परे रूडइ लष्ट रूच स्क लअ राइ कालिमा धिकार निर्विकार ने ऊस संस्थान

अविदालियपोंडरीयनयणा कोकासितधवलपत्तलच्छा आणामियचावरुइलकिण्ह

विशेषला वद्ध की रमली कृष्ण स्नलवा जंतु कि रूप परम रूप सवां लि मिलती जनम दोष रहित पाली स्निग्ध गटी तमे छै जेहनी अली नक होइ ठावरा न ही प्रमोण युक्त सहित श्रवण कहाइ कांन डवला नहीं मांसल मांसे उपचित मुष देश लागक पोल देश लाग छइ जेहनो

राइ संगतिसुजात तणुकसिणणिद्धभुमाया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा पीणमंसलि कवो

अचिरो गत नवडे उगनो बाल चंद्रमा समान निलाड छै तेहनो संस्थान प्रशस्त छै मनोहर छइ तेव स्री तिजेहनो उडुपति पूर्णिमा ना चंद्रनी परें संपूर्ण सोम सश्रीक सौम्याकार मान जेहनो मुष छइ । छत्र ने आकारें उत्तमांग मस्तक नो देश छइ जेहनउ । घन अति संनिबद्ध

लदेसिताणा अचिरुग्गयबालचंदसंठिया पसच्छविछिण्णसमणिडाला उडुपतिपडिपुण्णसोम

निचय सहित स्नायु धकरी बंध लष्टे करी सहित उनत चवन रूडा कार सरीषा यंद्रित स्वकर्म नइ योग इंक गाव देश मलीनी पना छइ मस्तक त हनासो मलीसा सुलीच ष्मनो पोड फल तेह माघन असि सें तनुं निब यइ ति रूपी ब बुरइ ब कें केह वाकइ सह आकर्क शकइ

वदणा छत्तागारुत्तमंगदेसा घणनिचियसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा

विसद निर्मल प्रसस्थ प्रसस्त सूक्ष्म कोमल लक्षण लक्षण वेत्ता विरोध जेहवो रुइ तेथी । तणी नेहवो तीनरीठ करंजीलनी जो स्निक नल काजल तथा प्रहृष्ट सर्व वंत नवर मस्त गंधगंध वस्त स्फटिक रंतिने संसद्रत नो चके रन्ने भमर ना समोह सावती प्रहृष्ट भमरन्इ तरुण वस्मांइ कइ ने माटे

चयफुडियसिङविमय पसत्थसुहुमलक्खणसुगंध सुंदरभुयमोयगभिंगणील कज्जल पहट्ठभमर

अतिलघकछावलीकेहवी लीधवी गटवा छइ निकरं वलतसंकुचा विकरालापणि नहीं लगारे कवा काउ दिक्षिणावर्त इंताका
वसाए हवी मस्तक केस छइ तेह भणसा धीया दिमजनम मतिलकादि गुणरूनी दिसे लेउपपेत युक्त छइ रूपे रूनो नी पनो सरीर दोष

गणणिद्धणिकुरंबणिचयसंजुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया लक्खणवंजणगुणोववेया सु

रहितरु सुलक्षणाणपांगादिय लक्षासारकारीजोवाचाछपण्आर वदणाबलीपरेसेणकरुचक कोचनीपरे मीठ हंसनीपरइ मीठा
धोकविधिस्वरूप छइ जेसमुदाय स्व दीपनामनुष्यतेहे प्रवादस्वरूपरूप जेहनादेवाबाणीस्वर स्वर छै स्वर छइ
रूपअगछइ जेहनो पासाइयो दरस

जायसुविभत्तसरूवा पासाइया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ओहस्सरा कोंचस्सरा हंसस्सरा णं

नंदवाजित्र सीहनासरी सीहनासरि सुघुस्वर रूपस्वरना निर्घोष शरीरनी वाघायाइउद्योत निरातंक उत्तमलक्ष प्रशस्त
नीपरइ स्व घाघोष छइ बास्वर छइ छइ छइ तेहे मासतो अंगछइ जेहनो नीरोग लोपेस रूपो
रछइ इ

दिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा छायाउज्जोवियंगमंगा निरायंक उत्तमपसा

अतिदोषकर्मत मिका मनुष्यनी उपेक्षाइ अतिसेस वज्जरिसहनाराचसंघयणनाधणी नीरातकनीरोग छइ त्वया छवा मजेरा
उपमारहित तनुसरीर छे जे हनुं अतिशयनी अतिशय छइ समचउरंससंस्थानेसंस्थित काकारउदरमध्यदेशे वाउकुणी
यतीअप्रतिरूप मारहित छैजे हनुं त्वचानी छवी ते जंवत येषां ते षा मनु लोमनु वायुवेगोन
ते वलि

त्था अइसेसनिरुवमतणु वज्जरिसहनाराय संघयणा समचउरंससंठियाछविनिरायंका

अनुलोम अनुकूल नभमंडलमादि गुदिजादि रक्षितहे कंकपंखीनीपरे निर्मल गुद गुजपूठ छैजेहनइ कपोतपरिणाम कपो
वायुवेगसरीरे वृत्तते तपंखीनीपरे जठराग्नि सर्वआहारपचेजेहनइ स्त्रकुनायंखीनीपरे निर्लेपअपानदेश छै परी बाजुइ
वायुनोवेगछइ करलिवृष्टउदरलपास समसरीरादि निर्लेप छइ पदमकमलउत्पल नीलोत्पल सरीखो गंध

अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोयपरिणामा सउणिपोसपिट्ठंतरोरूपरिणया पउमुप्पलस

छइ उश्वास निश्वास करता सुगंध आहसइ धनुषऊंचो छै तेकरुचक दीपनामनुष्यनै चोसठि पृष्ठ करंडक पांसली कही
वदनमुख छइ जेहनो देहमांन जेहनउं तिर्थंकरे एकोनसावतेर इक्रूपोष छइ अहो

रसगंधनिस्सासुरभिवयणा अट्ठधणुसयऊसिया तेसिमणुयाणं चउसट्ठिपिट्ठकरंडुगा पण्णत्ता:

अमणोस्वाय तेरूचकदीपनामनुष्यप्रकृ छइ प्रकृतिकरी तथा प्रकृतिस्वभावे प्रतिअतिमंदीत्वत क्रोधमानमायालोभ थोडा छइ
, पातो तिवलुं तइकछइ एसतेलोला विनीतछइ स्वस्वावे पिणप सपणारी छै मृदुमनो अपरिणामिं सुष प्रवर्तनधीरूप

समणाउसो तेणं मणुया पगइभद्दगा पगइविणीया पगइउवसंत पयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्द

सच्च
टमर्दवोजेहनि अलीन मघलीअली माइलीनगुम छइ ते वेत्र चित्रपणें तइ कहै नहा गुरु षनें विनय करवा तसरलें अमद बालै मनि
नथी जेहने सनधिक प जेहनइ नथी वेरोइसला वा वादि वक्षिम शोषा तेर हिंवाना आवासनीप रे वसचा छे जेहनइ अघाइ छइ

वसंपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असण्णिहिसंचया अचंडा विडिमंतरपरिवसणा उ

उशादिकनो कामप्रा करें छइ तेएकसंच अहोअमणो आ तेएकरूचकदीपना नगवन केतलेकालें आहारनो अर्थ उप
कदीपनामनुष्यनागणसमु दहवाकला युषमंतो मनुष्यनइ जे

हिट्ठियकामकामिणो तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो तेसिणं भंते मणुयाणं केवतिकालस्सि

हेगोतम चोथभत्तएकांतरा आहारनी इछा उप एवं एकरूचकनी स्त्री वर्णवइ छइ एकरूचकनीलगवनमनुष्य
जइ नी स्त्रीनु केहवुं आकारनाव प्रसव तार स्वरूप संसत वन

आहारट्ठे समुप्पज्जति गोयमा चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ एगोरुय मणुयाणं भंते केरिसए आ

नगवंतेंकह्यो हेगोतम तेएकरूचकनी मनुष्यनी सुजातजन्म दोषरहित उदारिक सर्वांगसुंदर छइ प्रधानप्रधानमहिला
उ स्त्रीनागुण पीयवादिगुणादिक जे गुणते तेणे सहित ते कोलकमनीयचिसदमें निमअप्रमाण अमाणा

गारभावपडोयारे पण्णत्ते गो ते णं इत्थीओ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता कं

पेतपत्र कमलना पत्रनी परें सुकमालअकर्कशकूर्मह मंषाप्पा नीपरें नपीवर मांसल निरंतरस्वीना शुभतली छवी चरणनी
अंगुलीनसिष्टलरूणांये नचरणलै जे स्त्री उत्तम अविक्रम मृदु अकवि आगुलीछै जेह नी नोमंसफनत त्रुता सनुपतलिरतिका

तविसारणमाणपउमसुकुमाल कुम्मसंठियविसिट्ठचलणी उज्जुमउयपीवरनिरंतरपुट्ठसाहयंगु

MEMORIAL

नलिणपत्र कमलपत्र जे हवां तेहवा जे हवा तेहवा मांस सहित सुस्निग्ध नख बइं जे स्त्रीना रोमरहित वट वाटली जंघ मनोज्ञ संठिय
स स्त्रीना अंजघनस्थूल तावपस च्छाय प्रसस्तलक्षण सहित अकोप न्यागो ष्पगुप्त अ स्त्रिबइं वहवी जे घण युगल बइं जे स्त्रीनी

जंघ अच्चुणयरइयनलिणपत्ता तंबसुसणिद्धणरका रोमरहियवट्टलट्ठसंठियअजंघपसत्थलरक ५

नथान घीजुणा तीर्ठीचण जे स्त्रीनो स्कनिर्मित नमसां सुगुढमांसल प्रणमाटे न दीसे तथा कुमाल मंडय अकर्कशा कोमलट्ट
तो जानु दीवणबइं जेहनो स्कबुध रूमी बाधीबैं ववानो बंध सांधि सांधि जेहनइं केलिथ श्रीसुगत विमलस्वला वमजरहित
तथकी अतिरेक अधिक संचियरूहं संखानि विणस्मारकादिरहितं

ण अकोप्पइंघजुलला सुणिम्मियसुगूढजाणु मसलसुबद्धसंधी कयलिखंभातिरेगसंठिय

समप्रमांण सुजातजन्म दोष रहित वृत्तिबाटली पीवर मांसली निरंतर रुजंघा मलबइं अफाबइं अष्टापद द्युत आगनवि
पृष्ठ विथी पहेली पहसंचियसाला परनी परं संस्थान प्रसस्त लघ्वलो पेत विछिण विस्तीर्ण बिंबांनी वीभत्स दइं विपुल पोहली

णिव्वणसुसलमलउय कोमलसमसहत्ति सुजातवट्टपीवरणिरंतरोरू अट्ठावयवीचिपट्टसंठि

बइं श्रोणिप्रदेश जे स्त्रीनो वदन मुख नो आयाम बार आंगुल प्रमांण बइं विमणा थइं अधर प्रमांण विशाल विस्तीर्ण मांसल मांसोप
चित स्थूल जघन स्थान कवर प्रधान नीनरनारी बइं वज्रनी परें विराजित प्रशस्त लक्षण युक्त निरोदर विकृताकार रहित उदर

यपसत्थविच्छिणविपुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणितविसालमंसलसुबद्धजहणवर

र बइं जे स्त्रीनो वली केहवो बइं उदर तिवली त्रिणि लीटीबिं विनमियनमित तन कुइं बलेहवो णमियलगारे कृनमतो मध्यदेश
उदर बइं जेहनो कुच्छ कोनही समसरिखा सहित जाबा प्रधानतनु पातला कसण काला मांकला नही लिद्ध स्निग्ध चीगटा आ

धारणीउवज्जुविराइयपसत्थलक्खणणिरोदरा तिवलीवलीयतणुणमियमज्झिता उज्जुय स
देय दर्ज निबंध प्रतिभाग दर्शन बले नडा धोस्क विलक्क सुविसा जो रोमराजी जेहनी गंगा वर्तनी परें फरती प्रयाहिली वद हिणा
ग स्जाति जन्म दोष रहित रुचिकर रमणी कमनो हर मणसीजन्नै वर्जनात रंगनी परें त्र णि वलय सहित करीतं गुर मनोहर बइं नाभि

हितनच्चणउंकसिणणिद्ध आदेज्जलडहसुविभत सुजातकतसोभतरुइलरमणिज्जरोमराय गंगावत्तय द १०५

जेहनी वली केहवी छैं नाभि स्त्रीनी रविकिर्णसूर्यनां किरण केरचां तरुण तत्काल सबोधित एहवा विकस्वर तिम बइं जेहनी अनुक्र
ध्रतां प्रदक्षिणावर्त विकस्वर थाता पद्मकमलनी परें इं एहवी गंभीर विकट विकार वांकीनो एम अनुक्रम सत

हिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधितअकोसायंतपउमगंभीरविगडणाभी अणुब्भ

व प्रसस्त लक्षणो पेत पीण पुष्टी कूषबइं जेहनी समिपा सांकडा नीचान धीपासा समा बइं समि तदेह प्रमांण पासांबइं सुजात जन्म दोष र
हित पासां बइं मति मान तयो प्पन्न आयत दीर्घ पीण मांसल बैं न घालम करूवांसानी विना अस्त्रिनइं कनकस्तवर्णनी रूच गरू

डपसत्थपीणकुच्छी सण्णयपासा संगयपासा सम्मितमातत्तयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगरू

चिवंजेहनी निर्मल स्वभाव गतमल स्कजाति जन्म जेहनी कंचनसुवर्णना कलश नी परें सौ शायमां नपीण स्व उरी रश्रमांण समांभी
दोष रहित निर्मल जरादि उपद्रव रहित गात्र जरगुहै रावणी नानाना ही जन्म दोष रहीत जंघ मनोज्ञ चुचुक स्तन शोभा य अमे लन

यगणिम्मलसुजायणिरुवहयगातलट्ठी कंचणकलसप्पमाणसमसहितसुजातलट्ठचुच्चुय

णि आंगुली ने अचुचुक आमेलक आपीड कावार वयोस्तो कविलस्कंत लैंसा तापन तिरति का अधुमुर करीबें एहवें संस्थानें रला
चुचुकापीड का कौजमल जुगलअमलो प्रतिरहीतबइं धारना बैंपयो धरजे स्त्रीना अनुदं बइं अनुक्रमित नुयान ना गोपु छा दनामुत्र

आमेलगजमलजुगलवट्टिय अब्भुण्णयरतियसंठिय पयोहरा भुयंगअणुपुव्वितणुय गोपुच्छवट्टस

नी परें वरवाटला समसहित समप्रमांण सरिवा सहित नमित नमता संध प्रदेश तरें स्थानइं कि आदिय सतनें आनंदकारी सलि
त मनोहर मी वपश्यासहितवहें बैं तबलए जुगार कराना नश्चवे का स जन्म प्रसस्त बाहु स्थान वहिस्त नें जेहना पीवर उपचित कोमल स्कं
ताली प्रमाण पसत वरधांन आंगुली छैं जेहनी स्निग्ध रूपरे बाहुड

मसहियणमिय आएज्जललियबाहा तंबणहामंसलिग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीनं णिद्ध

सूर्य १ वंद २ संख ३ चक्र साथीया ४ सविलक्ख्यन नेकलातीनी रूफ विंजंन नेनी जे स्त्रीना इं पानउप चित उच्च उन्नत तिक स्नावक स्ति
पका आकृ इं एहवी रेखरेवा बइं रूप प्रदेशा बइं जे स्त्रीना प्रसिसूर्ण इत्या दे ह्रां बइं

पाणिलेहा रविससिसंखचक्कसोत्थिय सुविभत्तसुविरतियपाणिलेहा पीणुण्णयकरकक्खवरक

जीवाभिगम
११०

गलागलाना कपोलना प्रदेश छइं चउरंगुल प्रमाण उत्कृष्ट प्रमाण रूप विप्रमाण लेखें करी बापवर प्रधान संखवनी सरखी ग्रीवा कोटि छइं जेहनी
मांसल रूप संस्थाने संस्थित प्रसस्त हनु छइं दाडिमना फुल सरिखा लाल पुष्प प्रकाशनी परें पीवरनी पु

त्तिणिद्धआयपडिपुण्णजंकवोला चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुया दा

ष्टल बनी मांनो पेस्तर बइ उप्पा ते अवंत विराध कवर प्रधान अधर छइं जेहना दंत सवर छइं सुंदर उत्तर होठ छइं जेहना दहीउ
दग्गरजरयांणी नीर उज्जवल छइं जेहना कुंदनपुष्प जेहवो चांदसरिखा संतिका मुक्तना संतिकाते नीपरें आछिद्र छिद्र रहित
विमल मलरहित उज्ज्वल दसन दांत छै

लिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचियवराधरा सुंदरोत्तरोट्ठा दधिदगरयकुंदचंदवासंतिमउलअछिद्द

जेहना रक्त उत्पल राता कमलनी पांखडीनी परें कोमल सुकुमार तालु जीभ छइं कणवीरना फूलनी कली सरिखी अकुटिल सरल
अकुटिल कवि नस्क कूंमाल कर्णरत उज्ज्वल यचुणत अतिउन्नत कुंबुसर लंबु गणं चीनासिका छै जेहनी शरद मासना नव उत्पन्न
कमल निज कह छइं कलयरनी परें अतिर जलो कमल कुवलय पत्रनी श्रेणी लेखा छइं लेहनी विकस कुसुम कता

विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमालतालुजीहा कणवीरमउलअकुडिलअब्भुग्गयउज्जुतुंगणा

पत्र पांखडी तेहना निकर समोह सरसर वेतल लक्षण लांछन ते लइं अंकित नेत्र छइं एतल इं कमलनी पांखडी सरीखा नेत्र छइं
जेहना पत्र जे पक्षन ते चपल जाय माना ते चलायमान कोइ प्रदेश रक्त वसमान छइं अनामिसल्य रेकन मावी आरोप्यु चाप ध

सा सारयनवकमलकुमुदकुवलयदलनिगरसरिसलक्खणअंकियकंतनयणा पत्तलचवलायंत

नुष्यनी परें सुंदर रुचिर किण्ह छइं काली छइं विसहित रूपी संस्थान विशेष रमणी क समी आयत जांबी सुजात जन्म दोष रहित
तनु पातली कसिण काली स्निग्ध चीकटी भमुहवी लेख छइं जेहनी अल्लीन कहीइं प्रमाण कहीइं प्रमाणनही

तंबलोयणाओ आणामियचावरुइलकिण्हब्भराइसंगयसुजायतणुकसिणनिद्ध

प्रमाण प्रमाण युक्त सवणा श्रवणा कहितां कान छइं जेहना रूडा पीनल पवित मठ रमणी क गंड ते कपोल पाली छइं जेहनी
चउरस चो खूणो प्रशस्त लक्षण ते सरिखो अर्धअध्यक्ष किणो ललाट सरखो निलाट छै जेहनो कोमुदी कार्तिकी पूर्णिमानी रयणी
कर चंद्रमानी परें विम

भुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमणिडाला ।

ल निर्मल प्रतिपूर्ण सोभाइं मात्र तेहनी परें सोम वदन छइं जेहनो | छत्रनी परें उंचो उत्तमांग मस्तक छइं जेहनो | कुटिल वांका नही रूसणि न्हवा दीर्घ लांबा सरोज केस छइं जेहना लक्षण रेखा नी

कोमुइरयणिकरविमलपडिपुण्णसोमवयणा छत्तुन्नयउत्तिमंगा कुडिलसुसिणिद्धदीहसिरया छत्त

छत्र ध्वजा जूप कमंडल उत्तलक्षण कलश वा साथी पताका मो जव माछलो कूर्म काचबो रथ मगर शुक स्था अंकु
रामनी विजली पूर्ण वि या ध्वजा कार स्थ प्रवर प्रधान मच्छ कला

ज्झयजूवकमंडलुथूभदामणिकलसवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मरहवरमगरसुकथालअंकु

अष्टापद विचीक कमलिय मयूर श्रीदाम अभिषे तोरण मेरु समुद्र वरप्रधान भुवन पर्वत वरप्रधान आरस ललितगति चा
द लोल क र ॥ क ॥ नी ड न न स धान शे ललतागज

सअट्ठावयवीचीसुपइट्ठकमयूरसिरिदामअभिसेयतोरणमेइणिउदधिवरभवणगिरिवरआयं

हस्ती वृषभ सीह चाम रबत्रीस उत्तम प्रशस्त बत्रीस लक्षणनी कोल हंसना सरखी गतिवई कोकिलानी परइं मधुर मीठी
से र धरनारी स्त्री छइं ते कहे छइं जेहनी गिरा वाणी रूड स्वर जेहनी

सललियगतिनरसीह चामरउत्तमपसत्थबत्तीसलक्खणधरीउ हंससरिसगतियो कोइलमधुर

कंत कमनीइं सर्वलइं प्रसस्त मननी वल्ली पलित केश श्वेत दुर्वर्ण व्याधि दुर्भाग शोक वलि उंचपणइं नरसत्त्व प्रमाण थोडी ऊंचइ स्त्रीया
लोकने समस्तलइं अपगत रहेतई ओ कने पूर्की मुक्त विस्व प्रगट छइ नहि ते ऊंचपणइं छइं

रगिरसुस्सराओ कंताओ सव्वस्स अणुमताओ ववगयवलितपलियवंगदुव्वण्णवाहीदोहग्गसोगमुक्काओ उच्चत्तेण

स्वभावसइं जे शृंगार तेना आकार मनोहर वेष छै जेहना संगति हसनी परइं हसित कथा जलि कास्सरण नक रहे चुमन माथी क्वने
चेष्टा कामनी विलास नेत्र विकार संलाप प्रस्ता संहार तेले तेने निपुण छै युक्त उपचार बीजा बाकना उपचार तेहने विषइं क

य णराथोवूणमूसियाओ सभावसिंगारचारुवेसा संगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससंलावनिउण

लतनेरी माछिपणिपर धुरू सुंदर स्त जघ वदन कर चरण नेत्र लावणि रू योव विलासनेत्र एतलेवानेस नेरनवन
थमाछिनई केस्तनावईकरी रूमा न न मुख हस्त पग ॥ वर्ण प न विकार हित नी

थुलीवथ अंतिगा सुंदरथणजघणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्वणविलास कलिया

वरनारी रमनारी अप्सरानी परइमनो आश्चर्यकारीयोवायो नननइं प्रसन्नका देखवादर्शनीययो अभिरूपजेहनेंतो
हरूपवइंजेहना पवइं रीवइं पवइं तेरूपनथी

णंदणवणविवरचारिणीउव्व अच्छराउ अच्छेरगपिच्छणिज्जा पासाइयाउ दरिसणिज्जाउ अभिरूवाउ

प्रतिरूपजजरूपा तेतावनमनुष्य केतलइंकालइं आहारनो तिवारेंभगवं हेगोतम चोथउक्तएकोलरा आहारनो
प्रतिबिंबदीसइं नीस्त्रीनइं अर्थउपजइं तकहइं अर्थउपजइं

पडीरूवाउ तेसिणं भंते मणुयाणं केवतिकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ गोयमा चउत्थभत्तस्स आहार

हवइं अर्थस्त्रीनइं समुदाइ हलइं बइं तेसगवनरूचककद्वीप प्रथवीनो फलनो आहार एतलेजेकलरदृष्यनाफलफू हे श्रमणआ
नामनुष्यस्के आहार आहारइं गोयमा जनाआहारनाकरनारतेमनुष्यकह्या युष्मान्

ट्ठे समुप्पज्जति तेणं भंते मणुया किमाहारमाहारेंति गो पुढवीपुप्फफलाहारा ते मणुयगणा पण्ण

तेसगवनप्रथवीनो आहारकरतेते प्रथवीनो केहवो आस्वादकहेंतास गोय तेजिमकोइएह गुलनोस्वादजे खांडनोस्वाद
वादकेहवोकहिउं मा शांति हवोहुइं जेहवोहुइं

त्ता समणाउसो तीसेणं भंते पुढवीए केरिसए आसाए पण्णत्ते गोयमा से जहानामए गुलेति वा खंडे

इहरूसाकरनो मछंडीखंडनो सर्करानाकोरानोजे पर्पटमोदक शोषनोस्वा पुष्पोत्तरषाद्यविशे अकोशाद्यविशे
जेहवो जेहवोस्वाद हवोस्वाद षाद्यवि दहुइं षनोजेहवो ष

ति वा सक्करेति वा मच्छंडियाति वा भिसकंदेति वा पप्पडमोयएति वा पुप्फुत्तराइ वा पउमुत्तराइ वा

विजतिनामास्वाद्यविशेष महाविजतिनामास्वाद्य आदिशोपिमस्वाद्यवि उपमस्वाद्यविशेष अनोपमस्वाद्यविशे
विशेष शेषजेहवो एसर्वदेशी साषा षधीजाणवो नगवन

अकोसितति वा विजतिता ति वा महाविजयाइ वा आयंसोवमाति वा उवमाति वा अणोवमाइ वा भवे

एतदरूपस्वादह एअर्थसमर्थ तेपृथ्वी एगुलखांडसाक घणुंइष्टतरकोतनरजावशाहथकीचेवनिश्चेमनोज्ञइष्टतर
इं गौतम नही नो एएथकी मनामतरएहवोमीठोस्वादकह्यो

यारूवे सिया णो इणट्ठे समट्ठे तीसेणं पुढवीए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव मणामतराए चेव आसाएणं

तेसगवनकल्पवृक्षनांफलफलनोकेहवोआसा राजाआदिशोनात्रणिसमुद्रचोथोहिमवंत कल्याणएकोतसुष
देवीतणाकह्योंई स्केतेयथादृष्टांतइं एवाउदिशनोचक्रवर्त्ति

पन्नत्ते तेसिणं भंते पुप्फफलाणं केरिसए आसाए पन्नत्ते से जहानामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्ला

प्रवरप्रधा नासतसहस्रगुणनिपन्न निपन्नइम वारसेंकरीउपेत क फरसेंकरीउपेतरा कबौ आस्वादनी गंधेंकरीउपेत
नभोजन नथासतसेहस्रलक्षइं वर्णेंकरीयुप हं तां सहित तलेआरेगुणकरीयु कतेरसप्रकर्षईक सहितछ इं

णे भोयणजाए सयसहस्सनिप्फन्ने वण्णेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए आसायणिज्जे वि गंधेणं उववेए

रीनइं सहि विशेषंआस्वा नयग्राग्निदीपावइं दर्पणीकउत्तेदें सर्वगात्रनइं प्रल्हादकारीवइं तेफलनोस्वादएता ए ×
त दनीकवेजेणो नविधारइ धातमनमथनइं वधारइ दृशरूपहुइ नेंभवं तकहें

सायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे भवे एयारूवे सिया

होगो एअर्थसमर्थ एफूलफलनो एचक्रवर्तिनाभोजनथकीघणोरूपसहितमोजभिंडोजननो आस्वादकहीछे तेरूचकद्वी
मम नही पनामनुष्यनेतेहवोआहारग्रतइं नआहारइंकइं आहारइं

णो इणट्ठे समट्ठे तेसिणं पुप्फफलाणं एत्तो इट्ठतराए चेव जाव आसाए पन्नत्ते तेणं भंते मणुया तं भा

जीवाभिगम ११२

केहीवमतिकी देघ्यास्त्रावीनइरहइ वृक्षगृहालयरूपगणाश्रयतेमनुष्यनागणस हेश्रमणआयुष्मन्तो तेनावनरूपसंस्थानि
लगवतकहे मोहनइकह्या कह्या

हारं णाहरेस्सा दाहिवसहिंतवंवेति णो सखतेहा जेणाणं ते मणुयाणं पं समणाउसो तेणं ते रु-

तिवारेलगवंतकहइ केतलाएककूटाकारसं केतलाएकजालीयाराघ तनइसंस्थानेछेघ गोपुरनैसंस्थानेवेदिकावेसवा
गोतम स्थानेछइ रनेसंस्थानइछे जानेसंस्थानइ नीचोफाकालमतवारलीनेस
स्थाने

क्खा किंसंठिया पणत्ता गो कूडागारसंठिया पेछाघरसंठिया छत्तागारझय गोपुरवेतियचोप्फा-

अट्टालकप्रासादिउपरिआश्रयविशेषशिखर धनवंतनाघरितइसंस्थानेवाला गवाक्षगोखनेसं वलभीघरनाआछादनतेहने
बंधप्रासादनेसंस्थानिहम्मितलशिखरविना ग्रपोतकतलावनेसं स्थानइ संस्थानइ अनेराघणाते

लग अट्टालकपासदहम्मितलसंठिया वालग्गपोतियसंठिया गवक्खसंठिया वलभीसंठिया अ-

घाप्रकार वरप्रधानसयन आसनबेसवानाविशिष्टप्रधानेसंस्थितछे उसुखकीसीतलताडीछायाछइजेहनी अहोश्रमणोआ
ना तवन भुवानो श्रेष्ठेतेजेरूपाघरनासंस्थानतेलइकरीम एहवातेदुमनासमोहकह्यातगवंते युष्मंतो
हिलइवली हरूघरकेहवाछे

न्नयत्थ बहवे वरभवणसयणविसिट्ठसंठाणसंठिया सुहसीतलछायाणं ते दुमगणा पण्णत्ता स-

एकरूवकदीपतिहांसुंलगवन घरनोविसवासरिखानोमडांमछे वानइंकांमेएहवोवांमकह्योगोतमएअ वृक्षरूपजगालय
एहपलिआयतलोबाजावानोरहे र्थसमर्थजहीएतलेतिहांघरछेनही रहिवानोछेमतमनु

मणाउसो अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे गेहाणि वा गेहायाणाति वा णो तिणट्ठे समट्ठे रुक्खगेहालया

ष्यनासमोहनइंकह्याएह अहोश्रमणोआ एकरूवकदीपतिहांसंत ग्रामछइ कइंलगरछइ कह्यावलगरोष्टधकी
तेवृक्षजेघरकहया युष्मंतो गवन रानीवगरछइ

णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे गामाति वा णगराति वा जाव सण्णिवेसा ११२

लगवंतकह एअर्थसमर्थ यथाइच्छाइंमनवांछाइंजाइवेसैरहैएहवातेमनुष्य हेश्रमणोआयुष्मं एकरूवकदीपतिहांसुंछइ
इगोतम नही कनासमोहकह्या नो लगवन

तिवा णो तिणट्ठे समट्ठे जहिच्छियकामगामिणो णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगोरु-

असकलेखडग मसीनीलेषकूनीआ कृषिकर्मनाकर वणिकक्रयवि व्यापारनीकला गोयमाएअर्थस अपगतिरहीतखेसेवकनी
प जीविकाछे नारछे क्रयआजीविका नाकरनारछे मर्थनही आजीविकाछेतीनीवा

यदीवे असीति वा मसीति वा किसीति वा पणीति वा वाणिज्जति वा णो तिणट्ठे समट्ठे ववगति असिकिसि

णीनइइत्यादिक विनातेमनुष्यनासमो अहोश्रमणोआ छइलगवनएकरूवकदी घटितअघटितरू कइंसोवनछइ
आजीविका हकह्या युष्मान पनइंविषइ पछइ

विवणिज्जाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे हिरण्णेति वा सुवण्णेति-

कांसाताज दूष्यवस्त्रजा मणिसर्प्पा मोतीनरमादादि धनमुज्जा धनधान्य रत्नमो संखसिलाप्र सकलप्रवा मंतवि मरसप्रधं
नइकह्य तिवै दिकनी विस्तीर्ण दिक जादि ती वालादि जादिक द्यमान नएसर्व

वा कंसेति वा दूसेति वा मणीति वा मुत्तिएति वा विपुलधणकणगमणिमोत्तिय संखसिलप्पवालसंतसा-

गणमध्यधरिमं मेजपारिछेद्यव दव्वजायेनघोर णजासउनर

स्वापितइंकइंहता हंतेपुणिनपुर्नतहिवलीतेमनुष्यनइंतेपरिग्रहरितिव्रममत्वनाव छइंलगवनएकरूवकदीप
वतइकहीवे तेषजतानहीविरूहमनवलीतघावेन्नस्वतावरूइ

रसावएज्जति वा हंता अत्थि णो चेव णं तेसिं मणुयाणं तिव्वे ममत्तिभावे समुप्पज्जति अत्थि णं भंते एग-

राजमंडलकादिजुवराजाजघुराजा इश्वर्य तलवरतजा नगरामअवतीगाम कुटंबनोसामीको इत्महस्तीप्रमाणद्रव्य
वतीराहिइश्वर्यज्ञानी क री तेमाडंबक टुंबिक तेइभ्य

रुयदीवे रायाति वा जुवरायाति वा ईसरेति वा तलवरेति वा माडंबियाति वा कोडुंबियाति वा इब्भेति वा

अथीराजा सेनापतिसेनानो सार्थवाह्नावेंतेसार्थ दीक्षंपसायत्तुंरा गोयमा एअर्थसमर्थनही अपगतरिद्धसत्कारचित्तवश्यर्थ
रत्नाधिकार अधिपति वाह जोइ

सेट्ठीतिवा सेणावईतीवा सत्थवाहेतिवा तलवरेइवा णो तिणट्ठेसमट्ठे ववगयइड्डिसक्कार

रहिततेमनुष्यनासमो हेश्रमणआयुष्म कहइंजावनएकरूचकद्वीप दासबेचाया बेष्यमोकल तेशेष्यशिष्यउपाध्या
एकहा मंतो तीक्ष वायोग यमासेवक

हियंतेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अत्थिणंभंतेएगरूयदीवे दासातिवा पेसातिवा सिस्सातिवा

रतिकर्का साइत्तकरूषि भतिवा कर्मकरणलो भोगपुरुषविरनरा एअर्थसमर्थन अपगतरहितआभिमुखकर्मना
मकरा कर्मचत्त सोनार एकारादि हिलागी गोयमा ही आदनासेआदिमनुष्यना सर्ग

भयगातिवा भयइल्लातिवा कम्मकरातिवा भोगपुरिसातिवा णो तिणट्ठेसमट्ठे ववगयआभिओ

एकहा अहोश्रमणोआयु बइंतगवनएकरूचकद्वीप मातजननी पिताजनक भ्राताभाइ बहनीस
ष्मंतो दर होदरी

गियाणं तेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अत्थिणंभंतेएगरूयदीवे मातातिवा पितातिवा भाया

भार्यातिरली वंशसुत धूयाकन्या स्नुषापुत्रावहु हंतागोयमहोइ चेवनिश्चइमनुष्यनइतेस्वजनसाथ
एकहइ

तिवा भइणीतिवा भज्जातिवा पुत्तातिवा धूयातिवा सुण्हातिवा हंताअत्थि णोचेवणंतेसिंणं मणु

इंतिवसेमबंधनउपजइंनही अल्पतिवरतेमनुष्यनिप्रेमबंधनतेमनुष्यनें हेश्रमणआयुष्मंतो बइंसगवनएकरूच
तेस्यामाटइंभगवत वोकोउपजइं प्रेमस्वसावइंकरी कद्वीपें

याणं तिव्वेपेमबंधणेसमुप्पज्जति पयणुपेज्जबंधणातेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अत्थिणं

निबद्धप्रेमउपमि स्त्रीनालाहाल वञ्चनोपंथो सो मङ्गवाहनामंगु लवलोएमुवह

MEMORIAL

अरिकहेतां शत्रुहोइ वैरजातिनीबुद्धि घातकजेअनेरो वधकवधनारनो प्रत्यनीकविरुद्ध प्रत्यामित्रमित्रथइनेशत्रुथाइ
होइ घातकरै वेहली द्वेषी जगवंतकहै

भंतेएगरूयदीवे अरीतिवा वेरितिवा घातिगातिवा वहगातिवा पडिणीतिवा पच्चामित्तातिवा णोति

एअर्थसमर्थ अपगतरहितवैरानुबंधनविनातेमनुष्यनागण हेश्रमणआयु बइंसगवनएकरूचकद्वीप आवाहसोबूजआ
नही कहा ष्मंतो पवाहमोहीइंते

णट्ठेसमट्ठे ववगयवेराणुबंधणं तेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अत्थिणंभंतेएगरूयदीवेआवा

आवातिहांकन्यायेविवाहपहिंजो वीवाहजोकरवो जइहसर्वजनी थालीपाकप्रतीनन शिरोमुंडेचूलीपनय सीमंतोनय
तांबूलआपीइं पजइदेवपूजा कीया नीकीया नकलीयइं नगर्जनी

हातिवा वीवाहातिवा विवाहतिवा जण्णतिवा सड्ढातिवा थालीपागातिवा चुड्डोवणतणीतिवा सीमंतो

धावना पतयपडिमुइंबकडइंस्नसोनरनीजी गौतमएअर्थसम अपगतरहि तांबूलआ विवा यज्ञ थालीपा मस्तमुंडननीक्री
नोभिविभिस्त्रीपहरीपनइं र्थनही त दापन ह क या

वणतणतिवा पतिपिंडणिवेदणातिवा णोतिणट्ठेसमट्ठे ववगतेआवाहविवाहजण्णथालपागचूलोव

गर्भधावनानी सर्वजपिंडनिवेदरहितसेमनुष्यनागणसमोहकहा हेश्रमणआयुष्मं बइंसगवनएकरूचकद्वीप
कीया तो

णतणीसीमंतोवणतणतिवापिंतिपिंडणिवेदणाणं तेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अत्थिणंभंतेएगरू

इंद्रमहोत्सवनियतेइंद्र इंद्रमहोत्सव खंदस्वामिकार्तिके मुकुंदबलदेवनो नरकअंतरनोमोच्छव नागमहतरनोमा
स्वनावीतउत्सव थइ यउत्सव मोत्सव त्सव

यदीवेदीवे इंदमहातिवा रुद्दमहातिवा खंदमहातिवा मुगुंदमहातिवा णागमहाजक्खमहातिवा

रूपयानोमोत्सव तलावनोमोत्स नदीनोमो द्रहनोमोत्सवरूख रूखनोमहोत्सव सगडनक गोयमाएअ वपगतमहा
व त्सव नोमोत्सव रूइ है र्थसमर्थनिहो महोत्सव

जीवाभिगम सूलमहा ति वा रुक्खमहा ति वा तलावमहा दिद्रहमहा ... उम्महा ति वा णो तिणट्ठे समट्ठे ववगतम
११४

नेणोकरीरहितते मनुष्यना अहोश्रमणोआ वइसावनरूचकद्वीपे नाटिकनोमाचवोलषा नाटिकमानचा जोतराज कथा
समोहकहा उबमंतो ववो कथक

हामहिमा णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगरूयदीवे दीवे णडपेच्छा ति वा जल्लपे
माजमल्लोमालयुद्ध सिहमुष्टिनारमना प्रवचकबाकरकंटपिते विडंबकवेषकारी कथानुंकथ गोतमएअर्थसमर्थ
कारकजेवीश्र रसवुष्टि डेरुक भाणीया नर्थविडंबनाकरे वुंतेहलु नही

च्छा ति वा मुट्ठियपेच्छा ति वा पलिपच्छा ति वा विडंबणपेच्छा ति वा कहगपेच्छा ति वा णो तिणट्ठे सम
अपगतर कौतुकविनो मनुष्यनागणनास हेश्रमणआयु वइसावनएकरूचकद्वीपइ सकटपनी रथसंथ
हित दरहित मोहकहा षवेंतो नि मक

ट्ठे ववगतकोउहल्ला णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगरूयदीवे सगडा ति वा र
थांनवाहनवि जुगगोल्लवि थिल्लीहस्तीस मापवहण संदमाणपुरूषप्रमा गोयमा एअर्थसमर्थ पगेकरीपालावा
ग्रीव ग्रीषः वरलीअस प्रतीत वापालखी नही लनार

हा ति वा जाणा ति वा जुग्गा ति वा थिल्ली ति वा पवहणा ति वा संदमाणिया ति वा णो तिणट्ठे समट्ठे पादवि
तेमनुष्यनासमोहक हेश्रमणआयुषवंतो वैसावन एकरूचकद्वीप अश्वघोडाबइ हस्तीप्रति उष्ट्रीजंव
हा त जीव

हारचारिणो ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थि णं भंते एगरूयदीवे दीवे आसा ति वा हत्थी ति वा ११४
बच्चप्रसिद्धहस्तप्रमाण

गोणगाव महीषसइंसा खरखसर अजाबाली एलकागाडरएह्नइं हागौतमकइं पणितेमनुष्यनैं परीभो

उट्टा ति वा गोणा ति वा महिसा ति वा खरा ति वा अजा ति वा एलगा ति वा हंता अत्थि नो चेव णं मणूयाणं
गनापणिसीघ्नावइंवेन वइसावनएकरूचकद्वीप णवपयःप्रदा महिषस्तोमि अजाबाली एलगाकरी
स्वसावइं

परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति अत्थि णं भंते एगरूयदीवे दीवे गावाइ वा महीसी ति वा अजा ति वा
हागोतम पणितेमनुष्यनें परिभोगपणेते गवादिक आवइं नही तोगसगी वइसावनएकरूचकद्वीपनैंविषइं सीह
होइ इ

एलगा ति वा हंता अत्थि नो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति अत्थि णं भंते एगरूयदीवे
माघसाईज दिपीचित्रा अछगारीछवि परिसरगेंडावि श्रृंगालजांगोमायुः विडालमसकबिलाड स्वांनस्वे
ग्रीष ग्रीष यां

दीवे सीहा ति वा वग्घा ति वा दीवगा ति वा अच्छा ति वा परस्सरा ति वा सिंगाला ति वा बिडाला ति वा
लोकंतलेकरी ससावनवासी चित्रचिल्लनामअरण्यप हागोतमहोइ पणितेमनुष्यसुमोहो तेमनुष्यनइं
स्वविशेष ए मोहइं

सुणगा ति वा कोकंति वा ससगा ति वा चित्तचिल्लगा ति वा णो हंता अत्थि नो चेव णं अन्नमन्नस्स तेसिं
कांइअबाधा विशेषबाधा छविछेदकरी नसकइं तेषेत्रस्वभावेंसर्वस्वापदजीवप्रकृतिंनइकक
हा

वा मणुयाणं किंचि आबाहं वा पबाहं वा छविछेदं वा नो करेंति वा पगतिभद्दगा णं ते सावयगणा

अहो श्रमण आयुषमंता | भइं स्वगवन एकरुचकदीप | साली षसिद्ध | व्रीहीजातिसही | गोधूमगोधूम | इक्षुसेलडी | तिल जवइ

एसमट्ठे [illegible] गोयमा अत्थि णं तेसि एगोरुयदीवे दीवे साली तिवा वीहीतिवा गोधूमातिवा जवतिवा ति

सुष कोई भगवंत कहें छे | तेमनुष्यनइं परिभोगपणइं आवइं नहीं | भइं स्वगवन एकरुचक

लातिवा इक्खूतिवा [illegible] अत्थि णो चेव णं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति अत्थि णं भंते एगो

दीपनइं वि गर्त्तामोटी बा | दरीमुषकादि | पंककादव | घसी रूषाली नो | वालो गांमउ | नविशेषविष | चलीइं तेवाभवीजलवी बु

रुयदीवे दीवे गड्डाइ वा दरीइ वा पंकाइ वा [illegible] वा [illegible] विसमेइ वा विज्जलेइ वा धू

धूलिवेल | मोहरेणुकी | पंचवर्णतृण | वलणीचरणी | एअर्थ समर्थ नही | एकरुचकदीप घणुं समो रमणीक छइ | तागक

लीइ वा रेणूतिवा पंकेतिवा चलणीतिवा णो इणट्ठे समट्ठे एगोरुयदीवे दीवे बहुसमरमणिज्जे भू

हिवइ | हे श्रमण आयुषवंत | भइं स्वगवन एकरुचकदीप | खुटादिक | कंटादिक | हीरजघुकुक्षितृणकाकरा तृण नो कचरो

मिभागे पण्णत्ते समणाउसो अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे खाणूतिवा कंटातिवा हीरतिवा सक्करातिवा

अशुचिगंधसरीरमध्यतिका स्वता वपरिलादि चलित रसनिवा | अचोक्ष असादि | गोत्तम | एअर्थसमर्थ | अपगत

तणकयवरातिवा असुतितिवा पूतियातिवा दुब्भिगंधातिवा अचोक्खातिवा णो तिणट्ठे समट्ठे ववगत

कंट हीर सर्कर तृण कचरा अशुचि अपवित्र दुर्गंध अचोक्षादि रहित ते दीपक होइ | हे श्रमण आयुषमंता | भइं स्वगवन

खाणु कंटहीरसक्करतणकयवर असुतिपूतियदुब्भिगंध मचोक्खपरिवज्जिए णं एगोरुयदीवे समणाउसो अत्थि णं

एकरुचक दीप | डांसा | मसा | कचवल | तत्र पिशु कोच चटादय | जूका जीव षद सिद्ध | ढंकुण जीव विशेष | गौतम | एअर्थ समर्थ नहीं

तेएगोरुयदीवे दीवे दंसातिवा मसगातिवा पिसुयातिवा जूयातिवा लिक्खातिवा ढंकुणातिवा णो लोति

अपगत रहित | डांस मसा | चेंचपट | जूलीष | ढंकुण एतले जीवे रहित | एकरुचकदीप कहीउ | अहो श्रमण आयुषमंतो

णट्ठे समट्ठे ववगयदंसमसगपिसुयजूयलिक्खढंकुणपरिवज्जिए णं एगोरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो

भइं स्वगवन एकरुचकदीप | सर्प षसीद्ध | अजगर | महोरग कोइं | हे गौतम कोइं | पणि | तेमनुष्यनइं | अन्योन्य

अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे दीवे अहीइ वा अयगरातिवा महोरगातिवा हंता अत्थि णो चेव णं ते अन्नमन्नं

कांइं अबाधा | विशेष बाधा | छविछेदन करइं | सामाटें प्रकृति स्वभावइं | ते भाला दिक्षोला कहा | अहो श्रमण आयुषमंता

स्स तेसिं मणुयाणं किंचि आबाहं वा पबाहं वा छविच्छेयं वा पकरेंति पगइभद्दगा णं ते वालगणा पण्णत्ता

भइं स्वगवन एकरुचकदीपइं | प्रकृष्ट अनर्थ हेतिउपजइं | इसग्रहमसलस्वरूपतः | ग्रहयुद्ध एककाल एक अनेक ग्रह मांनजाय अपसंघा कादिपात | दककनाम ग्रहयुग्म

समणाउसो अत्थि णं भंते एगोरुयदीवे दीवे गहदंडातिवा गहमुसलातिवा गहगज्जियातिवा गहजुद्धातिवा गहसंघाडा

जीवाभिगम
११६

ग्रहपसव्यानी ग्रहचारविशेष अन्नसामान्य कारि अल्परूपसंध्याकालका जननीलअल्पबर्द्धकार संध्यानापी जारान गंधर्वनगरासुरआसादिसोनीतनसपरिणतवृक्षजरामिकृपराजरिच

सं घाडुंगातिवा गहअवसव्वातिवा अब्भातिवा अब्भरुक्खातिवा संझातिवा गंधव्वणगरा

वीजली उल्कापात अग्निसूर्खितनअग्निपत नरूप दिग्दाह कोइदिसें इकजलतअल्पल रूप निर्घात वीजजीनो पडवूत धूलिवृष्टि गर्जना

तिवा गज्जितातिवा विज्जुतिवा उक्कापातातिवा दिसिदाहातिवा णिग्घातातिवा पंसुवुट्ठीतिवा जू

राओसार हसोसितनन परिणत धमताधूअरि महिकणी जलरज रजउग्घाता रजस्व चंदोपरागहण एकनी परस्पर जोगवा सूर्यग्रहण चंद्रसूरिवेसखंड कुंडेवाय गुफलराग्निरूप

वातिवा उक्कालिसातिवा धूमितातिवा महितातिवा रयुग्घातातिवा चंदोवरागातिवा सूरोवरागातिवा

कुंडवलयाकारें इमसूर्यकुंडइवा यकुंडल उसातसूचक बीजोचं इमादीसें पश्चिसूरातिचाष प्रसिद्ध इंद्रधनुषमस्त समूष इंद्रधनुषखंडउदकम सकहीई अमोघासू

चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवेसातिवा पडिचंदातिवा पडिसूरातिवा इंदधणूतिवा उदगमच्छातिवा अ

र्यसलेकिवारें कपिहसीतजक केउधिनिया स्मानप्रकाश रूप तीमरा पूर्वनो वायु पश्चिमनो वायु पश्चिमनोवा य जोलगेंशुधवातघणाक रइसोमरेषा ग्रामनादाघ णगरना दाघ

मोहातिवा कविहसियातिवा पाइणवायाइवा पडिणवायाइवा जावसुधवातातिवा गामदाहातिवा

जांलगें बारलो जांलगें सनिवेशदाघ धनक्षय प्राणक्षया जनक्षया कुलक्षया वसनस्तत मनार्यस्व

णगरदाहातिवा जावसण्णवेसदाहातिवा धणक्खया पाणक्खय जणक्खय कुलक्खय वसण ११६

रूपग्रकोनिषेधकरवा एअर्थस्वरूपनोतिहांनिषेधछे वइलागवन एकरुचकनांमाही पई नानादेशपथीउपनाविग्रह डंबरपो डमरपरराजकृत उपद्रव कलहयुध

भूतमणारिये तिवा णोतिणट्ठे समट्ठे अब्भिलंसेंते णंजंबूदीवेदीवे डिंबाइवा डमरातिवा कलहाति

बोलघणा लोक नोकोलाहल खारपरउपरें मत्सर वैरनोविध महावैरनुवहेंवु विरुद्धराजापरस्परेंवेर सावकाई एअर्थसमर्थनही अपगत डंब डमर रहित

वा बोलातिवा खारातिवा वेरातिवा महावेरातिवा विरुद्धरज्जातिवा णोतिणट्ठे समट्ठे ववगतडिंबडु

कलह बोल खार विरुद्ध जे तेणेंविवर्जितमनुष्य नागणसमोहकहा श्रीवीर सावानई हेश्रमणआयुषमंतो वइलाग वनएकरुचक द्वीप

मर कलहबोलखारविरुद्धरज्जविवज्जियाणं ते मणुयगणपण्णत्ता समणाउसो अब्भिलंतेणं

महायकहअनेकवाग्युध्धसात माहामोटासंग्राम माहामोटासाधनोंपाडवा मोटापुरुसनांपाडवां मोटाराजानांपाडवां

जंबुद्दीवेदीवे महाजुद्धातिवा महासंगामातिवा महासत्थपडणातिवा महापुरिसपडणातिवा मा

मोटाव्यूनो पाडवो पाडवांवायुयोगें उत्पातिमबिशिव कुलरोगादि कुलनाकुटंबरोग गांमनारोग तवा नगरनारोग

हारायपडणातिवा महीरुहपडणातिवा उप्पातियातिवा कुलरोगातिवा गामरोगातिवा णगररोगाति २

मंडलनारोग मस्तकनीवेदनावात पीतोस्व आंषिनीवेदनावातथी तोस्व कांननीवेदना नाकनीवेदना दांतनी

वा मंडलरोगातिवा सीसवेदणातिवा अच्छिवेदणातिवा कण्णवेदणातिवा णक्करीवेदणातिवा दंतवे

वेदना उदससासादि सोषक्षयनीउ ज्वलनाविका दाघज्वर कच्छुखसनो खसइादिमंडउला कुष्टपित्ता स्वेतकष्ट
त्पति उज्वरादि रोग दि
दणातिवाकसासातिवासोसातिवा जरातिवा दाहातिवा कच्छूतिवा खसरोगातिवा कुंठातिवा दणोव
विशेष अरिसादस्सादि अपक्कअजीर सगंदरयवररा वृहइंद्रग्रह संकंदग्रहविशेष कुमारग्रहविशेष
रोग ण दि विशेष
रातिवा अरिसातिवा अजीरणातिवा संगंदलाइवा इंदग्रहातिवा खंदग्रहातिवा कुमारग्रहातिवा
नागग्रहविशेष जखकग्रहविशेष भूतग्रहविशेष उदेगग्रहविशेष धणुषग्रहवि एकांतरोताव बेयां
शेष
वाणागग्रहातिवा जखग्रहातिवा भूतग्रहातिवा उवेदग्रहातिवा धणुग्रहातिवा एणाहिताइवा बिया
तरोताव त्रीइयोताव चोथीउताव हीयानांसूल पासानांशूल कूषनाशूलनारोग योनिनाशूल
नारोग
हिताइवा तीयाहताइवा चाउबणातिवा हिययसूलेतिवा पाससूलातिक्कुच्छिसूलातिवा जोणिसूला
गांममरकी ज्यांलगेंरानीवेरानीमर प्रांणषयज्यांलगइंमनआपदाएतलांवांनां एअर्थसमर्थनही
की अंगविनाआवेंनही
तिवा गांममारीवाजावसनिवेसमारीवा पांणखकयजाववसणसूतिमांणरियातिवाणोतिणट्ठेसम
वापगतरोगरहीतते रूई तेमनुष्यनासमुहक अहोश्रमणो आयुषमंतो कहइंभगवनएकस्वकद्वी अतिवर्षाघणो
सा पइं वर्षाहोइं
ट्ठे ववगतरोगायंकाणंतेमणुयगणापण्णत्ता समणाउसो अच्छिणंभंतेएगरूयदीवेदीवे अतिवासाति

रूमीवृष्टिहोइं भलीसुविस्तररूप कइंमंदवृष्टी उदकना कंश्रवादघणापांणीना पांणीनासमोह पांणी
प्रवाह चालइं नदीमांपुर
वा मंदवासतिवा सुविट्ठितिवा मंदविट्ठीतिवा उदेकवाहातिवा पवाहातिवा दगुजेयाइवा दग
नीघणीरखो गांमनेंतांणेंप ज्यांलगइंरानीवेरानाहोएं पांणनाक्षयना ज्यांलगेंवसनआपदासूतगनार्थमा
कनेंपी रा रवापांणी करनार माबाबोलकइं
पीलाइवा गांमवाहातिवाजावसंनिवेसवाहाति पांणखकयजावसणभूतमणोरियातिवाणो
एअर्थसमर्थः वापगतर उदकनाउपद्रम नासमोहक अहोश्रमणोआ कहइंभगवंतएकरूचकद्वीप लोहा
नही हित रहितमनुष्य सा युषमंतो
तिणट्ठेसमट्ठे ववगति दगोवद्दवाणंतेमणुआपन्नता समणाउसो अत्थिणंभंतेएगरूयदीवेदीवे अ
नाआगर त्रांबानोआगर सीसानोआगर सोनानोआगर रत्नगारआगर वजहीरानाआग
र
यागारातिवा तंबागारातिवा सीसागारातिवा सुवण्णागारातिवा रयणागारातिवा वयरागाराति
सुवर्णनीवृष्टी रतननीवृष्टी हीरानी आम
वृष्टी ॥ ॥ र्ण
वा वसुहाराविवा हिरण्णवासातिवा सुवण्णवासातिवा रतनवासातिवा वइरवासातिवा आभ
नीवृष्टि पत्रनीवृष्टी फूलफलनी बीजनी मलपगंध चुर्णअबीरा केसरादिनीवृष्टीष विशेषअन्न रू
वृष्टी वृष्टी नीवृष्टी दिचुर्ण रकोवस्त्र नावरषा पा
रणवासातिवा पत्तपुप्फफलबीयमल्लगंधवण्णचुण्णवासातिवा खीरवुट्ठीतिवा रयणवुट्ठिवाहिर

नावरयण सुवर्णनावर्णा तिमजपावलीपरेसुवर्ण अननीघणीनीपलि तथाअननमिलइं फबेतरूमिलेते उबेतीरूमिलें
नावर्णा तेरूगात तेडकाल रूसिरू तेडदिरू
सवुद्धीतिवा सुवन्नतेइवा अवुलवुद्धीतिवा कासुजातिवा सुत्तिरकाइवा दुप्रिरकाईवा अप्पग्घाइ
सर्ववस्तरूं सर्ववस्तमुं कंतानिवातेमागेमर्व सर्ववस्तवेचायें निधानविनाजे संतापराजी निधानना मोटानिधानघणा
हगी हगी वस्तुलीजीइंतेरूयक तेविरूयकरी कनेसइपलो दिकना नाह घणाकालनानिभं
वा महग्घातिवा कंतातिवा विकंतातिवा अणहीतिवा कंतावातिवा निधावाणिहाणाइया चिरपो
रूयगया तेहनास्वा रूयगयावइंजेहनास्व रूयगयावइंजेह जेहहवा सनिचेससरुआह्थांम वाफिवेवताआगर
लइं मी जनादि नागोत्रादिक सुवर्णदनगरखेडपर्वतनदीमध्ये
राणवा पहीणसामिया पहीणसेउयातिवा पहीणगोत्तागाराइंजाइंइमाइंगामागरणगरखेड
कर्वरस्रूसीतन डोणमुखज पाटणरत्न आश्रम संबाधपर्व सिंघाड त्रेवटि चाचरइं चडमुखचा महापथरा नगरने
गर मंडव ज्वीप त्रम म नउवरिगेम ग त्रकत्रम चोक वर्त्त जमारग षालेगं
कब्बडमंडव दोणमुहपट्टणआसमसंबाहसन्निवेसेसु सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसु णगर
मवेपा समसान पर्वतनीग पाषाणकोरानें तवनदहनें गामें घासंधकांनिधानरहेंबें एतलांवानां होइंसगवेतकहइं
जे काइं गौतम
णिद्धमणेसु सुसाणगिरिकंदरे संतिसेलोवट्ठाणभवणगिहेसु सन्निक्खित्ताइं चिट्ठंति णो तिण
एअर्थसम एकरूचकदीपेंसगवन मनुष्यनी केतलाकालनीथितिकही आउषानी गोय जघन्यपलोपमनोअसंषा
र्षनही मा तमो
ट्ठे समट्ठे एगोरूयदीवे णं भंते दीवे मणुयाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता गो जहन्नेणं पलिओवम

DR. BHAU DAJI

भागएतलोथितिहो असंष्यातेभागउणीथिति उतकृष्टीतोपल्योपमनइंअसंख्यातमाभा तेसगवनमनुष्यमरणसमेंमरण
इं रूइं गथितिहइं करीनइं
स्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जइभागेणं ऊणगं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं ते णं भंते मणु
किहांजाइं किहांउपजइं गोयमा तेमनुष्यनिछमासआउखुंथाकतें मिथुनयुगमप्रसविसंतानइं
या कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति गो ते मणुया छम्मासावसेसाउया मिहुण
उगणएंसीरात्र आपतिनइंयत्निकरीराषेघलेप्रेमें करीराषीन गोपवेंपालीन तेबालकरा उश्वासलेइं वगाईंवा
वेरइं इं वीनइं नइं ईनइं
याइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खंति संगोवेंति सारक्खित्ता उस्सासित्ता कासि
छीकीन उतकृष्टेसास हेरूकीजे अणपरितापव्यारो रूबेसमाधइं मरणकरीकालक अनेरेदेवलोकेदेवतापणइंहीन
इं लेईनइं ईनइं णादिकविना मरणसमें विनइं आवेषानादेवतापणेउपजइं
त्ता छीइत्ता अक्किट्ठा अव्वहिता अपरियाविया सुहंसुहेणं कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु दे
तेमनुष्यनइदेवलोकनीगतिमहीतेतेकालिंमनुष्यसगवंतेकहीद एतलइं हेश्रमणआयुष्य किहांसगवनएकरूकक
तेमनुष्यदेवतादीलीवीजीगतिनउपजइं मंतोसोसलो त्यांनेसर
वलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति देवलोयपरिग्गहिया णं ते मणुयगणा समणाउसो कहि णं भं
आभासिकनामाबीजोद्वीपकिहांछइंतोहितेसाषिएवेंछइंकिहांसगवनआ जंबुद्वीपतिमजपावलीपरइंलघुहिमवं
तासिकनामाद्वीपकह्यो सगवंसकहें हेगौतम तवर्षधर
ते दाहिणिल्लाणं आभासियमणुयाणं आभासियदीवे णामं दीवे पण्णत्ते जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंत

जीवाभिगम
११५

पर्वत थकी दष्यण पूर्वनी पासा आग्निकूणि नइं बेहूं रइं लवणसमुद्रमां त्रिणि सइं जोयण अवगाहीनइं जइ
इ इंम थाकतो सर्व
चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वतस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ लवणसमुद्दं तिन्नि जोयण
एकरूचक दीपनी परइं आभासिक नाम लेईं सर्व कहेवो आभासीवो इंम जाणवो ॥ ७ किहां भगवन दषिण दिशानां नांगूलिक द्वीपना मनुष्यनो प्र
श्नकीधो
सेसं जहा एगूरुयाणं णिरवसेसं भाणियव्वो ॥ ७ कहि णं भंते दाहिणिल्लाणं णंगूलियमणुस्सा
जंबुद्वीपने विषइं यावत मेरुपर्वत थकी दष्य नंगुलिक द्वीप छइं इम सर्व एकरूचक द्वीपनी परइं निरविशेषपणइं सर्व क
लें हेंवो
णं पुच्छा जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वतस्स दाहिणेणं सेसं एगूरुयाणं णवरं णिरवसेसं भाणियव्वं
॥ ७ किहां भगवन दषिणनी दिसें वैसानिक मनुष्य वैसानिक द्वीप गोयमा जंबुद्वीप मेरुपर्वत दषिण दिस लघुहिमवं
न कहेवो थकी इ त
॥ ७ कहि णं भंते दाहिणिल्लाणं वेसाणियमणुस्साणं पुच्छा गो० जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे
वर्षधर पर्वत पर्वत थकी दषिण पश्चिमनी दिसें नैरूत कूणि नइं बेहूं रइं लवणसमुद्रमां हें त्रणि सइं योजन अवगा
हीनिं तिहां वैशानीक द्वीप कहिउं
णं चुल्लहिमवं तस्स वासहरपव्वतस्स दाहिणपच्छिमिल्लाओ चरमंताओ लवणसमुद्दं तिन्नि
थाकतो एकरूचकनी परिं जाणवो ॥ ७ किहां भगवन दषिणनी पासाइं हय कर्णनाम इं दीपक हेवो तावंत कहइं
जोयणाइं सेसं जहा एगूरुयाणं ॥ ७ कहि णं भंते दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकण्णनामं दी ११५

गोयमा एकरूचक द्वी उत्तर पूर्व ईशान कूणि नइं बेहूं रइं लवणसमुद्रमां च्यारसैं योजन तिहां अवगाहीनइं जइइं ति
पना वारइं
वे पन्नत्ते गो० एगूरुयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं ओगा
दषिणपासाइं हयकरण नामा मनुष्यनो द्वीप कहीयइं तिहां थकी च्यारसइं योजनइं पणइं जोब
हित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकण्णदीवे णामं दीवे पन्नत्ते चत्तारि जोयणसया
पिहूलपणइं छइं बारसइं पांसठियोजन कांइंक विशेष ऊणा परिधि कही ते एक पद्मवरवेदिकाइं परिक्षिप्त वींटि
तछइं
इं आयामविक्खंभेणं बारस जोयणसया पन्नट्ठा किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं से णं एगाए पउमव
थाकतो एकरूचकनी परइं सर्व ॥ ७ किहां भगवन दषिणनी पासा गजकर्णनामा द्वीप कहीउं गोयमा
जाणवी
रवेतियाए अवसेसं जहा एगूरुयाणं ॥ ७ कहि णं भंते दाहिणिल्लाणं गयकण्णमणुस्साणं पुच्छा गो
आभासिक द्वीप थकी दष्यण पूर्वनी पासाइं बेहूं रइं लवणसमुद्रमांहें जंबूद्वीपनी जगती थकी च्यारसें योजन लघुहिमवंतनी
दाढा उपरि गजकरणमा द्वीप कहीउं थाकतो
आभासियदीवस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं सेसं जहा
ओ हयकरणनी परें इम गोकर्णमनुष्यनो प्रश्न की वेसानी द्वीप थ दषिण पश्चिम नैरत्ति कूणि नइं बेहूं रइं लवणसमुद्रमां
जाणवो प्रश्न जाणवो की
हयकन्नाणं ॥ ७ एवं गोकण्णमणुस्साणं पुच्छा वेसाणियदीवस्स दाहिणपच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ

आरसें योजन अवगाही इं जइइं थाकतो सर्व हयकर्णनीपरइं ब आवमो द्वीप संकुली कर्णनो पश्चकी गोय नं गुली
जाणवो ध्वं मा
लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं सेसं जहा हयकन्नाणं ब आवमुएवं संकुलिकन्नाणं उत्तरो गोः लंगु
द्वीपथकी उत्तर पश्चिमनइं बेह लवणसमुद्रमाहइं आरसइं योजन अवगा थाकतो जिम हयकरणनीपरइं
रुइं हीनइं संकुलिकर्णकहेवो
लयदीवस्स उत्तरपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ लवणसमुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं सेसं जहा हयकन्नाणं
ब इंम आदर्शमुख द्वीपनी हयकरणद्वीप उत्तरपूर्वनी पासानइं बेहरुइं पांचसें योजन लवणसमुद्रमां अव
प्रमुख कीधो थकी गाहीनइं
उ आयंसमुहाणं पुच्छा हयकण्णदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाउ चरमंताउ पंचजोयणसयाइं उग्गाहित्ता
तिहांदक्षिणनी पासा नो आदर्शमुख नामम नुष्य रहें वानो आदर्शमुख मां माहीं द्वीपकहीवो त्रीजें चतुष्कें पांचसें जोय
न जो बपलीप हिज पलइं
अट्ठिणं दाहिणल्लाणं आयंसमुहमणुस्साणं आयासिमो हदीवे णामं दीवे पण्णत्ते पंचजोयणसयाइं
कहो इंमवधतिरे अश्वमुख नइं ब्रसइं योजन स्वकरणनइं सातसइं योजन इंमब्रह्मो काल योजन लंब पलइं पिहुलप
जो बपलें पिहुलपणइं ब्रइं इंम पांचमा अश्व लो बपलइं पिहुलपलें मुषन वसइं लइं उ
आयाम विक्खंभेणं आसमुहाइं णं अस्सिकन्नाइं णं सन्नुकामुहाइं णं अन्नाघणदंताइं णं तिवाजो
घनदंतनइं नवसइं योजन लांबपलेपहो जपलें होइं हवइं गुणपंचासयोजन एथमचतुष्कनुं परिक्षेप कुइं एकरुचक द्वीप
परिधिकहें बइं एकरुयचक द्वीपादिकनो परिक्षेप केसलो होइं तली परधिबीजो हयकरणमामीद्वीपनी बारसें पांसठियो जन
नवसइं उ एकरुच प्रमाण बीजो हयकर्ण नामा द्वीपनें बारसें पांसठियोजन
यणसयाइं एगोरूय परिक्खेवो बोनवचेव सयाइं अउणपन्नलाइं बारसपन्नलाइं हयकण्णपरि

१२०

प्रमाण बीजो चतुष्कनी परधिरूइं इंम सघलें त्र धारीयइं ३ त्रीजइं आदर्शमुख द्वीप इं पनरसें एकासी कांइ अनुक्रमः त्रणिस
लिसें सोलयोजन नसघलें च धारीयइं ३ कं चित्र अधिक परसीपरिधिकही इंमणइं इंसोल
रके वो आयंसमुहाइं पन्नरसे कासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं एवं एतेणं कमे
उप जावी रनइं इंम आरचउक्कनुं प्रमाणए एतलो विक्रम होइं अच विक्खंस पोहोल पणइं परिधि चौथइं चतुष्कें बसइं आ
जोणवुं कजनोणवउं गाहन नपरिधिकही
णं उवउज्जय रजेयवा चत्तारि एगप्पमाणाणं णाणत्तं उग्गाहे विक्खंभे परिक्खेवो य सोलीउ चतुष्के बजो
याम विक्खंभेणं बीतरगोक अनइं चोथें चतुष्कें अट्ठारसइं परधिकही ओवी पांचमइं चतुष्कें सातसइं योजन लांबपलइं अ
हेउ सत्तांशु योजननी तरागइं नइं पिहुलपलइं कहीउ
यणसयाइं आयामेविक्खंभेणं अट्ठारससत्तावणउए जोयणसए परिक्खेवेणं पंचमचउक्के सत्त जोयण
अनइं बावीसइं तेर योजननी परिधिकुइं छठइं चतुष्कइं आठयोजन लांबपलों अनइं पिहुलपलइं रूइं अनइं प
सयाइं आयाम विक्खंभेणं बावीसं तेर जोयणसए परिक्खेवेणं छट्ठचउक्के अट्ठजोयण आयामविक्खं
वतीसमइं उपरिओगणत्रीस जोयन परधिरूइं सातमइं नवसइं योजन लांबपलइं पिहुल अनइं बिसहेंसयोजन
चतुष्कइं पलइं रूइं
भेणं पणवीसं अउणतीसे जोयणसते परिक्खेवेणं सत्तमचउक्के णव जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं
उपरि आवसइं उपरि पस्तालीस योजन कोइं क अधिक वली वयतालीस योजन कला इंम जे हनो जे विक्खंस रूइं ते हनी
अवगाहना पणि ते तली कुइं थबमचतुष्कादिकनी परें कोइं कबली होइ परिमाण अवगाहनानो अधिक प्रमाण
दोजोयणसहस्साइं अट्ठंयबताले जोयणसते परिक्खेवेणं जस्स य जो विक्खंभो उग्गहो वि यस्स तेत्तिउ

एकरुचकद्वीपनी अवगाहना विक्खंभ कही

प्र० ४	यो ३
द्वि० ४	यो ४
त्रि० ४	यो ५
च० ४	यो ६
पं० ४	यो ७
ष० ४	यो ८
सं० ४	यो ९

हवइं एकरुचकद्वीपनी परिधि कहीइं

प्र ४ । ९४९ यो
द्वि ४ । १२६५
त्रि ४ । १५८१
च ४ । १८९७
पं ४ । २२१३ यो
ष ४ । २५२९ यो
स ४ । २८४५ यो
कांइंक अधिक एतलो परिधिक कहीइं

दीजाणवो १ एहे हेमवंतनी चिहिंसिंच्यारनी दाढाए द्वीपनाम्याख्यान एकरुकद्वीपनी परइं कल्पवृक्षदसनु बोलवा जो ओहा
धइंज्ञानवृक्षकुहइ अहावीस वीसमपोक्ष छ देसतिहांलोग कहें बोला के परंपरहीन

चेवपढमपीताणिपरितोनुणीसेसाणञ्चहिंतं १ सेसाजहाएकोरूयदीवस्सजाव सुधिदंतिदीवः

लोकोतिवर्जते सर्वमनुष्यनागए हिमोनताहेमवंतना २८ द्वीपकह्या अंतरसीषरीपर्वतना २८ द्वीपकह्या बेहुं श्रमणआ
समोहकह्या हवइं उत्तरइहउप युखमतो कि हांसगवंत उत्तरनो शिखरीपर्वतनी दाढानाओ हावीसद्वीपमांहें

लोगपरिग्गहाणंतेमणुयगणपन्नत्ता समणाउसो कहिणंभंते उत्तरल्लाणंएगोरूयमाणुसाणंएगोरूय

एकरूचकद्वीपकेहीरि कह्योजंबूद्वीपद्वीपे मेरुपर्वतथकीउत्तरदिसें सिषरीनामावर्षधरपर्वत उत्तरपूर्वनीए
मेकिहां जंबूद्वीपइनइविषें धकी सानइं

दीवेणामदीवेपन्नत्ते गो जंबूदीवे२ मंदरस्सपव्वयस्सउत्तरेणंसिहरिस्सवासहरपव्वयस्स उत्तरपुरच्छि

॥एतेसिमेवदीवाणंमओगाहणाआयामविक्खंभेणंपरियपरिमाणंसंगहणीगाथाः पढमंमितीणिउ
सया सेसाणंसउत्तरानवउजावउगाहणविक्खंभेदूणपरिक्खावउ १ पढमचउक्कपरिराया बीयचउ
उक्कस्सपरिरउ अहउसोलेहणसिहिंजोयणसएहिंएमेवसेसाणं २ एकमिचउक्कपरिक्खेवो नवचेवसयाइंउणप
न्नाए बारसपणवाइजयकणाणंपरिक्खेवो ३ पणरसएकासियाअयंसिमो हणपरिरोलेइ अवारसत्तणउया
असिमोहणंपरिक्खेवो ४ बीवीसंतयाहेवंतिपणयाजाओणदूतितिहिंवाजवइ सेसमहिंतपरिक्खेवो ५ ॥इतिश्लोः

वेहइइतिलांघी लवणसमुद्रमाहे त्रणिसइं योजनइं तिवारे उत्तरनो रूचक दक्षिणनीपरिमाना अहावीस उत्तरनीपासा
द्वीपकहीउं इमजाण सद्वीपकह्या नो अहावीस

मिच्चाउ चरमंताउलवणसमुदांतितिनिजोयणसयाइं उग्गाहित्ता एवंजहादाहिणिल्लाणंतहाउत्तरि

एकरुचक:॥
१द्वीप३४९
२द्वीप१२६५
३द्वीप१५८१
४द्वीप१८९७
५द्वीप२२१३
६द्वीप२५२९
७द्वीप२८४५

सद्वीपकहेवाणवइंएल रुपणनी दक्षिण हिमवंतपर्वतनी दाढाइं अगावीस द्वीपकहइं तिहां उत्तरनी पासाइं सीषरीपर्वतनी विदसा
तोविशेष नीच्यारदाढाइंअठावीसद्वीपकह्या जो लोगेअहावीसमोकच छदे ततिहांलोगतिमजसर्वकहे

ल्लाणंभाणियव्वाणवरंसिहरिस्सवासधरपव्वयस्स विदिसासु एवंजावसुद्धदंतदीवेतिजावसेसेत्तं

वोसालोगेअतिरद्वीपकच्छपन्न तेरेकह्या हवइं अकर्मभूमी भी काकहीइं वंतपांचऐरण्यवंत पांचहरीवासपांचरम्यकवेत्र पां
हवें ते अकर्मभूमिकाना केतलाभेदकह्या ते कर्मभूमिकनाजीमत्ते चउत्तरकुरुइम पांच २ एकवोमेलतो त्रीसअक
दकह्याते केहा॥ पांच हेमवंतपांच हिरण्य

तरदीवकासेकिंतंअकम्मभूमिगा २ तीसतिविहापणत्ता तं पंचहिंहेमवएहिं एवंजहापण्णवणापदे

र्मभूमिकहइं इमजिमपन्नवणामाहें कहवइं तिमइहांजाणवुं एतलेअकर्मभूमिकनी हवेकर्म पांचउत्तरकर्मभूमि
भूमिकहें बइं ते कर्मभूमिनाभेदकह्या तेके हावइं

जावपंचहिंउत्तरकुराहिं सेत्तंअकम्मभूमगासेकिंतंकम्मभूमगा २ पण्णरसविहा पं तं पंचहिंभरहा

पांचऐरवतकर्मभूमि पांचमहाविदेहकर्मभूमि तेमेवर्पिविशेषकह्या तेकेहा एकआर्यदेसइं इमजिमपन्नवणाइं
एकम्लेछ परिंतिमइहां

हिंपंचहिंएरवएहिं पंचहिंमहाविदेहेहिंतें समासउदुविहा पं तं आयरियामिलेच्छा एवंजहाप

जाणवुंयाव एमनुष्यनाभेदक हवेंदेवताक तेदेवतानाच्यारभेदक भवनवासी वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक
तजाणवं ह्या हइंबइं ह्या १ २ ३ ४

भवणपदेजावसेत्तंमणुस्सा सेकिंतंदेवा२ चउव्विहापण्णत्ता तं भवणवासीवाणमंतरजोतिसिय

हवेंभवनवासीकहेंबइं तेभवनवासीनादसभे तेकेहाव असुरकुमार १ इमजिमपन्नवणापदइं तिमसर्वदेवतानाभे
दकह्या इ कहीबइं तिमजाणवो दकहिवाअांत

वेमाणियासेकिंतंभवणवासीदसविहा पंतं असुरकुमाराजहापण्णवणापदेदेवाणंभेदो

गइं अनुत्तरवासी देवतानापांचसेदकह्याछइं तेकेहा विजयनामा वैजयंत जांलगइं सर्वार्थसिद्ध हलोलगंपन
तेजहा कहेता १ २ वलानी परइं सरवदे
जीवाभिगम लांणियव्वो जावअणुत्तरोववातियापंचविहापंतं विजयावैजयंताजावसव्वट्ठसिद्धाणसेतंअणुत्त
१२२ वतानातेर किहांभगवनभवनवासीदेवतानांघरकह्यांछइं किहांभगवनभवनवासीदेवतानांवसवानांठामकि
कहेवा हांकह्यांछइं
रोववातिया कहिणंभंतेभवणवासीदेवाणंभवणपण्णत्ताकहिणंभंतेभवणवासीदेवापरिवासंति
गोय एरत्नप्रभानरकप्रथ एकलाखअसीहजारजोजननुंजाडपणो एकसहस्रउपरिएकसहस्रहेठलिमध्येएक
मा वीइं तेतलें लाखअठोत्तरसहसनुंआकासतिहां
गो इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए एवंजहापन्नवणाए
भवनपतिनांभवनकह्यांजि जोजांणेजोवा तिहांकेतलाभवनछेते तेभवनवासीदेवतानासातकोडिभवनबहुतेरला
मपन्नवणांइं तिमजाणवा जाणवुछइं हनीसंख्याकहेंछइं षइएतलाभवनतिर्थंकरेकह्या तिहांघणाभवनवा
जावभवणवासइया तत्थणंभवणवासीदेवाणंसत्तभवणकोडीउबावत्तरिभवणवासिसा
सीदेवतासेवेइ असुरकुमारनागकुमारसुवर्णकुमारइंमसघलाभवनवासीजि किहांभगवनदक्षिणदिसिनाअसु
छइं मपन्नवणानिसूत्रिपरिकह्योछइंतिमजाणवोजांलगंसुखेंविचरइंछइं
ति तिसहस्साभवंति असुरानागसुवण्णयजहपन्नवणाएजावविहरंति कहिणंभंतेदाहिणल्लाणं
रकुमारदेवतानुंपश्नति इंमजपन्नवणानिवोमपदलिमजो तिहांअसुरकुमारेंद्र असुरकुमारनोराजावसेंछइं
काक्ष एवंजीचमरजगाइं
असुरकुमारदेवाणंपुच्छा एवंजहाठाणपदेजावचमरे तत्थअसुरकुमारिदे असुरकुमाररायापरि १२१

जांलगइंसुखइविच चमरेंद्रहेभगवन असुरकुमारेंद्र असुरकुमारराजा केतलीपरषदा भगवनकहें हेगोतम
रइंछइं जननें कही
वसंतिजावविहरंतीचमरस्सणंभंते असुरिंदस्सअसुरकुमारकुमाररन्नोकतिपरिसाउपन्नत्ताउ गो
त्रणिपरषदाकही तेकेही समिताचंडाजाता माहेंलीपरषदातेसमता१ मध्यनीचंडा२ बाहिरलीतेजाता४ चमरतइंद्र
१ २ ३
तउपरिसाउपण्णत्ताउ तं समिताचंडीजाताअब्भिंतरियासिमंता मज्झेचंडा बाहिरियाजाता चमरस्स
गवन असुरकुमारतइंअसुरकुमार अभ्यंतरपरषदाइं केतलासहेंसदेवताकह्या मध्यमपरषदाइं
नाराजानइं
णंभंतेअसुरंदस्सअसुरकुमाररन्नो अब्भिंतरपरिसाए कतिदेवसाहस्सीउपन्नत्ताउ मज्झमपरिसाए
केतलासहेंसदेवताकह्या बाहिरलीपरषदाइं केतलासहेंसदेवताकह्या भगवंतकहें हेगोतम चमरअसुरेंद्रअसु
रकुमारराजानइं
कतिदेवसाहस्सीउपन्नत्ताउ बाहिरियाएपरिसाएकतिदेवसाहस्सीउपन्नत्ताउ गो चमरस्सणंअसु
अभ्यंतरपरषदाइं चउवीससहस्सदेवताकह्या मध्यमपरषदाइंअठावीससहस्सदेवताकह्या
रंदस्सअब्भिंतरपरिसाएचउवीसदेवसाहस्सीउपन्नत्ताउ मज्झिमयाएपरिसाएअट्ठावीसंसाहस्सीउ
बाहिरलीपरषदाइं बत्रीससहस्सदेवताकह्या चमरनेंभगवन असुरेंद्रनइं असुरकुमारराजानें
पन्नत्ताउ बाहिरियाएपरिसाए बत्तीसंदेवसाहस्सीउपन्नत्ताउ चमरस्सणंभंते असुरिंदस्सअसुरकु

माहिलीपरषदाइं केतलीसहंसदेवांगनाकही मध्यमपरषदाइं केतलीसहसदेवांगना बाहिरलीपरष कही
माररन्नो अभिंतरियाएपरिसाएकतिदेवीसतापनत्ता मझिमयाएपरिसाए कतिदेवसताप बाहिरिया
दाइंकेतलीसइंदेवांगनाकहीगो चमरअसुरेंद्रनइं असुरकुमारअसुरकुमार नाराजानइं माहिलीपरषदाइं
एपरिसाएकतिदेवसताएपणत्ता गो चमरस्सणंअसुरंदस्सअसुरकुमाररन्नो अभिंतरियाएपरिसाए
आउहसइंदेवांगनाकही मध्यमपरषदाइंत्रणिसइंदेवांगनाकही बाहिरलीपरषदाइं अढीसइंदेवांगनाकही
अधुट्ठादेवसयापं मझिमयाएपरिसाएतिन्निदेवसता पं बाहिरियाएपरिसाए अड्ढाइज्जादेविसताप
चमरनेंसगवन असुकुमारराजानैं माहिलीपरषदानादेवतानइं केतलाकालनीथितिकही १ मध्यमपरष
णत्ता चमरस्सणंभंते असुरिंदस्सअसुरकुमाररन्नो अभिंतरियाएपरिसाए देवाणंकेवतिएकालंठित १
दाइंदेवतानीकेतलाकालनी थितिकही बाहिरलीपरषदानीदेवीनीकेतलाकालनीथितिकही अभिंतरपरषदानीदेवीनी
पं मझिमयाएपरिसाएदेवाणंके० बाहिरयाएपरिसाएदेवीणं केवतियंकालंठिती पं अभिंतरियाए
केतलाकालनीथितिकही १ मध्यमपरषदानीदेवीनीकेतलाकालनीथितिकही २ बाहिरलीपरषदाइंदेवीनी
परिसाएदेवीणंकेवतीयंकालंठितीपणत्ता मझिमयाएपरिसाएदेवीणंकेवतियंकालंठितीपणत्ताबा

BHAU DAJI ...

केतलाकालनीथितिकही ३ गोयमा चमरअसुरेंद्रनइं माहिलीपरषदाइंदेवतानइं
हिरीयाएपरिसाएदेवीणंकेवतियंकालंठितीपणत्ता गो चमरस्सणंअसुरिंदस्सअभिंतरीयाएपरिसाए
अढीपल्योपमनाआउषानीथितिकही मध्यमनीपर्षदानादेवतानु बेपल्योपमनुंआउषुंवीतरागेंकहीछेविमाणं
देवाणंअड्ढाइज्जाइंपलिओवमाइंठितीपणत्ता मझिमयाएपरिसाएदेवाणंदोपलीओवमंठितीपणत्ता बा थितीपणत्ता
बाहिरलीपरषदानादेवतानैं दोढपल्योपमनीआउषानीथितिकही हवेंमाहिलीपरषदानीदेवीनीदोढपल्योपमनीआउषानीथितिवीतरागेंकही
हरियाएपरिसाएदेवाणंदिवड्ढंपलिओवमंठिती पं अभिंतरियाएपरिसाएदेवीणंदिवड्ढंपलिओवमंठि
मध्यमपरषदानीदेवीनी एकपल्योपमनीथितिकहीवीतरागेंकही बाहिरलीपरषदानीदेवीनी अर्धपल्योपमनीथितिकही
ती पं मझिमाएपरिसाएदेवीणंपलिओवमंठिती पं बाहिरियाएपरिसाएदेवीणंअद्धपलिओवमंठिती: व
तेस्याभणीसगवनइंमकह्यो चमरअसुरेंद्रनइं त्रणिपर्षदाकही तेकेही समिता १ चंडा २ जाता ३
पं सेकेणट्ठेणंभंते एवंवुच्चतिचमरस्सअसुरंदस्स तओपरिसाओपन्नत्ताओ तंजहा समया चंडाजाता
माहिलीतेसमीता मध्यमनीचंडा २ बाहिरली जाता ३ गोयमा चमरअसुरेंद्र असुरकुमारनाराजानीमाहिली
अभिंतरियाएसमियामझिमयाए चंडाबाहिरियाएजाया गो चमरस्सणंअसुरंदस्सअसुरकुमारर

परषदानादेवतानी आकूततेजी थकी सीघ्र आ पणि अणतेड्या आवे मध्यम परषदानां देवता सीघ्र आवे नीही
वइ
लो अभिंतरपरिसादेवाणंमाहूतरहव्वमागछंती णो अव्वाहूतत्ता मज्झिमपरिसाएदेवामाहिलावि हव्वमाग
पणि अणते ड्या आवइ बाहिरली परषदान देवततेड्या सीघ्र अणतेड्या आवइ तथा वली अनेरो कार चमरअ
थका
छंती अवाहितावि बाहरियापरिसाएदेवाणंमाहूत्ता अव्वाहूत्ता हव्वमागछंति अदुत्तरचणंगो चम
असुरकुमारराजा अनेरा शुभअशुभकार्य कोटंबिकादिकार्य विशेष असंतरपर्षदासाथे संमंत्र रूपातिमंत्र
उपनइं
रेअसुरिंदे असुरराया अन्नयरेसु उच्चावएसु कठकोटंबेसु समुप्पन्नेसु अभिंतरियाएपरिसाए
लें करी घणो दूर वहे करी विचरै छइं
संमंतिसंपश्चवाछूलसापिविहरति मध्यमपरषदासाथे जो असंतरपर्षदापर्याय आलोचीनइं तेसामाटइं हेगौतम
समंतधइ अपचे विचरइं
सद्धिं संमेतसंपुछणबहुलेविहरंती मज्झिमपरिसाएसिद्धिपयंचंडेमाणेविहरंति सेतेणंगो
एमकहि
ते
चमरअसुरेंद्र असुरकुमार राजानेंने त्रणि परषदा कही समिता १ चंडा २ जाता ३
एवंवुच्चंतिचमरस्सणंअसुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो ततोपरिसाओपन्नत्ताओ समियाचंडाजायाअ
मांहिली समिता १ माहंली चंडा २ बाहिरली जाता ३ एअर्थान्तरसूर्ण हवे किहां भगवन उत्तर असुरकुमारना सवन
वृत्यो पासाना वीतरागे कहो भगवंते
भिंतरियासमियामज्झिमयाचंडाबाहरियाजायाकहणंभंतेउत्तरिल्लाणंअसुरकुमाराणंभवण

जिमपनवणानि स्थांनकपदइं कहिउं छइं तिम वैरोचनेंद्र वैरोचनराजा वसइं छइं जिहांजगें स्कथइं विच बलिइंनें भगवन
कहेवुं तिहां रइं छइं
पन्नताजहावांणपदेजावतथवइरोयाणिंदे वइरोयणराया परिवसंति जावविहरंति बलिस्सणं
वैरोचनेंद्र वैरोचनराजानी केतली परषदा कही गोयमा त्रणि परषदा कही तेकेही समिता १ चंडा २ जाता ३
भंतेवइरोयरन्नोकतिपरिसाओपन्नत्ताओ गोतिन्निपरिसाओपन्नत्ताओ तंजहा समियचंडाजाया
माहिलीसमिता १ वचिलीचंडापरषदा २ बाहिरलीपरषदाजा बलेंद्रनइं वैरोचनेंद्र वैरोचनराजानइं
ता ३
अभिंतरियासमिया मज्झिमयाचंडा बाहरियाजाया बाहिलस्सणंविरोयणिंदस्स वइरोयणर
मांहिली परषदाइं केतला सहस्र देवता कह्या मध्यमनी परषदाइं केतला सहस्र देवता ज्योजगइं बाहिरली पर
कह्या षदाइं केतली
न्नो अभिंतरीयाएपरिसाएकतिदेवसहस्सामज्झिमयाएपरिसाएकतिदेवसहसा जावबाहरि
देवीना सइं कह्या इम सव आलावा कहेवा गोयमा बलेंद्रनइं वैरोचनराजानइं माहेली परषदाइं वीस सहस्र देवता
याएपरिसाएकतिदेवसयापन्नत्ता गोयमा बलिस्सणंवइरोयणिंदस्स अभिंतरियाएपरिसाए
कह्या मध्यपरषदाइं चउवीस सहस्र देवता कह्या बाहिरली परषदाइं देवताना अठावीस स
वीसंदेवसहस्सापन्नत्ता मज्झिमयाएपरिसाए चउवीसादेवसहस्सापन्नत्ता बाहरियाएपरि

हसकह्या | ह्वइं अभ्यंतरपरषदाइं देवांगनामाही आरसइं वीतरागें कही | मध्यमपरष

साए अट्ठावीसं देवसहस्सा पन्नत्ता अभ्भिंतरियाए परिसाए अद्धपंचमा देवसता पं मज्झिमयाए प

दाइं | च्यारसइं देवांगना कही | बाहिरली परषदाइं | अउठसइं देवांगना कही | बलिइंद्रनी ३ परषदाना देवता.

रिसाए चत्तारि देविसया पन्नत्ता बाहिरियाए परिसाए अद्धुट्ठ देविसत्ता पन्नत्ता बलिस्स णं वि

नां आउषि स्थिति पूछी | ओलगें बाहिरली परषदाइं देवनी केतला कालनी स्थिति कही | गोतम | बलिराजधानीइं वैरोचनेंद्रनें
एतलें स्यों लगें अलावा कहेंवा

तीयपुच्छा जाव बाहिरियाए परिसाए देवाणं केवतियं ठिती पन्नत्ता गो बलिस्स णं वइरोयणिंद

अभिंतरपरषदाइं | देवतानिं | अउठ पल्योपमनी थिति कही | मध्यमपरषदानादेवतानि

स्स अभ्भिंतरियाए परिसाए देवाणं अद्धुट्ठ पलिउवमाइं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए तिन्नि

त्रणि पल्योपमनी थिति कही | बाहीरली परषदाइं | अढी पल्योपमनी थिति वीतरागें कही छैं | हवें अभिं

पलिउवमाइं ठिती पन्नत्ता बाहिरियाए परिसाए अड्ढाइं पलिउवमाइं ठिती पन्नत्ता अभिंत-

तरपरषदानी देवीनी | अढी पल्योपमनी थिति कही | मध्यमपरषदानी देवीनि बइं पल्योपमनी

रियाए परिसाए देवीणं अड्ढाइं पलिउवमाइं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवीणं दो प- १२५

थिति भगवंतें कही | बाहिरली परषदानी देवीनें | दोढ पल्योपमनी थिति वीतरागें कही | माक नोली जो सरव चमर असुर

लिउवमाइं ठिती पन्नत्ता बाहिरियाए परिसाए देवीणं दिवड्ढ पलिउवमं ठिती पन्नत्ता सेसं जहा चमरस्स असुर

कुमारनी परइं जाणवो | नागकुमार देवतानो स्थानक वीतरागइं कह्युं तेम जाणवा | जिमपन्नवणा नइं बीजइं स्थानपदें जिम कहिउं छइं तिम इंहां सविस्तरपणइं कहेंवा | पूछचो

रिंदस्स असुरकुमाररन्नो कहिं णं भंते णागकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता जहा ठाणपदे जाव दाहिल

ओलगें दषिणना पलिउववा | जिहांलगें धरणतिहांनागकुमार नागकुमारेंद्र | नामाराजा वसेंछइं | ओलगें फणइं विचरइं छइं | धरणिराजधानीइं भवन

त्ताविउत्तियावा जाव धरणे त्थ णागकुमारिंदे णागकुमारराया परिवसति जाव विहरंती धरणस्स णं भं

नागकुमारेंद्रनइं | नागकुमारराजानइं | केतली केतली परषदा कही | गोतम | त्रणि परषदा कही | तिमज जिम चमरनें कहिउं तिमज इंहांपणि कहेंवउं

ते णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कति परिसाउ पन्नत्ताउ गो तिन्नि परिसाउ ताउ चेव जहा चमरस्स ध

धरणराजधानीइं भवन | णागकुमारराजानें माहिली परषदाइं केतला महंस | देवतानी परषदा कही छइं | मध्यमपरषदाइं परषदानादेवताके

रणस्स णं भंते णागकुमाररन्नो अभ्भिंतरियाए परिसाए कति देवसहस्सा पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए क

तासहेंसक्षा | ओलगइं | बाहिरली परषदाइं केतली सहेंसदेवांगना कहीइं भगवंत अरला वादळ लिदेवीनों कह्या | गोयमा | धरणराजानइं | माहिली परषदाइं

ति देवसहस्सा पन्नत्ता जाव बाहिरियाए परिसाए कति देविसया पन्नत्ता गो धरणस्स णं रन्नो अभ्भिंतरि

माहिलीपरषदाइं साठिसहस्रदेवतानी वातरागे कह्या | मध्यमपरषदाइं सीत्तेरसहैंसदेवतानां कह्या | बाहिरलीपरषदाइं असीसहैंसदेवतानां कह्या

याए परिसाए सट्ठिदेवसहस्सा पन्नत्ता मज्झिमियाए सत्तरिदेवसहस्सा पं बाहिरियाए असीदेवसहस्सा

मांहिलीपरषदाइं पंचोत्तरसइं देवांगनां कही | मध्यमपरषदाइं | पंचासमत्त | देवांगनां कही | बाहिरलीपरष

पन्नत्ता अब्भिंतरपरिसाए पन्नत्तरदेविसतं पन्नत्तं मज्झिमयाए परिसाए पन्नासं देवसतं पन्नत्तं बाहिरि

दाइं | पचवीससें देवांगनां कही | धरणराजानइं | मांहिलीपरषदाना | देवतानइं | केतलाकालनी थिति

याए परिसाए पणवीसं देवसया पन्नत्तं धरणस्सणं रन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं

कही | मध्यमपरषदानादेवतानी | केतलाकालनी थिति कही | बाहिरलीपरषदानादेवतानी | केतला

ठित्ती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवाणं केवतियं कालठित्ती पन्नत्ता बाहरियाए परिसाए देवाणं

कालनी थिति कही वइं | मांहिलीपर्षदानीदेवीनी | केतला कालनी थिति कही | मध्यमपर्षदानीदेवीनी

केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता अब्भिंतरियाए परिसाए देवीणं केवतीए कालं ठित्ती पन्नत्ता मज्झिमयाए प

केतलाकालनी थिति कही | बाहिरलीपर्षदानीदेवीनी | केतलाकालनी | थिति कही | गोयमा

रिसाए देवीणं केवतियं कालं ठित्ती पन्नत्ता बाहरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता गोयं ध १२६

धरणनामें राजानैं मांहिलीपरषदाइं देवता कांइक अधिक | अर्द्धपल्योपमनो आउषो कहिउ | मध्यमपरषदाइं देवतानो

रणस्स रन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं सातिरेगं अद्धपलिओवमं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए

अर्द्धपल्योपमनो आउषो कह्यो उ | बाहिरलीपर्षदानी कांइक उणी अर्द्धपल्योपमनी थिति कही ३ | मांहिलीपरषदाइं देवी

देवीणं अद्धपलिओवमं ठिती पन्नत्ता बाहरियाए परिसाए णं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पन्नत्ता अब्भिंतरी

नी कांइक उणी अर्द्धपल्योपमनी थिति कही १ | मध्यमपर्षदाइं देवांगनानि कांइक अधिक चोथोभाग पल्योपमनो एतलो

याए परिसाए देवीणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवाणं सातिरेगं चउभागं

थिति कही | एसर्व अर्थ चमरनी परैं सविस्तर पणें करी जांणवो | किहां लगइ उत्तरना नागकुमार देवता | जिम पनवणानइं वसइ छइं | बीजा पदें तिम

चउब्भागपलिओवमं ठिती पन्नत्ता अट्ठो जाव चमरस्स कहणं से तेणट्ठे सरिच्छालं नागकुमाराणं जाव

जांणवा रूपेंविचरइ छइ | उत्तरनां देवनइं स्वामि न | नागकुमार राजानैं | मांहिलीपरषदाइं केतला सहैंस देवता कह्या | एवइं मांहिलीपर्ष

देजाव विहरंति भूयाणंदस्सणं रन्नो नागकुमारस रन्नो अब्भिंतरीयाए परिसाए कतिदेवसाहसी उ मज्झि

दाइं केतलीसइं देवांगना कही | बाहिरलीपरषदाइं केतलीसइं देवांगना कही | एवइं मांहिंलीपर्षदाइं के

माए परिसाए कति देवसाहसीउ पन्नत्ताउ बाहरीउ आए परिसाए कति देवसाहसीउ आ उपनत्ताउ अ

नलीसइं देवांगनाकही | मध्यमपर्षदाइं | केतलीसइं देवांगनाकही बाहिरलीपरषदाइं

भिंतरियाए परिसाए कति देविसया पण्णत्ता मज्झिमयाए परिसाए कति देविसया पन्नत्ता बाहरीयापरि

केतलीसइं देवांगनाकही गोयम ते नानेंद्र नागकुमारराजानइं | मांहेंली पर्षदाइं | पंचाससहें सदेवताकह्या

साए कति देविसया पन्नत्ता गो भूयानंदस्स णं नागकुमाररन्नो अभिंतरियाए परिसाए पन्नासं देवसह

मध्यमपरषदाइं | साठिसहेंसदेवतावीतरागें कह्या २ | बाहिरलीपरषदाइं | सित्तेरसहेंसदेवताकह्या

स्सा पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवाणं सट्ठिं देवसाहस्सीतो पन्नत्ताउ बाहरियाए परिसाए सत्तरि देवसा

३ | मांहिलीपरषदाइं | बिसइंअनइं पचवीसदेवांगनाकही ४ | मध्यमपरषदाइं | बिसइंदेवांगनावीतरागे कही ५

हस्सीतो पन्नत्ताउ अभिंतरियाए परिसाए दोपणवीसं देवियंपन्नत्तं मज्झिमयाए परिसाए दो देवसयं पन्न

बाहिरलीपरषदाइं एकसोपंच्योतरदेवांगनाकही ६ | तेनानेंद्रभगवन | नागकुमारेंद्रनइं | नागकुमारनाराजानैं मांहि

त्तं बाहरीआए परिसाए पन्नत्तरं देवसयं पन्नत्तं भूयाणंदस्स णं भंते नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अ

लीपरषदानादेवतानीकेतलाकालनीथितिकही प्रथम १ | मध्यमपरषदाइंदेवतानीकेतलाकालनीथितिकही २

भिंतरीयाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता मज्झिमयाए परिसाए केवतियं कालं ठिती पण १२७

बाहिरलीपरषदाइंदेवतानीकेतलाकालनीथितिकही ३ | हवेंमांहिलीपर्षदानीदेवीनीकेतलाकालनीथितिकही

त्ता बाहिरयाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता अभिंतरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं

१ | मध्यमपरषदानीदेवीनीकेतलाकालनीथितिकही | २ | बाहिरलीपर्षदानीदेवीनीकेतलाकालनीथि

ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता बाहरियाए परिसाए केवतियं का

तिकही ३ | गोयमा | तेनानेंद्रनइं भगवन मांहेंलीपरषदाइंदेवतानें कांइंक ऊणीपल्योपमनीथिति | मध्यमपरषदा बानइं कही

लं ठिती पन्नत्ता गो भूयाणंदस्स णं भंते अभिंतरियाए देवाणं देसूणं पलिउवमं ठिती प[...]त्ता मज्झिमया

नादेवतानी कांइंक अधिकपल्योपमनीथितिकही २ | बाहिरलीपरषदानीदेवीनी | अर्द्धपल्योपमनीथितिकही ३

ए परिसाए देवाणं सातिरेगं अद्धपलिउवमं ठिती पन्नत्ता बाहरियाए परिसाए देवाणं अद्धपलिउवमं ठित १

हवेंदेवीनीकहेंछेंमांहिलीपरषदाइंदेवीनी | अर्द्धपल्योपमनीथितिकही १ | मध्यमपरषदाइंदेवीनीकांइंक अधिकपल्योपमनें

पन्नत्ता अभिंतराए परिसाए देवीणं अद्धपलिउवमं ठिई पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवीणं सातिरेगं चउब्भाग

चोथुइंभागपल्योपमनी थितिकही २ | बाकतीअर्धसरखुंचम रेंद्रनीपरइंजाणवो | बीजाथाकतावेणुदेवादिकमहाघोषपर्यवसाननेछेहडेंइं तिहांजाणइं | जिमपनवणानैं | थानपदनी वक्तव्य

पलिउवमं ठिती पन्नत्ता अट्ठो जाव चमरस्स अवसेसाणं वेणुदेवादीणं महाघोसपज्जुवसाणाणं ठाणपय

नानिरविग्रोषपलाइं अर्थसहितसरख जिमधरणेंद्र तणानेंइं दक्षिणनातिंमधरणनइं उत्तरना जिमरतानेंदनोपरि
पक्ष तिकहेंवी परषदा मोल

वलवलांणरवयवाणियवा परिसाओ जहा धरणिस्स तहा णं दाहिणिल्लाणं जहा धरणस्स उत्तरि

तिमनिसंदेह पर्षासरखकहेंवी थितिपणि तिमजकहेंवी किमभगवनवाणवंतरना देवतानांभवनकह्यां जिमपनवणा
निवाणपदिनि

ल्लाणं जहा भूताणंदस्स परिमाणंपिठितिविलाणियव्वा कहिणं भंते वाणमंतराणं देवाणं भवणपन्नत्ता

मकहेंवी ज्योलगेंविचर किहांभग पिसाचकुमारनांभवनकह्यांजिमपन पदकह्योछेतिमकहेंवो ज्योलगेंसर्वे विचर
छइं वन वणाधानक छइं

जहाठाणपदेजावविहरंति कहिणं भंते पिसायकुमाराणं भवणा पण्णत्ता जहाठाणपदे जावविहरंति

काल महाकाल एवे पिसाचकुमारराजावसइं छइं ज्यांलगइं सुखइं विचरइं छइं किहांभगवन दक्षिणना पिसाच
१ २

कालमहाकालीयाछत्थदुवेपिसायकुमाररायाणो परिवसंतिजावविहरंती कहिणं भंते दाहिणिल्ला

कुमारराजा ज्यांलगइं विचरइं छइं काल १ महाकालनांमा २ एवे पिसाचकुमारराजा ज्यांलगें वसें छइं पिसाच

णं पिसायकुमाराणं जावविहरंति कालमहाकालयत्थदुवेपिसायकुमाराणं जावविहरंतिः

कुमारेंद्र पिसाचकुमारराजावसइं छइं महर्द्धिकज्यांलगेंछइं विचरेंछइं काल नामा भगवन पिसाचकुमारेंद्र

पिसायकुमारिंद पिसायकुमारराया परिवसति महड्डिए जावविहरंति कालेस्सणं भंते पिसायकुमा
व

पिसाचकुमारराजानानइं केतलीपरषदाकही गोयमा त्रणिपरषदाकही तेकेही ईसा १ तुडिता २

रिंदस्स पिसायकुमाररन्नो कतिपरिसाओपन्नत्ताओ गो तिन्निपरिसाओपन्नत्ताओ तंजहा ईसा तुडिया

दृढरथा ३ माहिंलीतेईसा १ मध्यनीतेतुडितासता बाहिरलीदृढरथा काळनामा भगवन पिसाचकुमारेंद्र पिसाचकुमारए
२ ३

दढरहा अभिंतरीयाईसा मज्झिमयातुडिया बाहरियादढरहा कालस्सणं भंते पिसायकुमारिंदस्स पिसा

जानने माहिंलीपरषदाइं केतलामहेंसदेवताकह्या जावबाहिरलीपरषदाइं केतलीसइं देवांगनाकही

यकुमाररन्नो अभिंतरयपरिसाए कतिदेवसाहस्सीओपन्नत्ताओ जाव बाहरियाए परिसाए कतिदेवस-

गोयमा कालनामा पिसाचकुमारेंद्रनइं माहिंलीपरषदाइं आठसहसदेवताकह्या १ पिसाचकुमारेंद्रनइं
१

यापन्नता गो कालस्सणं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमारस अभिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सी-

मध्यमपरषदाइं दससहेंसदेवताकह्या २ बाहिरलीपरषदाइं एकसोदेवांगनाकही ३ कालनांमा भगवनपि

ओपन्नत्ताओ मज्झिमपरिसाए दसदेवसाहस्सीओपन्नत्ताओ बाहरियाए परिसाए बारसदेवसाहस्सीओपन्न

साचकुमारेंद्रनिं पिसाचकुमारराजानानें माहिंलीपरषदानां देवतानें केतलाकालनीथितिकही १

त्ताओ अभिंतरियाए परिसाए एकं देवि सयं पन्नत्तं मज्झिमयाए एकं देवि सयं पन्नत्तं बाहरीयाए

DR. BHAU DAJI

मध्यमपरषदाइं देवतानि केतला कालनी थितिकही २ बाहिरलीपरषदाइं देवतानी केतला
रिसाए एकं देवसयं पन्नत्ते कालसेणं भंते पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अभ्भितरियाए परिसा
कालनी थितिकही ३ हवे अभितरपरषदानी देवीनी केतला कालनी
ए देवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता बाहिरिया
थितिकही १ मध्यमपरषदानी देवीनीकेतला कालनी थितिकही २
ए देवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता मज्झिमयाए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता बाहरि

याए परिसाए देवाणं केवतियं कालं ठिती पं अभ्भितरियाए परिसाए देवीणं केवयं कालं ठिती पन्नत्ता म
थोर बाहिरलीपरषदानी देवीनी केतला कालनी थितिकही ३ गो
झिमयाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पं बाहरियाए परिसाए देवीणं केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता
यमा पिशाचकुमारेंद्रनइं पिशाचकराजानना मोहेंलीपरषदाना देवतानिं अर्द्ध पल्योपमनी थितिकही
रना
गो कालस्सणं पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अभ्भितरसाए देवाणं अधपलिओवमं ठिती पन्नत्ता १२९

मध्यमपरषदाना देवनि कांइंकउंणो अर्द्ध पल्योपमनी थितिकही बाहिरलीपरषदाना देवतानी कांइंकअधिकचोथो सागप
ल्योपमनी थितिकही
मज्झिमयाए परिसाए देवाणं देसूणं अद्धपलिओवमं ठिती पं बाहरियाए परिसाए देवाणं सातिरेगं चउभागं
हवइं मांहिंलीपरषदाइं देवीनि कांइंकअधिक पल्योपमनो चोथो भाग तेतली थितिकहइं मध्यमपरषदानी देवीनीप
पलिओवमं ठिती पन्नत्ता अभ्भितरीयाए परिसाए देवीणं सातिरेग चउभागपलिओवमं ठिती पन्नत्ता मज्झिमप
ल्योपमनो चोथो भाग नी थितिकही बाहिरलीपरषदानी देवीनी कांइंकउणो पल्योपमनो चोथो भागनी थितिकही
रिसाए देवीणं चउभागे पलिओवमं ठिती पन्नत्ता बाहिरयाए परिसाए देवीणं देसूणं चउभ्भाग पलिओवमं ठि
बीजो घणो कहेवो अर्थ चमरेंद्र इंमउत्तरनी परिसाना वर्णनथी तरा जाणवा इंमज्जो जगें निरंतर कहिं भगवन ज्योतिषी देवतानां वि
नी परइं जाणवो गीतजस लगें कहेंवा
ती पन्नत्ता अट्ठो जाचेव चमरस्स एवं उत्तरिल्लाविए वं निरंतरं जाव गीयजस्स कहणं भंते जोइसीयाणं
मानकह्यां वली कहिं भगवन ज्योतिषी देवतावसें छइं गोयमा द्वीपसमुद्रनीपरइं एरत्नप्रभाउपरि थकी
देवाणं विमाणा पन्नत्ता कहणं भंते जोतिसया देवा परिवसंती गो जंबूदीव समुद्दाणं इमीसे रयणप्पभा
घणोंसमीरमणीक भूमिभाग समसतल थकी सातसें योजन नेउ योजन ऊंचो ऊंचपणो थकी एकसोदस सिंयोजन विचारस्त भि कानें जाडपणइं
ए पुढवीए बहूसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउए जोयणसए उड्ढं उप्पतित्ता दसुत्तरे जोयणसए बाहु

तिहां योतिषीदेवनां त्रीवांइं संष्यातायोतिषीनाविमान नालाषगमे मइं कह्या   अनेराती र्थंकरपीणइं मकहेंसें

जीवाभिगम केणं एवंणं जोतिसियाणं देवाणं तिरीयमसंषिज्जा जोतिसियविमाणवाससयसहस्सा लवंतीमरक्खा त

१३० तेविमानकेहवा छइं   ऽईकोविनेंसंस्थानें संस्थित छइं   इंमजिमनव णनें वोण   परेंतघाचंद्रप्रज्ञप्तीसूर्यप्रज्ञप्तीजाणवुंचंद्रमाज्योतिष गइंचंद्रसूर्यतिहांयोतिषीनाराजावसें छइं तेनाज

तातेणंविमाणाअद्धकविट्ठसंठाणसंठियाएवंजहाठाणपदेजावचंदमसूरियायजोतिसयोंजो य

तेकहेंचेतघांसंप्रत्लीनीठी काथीजोणवुं   जोमहर्द्धिकवसइं सूर्यनइंलगवननयोतिषेंइनइं छइं   योतिषीराजानइं   केतलीपरषदा

इसरायाणेपरिवसंतीमहिड्ढियाजावविहरंति सूरसेणंभंतेजोतिसिंदस्स जोतिसरन्नोकत्तिपरिसा

कही गोयमा त्रणिपरषदाकही तेकेही तुंबा १ त्रुडित २ पर्वा ३ माहिलीपरषदाते तुंबा १ मध्यमनीत्रुडितापरषदा २ बाहिरनीपर्वा ३

तुंपन्नत्तातुंगो तिन्निपरिसातं पं तं तुंबा तुडियापव्वा अभिंतरीयातुंबा मज्झिमयातुडिया बहिरयापव्वा

घाकतीसर्वकालनीपरें घितिजोणवी   अर्चसर्वलिमवसरतिम तिणिरीतइंकहेंवो   वइमानेइंमजसर्व जोणवुं   किहांलगवनद्वीपसमुद्रछइं   केतलानगवनद्वीपसमुद्रछइं

सेसंजहाकालस्सठितीविअट्ठोजहाचंदस्सएवंचेवकहणंभंतेदीवसमुद्दाकेवतीयाणं ग

केवडामोटाछइं   लगवनद्वीपसमुद्र सइंसंस्थानेंछइं लगवनद्वीपसमुद्र   स्येंआकारइंवेंघतिकारलावइं

तेदीवसमुद्दा२केमहालयाणंदीवसमुद्दाकिंसंठियाणंभंतेदीवसमुद्दाकिंमारलावयडोयारा ते १३०

लगवनद्वीपसमुद्रकह्या गोयमा   जंबूद्वीपआदिद्वीपछैंलवणसमुद्रआदिसमुद्रछैंसंस्थानथकीएकविधिविषे नफरतांचद्वीनइंआकारइं सघलाछइं विस्तारइंकरीनो   अनेकविधानविधि छइं

णंभंतेदीवसमुद्दापन्नत्ता गो जंबूदीवेलवणादीयासमुद्दासंठाणतोएकविहिविहाणविच्छारतोअणेगवि

विमलाश्वधलाथका विशेष   विस्तारमांनथकोलासमांनसोलतइंथिकइं   तिहांअनेक घणाइं   उत्पल पद्म कुमु२ नलि सुलग सो

हाणाऽगुणाऽपडप्पाएमाणाऽवित्थरिमाणाऽ [illegible] समाणा तत्थबहूइंउप्पलपउमकुमुदणलिणसुभगसो

ध पुंडरीक   माहापोंडरीक   सतिपत्र   सहस्रपत्र   कुलनीकेसरीइंउपसोभितछइं   प्रत्येकं२   पद्मवरवेदिकाइंपरिषिप्तछइं

गंधियपोंडरीयमाहापोंडरीयसतिपत्तसहस्सपत्तिफुल्लकेसरोवचियापत्तेयपत्तेयंपउमवरवेइयपरिक्खि

प्रत्येकइं२ वनषंडेवेष्टितछइं   एणाइंत्रीछइंलोकइं   असंष्यातद्वीपसमुद्रपवीअनुक्रमेंछेहडें सयंभुरमण समुद्रकह्यो

त्तापत्तेयं२वणसंडपरिक्खित्ता अस्सिंतिरियलोएअसंखेज्जादीवसमुद्दासयंभूरमणपज्जवासाणपन्नत्ता

अहो आउष्मंता आयुष   तिहांविचंआजंबूद्वीपनांमाद्वीपनेंविषें   सर्वद्वीपसमुद्रनइंमांहेंविचिंछइंसर्वथकीनांनोछइं तेतलाप्रदा

समणाउसो तत्थणंअयंजंबूद्दीवेदीवेसव्वदीवसमुद्दाणंअभिंतरीयाएसव्वखुड्डुएतल्लापूयसं

संस्थानेंछइं   वृतवाटलो   रथनापइडानइंसंस्थानइंकरीसंस्थितछइं   वाटलोकमलनीकर्णिकानेंसंस्थानें संस्थितछइं   तेवाटलोप्रतिपूर्णचंद्रमानइं

ठाणसंठिए वट्टेरहचक्कवालसंठाणसंठिए वट्टेपुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए वट्टेपडिपुन्नचंदसंठा

संस्थानैं संस्थितछइ | एकलाषयोजनप्रमाण | लांबपणइ | विस्तारपणइ | त्रिणिलाषयोजनउपरिसोलसहस्रयोजन | बिसइंउपरिसत्ता

णसंठिते एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णिय

वीसयोजनउपरि त्रिणि कोसउपरि अठावीस धनुषउपरि तेरअंगुलउपरि काइंक विशेषाधिक परिधि कही | एकजगतीइंस

सत्तावीसजोयणसए तिन्निय कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरसअंगुलाइं अद्धंगुलायं च किंचि विसेसा

घलइ जंबूद्वीपइ सघलैं चोषफेर वीटी रही छै | तेजगती केहवी छै आठयोजन ऊंची ऊंचपणइ छइ | मूलैं बारयोजन विस्त

हिए परिक्खेवेणं से णं एक्काए जगतीए सव्वतो समंता संपरिखित्ते सा णं जगती अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मू

जपणो छइ | विचइ आठयोजन पहुली छै जगती | उपरि च्यारयोजन पहुलपणो छइ | मूलैं पिहुलो छइ मध्य विसंकीर्ण छइ

ले बारजोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं उप्पिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छि

त्रिसांगोपुच्छीने परि तनुकाया | गायनापुच्छनें संस्थानइं संस्थित छै | सर्ववज्रमइ छइ | स्वच्छ सुरंकनी परइं छै | लष्ठलष्ठ जनें | घरद्याघ वास्या | मद्या र्या | नीरजनिर्मलमल

ण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्ठा नीरी

रहित | नषंकनकंकदिनिरवरण बयाछइं | प्रभासहितछइं सश्रीकसोभायमानत छाकरणसउद्योतसहित | मननइंद्रा साइकारी | दरसलकर वायोग्यछइं | अतिरूपसन्मुषरूप दीसइं

या णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि

मूलापेक्षयाविस्तारात्रिंशताणमा अविस्तारतावा सू ३२

प्रतिरूप... एकजालिकट कांकीहै | इंमसघलें जालाजालीइं जगतीवीटी छै | तेजालाजालीइं अर्धयोजनऊंची छइ तेजगतीइंदीसइं

रूवा सा णं जगती एक्केणं जालकडएणं सव्वतो समंता संपरिखित्ता से णं जालकडए अद्धजोयणं उड्ढं

ऊंचपणैं छइ | पांचसइंधनुष पहुलपणइं छइं | तेजालीकटक सर्वरत्नमय छइ | स्वछ | सूक्ष्म ल | लष्ठ | घृष्ट | मृष्ट | नीरज | निर्मल | निष्पंक | निकंकम

उच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे नीरए निम्मले निप्पंके निक्कं

कायाप्रभासहित छइ | सश्रीकत | उद्योतसहित | प्रासादनीक | दर्शनीक | अतिरूप | प्रतिरूप छाजीपर इंविष्यात | तेजगतीउपरि | घणोमध्यभागइ

कडच्छाए सप्पभे सस्सिरीए सउज्जोए पासादीए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे तीसे णं जगतीए उप्पिं बहुम

तिहांमोटी एक पद्मवरवेदिका कही | तेपद्मवरवेदिका | अर्धयोजन | ऊंची ऊंचपणइं | पांचसइंधनुषपिहु

ज्झदेसभाए एत्थ णं एगा महं पउमवरवेइया पण्णत्ता सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच धणुसया

लपणैं | सर्वरत्नमइ जगतीनइं | समसरषी परतीछै | तेपद्मवरवेदिकानो | एहवोवर्णसंस्थानस्वरूपनो कीर्त्तन छइ जिलोते कहै छइ नेमि

इं विक्खंभेणं सव्वरयणामए जगतीसमया परिक्खेवेणं तीसे णं पउमवरवेइयाए अयमेयारूवे व

मवरणनछइं वज्रमैं नेम्मा वेदिकानो भूमिप्रदेस छइ रिष्टरत्नमय मूलपाद | वैडूर्यरत्नमयथांभला छइं | सोनारूपानांपारीयां छइ | वज्ररत्नमयपारीयांनी सांधिविचइ तेनोहीपूर्णी

ण्णावासे पण्णत्ते तं वइरामया नेमा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलगा वइ

र निर्मलआकंतुकभजालावात॥

फलकविकलानिकंकटा ननहवछन रात्नणनिरूपमातसिना वाह वायाही मयेसामन धकरछया स्वप्रलामरी कानघासम स्वरूपभाया प्रजावतीमा उद्योतभका सकारीनीर जा स्वंजावक जोरहनया

जालकडकजल संधनिफलपर वज्रलणलामइं णाघुटनटवनष ष्टारवजानया पाबालप्रतिमा ननमष्टानया च ३४ दर्शनायार्थान योग्ययाप्रश्नति अप्रकुर्षीअमनाज्ञेनी

केरवरालंमनुष्यारीगलिकलेव रसंघाडामनुष्य मरीरक्षुग्मानि ३९ वर्योय

सांधि छइं लोहिताक्षरत्नमि पाटीयानी सांधि नी षीली छै अनेकम अनेकमणिमय मनुष्यनां शरीर मयरूप युग्म छै अनेकरत्नविशे
णिमय मनुष्यना कलेवर शरीर छइं रनां युग्म छइं अनेकमणि षमइं ते रूनी

रामईदु संधी लोहियक्खमईउ सूइउ नांणामणिमया कडेवरा कलेवरसंघाडा णाणामणिमया रूवा रूवसंघाडा:

दिसत्तत छै एवं पक्ष वइं हस्तादिक ज्योतिरसामय वंसा छै येतिसरत्नमय वांसनुपरसाके वेलू प्रतीतरूपामें पाटीयां श्री
देसन्नत प्रतीति पविशेष जातिरूपमइं कोवडा कवार लिवइं.

अंकामया पक्खा पक्खबाहाउ जोतिरसामया वंसा वंसकवेलुया उरययामईउ पट्टिया जातीरूव

वज्रमि उपरि ढांकवाना त्रिलविसेष सर्वस्वेतरूपामें उपरलो ढांकवानो मो तेपद्मवरवेदिकाने तिहां २ एकेकइं
स्फटिकमाल छइं सीयांनि के वलछै विषइं.

मयी उहाडणी वैतिरामयी उवरिपुंछणी सव्वसेयारययामए छादणे सा णं पउमवरवेदया तत्थ २ एग

मगलना दामस एकेकेण वाल्हें रत्नवि एकेका खिंखणीजाला कणपक्षुद्र घंटका इम घंटाजालीइं इम उपोलेगे मणि
मोटछइं शेष इं

मेगेणं हेमजालेणं एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं खिंखिणीजालेणं एवं घंटाजालेणं जा

नीजालीइं एकेकी पद्मनी जालीइं सर्वरत्नमें छै सघले वोषफेर तेलेंते जगती वेष्टित छै तेज्यो लगइं लेरुसान्मग्न

वमणिजालेणं एगमेगेणं एगमेगेणं पउमजालेणं सव्वरयणामएणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता: ते

मंरूम तं विशेष छइं स्फ वर्णप्रकर मंडित छइं अनेक मणिमइं विवि हार एकसरो अर्द्ध हा तिणे समुदाइं करी सो
ध विचित्र रनवसरो भावे छै

णं जाला तवणिज्जलंबूसा सुवण्णपयरमंडिया नांणामणिरयणविविहहारद्धहारसोहितसमुदया

अमोमसलगारिक मांहोमां भवं पश्चिम दक्षिण उत्तरगते च्यार दिसनावायते धीलें लगारेक हालत कंपताखोभतइं
असंप्राप्त अलगा गारेक हलावइं तेगइं इं ते लइं.

ईसिं अणमणसंपत्ता पुवावरदाहिणेणं उत्तरागतेहिं णएहिं मंदायंथलिवा वलिया कंपंति खोलिया चाल

चलावें छे फेर दिषकी पलकी धामनो रुलरा वड घंट थकी कांनमन निनिवृत्ति स्फरक सघलइं चोषफेर शब्द संसोभकइं
उदारथकी तेल श्वहे से उदार मनोज्ञ अनुकूल करतइं

या फंदिया घट्टिया उदीरिया ततेणं पयसेउरालेणं मणुन्नेणं कणमिणनिव्वुईकरेणं सव्वतोसमंता आ

तेणी लक्ष्मीइं अतिहिं २ घणुं सोभता थका रहे. तेपद्मवरवेदिकाने उपरें तिहां २ देशइं २ तेलें २ वांमें घणा २ घो
इछइं

पूरेमाणे सिरीए अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति तीसेणं पउमवरवेतियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहू

डानां युग्म छइं हस्तीनां युग्म छइं घणा नरनां युग्म छइं घणा किंनरनां युग्म छइं घणा किंपुरुषनां युग्म छइं घणा महोरगनां घणा गंधर्वनां युग्म

वे हयसंघाडगा गयसंघाडगा नरसंघाडगा किंनरसंघाडगा किंपुरिससंघाडगा गंधव्वसंघाडगा

घणा वृषभनां युग्म छें इम सर्वरत्नमय छइं स्वच्छ घणा मणा नीरजा निर्मला निष्पंका निरावर्ण उपघात नथी प्रभासहित छइं
आच्छायुग्म छइं श्लक्ष्णमाल

उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडछाया स

सश्रीक छइं मनने प्रसन्नकारी देषवा योग्य अतिरूप जेहनें लें रूपनथी प्रतिरूप जेहने अनापकवंदादीसइं देसइं २
इं छइं य तो तेपद्मवरवेदिकाइं तिहां २

प्पभा समिरीया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तीसेणं पउमवरवेदयाए तत्थ २ देसे २

जीवाभिगम
१३३

तिहां २ घणी घोडानी पंक्ति निजमपाडली परइं संख इमरूय विषूकाबइं पासिं श्रेणि नाजेजेवे कनकावली नामिकनस्त्री
बइं कहेवते श्रेणिनेविषिकहोइ इमघोडानामे पुरुषनो युग्म

तिहिं२ बहवे हयपंतीउ तहेव जाव पडिरूवाउ एवं हयवीहीउ जाव पडिरूवाउ एवं हयमिहुणगाइं

तेमकनक होजोलगइं तेपद्मवरवे तिहां २ देसें २ तिहां २ घणी पद्मलतावें इमअसो चंपकल चूतस
दिकाइ कलता ता हकार

जाव पडिरूवाइं तीसेणं पउमवरवेइयाए तत्थ२ देसे२ तिहिं२ बहवे पउमलयाउ एवं असोगचंपगचू

वनलतावस अतिमुक्त कुंदल सामलता निसइं कुसुमि फूलि सालगेस विसकुता पीली मंजरि
नकलता लता ता त त रकादिदिसेनही रि

यावणवासीतिय अइमुत्तग कुंदसामलयाउ णिच्चं कुसुमियाउ जाव सुविभत्तपिंडमंजरिवडिंस गं

तेरूपवंतसक सर्वरत्नम सकुमा घस मस निरजव निर्मलव निपंकव आवर्णउपघात प्रतामहितवइं
धराविं यवें ल रा रा इ इ इ नही

कधरीउ सव्वरयणामइउ सण्हाउ घट्ठाउ मट्ठाउ णीरयाउ निम्मलाउ निप्पंकाउ निक्कंकडच्छायाउ स

किरणसहित उद्योतस मननें प्रश्नकारी देषवायोग्यव अतिरूपप्रति अर्थअधिकारघाबली तेपद्मवरवेदिका
सश्रीकवइं हितवइं वइ इ रूपएसर्व परइंकहेवते नइविषइंतिहां २

स्सिरीयाउ सउज्जोयाउ पासादीयाउ दरिसणिज्जाउ अभिरूवाउ पडिरूवाउ तीसेणं पउमवरवेदि

देस २ तिहां २ घणा आषेनासाथीयाकह्याबेंवीरविकइं सर्वरत्नमयवइं स्वच्छनिर्मलवइं तेसामाटइंलग
वन

याए तत्थ२ देसे२ तहिं२ देसे२ बहवे अरकयसोत्थियापन्नत्ता सव्वरयणामया अच्छा सिक्केणं ठेणं सं

१३३

इमकहि तेपद्मवरवेदिका तिहां२ देसइं२ तिहां२ तिणइंठामे काइंवेदिकानइं वेदिकानइंउपसइं वेदिकानइंप
ते नइ वेदि पासइं पाटीइ डंत्र

तेणं एवं वुच्चइ पउमवरवेइया तियाए तत्थ२ देसे२ तिहिं२ वेदियासो वेतियाबाहासु वेतियासफलएसु वेतिया

रालइं वेदिकानेंपडलतरेंषे थांभानेंपरांत सूचीषीली तथापीलीमु सूचीफलकइं सूचीपडांतर पक्षसंधानकइं पषि
सनइं पासइं रइं इ षइं इ

पुडंतरेसु खंभेसु खंभवाहासु खंभसीसेसु खंभपुडंतरेसु सूईसु सूईमुहेसु सूईफलएसु सूईपुडंतरेसु पक्खेसु पक्खे

नइंबांहि पषिनइंछेह घणांनस घणांपद्म ज्योसहस पत्र एसर्वरत्नमयवइं अकमालबैंसलषणकोमलवइं
रइं डइं ल

सुबाहीसु पक्खपेरंतेसु बहूइं उप्पलाइं पउमाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं सव्वरयणामयाइं सण्हा

घसा मसा निरज निर्मल निपंक निरावरणउपघातनथी प्रतासहितवइं सश्रीकवें उद्योतसहितवइं देषवा
रा रा

इं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं नीरीयाइं निम्मलाइं निप्पंकाइं निक्कंकडच्छायाइं सप्पभाइं सस्सिरीयाइं सउज्जो

योग्यवइं जेदीठइंमनप्रसन्न जेरूनइंतोलइंबी प्रतिरूपजजनरूपावडवें पाणीनारावानासरिषाजेमछत्राकारइंची
थाइं कुरूपनथी रादीसइं मोटा २ तराणेकह्या

याइं पासादीयाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं पडिरूवाइं महयावासिक्कछत्तसमाणाइं पन्नत्ताइं

समवंतकहेंअहो तेसामाटइं इमकही पद्मवरवेदिकातेमा नथाअनेरोपक्षोत्तरक पद्मवरवेदि सास्वतोनामवीतरागे
श्रमणा इ रइंकही हवइं गौतमा कानो कहत

समणाउसो से तेणट्ठेणं एवं वुच्चई पउमवरवेदिया २ अदुत्तरं च णं गो पउमवरवेतियाए सासते नो

DR. BHAU DAJI

जीवाभिगम
१३४

जेकहीइं नथी इमनथी आगिसें सास्वती छें पद्मवरवेदिकासगवनखंड सास्वती छें के असास्वती छइ

मधेऊपन्नत्ते जणं कयाविणावि जावणिच्चे पउमवरवेतिया णं भंते किं सासता असासता

गोयमा काइं सास्वती छइ काइं असास्वती छइ तेस्यामाटेइमगन इमकहिउं काइं सास्वती छइ काइं असास्वती छइ गोयमा द्रव्यथ

गो सियसासता सियअसासता से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ सियसासया सियअसासया गो दव्व

की सास्वती छइ वर्णपर्याईंकरी गंधपर्याइंकरी रसपर्याइंकरी फासपर्याइंकरी असास्वती छनिसछैं तेस्यामाटेइं गोयमा इमकहिउं

याए सासया वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता से तेणट्ठेणं गो एवं

काईसास्वती छइ काईअसास्वती छइ काईअसास्वती छइ पोमवरवेदिकानें तगवन कालथकी केतलोकालरहइ गोयमा अनंतकालसीवे सदीवछैनहीजाइ

वुच्चइ सियसासता सियअसासता पउमवरवेतिया णं भंते कालउ केवचिरं होइ गो णकयावि

एमनथी वर्त्तमानकाल चिंताइं सदीवछइ अनागतकालचिंताइं नहीकइं इमनथी अपर्जवसितमाटइं लतितवति अनागतइं हसें एवेदिका ध्रुवमेरुनीपरें नित्यधर्मास्तिकायनीपरइं सास्वती छइ

णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ न भविस्सति भुविं च भवति भविस्सति य धुवा णियया सासता अ

अरकय छइ पुंडरीकजलनीपरइं अविय छइ एहवीतेपद्मवरवेदिकाछइ तेजगतीनेउपरइं बाहिरपद्मवरवेदिकानइं तिहांमोटोएकवनखंडकहोतिहां अनेकजा

क्खया अव्वया अवट्ठिआ पउमवरवेदया तीसेणं जगतीए उप्पिं बाहिं पउमवरवेतियाए एत्थ णं एगे १३४

तिनोमहोटेहतेलो वनखंडें कहीइं कोइंकवणवेयोजनप्रमाणचक्रवालेज गतीनेफिरतोविश्कंभतेजगतीनेसरिखो जगतीनइंसरिखोफिरतोवनखंडकहोछइ कालोछइ नीलीवनमीछ नीलइं

मह वणसंडे पण्णत्ते देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं जगतीसमाए परिक्खेवेणं किण्हे कि

णेंघणइं अनेकसगडसंयाम करथधेधगादि यंनगोत्रविषयथसी छतेमके कैया छइ सरमछइ प्रअकारीछइ स्नकुमा जछ घणासोमना छें निष्पंक छइ

ण्होभासे जाव अणेगसगडरह जाणजुग्गपरिमोयणे सुरम्मे पासातीए सण्हे लण्हे घट्टे मट्ठे णिप्पंके णि

निर्मलछइ उपघातनी निरावर्णछइ प्रभासहितछें किरणसहितछें उद्योतसहितछें मननें प्रसन्नकारीछइ जोवायोग्यछइ मनोहररूपछइ प्रतिरूपएकछै तेवनखंडमध्यरीसइं की

म्मले निक्कंकडच्छाए सप्पभे सस्सिरीए सउज्जोवे पासादीये दरसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे तस्स णं वण

घणोसमोरमणीकरूमीसाग श्रीवीतरागेंकह्यो तेजिमकोइदृष्टांतइं मादलनाचर्मनोपुडोजेहवछै मादलपुडोजेहवो सरीयासरोवरनो

संडस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहानामए आलिंगपुक्खरेति वा मुइंगपुक्खरेति वा सर

उपलोसा गजेहवो आदर्शमंडलजेहवछै चंद्रमंडलजेहवो होइ सूर्यमंडलप्रसिद्ध बोकडानोचरमजेहवो वृषभनोचर्मजेहवछै वराहनो

तलेति वा आयंसमंडलेति वा चंदमंडलेति वा सूरमंडलेति वा उरब्भचम्मेइ वा उसभचम्मेइ वा वराह

चर्मजेहवो सीहनोचर्मजेहवो वाघनाचर्मजेहवछै बागजचर्मजेहवो दीपीचित्रकचर्मअनेक संकुप्रमाणकीलकसहसातिणइंताणेय करइंजेहवोकामघाइं

चम्मेति वा सीहचम्मेति वा वग्घचम्मेति वा छगलचम्मेति वा दीवीयचम्मेति वा अणेगसंकुकीलगसहस्स

अर्थस्थितछइ मनुष्यक्षेत्रबाहिरलासमुद्रनीपरें ×

आलिंगपुष्करटीका कांस्यताल छइ ते ने करेंवहिंबलो आलिंग जाइं छइ जतमें करकें हितणसंडइति

आलिंगोमुरजोवाद्यविशेषतस पुष्करचर्मपुट

आवडपचावडपालटी २ श्रेणीकरीजेह हुइं तेहपंकी श्रीवत्स स्वस्तिकलेंको वर्द्धमानस मत्स्यकचित्रविशेष जारविशे मारालषि
वाचमंगलालि दिसमांकीधां वलीसाथीया आपुरुषतेपरसा र मकरांडक ष णफूलफ

डिवासिगाम चित्तंते आवडपच्चावडसेढीसोत्थिय सोवत्थिय पूसमाणव वद्धमाणग मच्छंडग मगरंडग जारामराफु

१३५ लयरमपत्रक पत्रसमुद्रनातरंग वसंतल पद्मलतापु एहवां चीतरइं वि छायासहितसश्री उद्योतसहितछइं नानाप्र
मलनो गकजोस ता नीति त्रामछइं कछइं नेकनेरछइं कारना

प ल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगवासंतीपउमलयभत्तिचित्तेहिं सछाएहिं सस्सिरीएहिं सउज्जोएहिं नाणा

पांचवर्णना तणेकरी मणिकरीन उपसोभित तेकेहवा वरण कृष्ण १ नील २ रक्त ३ पीत ४ श्वेत ५ तिहांजेतेकालावर्ण
इं छइं छइं एहवापांचवरणनां तृणछइं नामणिछै

विहपंचवन्नेहिं तणेहिं मणीहि य उवसोहिए तंजहा किण्हेहिं जाव सुक्किल्लेहिं तत्थ णं जे ते कि-

तृणमणतेहवुंछेता वरणनो विशेषकहिउ तेकिंमकिंणीरीतइं कह्योछइं तेजिमकोइदृष्टांतें वर्णनोजेहवो वर्ण
इत्यरूप छइं

ण्हा तणा मणी य तेसि णं अयमेयारूवे वण्णावासे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा सेजहानामए जीमूते तिवा

अंजनसोवीरांजन खंजनमलि कज्जलदीवसी गवलमहिषशृंग गवलगुलमहिषशृंगनीकी तमरानीश्रेणिजेहवी शाम
नरत्नविशेष कामल षापतति गज थीडमनीगोलीजेहवीशाम

अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा भमरावलीयातिवा

तमरनीपांखजेहवी जांबूफलजेह अरीठाअरीठानीमं परिपुष्टहस्तीजे कोकिलहोइं हस्तीबुंकलतचा कृष्ण
पांखश्याम हुइं वोकुइं जाणेहवीश्याम हवोश्याम जेहवीश्याम जकजेहवुंश्याम जोके

भमरपत्तगयसारेवा जंबूफलेतिवा अद्दारिठेतिवा परपुठातिवा गजेतिवा गयकलभेतिवा क- १३५

स्तुंजेहवोहो सरद्रतिमेघसमेवादल श्यामहोइंकालोअ कालोकणयरजेहवोश्यामका तेत्रणिनोमणिनोएह एतादृशरू
इं मध्येजेहवोआचकास शीकजेहवोहोइं जुविवुठीयानुंफूलजेहवुंहोइं वोवर्णश्यामछइं प

ण्हकेसरेवा आगासथिग्गलेइवा कण्हासोएतिवा कण्हकणयरेतिवा कण्हबंधुजीवेतिवा भवेयारूवेसि

लगवननाएअर्थसमर्थ तेकालात्रणिनेंतणमणि एजीमूतादिकथकीअधिकश्यामहोइं इष्टइंमनोज्ञनकू जेदेषीनइंमनदेहनेनि
एअर्थसमर्थनही नामणिना कांइनइष्टतरहुइंको लहोइं श्चैवसिधाइएहवा

यानो तिणट्ठे समट्ठे तेणं किण्हा तणाणं मणीय एत्तो इट्ठयराचेव कंततराएचेव मणुण्णतराएचेव ल

वरणसीधंकरेकरा तिहांछवइं नीलावरणनामणिनो तेहनोएहवोवर्णनविशेषएतादृशरू तेजिमकोईदृष्टांतेंसंग
छइं जेते त्रिणकुइं पकहीउ तीरसो

मणामतराएचेव वण्णेणं पं तत्थणं जेते नीला तणा य मणीय तेसिणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते सेजहा

गोरीअंजनावरनी सीगोरीयानीपांष जीहोइंजेहवो नीलचासनोपि सूडोजेहवो सूयडानीपांषजे नीलीगुलाब नीलीतेसेद
जो जेहवीनी चासनीतोहोइं वजेहवो नीलो हवीनीली नील भेद

नामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा चासेतिवा चासपिछेइवा सुएतिवा सुयपिछेतिवा णीलीतिवा णीली

नीलीनीगोलीजेहवी होइं समुक्षानविशेषजेहवोहोइं गोरं वनराजीप्रतीत हलधरदेवनांवस्त्र मोरनीग्रीवा
नी नीलीमाश्रादि शेषे जेहवां

भेदेतिवा णीलीगुलियातिवा सामाएतिवा उच्चंतएतिवा वणराईइवा हलधरविसणेतिवा मोरगी

जेहवीनी पारावानीग्रीवाजेहवीनीली अलसीनांफुलजे वलिनांकुसुमजेहवां अंजनकेसकावनस्पतीविशेषतेहनो ले
ली हवांनीलां कुसुमतेकेशिकाकुसुम जेहवो ईं

वातिवा पारेवगीवातिवा अयसिकुसुमेतिवा बाणकुसुमेइवा अंजणकेसियाकुसुमेइवा णी-

नीलुंउत्पलकुवलय जेहवुं नीलोअसोकजेहवा नीलोकणयरजेहवो नीलोबंधुजीवबपुहरीउ अशोकादिजेहवा तेत्रिणिमणिनोएहवा नीलोवर्णहोइं गोतमए अर्थस मर्थनही
कुवलएतिवा णीलासोएतिवा णीलकणवीरेतिवा नीलबंधुजीवेतिवा भवेतारूवे सिया णो तिणट्ठे सम
तेनीलात्रणनो तेनीलामणीनो एथकी घणिइष्टतर घणोघणो नीलो रंग इष्टतर जाणवो आंजगें वर्णकहीउ एहवुं तिहांजेरा
ट्ठे तेसिणं नीलगाणं तणाणं मणीण य एत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव जाव वन्नेणं पन्नत्ते तत्थ णं जे ते
तोत्रणिनेअनेमणिनो एहवो वर्णनो निवेश एतादृशरूपकहीउ भगवंतनइं तेजिमकोईदृष्टांतइं उरभ्रनो रुधिर जेहवो होइ रक्त ससानो रुधिर
लोहितगा तणा य मणी य तेसिणं अयमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते से जहानामए ससरुहिरेति वा स
जेहवो रातो होइं मनुष्यनो रुधिर जेहवो उत्कटरक्त हुइं नाहनोउपजइ तोइंद्रगोपप्रथम वरसातावीजेहवा प्रथमउगतो सूर्य जेहवो संध्यारागजेहवो हुइ गुंजानोअर्द्धरागजेहवउ
सरुहिरेति वा णरसरुहिरेति वा वालिंदगोवएति वा बालदिवागरे वा संझब्भरागेति वा गुंजद्धराएति वा
वाटोहींगलोजेहवउं प्रवालरत्नजेहवो प्रवालंकुरजेहवो हुइ लोहिताक्षरत्नजेहवो हुइ लाखनोरसजेहवो होइं
जातिहिंगुलएतिवा सिलप्पवालेतिवा पवालंकुरेतिवा लोहितक्खमणीतिवा लक्खारसेतिवा किमि
कृमिरागकंबलजीरंगजेहवो रातो होइं चीणनी पाष्टिरासीजेहवी रातीहोइं जासुनाफुलजेहवो रातो होइं केसुनाफूलजेहवो रातो होइं पालीकाकोईवृक्षविशेषतेनाफूलजेहवो रातो होइं
रागकंबलेतिवा चीणपिट्ठरासीतिवा जासुअणकुसुमेइ वा किंसुयकुसुमेतिवा पालियायकुसुमेतिवा

इंद्रगोपःप्रथमप्रावृट्कालभावी कीटकविशेष × चिणदेशनिपने

रातोउत्पलजेहवो रातोअशोकजेहवो रातोकणयरजेहवो होइ रातोबंधुजीवगबपोहरीउजेहवो होइं एहवात्रणिनोमणिनोरू पहोइं गो० तिमअर्थसमर्थनही
रत्तुप्पलेतिवा रत्तासोएतिवा रत्तकणवीरेतिवा रत्तबंधुजीवेतिवा भवेयारूवे सिया नो तिणट्ठे सम
तेलोहितरातात्रिणनो मणिनोतेथकी पणि एथकी घणोइष्टतर रातोरंगहोइं आंजगें एहवोवर्ण कहीउ हवितिहांजेतेपीलात्रणिनइं
ट्ठे तेसिणं लोहियगाणं तणाणं मणीण य इत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पन्नत्ते तत्थ णं जे ते हालिद्दगा तण
मणिवइं तेहनो एतादृशरूपवर्णविशेषभगवंते कहीउ तेजिमकोईदृष्टांतइं चंपकसमानजात सुवर्णनीचंपकनीछालजेहवी हलदप्रसिद्धजेहवी हरिद्राभेद
य मणी य तेसीणं अयमेयारूवे वण्णावासे पन्नत्ते से जहानामए चंपएतिवा चंपयछल्लीतिवा हलिद्दातिवा हलि
हलदनीगोलीजेहवी हरियालपृथ्वीकायरूपजेहवी पीलीहोइं हरितालनोभेदखंडजेहवोपीलोहोइं हरीयालमाहनीगोलीजेहवी पीलीहोइं चिकुररागद्रव्यविशेष
द्दाभेएतिवा हलिद्दागुलियातिवा हरियालेतिवा हरीयालभेएतिवा हरियालगुलियातिवा चिउरे
चिकुरसंयोगरंगनिमित्तद्रव्यराग जेहवउं वरप्रधानकनकपद वरप्रधानकनकनिघर्षजेहवो सुवर्णनोविज्ञानजेहवो पीलो प्रधानपुरुषवासूदेवनां वस्त्रजेहवोपीलो
तिवा चिउरंगरागेतिवा वरकणएतिवा वरकणगनिघसेतिवा सुवण्णसिप्पएतिवा वरपुरिसवस
चांपानोफूलजेहवो कोहलीनोफूल पीलो तजेहवोपीलोहोइं पुष्पफलीनोफूल आमलानेली घोषातकीफूलमजेहवो पीलोहोइं सुवर्णयुथिकाकुसुमप्रसीद्धजेहवो

स्फटिकपत्रकासोनहलीनोकुसुम कोरटमालानादामनोकुसुमजे पीलाअसोकना पीतकणयरकुसुमजे पीलोबंधुजीवजेह
मजेहवोपीलो हवोपीलो कुसुम हवोपीलो वोहोइ
हियातिवा सुवन्नकुसुमेतिवा कोरिंटवरमल्लदामेतिवा पीयासोएतिवा पीयकणवेरेतिवा पीयबंधुजी
तेहनोवर्णएहवोपीलो हेगोतम एअर्थसमर्थनही तिहांजेतेपीलां त्रिणअनेमणि एहथीअतिइष्टपी आलोगेरंगवर्णनकहि
होइ नउ तउ उ
वएइवा भवेएयारूवेसिया नोइणट्ठेसमट्ठे तेणंहालिद्दा तणायमणीय एत्तोइट्ठतराचेव जाववण्णे
तिहांजेतेधोलावर्णना त्रिणनो मणिनो तेहनो एहवोएतादृशरूपवर्णविशेषभगवंते तेजिमकोइदृष्टांतइ
कहिउ
णंपन्नत्ता तत्थणंजेतेसुक्किल्लातणायमणीया तेसिणंअयमेयारूवेवण्णावासेपण्णत्ते सेजहानामए
अंकरत्नविशेष चंद्रमाजेह कुंदपुष्पजे उदकरजजे हंसनीश्रेणिजेह कोंचनीश्रेणिजेह हारनीश्रेणिजेहवी हंसनीश्रेणिहो
वो हवो हवी वी वीहोइधोली होइ इजेहवीधोली
अंकेतिवा चंदेतिवा कुंदेतिवा दगरएतिवा हंसावलीतिवा कोंचावलीतिवा हारावलीतिवा हंसावली
बलाहकपंखीयानीजेहवी चंद्रमानीआवली सरत्कालसाधीबलाहकोमे मेघसरत्कालेवरसीगयोधूमधोलोरूपानोपट कुंदपू
श्रेणिहोइ जेहवीहोइ घसरत्कालनोजेहनो इजेहवोसालिनोपीठजेहवोहोइ फनोसमो
तिवा बालाहयावलीतिवा चंदावलीतिवा सरतयबलाहयेतिवा धंतधोयरूप्पपट्टेतिवा सालिपिट्ठरासी धंत०
हजेहवोकुमुदनोसमोह फलीवल्लादिकनीफलीजे पिच्छनमयूरपिच्छनीमांहेंजीमांजाजेहवी धोलंअसोकजेहवु
जेहवोधोलोहोइ हवीधोली धोली
तिवा कुंदपुप्फरासीतिवा कुमुदरासीतिवा सुक्कछिवाडीतिवा पिहुणमिंजियातिवा भिसेतिवा मुणालियातिवा गय १३७

धोलोकणयरजेहवो धोलोहोइते पुंडरीककमलनो जायनाकुसुमजे नगोडिनोघधोलमालाव धोलोकणयरजेहवो
हाथीनोदंतजेहवो हवोत्रिण दलजेहवो हवोधोलो फजेहवो
दंतातिवा लवंगदलेतिवा पोंडरीयदलेतिवा सिंदुवारमल्लदामेतिवा सेतासोएतिवा सेयकणवीरेति
धोलोवकोहरातजे तेत्रणिमणिनोएहवो हेगोतमतिमएअर्थ तेधोला त्रिणिन अनेमणिन एहोएहथीपणि
हवउ रंगधोलोकहइ समर्थनही उ उ
वा सेयबंधुजीवेतिवा भवेतारूवेसिया णोतिणट्ठेसमट्ठे तेसेणंसुक्किल्लाणंतणाणंमणीणयए
इष्टतरघणोजरघणोअनगोजरंगधोलो आंएहवोवर्णकेवलीइकह्यो मणीनो केहवोगंधकह्योछइ तेजिमकोइदृष्टांति
आवीतरागेकह्यो तेतृणवनत्रणिनो
त्तोइट्ठतराएचेवजाववण्णेणंपण्णत्ता तेसिणंतेते तणाणयामणीणयकेरिसेगंधेपन्नत्तेसेजहानां
कोष्टगंधनिफन्न एलचीनापु चुयानापु तगरनापुडा गंधद्रव्यनिफन्नजायनापुडा जुईनापुडाबावनाचंदननापुडा
तेजादि डा डा
मए कोट्ठपुडाणवा एलापुडाणवा चोयपुडाणवा तगरपुडाणवा जातिपुडाणवा जूहियापुडाणवा
कुंकमंकेसरनापुडा बालानापुडाजेह चांपानापुडाजेह मरूयानापुडाजेहवा दमणानापुडाजेहवा जायनापु
जेहवाकहइ वा वा
अंकमपुडाणवा कुंकुमपुडाणवा तुसीरपुडाणवा चंपयपुडाणवा मरुयगपुडाणवा दमणपु-
डाजेहवा जुईनापडाजेहवा मालतीनापुडाजेहवा नवमालतीनापुडाजेहवा वासंतीनापुडाजेहवा
डाणवा जाईपुडाणवा जुहियापुडाणवा मल्लियापुडाणवा णोमल्लियापुडाणवा वासंतियपुडाण-

जीवाभिगम
१२८

केतकीनापुडाजेहवा कर्पूरनापुडाजेहवा पाडलनापुडाजेहवा एसर्वसुगंधद्रव्यवायैवातइं उघलादिकेंफूलीकरीसघामघेमक
वा थकइ उघलति थकें रीतिथकें

वा केयलिपुडाणवा कप्पूरपुडाणवा पाडलिपुडाणवा अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाणिवा णिब्भिज्जमाणाणिवा

घणुजस्लोभेकरु कूटवादिकसुरवुरमांधीचुरीइं चुरीतइंथकें तेहोगचतइंथकइ एहवेंहवीनआप एकनोकथकीवा
रता अनेपराविपरातिथकइ परीसाव लेइंथकें जेनोकेम

कोट्टिज्जमाणाणिवा उक्किरिज्जमाणाणिवा विक्किरिज्जमाणाणिवा परिभुज्जमाणाणिवा भंडाउवाभंडंसा

हरतइंथकइं उदारविस्ता मनो घ्राणेन मनन निवृत्तिना नाकरनारसर्व दिसइंगंधविस्तरतइं तेहनोतिणनोमणि
र त इ इ ता तसमता जेहवानंधहोइ नोगंधहोइं गौतम

हरिज्जमाणाणं उरालमणुन्नघाणमणनिव्वुइकरा सव्वतो समंता गंधा अभिनिस्सवंति भवेतारूवेसि

एअर्थसमर्थन तेतिण अनइंमणि तेथकीइष्टतरघणोसुगंधहो जोअणेंएहवोसुगंध तेतृणतृणमणिना
थी नो नो इनिश्चइं कहितेलइं

याणोतिणट्ठेसमट्ठे तेसिणं तणाणं मणीण य एत्तो इट्ठतराए चेव जाव गंधे पण्णत्ते तेसिणं भंते तणाण

अनइंमणि एथकीइष्टतर निश्चइंकेहवोफरस कहीउं तेजिमकोईद अजनचर्ममयवस्त्रजेह सीसूरवनस नवनी
नो घणो स्वामी कइ इष्टोतइं वोअजनकचर्ममेंरूपहवें सीविशेष तमोष

य मणीण य एत्तो इट्ठतराए चेव केरिसे फासे पण्णत्ते से जहानामए आइणेतिवा रूएतिवा बूरेतिवा णवणी

णजेह हंसगर्भजेहवी रूलकीसारीस कुसुमनोसमोहजेह तत्कालनवोउपनोकमलनो तिणनोमणिनोएहवोसकहा
वो नी संतली प वोसंगतो पत्रजेहवोसुकुमाल लोफरसकइं

तेतिवा हंसगब्भतूलीतिवा सिरीसकुसुमणिच्चएतिवा बालकुसुमपत्तरासीतिवा भवेयारूवेसिया १२८

हेगौतमअअर्थस तेतिण मणिनोएथकीइष्टनिवइंअतिघणोसुंवालोफरसजेकहिउं तेतिणनें पूर्व पश्चिम
मर्थनही नो

णोतिणट्ठे समट्ठे तेसिणं तणाणं मणीण य एत्तो इट्ठतराए चेव जाव फासे पण्णत्ते तेसिणं भंते तिणाणं पुव्वा

दक्षण उत्तरथकीआवतो एहिजहलावतंदेडीयाएं वतिखोसट्याएंखो चलाव फंदथक घट्टथकीएसर्वअर्थए
वायमोटइंमोटइं कंपयाणं कंपा समापाम तिं इ कज

वरदाहिणुत्तराणं तेहिं मंदाय मंदायएहिं वाएहिं कंपियाणं खोभियाणं चालियाणं फंदियाणं घट्टियाणं

केहवोसबद तेजिमकोई शिबकातथासंदमाणी तथाउपरिआच्छादि सछत्रविसे सधजध्वजासहित तोरणसहितविरा
उपजइलइ हथोति रथ कोछाकारइ ष जतइ

केरिसे सद्दे पन्नत्ते से जहा नामए सियाए वा संदमाणीयाए वा रहस्स वा सछत्तस्स सज्झयस्स सतोरणव

नेदिघोषतूर्यनोनाद घुघरीसहि हेमसोवर्णनीजालीइंपरि हेमवंतनीपरइंविचि मनोहरचित्रनीलपेतदारकष्टसं
जेणइसहित न विसंवेष्टितलइ त्र बंधीहेमवंथ

रस्स सनंदिघोसस्स सखिंखिणीहेमजालपेरंतपरिक्खित्तस्स हेमवयचित्ततिणिसकणगणिज्जुत्त

विलोनजेह विसुद्धचक्रमंडलहा कालावर्णलोकयरूमाकीधांनिमत्तकर्मबीजघर आकीर्ण धासवर तुरंगमेंसंजुतजेन
वते रतोआकारहे टीयंत्रादिकरजेहनइं पाईयं कालइ प्रधान लेधोकोजोतस्याहइ

दारुयागस्स सुविसुद्धचक्कमंडलधुरागस्स कालायससुकयनेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउ

कुसारथीकर्मनइंविषइंकुसलनरमांहेंअतिहिं सरनाम बत्रीसतोणसत्रविशेष सकंकटअवतसमि चापसहित
वेकदक्षलतेणेंफलइंजेरथ न मंडितलइ घर

त्तस्स कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहितस्स सरसयबत्तीसतोणपरिमंडितस्स सकंकडवडेंसगस्स सचावस

DR. BHAU DAJI

डीवासिनम
१३७

सरखाणसहितनें प्रहरणावरणतरकसकरखाणतेलेमस्येंलखाल्लि एहवोरथ तथा अंतपुरमारगइर कुट्टिमतलइं अनिक
नककुलतरुअरिनीरखणमुखयोध्रयुधनइविषइंसजवे रोयोगत परमलीकमलि ले२
सरप्पहरणावरणभरियाजोहजुद्धसज्जस्सरायंगणंसिवा अंतेउरंसिवारम्मंसिवामणिकोट्टिमतलंसि
कहेतांवारंवार अविघट्टमानस्यवेगजा लिहतिजिममननिस्पइं पचूढ प्रधा उरगाश्वनोवेगवेग वालतेथकेउदार
वारंवार तइंथकइं पाणावललेथकें न आदरेकयुक्ति मनोज्ञ
वा अभिक्खणं२ अभिघट्टिज्जमाणस्सवाणियाहम्ममाणस्सवा पदूढस्स उरगचडवेगाइढासस्सतउराला
कानर्निमनर्नेनिवृतिको सघलइंथावरअतिश्रवेतिकहिंतो एहलिनोएहवोमीतो एलाहुत्रारू होतेन एल्मर्षस
रीसुषनाकरनार विस्तरइंतइं स्वरहतइं पुतोइं म मर्षनही
मुणुण्णाकण्णमणणिव्वुइकरासद्दा।तोसमंतासव्वतोसमंतासद्दाअभिणिस्सवंति भवेतारूवेसिया:
तेजिमकोईदृष्टो वेतालीकातालविना उतरमुर्छनाइंगंधारस्वरो विनिवुरुषतथास्त्रीइंलेवी गर्दविदननो तेहनोनीपायो
तइं एकलीवीणा तर्गतसातमर्छाइंमर सोखलिरविनइं सार वाद्नगमात्र
णोतिणट्ठेसमट्ठेसेजहानामए वेयालीयाएउत्तरमंदामुच्छिताए अंकेसुपइट्ठियाए चंदणसारकोणपरि
मुषतेलेसंप्रष्ट नरनारीसमग्रहाथे प्रसुषकालसमाज्तिवेला मंदायां२ हलावइंथकइं खोसिंधक विशेषकंपाकेंध
करेंफरसेंडासो पहोनइं लेइनइं इंतथामध्यरात्रे कहलामोहें इं कइं
घट्टायाएकुसलणरणारिसंपग्गहिताए पदूससकालसमयंसि मंदायां२ एइयाए खोभियाए फंद
घटितथई फरसेंनरकागिने विस्ती मनो काननेंमननइंनि रूपकारीमधलेचोषफेरआडच्छ्लसिसवेतिकहें तोवि
करीमुर्छामिंयमानीनइं र्ला रो छतिकारी सरइंछइं
उदार
याएघट्टियाए उदीरियाए उरालामणोन्नकण्णमणनिव्वुत्तिकरासव्वतोसमंतासद्दाअभिणिस्सवंति:
उक्तं चवनेरिसहगांधारे मझिमेपंचमेसरेधेवए नवनेसएसरासितवियाहिया। नेवासमस्वराधुरुस समस्वरावुत्तसम्बीया
नानीतिसमरुइवंत

१३७

तेविणतोमणिनो नाएअर्थसमर्थ तेजिमकोईदृष्टो किन्नरदेवलोतथाकिंनरपु तथामहोरग तथागंधर्वएसर्वव्यंतरदेो
ज्ञावदछइं नही तइं रुष य
भवेयारूवेसिया णोतिणट्ठेसमट्ठे सेजहानामए किण्णराणवाकिंपुरिसाणवामहोरगाणवागंधव्वा
तइआलिवनमेरुनीप्रथमेष नंदनवनमेरुनीउपरली सोमनसवनमेरुनीत्रीजी मेरुनइंपंडकवनेंगयेथकें हेमवंतन
जाइंगइंथकइं चलिकानेविषे नीकाइंगइंथकइं रुतइं तरमो
णवा भद्दसालवणगयाणवा णंदणवणगयाणवा सोमणसवणगयाणवा पंडगवणगयाणवाहिम
टीमीमाको मेरुपर्वतनीगुफामांहइंआ एकवामेसहितएकठा परस्परसन्मुखसांहमा केल्लाहर्षवंतप्रमुदीतवत गीतनेंविषइंर
वतइं थिकइं मिलीबेंतइंथकें छइंतइंथकइं थकाइंबाछइं होतछइं
मवंतमहंतमंदिरगिरिगुहसमण्णागयाणवा एगतोसहियाणवा समुहागयाणंसन्निविट्ठाणपमुदिया
जेगंधर्वनाटिकादिकेहर्षितछइंमनजे गद्य पद्य कथापद गीतपदबं उपक्रिमप्रवर्तोचो मंद२स्वर रोचतावसानमोहें२वा
हवोगीतदत्तेर १ २ वेध ध स्वरो धतोस्वर
पक्कीयरतिगंधव्वहरिसियमणाणंगज्जंपज्जंकत्थंगेयपयबद्धं उक्खित्तपवत्तमंदरोतिगावसाणंसत्तस
समस्वरसमु आवरसइंकरीसंयु छदोषविप्रमुक्त इग्यारगुणनाअलंकारछेगीतनउसा आठगुणेकरीयुक्ते गुंजारवरो कहु
चयगता रुष्टगारादि छइं नारीकाथीजोएवो समहितछइं वद हर
सरसमन्नागयंअट्ठरससुसंपउत्तंछद्दोसविप्पमुक्कंएकारसगुणालंकारंअट्ठगुणोववेयं गुंजावक
उपरुद्धस्वर रक्त त्रिणस्थानां करशुद्ध२उरशुद्धगुंजारवेंकरी तंत्रीतलतालनाललयथहवार क्रमसंप्रयुक्तसहित मनोह मृदुमीठोस्वर
विशेष वे न कंठशुद्ध२सरिशुद्ध३तुंबाजेवंश विशेष र
कुहरोवगूढंरत्तंतिट्ठाणकरणसुद्धंसकुहरवंसंतीतलताललयगहसुसंपउत्तं मणोहरंमउ

नतुविषमज्ञान दसस्थानेनिति ए:॥ नीयउयमुप२ सिद्धमुत्ता नेच कममसोमुणी यद्वेकाकस्सर मुणप्रासिद्धेरो सालेनियुस

गंधारस्वरसिम मुर्छनासवंति नदियारवेंप्रा पतिनारबुद्ध इंकधरांधारीइं अतिरंगधारा इतिनइतविनि गंचिमीमुर्छसु पतिरअस्यमी नवीसानियम ज्ञानवीधवाउ तिरमछाइंहवइ सासतमास्था २तथासोडइ नुसरविरोस तपाराततसिमु र्वनानिणया इतिवननान

जीवाभिगम
१४०

नीलप्रकार पदनो संचारस्यालवते सांतलै सुनै सोतनधुरथकी वारूविशिष्टचेगें सउपेतलइं इं गोयप्रतीतगायनसरखें एहवोत्रिण
न सोतनरतिकइ वैहमालगइ मधधांनत्तनी संजायवें विबइंजेहवो सरखइ नोमणिनो

रिसियपयसंचारं सुरति सुनइ अणितरी वेवरूरूवं दिवंणदसंघणयं पमीयाणंलविआरूवेमि

एहवो शब्दकइं हाणो तमएवकी विशेषश्रा हेइं तिणति घणी नांहनी मोटी वाविकहो कमलघणाछइं वांकीवाविने
तेवनखंडतिहां तइं चिबइं देसे २ हिं २ ते पुरकरणी गुंजालिका

याहेताससयातसेणंवणसंडस्सतथ२देसे२तहिं२बहवेषुडाखुडियाउवावीउपुरकरणीउ गुंजा

दीर्घिका तेसार घणासरोवरएकपंक्तिइंते बिलतपंक्ति अतिनिर्मलसूक्ष्मप्रदरूपजा वोवैजेहनो वज्रमइ पाषाणपासाण
कहीइं एकपंक्तिकहीइं तितिरमलतांतलनिफन रूपामें कूलकां वैवैदूर्यरत्नमयसमोप्रदेशा वे

लियाउ दीहियाउ सरसीउ सरपंतीउ बिलपंतीउ अछाउ सण्हाउ रययामयकूलाउ वइरामयपासाणाउ

जिहांसूकरीकमेसरोवरमाहेंलेजिहां रूवर्णपीतरूपुं रत्नमणीतेहनी वेलूछइं रूषइंउतराइ रूषइंनीकलाइं
वइंसोनानीमेलमिलीतलोछइं श्वेत

वेरुलियमणिफालियपडलपच्चोयडाउ तवणियंमितलाउ सुवणउवलिरूपरयणमलिवाला

नानाप्रकारनेमणिएबांधेलछइं च्यारखुणे समोतीरकांठोछैजे उछुरूचीईरूजातरूपो गंभीरउंडो छइं सीतल
रूनउ बेसर जल नाठोछइं

उ सोहायारसोउत्तराउ नाणामणितिच्छसुबधाउ चउकोणाउ आणुपुव्वसुजायवप्पगं

जलकमलनेपांनढेकरीढांक्यो उतिसमस्तप्रकारें घणाछेजिहांउस नलिनपलि रूरागरू सुगंध पुंडरीक
छे रीतइंजिहां लकमल कमल मा क

भीरसीयलजलाउ संछण्णपत्ताउ भिसमुणालीउ बहुउप्पलकुमुयणलिणसुभगसोगंधय पोंडरी: १४०

रूतय सहेंसपत्रएसरवकमलनीजातिनांकेसरा षट्पद्भमरेकरीनेंपरिभुगमांम सछ निर्मलो पाणीएकरीपूर्णभरी
न अपवितसहितछइंजिहां तेणावेताघकान्सवकुर्हैतां वें छइंअतिप्रत्यतघणाउपतो

यसतपत्तसहस्सपत्तिफुल्लिकेसरोवचइयाउ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाउ अछविमलसलीलपुनउ

एहवीजातिनामछकाछ बलीअनेकप्रकारनापंषीयानामिथुननासमोह प्रत्येकइं पदमवरवेदिका प्रत्येकेंरजज
बाछइं जिहां तेणेंकरीप्रचरितछइंजिहां २ नें आ

पडिहत्थभमंतमछकछभअनेकसउणगणमिहुणपविचरिताउ पत्तेयं२ पउमवरवेदियापरिक्खित्ता

वनखंडेन परिक्षिप्तातकहें अपिएकहवोइंकोइं२ उदकआसवस्वादहसारि वाविनें विषें वारूणीसमुद्रना वाविनां पाणी खीरस
इ वीटीतछइं तोवाविनो निसरवीबाउदकछेंकोइं२ जेहवोपाणीछइं कोइं२ मद्रनाजेहवोपाणी

उ पत्तेयं२ वणसंडपरिक्खित्ताउ अप्पेगतियाउ आसचोदाउ अप्पेगतियाउ वारुणोदाउ अप्पेगतियाउ

कोइं२ वाविनो पाणी घृतोदकनइं कोइं२ वाविइंखुसमद्रनासरखां कोइं२ वाविनो पाणीप्रकृति प्रसन्नकारी एहवोच्या
सरिखोपाणीछइं पाणीछइं पाणीसरिखोस्वाद छे रविशेषणकहेवा

खीरोदाउ अप्पेगतियाउ घयदाउ अप्पेगतियाउ इखोदाउ अप्पेगतियाउ पत्तीए उदगरसेणं

ईहांसविस्तरपणइं तेनान्हीथकीमान्हीवावीन सोपानइंबिलनीपंकति तिहां देसे तेलइं वांमें सोपानें घणासोपाना
इ तिनी २ २ २ २ घणुंप्रतिरूपकस्या

पन्नत्ताउ पासातीयाउ तिसणं खुड्डियाणं वा बिलपंतीयाणं तछ२ देसे२ तहिं२ जाव बहवे तिसोवा

प्रतिरूपविशिष्टप्रति तत्रसोपा प्रतिरूपकने एहवा एतादृश वर्णवतोविकेरेकहीइ वैसेरूपि तेकिम वज्रमितमिथको
रूपकह्योछइं न इं रूप णइंमनकहू तिकल

णपडिरूवेगापन्नत्ता तेसिणंतिसोवाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा वइरा-

तोप्रदेश रिष्टरत्नमयमूल वैडूर्यरत्नमयथांभ सुवर्णरूपामयेंपाटीयां वज्रमेंसांधीवेरत्ने लोहिताक्षरत्नमेंखीली तेंपाटीयां
वैं पारवइं नाबइं वइजिहां सूईवइ ज्यकेनेही तेनवी

मियं नेमा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियमया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलगा वइरामयी संधी लोहितक्ख

अनेकमणिमेंजत्ररत्नें अवलंबनदेरवइं पासारेरिरूपतवास प्रतिरूपकनेंआगल प्रत्येकेंर तोरणकह्यां
वलंबन विरूपासांका रूपनीपरें अवलंबन हेतेंत्र सोपान ६

इसूइओ नाणामणिमया आलंबणा आलंबणबाहाओ तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो प

वइं श्रीवीतरागना अनेकमणिमयमणिमइं थांभानइं विषइं उपविष्टसमी केहवा निश्चलपणें विविधप्रांतरेरत्न
वानइं वइं रह्या वें कल्लाकहींइंमोंनही माफलनपचितमहि

त्तेयं तोरणा पन्नत्ता णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा विविहमुत्तंतरो

तचेंतेकेहवा विविधधराती रूपेंमगवि वृषभवल अश्वधो नरम मगरम विहंगपं व्यालगम किन्नर सरु सारंग हाथणी
चीनेंधरताइं रुष वृ धो नुष्य ब वी सर्प र न पंखी मो

वइया विविहतारारूवोवइता ईहामियउसभतुरगनरमगरविहंगवालगकिण्णररुरुसरभ

चमरी वनती पदमती एहवोसीतें चि थांभाउपरि वज्रमें वेदिकाइंपरि तथाविद्याधरयमलसमश्रेणियुगलवइंतेजात्र
मो लता लता ओभवइं गतअभिरोमरमणीकवइं यंत्रसिलियुक्तवइं विविधअनेकआर्चिकिरण

चमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजु

नासहस्रगमेमालनीया ऽस्नास रूपकसहंसकलित देदीप्यमानअतिसें विशेषें चक्षुलोयलनें भाता स्फर्षस्फरसव
फरइं पेति वइं वइं देदीप्यमानवइं कवायोग ६

ताविव अच्चिसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफा १४१

सश्रीकरूपव मननेंप्रश्रकारी एआरवि तेतोरणनेंउपरेंघणाअठ२मंगलीककह्या तेकेहा २ साथीउं श्रीवच्छ नंदावर्त्त
इंजेहनी शेषवणपाछलीपरइं वइं जोतवा १ २ ३

सा सस्सिरीयारूवा पासातीया तेसि णं तोरणाणं उप्पं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पन्नत्ता तं सोत्थियसिरिव

वर्द्धमान ४ भद्रासन ५ कलश मत्स्ययुग्म दर्पण सर्वरत्नमइं स्वच्छस्फटकमा तप्रमाणगैंप्रतिरूपविशिष्ट
६ ७ ८ रूपवइं

च्छ नंदियावत्तवद्धमाणग भद्दासण कलस मच्छ दप्पणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ती

तेतोरणनेंउपरें घणुंजघणां छत्रउपरिछत्र वइं पताकाउपरिपता यमदंडक कालाचामरनीध्वजा नीलाचामरनीध्व
कावइं इं जावइं

सेणं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्व

ज्ञा रक्तचामरनीध्वजा स्वच्छइंस्फटिक रूपामेंपाटोउपरलो तथामजयाणाती पारइंफणं पसन्नकारी वइं एआरवि तेतोर
कही नावइं पतिचैतमदंहलइं श्वेतें जेचांमरएतेरूपवें शेषवणपाछलीपरें

जाव सुक्किल्लचामरज्झया अच्छा सण्हा रूप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधिया सुरूवा पासातीया तेसि

णनीपरेंघ घंटानायुग्म चांमरनायुग्म चंद्रजजालकमल आलगोंलक्रपत्रसहंसपत्रसहितएहनो सर्वरत्नमय
ण वइं इं शेषसमरहवइं माथ्यांनपाछली परइं केहवो वइं

णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्व

स्वच्छवइं लघणपुद्गलहस्तीध्रुतिफनवइं मठा नीरज निर्मलछ निष्पंक आवरणरहितपघा सप्रभा सश्रीक
सर्वपनरबोलनी भाष्यपाछली घठारूपा रूपा वें इं वइं ताभी १० ११

रयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरी
परेंकहेवी

सउद्योत मनने प्रसन्नकारी देखवायोग्य सनमुखरूप प्रतिरूपवरूं तेनो वलीवावि ओलोंमें बिलनी
१२ रीछइ छइ दीसइ रहीसइ [illegible] पंक्तिमें

थासमउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तीसेणं खुड्डियाणं वावीणं जाव

विषइ तिहां २ देसे २ तिहांवांमें घणा अंतरादि देवनइं क्रीडाई कलार तरखोरला आरीसेने वेक्रीदेहाइ रूपसोम
वेक्रीयरूपकरवानी उत्पतिपर्वतइ १ गतिपर्वतकोइ नामविशेष दारु नि

बिलपंतियाणं तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उप्पायपव्वया णियतिपव्वया जातिपव्वया दारुपव्वयगा दग

मणिनपर्वतनीपरइं दगमंडप दगमंचक दगफरिकमइं दगकलसइं दगकलानाना दगकोइ डोलणा परकंडोलकदी
फुटकमं डपदगमंति मालो प्रसिद्ध सत्तभूमइति हिडोलयतपणें हींचोलो इ
आतमानोना डोलयतिति अंदोलगा

मंडवा दगमंचगा दगमालगा एवं दगपासायगा उसिरदं गाषड्डा हड्डा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्व

सर्वरत्नमय स्वच्छ श्लक्ष्ण कोमल घसा मसा नीरज निर्मल निष्पंक आवरणरहितप्रधान प्रभासहि सश्रीक
छइ ल सा सा ज तवर्जितः त

रयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सि

उद्योतसहीत प्रसन्नकारी देखवायोग्य अतिरूप प्रतिरूपवाछलीपरइं तेउत्पातपर्वतपर्वत ओलोंमें लाने विषइंघणा
री य प विष्यात नइंविषइं चा हंस

रीया समउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तेसुणं उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खंदोल

वैठानइं आसनइं हंसनरूपनें हंसकोंचासनइं उन्नतासनइं पणतासनइं दीर्घासनइं पक्षासनइं

एसु बहवे हंसासणाए गुरुडासणाए कोंचासणाइं उण्णयासणाए पणयासणाए दीहासणाए पक्खा १४२

जेहवो पंखीनो मयुरजातनो वृषभासन सीहासन पद्मासनाइं दिसास्वस्तिकासन वछासनदवीसांबीया आ
रूप लेष्याविं

सणाइं मयूरासणाए उसिभासणाए सीहासणाए पउमासणाए दसासणाए वच्छयासणाइं सव्वर

सर्वरत्नमय स्वच्छ श्लक्ष्णपुष्फलइं घसा मसा रजविना आगंडमलनोपर निपंक आवरणादि छायरहित प्रभासहित
छइ [illegible] निष्पन्न सा सा छइ लावइ छइ करहित छइ छइ

यणमयाइं अच्छाइं सण्हाइं घट्ठाए मट्ठाए णीरयाए निम्मलाए निप्पंकाए निक्कंकडछायाए सप्पभाइं

किरणसहितम उद्योतसहित प्रसन्नकारी दरसणीक अतिरूपवछ प्रतिरूपवछइं तेवनखंडनइं तिहां २
श्रीकांते छइ छइ छइ इ

समिरीयाइं समउज्जोयाइं पासादीयाइं दरसणिज्जाइं अभिरूवाइं पडिरूवाइं तेसिणं वणसंडस्स तं

देसे २ तेणें २ वणिघणी आलीवनसपती विशे मालीवनसपती विशेषनो घरछेके लीवन तिहांदेवतासकषेत्रमा वीबेसेने
षनाघरछइं सपतीनो घरछइं लतावनसपतीनो घरछइं अबनघरछे मरूननोघरछइं

त्थ देसे २ तहिं २ बहवे आलिघरगा मालीघरगा लेयघरगा अच्छणघरगा पेच्छणघरगा मज्जणघरगा

प्रसाधनघर जिहां बीजाइंगर्भघर मो जिहां आवीसेवाइंज जालीइंयुक्तघ कुसुमघ चित्रघ गीतनृत्यादिक्रिया आरीसेजम्याघर चित्रघरविचित्रसाला
नालिकादिक्रिया हनघरमेथुनकरि मकरतेसालियर रतेजालघर करक र सालिनघर

२ पसाहणघरगा गब्भघरगा सालिघरगा जालघरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आतंसघरघा: चित्रघरगा

एसर्वरत्नमय स्वच्छ सुकुमाल कोमल घसा मसा रजविना मलरहित पंकरहित आवरणादिरहित प्रभास किरणसहीतम
छइ इ ज [illegible] सा सा छइ छइ त छायाछइ हितछइ श्रीकांते

सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सि

जीवाभिगम १४५

उद्योतसहित प्रकाशनका देषवायोग्यछइ अभिरूपप्रतिरू बोलनोव्याख्यानपाछलीपरेंकहेंवोते ओलगेंआरीसानेंघरेंघणा
तछइ नीछइ पछइ १५ वनस्पतीविशेषादिकनेघरें

रीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तेसु णं आलिघरएसु जाव आयंसघ

हंसासन जिहांसाधीयानासिंघासनलगइंकहेंवो सरवरत्नमयछ प्रतिरूपतेहनेंनोलेरु तेवनषंडमांहइं
ना इ पनष्ठी

रएसु बहूइं हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं पडिरूवाइं तसणं वणसंड

तिल २ देसें २ तेलें २ वासिंघणजायनामां जुईनामांड मालतीनामांडवा नोमलिकावनस्पतीनामंडवा
डवा वा

स्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहियामंडवगा मल्लियामंडवगा णोमालियमंडवगा

वासंतीनामांड दधिवासकनामवनस्पति सूरछिवनस्पतीवि तंबोलीवनस्पतीविशे मुदिकावनस्पतीवि नागल
वा विशेषनामांडवा शेषमांडवा षमांडवा शेषमांडवा तार

वासंतीमंडवगा दधिवासुयामंडवगा सूरल्लिमंडवगा तंबोलीमंडवगा मुद्दीयामंडवगा णा

नस्पतीविशेषना अतिमुक्तावनस्पती सामलतानामां निसेंपुफीतफलीतछ निसेंफलितजिहांप्रति तेहनेंओल
मांडवा विशेषमांडवा डवा इ रूपछइं गइं

गलयामंडवगा अतिमुत्तमंडवगा सामलयामंडवगा निच्चं कुसुमिया निच्चं जाव पडिरूवा ते

सोमलतादिकनेमांडवें घणापृथवीसिलापट्टकआकारइंवें हंसासनआकारइं कौचासनआकारइं
नेकहेंवइं

सिणं जाव सामलयामंडवेसु बहवे पुढवीसिलापट्टगा तं हंसासणसंठिया कोंचासणसंठिया १४५

गरुडासनआका पनगासननइंआका परिवासआसननेंविशेष दीर्घसनआका नद्रासनआकारइं चमरास
रइं रइं नइंआकारइं रइं

गुरुलासणसंठिया पणयासणसंठिया परिवासासणसंठिया दीहासणसंठिया भद्दासणसंठिया च

ननइंआकारइं वृषभासनआका पदमासननइंआकारइं दिसोच्छीसाथीयानेंआकारइं तिहांघणापृथ्वीसय
रइं एहवाअनेकआकारकह्या नासनविशिष्टपृथ्वीसनसं

मरासणसंठिया उसभासणसंठिया पउमासणसंठिया दिसासोत्थियासणसंठिया पन्नत्ता तत्थ बहवे वर

स्थाननइंआकारेंकरीसंस्थित अहोश्रमणोआयुषमंतोकोमलकमायुंचर्मजातिरू फरसनीपरेंरूडफरूमालछें सरवर
छइंमकह्याआकाररह्या पृथ्वीप्रसीद्धवरीवनस्पती मांषण आकरतना नमयछइं इमकहेंवो

सयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया पन्नत्ता समणाउसो आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासमउया

स्वछछइं श्लक्ष्णछइं जष्टघशास्या मठास्या नीरजनिर्मलमलवि पंकविनाछ आवर्णादिरहितछ प्रभासहित
नाछइं इं इंछाया छइं

सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सि

किरणसहीत मननइंप्रसन्न दर्शनजोवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप तिहांघणावाणव्यंतरादेवतादेवांगना सुषइं
सश्रीक कारीछइं छइं छइं छइं

रीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तत्थ णं बहवे वाणमंतरा देवा देवीओ य आ

बेंसइंछ सुयेछइं रहइंछ बेंसेंउचीत णासीणा रमती अक्रीडाकइंक्रीडती क्रीडाकरें विशेषेंक्री मेथुन हर्ष
इं इं ठीनइं ल्हइं सुषइं षकीरहें छइं डाकरइं सेवीकरें साल

सियंति सयंति चिट्ठंति णीसियंति तुयट्टंति रमंति ललंति कीलंति कीडंति मोहंति पुरापुराणाणं

DR. BHAU DAJI

क्षिवाजिणम १४४

धनां सोधीलक लमाकीधां शुलिथर्मा कांतिकमनीय कर्मध शुभमंगलीककल्याण अनुभवता स्रोगवता थका विहरे
लाकीधा शुभनादि शुभात्मा एहवा की फलविपाक प्रत्येक नी कहेता विचरे छ

सुवन्नाणं सुपरिकंताणं सुभाणं कंताणं कंमाणं कल्याणफलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंती

हवे जंबूद्वीपना बारनी संख्या कहै छै। गोय बारद्वार प्रज्ञप्तानो ते केहा विजए जयंत अपराजित किहां भगवन जं
जंबूद्वीपई भगवन केतला बार कह्या छई मा म कह्या छई कहे छई १ २ ३ ते ४

जंबूद्दीवे णं भंते केवइया दारा पन्नत्ता गो० चत्तारि दारा पन्नत्ता तंजहा विजए वेजयंते जयंते अपराजिते कहि णं भंते जं वेजयंत २ वेजयंते ४

बूद्वीपनो विजय नामा बार किहां कहीउं गोय मा जंबुद्वीपे मेरुपर्वतथकी पूर्वदिसई पस्तालीस सहस्स योजननी अ

बूद्दीवस्स विजए नामं दारे पन्नत्ते गो० जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पणयालीसं जोयणसा
बाधाई मर्यादाई जंबूद्वीपनी माही पूर्वने छेहडे लवणसमुद्रने पूर्वार्धि दिसे पश्चिमने पासे सीता मोटी नदीने उ पखी

हस्साइं अबाहाए जंबूद्दीवे पुरच्छिमपेरंते लवणसमुद्दपुरच्छिमद्धस्स पच्चच्छिमेणं सीताए महानईए
परै एणे प्रदेसई जंबूद्वीपनो विजय नामा बार कहीउं आठ योजन उंचपणे छई च्यार योजन विस्कंभपिहुल पणई तिहां

उप्पिं एत्थ णं जंबूद्दीवस्स विजए नामं दारे पन्नत्ते अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खं
च्यार योजन प्रवेस भूमिकाई सेत श्रेष्ठ कनकमय प्रधान थुभलीनी सूपीकाबई जिहां मृगविशेष वृषभ अश्व घोडा मनुष्य मग २ पंखी व्याल सर्प

भेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेतवरकणगथूभियाए ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग १४४

ल किंनरथु रुरु मृगविशेष अष्टापद चमरी हस्ती वनलता पद्मलता एहवा चित्रामे करी छई थांभा उपरि वज्रमें वेदिका छई तेणई परिगत अतिहि रामण मनोहर छई विद्याधरदे वता

किंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते खंभुग्गतवइरवेइयापरिगताभिरामे विज्जा
युगल सम युगल श्रेणि थुभ्यै छै बेठा छै जुक्त छई अर्चि किरणना सामूहइ सहस्र गमे प्रकासमुदाय थोवत छई रूपसहस्र करी कलि तछई तेह सहित लीस देदीप्यमान छई देदी प्यमान छै चक्षुनई आलो कन रूप अति

धरजमलजुयलजुत्ते इव अच्चिसहस्समालिणीए रूवगसहस्सकलिए भिसमाणे भिब्भिसमाणे चक्खु
सेंकरी बैठां छै थके स्पर्स करी सश्रीक रूप छई इम वर्णन तेह बारनो ते किम छई वज्रमे नेमा नीम बीचकीनी क रत्नमय मूलपाद छई इस घर सबै जे हनो जेहनो करवो जेहनो प्रदेश छई रिष्ट जेहनो

लोयणलेसे सुहफासे सस्सिरीयरूवे वन्नओ दारस्स तं जहा वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वे
वैडूर्यरत्नमें थंभा छई जे जातिरूप सुवर्णई करी उपचित छई प्रवर प्रधान पंच रत्न कर्केतनादि केंबा सुवर्णमणि थोवा छई रूंडा इन्द्र नो हंसगर्भ रत्न विशेष तेमई लालकोट हनी मेचकरत्नमे गोमेज्ज रत्नमे इन्द्रकीलनै छै

रुलियामया खंभा जायरूवोवचितपवरपंचवन्नमणिरयणकुट्टिमतले हंसगब्भमए एलूए गोमेज्जमए
लोहनी तिबीमई रत्नमि बार पिंड बारनी साखा छई जोईसर रत्नमें उपलो त्रिबो काठो छई वैडूर्यरत्नमय कमाड छई जे बारने विषई वज्ररत्नमे संधि छई जेहनी

इंदकीले लोहितक्खमइ उदारचेडीओ जोतिरसामया उत्तरंगे वेरुलियामया कवाडा वइरामया सं
लोहताक्षरत्नमें धी अनेक मणिमई समुत्तिका छई जिहां वज्रमई अर्गला छई वज्ररत्नमई अर्गलानो पासो एहवई वज्र रत्नमई आ गली वर्जनपीठ

धी लोहितक्खमइ सूइओ नाणामणिमया समुग्गया वइरामई अग्गला अग्गलपासाया रय

जीवाभिगम
१४५

काष्टइंद्रकीला अंकरत्नमइं उत्तरंगापासां आंतरा विनानि बरक्रमा छे तिहैं वांसइं सीतांगुलीउ छइं तेछप्पन्नसंख्याइं छइं

गमतीयावत्तणपदिया अंकुत्तरपासके निरंतरतच्छणं कवाडे भित्तीसु चेव भित्तिगुलिया छप्पण्णत्ति

गोमया माणसनेपीढसंस्थानीया तिहांनेतलीराख्याछइं अनेकमणिरत्नमेंस पंनोरूपलइं जालीइं रहिंसालीसने जिकाछतली छइं वज्रमइं कूटमंडप नासागछइं रूपाम इं

न्नहोति गोमाणसित्तियाणाणामणिरयणावालरूवगलीलट्ठियसालिभंजियाए वइरामयाकूडा रय

उंचोछिप रत्नइं सरचतपनीयमेंचलोकत पत्ते सागछइं अनेकमणि जालपंजरगवाक्ष अमइं तेहनामणिमें छइं जेहनां लोहिताख्यमइं वंशाछइं प्रतिवं शाछइं रजतरूपा मइं

यामयाउस्सेहा सव्वतवणिज्जमए उल्लोए णाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगलोहितक्खपडिवंस

भोमि आंकरत्नमें पक्षबाहिवेपासा नीसोमि छइं जोतिसंरत्नमइं वंशाछइं वंसउपल्लाकवेलु छइं रूपामइं पाटीयां जगतीरूपामइं छाप विशेषछइं

रययभोमे अंकामयापक्खवाहाओ जोतिरसमयावंसा वंसकवेल्लूयाओ रययामयापट्टियाओ जातरू

कांबडांकवा नीवस्त्र वज्रमइं उपरिढांकवानांत्रि लविशेषसंक्रमाजेहैं सर्वस्वेतरूपामें उपरलो ढांकवानांकवेलु अंकमय अनतइं कनकमय कोटीधीछइं तपनीयमें छूलिका छइं जिहां

पमतीओहोली वइरामयीउवरिपुंछणी सव्वसेततरययामये छायणे अंकमयकणगकूडतवणिज्ज

वलीकेहवाछेस्वेतसंखतुल्यवलीविमल निर्मल स्वेतदधीघन समुद्र तेथकोपलिअतिहंसेवतलो गायनाद्य रजनीकस्वेदमानासरि थफीण षीप्रकाश तिलकरत्नतिजि कविशेष अर्द्धचंद्रचित्र विचित्र

थूभियाए सेते संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययनिकरप्पगासे तिलगरयणद्धचं

अनेकमणिमइंदामपुष्पतेह नीमालाइं अजेरुतछइं बाहिरमांहिं सुस्लक्ष्णफल निफत्तछइं जे तपनीयमइं जसक कूमाल बालुकानोप्रघार छइं जिहां तेहनोस्पर्श छइं

दचित्ते णाणामणिदामालंकिये अंतो बाहिं च सण्हे तवणिज्जवालुयापत्थडे सुहफासे सस्सि

सश्रीकरूप छइं मननिंग्रहा नकारी छइं विजयद्वार नइं बिंपासइं निषिद्दलिबेंसवानां वोम कहा छे बइंचंदनकंलशानी परिपाटी श्रेणिसगवंतेकही छइं

रीयरूवे पासातीये विजयस्स णं दारस्स उभओ पासे दुहओ निसीहियाए दोदो चंदणकलसपरिवा

तेचंदनकलशकेहवा छइं बरप्रधानवइंकमलसाका रवैसणी तथासुगंधवारइंकरी प्रतिपूर्णसंपूर्णछइं चंदनेंकीधी छइं चर्चकें बिंकविशतोदोरोबांध्यो छेजेहनेंकमलनइं आकारइं ढांकवानो छाजनछइं

डीओ पन्नत्ताओ तेणं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहा

जेहनइं सर्वरत्नमइं सुकुमाल सांलगइंसोलपद्दनोमाख्यानपाछली परइंकहेंछे प्रतिरूपछेमोटापें मोटा महेंद्रकुंभसमानोक्रमज्ञात्मवरक्रमाटोकह्या हेश्रमणआयुष्मतो विजयद्वार

णा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा महया महया इंदकुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउ

नइं बिंपासइं बइंसवानां वोमछइं बइंबइं णागदंतसरीषा अंकुरा कह्या तेणागदंताकेहवाछइं

सो विजयस्स णं दारस्स उभओ पासे दुहओ निसीहियाए दोदो णागदंतपरिवाडीओ तेणं णागदंता

मुक्ताजालिरूसितमघलइं छा मछइं हेमनीजाली छइं घंटाजालिचेष्टितछइं साहमानीकल्पा छइं सन्मुखनीक त्रिछीवीतीकुदेशइं छुश्रा तिराग्यइंपरिग्रहीनछइं

मुत्ताजालंतरूसितहेमजालगवक्खजालखिंखिणीघंटाजालपरिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिनिसिट्ठा तिरियं सुसंपग्गहिता

१४५

हेठो अधःपन्न अर्ध पन्नगनइं संस्था सर्वरत्नमय छइं निर्मल छइं सोलगें सोलवो प्रतिरूपादि मोहटा २ हाथीनां दंतू सलनइं
गनो रूप छइं नेसंस्थित छइं छइं क आकार इंछइं

अहे पण्णगद्धरूवा पण्णगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा महता २ गयदंतसमाणा

अहो श्रमणो आयु तेणा गदंतनइंविं घणा २ काला सूत्रनां वाटला वगघारित अवलंबित फूलनी माला जिहां लगें स्वेत सूत्र
ष्मंतो षइं नासमो छइं जिहां नांवाटलां अविलं

पण्णत्ता समणाउसो तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा जाव सुक्

लंब ते फूलनी माला छइं ते फूलमाला इं तपनीयमें लंबूसा हिरनो मोटो आ स्वर्णना तार अनेकम नाना प्रकारनां मणिर
नाकला पसमो होरे कारं रूमतां छइं तेके हवो छइं णिरत्नमय लना अनेक हार अर्द्ध

क्किलसुत्तवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा तेणं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरगमंडिया णाणामणिर

हार ले णइं जाव तू शाष्ट घणी सश्रीक सोहा ते लोंकरी अती व २ परिपाटी इं करी कहें वो तेसिणं ते नागदंतनइं उपरइं अनेरा
यमां नरूप छइं ते उपसो भित थकों रहइ छइं

यणविविहहारद्धहाररा जाव सस्सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति तेसि णं णागदंताणं उ

बे बे नागदंतानी परिपाटी क पन्नता उकहें ल तेसिणं नागदंते मुक्ताफल मोतीनी जालीसेंलें लिमआलगइं
हवा कहें वो ते करी व्याप्त छइं

वरिं अन्नाओ दो दो नागदंतपरिवाडीओ पन्नत्ताओ तेसि णं णागदंताणं मुत्ताजालं तरुसियाओ तहेव जा

हे श्रमणो आ तेणागदंतानइंवि घणा रूपामइं सिकां श्री वीतराग तेरूपांकहें तां रूपामइं सिंकानइं घणा २
युष्मंतो षइं इं कह्यां ते विषइं

व समणाउसो तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसु णं रययामएसु सिक्कएसुं

वैदूर्यरत्नमें धूपघटी भाजन विशेष कही धूप धा तेधूपघटीमां कृष्णागर प्रवर श्रेष्ठ कुंदरू उरक सोजवु ते हवो मेंघमघा
नइंते छइं कवी द जे धूपते यमा

सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पन्नत्ताओ ताओ णं धूवघडीओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क

न अतिसें अतिरोम सुगंध सोरं गंध इं सुगंध इं करी वर्जित उदार स्फा मनोज्ञ मनने ग घ्राण नासिका नेंमनने निर्वृत्ति
धूप मनोहर वें तजे हनी छइं र मता कारी तें

धूवमघमघंतगंधुद्धयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ उरालेणं मणुन्नेणं घाणमणनिव्वुइक

ते णइं गंध ते दूकरा प्रदेशनइं सघलें चोषफे घणुं घ अतिहिंघणी लक्ष्मी इं करी सश्रीक विजयनामा द्वार बइं पास बेंसवा
करीनइं २ पूरतइं थकइं णे सोहतुं आलगीरहइ छइं नइ ई

रेणं गंधेणं तय पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ अतीव सस्सीरीए जाव चिट्ठंति विजयस्स णं दारस्स उभ

नइं थानकइं बइं बइं सालिसें जिका परिपाटी वीतरागे ताउणं ते सालिसंजि लीलाइं ललितांगनेंवसें रूपे रही छइं सकुच अ
नी कही का रूप्रतिष्ठ मनोज्ञ नि प्रतिरही छइं तिसइं

यपासिं दुहतो णिसीहियाए दो दो सालभंजियापरिवाडीओ पन्नत्ताओ ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठिती

रमणी क अलंकृत छइं अनेक रंगनां वस्त्र अनेक प्रकारनी फूलमा मुष्टि ग्रही छइं मध्य प्रदेश जे छइं आमेला आपीड
पहइं स्यां छइं लापहिरी छइं जे हनो सिषर क जमल

ताओ सुपतिट्ठिताओ सुअलंकियाओ णाणारागवसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठिगेज्झमज्झाओ आमेल

सम श्रेणि युगल युग्म वाटला नेत थकी अलक न्नत पीण पुष्ट रति कारी सेलहू कारी असीति केशनषी एल जे स्वेत केश छइं प
एह जिणइं ते हनो मनोहर पयोधर छइं रक्त पांगनयन मन अलंकृत वें हइं णि सांम केशनषी मृदु कोमल विस्र

गजमलजुयलवट्टियअब्भुण्णयपीणरतितसंठियपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउविसय प

जीवाभिगम १४७

निर्मल प्रसस्त लष्यणबैसंवेल्लित किपलीलत अशोकवरतरूनाभालविइं नाचइं लषेग्रहीलइं अग्रसाष लगारेकत्रीलीदृष्टि
अग्रविराजमस्तकेकेशलइं जेहनइं । जेलीइं

सल्ललरूकणसंवेल्लितग्गसिरयाउं असोगवरपायवसमुट्ठियाउं वामहत्थगहियग्गसालाउं इसिअद्ध

कराक्ष तेणेकरीचे तेणेकरी कामीपुरुषनइं मनरूपइ ज्यनइं अस्यो अस्तिंलुंढीनथीजो तेकेहवीछवीनो परिणामइं पर
रूप छिलंबे लूटीतथी जांणे जेनमथकी रहइं छइं णमीछइ नही

च्छिकरूक्कइचेठ्ठितेहिंलूसमाणीउंचरकूलोयणलेसाहिंअण्णमण्णंखिज्जमणीउंइव पुढविपरिणामा

माखन ला वइं एमीलइं खिज चंद्रमानासरि चंद्रमानी परें विलास चंद्रमानासरिषोनीला चंद्रमाथकी अत्यर्थ सोमदृष्टी
यछारनी परइं षोमुषछइं नीरूषकारीछइं ठलइं जेहनो छइं जेहनो

उंसासयभावेमुवगयाउं चंदाणणाउं चंदविलासिणीउं चंदद्धसमनिडालाउं चंदाहियासोमद

तेजइं करी अतीचपल सेघनतीधकीविद्युतीकोंहें विजयद्वारनइं बिंपासें चइं छइंसघानंसंघोनक छइंछइं जा
णं २ तारहइं छइं

सणाउं तेयसाअईव उक्कासोनेमालीउंचिट्ठंति विजयस्सणं दारस्स उभयोपासिं दुहतो निसीहि

लि कटकतीर्थकरे कह्या तेजालिकटक सर्वरत्नमयछइं स्वछछइं रूडुं मालछैया वलशष्टथकी अति
रूप

याए दो दो जालिकडगा उज्जलाउं तेणंजालिकडगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव अभिरूवा

शतिरूपसो लबोलना अर्थमर्व विस्तारें कह्या बेंनिषेधकानइं छइं२घंटानीपरिपाटी अतिशीघी तणि घंटा
तेविजयद्वारनइं बइंपासें वीमें तारागं कही नो.

पडिरूवा विजयस्सणं दारस्स उभओपासें दुहतो णिसीहियाए दो दो घंटापरिवाडीउं पन्नत्ताउं तेसिणं घं १४७

एहवेणलाट्झारूपवर्णव श्रीवीतरागइं तेकहें जेबनंदाम घंटाछ वज्रमइं लालीछइं अनेकमणिमइं घंटानांपासां
कह्या छइ इ इ छइ

टाणं अयमेयारूवे वण्णावासेपण्णत्ते तंजहा जंबूणदामईउ घंटाउं वइरामईउं लालाउं णाणामणिमइं घंटा

दीर्घस्वरोयासंता मेघस्वरा

तपनीयमइं सांकल वज्रमइं दोरछइं संघलइं तेघंटाकेहवीछइं उघइंप्रवाहघणो स्वरछइं जेहनं हंसस्वरछ इं क्रौंच
छइं जेहथी बांधी छे बाधवाना उमेघस्स रछें इं

पासा तवणिज्जमइं उसंकलाउं वइरामइउ रज्जूउं ताउंघंटाउं ओहस्सराउं मेहस्सराउं हंसस्सराउं कोंचं

स्वरछइं नंदीसरानंदीघोषछइं एतले सीहस्वरछेसी सीहनीपरेंघोषछइं जेहनो मंजुस्समीगोस्व छेंजेहनो स्वस्तुष्ट
मोटोस्वरछइं हस्वरछइं रछइंमंजुस्वमीगोघोष स्वरछइं मनोहर

स्सराउं णंदिस्सराउं णंदिघोसाउं सीहस्सराउं सीहघोसाउं मंजुस्सराउं मंजुघोसाउं सुस्सराउं सुस्सरणि

रूस्वरमीघोजेहनोघोष उदारविस्तीर्ण मनो कानेंमननेंसु छइंजेघंटानाशब्द वाजतांथकांविश्व विजयद्वारने छइंपासे
छइं तिलेंप्रदेसइं र्ण ज्ञ प्रकारी ए रइंछइं

ग्घोसाउं तेपदेसेउराजेणंमणुण्णेणं कण्णमणणिव्वुइकरेणं सद्देणं जाव चिट्ठंति विजयस्सणं दारस्स

विचिंनिषेधकी नेतोमें छइंसघानिमाला परिपाटीकही तेवनमालीकेहवीछइं अनेकद्रुमलताकिसलयटी
नी

उभउपासिं दुहतो निसीहियाए दो दो वणमालापरिवाडीउं पन्नत्ताउं ताउंवणमालाउंणाणादुमलयकिसल

सांतथायतत्वसुकुमालेलेइं षटपदस्तमपरिलम मलनीपरइं सोहतनीस प्रधानकारीछइं एग्यार तेपदे उदा भोल
रीएनीगवतीक श्रीकरूपछइं विशेषणपानूलीपरइं कहे शे र नइं

यपल्लवसमाउलाउ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलसोभंतसस्सिरीयाउं पासाईयाउं ४ तेपदेसेनराणेजाव

डिवा सिगम
१४८

गंधस्कंध आपूर्तेः केंसा रहइ छइ विनयद्वारनइं बइं पासे बइं निषेधकनइं वामइं बइं छइं प्रकंठकपीठवि

तिसु णं आपूरेमाणीरडा चिट्ठंती तिविजयस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसीहियाए दो दो पगं

विशेषकस्या ते प्रकंठकपीठविशेष च्यार योजन लांबपणाइं पिहुलपणइं बइं योजन जाडपणा सर्वरत्नम बइं रूपणइं छइं

ठगा पण्णत्ता ते णं पगंठगा चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेणं दो जोयणाइं बाहल्लेणं सव्ववइरामया

स्वच्छ छइं जाव यावत् प्रतिरूप सो ते पीठविशेषनइं उपरि प्रत्येकइं २ प्रसादावतंसक ते प्रासादवतंसक प्रासादविशेष

अच्छा जाव पडिरूवा तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं पासायवडिंसगा पण्णत्ता ते णं पासायवडिंसगा चत्तारि

च्यार योजन ऊंचपणइं बइ योजन लांबपणइं पिहुलपणइं [illegible] निकल्या [illegible] अनेक मणि दिसि विदिसइं विस्तरी छइं

जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिता विविहमणि

[illegible] कलितं [illegible] योजन प्रमाण [illegible]

तत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्तातिछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहमाणसिहरा जालंत

[illegible] विशेष मणिरत्ननी [illegible] तिलकरत्न [illegible] आकारइं [illegible]

ररयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीयतिलकरयणद्धचंदचित्ता

१४८

अनेक मणि [illegible] बाहिर [illegible] तपनीय [illegible] पुष्प [illegible] प्रसन्नकारी

णाणामणिमयदामालंकिया अंतो बाहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरिय

विशेषण ते प्रसादवतंसक [illegible] मनोहर [illegible] आलिंगमा [illegible]

रूवा पासातीया तेसि णं पासायवडिंसगाणं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता से जहानामए आलिंगपु

[illegible] मणिनां वर्ण गंध फरस [illegible] ते प्रासादवतंसकनइं [illegible]

क्खरेति वा जाव मणीणं उवसोभिए मणीणं वण्णो गंधो फासो नेयव्वो तेसि णं पासायवडिंसगाणं उल्लो

[illegible] सर्वतपनीयमइं प्रतिरूप छइं तेसि णं [illegible] रमणीक [illegible]

या पउमलया जाव सामलयाभत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमया पडिरूवा तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं

[illegible] प्रत्येकं २ मणिपीठिका कहीइं ते मणिपीठिका एक योजन लांबपणाइं [illegible]

भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओ णं मणिपेढियाओ जोयणमाया

पिहुलपणाइं छइं अर्द्ध योजन जाडपणे छइं सर्वरत्नमइं छइं प्रतिरूप छइं [illegible] ते मणिपीठ [illegible] प्रत्येकइं २

विक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वरयणमईओ जाव पडिरूवा तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं प

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
[illegible]

द्वि जीवाभिगमः
१४७

सीहासनकह्या तेसिंहासननो एहवो वर्णवा विशेषइं करीनइं अरूपवर्णवकहीइं तेजहा तेकिम तपनीयमइ पाइया
म हेठइं अटेगइं

तेयं २ सीहासणे पन्नत्ते तेसिणं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पन्नत्ते तं जहा तवणिज्जमया

रजतमइं सीहआकारनो सोवर्णमइं पाइ अनेकमणिमय पादपीठका पाया जंबूनदमि वज्रमय एवड़ सांधि एतलेव
रविशेष या कह्यानां गातमइं तमांधनीमेषला जिहां

चक्कवाला रययामया सीहा सोवण्णिया पाया णाणामणिमयपायपीढगाइं जंबूणयामयाइं गत्ताइं व

जनीपरिसो अनेकमणिमयस्वचित तेसिंहासननेविषाविशेषे वष भोगीएहवा सिंहासन सारमांसार प्रधांनमांप्रधा
धिवइं वांनइंछइंजे हनो षइं ष त नीसितइं चित्रामछइं तएहवा विवि

इरामया संधी णाणामणिमय विच्चे तेणं सीहासणा ईहामिउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता ससारसा

धप्रकारनामणिरत्न आछरणनाचादर निकेहवामहुको तवचाजेह तथामदरसरूपसामहकेम तेवश्चेतेन अतिशय
पइंपादपीठछइं मलमसरउषविशेष सुकुमाल वो नीवरं सकुमाल कोमलइं मनोहेइं

रोवइयविविहमणिरयणपायपीढा अत्थरगमिउमसूरगणवतयकुसंतलिच्चकेसरपच्चत्थुयाभिरा

करीउपवि एहवाअछसक्ति वानइंसुविरचअतिरमणीकत डांक्याछइंसिंहासन अजनिकवमनावस्त्ररूतपुरसीधतूर
तछइं नइंतेवस्त्रराख लेगतिवस्त्रइंकरीनइंसरस जेणेसुरूरम्यछइं वनसतीविशेषनवनीतमांषलाजेह

माउवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणा सुविरइयरयत्ताणा रत्तंसुयसंवुया सुरम्मा आईणगरूयबू

बुतेषक्रीमहुको मनतैसभालकारीएमा तेसिंहासननेउपरइंप्रत्ये विजयदूष्यवस्त्रविशे तेविजयदूष्यवस्त्रचित्रविशेषकहि
मलफरसछइं रतिशोभणपाछलीपरे कइं प्रत्येकइं षकहेतो तेतेविजयदूष्यकेहवाछइंस
तले

रणवणीयतूलफासा पासाईया ४ तेसिणं सीहासणाणं उप्पिं पत्तेयं २ विजयदूसे पन्नत्ते तेणं

१४७

केहवा संख जेहवो कुंदपुष्फ जेहवो पाणीनाकुंभारा जेहवा अमृत जेहवो ने
हवो क्षयक्षय हूष्यवस्त्र फेणनापुंजनैसरीखो स २
तेनइं पिणसर्वरत्नमयछइं स्वच्छछइं स्लक्ष्ण सुकुमालछै

विजयदूसा सेया संखकुंददगरयअमतमहितफेणपुंजसन्निकासा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा

जावतेराभ्रुपक्रीकातिरूपषं दूष्यवस्त्र घणेमध्यदे प्रत्येकें २ वज्रमयछ अंकुशाकहावी
तिरूपादिसोलियएवषांणवांविसतरपणइं तेविजय नइं अग्राग इं तहांकह्या अंकुशाकारा मुक्तादामा व लंबना आश्रय नता

जाव अभिरूवा पडिरूवा तेसिंणं विजयदूसाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वयरामया अंकुसा पन्नत्ता

तेवज्रनाअंकुशानइं प्रत्येकइं २ अंकुशानइं आकारैं मुक्तानइंदाम तेअंकुशाकारमुक्ता अनेरच्यार तेहनी
विषइं अवलंबनतीनहांगेकह्या दामनाअवलंबनइं

तेसु णं वइरामएसु अंकुसेसु पत्तेयं २ कुंभिक्का मुत्तादामा पन्नत्ता तेणं कुंभिक्का मुत्तादामा अन्नेहिं

अर्धमात्राउंचपणइं मगधदेशप्रसिद्धकुंभप्रमाणमुक्तादामसघलीदिशि व्यापछइं तेदामनीतपनीयमें लंबूसगाकुं
मइंपरिक्षिप्तकहेतां

चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता तेणं दामा

मतानी सुवर्णनइंपत्रकरैंमंडित भोलगेरहइंछइं तेप्रासादवतंसकनइं उपिकहेतांउपरइं घणा आठआठ मंग
परइं २ २

तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडिया जाव चिट्ठंति तेसिणं पासायवडिंसगाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ

लीककह्यां साथीयादिकआठमंगलीक उपरिछ विजयद्वारनइं छइं पासेंछइं छइं २ तोरणकह्या विजयनामाद्वारइं तो
कह्यांतिमजछत्र त्रछइं निषेधकसवानइंठामइं रणश्रीवीतरागेंकह्या

मंगलगा पन्नत्ता सोत्थियाइं तहेव छत्ता विजयस्सणं दारस्स उभओ पासिं दुहओ निसीहियाए दो दो

तेतोरण अनेकमणिमइंछइं तिमजपाबलीए मोलगइंआवरमाजीक रिबरह तेतोरणनइंआग बइंबइंनागदं
रइं धजामहितबइंछत्रपर इं लइं नोआवी
रणपन्नत्ता तेणं तोरणाणं णाणामणिमया खंभा तेवजाव अट्ठट्ठमंगलका धया छत्तातिछत्ता तेसिणं तोरण
नरागक तेणागदं मुक्ताजालनइंमितमिष्टबइं तिमजपाबलीपरें तेणागदंतानेविषइंघणा कलका नावारला
त्या ना कहेवउ जासूत्र रुला
णं पुरतो दो दो णागदंतगा पन्नत्ता तेणं णागदंतगा मुत्ताजालंतरूसया तहेव तेसु णं णागदंतएसु
वग्घारितमल्लदामना कलापजेसमोज्जोविइंतिकहेतारहइं तेतोरणन आगल बइंबइंघोडानासंघाड पावतशष्ट
बइं इं इं गमइंकह्या बकीरूप
बहवे किण्हसुत्ताबद्धवग्घारितमल्लदामकलावा जाव चिट्ठंति तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो दो हय
संनासंघाडायुगमकह्या सर्वरत्नमयछइं निर्मलबइं जावसरूष्ट्रकीपंक्तीवाहनथीश्रेणिमिथुन बइंबइंआपद
ह्यीवृषभयुगमकहइंवो मलतामाय
संघाडगा जाव उसभसंघाडगा पन्नत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव एवं पंतीओ वीहीओ मिहुणा
तिरूपकहेंबी तेतोरणनइं आगलइं बइं२चंदननाकलशाकह्या तेचंदनकलसकेहवाछैवरप्रधानकमलनाम
रथीबैसलीबइं
दो दो पउमलयाओ जाव पडिरूवाओ तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो दो चंदणकलसा पन्नत्ता तेणं चंदण
तिमजसर्वरत्नमयछइं ओलोंपप्रतिरूप तेतोरणनइंआ बइं२मोटोसिंगारकह्या तेकेहवाबइं मोटा२म
बइं गले त्ता
कलसा वरकमलपतिट्ठाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो दो भिंगारगा १५०

यमातालाहथीना मुखनेआकारेंसरिषाक अहोश्रमणोआयु तेतोरणनइंआग बइंबइंआतंसकआरि
ह्याबइं षमंतो लइं साकलाजेकेहवाबइं
पन्नत्ता महीया२ मत्तगयमुहागयसमाणा पन्नत्ता समणाउसो तेसि णं तोरणाणं पुरतो दो दो आ
तेआरीसानो एहवोएतादृशरूपवर्णविशेषआवलनरागला तेकेहोछइं तपनीयमेंप्रकंबकनामापीव वैडूर्यर
वानइं कहीउ विशेषकहिउ लमय
यंसगा पन्नत्ता तेसिं आयंसगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पन्नत्ते तं जहा तवणिज्जमया पयंठगा
लांसामुष्टग्रालपाइंकप्रदेशाबइं वज्ररत्नमयवा अनेकमणिमइंवलकाष्टेखलादिअकरत्नमिंमंडलजिहांप्रतिहोबेसंतवरू
रंगानाडांइसर्व पामइंवलयतेबइं अलोपघस्याबइं उणछपेलेहनीनिर्मलवा
वेरुलियामया थरुहा वइरामया वारंगा णाणामणिमया वलक्खा अंकमया मंडला अणोघसि
याआवर्णछपपालरहितसद्दतोमघलइंचंवनि ह्लमइंसरिषाबइंआरीसा मोहटा अधकायानइंसरिषोदृष्टीसरीसा
श्रेसमनुबइतेजइंकरीरहम धूकीमोटोबइं ईप्रमोणकहाछैतेआरीसाएहवा
य निम्मलाए छायाए समणुबद्धा चंदमंडलपडिणिकासा महया महया अद्धकायसमाणा प
कह्या अहोश्रमणोआ तेतोरणनइंआगलइंबइं२बजनीनातिना तेथलकेहवाछ अछाविमलनिर्मलचेरू
यरूषमंतो थलकह्या इं यरितमइंसालितंउल
न्नत्ता समणाउसो तेसिणं तोरणाणं पुरतो दो दो वइरणाभा थाला पन्नत्ता तेणं थाला अच्छतिच्छडिया
चाषातेकेहवाछैनहणोरंकरीसंमहलपातलामससा सविवमोजगइंप्रतिरूपादिआरविशेषणपाछजी परें कहें वांस
उजलाकीधातेषुकी सर्वजल नंदमिंनिर्मल विस्तरपणइं मोटाएइंमोटाप इहानिसरिखामोटा
सालितंदुलणहसंदट्ठबहुपडिपुण्णा विव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया अच्छा जाव पडिरूवा महया२

रथचक्रवालवीतरागे आयुष्मं तेतोरणनइंआगा वइं वइंपात्रीविशेषकलशजनसुंह तेपात्रीइं निर्मलपाणीइंकरी
कल्या अहो श्रमणो तो नइं जीपाणी पात्रे सहित छै
रहचक्कसमाणाओपन्नत्ताओसमणाउसो तेसिणंतोरणाणंपुरओदो२पाईओपन्नत्ताओ ताओणंपाईओअ
नरीछै अनेकभेदपंचवर्णइंसहित फलहरितनीलवर्ण तेलेंबहुप्राप्त दर्शनरोरहिंबइं सर्वरत्नमयछइ
च्छोदयपडिहत्थाओणाणाविहपंचवण्णस्सफलहरितगस्सबहुपडिपुण्णाओविवचिट्ठंतिसव्वरयणा
मांजेंप्रतिरूपाद्विमारचिरी मोटाएमो गोकलचक्रसरीषाकरूत्याश्री हेश्रमणआयु तेतोरणनइंआगले बेरस्क
षणाकहइंवा टा वीतरागे ष्मंतो प्रतिष्ठिकत्या
मईओजावपडिरूवाओमहियाओगोकलिंचक्कसमाणाओपण्णत्ताओसमणाउसो तेसिणंतोरणाणंपु
धारविशेषक तेरूप्रतिष्ठिकत्याधारविशेष पासाहणहर्षनइंवांमैंस एहवीसर्वौषधीइंप्रतिपूर्ण सर्वरत्न
हा नइं कलचक्रनागामनीपरइं रहइंबइं मय
रओदोदोसुपइट्ठाओपन्नत्ता तेणंसुपतिट्ठगानाणाविहपसाहणगभंडविरतियाओसव्वोसहिया
बइं निर्मलआलेंगैंप्रतिरूपछइं तेतोरणनइं आगलइं बइंबेमनोगु टीविकाविशेषफलइंस्फटीकाइंमनो
लिका गलकापीचकेति
पडिपुण्णा सव्वरयणामयाअच्छाजावपडिरूवेतेसिणंतोरणाणंपुरओ दोदोमणिगुलियाओपा
रत्नतेपिश्टविशेष सोनारूपानाफलकपाटीयां तेसोनारूपामइं पाटीयानेवांमे वज्ररत्नमेंनागदंतनिं
जिहां कल्यां
न्नत्ताओ तेसुणंमणिगुलियासुसुवण्णरुप्पामयाफलगापन्नत्ता तेसुणंसुवण्णरुप्पामएसुफले १५१

सरिषाखूंटकहाक स्वर्णजालरूसिन मांलगे हेममयआंजेंगेंदरूसलसरी तेवज्रमइंनागदंतान घणा२काला
कह्या बइं षाश्री वीतरागे कल्या इंचिषइं
एसुवइरामयाणागदंतादेमजालंतिरूसिताइ्ातवेइमयदंतसमाणपण्णत्ता तेसुणंवयरामएसुणागदं
सतनासीकांबइं किहांएकवस्तिकआंलगइंधीलो सतनांवस्तिकसीकांक तिहांघणावासितकहा तेवासिक
कह्या केहवाव इंसर्व
एसुबहवेकिएसुत्तमिकासिकोगववयाजावसुखिवंसुगगवहित बहवेवायकरणाघा वासितकरकाज
वैडूर्यरत्नमय निरमलछइं आपतिरूपछइं तेतोरणनइंआगल बइं२विचित्रवर्णापेतआर्द्धर्यसतरत्नाकरंडीयाक लश्करयाकरका
बइं इं कह्या इंसर्व॥
मत्तासव्ववेरुलियामया अच्छाजावपडिरूवा तेसिणंतोरणाणंपुरओदोदो विचित्तारयणकरंडया.
तेजिमकोईचक्रशांति राजाच्यारदिशिनाचक्रवर्तिनोविचित्र वैडूर्यरत्नमयछैंतथा स्फुरिकरत्नमेंआछादनबइं जेरत
कह्या नोरत्ननोकरंडोज नकरंडनइं तेप्रदेशानइं.
न्नत्ता सेजहानामएरण्णोचाउरंतचक्कवट्टिस्सचित्तेरयणकरंडेवेरुलियमणिफलिएपडायणेसाएपभा
सघलइंबोपरफेंउद्योतकरइं तासिंसोनइं प्रसाकरइं एत्रालि एहवातेविचित्ररत्नाकरंडिया वैडूर्यमयएतलआछादनेंकरीपोता
वदनोएकथाई कह्या
एतेपएसेसव्वओसमंताओभासएउज्जोवेइपभासइ एवामेवतेविचित्तारयणकरंडगावेरुलियपड पतलप्रसवंलव
नीप्रभाकांतिकरीतेप्रदेशानइंसघलइंबो तासिंसोतेत्रणिपदेकरीआंलणइं तेतोरणनइंआगलइं बइं२हयकंठकाआंलगइं स्फुरिकपटल
षफेर उद्योतकारी मयआछादन
लपच्चोयडाएणपभाएतेपएसेसव्वतोसमंताओ ओभासंतिजावपभासेंति तेसिणंतोरणाणंपुरओदोदोह.

जिवाभिगम
१५२

बेइं २ रत्नकंठ प्रमाण रत्नविशेषकह्या सर्वरत्नमय छइ निर्मल निर्मलं प्रतिरूप सोलपद कहिं वो विशे जविशेषनइं जोजणइं जो
छइ इ ल विशिष्ठजनी चंगेरी कही तेहयकंठ र जोणइं रत्नकंठ रत्ननइं

यकंवमाडावइ दोदो वसभकंठकापन्नत्ता सवरयणमया अछा जाव पडिरूवा तेसुणं वइरकंठएसु

बेइं २ पुष्फचंगेरी इमगंधचंगेरी वर्णचंगेरी चुर्णचंगेरी वस्त्रचंगेरी आभरणचंगेरी कही सरसवनी मोरपिछनी इंजणीनी चं
चंगेरी गेरी कही

जाव उसभकंठएसु दोदो पुप्फचंगेरीउ एवं गंधवन्नचुन्नवत्थआभरणचंगेरीउ सिद्धत्थचंगेरीउ लो

सर्वरत्नमयक निर्मल जोंवतिरूपस्यारे विशेषण तेतोरणनै पुरतः आगलइं बेबे फूलनी पडलो सिंहासन जोलगें लोमहस्तना
ही पाछलीपरइं विशेषकह्यो पडलो सिंहासनछइ

महत्थचंगेरीउ सवरयणमईउ अछाउ जाव पडिरूवाउ तेसिंणं तोरणाणं पुरतो दोदो पुप्फपडलाइं

पिणसर्वरत्नमय निर्मलो छइ जोवतिरूपछइ सोलपद तेतोरणनइं पुरतः कहेतां आगलइं बेबे सिंहासन तीर्थंकर
छइ जोग्या स्थान पाछलीपरइं इं

जाव लोमहत्थपडलाए सवरयणमयाइं अछा जाव पडिरूवा तेसिणं तोरणाणं पुरतो दोदो सी

कह्यां बे तेसिंहासन एहवां एतोइहां रूप वर्णनविशेषपती ईकरे तिमजपाछलीपरइं मन प्रसन्नकारी छइ पाछलीपरें कहे
कहिवुंछइ वो ४

हासणा पन्नताइं तेसिणं सीहासणाइं अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ता तहेव जाव पासितीया

तेतोरणनइं आगलइं बेबे रूपानो आछादन एहवां छत्रक तेछत्रकेहवा वैडूर्यरत्नमे तिम देदीप्यमान विमल निर्मल दंड छइ.
लोछइं छइ जेहना

४ तेसिणं तोरणाणं पुरतो दोदो रुप्पछदा छत्ता पन्नत्ता तेणं छत्ता वेरुलिय तिसंत विमल दंडा जं

१५२

जेहनो दंड नेमैं कर्णि वजनी सो मोतीजालीइं परिगत आच सहस्रवरप्रधान कंचन सूत्र दद्दरकुंडिका दिशा तन विशेषम जयो रूद
काछइ धिछइ आसछइ र्णनी शलाका छइ रू गंध श्रीखंड संबंधी

सूणयकणिया वयरसंधी मुत्ताजालपरिगता अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलय सुगंधि सम

सरवर तिसऋतुशीतलछा अष्टमंगलीक नो सीतइं चि चंद्रमानामोडलानें आका बत्रिंहां तेतोरणनइं आ बेबेचामर
याछइं आमछइं रइंवादलो छइं जे गलइं

ब्बुतीयसुरसा सीतलछाया अट्ठमंगलगसत्तिचित्ता चंदागारोविमा छत्ता तेसिणं तोरणाणं पुरतो दोदो

कह्यां तेचामरकेहवां बें अनेकमणिमइं कनकस्वर्णमइं रत्नमइं मुघाल पनीय रूपानी परइं वजलो विचित्रचांमरनो दंडछइं जि
विमल निरमलमहरिह लोवली विचित्रकेहवा स्वेतबे

चांमराउ पन्नत्ताउ ताउणं चामराउ णाणामणि कणगरयण विमल महरिह तवणिज्ज उज्जल विचित्तदं

संखजेहवो कुंदजेहवो दगरयपांणी नीरजजेहवो जलीमथा अमृतसमुद्रफीण समभूमझीणा रूपामइंदीर्घ जेहनासर्वरत्नमय
कइजलसमथितनेहवा पुंजसमो हवानइं सरीपाएहवा चामरछजलछै जोबा एहवां वाजछइं इं

डाउ विचित्तियाउ संखंककुंददगरयमहियाफेणपुंजसन्निगासाउ सोहमरयत दीहवालाउ सवरयणा

निर्मल जो लागइं प्रतिरूप तेतोरणनइं पुरतः आगलइं बेबे तेलनासमुद्गतेलात्तेंच भारविशेष सर्वरत्नमय चुयानाकारहा
छइं गलइंकायानेजसमरुतो तेला ओधार छइं

मयाउ अछाउ जाव पडिरूवाउ तेसिणं तोरणाणं पुरउ दोदो तिल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा तगरसमुग्गा एला

तगरनाभाजन एलचीनाभाजन हरीयालना भाजन मणसीलना सरमानाभाजन सर्वरत्नमय निर्मल जोलागइं प्रति वलीविजय द्वार एकसो
ना ना भाजन भाजन छइं ल रूपछइं मइं विषइं आव

समुग्गा हरियालसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणासमुग्गा सवरयणामया अछा जाव पडिरूवा विजएदा

चक्रालेषरूपध्वजा एकसोआठमगरालेषरू पनीध्वजा एकसोआठगरुडालेषरूप नीध्वजा एकसोआठछत्रालेषरूपनी ध्वजा एकसोआ ठछत्रा

रे अट्ठसयं चक्कज्झयाणं अट्ठसयं मगरज्झयाणं अट्ठसयं गरुलज्झयाणं अट्ठसयं छत्तज्झयाणं अट्ठ

लेषरूपनीध्वजा एकसोआठपिछालेषरू पनीध्वजा एकसोआठसीहालेषरूप नीध्वजा एकसोआठवृषभालेषरू पनीध्वजा एकसोआठस्वेतव र्ण

सयं छत्तज्झयाणं अट्ठसयं पिछज्झयाणं अट्ठसयं सीहज्झयाणं अट्ठसयं उसभज्झयाणं अट्ठसयं सेया

चउदंतहस्तीना चिन्ह सहित ध्वजा ... एवं अनुक्रमे अनुक्रमे केहाके विजयद्वार केतुध्वजा होइ आतीततीर्थ विजयद्वा गहस्तीनी के रहज्जा होइ इम पूर्वनीपरे मइं एकसहस्र उपरि असीमान करइ मकहित्र रने

णं चउविसाणं णं नागवरकेऊणं एवामेव सपुव्वावरेणं विजयदारे असीयं केउसहस्सं भवतीति म

नवभोमि विशिष्ट मनोहर कही तेनवभोमिनें वीमें अंतेमाहें घणे भुमिभाग आवी तरागे कहीने जोजगइ मणिनो स मो रमणीक स्पर्श छइ

क्खायं विजए दारे नव भोमा पन्नत्ता तेसिणं भोमाणं अंतो बहुसम रमणिज्जा भूमिभागा पन्नत्ता

तेनवभोमिनी उपरइ उल्लोचादिपद्मलतानाचित्राम जोजगइ सर्वतपनीयमइं छइ निर्मलजोअतिरूप छइ

जाव मणीणं फासो तेसिणं भोमाणं उल्लोया पउमलया भत्तिचित्ता जाव सामलयाभत्तिचित्ता जाव पडिरूवा अच्छा

तेभोमनें घणुंमध्यदेसभागइं जेपांचमेभूमिविशेष तेपांचमीभूमिनेघणेमध्यदेशभाग तिहांमोटोएकसिंहासनवी

चवणिज्जा तेसिणं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जे से पंचमे भोमे तस्सणं भोमस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ १५३

तरागे कहीवो इहांसिंहासन पाखली परिवार लाबो विजयदेव सरिखो तेनें अंकुशजावत्‌ आठ द्रव्यकीधाम कें सागर हइ छइ तेसिंहासनथकी आवरुत्तरवाविरू लिमथकी

णं एगे महं सीहासणे पन्नत्ते सीहासणवन्नओ विजयदूसे जाव अंकुसे जाव दामा चिट्ठंति तेसे णं सीहासणं

उत्तरपरवजगइ तिहां विजयदेवतानां च्यारसहस्ससामानिकदेवतानां च्यारसहस्रसिंहासनवीतरागे कह्यां

सि अवरुत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थणं विजयस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासण

तेसिंहासनथकी पूर्वदिसइं तिहां विजयदेवनी च्यारअग्रमहीषीनां दासदासियादिपरिवारसहित च्यारभद्र

साहस्सीओ पन्नत्ता तस्सणं सीहासणस्स पुरच्छिमेणं एत्थणं विजयस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सि

सणवीतरागे कहियां तेसिंहासणथकी दक्षिणपूर्वनी दिसइं अग्निकुंणस्यइं तिहां विजयदेवतानी मांहिली परषद

सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणा पन्नत्ता तेसिणं सीहासणस्स दाहिणपुरच्छिमेणं एत्थणं विजयस्स देव

नादेवतानें केतला कहीं छइ आठसहस्त्रते हइ छइ विसवा आठसहस्रभद्रासन आवीतरागे कह्यां तेसिंहासन थकी नइ

स्स अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ पन्नत्ताओ तस्सणं सीहास

दक्षिणदिसइं तिहांविजयदेवतानी मध्यपरषदाना दसमहेसदेवतानां दससहस्रभद्रासनपन्नत्ता कहेतां वी

णस्स दाहिणेणं एत्थणं विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसा

DR. BHAU DAJI
डाक्तर भाऊदाजीनुं पुस्तकालय

जीवाभिगम
१५४

हवेंबलीकसिंहासनसपरिवारनोसामानिकदेवतानेंयोग्यतेहासनरूपपरिवारररहेंते कहेंवड़

तयागेंकह्या तेसिंहासनथकी २ दषिणपश्चिमसेणंनैरुतिकुणेंलवई तेत्रेकुहिकुणइं देवतानी बाहिरली परषदाना
तिहांविजय
हस्सीउ पन्नत्ताउ तस्सणं सीहासणस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं एत्थणं विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए
बारसहेंसदेवतानेंयोग्य बारसहंसस्संष्याइं तेहासननवीतरागेंकह्यां तेमूलगासिंहासनथकी पश्चिमनइंदिसइं तिहांविजय
बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तस्सणं सीहासणस्स पच्चत्थिमेणं ए
देवतानइंयोग्य सातकटकअनीकनाअधिपतिनासाततेहासनकह्या तेसिंहासनथकी पूर्वनइं १ दाषिण २ पश्चि
त्थणं विजयस्स देवस्स सत्तण्हं अणीयाहिवईणं सत्त भद्दासणा पन्नत्ता तस्सणं सीहासणस्स पुर
म ३ उतरइं ४ एतलीच्यारदिसें विजयदेवतानासोलसहस आत्मरक्षकनोयोग्यसोलसहेसतेहासननवीतरागेंक
त्थिमेणं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीणं सो
ह्यां तेकेहा पूर्वदिसइंच्यारसहेंसदेवता इमउतर २ दषिण ३ पश्चिम ४ च्यार २ सहेंसतेहासनउतरदिसेंजो
गेंकहेंवा इमथाकता
लस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तं जहा पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ एवं चउसु वि जाव उ
तेसोमिसिंहासनपरिवारतेहासनकह्याइंम तेहासनप्रत्येकेंप्रत्येकइंसघलेंसोमेंक विजयद्वारनेंउपरेंतनथाकारें उतरं
हेवा गादिरूप
त्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं २ भद्दासणा पन्नत्ता विजयस्सणं दारस्स १५४

सोलतेसंतरत्नकरीउपसोभितछइं तेकहेंछइं रतन कर्केतनादि १ वज्ररत्न २ वेडूर्यरत्नजाणवइं रिष्टरतन
सोलमो
उत्तमागारे सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तं जहा रयणेहिं वयरेहिं वेरुलिएहिं जाव रिट्ठेहिं
विजयद्वारनइं उपरिंघणा आठ २ मंगलीककह्या तेकेहा साथीउ १ श्रीवछ २ जावदर्पण सर्वरत्नमयछइं निर्मलछइं
८
विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पन्नत्ता तं सोत्थियसिरिवच्छ जाव दप्पणा सव्वरयणामया
अथप्रतिरूपजाणइं तेविजयद्वारनें उपरइं घणीकृष्णचामरनीध्वजाछइं जाणवोसुर्वरत्न स्वछछैं अथप्रतिरूपजेंगेंकहेंवो
कहेंवो मयछे
अच्छा जाव पडिरूवा विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा
विजयद्वारनें उपरइं घणा छत्रउपरिछत्रछेंति तेस्यामाटेंसभगवनइंम विजयद्वारतेनोमिंतेसा विजयद्वा विजयनामेंदे
मज्जसरव कहिंजे माटेकहिजे रइ वतामहर्द्धि
जाव पडिरूवा विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता तहेव से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ विजएणं दारे
कविमानादि मोहटीयुक्तीइंमहानुभावजेंगौकहेंपल्योपमनइंआनषइंवसेंछइं तेतिहांच्यारसहस सामानिकदेवतासुं च्यार
विजये नामं देवे महिड्ढिए महज्जुइए जाव महाणुभावे पलिओवमट्ठिईए परिवसइ से णं तत्थ चउण्
हंच्यार ५ अग्रमहीषीसुं परिवारसहित त्रणिपरषदा ३ १२ ५ १२ सातअनीककटकेंकरी सातअनीकाधिपतेंकरी
सहेंसदेवतासहित
हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं

सात अनीक
हयानीक १
गयानीक २
रथानीक ३
पदानीक ४
महिषानीक ५
गंधर्वानीक ६
नट्टानीक ७

आरदिसैं करी सोलसहस्र आत्मरक्षक देव करीनइं विजयद्वारनइं विजयाराजधानीनइं अनेरा घणा
सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्स णं दारस्स विजयाए रायहा-
विजयाराजधानीना वासी वसनारा देवतानो देवांगनानो अधिपतिरूपपणें अधिककर्म रक्षकाजो जोगें देवतानादि
अधिपति अनेरा घणा सोग
णीए अन्नेसिं च बहूणं विजयरायहाणि वत्थव्वगाणं देवाणं देवीण य आहेवच्चं जाव दिव्वाइं
वतो थको विच तेमाटें गोतम हे शिष्य एवं कहिइं इम कहैं जे विजयद्वार इं तथा वली अनेरो सश्रीमनर गोतम विजयद्वारसा
भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ से तेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ विजए दारे अदुत्तरं च णं गो-
स्वतो नाम वीतराग कहें छइ जे हो के इं नथी इम नथी अनागति कालें न होइ इम नथी वर्त्तमान जगें मेरनी परें नित्त
काल नथी इम नही धर्मास्तिकायनी परें छइ तेमाटें गो-
यमा विजयस्स दारस्स सासए नामधेज्जे पन्नत्ते जं ण कयाइ नासि न कयाइ नत्थि जाव अ-
जयद्वारसास्वतो छै किहां छैं भगवन विजयदेवतानी विजयानामा राजधानी वितरागदेवें कही गोयमा विजयद्वारथ
वट्ठिए णिच्चे विजये दारे २ कहं णं भंते विजयस्स देवस्स विजया नामं रायहाणी पन्नत्ता गोयमा विजय
की सर्वदिसइं छइ तीछा असंख्याता दीपसमुद्र मुंकीनइं अतिक्रमीनइं अनेरें जंबूद्वीप असंख्याता योजनप्रमाण
स्स दारस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीतिवइत्ता अन्नंमि जंबुद्दीवे २ बारस जोयण १५५

तेहमां बार योजन अवगाहीइं जा तिवारइं तिहां विजयदेवतानइं विजया नामा राजधानी कही बारसहैंस योजनप्रमाण लांब
सहस्साइं ओगाहित्ता इत्थ णं विजयस्स देवस्स विजया नामं रायहाणी पन्नत्ता बारस जोयणसहस्सा-
पणइं पहिलपणइं त्रीससहस्स योजन उपरि नवसें अडतालीस योजन कांइक विशेष न्यून प्रमाण परधि कही विष्कंभ
सवगाहइ गुण इसादि माने
इं आयामविक्खंभेणं सत्ततीसं जोयणसहस्साइं नव य अडयाले जोयणसए किंचि विसेसूणा परि-
ते राजधानी एक प्रकारइं सघलइं चो पफेर वेष्टित छइ ते प्रकार के ल्वो छइ साडत्रीससैं योजन ऊंचपणइं छइ उपरि ऊर्द्ध योजन मूलें
क्खेवेणं पन्नत्ता सा णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता से णं पागारे सत्ततीसं जोयणाइं अद्ध-
मूलें साढा बार योजन पिहुलो छइ मध्य विचि छ योजन एक कोस विष्कंभ छइ ते प्रकारगढ उपरि साढा त्रणि योजन पिहुलपं
जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले अद्धतेरस जोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं उप्पिं
णो छइ मूलें पहोलो छै साढा बार योजन वली मध्ये संकीर्ण सवा छ योजन रसी उप रि साढा त्रणि योजन कांइक अधिक नी बाहिर घाट लोलें
मांहि चोखुणो
तिण्णि सद्धकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए बाहिं वट्टे अंतो
उर्द्ध रूतगोपुच्छ संस्थानइं संस्थित छै सर्व कनकमइं स्वच्छ जांबुनद रूपणें कहें छो ते प्रकार अनेक सरे पांच वर्णे कोसीसे करी
चउरंसे गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वकणगामए अच्छे जाव पडिरूवे से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं

जीवाभिगम १५८

उपसोहीतोलइं तेहनो तेकहेंछइं कालोचइजोलगेंधोलोकोसीसोछें तेकोसीसोअर्द्धकोससहससधनुषदीर्घपणइं

कविसीसएहिं उवसोभिए तंजहा किन्हेहिं जाव सुक्किल्लेहिं तेणं कविसीसा णं अद्धकोसं आयामेणं

पांचसेंधनुषविस्ता कोइंकनलु अर्द्धयोजनऊंचोऊंचपणे सर्वमणिमयछइं निर्मल भांलगइं पति तेविजयाराजधानीनेंवि
रइछें लगइंछइं रूपछइं षइं

चधणुसाइं विक्खंभेणं देसूणं अद्धकोसं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा विजयाए णं रायहा

एकेकइंबाहापासइं एकसोपचवीसबारकहइं अतिबर्त्तमांतीर्थं तेबारकेवडामोटाछइंबास अर्द्धयोजनएतलेंमा
करेंकहाचारकासेपइंपांचसइंपांचसइंबारहोइं छियोजनउपरि नइंऊंचो

णीए एगमेगाए बाहाए पणवीसं दारसतं तं भवतीति मक्खायं तेणं दारा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजो-

ऊंचपणइं एकत्रीसयोजनउपरिएककोसलांबपणइंपिहू तेतलोचेवनिश्चयेप्रदेस हवइंबारवर्णनकहेंछइं
छइं जपलेंकहीनें जोमहोइं स्वेतवरप्रधानकनक

यणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं आयामविक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेयावरकण-

कवर्णमइंथूलिका तिहांमृगनोचित्रामछें नकोधीहेंतिमवर्णनकीजेंनोलगइं स्फचर्णमइं वालुकानो विस्तारछइं
बइंत्रिषरगोमइ तिमजविजयबारनोवर्ण तेकेहवोछइं वेलनोप्रस्तरछैं स्फचस्पर्शछें जेहनोसश्रीकरूपछइंजे

गथूभियागा ईहामिय तहेव जहा विजए दारे जाव तवणिज्जवालुयपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया

हनोमननेंश्रान जेहनोतेबारनेंबइंपासेंनिषेधकुनइं बेबेचंदनकलसाकलशनीपरिपाटीश्रेणी। कहीतिमजविजयबा
कारीछइं छामइं रनानिषेधारनीकुनीपरेंवर्णनकरवो

रूवा पासाईया तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए दो दो चंदणकलसपरिवाडीओ पन्नत्ता १५८

यावत्तमाजासोलगइंकहेंवो तेबारनइं बइंपासेनिषेधबइंसवानइंवामइं बइंबइंपीवकविशेषकहा

तहेव भाणियव्वा जाव वणमाला तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए दो दो पगंठगा पन्नत्ता

तेपीवविशेषकेहवाछइं एकत्रीसयोजनउपरिएककोसएतलोलांबपणेंपीहुलपणेंछेंपनरयोजनउपरि अढीकोस

तेणं पगंठगा एक्कतीसं जोयणाइं कोसं आयामविक्खंभेणं पन्नरस जोयणाइं अड्ढाइज्जे य कोसे बाहल्लेणं

सजाडपणेंप्रकंठकहा तेसर्ववज्ररत्नमयछें स्वछ लेंमांजगैप्रतिरूपछइं तेपीतविशेषनेंउपरिं प्रत्येकइं २ प्रासादवि

पन्नत्ता सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा तेसि णं पगंठगाणं उप्पिं पत्तेयं २ पासायवडिंसगा पन्नत्ता तेणं

शेषकहातीर्थंकरें तेएकत्रीसयोजनएककोसएतलोऊंचोऊंचप एतलोलांबपणेंपिहुलपणेंछेंघा कुतोसर्वप्राच्छली
णइंछइं पनरयोजनउपरिअढीकोस परइंकहेंचासफपलनेंचोनीकुण्योछइं

एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नरस जोयणाइं अड्ढाइज्जे य कोसे आयामविक्खंभेणं सेसं तं चेव

जावत्तरउहेंतांएतलोवि बहुवचनकहेंवोविजयबा विजयाराजधानीनइं एकेकबारइं एकसोआवचक्रलेषनी
शेषछइं रनीपरइंवर्णनकरवो धजाकहेंवी

वज्जावसमुग्गयाणवरं बहुवयणं भाणियव्वं विजयाए णं रायहाणीए एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झ-

ध्यांलगइंएकसोआवस्वेत ध्यारविषात नाणाहस्तीनावरध इमपचर्वनीपरइं विजयानामाराजधानी एकेकइं
ऊजली देरूसल धांनकेउधजाछइं अनुक्रमें नइं

याणं जाव अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं णागवरकेऊणं एवमेव सउव्वावरेणं विजयाए रायहाणीए

छारइं एकसहेस इपरिक्रसी एतलीधजाती तेसौमजोगाउ जोजंगेयदमलत्तानोचि तेसौमनइं मध्येर घणामध्यदेशनाग
वंरेकदीसरवपानलीपरइं कहेवा नइं ओमछइ

ए एगमेगे दारे सत्तरस भोमा पन्नत्ता तेसि णं भोमाणं उल्लोया पउमलयाभत्तिचित्ता तेसि णं भोमाणं ब-
जेतेनवमीभूमि तेसौमिनइं घणुंमध्यदेशनाग प्रत्येकइं २ सींहासनवर्णनकहेवा जोजंगेदसमा भोम जिम हेठीजगइं
विशेष

हुमज्झदेसभाए जे ते नवमा भोमा तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ सीहासणे पन्नत्ते सीहासणवन्नओ जाव
इमबीजेभाकहे तेभौमिविशेष प्रत्येकें २ भद्रासनकह्या तेद्वारनाउत्तमसंस्थान आकारछइ सोलरत्ने करी उपसो-
भीतछइ

दामा जहा हेट्ठा एत्थ णं अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं २ भद्दासणा पन्नत्ता तेसि णं दाराणं उत्तिमागारा सोलस
तिमजविजयाद्वारनीपरे सर्वकहेवो जिहां लगें छत्रनपरि छत्र इमपूर्वापरइं अनुक्रमे विजयाराजधानीइं पांचसइं
छत्रछइ सर्वसंख्याइं

विहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तं चेव जाव छत्तातिछत्ता एवामेव सपुव्वावरेणं विजयाए रायहाणीए
संख्याइं धातीर्थंकरें कह्या विजयाराजधानीइं च्यारदिसि पांचसइं योजननीअबाधा मर्यादाइं तिहांच्यारवन

पंच दारसया भवंतीति मक्खायं विजयाए रायहाणीए चउद्दिसिं पंचजोयणसयाइं अबाहाए एत्थ णं
षंडवीतरागेकह्या तेकिस्या असोकवन १ सप्तपर्णवन २ चंपकवन ३ चूतवन ४ पूर्वदिसें असोकवनछइ

चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता तं जहा असोगवणे सत्तवण्णवणे २ चंपगवणे चूयवणे पुरत्थिमेणं असो- १५७

१ दक्षिणदिसें सप्तपर्णवनछइ २ पश्चिमदिसइं चंपकवनछइ ३ उत्तरइं आम्रसहकारवनछै ४ तेवनषंडकांइंक अधिको

गवणे दाहिणेणं सत्तवण्णवणे २ पच्चत्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चूयवणे ते णं वणसंडा साइरे-
बारसहेंसयोजनलांबपणइं छइ पांचसइंयोजनपिहूलपणैछइ प्रत्येकें २ वनदीवप्रकारवेष्टितछइ तेकेहवा

गाइं दुवालस जोयणसहस्साइं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पन्नत्ता पत्तेयं २ पागारप-
छैवननीलाछै नीलीछबीछइ इमवनषंडनोवर्णनपाछलीपरें जोजगेघणावाणव्यंतरनादेवतादेवा सूचेंकरीरहेछइ
कहेवो गना

रिक्खित्ता किण्हा किण्होभासा वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव बहवे वाणमंतरा देवा य देवीओ य
सूयेंछइ बइसेंछइ रमेछइ नंषिरंती क्रीडाकर उत्कृष्टमायापायेंछइ मै करइंछइ सुकृतपरजीवमैत्रीसावधुसकीधा
ती कनसेवइंछइ क्रीडा कंतमनोहर

आसयंति सयंति चिट्ठंति तुयट्टंति रमंति कीलंति कीडंति मोहंति पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरिक्कंता-
शुभकारी कार्यकर करममंगलीक फलवृत्तिविशेषभोगवता विचरइंछइ विस्तारइं त्र तेवनषंडनइं घणो
ता नोकरता र्धसर्वपाछलीपरि भीजाणवो

णं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति तेसि णं वणसं-
मध्यदेशनाग प्रत्येकइं २ वनरदीवप्रसादविशेषकह्या तेप्रासादउत्तेसकके हवाछइ बासठियोजनअ

डाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ पासायवडिंसगा पन्नत्ता ते णं पासायवडिंसगा बावट्ठिं जो-

जिवाभिगम
१५८

छ योजन परिखेवो उंचपणइं छइ एकत्रीस योजन उपरि एक कोस झाझेरा जांबपणे विस्तारपणइं छइ ते चाम्हघरने विस्तारा

यणाइं अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं एकतीसं जोयणाइं कोसं च आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसि

तिमजनसर्व आसादिवर्णवनाना जेमांहि घणो समोरमणीक त्त उपरि छत्रावपद्मालतीनो प्रमुखवर्णनापणकलीपरे

मिलानकरीयो श्रीवीतरागइं

चित्राम

या तहेव जाव अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता उल्लोया पउमलयभत्तिचित्ता णं ...

करवीते प्रासादवतंसकनी उपरिघणा आठ आठ मंगलीक ध्वजछत्र कहेवा ... ते आरदेवता महद्धीयामां

तेसिं णं पासायवडिंसगाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा ... सपरिवाराणं ... देवा महिड्ढी

टी कुहिमाधणी याव ... आपमने आउषेते दे नोंनो आसोकदेवता १ सत्तपरणदेवता २ ते तिहां आपआपणा वन छ

वताय सेंसइं तेहनो आख्यान पाछलीपरेंते ह म चंपकदेवता ३ चूतदेवता ४ नइं

या जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तं असोए सत्तपण्णे चंपए चूते तेसिं णं तेसिं णं साणं २ वणसंडाणं

आपआपणा प्रासादवतंस आपआपणा सामानिक आपआपणी अग्रमहिषी आपआपणा परषदा करे देवता तेहनो अधिप

करइ देवतानइ तिपणोजोजाइ कारेमाले पालेमाले एसर्व

पासायवडिंसगाणं साणं २ सामाणियाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ आयरक्खदेवाणं आहे

कहेतो जाव विचरइ विजयानो राजधानीइ मांहि घणो समोरमणीक ... सोपांच वर्णनी मणिक

वच्चं जाव विहरंति विजयाए णं रायहाणीए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पंचवण्णेहिं

१५८

री उपशोभितछइं ... देवा नसन्ते तिवइं बहुसंतोरमते याव ... तेघणो समुरमणीक

देवांगनाक्रमइं ... विचरइं छइं

मणीहिं उवसोभिए तणसद्दविहूणे जाव देवा य देवीओ य आसयंति जाव विहरंति तस्स णं बहुसमरमणि

मुपकार्योपकार केतिप्रसीद्धलंक चन्द्रहस्थानो सम सणमुपकार्यो पकारेके उपका रकालयनमिवा उपकारिकालय नमल

समीलागइं घणोमध्यदेशभाग इंघणोमध्य एकमोटो राजधानीनास्वामी कनीपीठकाकरीतेस्वामिसरुप्रासादावतं

जईइंतिवारइं मक्ष प्रासादवतंसकादि सकनीपीठकाबारसेंयोजनलांबपणे

ज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगे महं उवारियलेणे पण्णत्ते बारस जोयणसयाइं आया

विस्तारपणें त्रणिसहस्रयोजन उपरिवली कांइंकविशेषधिकएतलीपरिधि करीतेपीठकानी अर्द्धकोसहस्रधनुष

करी सातसइं

मविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसहस्साइं सत्त य पंचाणउए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं

जाडपणइं छइं सर्वजंबुनदरत्नवर्णमइं निर्मलपणेप्रति तेएकपद्मवरवेदिकाइं एकेकइंवनखंडइंचो

छइं रूपछइं

अद्धकोसं बाहल्लेणं सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं व

फेरसघलइं परिक्षिप्तपरिवेष्टितछइं पद्मवरवेदिकाइ राजधानीनास्वामीनीनेष्टा वनखंडनीवरणनप्रांजगें

नीपीठकाइंपरिधि सरूपइंविचरइंछइं

णसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते पउमवरवेइयाए उवरियलेणसमया परिक्खेवेणं वणसंडवण्ण

तेवनखंडकेवको कांइंकउणोबेयोजनचक्रवालफरतिविस्तारइंछइं उपरिसमसरिषइं परिक्षेपछइं तसेंतेजव

छइं

जाव विहरंति से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं उवरियलेणसमा परिक्खेवेणं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

त्रिणस्वामी:सक्रकीच्यारदिसइं पीवकाघकीच्यारत्रसोपानप्रतिरूपविरूपकह्या तेह तेत्रसोपानाप्रतिरूपकनइं
नोवर्णनकीजइं विस्तारथी

तस्सेणं तिवरलेणंच उद्दिसिं चत्तारि तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ तेसिणं तीसोमाणपडिरूव

पुरतमुषसाम्हा गलइं प्रत्येकेंर तोरण छत्रउपरिछत्रहैं तेजवारीलेनतेमुष्यपीवकानें घणोसमोरमणीकजूमि
कह्या उपरइं नागकह्यो

गाणं पुरओ पत्तेयं तोरणा पन्नत्ता छत्ताइछत्ता तस्सणं उवारियलेणंस उप्पवक्कु समरमणिज्जे भूमि

भागेमणिकरी घणीरूपीसोभाधरइंछइं गंधरसफरसकहैं तेघणोसमोरमणीकजूमीभागनइं घणे२ मध्य
वर्णनकरवो वो

भागे पन्नत्ते जाव मणीहिं उवसोभए वण्णो गंधोफासो तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स

देशभागइं तिहांएकमहाउंचोप्रासादवतंसककह्यो तेप्रासादवतंसक साडीबासठियोजनउंचोउंचप

बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगेमहं मूलपासायवडिंसए पन्नत्ते सेणं पासायवडिंसए बावट्ठिंजोयणं

णइंकह्यो एकत्रीसयोजनअनएकउकोशलांबपणइंपिहुलपणइंछइं तेप्रासादवतंसकनोउंचोविस्तारनोवि
स्तरछइंतिमजवर्णनकरवो

इं अद्धजोयणंच उड्ढं उच्चत्तेणं एकतीसं च जोयणाइं कोसं च आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिए

तेप्रासादवतंसकनइंमांहइं घणोसमोरमणीकजूमिभागवीतराग जिहांलगइं मणिनोस्पर्श छेत्यांसुधि
गेकहीनइं कहिवो

तहेव तस्सणं पासायवडिंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जावमणिफासे

तेघणोसमोरमणीकसोभाभागनइं घणोमध्यदेशभागइं तिहांएकमोटीमणिनीपीठकाकहीइं

उल्लोए तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगमहं मणिपेढिया पण्णत्ता दो

बइंयोजनलांबपणइं पिहुलपणइंछइं एकयोजनजाडपणइंछइ सर्वरूपामय प्रतिरूपलागइंकहैं तेमणिपीठकानइंउप
णिनाफरसछइ निर्मलजग्गा छइ रइ

जोयणाइं आयामविक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमयाफासा अच्छाजावपडिरूवा तीसेणं मणिपी

एकमोटोसिंहासनकहिउ इंमसिंहासननोवर्णनकरैं परवारसहितकहेंछेतेप्रासादवतंसकनइं उपरइं घणा
वइ

ढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते एवं सीहासण वण्णओ सपरिवारो तस्सणं पासायवडिंसए

आठआठमंगलीककह्यां ध्वजासहितछइं छत्रउपरि तेप्रासादवतंसकनइं अनेराच्यारप्रासादतेथकीअर्द्धउंचपणानी
छत्रछइं मात्रादि

उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता सेणं पासायवडिंसए अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणं

प्रासादवतंसकेकरीनें सघलेंचोषफेरवेष्टितछैं तेप्रासादवतंसकनइं एकत्रीसयोजनउपरिएककोसऊंचोउंचपणौंछइं

मत्तेहिं पासायवडिंसएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते तेणं पासायवडिंसका एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च

साढापनरयोजननइंउपरि अर्द्धकोसलांबपणौं पिहुलपणौंछइं अथोनीकलतात्रिणघरछइं तिमजतेप्रासादवतंसक
नइं

हं उच्चत्तेणं अद्धसोलस जोयणाय अद्धकोसं च आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयतहेव तेसिणं पासायव

माहेंघणोसमोरमणीकस्तूमीभागछइ उल्लोचादिवर्णनपाछलीपरइं तेघणोसमोरमणीक भूमीभागइं घणोमध्यदेश

डिंसगाणंअंतोबहुसमरमणिज्जस्सभूमिभागस्सउल्लोयतेसिंबहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणंबहुमज्झ

भागइंप्रत्येकें २ सिंहासनकह्या तेआठमंगलीकध्वजासहितछइ छत्रउपरिछत्रछइ तेप्रासादवतंसकपुंठइ

देसभाएपत्तेयं२सीहासणापण्णत्ता तेसिणंअट्ठट्ठमंगलगासज्झयाछत्ताइछत्तातेणंपासायवडिं

अनेरा २ च्यार २ प्रासादमुख्यप्रासादथकीअर्द्धप्रमाणमा प्रासादवतंसके सघलइंचोषफेरपरिवेष्टितछइ तेप्रासाद
नाइं

सगाअन्नेहिं२चउहिं२तदद्धुच्चत्तपमाणमेत्तेहिं पासायवडिंसएहिंसव्वओस मंतासंपरिखि

वतंसक साढापनरयोजन अर्द्धकोसऊंचोऊंचपणेछइ कांइकऊणोआठयोजन लांबपणइंविष्क

त्ता तेणंपासायवडिंसकाअद्धसोलसजोयणाइं अद्धकोसंचउड्ढंउच्चत्तेणंदेसूणाइं अट्ठजोय

लपणइंछइ ऊंचोनीकलतोशिषरछइ तेप्रासादवतंसकनइं माहेंघणोसमरणीकस्तूमीभागछैं उल्लोचयुक्त
छैं

णाइं आयामविक्खंभेणंअब्भुग्गयतहेवतेसिणंपासाय वडिंसगाणंअंतोबहुसमरमणिज्जासूमि

तेघणोसमोरमणीकस्तूमिभागछइ घणोमध्यदेशभागइं प्रत्येकें २ पद्मासनकह्या तेपद्मासनउपरि

भागे उल्लोयातेसिणंबहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाएपत्तेयं२ पउमासणा १६०

हितछइ आठमंगलीकध्वजासहितछत्रउपरिछत्रछइ तेप्रासादवतंसकनइंचोकफेर अनेराच्यार२तेपाछिलाथकी

णत्ता तसिणंपासाएअट्ठट्ठमंगलगाज्झयछत्ताइछत्ता तसिणंपासायवडिंसगाणंअन्नेहिंचउहिं२तदद्धु

अर्द्धऊंचपणानीमात्राइंप्रासादवतं सघलेचोषफेरपरिखित्तपरिवेष्टितछइ तेप्रासादवतंसकनइं कांइकऊणाआठयोज
मकेकरी

च्चत्तप्पमाणमित्तेहिंपासायवडिंसगेहिंसव्वओसमंतासंपरिखित्ता तेणंपासायवडिंसकादेसूणाइंअ

नऊंचोऊंचपणेछैं कांइकऊणाआरयोजन लांबपणेविष्कलपणेछैंवीतरागेप्रकाश ऊंचानीकलताशिषरछेंजेहनाअनुलोचछइं
सोछइं

ट्ठजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणंदेसूणाइंचत्तारिजोयणाइं आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयतहेवतोसिणंउ

नसिंहासनउपरिमंगलीकआठध्वजासहितछैं तेमूलगा प्रासादवतंसकथकी उत्तरपूर्वदिसे इसाणकूणइं तिहांवि
छत्रउपरिछत्रसहितछइ

जोयालसीहासणातेउवरिमंगलगाज्झया छत्ताइछत्ता तस्सणंमूलपासायवडिंसगस्स उत्तरपुर

जय देवतानी सुधर्मसभाकही अर्द्धतेरसाढाबारयोजनआयामपणें छयोजनएककोसऊंचोऊंचपणेछैं अनेक

च्छिमेणंएत्थणंविजयस्सदेवस्ससुहम्मसुहम्मापण्णत्ता अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं छसको

थंभसहितछैं अतिरमणीकऊंचीसरुनीकोधीछइ विजयनीवेदिकातोरणउपरि शिलहालंजिकास्तलीछइ

सायजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंनिविट्ठा अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरणवर
य

विसिष्टजडयणें रूडें संस्थानें थांभा निर्मलछइं अनेक मणिकनक थचितं उज्जल फ विस्तकनइं चिंतनवउ मणिकरी

डयासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियविमलखंभा णाणामणिकणगरयणखइयउज्जलबहुसमसुवि-

कुट्टिमबांध्युं छै भूमतल जिहां वृषभ तुरंग नर मगरमच्छ रुरुमृग विशेषपंखीव्या किंनर सरखतेअष्टापद चमरी
मृगविशेष जमर्प गवा

भत्तचित्तमणिकुट्टिमतलईहामियउसभतुरंगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमर-

हस्ती वनल पद्मलता एहवी चित्रैं चि स्वर्णमणिरत्नमइं थू जिहां अनेक वर्ण पंचवर्ण घंटापता तेलें मंडित अग्र
ता रामछइं तबइं का शिषरछइं

कुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता कंचणमणिरयणथूभियागा णाणाविहपंचवण्णघंटापडागप-

उज्जलोजेहनो एहवो मि कयच्च किरणजालप्रति स्फुरंगतला उल्लोय ... मिगोमयादिक तथा खडी दुधेंलीनीपरें मह
रीच तेहवो गोसीर्ष गोरोचन रससहित रक्तचंदन

रिमंडियग्गसिहरा धवला मिरीयिकवयं विणिम्मुयंता लाउल्लोयमहिया गोसीससरसरत्तचं-

घणादीधा छइं चपेटा पांच आंगुलीना हाथा जीहां उपचित चंदनकलसे करी रूडा की तोरण तोरणना प्रतिद्वारदेश
निवेशितघाप्या छे मंगलकलस जेलें गोमें आछइं लागछइं जिहां

दणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवार-

आसकतुंइं जाणवैं वेविपुलजेह माल्यपुष्पदांमनाकलापसमीहछइं सरसनीलां सोरंस फक्रुवा दफरूलनासमोहे
यरसां बाट लो विस्तारैं बैं जिहां पंचवर्ण सुगंध इं

देसभाग आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपु- १६१

करीनइं सहित कृष्णागरप्रवरश्र कुंदुरु तुरुक्कचीडा दिसिधूप मघमघंतगंधें करी अभ्रुतगं सुगंधवरस गंधनीवाटवतीप
धान क तेणइं धइं अभिरामछइं धांनछइं इं जिहां

का जोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव-

अभिरामगणसमोहतेलें देवकृहितवीणादिशब्द मधुरशब्द मीगाशब्दे सर्वरत्नमयछइं निर्मलयावत्प्रतिरूपलग
करीसंकीर्णछइं णइं संप्रनंदितछइं स्फुरमाछइं इंकहेंवो

ट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया सुरम्मा सव्वरयणामया अच्छा जाव प-

सुधर्मसभाइं त्रणिद्वारकह्यां तेकेहां पूर्वद्वार १ उत्तरद्वार २ दक्षिणद्वार ३ तेद्वारबेबेयोजनऊंचांऊंचपणेंछइं

डिरूवा सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पन्नत्ता तं पुरत्थिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं ते णं दारा दो जोयणाइं उड्ढं

एकयोजनविष्कंभपणेंछइं सइंछइं श्वेतश्रेष्टवरकनकनी थूभिकाछइं यावत्वनमालाजेगेंवर्णव तेद्वारनइं ऊपरइं
एकयोजनप्रवे करवो घणा

उच्चत्तेणं जोयणं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ तेसिं णं दा-

आठ आठ मंगलीक ध्वजाउपरि छत्रउपरिछत्रछइं तेद्वारनइं आगलइं त्रणिदिसिं त्रणि ३ मंडपकह्या ते मुखमंडप साढाबा

राणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता तेसिं णं दाराणं पुरओ तिदिसिं तओ मुहमंडवा पन्नत्ता ते णं मुह-

रयोजन लांबपणइं छयोजन छकोस विष्कंभपणइं छइं काइंक अधिक बे योजन ऊंचा ऊंचपणइं छइं अनेकथंभ

मंडवा अद्धतेरसजोयणाइं आयामेणं छ सकोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्च-

महिलसस्तानो वर्णनकरवो तेमुखमंडपनइं त्रणिदिसि त्रणिद्वारकह्यां तेद्वार बइंयोजनऊंचांचपणैबैं एकयोजनपि
६
चत्तेणं अणुप्पवरथंतस्स तावमन्नंसिणं मुहमंडवाणं तिदिसिं ततो दारा पण्णत्ता तेणं दारा दोजोयणाइ उड्ढं
हूलपणैबइं एकयोजनपहोलाइंबइं स्वेतप्रधानकनकनी थूभिका शिषरबइं यावत् वनमालासोलगइं कहेवो तेद्वारनेउपरइं
उच्चत्तेणं जोयणं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ तेसिणं
घणा आठआठमंगलीकध्वजासहित छत्रपरिछत्रबइं तेमुखमंडपनइं मांहइं घणोसमो रमणीकभूमीभागछेओ
दाराणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता तेसिणं मुहमंडवाणं अंतो बहुसमरमणि
दिपावलीपरइं तेमुखमंडपनइं उपरइं घणाघणा आठआठमंगलीकध्वजासहित छत्रपरिछत्रबइं तेमुखमंड
ज्जाभूमिभागा उल्लोया तेसिणं मुहमंडवाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता तेसिणं मु
पनइं आगलइं त्रणिदिसइं त्रणिपेषाघरमंडपकह्या तेहनो प्रमाण मुखमंडपनी परइं बारयोजनप्रमाणकइ मुखमंडपकहेवो इणिपरें
लोलिय द्वारो मजा लवो
हमंडवाणं पुरओ तिदिसिं ततो पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता तेणं अ पेच्छाघरमंडवा मुहमंडवप्पमाणं लोणिय
भालगे द्वार स्वभिमलगनोउ तेपेषाघरमंडपनइं घणोमध्यदेसभाग प्रत्येकं २ वज्रमयबइं अक्षपाटकचुषोला
जोवसर्वकहेवो
वं जाव दारा भूमिभागा उल्लोया तिसेणं पिच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वयरामया अ
दे

कह्या तेवज्रमेंअक्षपाटकनैं घणोमध्यदेशभाग एतलेनामकह्यो अक्षपाटकनुपरिमणीपीठ तेमणि
काकही
क्खाडगा पण्णत्ता तेसिणं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता ताओ
पीठका एकयोजन लांबपणैं अनइं पिहुल पणइं बइं अर्धयोजन बाहुल्यपणइं तेसर्वमणिमइं जालगोश्वतिरूपबइं तेमणि
णं मणिपेढियाओ जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ जाव पडिरूवाओ ते
पीठकानैउपरइं प्रत्येकइं २ सीहासन कगवेलेकह्या जिहां सिंहासननो वर्णनकरवो सोदामनाजानोवर्णनपरि वारवर्णनकरवो तेप्रेषाघर
सिणं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं २ सीहासणा पण्णत्ता सीहासणवन्नओ जाव दामा परिवारा तेसिणं पे
नामंडपनइंउपरइं आठआठमंगलीकध्वज छत्रउपरिछत्रबै तेप्रेषाघरमंडपनइं आगलें त्रणिदिसें त्रणिमणिपीठका
च्छाघरमंडवाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ तिदिसिं ततो मणिपेढिया
कही तेमणिपीठकाकेहवीबइं बइंयोजन लांबपणइं पिहुलपणैं कहीउ जोजनजाडपणइं बइं सर्वमणिमयबइं
ओ पण्णत्ताओ ताओणं मणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अ
निर्मलसांजगाइं प्रति तेमणिपीठकानइंउपरइं प्रत्येकइं २ चैत्यनास्तूपकह्या तेचैत्य स्तूपबइं योजनलांबपणैं वि
रूपछइं
च्छाओ जाव पडिरूवाओ तासिणं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं २ चेइयथूभा पण्णत्ता तेणं चेइयथूभा दो जो

जीवाभिगमः
१६३

रूलवणेछइ कोइकअधिकोछइयोजन ऊंचांऊंचपणेछइ खतजेहवोसंखकुंदपुष्पजलो इमृतमथित्तक्षीरनीर

यणाइ आयामविरकंभेणं साइरेगाइ दोजोयणाइं नहं अचत्तेणं सेयासंखकुंदगरयअमयमहि

फीणनोसमोहतेहनेसरीषो सर्वरत्नमयछै स्वछनिर्म जावप्रतिरू तेचैसथूभनीच्यारदिसैंएपरैंच्यारध्वमंगलीक
उज्वल ल प

यफेणपुंजसन्नकासासव्वरयणामयाअछा जावपडिरूवा तेसिणंथूभाणंउप्पिंअठठमंगले

यकेणपुंजसन्निकासासव्वरयणामयाअछा जावपडिरूवा

धजासहित्तक छत्रनपरिछत्रछै तेचैसथूभनी च्यारदिसइंप्रत्येकें २ च्यारमणिपीठकाकही तेमणिपीठकाकेहवी
हा

झया पण्णत्ता छत्ताइछत्ता तेसिणंथूभाणं चउदीसिपत्तेयं चत्तारिमणिपीढयाओपन्नत्ताओ ताओणं

छइ एकयोजनतोलांबपणाइंछइपिहुलपणेछइ अर्धयोजनजाडपणेछइ सर्वमणिम तेमणिपीठकानइउ प्रत्येकें २
यछै परइं

मणिपीढयाओजोयणं आयामविरकंभेणं अद्धजोयणंबाहल्लेणं सव्वमणिमयाजावताणं तासिणंम

च्यारश्योजैनजिनप्रतिमाजिनप्रतिमानीऊंचपणानीमात्रा इंजघन्यसातहाथउत्कृष्टतोपांचसइंधनुषनोमानकहइ इहांजि
नप्रतिमाकांचसइंधनुकपसंस्त्रावीइ तेजिनप्रतिमा४छेतेकेहवीछै पर्यंकास

णिपीढियाणं उप्पिंपत्तेयं २ जो चत्तारिजिणपडिमाओ जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताओपलियंकनिसन्नाओथूभा

नइ बैठीछैथूभनैसा बैठीरहे तेकेहीतहनामकीहवाजाणवा चंद्रानन वारिषेण तेचैसथूभनइ आगलइ
हमी छइ एकतोऋषभ१ वर्द्धमान२ ३ ४

भिमुहीओसंनिखित्ताओचिट्ठंति तंजहा उसभ१ वद्धमाण२ चंदाणण३ वारिसेण४ चेइयथूभाणंपुर

ओणिदिसेप्रत्येकइं२ मणिपीठकाकही तेमणिपीठका छइयोजन आयामकहेतांलांबपणइं पिहुलपणेछइ

उत्तिदिसिंपत्तेयं२ मणिपीढयाओपन्नत्ताओ ताओणं मणिपीढयाओ दोदोजोयणाइंआयामविरकंभेणंजोयणंबा

एकयोजनजाडपणइं सर्वमणिमइं निर्मलछैश्लक्ष्णछैघृष्टामृष्टनीरजएहवा तेमणिपीठकानेउप
छइ छइ निर्मलमृदुकेहवाछै सालंकृतिरूपछइ रइ

हल्लेणंसव्वमणिमइउ अछाउसण्हाउघठाउमठाउनिप्पंकाउनिरयाएउजावपडिरूवाउ तासिणंमणिपी

प्रत्येकें २ चैसरूखचैत्यतरुगोक तेचैसरूखकेहवाछै आठयोजनऊंचाऊंचपणेछइ आठयोजनजाडपणेछइ छइयो
स्ता

ढियाणंउप्पिंपत्तेयं२ चेइयरुक्खापन्नत्ता तेसिणंचेइयरुक्खाअट्ठजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणं अद्धजोयणं

मनभूमिखंधघरतोप्रदेशछइ आठयोजनपिहुलपणइंछइ छयोजननीऊंचीनीकलीवडिमाशाखातेहनो आठयोज
घणोमध्यभाग

उव्वेहेणंजोयणाइंखंधीणं अद्धजोयणायविरकंभेणं छसुजोयणाइंविडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोय

नलांबापहुलोछइ कांइकअधिक आठयोजनसर्वसमइंकह्या तेचैसरूखनोएहवोवर्णकविशेषकह्यो

णाइंआयामविरकंभेणंसाइरेगाइं अट्ठजोयणाइंसव्वग्गेणंपण्णत्ताइं तेसिणंचेइयरुक्खाणंइमेयारूवेव

तेकहेछइ एहवोछइ एतादृशरूपतेकिम वज्ररत्नमयमूलछइ रूपामयऊंचीनीकलीवडिमा आ
रीष्टरत्नमयविस्तीर्णकंदछइ वैडूर्यरत्नमयथडछइ

ण्णावासेपण्णत्ते तंजहा वइरामयामूलारययसुपइट्ठियविडिमा रिट्ठामयविपुलकंदवेरुलियाम

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

पाछइं रूडा जातिरूपसुवर्णनातिरूपामइं पहिली अनेकमणि विविधप्रकारनी वैडूर्यरत्नमैनीला तपनीय बेंट छइं
नीकलतीसाषातेहविशालाछइं मंरत्ननी साषा छइं पत्र छइं सुवर्णनां

यारुकोमसुजायसव्वपउमविसालानानामणिरयणविविहसाहप्पसाहवेरुलियपत्ततवणिज्जपत्तवेंटाजं

जंबूनदसुवर्णमइंरक्तमउआ सुकुमाल पलवछइं वरप्रधानअंकुरा विचित्र मणिरत्नमय कुसुमफूलें
पलवकहतांरीसीयांछइं तेहना नलीकरीसोभतां सुगंधछइं फलेछइं

बूणयरत्तमउयपलवसुकुमालपवालसोभंतवरंकुरग्गसिहराविचित्तमणिरयणसुरहिकुसुमफल

फलीफलनाभारतलेंकरीनमावीछें शाषाने तेहनीफलीशाखा उद्योतसहित अमृतसरिषोरसछइं अधिकनेत्रनिंमनने
इंछायाछइंजेहनी प्रभाकांतिछइं सश्रीकसोभायमानछइं हितछइं जेहनो एहवोमरसफलछै नवृतिकारीएतलेंसुषकारी

भरियनमियसालासछायसप्पभासस्सिरीयासउज्जोयाअमयरससमरसफलाअहियंनयणमणनिव्वु

मननइंप्रसन्नकारी देषवायोग्य अतिरूपप्रतिरूपछइं तेचैत्यवृक्ष उपरइं घणा२ आठ२मंगलीकध्वजासहितछइं
छइं छइं एसर्वपाछलीपरेंछइं नइं

इकरापासाईयादरसणिज्जाअभिरूवापडिरूवातेसिणंचेइयरुक्खाणंउप्पिंबहवेअट्ठट्ठमंगलगाझया

छत्रउपरिछत्रछइं तेचैत्यवृक्षनइं सुरतोकहितां आगलइं त्रणिदिसइं त्रणि२मणीपीठिकाकही तेमणिपीठिका एकयोजन

छत्ताइछत्तातेसिणंचेइयरुक्खाणंपुरओतिदिसिंतओमणिपेढियाओपन्नत्ताओताओणंमणिपेढीआओजोयणं

लांबपणइं पिहुलपणइं अर्धजोजनजाडपणइंछइं सर्वमणिमयछइं निर्मलप्रमुखप्रतिरूपछइं तेमणिपीठिकानइंउपरें

आयामविक्खंभेणंअद्धजोयणंबाहल्लेणंसव्वमणिमईओअच्छाओजावपडिरूवाओतासिणंमणिपेढियाणं १६४

प्रत्येकं२पीठिकाइंहीवमहेंद्र साढासातयोजनऊंचो महेंद्रध्वजप्रमाणपणेंसहमध्व लांबपणइंछइंवज्रमयवाटलालष्टमनोहरसं
इध्वजकह्या उंचपणइंछइं कोषपिहुलपणेंछइंअर्धकोस स्थानकसीलष्टपरीघट्टसमारयाछेसरूप

उप्पिंपत्तेयं२महिंदज्झयाअद्धट्ठमाइंजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणंअद्धकोसंविक्खंभेणंवइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलि

विशेषनानाप्रकारनीविशिष्ठप्रधानसुष्ठसरूप अनेकवर पंचवर्णकुंडीनाहजार तेणिंपरिसिं वायेंप्रध्वजविजय
दिनाम्नदंडकासमलपाषाणप्रतिमैवरूपक्ति प्रधान दिसोचित्तआसिरोमनोहरछइं हलावी

ट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपइट्ठियाविसिट्ठाअणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामावाउद्धुयविजय-

वैजयंतीपताकाछत्रउपरिछत्र ऊंचाआकासागगनतलनइंउलंघतोएहवोशि खरवालछइंजेहनो प्रासादस्थानइंजेहनइंतोजेवीनोरूप
प्रसादवंतछइं नथी

विजयंतीपडागछत्ताइछत्ताकलियातुंगागगनतलमभिलंघमाणसिहरापासाईयाजावपडिरूवाते

तेमहेंद्रध्वजनेंउपर आठ२मंगलीकसहित छत्रउपरिछत्र तेमहेंद्रध्वजनइं पुरतोकहितांआगलइं त्रणिदिसइं त्रणिनंदापुष्कर
इ. ध्वजाछइं छइं णी

सिणंमहिंदज्झयाणंउप्पिंअट्ठट्ठमंगलगाझयाछत्ताइछत्तातेसिणंमहिंदज्झयाणंपुरओतिदिसिंतओनंदापुक्खरणी

साढाबारजोजननी छयोजनअनेंएककोसनी पिहुलपणाइंछइं दशयोजनऊंडपणे निर्मलजलछ
लांबीछइं स कही इं

ओपन्नत्ताओताओणंअद्धतेरसजोयणाइंआयामेणंछक्कोसाइंजोयणाइंविक्खंभेणंदसजोयणाइंउव्वेहेणं

पुष्करणीवर्णनपाठ प्रत्येकं वनषंडेंकरीपरिवेष्टित जावनिरूपलगेंकहवो तेनंदापुष्करणी प्रत्येकइं२
छइंसम जीपरइंकहवो २ वनषंडवीटीछइं नइ

अच्छाओसण्हाओपुक्खरणीवण्णओपत्तेयं२वणसंडपरिक्खित्ताओजावपडिरूवाओतासिणंनंदापुक्खरणीणं

चलिदिसें त्रसोपानपावडी प्रतिरूपकस्यां तेत्रसोपांनप्रतिरूपकनो वर्णनकीजइ पाखलीपरइंतोरणनाथास्यो
नकरवत्

जीवाभिगम १६५ पत्तेयं२ तिदिसिं तओ तिसोमाणपडिरूवगपन्नत्ता तेसिणंतिसोमाणपडिरूवगाणंवण्णओ तोरणा

ज्यांलगइछत्रपरिछत्रछइ सत्तासोधूमीइं छमनोगुलीकापीठविशेषना सहसकहतांसहस्री तेजहाले पूर्वदिसिंबिसहंससी
पाचिशेषपणइकहेछइ किम छाइ

णियवा जावछत्ताइछत्ता सभाएणंसुहम्माए छमणोगुलियासाहस्सीओपन्नत्ताओ तंजहा पुरच्छिमेणंदोसाहस्सी

पछिमेंबिसहंससीया२ दक्षिणएकसहंससीया३ उत्तरिंएकसहंसत्रीया४ होइ तेमनोगुलिकापीठविशेषघणासो

ओ पच्छिमेणंदोसाहस्सीओ दाहिणेणं एगसाहस्सीओ उत्तरेणंएगसाहस्सीओ तिसिणंमणोगुलियासु बह

नारूपानाफलकपाटीयांकह्यां तेसोनारूपानेफलकपाटीए घणा वज्रमइ नागदंताखूंटीकहाकह्या तेवज्रम

वेसुवण्णरूप्पमयाफलगापण्णत्ता तेसुणंसुवण्णरूप्पामएसुफलगेसु बहवेवइरामयानागदंतगापण्ण

इनागदंतानेंविषइं घणाश्वेतनावाटलाविस्तरितमद्धदामनाक लापसमोहछइजेहनोहबिस्तरीतमह्वदामना

त्ता तेसुणंवइरामएसुनागदंतएसु बहवेकिण्हसुत्तावट्टवग्घारिय मल्लदामकलावाजावसुक्किलसुत्त

समोहछइ तेदामनइ तपनीयस्कवर्णमइलहेर नानावोसिणकुमनाकस्यावर्णनसां स्कंधसीइंचसहंसगोमा
लंबेरहइछइ विजयनीपरेसर्वा णसीयाशय्याविशे

वट्टवग्घारियमल्लदामकलावा तेणंदामातवणिज्जलंबूसगाजावचिट्ठंति सभाएसुहम्माए छगोमाणसीया १६५

षकह्या तेकेहा पूर्वइबेसहंस पश्चिमइबइसहंस दक्षिणएकसहंस उत्तरेएकसहस तेसीयाविशेष

साहस्सीओपण्णत्ताओ तंजहा पुरच्छिमेणंदोसाहस्सीओ एवंपच्छिमेणंदोदाहिणेणं उत्तरेणंएगसाहस्सीओ तासु

घणासोनारूपामयें पाटीयांकह्यां ज्यांलगेंतेवज्रमइं नागदंतानेंविषइं घणारूपामइसीकाकह्या

णंगोमाणसीसु बहवेसुवण्णरूप्पमयाफलगापण्णत्ताजावतेसुणंवइरामयासुनागदंताएसु बहवेरययया

छइं तेरूपानेसीके घणी वैडूर्यरत्नमइं धूपघटीसांजननिविशेषकही तेधूपघटी

सिकापन्नत्ता तेसुणंरययामएसुसिक्कएसुबहवेवयविसलियामईओ धूवघडियाओपन्नत्ताओ ताओणंधू

नीसाजन कृष्णागर प्रवरचीणसेलहकजांलगइ घ्राणमननेंसुखकारी तेणइंगंधिकरीदिसि२ नेंविषेंव्यापी

-५- पघटीनां कालागुरुपवरकुंदुरुक घणेमणिनिव्वुइकरेणंगंधेणंसव्वओसमंताआपूरेमाणीओचिट्ठंतीसभा

रहेछे तेस्कधर्मासभाइं तेहनो घणोसमोरमणीकछत्रीसाणकहिउ ज्यांलगेंमणिनोसपरस चलोवइक
री

एसुहम्माए अंतोबहुसमरमणिज्जेभूमिभागेपण्णत्ते जावमणीणंफासोउल्लोयापउमलयाभत्तिचित्ताजावसव्वतव

पद्मलतामनोहरछीतिचि ज्यांलगेंसर्वसोनावर्णमइंस्वच्छयांप्रतिरूपछइ तेघणा रमणीकनोमिमाणमइं
त्रामछइ

णिज्जमएअच्छेजावपडिरूवेतस्सणंबहुसमरमणिज्जस्सभूमिभागस्सबहुमज्झदेसभाए एत्थणंएगामहेंमणि

जीवाभिगम
१६६
वइस्तिकषट
कोणीषकइवि
प्रग्रकै

घणोमध्यदेशभाग एकलेकानामई मणिपीठिकाछइं बइंयोजननोलांबपणइं पिहुलपणइं एकयोजननी

पीढियाएदोजोयणाइंआयामविक्खंभेणंजोयणंबाहल्लेणंसव्वमणिमईयमइ तीसेणंमणिपेढियाए उ

डपणइं सर्वमणि तेमणीपीठिका उपरि जिहांएकमानविकनामइंवे साहासातयोजनऊंचोऊंचपणोंछइं अर्धकोस
मेंकह्यो सपंचवे

प्पिंएत्थणंमाणवएनामंचेइए खंभेपन्नत्ते अद्धट्ठमाइंजोयणाइंउच्चत्तेणंअद्धकोसंउव्वेहेणंअद्धकोसंविक्खंभेणंछकोडिए उ

विखंभविस्तारइंछइं छयोजननेऊंचपणेनीचपणइं नइंछबोसांग वज्रमेवाटलो लष्टमनोहरसंस्थान इंमजिमइंद्रध
जनोवर्णनथाव
तेह

छलंसेछसुविग्गहिएवयरामयावट्टलट्ठसंठिए एवंजहामहिंदज्झयस्सवण्णओजावपासाइए एतस्सणंमाण

त्रिकोर्णत्रिमवर्णनसर्वकस्याज्योलगइमने तेलबांसान उपरइं छकोसक्रमावगाही हेठिछकोसवर्जिनइं वविचोसाढाच्या
रयोजननी
प्रसन्नकारीछेमालगीकहेवोतमानवक इ नइं

वगस्सचेइयखंभस्सउवरिंछकोसेओगाहित्ता हेट्ठाविछकोसेवज्जेत्ता मज्झेअद्धपंचमेसुजोयणेसु ए

रुपमित तिणइंथांभे सोनारूपानाफलकपाटीयां तेसोनारूपानेपाटीए घणावज्ररत्नमय नागदंता कह्या तेवज्रमे
हो घणा पत्नहाकहेतोपाटीयाकह्यां

त्थणंबहवेसुवण्णरूप्पमयाफलगापन्नत्ता तेसुणंसुवण्णरूप्पमएसुफलएसुबहवेवइरामया नागदं

नागदंतानेखोकडानेथांभे घणारूपामें सिकाकह्याते सोनारूपानेमीके तिहांघणां वज्रमे गोलवाटलाभाव

तातेसुणंवयरामएसुनागदंतएसुबहवेरययामया २ सिक्कगापन्नत्ता तेसुणंरययामएसुसिक्कएसुबहवे १६६

हीकह्याते वज्रमे गोलडाबडे तेहनइंविषइं घणीनगवेतनीमकरडावाढांथापीथकीरहीछइं

वेवइरामएसुगोलवट्टसमुग्गकापन्नत्ता तेसुणंवयरामएसुगोलवट्टसमुग्गएसुबहवेजिणसकहाओसं

जेशाश्वताविजयदेवतानी तथाअनेरापण घणा वाणिमंतरनादेवतादेवांगनानि अर्चनीकवंदनादिके वांदवाजोगिकरना
करीनइं दिके

न्निखित्ताचिट्ठंति जाउणंविजयस्सदेवस्सअन्नेसिंचबहूणंवाणमंतराणंदेवाणंदेवीणयअच्चणिज्जाओ

पूजनीकपुष्पादिकेम माननीकसत्कारपरोयण सम्यग्प्रकारइंमो कल्याणमंगली देवतानेचैत्यनीपर्युपासना
ननीकबहुमान वस्त्रादिध्वजादि नवायोग्य क योग्यछइं

वंदणिज्जाउपूयणिज्जाउमाणणिज्जाउसक्कारणिज्जाउसम्माणणिज्जाउकल्लाणंमंगलंदेवयंचेइयंपज्जुवा

मानवकचैत्यस्तंभने उपरइं घणा २ आठ २ मंगलीकध्वजासहित छत्रनपरिछत्रछइं तेमानवक चैत्यनाखंभ

सणिज्जाउमाणवगस्सणंचेइयखंभस्सउवरिंअट्ठट्ठमंगलगाझयाछत्ताइछत्ता तस्सणंमाणव

की पूर्वदिसइं तिहांएकमोटीमणिपीठिकाकही सर्वतेमणिपीठकाबइंयोजन लांबपणइंपहुलपणइंकहइं सर्वम

कस्सचेइयखंभस्सपुरच्छिमेणं एत्थणंएगामहंमणिपेढियापन्नत्ता साणंमणिपेढियादोजोयणाइंआ

णिमणिमयछांजगइंप्रतिरूपछइं तेमणिपीठका उपरइं तिहांएकसिंहासनवीतरागेकहीउं

यामविक्खंभेणंजोयणंबाहल्लेणंसव्वमणिमयाजावपडिरूवा तीसेणंमणिपेढियाएउप्पिंएत्थणंएगंमह

तेसीहासननोवर्णनकरवो । तेमांनविजयदेवसंबंधकी पश्चिमनीदिसइं तिहांएकमोटीमणीपीठकाकही

डिवालिणम: हंसीहासणेपणत्तेसीहासणत्तवण्णं तस्सणंमांणवकस्सचेईयखंभस्सपच्चत्थिमेणं एत्थणंएगामहंमे
यीजनलांबपणइंपिहुलपणेकही । अर्धयोजनजाडपणइंकहीमणिमय सर्वमनिर्मलछइं तेमणिपीठकाउपरइं
१६७

णिपीढियापण्णत्ता जोयणंआयामविक्खंभेणं अद्धजोयणंबाहल्लेणंसव्वमणिमयीअच्छेतीसेणंमणिपी
तिहांमोटीएकदेवशय्याकही तेदेवसय्यानोएहवोवर्णवास एहवोएतादृशरूपवरणनविसेषती अनेकमणिम
ईकरेकही तेनेकहेछै यापतिपादया

ढयाएं उप्पिंएत्थणंएगेमहंदेवसयणिज्जेपण्णत्ते तस्सेणंदेवसयणिज्जस्सअयमेयारूवेवण्णावा
रूपानाहेविलाप्रदेसाछइंस्वर्णमय मस्तपारकछइं अनेकमणिमयपइसीषकाईया जंबूणंरयणमइंसत्तप
नामूलमस्तकछइं लोछइं

सेपण्णत्ते तंनाणामणिमयापडिपायासोवण्णियमूलपायानाणामणिमयापायसीसाजंबूणयाम
वज्रमइंसांधिछइं अनेकमणि विहूरपारीयांबेजेहनीरूपामइंतूलकोलछइंवि जोहिनाप्ररलमिंविवोबलो
मइं हतोमखुतेवननिसर्वनानामणियेमेचुतवि उपधांनकानतसीसो
चिहवी

याइंगत्ताइं वयरामयासंधी नाणामणिमयाविच्चेरययामयातूलीलोहियक्खमयाविवोयणा त
इतिअर्थतेतपनीयमेमंडिप्रधानि यांकेहवीछइंसालिंगनवत्तिकंसरि विवोयणउसीसातेणेकरीबेपासाउची
कागजमसरायाछइं तेदेवशय्या रखमालोष्पतरोनेतरोनउकषगायपास सकप्पिविहिंनीरवंदीतेगाल्यागगा

वणिज्जामयीगंडोवि हाणयसेणंसयणिज्जेसालिंगणवट्टिएउभउविव्वोयणेदुहउउण्णएमज्झेणयंग १६७
मध्येनतनामनतिगंसीचमहितवीआदनिषेसेहनो॥

नापुलिणवेलूलेहनो अववुद्दलणएपम्मुं उवतनविचित्रिथवरिकर्मतरो लतेहनोपलिलाइनमाहें एतलइंछतोकीधोवैरजत्राण
कइंछवइंचाइंएहवीसंष्यालीसयालै मकपासेनिफनतूनलपटरू निहांगतावष्टुसेवलतदाकेवलें एतलेस्करमछइं
तीरंगणपुलिणवालुयाउद्दालसालिसए उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणेसुविरइयरयत्ताणेरत्तंसुयसंबुए सु
कमायाचर्मनोने एहवोरूपवकर्पासनिफनवस्त्रवनस्पतीविशेषनवनीतमांषणअर्कतूलसरीषोफरस उरवइंइगोनतूलु
छइंपद्ममकोमलतेमननप्रधान कारीछइं तेदेवशय्याचकीउत्तर इं
रम्मेआईणगरूयबूरणवणीयतूलफासेसममत्तेएयासाईयतेसीणंदेवसयाणिज्जस्सउत्तरपुरत्थिमेणंएत्थणं
तिहांमोटीएकमणिपीठ एकयोजनलांबपणे इंमप्रोएक तेमणिपीठकाउपरइं एकमोटोछुलकमहेंद्रधजकह्यो
काकही छइं
एगामहंमणिपेढियाय जोयणंआयामविक्खंभेणंजावतस्सणंमणिपेढीयाउवरिएगेमहंखुड्डमहिंदज्झ
साढासातयोजनऊंचो अर्धकोसऊंडपणइंछइं विक्खंभपिहुलपणे वज्रमय वाटलो उत्तमनोदसंस्थानतिमज कह्या
उपणइंछइं अर्धको लेछइं य आवमंगली जगोम

एपण्णत्तेअद्धट्ठमाइंजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणंअद्धकोसंविक्खंभेणंवयरामएवट्टलट्ठसंठियातहेवजावमं
जासहितमत्रवत्य तेछुल्लमहेंद्रध्वजथ पश्चिमदिसइं तिहांविजयदेवतानो चत्रफालनामाप्रहरणकोशयारनोकोस
तिलछइं की
गलझयाछत्ताइछत्तातस्सणंखुड्डमहिंदज्झयस्सपच्चत्थिमेणं एत्थणंविजयस्सदेवस्सचप्फालनामपहि
संकारछइं तिहांविजयदेवतानो फटिकरत्नप्रमुखघणाप्रहरणकशीयारूपरत्नघा णापकोरेंहछइंकेहवोंछइं तेकही

रणकोसेपण्णत्ते तत्थणंविजयस्सदेवस्सफलिहरयणपमुहकाबहवेपहरणरयणासणिखित्ता:

आहेबमल
टीकाकारेमि
तिषत्तउपध
निकाति॰

जिवाभिगम:
१६८

आरबजलोबइं सुमुसियते इसो सनतीषी जेहनी सुधर्मा घणा घ आवाव मंगलीक धुजस बत्र उपरि बत्र
जवंतक सनानइं कपरइं ण हितबइं इसला

चिट्ठंती तस्सणं सुहम्माए सभाए उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता

सुधर्मा थकी ईशान कूणनि हांमो टोएक सिद्धनो साढाबार योजन लांबपणइं छइं योजन एक कोस विस्तारइं तिमजत्रे नव योजन ऊंचो छइं तिमज बार छइं मुषमंडप तिमज छे पाघर
ईशानकूण

सभाए सुहम्माए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महं सिद्धाययणे पन्नत्ते अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं तहेव दारा मुहमंडवा

मंडपछइं चे सम्मुख चैत्यथूभ तिमज महेंद्रध्वजनि तिमज नंदापुष्करणी तिमज सदसहा मस हितमणोगुलिका सय्या वि
तिमज मज मज आय

पेच्छाघरमंडवा य झया चेइयथूभ महिंदझया णंदाओ पुक्खरणीओ सहेसा रिसमा णं मणोगुलिया
छमहस गोमा विशेष तिमज धूपघटी तिमज घणोस तिमज च जोमणि तासपउति गंकहे वा नइं तेसि धाय तन घणो देशम
लसीय परमणीकसललाग

सुदामो गोमाणसी धूवघडियाओ तहेव भूमिभागे उल्लोए जाव मणिफासो तस्स णं सिद्धाययणस्स बहुमज्झ
मणिपीठिका कहि लिहामो टोएक मणिपीठिका छइं योजन लांबपणइं पहिलपणे एकयोजन जाडप सर्व मणिमइ फटिक
निर्मल छइं श्रीवीतरागनी

देसभाए एत्थणं एगा महं मणिपीढिया पन्नत्ता दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणि
ते मणिपीठिकानइ उपरइं तिहांमो टोएक देवछंदोक ते बइं योजन लांबपणे पिहुलपणे छइं कांईक अधिक बे
हियो

मइ अच्छा तीसेणं मणिपीढियाए उप्पिं एत्थणं महं देवच्छंदए पन्नत्ते दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं साइरेगा १६८

योजन ऊंचो ऊंचपणइं सर्व रत्नमय स्वच्छ निर्मल तेह देवछंदामांहइं एकसो आठ जिनप्रतिमा तणी ऊंचपणइं पांचसे
छइं छइं धनुष पनी मात्रइं बापी प्रकी

इं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामए अच्छे तत्थ णं देवच्छंदए अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमा

देवछंदामांहइं रहे छइं ते जिनप्रतिमानो एतार एहवो वर्णनविशेषक हीयो तेक हे छइं तपनीयरक्त वर्णसुवर्णनां स
शास्वत लो छइं

णं सन्निखित्तं चिट्ठइ तासणं जिणपडिमाणं अयमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते तं तवणिज्जमया हत्थतला

अंकरत्ननी परइं नखमांहि लोही प्रदेश लोहिताक्ष रत्नमय छइं सुवर्णमय पग छइं कनकसुवर्णमइं गुल्फ घूंटी कनकसुवर्णमइं जां
नख छइं घ छइं जेहनी

अंकामइं णखा अंतोलोहियक्खमय परिसेया कणगामया पाया कणगामया गोप्फा कणगामईओ

कनकमय जानु प्रदेश छइं कनकमैं ऊरू जांघ थकी ऊंचा प्रदेश छइं कनकमैं गात्रनी यष्टि समवश देश छें जे प्रतिमानो तपनीयमैं नाभिप्रदेश छइं रिष्टरत्नमय रो मराजी छइं

जंघाओ कणगामया जाणू कणगामया ऊरू कणगामया उगायलट्ठीओ तवणिज्जमईओ णाभीओ रिट्ठाम

तपनीयमइं चुचुक स्तनाग्र ता छइं तपनीयमइं श्रीवत्स छइं कनकमय बांहनइं सुवर्ण कनकमैं ग्रीवा कोटि छइं जेहनी मे बाहु छइं

ई नरोमराईओ तवणिज्जमया चुच्चूया तवणिज्जमया सिरिवच्छा कणगामईओ बाहाओ कणगमईओ गीवाओ रि

रिष्टरत्नमय मूछ दाढी छइं सिलप्रवालविद्रुममय उष्ठ होठ छइं फटिकरत्नमय दांत छइं तपनीयसुवर्णमइं तालुउ छइं कनकसुवर्णमइं नासिका छइं लोहिताक्षरत्नमैं नासि

ट्ठामए मंसु सीलप्पवालमया उट्ठा फालिहमया दंता तवणिज्जमईओ जीहा तवणिज्जमया तालुया का

DR. BHAU DAJI

जिवाभिगम
१६९

काळइं नासिकानीम अंकरत्नमें धोली आंषिन लोहिताक्षरत्नमैं राता आंषिनां बेहुकाळइं पुलिकरत्नमें द्रष्टि
ध्यप्रदेश ळइं इं जेहनी ळइं जेहनी

णगमइनासाउ अंतोलोहियरकपरिसेयाउ अंकमयाअछीणी अंतोलोहियरकपरिसेइं पुलिकामा

रिष्टरत्नमइं आंहेलीतारगाकी रिष्टरत्नमें आंषिनापत्रटोक रिष्टरत्नमयसांपणिळइं कनकमयकपोलळइं कनक
कीळइं णांळइं

इउ दीठीउरठामइउ तारगाउ रिठामयाइं अछिपत्ताइं रिठामइउ भमुहाउ कणगामयाकवोलाकण

मइं कानळइं कनकसुवर्णमइं निलाडपट्टळइं वज्ररत्नमयसीर्षघटीका तपनीयमइं मांहिली केशांतिभूमि रिष्टर
जेहना वै वै त्नम

गामयासिवणा कणगामयानिडालवट्टा वयरामइउसीसघडीउ तवणिज्जमइउ केसंतकेसभूमीउ रिठा

यउपरिकेशजमस्त तेजिनप्रतिमानइं प्रतिमांपीठप्रत्येकइं२ धरीप्रतिमाछै हेमरजतकुंद इंदुसरिषोप्रकाशउज
कनीउपलीमस्तकछै एकेकीछत्र तेकेहवीछइं लोळइं

मयाउवरिमुधया तीसिणंजिणपडिमाणं पिठिउपतेयं२ छत्तधारपडिमाउ हिमरयतकुंदेंदुसप्पकासा

कोरंटनांपुष्पनीमाळा एहवांधोलांछत्र सलिलधरतीधुकीरहइं तेजिनप्रतिमानइं बेपासेप्रत्येकइं२
इंपुष्पजातिछइं तपत्रछइं छइं

इं सकोरंटमल्लदामाइं धवलाइं आइपत्तिइं सलीलं उहरेमांणीउ चिठंति तसिणंजिणपडिमाणं उभउ

चामरधारीप्रतिमाश्रीवीतरागदेवइंकही तेचामरधारीप्रतिमावीतरागे अनेकमणिकनक रत्ननिर्मळमइं जोवा
कही स्वरूप

पासेपत्तेयं२ चामरधारपडिमाउपनत्ताउ ताउणंचामरधारपडिमाउ नाणामणिकणगरयणविमलम

तपनीयमेंउज्ज्वलवि दंडजेहनो वैडूर्यर संषजेह वज्ररत्न पुष्पदको जळरजमेलवीउज्ज्वल अमृतमथ्युएतलेंक्षीरसमु
चित्रवैं त्न वो त्न कोइं द्रनोफीणजेहवोधवलहोइं

हरिहतवणिज्जउज्जलविचित्तदंडाउ चिलियाउ वेलियासंखकुंददगरय अमयामहियफेणपुंजसन्नका

तेहनइंसरीषोत्र सुक्ष्मरुपीणारूपामइंदीर्घजोवा चामरढाळता रहइंछइंसदासर्व तेजिनप्रतिमानइं आगळइंबेनागप्रति
उजोळइं नाळळइं एहवा धका दाकाळइं माळइं

साउ सुहुमरययदीहवालाउ चामराउ सलीलाउ हारेमांणीउ चिठंति तेसिणंजिणपडिमाणंपुरउ दोदोना

बइंबइंजक्षप्रतिमाछइं बेबेंभूतप्रतिमाछइं बेबेकुंडधारीप्रतिमाछइं विनयइंनमतीवैं पगेलागती हाथजोडती

गपडिमाउ दोदोजखपडिमाउ दोदोभूयपडिमाउ दोदोकुंडधारपडिमाउ विणउणयाउ पायवडिया

संनिक्षिप्तथापीथकी रहइंछइं सर्वरत्नमइंछइं आत्मानिर्मळ जथमनोहरुवैं घसारीमठा निरजमल निर्मलछ निष्पंकछ
छइं रीछइं रहित इं इं

उपंजलिउडाउ संनिखित्ताउ चिठंति सव्वरयणामइउ अछाउ लछाउ घठाउ मठाउ नीरयाउ निप्पंकाउ नि

आजगं प्रतिरूपपा तेजिनप्रतिमानइं पुरतःआगळइं एकोआठघंटा एकसोआठचंदनना कळशछइं इमएकसोआठ
छळीपरइं भृंगार

प्पंकाउ डावपडिरूवाउ तेसिणंजिणपडिमाणंपुरउ अठसयाघंटाणं अठसयंचंदणकलसाणं एवंभिं

इमएकसोआठआरीसा इम१०८थाल इम१०८पात्री इम इम१०८मनोगुलीका एकसोआठ१०८ एकसोआठविचित्ररत्न
१०८सुप्रतिष्टिक पाववि‍शेष वायकारक नाकरंडीया

गाराणं आयंसकाणं थालाणं पाईणं सुपइठकाणं मणोगुलीयाणं वायकरयाणं चित्ताणंरयणकरंडु

१६९

जीवाभिगमः
१७०

इम १०८ हयकंठरत्न सोलगें १०८ रूषभकंठर एकसोआठ फूल सोलगें मोरपिछनी एकसोआठ १०८ फूलना पडला एकसोआठ
विशेष जाणवुं ते विशेषवचइ तेनी चंगेरी छइ ए चंगेरी इम एकसोआठ सोजन विशेष वतेलना
गाणं हयकंठकाणं जाव उसभकंठकाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं अट्ठस
सोजनविशेष सोलगें १०८ रूषभ एकसोआठ धूपना कडछा तेसिद्धायतननइं घणा आठ मंगलीक ध्वज सहित छइ
धूपकाछिइ कहेता रहइं छइं जिनप्रतिमाने आगलइं परइं
यं तेल्लसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छुयाणं संनिक्खित्तं चिट्ठइ सिद्धायणस्स णं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छ
छत्रउपरि छत्र उत्तम आकार छै ते सोलप्रकारे रत्ने करी घणुं रूप रत्नकर्केतनादि सोलगइ रि तेसिद्धायतनथकी
चइछइं छै सोभित छइं तेकहा ईशान मध्य कहेवा
त्ताइछत्ता उत्तमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तं रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं तस्स णं सिद्धायणस्स
ईशानकूणिनी तिहां एक मोटी उपपात सभा जिम सुधर्मा सभा तिम सर्व वर्णन करवो उपपात सभानइं मध्य
दिसइं सा कही लगे गोमाणसी यां भालणइं कहेवो विचार
उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं एगा महं उववायसभा पं जहा सोहम्माए तहेव जाव गोमाणसीओ उववायसभाए णं भू
भूमिभागइं उल्लोच चित्रसर्व सोलगें म ते घणो समोरमणी ते घणो भूमिभागनो म तिहां मोटी एक मणिपीठिका क
चवइं लिखवां सोलगइं कहेवो करइ मध्यभाग हो
मिभाए उल्लोए तहेव जाव मणिफासे तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स एत्थ णं एगा महं मणिपेढिया
एक योजन लांब पहुल विस्तार पणिम अर्ध योजन जाड सर्व मणिमइ छि ते मणिपीठिका उपर तिहां मोटी एक देवशय्या
सर्व सोलगें म लिखवा सोलगें कहेवो पणइं मै छइ रइं आ कही
या पं जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई तीसे णं मणिपीढियाए उप्पिं एत्थ णं एग १७०

ते देवसयनीनो वर्णन पाछली परइं करणवो। ते उपपात सभानइं उपरइं आठ आठ मंगलीक ध्वज सहित छइं छत्र उपरि छत्र
छइ
महं देवसयणिज्जो पं तस्स णं देवसयणिज्जस्स वण्णओ उववायसभाए णं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछ
सोलगइं उत्तम आकार ते उपपात सभाथकी उपरइं ईशानकूणिनी दिसइं तिहां एक मोटो द्रह कह्यो ते द्रह केहवो छइं साढाबार
रवइं योजन
त्ता जाव उत्तमागारा तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं एगे महं हरए पं से णं हरए अद्धते
लांब पणइं छइं छ योजन कुपरि एक कोस एतलो पहुलो छइं दस योजन ऊंडपणै छइं आछो छइं कोमल पुद्गल निर्मल वर्ण सम
सर्व जिम नंदी पुष्करणीनो
रस जोयणाइं आयामेणं छ सक्कोसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे वण्णओ
वर्णन कहीवो तिम सोलगें तोरण सोलगें सर्व ते द्रहथकी ईशानकूणिनी दिसइं तिहां मोटी एक अभिषेक सभा कही जिम सौधर्म
कहेवो वर्णन करवो सभा
जहेव नंदा पुक्खरणीणं जाव तोरणवण्णओ तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं एगा महं अभिसेयस
नो वर्णन पाछलिं कीधो छइं तिम निरविशेष पणइं गोमाणसी या पाव विशेषक ते भूमिभाग उपरि चित्र छो चंदै ते घणो समोरमणी
कहिवो सोलगें छ छइं तिम जसर्व कहेवो कस्थान फलइं
भा पं जहा सभा सुहम्मा तं चेव निरवसेसं जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए तहेव तस्स णं बहुसमरमणि
घणो मध्यदेश भूमिसा तिहां एक मोटी मणिपीठिका आ ते मणिपीठिका एक योजन लांब पहुलें अर्ध योजन जाड पणइं छइं
गनइ वलि रागे कहीइ छइं पहिज पणइं छइं
ज्जस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगा महं मणिपीढिया पं जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं स

ते सर्व मणिमय छइ निर्मल छै ते मणिपीठिका नइं उपरइं तिहां मोटो एक सिंहासण कहीइं सिंहासननो वर्णन सपरिवार कहेवो

विमणिमया अबाती सेणं मणिपीढियाए उप्पिं एत्थ णं एगे महं सीहासणे पं सीहासणवण्णओ सपरि-

तिहां विजय देवतानइं घणा अभिषेकनइं सरिखां पुष्करसंनी ठिक्क थाप्या छ तेऽभिषेकसभानइं उपरइं आठ आठ मंगलीक जाणइं कारहइं छइं

रिवारे तत्थ णं विजयस्स देवस्स सुबहु अभिसेक्के भंडे संनिक्खित्ते चिट्ठंति अभिसेयसभाए णं उप्पिं अट्ठट्ठ

कछइं ध्वजागे छत्र अत्रछाकार छै सोलरत्नेकरी तेऽभिषेकसभाथकी ईशाननइं खुणि नी दिसइं तिहां मोटी एक अलंकारनी सभा उपसोभित छइं

मंगलगा जाव उत्तमागारा सोलसरयणेहिं तीसे णं अभिसेयसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं एगा महं अ

लंकारी तेहनी अनुक्रमता सर्व अभिषेकसभानी परें सर्व कहेवो जां लगे गोमाणसी यावत् मणिपीठिका जाणवी अनुक्रमे मणि पीठिका कही

लंकारियसभा पं अभिसेयसभाए वत्तव्विया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपीढियाओ

जिम अभिषेकसभानें परे सिंहासन परिवार विना तिहां विजयदेवताना घणा रूपना अलंकार आभरणनां भंडार कहेवो

जहा अभिसेयसभाए उप्पिं सीहासणं अपरिवारं तत्थ णं विजयस्स देवस्स सुबहु अलंकारिए भंडे संनि

ध्यां थकी रहे अलंकारसभानें परें अष्टमंगलीक ध्वजा जां लगे छत्रत्र्य ते अलंकारसभाथकी विचि उत्तरपूर्वदिसइं ईशाननइं खुणनी दिसें छै सहित छइं कारछइं रीइं जोईइं तिवारें

क्खित्ते चिट्ठइ अलंकारियसभाए उप्पिं मंगलगा झया जाव उत्तमागारा तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरच्छि १९१

तिहां एक मोटी व्यवसायधर्मविचारवानी सभा कही इंऽभिषेकसभानी अनुक्रम जाणवी सिंहासन परिवार विना कहेवो तिहां व्यवसायसभानें मध्यविभागें

मेणं एत्थ णं एगा महं ववसायसभा पं अभिसेयसभावत्तव्वया जाव सीहासणं अपरिवारं तत्थ णं विजयस्स दे

जय देवतानो एक मोटो पुस्तकरत्न थाप्यो कारहेछइं तिहां ते पुस्तकरत्नने एहवो पतादृशरूप वर्णनविशेषक कहेवो तेहनो कहेछइं कंबके पृष्ठके इतिना वरिष्ठ रत्नमयें पानां छइं

वस्स णं महं पोत्थयरयणे संनिक्खित्ते चिट्ठइ तत्थ णं पोत्थयरयणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पं तं रिट्ठमयाओ कं

रूपामें पानांनां छइं रिष्टरत्नमय अक्षर छइं तपनीयमइं पानां परोवाने दोरछइं अनेकमणिमइं दोरनी गांठ छैन वैडूर्यरत्नमय विचित्र करी पानांनी कांबी लिप्यासनमषी

बियाओ रययामयाइं पत्ताइं रिट्ठामयाइं अक्खराइं तवणिज्जमए दोरे नाणामणिमए गंठी वेरुलियमए

सा जननिसर्व तपनीयस्वर्णमइं मषीसाजननी सांकलछइं रिष्टरत्नमइं वज्ररत्नमइं लेषणछें ते रिष्टरत्नमय अक्षर धर्मनासा स्त्र आनीरनलो कुवा कंठो कहे छइं ढवानी छइं

लिप्पासणे तवणिज्जमए संकलाए रिट्ठामए छादणे रिट्ठामई मसी वइरामई लेहणी रिट्ठामइं अक्खराइं धम्मए

सिष्णा ते व्यवसायसभानें उपरइं आठ आठ मंगलीक ध्वजा छत्रपरि छइं उत्तम आकारछें ते व्यवसायसभा थकी ईशाननइं खुणनी दिसि छइं

सत्थे ववसायसभाए णं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता उत्तमागारा तीसे णं ववसायसभाए णं

मइं तिहां एक मोटी नंदा पुष्करणी कही जे एहनि अभिषेकसभानें पउमाणइं एहनो कहेवो तिहां तिनि मनउ पुष्करणी ते नंदापुष्करणी थकी ईशाननइं खुणि

उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं एगा महं नंदा पुक्खरणी पं जं चेव पमाणं हरयस्स तं चेव सव्वं तीसे णं नंदाए पुक्ख

६

जीवाभिगमः
१७२

हवे ते विजयदेवनी तिहांउपनइ थकें जे हवी करणी करइं ते कहें छे

नी दिसें तिहां एक मोटो बलिपीठ कह्यो छइं बलिपीठ विशेष छइं ते कहें छइं बइं योजन लांबपणइं पहिलपणइं छइं
रणीए उत्तरपुरच्छिमेणं एच्छणं एगे महं बलिपीढए बलिपीढे एं पणत्ते दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं
एक योजन जाडपणें छइं सर्वरत्नमइ छइं निर्मल जाव प्रतिरूप तेणइं कालइं तेणइं समइं विजया राजधांनीइं विजयदेवतानी उपजवानी
जोयणं बाहल्लेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तेणं कालेणं तेणं समएणं विजयाए रायहाणीए
उपपातसभाइं शय्याइं जाव देवदूष्य नइं अंगुलना असंख्यातमा भागनी मात्राइं बोंदी सरीरइं देवतापणें उपनो तेह्व तरइं
उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्ताए बोंदीए विजयदेव
तिवारें ते विजयदेवता तत्काल उपनइं थकइं उपजवानी मात्राइं वेव निश्चइं करी पांच प्रकारे पर्याप्तिइं पर्याप्ता थाइं पर्याप्ति भाव इं पाम्यो तेकहइं
त्ताए उववन्ने तएणं से विजए देवे अहुणोववन्नमेत्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्ते
आहारपर्याप्ति १ शरीरपर्याप्ति २ इंद्रीपर्याप्ति ३ भासोसासपर्याप्ति ४ भाषामनपर्याप्ति ५
ए पज्जत्तिभावं गच्छइ तं आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासम
ए पांच पर्याप्तिइं ते विजय नामा देवतानइं पांच प्रकारनी पर्याप्तिभाव पामे थकें एक मनरूप नइं आरस एतला एतादृशरूप अध्यवसाय उपनो
णपज्जत्तीए तएणं तस्स विजयस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थि १७२

मननरूप संकल्प चिंतानो प्रार्थनारूप मनने विषे संकल्प उपनो

मनोगत मनमां हवि संकल्प उपजइं मारे एक सावद्य कर्म प्रहिलुं करवुं छइं स्युं एह पहिलुं किस्युं करवुं छइं किस्युं पाछली करवुं इं पहिलुं मारइं
ए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था किं मे पुव्विं सेयं किं मे पच्छा सेयं किं मे पुव्विं करणिज्जं किं मे पच्छा करणिज्जं कि
रीकर मारे निश्रेयस मोक्ष कारवो अनुगामिक जे परंपराइं शुभ अनुबंध इम संपेहित्ता तथा मनमां विचारीनइं ते विजयदेवतानी जिसा वडधांन मज्जिम बोलसा वडधान
मे पुव्विं वा पच्छा वा हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सतीतिकट्टु एवं संपेहेइ तस्सा तए
यदेवतानां सामानिक देवता अभ्यंतर परखदाना उपना ते विजयदेवतानी तेए हवा एतादृशरूप अध्यवसाय मनमां आत्मा ग्री उपनो
णं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववन्नगा देवा विजयस्स देवस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं
चिंतवें चिंतवीनें एहवो मनने संकल्प जांणीनइं जिहां ते विजयदेवता तिहां आवे आवीनइं
चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पन्नं जाणित्ता जेणामेव से विजए देवे तेणामेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता
विजयदेवतानें आगलें हाथ जोडीनें दसनख एकठा करीनइं मस्तकिं आवर्त्त अंजलि अमोनें आमइं एक गामें लीमस्तकि आवर्त्त तिणें करी जयवंता पवर्द्धि होइं विजयवंत नइं
वागच्छित्ता विजयं देवं करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं
जीवें इम कहीवधावें वधामणी देवतानइं प्रिय विजयराजधानीइं एक सो आठ प्रतिमा जिननी पांच से धनुष सरीर वीनइं इम कहें
वद्धावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणंसि अट्ठसयं जिणपडिमाणं जि
जयवंत देवने वधावें ते जय पंदी जयवंत प्रताप वृद्धि विजयवंत परें छो

प्रमांणवाळी थकी रहइ छइ   वली स्कंध मांहि सराइं   मानविकनो माचैसथंभ   वज्ररत्नमय गोल वर्त्तुलाकार छइ

गुस्स हरयणामए माणवए चेइयखंभे वयरामएसु गोलवट्टसमु
ते हमां घणी जिननी सकहा दाढ संन्निखित्ता थापी थकी रहइ छइ   जे प्रतिमा देवतानइं काजे प्रीय   तथा अनेरा घणा विजयाराजधानी ना वासी
ग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निखित्ताओ चिट्ठंति ताओ णं देवाणुप्पियाणं अन्नेसिं च बहूणं विजयाराय
देवता   तथा देवांगनानइं   अर्चवा योग्य छइ   वांदवा योग्य छै   पूजवा योग्य छइ   वस्त्रादिकें सत्कारवा योग्य छै   सम्मान करइं मानवा योग्य छै
हाणी वत्थव्वाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणि
कल्याण मंगलीक मइं देवता मइं   चैत्यनी परइं   पर्युपासना योग्य छइं   ए तेह देवतानुं प्रीयानें प्रथम श्रेयसै   ए देवानुप्रीयनइं पछइं पणि
ज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं पि सेयं एयं णं देवाणुप्पि
कल्याणकारी श्रेयक श्रे   ए देवानुप्रीयानइं पहिली करणी छइं   ए देवानुप्रीयानइं पहिलो अनें पछैं सांजोगें अनुगामिक परंपरा होसै
याणं पच्छा वि सेयं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं पि करणिज्जं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा वि करणिज्जं ए
परइं सकल कर्म अनुबंधनो फल होस्यइं   इति कहु इम करीनइं   मोटो २ जय २ शब्द प्रयुंजइं
यं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं पच्छा वा जाव आणुगामियत्ताए भविस्सती तिकट्टु महया २ जय २ सद्दं पउंजंति

[stamp] MEMORIAL

तिवारें ते विजय देवता   तेहां हेली परषदाना उपना देवतानें समीपइं   एहवो अर्थ सांभलीनइं   हीयें धरीनइं एरला मावीनइं हरष पणुं घणुं मांनें हरष
तए णं से विजए देवे तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए
पांम्यो छै हीयें एहवो थइ देवशय्या थकी उठीनइं   देवता संबंधि देवदूष्य युगल एक पहेरइं एकठो   देवशय्या थको उतरइं उतरीनइं
हयए देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ २त्ता दिव्वं देवदूसजुयलं परिहेइ २त्ता देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहइ २त्ता
उपपात सभानें पूर्वनइं द्वारइं करीनी नीकलीनइं   जिहां आवइं आवीनइं   द्रहनें प्रदक्षिणा करतो थको   पूर्वनइं तोरण करइं
उववायसभाओ पुरच्छिमेणं दारेणं निग्गच्छति २त्ता जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २त्ता हरयं अणुप्पयाहि
थइ जइं पइसइं   पइसीनइं   पूर्वनइं त्रिसोपानइं मनोहर पावथकी एवइनइं द्रहनइं विषइं उतरइं उतरीनइं
णं करेमाणे २ पुरच्छिमेणं तोरणेणं अणुपविसइ २त्ता पुरच्छिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चो
द्रहनइं आवगाहें अवगाहीनें   जलनो आवगाहण करइं करीनइं   जलमज्जन करइं करीनइं   जलक्रीडा करइं करीनइं   आचंत चोषा थ
रुहइ २त्ता हरयं ओगाहेइ २त्ता जलावगाहणं करेइ २त्ता जलमज्जणं करेइ २त्ता जलकिड्डं करेइ २त्ता आयंते
ईनइं पवित्र थइ   परम शुचिभूत थइनइं ... द्रह थकी नीकलीनइं   तेह देवता अभिषेक सभा छइ तिहां आवें आवीनइं   अभिषेक सभा मांहे आवीनइं
चोक्खे परमसुइभूए हरयाओ पच्चोरुहइ २त्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ अभिसेयसभं

जीवाभिगम
१७४

बिणा करतो २ पूर्व नइं द्वारइं थईनइं प्रवेश करइं प्रवेश करीनइं जिहां मणिपीठिका छइं जिहां सिंहासन छइं तिहां आवइ

याहिणं करेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ २त्ता जेणेव मणिपीढिया जेणेव सीहासणे तेणा-

आवीनइं सिंहासनइं वरप्रधान पुहुतो थकइं पूर्व दिसि सांहमुं मुख करीनइं बेसइं तिवारे ते विजय देवतानां सामानिक मांहिली परषदानां उपनी देवता

व उवागच्छइ २त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे संनिसन्ने तएणं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणि-

आभियोगिक सेवक लोकनइं ते देवतानइं तेडइं तेडीनइं सामानिक देवताइं एम कहइं शीघ्र अहो देवानुप्रिय तुम्हे विजय देवतानइं काजइं मोटो मूल्य नो अर्घ छइं जेहि

दे

य परिसोववन्नगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति २त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया विजयस्स

हां मोटो मुंघो अर्घ महत्व रिहमोटो तेह नइं एहवो विस्तीर्ण इंद्रा अभिषेक नी परें उपगरणां समस्त सार करो तिवारे ते आभीयोगिक देवतानि ते सामानिक परषदाने देवताए इम कह्यें थकइं इम आज्ञा आपइं थकइं

महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह तएणं ते आभिओगिया देवा सामाणिय परिसोवव-

न्नीन एहवुं सांभल्यइं हर्ष तुष्ट जांछत हृदय थईनइं हाथ दसनख अनोअन्य मेली मस्तक अंजली आवर्त करीनइं एकवा करी इम देव उ जेह कहो तेतलइं इम

न्नेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो

कहीते आज्ञा विनय वचन प्रतिज्ञा एवं तिसांभलीनइं उत्तर पूर्व इशान कूणि नी दिसिं अपक्रमइं जाइं जइ वैक्रीय समुद्घात करीनइं

तहत्ति आणाए विणएणं पडिसुणेइ २त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति २त्ता वेउव्वियसमुग्घा- १७४

वैक्रीय करवानइं विशेष इं समवहत जीवा आत्मप्रदेश विस्तारीनइं संख्याता योजननी दंडनी परइं ऊर्द्ध अध आयत सरीर बाहल आत्मप्रदेश काढइं काढीनइं परिसाडि २ साकहइं नां वीवरइं

एणं समोहणंति २त्ता दोच्चंपि २त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति २त्ता तं रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबा-

यथा स्थूल असार पुद्गल ते छंडइं छंडीनइं सार पुद्गल ग्रहइं एवं रूपानी परि जाव बीजीवार वैक्रीय समुद्घात समोहणीनइं असार पुद्गल छोडीनइं सार पुद्गल लेइनइं एकसो ७८

यरे पोग्गले परिसाडंति २त्ता अहासुहमे पोग्गले परियाइंति अहारत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोह-

आवसो नाना कलशा १ एकसो आठ रूपाना कलशा २ एकसो आठ मणिना कलशा ३ एकसो आठ सोना रूपाना कलशा ४ एकसो आठ सोना

णंति २त्ता अट्ठसयं सोवण्णियाणं कलसाणं अट्ठसयं रुप्पामयाणं कलसाणं अट्ठसयं मणिमयाणं अट्ठ-

मणिमय कलशा ५ एकसो आठ कलशा रूपा मणिमइं जोणवा ६ एकसो आठ सुवर्ण रूप्य मणिमि आ कलशा करइ ७

सयं सोवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं अट्ठसयं सोवण्णमणिमयाणं अट्ठसयं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कल-

एकसो आठ माटीना कलसा ८ एक आठ कलसानी विकुर्वणा करइं एकसो आठ सइं आरीसा एकसो आठ थाल इम ७८ चित्र एकसो आठ रत्ननां करंडीया

साणं अट्ठसयं भोमेज्जाणं कलसाणं अट्ठसयं भिंगाराणं एवं आयंसगाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठगाणं

१०८ फूलनी चंगेरी १०८ फूलनां पडलानां जननवि शेष मोरपीछनां एकसो आठ सिंहासन एकसो आठ छत्र एकसो आठ चामर एकसो आठ ध्वजा एकसो

पुप्फचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं अट्ठसयं सीहासणाणं छत्ताणं चामराणं धयाणं

जीवाभिगम:
१७५
रुष्टी ज्यां जोग्य ठनतदेवसानी गति४

१८गो लवाबनाएकुसो १कुसोन्त्रावतेजनोत्रा एकसोन्त्रावरपनात्राजननइदेवतावि जनस्वन्नाविक केतलाएकविकु
लचू १८८पात्री जनविशेष क्रमातेहमांकेतला एकन्ना कलशसास्वता केलानाकीधा

लवणाणं अट्ठसयंपातीणं तेवसमुदुरुकालंज्ञावमयेधुवकडुभुयालंविजुयागिण्हतीगिण्हतावि जयातेरा
कलचात्तंगार ज्योजगइ ताजन प्रतिलेइलेइनइ विज तेहवीउत ज्योलगेउक्षआगतइ नोहरदेवतानी तिरखाअसंख्याताद्वी
याराजन्यानी धकोनी कलेनी कलीनेतेहवीउत४ रुष्टीगते द्विसम गतइ पसमुद्रनइमध्यइ

यसंलीन्नुपडिनिरिकमंतीरपडिनिरिकमित्ता लाएउकिद्वाएज्ञावञ्मधुञ्माएदिवाएदेवहएतिरियमसंरिवा
मध्यइंचइनइ वीतीवुनमानजीतोपको जिहांवरधवन्नक्षीर लेइनइ तिहांन्नावेन्नावीनइ खीरोदकतणीलीइलेइ नइ
समुद्रलेर

जाणंदीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणेर जेणेव खीरसमुद्दे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता खीरोदगं गिण्ह
जेतिहांवसजलपद्मसहस्रपत्र सहस्रपत्र गंधपुंडरीक महापुंडरीकादिक पुफफललेइनइ जिहांभरतऐरवतक्षेत्र छइ तथावली जिहांमा

इ२त्ता ज्ञाइंतत्थ उप्पलाइं ज्ञावसयसहस्सपत्ताइं ताइंगिण्हंति २त्ता जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव
गधवरदामसतराजानामनोमा तिहांन्नावइन्नावी नइ तीर्थनोउदकजेजलतेलेइ तिर्थनीमाटीलेईलेईनइ तिहांगंगासिंधु १ २
तिर्थछइ नइ

मागधवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति २त्ता तित्थोदगं गिण्हइ२त्ता तत्थमट्टियं गिण्हंति २त्ता
रक्तानामारक्तवतीनामानदीछइ४ तिहांन्नावेन्नावीनइ नदीनापाणीनइलेइलेई वेतटनीमाटीनइलेइनइ नइ

जेणेव गंगासिंधुरत्तावइसलिलाओ तेणेव उवागच्छंति २ सलिलोदगं गिण्हंति२त्ता उभओतडमट्टि १७५

जिहांचुल्लहिमवंत सिषरीनामवर्षधरपर्वततिहांन्नावइन्नावीनइ सर्वऋतु तुवरकषायरसजांजोगंसर्वौषधीलइसर्व कहिवो

यं गिण्हंति२त्ता जेणेव चुल्लहिमवंते सिहरी वासहरपव्वया तेणेव उ२त्ता सव्वतुंवरेय ज्ञावसव्वोसहीसि
तिमजगुछइजिहांमोरापद्मपुंडरीकनो तिहांन्नावइन्नावीनइ सर्वजातिनाफूल सर्वगंधजाति सर्वौषधी सरसव
मद्रहछइ

द्धत्थए तचेव जेणेव महापउमपुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति२त्ता सव्वपुप्फेयसव्वगंधेयसव्वोसहि सि
जइलेइनइ जिहांभरतऐरवतसंमंधीपद्मद्रहपुंडरीकद्रहतिहांन्नावइन्ना वीनइ द्रहनुउदकपाणीलेइलेईनइ जेतिहांउत्पल

द्धत्थएगिण्हंतिरत्ता जेणेव पउमद्दहपुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छइ२त्ता दहोदगं गिण्हंति२त्ता जाइं तत्थउ
सोजोसहस्रपत्रतेतिहांथीलइलेइनें जिहांहेमवंत ऐरण्यवतयुगलक्षेत्र जिहांरोहियासरोहतंसा सुवर्णकूलिरू

प्पलाइं ज्ञावसयसहस्सपत्ताइं गिन्हंति२त्ता जेणेव हेमवयएरण्णवयाइं वासाइं जेणेव रोहियंसासरो
पकूलानामइयुगलक्षेत्रनीनदी तिहांन्नावेन्नावीनें तिहांनोपाणीलेईनइ जिहांशब्दापातिविकटापाती

हंसा सुवण्णकूलारुप्पकूलाओ तेणेव उवागच्छंति२त्ता सलिलोदगं गिण्हंति२त्ता उभओतडमट्टियं
मालवंतसीमाथी वृत्तवैताढ्यपर्वतछै तिहांन्नावेन्नावीनइ सर्वजातिनाफूलजइलेइनें ज्यांसर्वौष

गिण्हंति२त्ता जेणेव सद्दावइवियडावइपरियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उ२त्ता सव्वपुप्फेयज्ञा

धीसरसव नइं जइं लेइंनें जिहां महाहेमवंत रूपी वर्षधर पर्वत तिहांथ्रावइं तिहांथ्रावीनइं सर्व पुष्फादिक

डिवालिगम: १७६ वसवोसहिसिद्धिबएय गिएंहंति जेणेव महाहिमवंत रूप्पवासिहरपव्वया तेणेव उवागछंति २ सव्वपुफे

मजळइं चेव निश्चे पद्मे जिहां महापद्म महापुंडरी तिहांथ्राव तिहांथ्रावीनइं जे तिहांनां उत्पल जैनें तिम जलेले जिहां युगल
कइ छइं इं इनइं पद्म

य तंचेव जेणेव महापउमद्दहा पुंडरीयंद्दहा तेणेव उवागछइ तिवार जाइं तत्थ उप्पलाइं तंचेव जेणेव ह

खेत्र हरिवर्षखेत्र र जिहां हरिकांता नरनारिकंतानां महीनदीनां तिहांथ्रावइंथ्रावीनइं लेईनइं तिमज चेव निश्च
म्यक खेत्र मानदीनां पांणीजे तेनदीनां पांणीनें जइं इंकहेवो पद्म

रिवासमवासाइं जेणेव हरिकंता नरनारिकंताओ सलिलाओ तेणेव उवागछंती २ त्ता सलिलोदगं गिण्हं

जिहां गंधापाती विकटापाती नामइं वृत्तवैताढ्य पर्वत तिहांथ्रावइंथ्रावीनइं सर्व फूल पांणी तिम जल इंलेइनें

ति २ त्ता तंचेव जेणेव गंधावइ वियडावइ वद्दवेयड्डपव्वया तेणेव उवागछंती २ त्ता सव्वपुफेय तंचेव विजय

तिहां निषिधनीलवंत नामइं वर्षधरपर्व तिहांथ्रावइं तिहांथ्रा सर्वकषायवस्तुति जिहां तेगिछद्रह तिहांथ्रावइंथ्रावी
तछइं वीनइं मजलेईनइं पद्म छइं नइं

णेव निसढनीलवंता वासहरपव्वता तेणेव उवागछंती २ त्ता सव्वतुंवरे तहेव जेणेव तिगिछद्दहा तेणेव उवा

द्रहनो पांणी जइं लेइंनइं पछइं जिहां पूर्व विदेह पश्चिम विदेह क्षेत्रमध्य जिहां सीतोदीमोटी नदी छइं तथा जिहां

गछंति २ त्ता दोहोदगं गिण्हंति २ त्ता जेणेव पुव्वविदेह अवरविदेह वासाणि जेणेव सीयासीओयाओ म १७६

सघळइं चक्रवर्त्तिजीपइं तेवजियकहीइं जिहां सघळां मागध वरदाम प्रभास नामतीर्थ जिहां सर्व तरुनदीना उदकपांणीनें ल
तिहां

हानईओ जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागह वरदामपभासाइं तित्थाइं जेणेव सव्वंतिरनदीओ सलि

इंलेईनइं तिमज कहेवुं जिहां सेवखारा पर्वत तिहां सर्व तुंवरस कषायरसंति जिहां मेरपर्वत छइं जिहां भद्रशाल वन छइं
थकी मजलेइ पछइं

लोदगं गिण्हंती तहेव जेणेव सव्ववक्खारपव्वया सव्वतुंवरेय तंचेव जेणेव मंदरपव्वए जेणेव भद्दसालव

तिहांथ्रावेंथ्रावीनें सर्व कषाय रसजांजगें सर्वौषधी गोसीस सीसता जुं बावनाचंदन पछइं ग्रहें ग्रहीनइं पछइं जिहां सोमन
सरसव

णे तेणेव उवागछंति २ त्ता सव्वतुंवरेय जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएय सरसंगोसीसचंदणं गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव सो

मवन छइं तिहांथ्रावइं थ्रावीनइं सर्व कषायरस जांसर्वौषधी सरसव सरसगोसीर्षचंदन दिव्य फूल सुमनिकुइंजंदीआणली

मणसवणे तेणेव उवागछंति सव्वतुंवरेय सिद्धत्थएय गिण्हंति जेणेव महाहिमवंत रूप्पवासिहरपव्वया तेणेव उवाग

छंति २ सव्वपुफेय तंचेव जेणेव महापउमद्दहा पुंडरीयद्दहा तेणेव उवागछइ तिवार जाइं तत्थ उप्पलाइं

तंचेव जेणेव हरिवासमवासाइं जेणेव हरिकंता नरनारिकंताओ सलिलाओ तेणेव उवागछंती २ त्ता सलि

जीवाभिगम
१७७

लोदगं गिण्हंति २ त्ता तं चेव जेणेव गंधावइ विवयडावि वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सव्वपुप्फे

य तं च विजयणेव निसढनीलवंता वासहरपव्वता तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सव्वतुवरे तहेव जेणेव तिगिंछिदह

तेणेव उवागच्छंति २ त्ता दहोदगं गिण्हंति २ त्ता जेणेव पुव्वविदेह अवरविदेहवासाणि जेणेव सी

यासीतोयाओ तोयाओ महानदीओ जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजए जेणेव सव्वमागह वरदामपभासाइं तित्थे

जेणेव सव्वंतरनदीओ सलिलोदगं गिण्हंती तहेव जेणेव सव्ववक्खारपव्वया सव्वतुवरे य तं चेव जेणेव मं

कषायरस | जांसवैषधी | सरसव | सरसगोसीर्षचंदन

दरपव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सव्वतुवरे य जाव सव्वोसहि सिद्धत्थए य सरसगोसीस १७७

चंदणं गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति सव्वतुवरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य स

दिव्यफूलष्टिमनिकइं जंदीगंएहवीपुफजातियतिग्रहइं ग्रहीनइं | पछइं जिहां पंडकवन छइं | तिहां आवइं आवीनइं | सर्वकषायवस्त्र जांसर्वौ

रसगोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं गिण्हंति २ त्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सव्वतुवरे

षधी | सरसव | सरसगोसीर्षचंदन | दिव्यसोमनसनीदामफूलनीमाल | मलयाचलनारस | सुगंधगंधपुतें ग्रहीनइं | एकठामि

जाव सव्वोसहि सिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं दिव्वं च सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधिए य गंधे गि

लइ एकठामि मिलीनइं | जंबूद्वीपनी | पूर्वनइं बारइं थइं नइंनी कलैं नीकलीनइं तेहवी उत्कृष्ट गतिं | जांदिमदेवतानीगतें करी

ण्हंति २ त्ता एगतो मिलंति २ त्ता जंबुद्दीवस्स पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छंति २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वा

त्रीबातअसंख्याता | द्वीपसमुद्रनइं | मध्यमध्यइं थईनइं पतिवन्नजातिघकें | जिहां विजयाराजधानी छइं | तिहां आ

ए देवगइए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणे २ जेणेव विजयारायहाणी तेणे

वइं आवीनइं | विजयाराजधानीप्रतइं | प्रदक्षिणा करइं करीनइं | जिहां अभिषेककरवानी सभा छै | जिहां विजयदेव

व उवागच्छंति २ त्ता विजयं रायहाणीं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ जेणेव अभिसेयसभा जेणेव

नावैं तिहांआवइंआवीनैं हाथएकठाजोडीनइं माथइंचडावीनैंआवर्त्तकरीनेंइंमकहइं जयविजयकरीकहीनैंव
वधवइं

जीवाभिगमः
१७८

विजएदेवे तेणेव उवागच्छंति करयलपरिग्गहीयं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टू जएणं विजएणं वद्धा
विजयदेवतानैंआगलइं तेमहर्घजोग्य । विपुलविस्तीर्णअभिषेकजोग्यथी मुंकइंतिवारेंतेवि । आरसहेंससामानिकमध्यस
जोग्य । रेटकादिउद्धवेतिआगल । जयदेवता । ताना
वेंती विजयस्स देवस्स तं महग्घं महरिहं विपुलं अभिसेयं उवट्ठवेंती तेणं ते विजएदेवे चत्तारिसामाणी
आरअग्रमहिषीपट्टराणी परिवारसहित त्रणिपरखदासातअनीककटक सातकटकनाअधिपति सोलसहस
यसाहस्सीउं चत्तारिअग्गमहीसिउं सपरिवाराउं तेणं परिसाउं सत्तअणियासत्तअणीयाहिवई सोलस
आतमरक्षकदेवताएकएकअनेरावणा विजयाराजधानीनावासीदेवताजिके वाणव्यंतरादेवतादेवांगनाए तेस्वभा
आयरक्खदेवसाहस्सीउं अन्नयबहवेविजयारायहाणीवत्थव्वगा वाणमंतरादेवायदेवीउयतेहिं
विककुंभराज्यनेविषें कलशोवरप्रधानकमलनीपरबी पालीएभू कलशसघलाइंनि चंदननीकीधीछेचर्चा आविद्धकंठे
नरवैक्री । बेसलीधइं । सुगंधवरप्रधान । लीबइं । र्पित । पूजातिहां । आरोप्यावइं
साभावएहिं उत्तरवेउव्विएहिय वरकमलपइट्ठाणेहिं सोरभवरवारिपडिपुन्नेहिं चंदणकयचच्च
वैस्वभावनाकमलपद्मउत्पलनें ढांकणाजेहाथकरीप्रतिग्रहितेंग्रहयानें थाकोईआचार्यइंमकहेछेजेएक मणिना२ सोनारूपाना
तावणा आकारेंविधिनडोक कलशजेणइंएहवाएकसोनेंआठ नहसनइंआवसोनानारूपा ४ सोवर्णमणिना ५
ना २
एहिं आविद्धकंठगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करयलसुकुमालकोमलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं १७८

रूपामणिना ६ सौवर्णरूपामणिना ७ माटीना ८ एवंआवसहसघलसविनीसंख्याइंथाइछइं तेकेहवाछैं सर्वतीर्थनेंजेजेकरी
परिपूर्णछइं
णं सोवण्णियाणं कलसाणं रूप्पमयाणं मणिमयाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं
सवतीर्थनीमा सर्वकषायवर्णसहित सर्वजातिनां फूल सर्वगंधेंसरसकरी सर्वऋद्धिं सर्वद्युतिसरीरतेजइं सर्वबलसामर्थ्यकरी सर्वसमुदायपरिवार
टीइंसहित । रूपसहित । फूल । वेकरी । पर्व । नेतेजइं । स्वेकरी । इंकरी
सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं
सर्वादरउद्दंत सर्वविभूषासोभा सर्वसंभ्रमनायकनी सर्वरोहणअकार्यनिरोधएहवीआगन्यास सर्वालंकारादिसर्वविभू
भक्ति । वस्त्रादिकनी । कार्यसंपदीवडी । वेनादिकस्वरूपवर्ते सर्वजलथलजनेफूलेगे आभ्रंणसर्वनुडिवाजित्र
सव्वाइरेणं सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वोरोहेणं सव्वनाडएहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारविभूस
नादेवतानानिनाद मोटीऋद्धिं मोटीजगतैंकरी मोटइंबलेंकरीसहित मोटेंसमुदाइंत्रणिपरषद मोटांतुडिवाजित्रजम
स्वरूपेंकरीनइं । करी । दाइंकरी । कसमकसमकलिवाज
एसव्वतुडियनिनाएणं महयाइड्ढीए महयाजुत्तीए महयाबलेणं महयासमुदएणं महयातुडियज
तइंतेहनामनोहरशब्दकेते संखपणवपडहप्रसि झाल खरमु कालनीमर डुंडुनीने क्रुकवाजित्रविशेष एहवेवाजित्र
केहवांवाजित्रवे । ढ्रभेरीढका । रि । खी । दंग । री । नेनिर्घोषइ
मगसमगपडुप्पवाईयरवेणं संखपणवपडहभेरीझल्लरिखरमुहिमुइंगदुंदुहि हुडुक्कनिग्घोस
नादेंकरीनइंसहितएहवा इंद्राभिषेकसलीक तिवारेंतेविजयनांमादेवता मोटा२इंद्राभिषेकवर्त्ततइंथकइं केतलाएकदे
स्नानएकाभिषेकइं । नइं । वता
नाएणं महयाइंदाभिसएणं अभिसिंचति तएणं तस्स विजयस्स देवस्स महया२ इंदाभिसेकंसि वट्ट

जिवाभिगम
१७७

विजयाराजधानी नइं विषइं | नच्चोदग गंधोदक तेह ज पाणी अत्यंत घणो न होइ | घणो राजसेय कारी | दिव्य सरस सुगंधवंत | तेह प्रधान ते | देवता ना थानकि विनास थाइ दिव्य | रजधानी यैं करी | केतला एक देवतानें | हतरजपो लागार मा

माणंसि अप्पेगतियादेवा नच्चोदगं नातिमट्टियं पविरलफुसियं दिव्वं सुरभिरयरेणुविणासणं गंधोदग

वरसी नसके तथा नष्ट रज नइं सर्व अइसी रज नइ इहां एहवा | केतला एक देवता विजया राजधानीनइं मोहइं | अनें विजयां जधानी जसमाववा नां पद कहैं वो ॥

वासं वासंति अप्पेगतिया णिहतरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति अप्पेगतिया देवा विजयारायहाणी सब्भिं

बाहिर | असीति पाणीनें छांटे करी छांटें छइ | समार्जन कचरादि काढइं | गोमयादिकें लीपावइं अपवित्र हाट मार्गादि करवानी अनेरी वली हाट नी पेढी विधि रथ विथी प्रमाज तै मार्ग सोभा करें

तरबाहिरिया आसियसमज्जियोवलित्तं सुइसमट्ठरत्थंतरायवणवीहियं करोति अप्पेगतियादेवाविज

केतला एक देवता विजयाराजधानी इं मंचऊपर | तिमं च सहित करइं | केतला एक देवता | केतला एक देवता विजयानो माराजधानीइं | अनेक प्रकारना रंगा रंज सिंध कैं

जयंरायहाणिं मंचाइमंचकलीयं करेंति अप्पेगतियादेवाविजयारायहाणी नांणाविविहरागरंजि

ऊंची कीधी छैं विजयनी करनारी विजय वैजयंती नांमें पताका | देवता विजयाराजधानी इंऊछी ऊपर जी लूमिवंद चंदोरे यज मांगली कें संचित तेलें मंदित सहित एहवी करइं केतला एक | नेमाकलो प्रसित कइ तथा दू असलि करइं ऊछो लीवंदनेकरी

याउसिवियविजयवेजयंती पडागमंडियं करेंति अप्पेगतियादेवा विजयारायहाणीछाए उल्लोयम

चर्चिनइं वा | केतला एक देवता विजयाराजधानी इं गोसीर्षचंदनें सरस रक्तचंदन | ननी कुंकुम गोली करीनइं तरीनइं तेव दनेकरी | पांच आंगुलीना चपेरा जेह पाद छाप ते सरव करइं | केतला एक देवता विजयारा

हियकरेंती अप्पेगतियादेवाविजयगोसीससरसरत्तचंदण दद्दरदिन्नपंचगुलितलकरेंती अप्पे॥

१७८

जधानी इं | उपचित सहित चंदनना कलसा करइं | केतला एक देवता विजयाराजधानी इं चंदनना घडा तेहनां सुकृत तोरण री फोल करी द्वार देइं सोभाय मांन करइं

तियादेवा विजयंउवचियचंदणकलसंकरेंति अप्पेगतियादेवा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवार

केतला एक देवता विजयाराजधानी इं आसक्त अत्यंत विपुल विस्तीर्ण वृत्त व घारित विस्तारइं माल्य दाम केइ एक | केतला जनी माला ना कलाप सेमोह करइं देवतानी करणी छइ

दिसभागं करेंती अप्पेगतियाविजयं आसोत्तसत्तविउलवग्घारितमल्लदामकलावंकरोती अप्पे

एक देवता विजया नांमा राजधानीइं | पंचवर्ण सरस सुगंध प्रति मुकता एहवा फूलना पुंज ते हना उपचार कहेता प्रकार विधि तेणें करीनइं सहीत करइं | केतला एक देवता विजयाराज

गतियादेवाविजयंरायहाणीपंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियंकरेंति अप्पेगइ

धांनीनइं विषइं | कृष्णागर प्रवर वर प्रधांन कुंदरु चीड सेजनु कराफता धूप तेणें करी मघमघंत गंध तेणइं अत्यंत अभिराम करइं | सुगंध धूपरि मलन विस्तारें सुगंध वर प्रधान गंधनी

यादेवाविजयंरायहाणीं कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधधुयाभिरामं सुगंध

वाटि तेणें अत्यंत गंध रूप अभिरामकरइं | केतला एक देवता विजयाराजधानीइं रूपी नी वृष्टि करइं | केतला एक देवता विजया राजधानीइं | सुवर्णनी वृष्टि तणी करइं

वरगंधियंगंधवट्टिभूयंकरेंति अप्पेगतियादेवाहिरण्णवासंवासेंती अप्पेगतियादेवा सुवण्णवासंवासेंती

केतला एक देवता विजयाराजधा नाइं रत्ननी वृष्टि करइं इम केतला एक देवता हीरानी वृष्टि करइं | इम फूलनी वृष्टि करइं | इम मालानी वृष्टि करइं | गंधनी वृष्टि करइं | इम चूर्णनी वृष्टि करइं | इम वस्त्रनी वृष्टि करइं | इम आभरणनी वृष्टि करइं

अप्पेगतियादेवारयणवासं एवंवयरवासं पुप्फवासं मल्लवासं गंधवासं चुण्णवासं वत्थवासं आभरणवा

MEMORIAL

उक्तिम प्रथमनः समारंसमानघ बरसोउक्क पावस्था नोवि कों तिमना कसंगरवर्न माने २मंद्रायलि निमध्यसागे मूर्छ नादिगलोपतन यामंदंमरे द्योत नादितमकरो विनाविशेषना मितिरविनजष लोवतनयाना वित सिसोपति मतयाचतस्व शीनायस्पतत्व दोविनावसानां ४वलीवेहली

केतलाएकदेवतारूपादिकनां साजन सणीसर्व नइं विहवि आपइं। मंगलीकनाप्रकारनो साज तेतेसणी परिविधी आणयंतनकहितां आपइं। एनावतरीकएतलें चष्टिकारी तेअतिरीक्तसर्व नेंआपइंइतिसाव

मं अप्पेगतियादेवा हरिवडिवासंसाए मंगलप्पकारंसाहडयंतिविश्राणयंतसेषयरदेवेनोदतितिसाव: ६

हमस्कवर्णनी विधि हमरत्ननीवि धि हमवजननीवि धि हमफूलनीवि धि हममालानीवि धि चुर्णनीवि धि गंधनीवि धि वस्त्रनीवि धि साजननीविधि

वृंसुवस्तविधे रयणविधिवयरविधी पुफविधे मलविधे चुन्नविधे गंधविधे वत्थविधे सायतीश्राभा

आसरणनीविधि। केतलाएकदेवताविजयाराजधानीइं हसवेवहेंचीआपे। तांतिमदंगादि१ घनकंसादि ३ आरसेरनांवाजित्रवजाडैं तेकेहा वितनविणादि२ शुसिरकाहलादि४ केतलाएकदेवताच्यारसेरनांगीतगाइं। तेकेहा

णविहे अप्पेगतियादेवाचउविहंवाइत्तवाएति ततंविततंघणंझुसिरं अप्पेगतियादेवाचउविहंगे

उरवइतेयंकहेतां उक्तिप्त१ प्रवर्त्तक२ मंदया३ रोचितावसान४ केतलाएकदेवताच्यारसेरनाअभिनयनावेदेषाडइं तेकेहा दृष्टोतिन

यंगायंती उरवइतेयं पवतेयंमंदयंरोइदावसाणं अप्पेगतियादेवा चउविहंअभिणयंअभिणयंति:

यदीवेधक१ रूतडापतिसणी सामामंतोनिपातिकस्यक२ लोकमांवसवानो नयएआरसयप्रनीविधिना बत्रीसभेदेनाटिकविधिनेंमां वकइं२ सनाइंनयउपजें ३ लोलेइंतेनाटकीउकहीइं। केतलाएकदेवता डीउसनोमनाटिकविधिदेषाड ४ इं

दिठतेया१ पडितिया२ सामंतोवणवाईत३ लोगमझावसाणयं ४ अप्पेगतिया देवाउतंनट्टविश्र

केतलाएकदेवताउतविलंबितना मनाटिकनीविधिदेषाडैं केतलाएक देवताअंबितनांमइंनाटिकनीविधिदेषाडइं केतलाएकदेवताउतविलंबितनांमैनाटिकनी विधिसलाउदंसती

प्पेगतियादेवाउतंनट्टविहंउवदंसेति अप्पेगतियाअंबंतंनट्टविधिउदंसे अप्पेगतियादेवाउतविलं

नोपर्यायजणीवेंगीतचतुर्विधमुदाहरणानि०

कहेतांदेषाडइं। केतलाएकदेवता उतविलंबितनांमानाटिकनीविधिदेषाडइं। केतलाएकदेवताअंचतिनांमानाटिकनी

तंनामनट्टविधिउवदंसेति अप्पेगतियादेवाउतविलंबितंनांमनट्टविधउवदंसेती अप्पेगतियादेवा

विधिदेषाडइंचवइं केतलाएकदेवताअंचतिरिविनाटिकनीविधिदेषाडैं केतलाएकदेवताआरभडनांमानाटिकनीवि

अंचियनट्टविधिउवदंसेति अंचिररिभियनांमदिव्वंनट्टविहंउवदंसेति अप्पेगतियादेवा आरभडंनट्ट

धिदेषाडैं केतलाएकदेवतासोलनांमानाटिकनीविधिदेषाडइं केतलाएकदेवताआरभडसोलनांमनाटिकनीविधिदिव्यम नोहरएहवीकला

विहंउवदंसंती अप्पेगतियादेवासोलंनट्टविहंउवदंसेति अप्पेगतियादेवआरभडसोलंनांमदिव्वं

नणीदेषाडइं केतलाएकदेवताउत्पातिपातिपर्वतसंकुचितप्रसारितगमनागमनिसंज्ञांतनोदिव्यमनोहरना टीकनीविधदेषाडइं

नट्टविहंउवदंसेती अप्पेगतियादेवानिउप्पयानिप्पयंपवयंसंकुचियंपसारियंरेइयरइयभंतलंतंनां

केतलाएकदेवताशेणआतानिद्रुगनावकरइं केतलाएकदेवताडुंबाडइंफुकारें केतलाएकदेवताजासरूपनाटिकक रइं

मदिव्वंनट्टविहंउवदंसेती अप्पेगतियादेवापणंतीआदेवाथुक्कारेतिअप्पेगतियादेवालासेतिअप्पेग

केतलाएकदेवतावीजा देवतानिवकारइं केतलाएकदेवतातता फवदेषाडइं केतलाएकदेवताआस्फो टआधकइं केतलाएकदेवतामांलामां वजाडइं केतलाएकदेवतात्रिपदका ढदेवोलइं

तियादेवावकारेतिताबडेतिलिसीती अप्पेगतियादेवाआफोडेतिअप्पेगतियादेवावग्गेतिअप्पेगतिय

इहलाचित्रअनाव्या विहय आठमाली कप्रतिलक्ष१ आवर्त्तप्रत्यावर्त२ श्रेणीप्रश्रेणी३ स्वस्तिकपुष्य४ वर्द्धमान५ मत्स्यंड६ मकरंड७ जारमार८ पुष्पावलि९ पद्मपत्र१० सागरतरंग११ वसंतलता१२ पद्मलता१३ दिसाचक्र१४ ...

केतलाएक देवता अणिवाना करि आस्फोटक रवा लागें बन्नाइ काबोलइं | केतलाएक देवता घोडानी परिहें सारव करइं | केतलाएक देवता हाथीनी गजारव शब्द करइं

देवा तिवइं तिअप्पेगतियादेवा अप्फोडंति वग्गंति तिवइं छिंदंति अप्पेगतियादेवा हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं रह

केतलाएक देवता रथनी परें घणघणाट शब्द करइं | केतलाएक देवता उछलइं | केतलाएक देवता विशेषइं उछलइं | केतलाएक देवता उतकृष्ठ नाद नइं करइं | केतलाएक

घणघणाइयं करेंति अप्पेगतियादेवा उच्छोलेंति अप्पेगतियादेवा पच्छोलेंति अप्पेगतियादेवा उक्किट्ठिं क

देवता उछलें विशेष उतकृष्ठ नाद करी उछलैं वली विशेषइं करी उछलइं | केतलाएक देवता सीहनाद नइं करइं | केतलाएक देवता पगना शब्द

रेंति अप्पेगतियादेवा उच्छोलेंति पच्छोलेंति उक्किट्ठिं करेंति अप्पेगतियादेवा सीहनायं करेंति अप्पेगतियादे

करइं | केतलाएक देवता भूमि चपेटी करी तेहनें आस्फालइं | केतलाएक देवता सीहनाद १ पगचपेटा २ भूमि चपेटा ३ ए त्रिणें नइं करइं

वा पाददद्दरयं करेंति अप्पेगतियादेवा भूमिचवेडं दलयंती अप्पेगतियादेवा सीहनादं पाददद्दरयं भूमि

केतलाएक देवता भूमि हाकार शब्द करइं केतलाए क बकारेति थुकारेति पुकारेति चकारेति नाम लेई बोलावइं केतलाएक देवता

चवेडं दलयंति अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति बुक्कारेंति थुक्कारेंति पुक्कारेंति चक्कारेंती नामइं सावेंति अ

उतपती उतपतिय नइं | केतलाएक देवता नीचा उतरी नइं पडइं | केतलाएक देवता उतसतें | केतलाएक देवता उसतेन वयंती निपतंती परीपतंती

प्पेगतियादेवा उप्पयंती अप्पेगतियादेवा परिवायंति अप्पेगतियादेवा परिवयंति अप्पेगतियादेवा उप १८१

केतलाएक देवता ज्वालमाला कुलइं | केतलाएक देवता तेजें करी तपइं विशेष पतयें | केतलाएक देवता विशेषइं पतयें जेंम तपइं २

यंतीनवयांति परिवियांती अप्पेगतियादेवा जलंति अप्पेगतियादेवा तवंती अप्पेगतियादेवा जलं

पतये ३ | केतलाएक देवता गाजइं | केतलाएक देवता विद्युत्पात करें | केतलाएक देवता वरषानी परइं वरसइं | केतलाएक देवता गाजइं

तीपवंती पतिवंती अप्पेगतियादेवा गज्जंती अप्पेगतियादेवा विज्जुयायंती अप्पेगतियादेवा वासं

वीजइं | वर्षानी परें वरसइं | केतलाएक देवता सन्निपात एकठा मिलें | केतलाएक देवता देवोत्कालित एक मेला लइं | केतलाएक देवता कहार

ती अप्पेगतियादेवा गज्जंती वययायंति वासंवासंति अप्पेगतियादेवा सन्नवायं करोती अप्पेगति

एह वो शब्द करइं | केतलाएक देवता कुडा २ एहवो शब्द करइं | केतलाएक देवता देवसन्निपात देवोत्कलिता देवकहिर

यादेवा देवुक्कलियां करेंती अप्पेगतियादेवा कहकहं करेंती अप्पेगतियादेवा दुहदुहं करेंति अप्पेग

शब्द करें कुडु २ शब्द करइं | केतलाएक देवता देवोद्योतनी परें करइं | केतलाएक देवता चेलुखेप अनेरा रा दिन्न ध्दि देवुद्यो

तियादेवा देवसन्निवायं देवुक्कलियं देवकहकहं देवदुहदुहं करेंति अप्पेगतियादेवा देवुज्जोयं क

त विद्युत्ता स्व चेलुक्खेप त्रणि करइं | केतलाएक देवता लाघव मां तपजाइं | जो जो मस्त्रपीनरा छमां लइं

रेंति अप्पेगतियादेवा चेलुक्खेवं करोती देवुज्जोयं विज्जुयतायं चेलुक्खेवं करेंती अप्पेगतियादेवा उप्पलहत्थ

जीवाभिगमः
१८२

घंटाहाथमांछइं कलशहाथमांछइं आंलगेंधूपनोसाजनहाथमांसोलगइंकहेंवोनर्षसंतोषवंत

गयजावयसहस्सपत्तहत्थगयाघंटाहत्थिगया कलसहत्थगयाजावधूवकडुच्छहत्थगया हट्ठतुट्ठा

आंहर्षनावशिचकीविकस्वरहीयां विजयाराजधानीइं सघलाथाइं जलफलइं उद्यम तिवारेतेविजयनांमादेवता
बइंजेहनो वहचलइं

जावहरिसवसविसप्पमांणहियया विजयाएरायहांणीएसव्वतेसमंताआहावेती तएणंतंविजयं

च्यारसहंससामानिकदेवतास्कं च्यारअग्रमहिषीस्कं परिवारसहित आंलगेंसोलसहस्सआतमरक्षकदेवताप्रमु
ष

देवंचत्तारियसामाणियसाहस्सीतो चत्तारिअग्गमहिसीतो सपरिवाराओ जावसोलसयायरक्ख

वलीअनेरघणाविजयाराजधांनीनावासी वांणव्यंतरदेवता देवांगना तेहवेकमलनेविषइंसलीइं आंलगेंएकसहं

देवासाहस्सीतो अन्नेयबहवे विजयारायहांणीवत्थव्वा वांणमंतरा देवायदेवीओयतेहिं वरकमलप

सहस्रसोनानेकलशेकरी तिमजपाछलीपरेंएकसहसनेंआठमाटीनाकलसस्सर्वसंख्याइंआठसहसनेंचोसठिक
लसकरीनइंसर्वतीर्थनेपांणीलाव्या

पयट्ठाणेहिं जावअट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणंकलसाणं तंचेवजावअट्ठसएणं भोमेज्जाणं कल

सर्वनदीनीमाटीइं सर्वपर्वतनेंकषाये सर्वफूले आंलगेंसर्वौषधीइं सरसवेकरी सर्वऋद्धिंकरी
यैकरी करी

साणंसव्वोदएहिंसव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जावसव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए १८२

आंतिनादे मोटाइंअभिषेककरीपरें अभिषेक माथइंआवर्त्तनंअंजलीकरीनें इमकहेंताहवाजय२आनंदहोजुकनें जय२
करी करावनइं प्रत्येकें२ सर्वदेवता सइमंगलीकहोजुकनें

जावनिनाएणं महया२ इंदाभिसेयं वट्ठवेंति अभिसिंचइत्ता पत्तेयं२ सरसावत्तंमत्थएअंजलिंकट्टु एवंवयासी जय२नंदा

हेजइक लवीयणजीताननेंजी जीतानइंपोतानाक आणजीताधर्मप्रत्ये सत्रुपक्षनेंवलेंकरीवसि अपक्षएहवानेंपाल
तनेंज रीकाजजे नेंजीतजे करजेजीस्वामि जे

जय२भद्दा भद्दं तेअजियं जिणाहिं जियंपालेहिं अजियंजिणाहि सत्तुपक्खंजयंचिपालेहिंमित्तपक्खं जि

जीसामांहेवस एतलांवानांनिरुपसर्ग वलीकेहवोतुजिमताराजमांचंद्रमामो असुरकुमारमांहिचमरजिम मनुष्यमाहेंजिमभ
जे तुफनइंहो धरणेंद्रमोटो नागकुमारमोटो रतराजामोटो

यामज्झेवसाहिं तंदेवनिरुवसग्गं चंदोविवताराणंअमरोविवअसुराणं धरणोविवनागाणं भरहोवि

घणापल्योपमलगाइं घणासागरोपमलगेंमिश्र घणापल्योपम घणासागरोपम च्यारसहससामानिकदेवतासहित

वमणुयाणं बहूइंपलिओवमाइं बहूणिसागरोवमाणि बहूइंपलिओवमसागरोवमाणि बहूणंसामाणिय

आंलगइंसोलसहसआतमरक्षकदेवस विजयद्वारनीनेआइं विजयाराजधांनीनिविषइं अनेराघणादे विजयाराजधा
हित वता

साहस्सीणं जावआयरक्खदेवसाहस्सीणं विजयस्सदारस्स विजयाएरायहांणीए अन्नेसिंबहूणंवि

नीनावासी वांणव्यंतरा देवतानो देवांगनानो अधिपतिपणोआंआज्ञाइंस्वरनीपरेंवर्त्तोआज्ञाप्रमत्तकनइंविषइंचोहावी
करतापालताथका

जयारायहांणिवत्थव्वाणंवांणमंतराणंदेवाणंदेवीणयआहेवच्चंजावआणाईसरसेणावच्चंकारेमाणा

घणाकालजाइ विचरइ इम करीन मोटे २ सादें जय २ शब्द उचरइ तिवारइं ते विजयदेवतानइं घणुं २ मोटी रूद्धिं इंद्राभिषेक
इं विचरइं
जीवाभिगम: पासमाणे विहरिं तित्ति कट्टु महया २ सद्देणं जय २ सद्दं पउंजंति तए णं से विजए देवे महया २ इंदाभिसे
१८३ नी परें अभिषेक कीधा सिंहासनथकी उठइं उठिनइं अभिषेकसभानें पूर्वनइं बारइं थई नीकलइं नीकलीनें जिहां अलं
पछी
णं अभिसित्ति समाणे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २त्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेणं दारेणं पडिनिक्खमंती २त्ता जे
कारनी सभा छइ तिहां आवइ तिहां आवि अलंकारसभानइं प्रदक्षिणा करतो थको पूरब्बिमेणं पूर्वनइं बारणइं थईनइं पइं
नइं
णेव अलंकारियसभा तेणेव उ २त्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुरत्थिमेणं दारेणं
सै पइसीनें जिहां सिंहासन छइ तिहां आवइ आ सिंहासनइं पूरबइं थ तिवारें ते विजया देवता सामानिक मध्यपरषदाना
वीनइं कइं
अणुपविसई २त्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उ २ सीहासणगते वरगए पुरत्थाभिमुहे तए णं तस्स विजयस्स:
देवता आभियोगिक देवता मोकला थका कांम करे ते देवता इम कहइं शीघ्र अहो देवतानें काजें श्रीय विजयदेव
नइं तेडइं तेडीनइं
सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अभिओगे देवे सद्दावेति २त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया:
ताना अलंकार योग्य सामग्री करीयादि तिवारइं ते देवता ए अलंकार सउ आणइं उवठवइं फेकइं तिवारें ते विजयदेव
आणनुं ना
विजयस्स देवस्स अलंकारियं भंडं उवणेह तए णं तं अलंकारियं भंडं जाव उवट्ठवेति तए णं से वि १८३

तिहां प्रथम पहिलो सुकुमाल कोमल दिव्य सुगंध रूपरिकर्मन गंधसार काइं करीनइं गात्र सरस गोसीर्ष चंदनें गात्रें विलेपन
तनुहें लुहीनइं पछइं कइ
जए देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेई २त्ता सरसेणं गोसीसचंद
विलेपन करीनइं तिवारपछी नासिकानी सास उश्वास वाजी णापां सूक्ष्म इंद्रयुक्त सरी रूपा वरण फरसें करी घोडाना लाला ते थकी
प्राजे देखी दृष्टि परवसि थाइ युक्त छइ कोमल नें उज्ज्वलें
णेणं गायं अणुलिंपइ २त्ता तयाणंतरं च णं णासानीसासवायवज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापे
जे वस्त्र धोलो उजलो छइ कनकखचित छइ कर्म जिहां ते तली आकास जे स्फटिक उजल छइ तथा फ कांतवें जे अनीत हवो ते देवदू
सुवर्णना कांम छइ जे वस्त्र टिकरत्न जेहवी प्रभा ष्य वस्त्र परिधन्नेक
लवातिरेगं धवलं कणगखचितकम्मं आकासफलिहसरिसप्पभं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियं
लीइं पहिरइं पहिरें आठार सरो हार नव सरो बांध एकावलि एकसरा हार इम एणइं आलावें कनकावलि
रीनइं रवहइंरइं इं बांधीनइं पहिरीनइं रीनइं ली मो
सेइ २त्ता हारं पिणद्धेइ २ अद्धहारं पिणिबंधइ २त्ता एवं एकावलिं पिणद्धेत्ता एवं एएणं अभिलावेणं मुत्तावलिं
वलि मुइं रत्नावली रत्न कर कडला केउर मुगट म त्रुटिया ते बहेरखा आस नणविशेष दस मुद्रिका कडि कंदोरा किंकिण
नमइं सरण स्त्रकना लिविशेष अंगद बाजु आंगुली घाली बांध्या पहिरइं
कणगावलिं रयणावलिं कडगाइं केऊराइं तुडियाइं अंगयाइं दसमुद्दियाणंतगं कडिसुत्तबंध क
कुंडलें करि सुशोभित नास्य वक्षकोटे गेवासू नेकूंडल पहिरें ते वंइ नवि पहिरइं तथा निं चलपेलन्ना मुगट पहेरीनइं वीटी फूलनाम्हा
अनां मंगलीक निमित्तें बांधे को मकुष्यइं माला जस तेक मन संयुक्ति पहिरी अप्सरा देव फूल संघात मेलं प्रर
इसुत्ताके नेरविकं कंवए बंधती कुंडलाइं चूडामणि रयणसंकडं मउडं पिणद्धेत्ता गंठिमवेढिमपूरिमसंघाइ

मवंजाणयरोयासंघातमना मारबकारनामात्मफूजकअत्थवनीयरैंपोताना करइंकरीनइं अनेक अलंकार अलंक
लमुत्तलपरोयाणहुवा आतमानें अलंकृतविभूषत

मेणंचउविहेणंमलेणंकप्परुक्खयंपिवअपाणंअलंकियविभूसियंकरेइ२त्ता दद्दरमलंकारेणंअ

तविभूषितथइंथकइं धतिवर्णअलंकारस सिंहासनथकोउवइंउठीनइं अलंकारीसभाथकी पूर्वनइंबारणेंथइं
हित

लंकियविभूसएसमाणेपडिपुन्नालंकारे सीहासणाओअब्भुट्ठेइ२त्ता अलंकारियसभाओपुरच्छिमि

नइं नीकलइं नीकलीनइं जिहांववसायसभाछइं तिहांआवइं आवीनइं ववसायसभानेंप्रदक्षिणाकरतोथकोतेव
मेरिवितननोगमछइं वसायसभाइं शुभअध्यवसायनइं

ल्लेणंदारेणंपडिनिक्खमइ२त्ता जेणेववसायसभा तेणेवउवागच्छइ२त्ता ववसायसभंअलंअ

णुप्पयाहिणं करेमाणे२पुरिच्छिमिल्लेणंदारेणंअणुपविसइ२त्ता जेणेवसीहासणे तेणेवउवागच्छ

वंधि पूर्वनइंबारइंथईनइं प्रवेशकरइंकरीनइं जिहांसिंहासनछै तिहांआवइंआवीनइं सिंहासन

आसनमुहलइंथकइं पूर्वाभिमुखथइंनइंफबइंबइं तिवारेंतेविजयदेवतानाआभिओगिकमोकल्याजाइं पुस्तकरत्नआ
सइ एहवासेवकदेवता गलेंआणी

इ२त्ता सीहासणवरगतेपुरच्छाभिमुहेयसन्ने तएणंतस्सविजेयस्सदेवस्स अभिओगियादेवा पोत्थर

त्वंकें तिवारेंतेविजयदेवता पुस्तकरत्नहाथेंलेइं पुस्तकरत्नउघाडइंफंकइं पुस्तकरत्नउघाडइं तेपुस्तक
फंकीनइं मुंकइं

यणंउवणेंती तएणंसेविजएदेवेपोत्थरयणंगिण्हइ पोत्थरयणंमुयइ२त्ता पोत्थरयणंविहाडेइ पो १८४

MEMORIAL

रत्नआगलेंमोगीनं पुस्तकरत्नवांचइंवां धर्मकरणीनाअर्थग्रहीइंधारइं धर्मकर्मानुगतमव्यवसायविस्तीर्ण पुस्तक
कीनइंसे चीनइं पणइंपणिकरीनइंग्रहइं ग्रहीनइं रत्न

त्थरयणंविहाडेइ२त्ता पत्थीरयणंवाएइ२त्ता धम्मियववसायंपगेनहइ धम्मयविववसायंपगेन्हेत्ता पत्थो

ष्फादिकेंपलि कर्मनोक्षयत्मकं व उदयस्कय त्काउ वसमोव ममा एकम्माणो लियद्वेवस्विंश कालो तावंसा वोपराप्मम १

वामिपाछोघालइंघा सिंहासणथकीउचइंउवी ववसायसभानइं पूर्वनइंबारेंथईनइं नीकलेंनीकलीनइं
लीनइं नइं

रयाणंपडिनिक्खमइ२त्ता सीहासणाओअब्भुट्ठेइ२त्ता ववसाएसभाएपुरच्छिमिल्लेणंदारेणंपडिनिक्खम

ववसायसभानें पूर्वनइंबारेंथईनइं निकलइंनिकलीनें जिहांनंदापुष्करणी तिहांआवइंतिहांआवीनें

इ ववसयसभाओपुरच्छिमिल्लेणंदारेणं पडिनिक्खमेत्ता जेणेवनंदापुक्करणी तेणेवउवागच्छइ२त्ता:

नंदापुष्करणीनइं पूर्वनइंतोरणेंथइनइं पइंसइं पइंसीनइं पूर्वनइंबारइं त्रसोपांनपावडीइंथईनइंमाहेंपइंसैंप

नंदापुक्करणिंपुरच्छिमिल्लेणंतोरणेणंअणुपविसए२त्ता पुरच्छिमिल्लेणंदारएतिसोमाणपडिरूवएणं

इंसीनइं हाथपायपखालइंधोइ धोइं एकमोटोउजलोरूपामें निर्मलपांणीभर्योजलथी मातगजहस्तीतेहना
नइं फषनैं

पच्चोरुहतीरत्ता हत्थपायंपरवालेइ२त्ता एगंमहंसेयंरययामयं विमलसलिलपुन्नंमत्तगयमुहागि

आकारेंसामान्यसरिषोभृंगारलेइं पछेंजेतिहांउत्पलपद्मनलिनकुमुदादिकनीसहस्रपत्रादि नंदापुष्करणीथकोबाहिर
लेइनइं लइंलेइनइं नीकलेनीं

इसमाणभिंगारंपडिगिन्हेइ२त्ता जाइंतत्थउप्पलाइं जाइंसहस्सपत्ताइंगिन्हेइ२त्ता नंदापुक्करणीओ
नी

कलीनइ जिहां सिधायतन देहरो तिहां जावानइं अर्थइं चक्र घयो तिवारइं ते विजयदेवता च्यारसहंस समधरघे सामानिक देवता साथइं

पच्चुत्तरइ २त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए तएणं तं विजयं देवं चत्तारि य सामाणिय साहसीओ

जाव जिहां लगइं अनेरा घणा वाणमंतर देवता देवांगना केतलाएक देवदेवीनां हाथमांहि उपल कमल ... सहस्रपत्र हाथमांहि लीधा छइ

जाव अन्ने य बहवे वाणमंतरा य देवा य देवीओ य अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया

एहवा थका विजयदेवता पुंठि २ परिवारी तिवारइं ते विजयदेवताना घणा आभियोगिक देवता देवांगनाइं हाथमां कलश लीधा छइ आवग्र ते ति कहइं ताजाइ

या विजयं देवं पिट्ठतो २ अणुगच्छंति २त्ता तएणं तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य

जालगांध प्रधूमीला राजन हाथमां लेइनइं विजयदेवतानां पुंठइं अनुगच्छंती कहइं तावालइं तिवारइं ते विजयदेवता सामानीक साथइं च्यारसहंस

कलसहत्थगया जाव धूवकडुच्छुयहत्थगया विजयं देवं पिट्ठतो २ अणुगच्छंति तएणं से विजए देवे चउहिं सामाणि

जाल गांध अनेरा घणा वाणमंतर देवता देवांगना साथइं परवस्था थका सर्वऋद्धइं सर्वयुक्तइं जाल तंबा जिहां ताहि घोषघावइ

यसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुईए जाव णिग्घोस

वाजीव जिहां श्री सिद्धांत प्रसाद तिहां आवीनइं सिद्धायतननइं प्रदक्षिणा करता थका पूर्वनइं द्वारइं पइसइ पइसीनइं

णाइयरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति २त्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अ

जिहां देवछंदो देवं कलश गर्भग्रह तिहां आवइं आवीनइं जिनप्रतिमा सांहमुं जोई जोईनइं दीवइं थकइं प्रलोम मोरपीछ कुंज करइ प्रलोमकरीनइं

पुंववेसइ २त्ता जेणेव देवछंदए तेणेव उवागच्छइ २त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेइ २त्ता लोमहत्थगं

लीलेइ लेइनइं मोरपिछनी पुंजणीइं पुंजइं सुगंधगंधोदकइं पखालीनइं दिव्य सुगंधगंध कषायल लुहीनइं क

गिण्हति २त्ता लोमहत्थेणं पमज्जति २त्ता सुरहीणा गंधोदएणं ण्हाणेति २त्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासा

गात्र लुहइ लुहीनइं सरस गोसीर्ष चंदनइं करीनइं गात्रनइं लीपइ लीपीनइं जिनप्रतिमानइं मुंघा घणा उत्तरकृष्टा देवदूष्य युगल

इएणं गायाइं लूहेइ २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ २त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं दिव्वाइं दे

लवस्त्र पहिरावइं वडा वस्त्र ... तेविस्तारइं ... फूलचढाविं माल्यारोपण गंधारोपण

वदूसजुयलाइं नियंसेइ २त्ता अग्गेहिं वरेहि य गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ २त्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंध

वर्णारोपण अभिआभरणारोपण करइं करीनइं आसक्त असर्वमनोहर ... विस्तारित ... विपुलफलहलेनां ... समोहकरइं करीनइं

रोहणं वण्णारुहणं आभरणारुहणं करेइ २त्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं

... रूपानां स्वच्छरसइं ... विचित्रइ तेह विचित्र करीनइं ... जिन ... आगलमंगलीक ... करइं ... पडिमा ... पडिमानइं आगलइं आलेखइ केहा

करेइ २त्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेएहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं जिणपडिमाइ पुरतो अट्ठट्ठमंगलगे आल

डियासिगम
१८६
तेथकनप्रथमेम
मारेंसेवुरूपवु
लुतराग्रुवसा
पंचांगुलीनीके
सेव्रुग्रहलेंकर
ग्रहणग्रहातक
रतलाधिग्रम
कीसतिलुष
करतलग्रहुष
विग्रमुक्त

साथी तेश्रीवल्लमांलगइं दरप्पण आठमो एहवा आठ मंगलीक आलेषइं वलीकचग्रहनी परें ग्रहा ग्रहमं गइं स्रुग्रा नाकंचक्केरूपा
आलेषइं नइं
मनी परें हाथथी ग्रहा विलुटे विग्रह कंबके
दइ तंजहासोत्थियसिरिवच्छ जावदप्पण अट्ठमंगलए आलिहित्ता कयग्गाहग्गहियकरयलपब्भविप्प
तेपरि कंचनमणिरत्नानां दंडे चित्रामछे ... कुंदरुक्कतुरुक्क रसाइ एतलें कांचवर्णना फूलना पुंजसमो हलेऊं
हरे ... उपचारें कलितसहितकरी चंद्रप्रभरत्न वज्ररत्न
मुक्कोणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलीयं करेंति २ चंदप्पभवइरवेरुलियाविमलदंडकं
वैडूर्य तेहनोनि कंचनमणिरत्ननां दंडे चित्रामछे प्रवरप्र कुंदरुक्क सेलहक सकलांधमां उत्तम जेहनो तेहनी वाटिकरीस
रत्न मजीठ दंडइं जिहांजिहां एहवो कडछलागर धांन द नाधूप गंधछइ गंधप्रतइं मूंकता
चणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवगंधुत्तमाणुविद्धाचधूमवट्टिविणिमुयंतं
एहवो वैडूर्यरत्नमय कडछो तेहनो विशे जिननी प्रतिमानइं धूपदेई एकसोआठ स्तवन विशुद्ध निर्मल मोहाविचित्र अनेक
थग्रकर्षइं ग्रहाइं ग्रहीनइं नइं पछइ दोषरहित गंधयुक्त रोकरू
वेरुलियमयं कडुछयं पग्गहियपयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयाविसुद्धगंधजुत्तेहिं महाविंति
अनेक अर्थ युक्त पुनरुक्त दोषें करी रहित नीस्तवना स्त सात आठ पगलां पाछां उसुंदीक्तण पछीतलइं जमणो ढींचण ध्रुवीतलइं
युक्त विस्तारवंत वीनइं सरीया पाछो ओसरीनइं ... लगाडीनइं निहट्टुकहें तो लगाडीनइं
तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणुं धर
त्रणिवारमस्त धरणीतलइं लगाडइं लगाडीनइं कहककहा गुडित बहिरषा तेणें ... भुज संहरें संकोचइं करतलपरियही
कमली एतलइं एकठा करइं नएकठामेलीमा
णितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ कडगतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ २ त्ता करयल १८६

थें आवर्त्तवारत्रणि अंजलीकरीनइं विज नमस्कार होउंइं तिवाकाजेका तगवंतनें समगुद्ध्वरा दिलरूणायुक्त जोलगें मोक्षना ति
यदेवलाइं मकहंताहवो रेअरिहंतनइं एहवो नामधेय ते गामसंज्ञा प्रतिपांम्या छे एहवा तगवं
परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसिद्धिगइना
तेनें नमस्कार हो नमो जिणाणं जोलगें इं करीनइं वांदइं सामा वांदीनइं नमस्करिनइं जिहां सिधायतननो घणो मध्येसताग
मधेणं नमस्कार विशेषपणइं तिहां विजय
मधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं वंदइ नमंसइ वंदेत्ता नमो सित्ता जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झ
देवता आवें आवीनइं दिव्यपांणीनी धाराइं अतिफरकया तातो गोसीर्षचंदनगोरोचन तथा रक्तांजणीना पांचअंगुलीना चपे
लीसींचइं पछइं सरस वादितथांन कलें आलीषइं
देसभाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलेणं मंडलं
आलीषीनें पछें चर्चाप्रजाक फूलचढा जोलगइं आलतर्णमुग्रटादिक च सोगंधनी विपुलविस्तीर्णजेमां फूलमालाथक
रीनइं वइं ढावइं चढावीनइं जा लगइं मनाकलापक
-ला आलिहित्ता चच्चाए दलयति पुफारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ २ त्ता आसत्तोसत्त विपुलजावमल्लदा
हेंतां समोह करइं कचाग्रहनी परइं ते करतल थकी विछुटां फूल तेलेंसहित करइं धूपदलइ धूपदेइं देइं जिहां सिधायतननुं दक्षिण
करीनइं एतलइं फूलनासमोहकरइं करीनइं नइं कंबारएंने तिहां आवें
मकलावं करेति कयग्गाहग्गहियजावपुंजोवयारकलियं करेयत्ता धूवं दलयति २ त्ता जेणेव सिद्धायण
आवीनइं तिहां मोरपीछनी पुंजणी लघनइं विषइं तेदे वारविषयनी सालिभंजिका पूतलीनइं व्यालसर्पना रूपनइं
लीइं लेइनइं वता
स्स दाहिणल्ले दारे तेणेव उवागच्छति २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ दारचिडिओ य सालिभंजियाओ य वालरूवए य

मोरपीछनइ पूंजणीइं पूंजइ धूप उखेवइ पछइ जिहां मुखमंडपनो दक्षिण घणो मध्यदेशभाग तिहां आवइ आवीनइ घणो मध्य
जइ आलागो बालइ मानेइ देशभाग

लोमहत्थेणं पमज्जइ जाव धूवं दहती जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ त्ता

नइ मोरपीछनी पूंजणीइं करीनइ पूंजइ प्रमार्जइ दिव्यउदकपाणीनी धाराइं आछांटइ छांटइ नाम छांटइ पछइ सरस ताजा बावनाचंदनइं करी पांच आंगुलीना हाथा मांडलुं आलेखइ

बहुमज्झदेसभाए लोमहत्थेणं पमज्जइ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलित

चर्चा करइ बांराना थइ कचग्रहनी परइं छूटा फूल तेहनो ढगलो करइ धूप आदि करइ पछइ मुखमंडपनो पश्चिम तिहां आवइ आवीनइ
मयासानो द्वार

लेमंडलगं आलिहइ चच्चए दलेयंती कयग्गाह जाव धूवं दलयति त्ता जेणेव मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे ते

मोरपीछनी पूंजणी लेइ द्वारचेटनइ द्वारसाखनइ तथा बारसा मइं तथा व्यालरूपनइ पूंजणीइं दिव्यप्रधान उदकपाणी
थांभी पूतली पूंजइ पछइ नीधाराइं आछांटइ छांटइ क

णेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं गिण्हइ दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ दिव्वाए उदगधारा

हे तां सींचइ सींचीनइ सरस गोसीर्षचंदनइं फूल आमूलक मालनो मालावडा वीकाचग्रहनी परइं जिहां दक्षिणना मुखमंडप
चर्चइ पूजइ तजी तांति स्फं चढावइ धूप उखेवइ

ए अब्भुक्खेइ सरसेणं गोसीसचंदणेणं पुप्फारुहणं जाव आसत्तोसत्त कयग्गाह धूवं दलयंति जेणेव दाहिणि

नी उत्तरनी थंभपंक्ति तिहां आवइ आवी नइ पूंजणीइं करी थांभा नि पूतलीइ नइ दिव्य पाणीनी धारा छांटी सरस गोसीर्षचंदनइं पूजी

मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंति तेणेव उ त्ता लोमहत्थएणं खंभे सालिभंजियाओ दिव्वाए उदगधाराए सरसेणं गोसी १८७

फूल चढावइ माला आ कचग्रहनी परइं फूलनकाली धूप देइ पछइ जिहां दक्षिणना मुखमंडपनो पूर्वनो द्वार तिहां आवइ आवीनइ ति
मज पूंजणीइं पूंजी जाव धूप उखेवइ तिमज सर्व कहेवउं इहां पिण

सचंदणेणं पुप्फारुहणं जाव आसत्तोसत्त कयग्गाह धूवं दलयति जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरच्छि

माला इं पाछ जी परे द्वार दिकनी पूजा करइ पछइ तिमज पेष्यघरमंडपनो घणो मध्यदेशभाग जिहां वज्रमइं अखाडउ पीठ
जिहां दक्षिणनो द्वार तिहां आवीनइ

मिल्ले दारे तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव दारस्स अच्चणियं जेणेव दाहिणिल्ले दारे तं चेव जेणेव पेच्छाघरमंडवस्स

विशेष जिहां मणिपीठिका जिहां सिंहासन छइ तिहां आवइ आवीनइ पूंजणी हाथि लेइनइ अखाडकनइ मणिपी

बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता लो

ठकानइ सींहासननइ मोरपीछनी पूंजणीइं पूंजइ पूंजीनइ दिव्य पाणीनी धाराइं आछांटइ छांटी करइ ते सींचइ फूल चढावी
नइ

महत्थगं गिण्हइ अक्खाडगं च मणिपीढियं च सीहासणं च लोमहत्थेणं पमज्जइ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भु

आलगइ धूप उखेवइ जिहां पेष्यघरमंडपनो पश्चिमनो द्वार आजे द्वारनो तालाबा द्वार तांइ उर्या उत्तरनी थंभपंक्ति तिमज
पछइ

क्खेइ पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयती जेणेव पेच्छाघरमंडवे पच्चत्थिमिल्ले दारे दारपवणिया उत्तरिल्ला खंभ

सर्व पूर्वनइ बारणइ दक्षिणनइ बारणइ जिहां चैत्यथूभ छइ तिहां आवइ आवीनइ पूंजणीइं पूंजे पूंजीनइ चैत्यथूभनी पूंजणीइं पूंजइ

पंती तहेव पुरच्छिमिल्ले दारे दक्खिणिल्ले दारे जेणेव चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ त्ता लोमहत्थगं गिण्हइ त्ता

दिअ पांणीनी धाराइं अभिसिंचइ सीचइं पछैं फूल चढावैं सरस फूल बांधीनइं धूप ऊषेवैं पछैं जिहां पश्चिमनी मणिपीठिका छैं जिहां जि

चेईयथूभं लोमहत्थएणं पमज्जइ दिव्वाए उदगधाराए अभिसिंचति पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयति

णनी प्रतिमा छइं तिहां आवैं जिहां जिनप्रतिमानें दीठइं थकें प्रणाम करइं करीनइं पुंजणीइं पुंजइं तिमज सर्व अधिकार
आवीनइं

जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ जिणपडिमाणं आलोए पणामं क

फाडलीपरैं पुंजणी हाथे लेइं लेइनइं जांलगैं सिद्धिगतिनामधेय एहवा लगइं शक्रस्तव कहीनैं वंदइं नमस्कार करइं
कहेंवा

रेतिस्ता लोमहत्थगं गिण्हति तं चेव सव्वं लोमहत्थगं गिण्हइत्ता जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं वंद

इम उत्तरनी प्रतिमा पूर्वनी प्रतिमा दक्षिणनी प्रतिमा इम जिम चैत्यथूभनी पूजा चारनी विधि सर्व जिहां मणिपीठिका जिहां दक्षि
कहेवी

इ नमंसइ एवं उत्तरिल्लाए पुरच्छिमिल्लाए दाहिणिल्लाए वि जेणेव चेईयरुक्खे दारुविही जेणेव मणिपी

णनी नंदा नामा पुष्करणी छइं तेणेव तिहां आवइं तिहां आवीनइं पुंजणीइं लेइ करीनैं पुं मोरपीछीनी हाथनैं विषइं लेइ क
नइं जइं रीनैं पुंजइं पुंजीनइं

ढिया जेणेव दाहिणिल्ले णंदापुक्खरणी तेणेव उवागच्छति लोमहत्थगं गिण्हइत्ता लोमहत्थेणं पमज्जइ

दिव्य पाणीनी धारा सरस गोसीर्ष चंदनना हाथा देइं पुंजीनइं धाराइं फूल चढावइं जांलगैं धूप उषेवइं सिद्धायतननें प्रदक्षि
देइनइं मंडला करइं पइं वइंखेवैं

त्ता दिव्वाए उदगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयति सिद्धायतणं अणु १८८

णा करतो थको जिहां उत्तर दिसनी नंदा नामा पुष्करणी छइं तिहां आवइं आवीनइं तिमज महेंद्रध्वजनें चैत्यवृक्षनइं चैत्यथू

पयाहिणं करेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ त्ता तहेव महिंदज्झयं चेईयरुक्खं चे

भनइं पछे पश्चिमनी मणिपीठिकानी जिनप्रतिमानें उत्तरनी दक्षिणनी प्रेक्षाघर मंडपनि तिमज जिम दक्षिणनइं द्वार

ईयथूभे पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला दाहिणिल्ला पेच्छाघरमंडवस्स वि तहेव ज

पश्चिमना द्वारनइं विषइं जांलगइं दक्षिणना थंभनी पंक्ति मुषमंडपनइं त्रणि द्वारनी तिमज पूजानी विधि कहेंवी

हा दाहिणिल्लस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे जाव दक्खिणिल्ला खंभपंती मुहमंडवस्स वि तिण्हं दाराणं अच्चणि

दक्षिणना थांभानी पंक्तिनइं उत्तरनें द्वारइं पूर्वनइं द्वारइं सेष तिमज अनुक्रमें जांलगैं पूर्वनी दिसानी नंदापु

या लोणिय च दाहिणिल्ला खंभपंती उत्तरे दारे पुरच्छिमे दारे सेसं तेणेव कमेणं जाव पुरच्छिमिल्ला

ष्करणी जिहां सौधर्म सभा छइं तिहां जावानें चाल्यो तिवारें ते विजयदेवताना च्यार सहस्र सामानिक

णंदापुक्खरणी जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामा

देवता जांलगइं सोलसहस्र आत्मरक्षक देवता साथैं जांलगैं सर्व ऋद्धिस्युं वाजित्र वाजतइं सर्व जिहां सौधर्म सभा छइं ति
हां आवइं

णियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ जाव सव्विड्ढीए जाव णिनाएणं जेणेव सभा सुह

डिवाजिगमः
१८९

आवीन सौधर्मसभानइं प्रदक्षिणा करतो थको पूर्वनइं बारणइं आव्नइं प्रवेश करइं करीनइं पछइ जिहां मणि

माणेणेव उवागच्छइ २ त्ता सभासुहम्मा अणुपयाहिणं करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ २ जेणेव म

पीठका जिहां माणवक नामा चैत्यस्थंभ जिहां वज्रमइं जिहां गोल वृत्त समुद्गक जिहां जिननी दाढा छै तेहां आवइ आवीनइं पछइं मोरपीछनी पुंजणी करीनइं

णिपीढए जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गा जिणस्स कहाओ आलोइ पणा

मं करेइ २ त्ता लोमहत्थगं गिण्हइ २ त्ता वइरामया गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ २ त्ता वइरामए गोल

तिहां उघाडइं उघाडीनइं जिननी सकल दाढानइं पुंजणीइं करीनइं पुंजइं पछइं सोगंधि गंधोदकें करी त्रणि सात एकवीसवार जिननी दाढानइं धोइं

वट्टसमुग्गए विहाडेइ जिणस्स कहाओ लोमहत्थएणं पमज्जइ सुरभिणा गंधोदएणं तिसत्तखुत्तो जिण

परकालैं परकालीनइं सरस गोशीर्ष चंदनें करी विलेपन करइं करीनइं उत्तम प्रधान गंधे करीनइं माला फूलें करीनइं पूजइं पूजीनें

स्स कहाओ पखालेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहि

धूप उखेवें उखेवीनइं पछें वज्रमें गोल वृत्त समुद्गकमाहैं जिननी दाढा थापइं मांन वक चैत्यस्थंभनइं पुंजणीइं करीनइं पुंज

प्रक्षिपइ जइं घालीनइं

य अच्चेइ २ त्ता धूवं दलयंति २ त्ता वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिपक्खवंति २ त्ता माणवकं चेइया

१७७

पूजीनइं दिव्य पांणीनी धाराइं सींचइं कहैं तो छांटें छांटीनइं सरस गोशीर्ष चंदनें करीनैं चरचा करइं करीनइं फूल च

खंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ

ढावइं जांलगे सरस सर्व पूजा करीनइं धूप उखेवइं उखेवीनइं जिहां सौधर्म सभानें स्थानकें घणे मध्य देश भाग तिमज जिहां सिंहासन छैं

२ त्ता पुप्फारुहणं जाव आसत्तोसत्त कयग्गहधूवं दलए २ त्ता जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए तंचेव

तिहां आवें आवीनइं तिमज बारनो सेजा पूंजीनें जिहां देवशय्या तिमज सर्व कहेवुं पछइं जिहां लघु महेंद्र ध्वज छइं तिहां तिमज सर्व प्रकार

जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव दारपडिणिया जेणेव देवसयणिज्जे तंचेव जेणेव खुड्डा

पछइं जिहां हथीयारनो संभाइं चउप्फाल नामइं शस्त्रकोस छै तिहां आवें आवीनइं प्रत्येकें २ हथीयारनें पुंजणीइं करी पुंजइं पुंजीनइं

महिंदज्झए तंचेव जेणेव पहरणकोसे चउप्पाले तेणेव उवागच्छइ २ पत्तेयं २ पहरणाइं लोमहत्थेणं प

सरस गोशीर्ष चंदनें करीनइं पूजइं तिमज सर्व कहेंवो बाकतो सर्व दक्षिणद्वारे आदि करीनें तिमज मणिपीठका सिंहासन न्याय लेवो इम होइं इम जाणवुं मांलगे पूर्व दिशानी नइं दानो

मज्जेइ २ त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं तहेव सव्वं सेसं पि दाहिणदारपि आई का उत्तरदिवण्ण्यद्ध डावए

मांपुरकरणी इं आवइं सभा मधलीतिमज जांणवी जिम सौधर्म उपपात सभाइं ति मज त्यां अवरंवलजोविद्योपदेव सभाइ पूरइं अर्चा कीधी सेषवा कते

सभा तिम अर्चा विधि एजरीतइं जांणवी

रत्ति मिच्छानंदा पुक्खरणी सभाणं सच्चाणं जाव हरासुहम्माए तहा अच्चणिया उववायसभाए नवरं देवसयणि

सिंहासनें अर्चा कीधी ॥ इंद्रनी पूजा ॥ नंदा पुष्करणीनी परें कहेवी ॥ अरचा कीधी व्यवसायसभाइं आवी पुस्त

हं अच्चणिया संसा सुसीहासणाणं अच्चणीया कायसमसडाहा नंदा पुरकरणीए अच्चणि ववसायसभाए पेढ

करनि पुंजणीइं पुंजीनइं दिव्यपाणीनी धाराइं से (वीनइं) सरस गोशीर्ष चंदनइं तीपीनइं उत्कृष्टां वर गंधें करी ॥ फूलनी माला इं (प्रधान) (लेकरीनें पूजें) (पूजा करें)

इरयाणं लोमहत्थेणं दिव्वाए उदगधाराए गोसीसचंदणेणं अणुलिंपइ अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिय

पछें सिंहा मासइं करी अर्चा की सीहासणनी मोरपी छहाथे लेइ नइं ॥ पुंजणीइं पूंजी करीनइं ॥ सांजनेंधूप दे धेवइं थाकतो समर्चपालजी नंदापुष्करणीनी परें कहेवो ॥ परें पूजा ए

अच्चणियं मल्लेहिय अच्चणियसीहासणलोमहत्थेणं पमज्जइ जाव धूवं दलयति सेसंतहेव नंदाए ज

हनी करवी पछें जिहां बलिपीठ वछइ तिहां आवइ आवीनइं ॥ आलिबिगिक देवतानइं तेहें तेडीनइं इम कहें सी घ्र महो देवतानें कांजें प्रोय

हाहरीयस्स झेणव बलिपेढे तेणेव उवागच्छइ अभिजोगिए देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं खिप्पामेव भो देवाणुप्पि

विजयाराजधानीइं ॥ त्रणि मारग आवी मिलें तेत्रकतथा अंगार क कहीइं ॥ आवी मिलें आर मार्ग ॥ व्यापंथमार्ग सामान्य पंथप्रसा (नीकलें ते महा पंथ) ॥ राजपंथ विशेष प्रकार प्रतिन

या विजयाए रायहाणीए सिंघाडएसु य चउक्केसु य चच्चरेसु य चउम्मुह महापहेसु पासाएसु पागार

अट्टालक संतें चरिका आठ हस्त मार्ग द्वार गोपुर पक्का तोरण द्वार रुप्प वाविनइं विषइं कमल युक्त पुष्करणी ॥ सोलनइं (रहेंवानां वाम) (पुरमांणनगर पका) (प्रासादनां) (रना द्वार) (पलानइं) (नइं विषइं)

सु अट्टालेसु य चरियासु य दारेसु य गोपुरेसु य तोरणेसु य वावीसु य पुक्खरणीसु य जाव बल

१७०

वल्लीप्रक्कतिन माधवी लतादि ॥ उद्यान वृक्षसंकु नगरनें समीपें कोन एकजातिना वृक्षले वनें विषें ॥ वृक्षनें समोहें वनराजी एकवे (यविषइं) (आरामनें विषें) (जलमनें विषें) (मे विषइं) (नेकजातिना वृक्षले वनवनें विषइं) (वांमे जइं तें तु में पू)

पंतियासु य आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य वणेसु वणसंडेसु य वणराईसु य अवणय

ता करो करी (नइं) ॥ एमाहरी आज्ञा मुझनें सीघ्र पाछी सुंपो ॥ तिवारें ते आभिओगिक देवता (नइं) ॥ विजयदेवतानइं इम कहइं ॥ (घूक इं) आभिओगिक देव (ता)

करेह २ त्ता ममएयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह तेणं ते आभिओगिया देवा विजएणं देवेणं एवं वुत्ता

इम सांभली करीनइं हर्ष (वंततुष्टवंत थइनइं) विनयें विजयदेवतानो वचन सांभली (सांभलीनइं) ॥ विजयराजधानीइं ॥ सर्वरूद्धि जां सर्वना जिन्न वाजतैं जिहां सौध

समाणा हट्टतुट्ठा विनयेणं वयणं पडिसुणंति २ त्ता विजयाए रायहाणीए सिंघा जाव जेणे

र्मनां मासराबइं तिहां आवें आवीनइं ॥ सौधर्मसभानें ॥ पूर्वनइं बारइं थईनइं ॥ पइंसइं पइंसीनइं ॥ तिहां मणिपीठका

व सभासुहम्मा तेणेव उवागच्छंती २ त्ता सभासोहम्मं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसए २ त्ता जेणेव

छै ॥ तिहां आवइं आवीनइं ॥ वरप्रधानसिंहासन मुंहतइं (रूपइं बइं बइ) ॥ पूर्व सांहमुं त्रिवांरादिकनें वांमें ॥ सांजगें अर्चनी का पूजा करइं (करीनइं)

मणिपेढीया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगया पुरच्छाभिमुहे सिंघाडगेसु ए जाव अच्चणीयं क

जिहां विजयदेवता (बइं) ॥ तिहां आवइं आवीनइं ॥ तेआज्ञा पाछी सूंपइं जिम कहीउं (कीधे) तिम ॥ तिवारें ते विजय (देवता) ते आभिओगिक नैं समीपइं

रेंती २ त्ता जेणेव विजए देवे तेणेव उवागच्छइ ति एयमाणत्तियं पच्चप्पिणंति तेणं विजए देवे तेसिणं आ

जीवाभिगम
१८१

पासें एव अर्थ सांभली निसम्य हीइं धरी हर्ष मननैं विषे तुष्ट संतोषपांमें चितमांहे आणंद पांमइ जांणइ हलरीइं पर्यो थकायो पछे जिहां नंदा पुष्करणी छइ

लित्तेणिया णं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हयहियाए जेणेव णं

तिहां आवइ आवीनइं पूर्वनइं तोरणइं पइसइं पइसीनें जांजागइ हाथ पग धोइं धोइनइं आचमीनैं चोषो परम शुचि पवित्र करीनइं

दापुक्खरणी तेणेव उ॰त्ता पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं जाव हत्थपायं पक्खालेति त्ता आयंते चोक्खे

नंदा पुष्करणी थकी नीकलइं नीकलीनइं जिहां सौधर्म सभा छइं तिहां जावानें चालतो हवो तिवारें ते विजय

परमसुइभूए णंदाओ पुक्खरणीओ पच्चुत्तरइ २त्ता जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव पहारित्थ गमणाए तए णं से

देवता च्यार सहंस सामानिक देवताए करी जांजोंसोलसहंस आत्मरक्षक देवताए करीनइं सर्व ऋद्धिइं सर्व

णं से विजए देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सव्विड्ढीए

वाजिंत्र वाजतइं जिहां सौधर्म सभा तिहां आवइं आवीनइं सौधर्म सभानें पूर्वनइं बारइं पइसइं

जाव नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ २त्ता सभं सुहम्मं पुरच्छिमिल्लेणं दारे

पइसीनइं जिहां मणिपीठिका छइं तिहां आवइ आवीनइं वर प्रधान सिंहासनइं पुर्वसांम्हो मुख करीनइं बइसइ

णं अणुपविसइ २त्ता जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छइ २त्ता सीहासणवरगए पुरच्छाभि १८१

तिवारें ते विजय देवतानइं च्यार सहंस सामानिक देवतानइं अनुक्रमें २ ईशानकूणइं प्रत्येकइं २

मुहे सण्णिसण्णे तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ अवरुत्तरेणं उत्तर

पूर्वनां थापें भद्रासनइं बइसइं तिवारें ते विजय देवतानी च्यार अग्रमहिषी

उत्तरपुरच्छिमेणं पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति तए णं तस्स विजयस्स देवस्स चत्ता

पूर्वनइं दिसि भद्रासनइं प्रत्येकइं २ बइसइं पाछले थाप्पे भद्रासनें बेसइं तिवारें ते विजय देवता

रि अग्गमहिसीओ पुरच्छिमेणं पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति तए णं तस्स विजयस्स

दक्षिण पूर्वइं अग्निकूणइं अभ्यंतर पर्षदाना वासी आठ सहंस देवता जांजणें बइसइं ईमर दक्षि

दाहिणपुरच्छिमेणं अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ जाव णिसीयंति एवं दाहिणेणं मज्झि

णनी दिसइं मध्यपरषदाना दस सहंस देवतानां सिंहासनें जांजणें बइसइं तिवारइं ते विजय देवतानी पश्चिम दिसइं प्रत्येकइं २ की

मियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पत्तेयं २ जाव णिसीयंति तए णं तस्स विजयस्स देवस्स सत्त

सात कटकना स्वामी प्रत्येकें २ जांजणें बइसइं तिवारइं ते विजय देवता थकी पूर्वनी दिसइं दक्षिणनें दीसइं

पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवई पत्तेयं २ जाव णिसीयंति तए णं तस्स विजयस्स देवस्स पुर

पश्चिमनी दिसइं उत्तरनी दिसैं सोलसहस आत्मरक्षकदेवता प्रत्येकइं २ पूर्वनै घापे आसनै बइसइ तेकहइ छइ

जंबूद्वीपप्र० छिमेणं दाहिणेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीउ पत्तेयं २ सुवण्णेसु आसणेसु

१९०२ पूर्वनी दिसइं आरसहस देवता इम आरदसे बइसो लसहस देवताबइसइ तेआत्मरक्षकदेवता केहवा छइ सनाहबांध्या छै वर्मनाकवचधारी रनुंरबोपुं करवानै

निसीयंति पुरच्छिमेणं चत्तारि देवसाहस्सीउ जाव एवं उत्तरेणं ते णं आयरक्खा देवा सन्नद्धबद्धवम्मियकव

कागकी धारे पणपाटा वर्मादिकना बांध्या छै पहेस्या छै ग्रीवानां आभरण बांध्या छै आत सिरिकड़ं तत्थहरणनाथघजेल विविध विमलवरचिंधपट्टा निर्मल प्रधान एहवा चिह्न छइ पाटा बांध्या छइ ग्रह्या छै इं आदि मधुआवसा

या उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेवेज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा ति

आवसान संधि लावव ज्जमइं तथा किंएत लेस्कंताव वज्जमें पाटा बैधनुष रास ओसा दिया छै आयुध जेणइं तथा कोटी धनुष ग्रह करकज व चो गिं करीनें एहवा छै जह थे रास्त्र

णियाइं तिसंधीणि वयरामयकोडीणि धणूइं अभिगिज्झ परियाइयकंडकलावा नीलपाणिणो पीयपाणि

नामनो हइ छइं इमनील पाणी इमरक्तपा इमचापछै हाथमां तेचा पारुष्पहरणवि चर्म हाथ छै धर्मवणिबें सस्त्रवि इमपीतपाणी जाणवुं लि पाणी शेष धार्वे शेष.

णो रत्तपाणिणो चावपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो धम्मपाणिणो खग्गपाणिणो दंड

षड्पणि हाथमां दंडपणि हाथमां छइं पासपणि हाथमें छइं इमनील इमपीत ना चा चा प रु धर्मघट नाधरणवरप्रधान आत्मरक्षाकर सिनारनेछइं गुरुपवेत्राई नइं आणीता तलइं

पाणिणो पासपाणिणो नीलपीयरत्तचावचारुचम्मदंडखग्गपासवरधरा आयरक्खा रक्खोवगया गुत्ता १९०२

वइंतरालें पालइं सोतियुक्तिपा अंतरा प्रत्येक २ समयत बेंकिंकरनी रुवइं विजयदेवतानें भगवनके तला कालनी थि लिकवचें पाले छै जेहनें एकांगालें छिनयनी मनें परइं रहें छै तिआउपानी पल्यनी कहेंता

लीया जुत्तापालिया पत्तेयं २ समयउ विणयउ किंकरभूया चिट्ठंति विजयस्स णं भंते दारस्स केव

कहीछइं तिवारैंतग एकपल्योपमनी थिति इमहर्द्धिक छइं इम महाजोतिवंत इम महाबलवंत एहवो मोटा यशनो ध वंतकहें गोतम कही छइं तछइं णी छै

इयं कालं ठिई पण्णत्ता गो० एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता एवं महिड्ढीए एवं महज्जुईए एवं महाबले एवं महाजसे महा

एहवो मोटो सुखी एहवो महामणिमावं विजयएहवो द्वारविजयनां किहां भगवन जंबूद्वीपनो विजयं जंबूद्वीपना मध्यना छइं तछइं मादेवता कहिवे तनां मइं द्वार कहीवे गोतम मेरुपर्वतथ

हासोक्खे एवं महाणुभावे विजए देवे कहिं णं भंते जंबूदीवे २ विजए नामं दारे जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वय

कादक्षिण पस्तालीससहस योजननी अबाधाइं जइंइं जंबूद्वीपइंदक्षिणनइं छेहड़इं लवणसमुद्रनइं दक्षिणार्द्ध इ तिवारइं

स्स दाहिणेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए जंबूदीवे २ दाहिणपेरंते लवणसमुद्द २

कोउत्तरतिहां जंबूद्वीपनो वैजयंत नामइं द्वार कहीवे आठयोजनउंचो तेवपणें कहीतछइं च्यारयोजन पुहलो तिमजगकी मतासर्व कहेंवी वि

दाहिणद्धस्स उत्तरेणं एत्थ णं जंबूदीवस्स वेजयंते नामं दारे पण्णत्ते अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सो चेव सव्वा

जयद्वारनी परें तिनइं किहां भगवन तेहनी राजधानी छइं तेहनी दक्षिणइं राजधानी छइं जाणवी वैजयंत नामा देवता वसइं छइं एत ते वैजद्वार कह्या किहां भगवन जंबूद्वीपनो जयंत नामा द्वार कह्या

वत्तव्वया जाव णिच्चे कहिं णं रायहाणी दाहिणेणं जाव वेजयंते देवे २ कहिं णं भंते जंबूदीवे २ जयंते ना

जंबूद्वीपमेरुथकीपश्चिमइं पस्तालिससहस्रयोजननीमर्यादाइंजईइं तिवारइं जंबूद्वीपनइं पश्चिमनइंछेहडइं

मंदारे पं० गो० जंबूद्दीवे २ मंदरस्सपच्चच्छिमेणंपणयालीसंजोयणसहस्साइंअबाहाए जंबूद्दीवपच्च

लवणसमुद्रनइं पश्चिमाऽर्द्धथकी पूर्वइं सीतोदामोटीनइंउपरइं तिहांजंबूद्वीपनो जयंतनामाद्वार श्रीवी

च्छिमपेरंते लवणसमुद्दस्सपच्चच्छिमद्धस्सपुरच्छिमेणंसीओदाएमहानईए उप्पिंएत्थणंजंबूद्दीवस्सज

तरागेकहीउ तिमजद्वारप्रमाणलीहांजयंतनामादेवतानीपश्चिमइंराजधांनीछइंसालगइंमहर्द्धिकछइं किहांभगवन जंबूद्वीपनोचो

यंतेनामंदारेपन्नत्ते तंचेवसेपमाणजयंतेदेवेपच्चच्छिमेणंसारायहांणीजावमहड्ढीए २ ब कहिणं

थोअपराजितनामाद्वारवीतरागेकहीउंछइं तगवंतकहइं हेगौतम मेरुपर्वतथकीउत्तरनी दिसइं पस्तालीसहजारयोजननीअबाधाइंमर्यादाइंजईइंतिवारइं

तंतेजंबूद्दीवस्स २ अपराइएनामंदारेपन्नत्ते गो० मंदरस्सपच्चयस्सउत्तरेणंपणयालीसंजोयण

जंबूद्वीपनामेरुथकीउत्तरनैंछेहडइंउत्तरार्द्धथकीलवणसमुद्रदक्षिणइं तिहांजंबूद्वीपनोचोथोद्वारअपराजितनां

सहस्साइंअबाहाएजंबूद्दीवउत्तरपेरंतेलवणसमुद्दस्सउत्तरद्धस्सदाहिणेणंएत्थणंजंबूद्दीवेर अ

माद्वारकहीउं तिमजप्रमाणसर्वकहिंवोतेहनीराजधानीउत्तरनीदिसैं छइंजाणजाइंअपराजितनामादेवतावसैंछैं एच्यारनीराजधांनीअसंख्यातद्वीपसमुद्रइंअनेरेजंबूद्वीपइंछइं

पराइएनामंदारेपन्नत्ते तंचेवसेपमाणंरायहांणीए उत्तरेणंजावअपराइएदेवे चउण्हविअणंमिजं

जंबूद्वीपनीपरिद्धि ३१६२२७ योजन कोश ३ धनुष १२८ आंगुल १३॥ द्वारनांयोजनधसेच्यार गुणकरतांदेवा रसाखनाविस्तार कोस१८ तेहयोजन कहतां ३१६२४० एउगरतइंयोजन च्यारनागेहरतां एकेकोसारें ७९० ५२कोस१६ तिउथ आंपरिधिनोअ लिकोसनाधक थवसहस घाई उपसाएकसो आहावीसधान जनें१८२४धनुष घाइंसेच्यारसागे हरतां१५३२एकेक

दवइंएजंबूद्वीपनइंद्वार२नइं छेहडनइं केतलीमर्यादाइंआंतरोवीतरागेंकहीउं गौयमा उगणएसीसहसयोजनकपरि बावनयो

बूद्दीवे व एणंभंतेदारस्सय २ एसणंकेवतियंअबाधाएअंतरेपन्नत्ते गो० अउणासीइंजोयणसहस्सा

जनकोइंकउलुअईयोजन एतलोद्वार२निंमर्यादाइंआंतरोक होउंतेकिंमतेकहैंछइं जंबूद्वीपेंतगवनजंबूद्वीपनेंप्रदेशलगइं

इं बावणंचजोयणाइंदेसूणंअद्धजोयणेइंदारस्सर अबाहाएअंतरेपण्णत्ते जंबूद्दीवस्सणंभंतेदेवस

लवणसमुद्रनइंफरस्याछइं हेगौतम तोस्फर्सतगवनजंबूद्वीपतेस्फं लवणसमुद्रतेजंबूद्वीपकहीइं हेगौतम जंबूद्वीपनेंद्वीपकहीइं

पदेसालवणसमुद्दंपुठाहंता गोयमा पुठासेणंभंतेकिंजंबूद्दीवे २ लवणसमुद्दे गोतमा जंबूद्दीवेणं

इंमपणिखलुनिश्चेंलवणसमुद्रनकहीइंकिमस्तननिंविषयरहीतजेंनीजेथाछुंज लवणसमुद्रनाप्रदेशजंबूद्वीपनइंफरस्यानइंफरसीछइंतेपोतानाप्रदेशनेंस्वजिवणिपरपदनेंस्वजेंनही छइं तेतगवनस्फं

दीवेनोखलुसेलवणसमुद्दे लवणस्सणंभंतेसमुद्दस्सपदेसाजंबूदीवंर पुठाहंतापुठासेणंभंतेकिं

तबुद्वीपतेलवणसमुद्रकहीइं कैंस्फंसगवन जंबूद्वीपतेलवणसमुद्रकहीइंनही गोतमलवणसमुद्रपाछजीपरइं कहैंवोजंबूद्वीपनाजीवसंग वनमरीनइंजवणसमुद्र मांउपजइं गोतम

लवणेणंसेसमुद्देनोषलुसेजंबूद्दीवर जंबूदीविणंभंतेजीचेजीवाउद्दायता लवणसमुद्दंपवायंति गो०

केतलाएकजीवनपजवा आवइं केतलाएकजीवनपजवा नावइं तेस्यामाटइंगगवनएमकहिउं जंबूद्वीपमेरुपर्वतथकी

यमा अथेगतियापवायंती अथेगतियानोपवायंति लवणेणंभंतेसमुद्देजीवाउद्दायतां जंबूदीविपवा

ज्ञिवालिगम:
१८४

एणो बावीससह
सयोजननाविष
साकरलांछुमा
लीसयहसयोज
ननेहनोपहिंज
पणोदससहेसयो
जनमांहेंतेलता
चोपनसहेसयोज
नथाइंतेहमांथकी
गंधमादनमाल
वंतवषारापरव
तनोमूलनोपहिं
लपणोपंचरस
हेंयोजनतेविम
णाणणतोयोज
नसहेसकाढ
तांत्रिपनसहस
योजनथायेंएत
लोलांबपणोक

हेगौतम उत्तरनीदिसइं नीलवंतपर्वतथकीदक्षिणनीदिसइं मालवंतवषारापर्वतथकीपश्चिमनीदिसइं गंधमादनवषारा

यंती गोयमा उत्तरेणं नीलवंतस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चच्छिमेणं गंधमायणस्स

पर्वतथकी पूर्वनीदिसइं तिहांउत्तरकुरामें उत्तरकुरानामकक्षेत्र पूर्वपश्चिमउत्तरकुरालांबीछइं उत्तरकुराउत्तरदक्षिणे पुहुलीछइं अर्द्धचंद्रनइंसंस्थानेंछें

पव्वयस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं उत्तरकुराए णामं कुरा पन्नत्ता पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना

तेहनोप्रमाणइग्यारसहस्रयोजनआठसेंबेतालीसयोजनउपरिंएकयोजन महाविदेहनोविष्कंभतेत्रीससहेंसयोजनछइं जननाएकवीसीयाबेंभाग११८४२कला२एतलोमांनतेकिमकरइंतेकहेंछइं सइंचोरासीयोजनच्यारकला ३३६८४कला

अद्धचंदसंठाणसंठिया एक्कारसजोयणसहस्साइं अट्ठ य बायाले जोयणसए दोण्णि य एगूणवीसइं

४०६मांथकीमेंरूनोविष्कंभदससहस्रयोजनकाढीइंतिवारें तेहनीजीवाबेंपासेवषारेंफरसइं पूर्वेपश्चिमेंलांबीहोइं उत्तरदक्षि त्रेवीससहस्रयोजनछइंसइंचोरासीआरकला २२६८४ णेंपहिलीबेंबेंपासावषारापर्वतछइं पूर्वनो

भागे जोयणस्स विक्खंभेणं तीसे जीवा उत्तरेणं पाईणपडीणायया दुहओ वक्खा

बेहुनोपूर्वनइंवषारापर्वतइंजीवानोछेहडोफरस्योछेंपश्चिमनोछेहडो पश्चिमनावषारापर्वतनीजीवापश्चिमनोछेहडोफरस्योछइं

रपव्वयं पुट्ठा पुरच्छिमिल्लाए कोडीए पुरच्छिमिल्लं वक्खारपव्वयं पुट्ठा पच्चच्छिमिल्लाए कोडीए पच्चच्छिमिल्लं

त्रिपनसहेंसयोजनलांबपणोंपूर्वनइंपश्चिमइंते तेधनुषनीपुंठिदक्षिणकहीतेधनुपृष्ठतिहांनोमानकहेंछइंहवेंतेसाठिस किममेरुथकीपूर्वपश्चिमसहसाजवननोदीर्घ४ हेंसयोजनच्यारसइंअढारयोजन१२कला६०४१८येकला२१गंधमा

वक्खारपव्वयं पुट्ठा तेवण्णं जोयणसहस्साइं आयामेणं तीसे धणुं दाहिणेणं सट्ठिं जोयणसहस्सा

हीन उलीर छेली

नतोकुंइंहवि४
एहनेंअर्द्धइग्या
रसहसयोजनउ
पविआउसइंब
यतालीसिंउपरि
कलावें११८४२
कला२एतलोमां
नहोइंउधनु...री
नो:ई:

उत्तरकुरुमंदिरथ
कीजोयणायबा
वीससहेंससद
मालवंतउग
णमंदिरमहियं
इसेजरहोयेच
कुरूजीवा ९

१८४

गंधमादनमालवंतवषारापर्वतमांएकओमेलेंएतलोधनुपृष्ठिनोप्रमाणकइंहवेगंधमादनमालवंतनोजोउत्तरप्रमाणकहोछेंत्रीसस हेंसयोजनबेंसेंनवयोजनकला६॥३०२०९एतलीएकेकानीपरिधिछइं उत्तरकुरा

इं चत्तारि य अट्ठारसुत्तरे जोयणसए दुवालस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पन्नत्ता उत्तर

नोनगरबनकेहवोआकारभावस्वरूपप्रतिवतारेसंवकहो हेगौतम उत्तरकुरानोघणोसमोरमणीकहरमीना गछदित तेजिमकोईदृष्टां नइं

कुराए णं भंते कुराए केरिसए आयारभावपडोयारे पण्णत्ते गोयमा बहुसमरमणिज्जे भूमिभाए पण्णत्ते से जहा णा

मृदंगादिकनोपुरजेहवो होइंसमो मोलगेंएकरूपकहीयइं जिमअकर्मभूमितेवीयाव तजदत्तीमइं ५ विलकहेंवी बावतरायथकीलोकपरियहबिनातेमनुष्य नागणसमोहकहया

मए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव एवं पुव्ववण्णिया जा चेव सुसमसुसमाए वत्तव्वया सा चेव णेयव्वा जाव पम्हगंधा मिय

अहोश्रमणोआयु षमंतो पणिएतलोविशेष छइं उसंहेंसधनुषतेमनुष्यनुं चांहोइं तेहनइंएकसोछपनपृष्ठकरंड पांसलांकहयां अट्ठमभक्तआलि वरसे

गंधा अममा सहा तेतली सणिचारी नवरं इमं णाणत्तं छ धणुसहस्समूसिया दोछप्पण्णा पिट्ठकरंडगसया पण्णत्ता अट्ठ

गुणपचासदिवसअपतिपालकनीपालइंथाक एकुणपचासदिवसअपतिपालकनीपालइ थाकतोसर्वएकरूपकहीप्रसतिपइंजो उत्तरकुरानइंत्रिहां मनुष्यसमुपजेंतीअप जहजोणपनुं

मभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ तिन्नि पलिओवमाइं देसूणाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेणं ऊणगाइं जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं

माइं एगूणपण्णं राइंदियाइं अणुपालणा सेसं जहा एगसमयाए उत्तरकुराए णं कुराए छव्विहा मणुस्सा

तेकेहा पद्मगंध १ मतगंध २ अममइ ३ असह ४ तेतली ५ मणिचारी ६ किहांउत्तरकुरुइ

जंबूद्वीपप्र० समुपज्जंति तं पम्हगंधा १ मियगंधा २ अममा ३ असिहा ४ तेतली ५ मणिचारी ६ कहिणं भंते उत्तरकु

१९५ जमगनामाबेइंपर्वतकह्या नीलवंतवर्षधर पर्वतथकी दक्षिणनीदिसइं आठसैंचोत्रीसयोजनऊपरिए

राए जमगानामंदुवेपव्वयापण्णत्ता नीलवंतस्सवासहरपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ अट्ठचोत्तीसेजोयणस

कयोजनसात्त्रभागीयाआरसागनीमर्यादाइं सीतामोटीनदीना बेइंकूलनइंविषइं तेठामिंउत्तरकुरा ना

एचत्तारियसत्तभागेजोयणस्सअबाहाए सीयाएमहानईएउभओकूलेइत्थणंउत्तरकुराएजमा

जमकनामिंबेइंपर्वत एकसहस्रयोजन ऊंचपणइंछइं अढीसइं योजनऊंडपणिंछइं मूलिएकेकेकुंसह

कह्यातेकेहाछइं

गानामंदुवेपव्वया प० जोयणसहस्संउड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइंजोयणसयाइंउव्वेहेणंमूले

सयोजन लांबपणिपहुलपणइंछइं मध्यविचें साडासातसइंयोजन पहुलपणिं छैं उपरिपांचसेंयोजन लांबपणि

एक्कमेगंजोयणसहस्संआयामविक्खंभेणंमज्झेअद्धट्ठमाइंजोयणसयाइंविक्खंभेणंउवरिंपंचजोयणसयं

पहुलपणिं छइं मूलिंत्रणिसहस्रयोजन एकसोबासठियोजनकांइंक विशेषाधिक एतलीपरिधिनोविस्तार आवीरचिक्षइंक स्योविस्तारएहनो

इंआयामविक्खंभेणंमूलेतिण्णिजोयणसहस्साइंएगंचबावट्ठंजोयणसयंकिंचिविसेसाहियपरिक्खेवेणं १९५

मध्यभागबेइंसहस्रयोजन त्रणिसइंबहूत्तरयोजन कांइंक विशेषन्यूनपरिखेपकहेंवो उपरिपनरसें एक्यासीयोजन नउपरइं

णं मज्झेदोजोयणसहस्साइं तिण्णियबावत्तरेजोयणसएकिंचिविसेसूणेपरिक्खेवेणं उवरिंपनरसएक्का २

कांइंकविशेषाधिकपरिखेप रधि बीतराणेकहीमूलइंविस्तीर्णछइं मध्येसंकोर्णछइं उपरिंपातलुछइं जमगसंस्थानइंछइं

सीएजोयणसएकिंचिविसेसाहियपरिक्खेवेणंपण्णत्तामूलेविच्छिण्णामज्झेसंखित्ताउप्पिंतणुयाजमगसंठाणसं

सर्वसुवर्णमइंछइं निर्मलछैं सुकमाल प्रासादिया रूपट प्रत्येक २ पद्मवरवेदिकाइंपरिवेष्टितछइं वर्णनतिमजंबूइंपर्वत

ठाणसंठियासव्वकणगामया अच्छासण्हाजावपडिरूवा पत्तेयं २ पउमवरवेइयापरिक्खित्ता वण्णओ

नोकरवो तेजमगपर्वतनिंउपरइं घणोसमोरमणीकभूमिभाग वीतरागेकह्यो तेहनोवर्णनकरवो जिमजगतीनोमत्रपणोकहेंवोछैं तसइंसेघणुं

तेसिणंजमगपव्वयाणंउप्पिंबहुसमरमणिज्जेभूमिभागेपण्णत्तेवण्णओजावआसयंतीतेसिणंबहु

समरमणीकसौमनाग तेहनेंघणुंछेंमध्यदेसभागें प्रत्येक २ प्रासादवतंसककहेंवा तेप्रसादावतंसक बासठियोजननइं

समरमणिज्जाणंभूमिभागाणंबहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ पासायवडिंसगापण्णत्तातेणं पासायवडिंसा

नउंचोऊंचपणेंछइं एकत्रीसयोजनउपरिएककोसपहुलपणेंछइं ऊंचानीकजतांशिखरछइंजेहनारवर्णनइंज प्रासादनोभूमिभाग उल्लोचनोवर्ण

गाबावट्ठिंजोयणाइंअद्धंउच्चत्तेणंएकतीसंचजोयणाइंकोसंचविक्खंभेणंअब्भुग्गयमूसियपहसिया इव

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जीवाभिगमः १७६

नकरवो बइंयोजननीमणिपीठ रूपरिसिंहासनसपरिवारजोणवोजोजाइंफूलनीमाल तेस्यामाटइंइंसगवनजमक
कालइं जा विजामाहिर ल्याञ्जइं

णजहोयादोजोयणयमणिपीढयाउं उवसंहासणंसपरिवारजावदामचिठंती सेकेणठेणंजावा

पर्वतकहीइं गोतम जमकपर्वतनेविषइं तत्र२ दसे२ तेह२ घणी२ नान्हीवाविजोजाइंबिलनी

वंबुवइजमगापव्वया२गो जमगासूलंपवएसुतत्थदेसेरतहिंवरबकुवेसुखुड्डाखुड्डियावावीसुजावविलपं

पंक्तितेनाखीषकीनान्हीवाविजावबलपंतियास

घणा२उत्पलज्यांघणा२सतपत्रयम
कपत्तनामिंग्राकनविशेषबइं

तीयासुतासुलंखुड्डियाखुड्डियासुजावबलपंतियासुबहूहिउप्पलाइंजावसहस्सपत्ताइंजमगप्पभा

तेहनीप्रभातेवर्णतेहनेंआकारेंबइं तथावलीविसेषकहेंबइं तिहांयम पमताग्राउछानाजोगवनार तेहनें
कपर्वतनास्वामीबइंदेवतामहर्धिकमोटीरूढिनाधणीजोजाइं पल्यो तिहांप्रत्येकं२एदुवाबेदेव तोवसें

इं जमगावण्णेइंजमगाइंब्दोदोवामहिड्ढियाजावपलिओवमठितीयापरिवसंतितेणंतेसिंपत्तेयंचउ

बइंतेहनेंतिहांप्रत्येकं२च्यारसहेंससामानिकदेवता जमगपर्वतनेविषइं तेजमगनामा वाणव्यंतरनातेहना
च्यारग्रग्रमहीषीसोलसहस्रआत्मरक्षकदेवा जोलगे राजधानीनइंविषइं अनेराघणा देवता

ण्हसामाणियसाहस्सीणंजावजमगाणंपव्वयाजमगाणयरायहाणीणंअण्णेसिंचबहूणंवाणमंत

तथादेवीना अधीपतिपणोपाजतो तेस्यामाटेंहेगोतमइंम यमकवर्णउत्सवादिबइं तेमा
नोनो धकांविचरइं बइं. कह्या हेंयमकपर्वतकहीइं

राणंदेवाणयदेवीणयआहेवच्चंजावविहरंतिसेतेणठेणंगोतमएवंवुच्चइजमगपव्वयाअदुत्तरंच १७६

तथाअनेरोव गोय यमकनाम किहांसगवनयमकदे यमकनामेंराजधानीवीतरागेकह्या गोतम जमकपर्वतथकी
तरकहेंबइं मा सास्वतोछैं वतानी म

णं गो जावणिच्चाकहिणंभंतेजमगाणंदेवाणंजमगाओनामंरायहाणीओपण्णत्ताओ गो जमगाणंपव्वया

उतरइं तीजाअसंख्याताद्वीपसमुद्रउल्लंघ्यतिक्रमीनइंमेरुकी अनेराजंबूद्वीपनें बारसहस्रयोजनअवगाहीनइं तिहांय
नइं

णं उत्तरेणंतिरियमसंखेज्जेदीवसमुद्देवीतिवइत्ताअण्णंमिजंबूद्दीवेर बारसजोयणसहस्साइंउगा

मकदेवतानी। यमकनामेंराजधानीवीतरागेकहीबइं तेराजधानीबारलाषयोजनप्र जिमविजयदेवताकह्योति
मालकहीबइं मयमकदेवताकह्योबैं

हेत्ता एत्थणंजमगाणंदेवाणंजमगाओनामंरायहाणीओपण्णत्ताओ बारसजोयणसयसहस्साजहाविज

हवेंइहनीवक्तव्यताकहइंबइं २ किहांसगवनउत्तरकुराक्षेत्रनीलवंतद्रहकहेंवाइंबेंतेकेह गोयमा यमकपर्व
वोबइं

यस्सजावमहड्ढीयाजमगादेवा२ कहिणंभंतेउत्तरकुराएनीलवंतदहेनामंदहेपण्णत्ते गो जमगाणं

तथकीदक्षिणसांमो आठसेंचोत्रीसयोजनचमांलउपरि नासातहीयाच्यारसागनीअबाधा सीतामोटीनदिनइं
एकयोजन मर्यादाइं

पव्वयाणंदाहिणेणंअट्ठचउतीसेजोयणसयेचत्तारिसत्तभागेजोयणसअबाहाएसीयाएमहानईए

घणोमध्यदेशसाग तिहांउतरकुरानोनीलवंतनामइंद्रहकहीउ एकसहस्रयोजनलांबपणइंछ पांचसेंयोजनप्र
तेलंअवकासइं तेकेचवोबइंतेकहेंछइं तरदक्षिणइं र्वपश्चिमें

एबहुमज्झदेसभाए एत्थणंउत्तरकुराएनीलवंतदहेनामंदहेपण्णत्ते एगंजोयणसहस्संआयामेणंपंचा

पहिलपणइं छइं । दसयोजन प्रमाण लंबपणो छइं । अछे कहेतां फटिकनी परइं निर्मल सण्ह पुद्गल निःपन्न छइं घोष्ठ्यो छइं सीमा कंघ प्रदेश छइं जाणिवो जगतीनी वेदिकानी परइं निर्मल छइं

जीवाभिगम ज्जोयणसयाय विक्खंभेणं दस ज्जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामए कूले चउक्कोणे समतीरे जाव पा

छइं पासे पद्मवरवेदिकाइं करीयु दोइ पासे वणसंडइं विंटिउ छइं २ समचउरंस चौखूणे परिक्षिप्त छइं वेदिका वनखंड वेदिका वर्णनो

१५७

डिरूवे उभयो पासे दोहिं पउमवरवेइयाहिं वणसंडेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि

नीलवंतद्रहनइं तिहां जालगनें घणा जघ ... प्रतिरूपक छइं तेहनो वर्णन पद्मावलीपरइं जालगनें तोरणवर्णन करवो

वण्णओ नीलवंतद्दहस्सणं दहस्स तत्थ जाव बहवे तिसोमाणपडिरूवगा पं वण्णओ तोरणाणिय छत्ता

नीलवंतद्रहनइं घणो २ मध्यदेसभाग तिहां मोटो एक पद्मकमल कह्यो तेकमल योजन लांब पहुलपणइं पिहु

ल्लारणइंयत्ति नीलवंतद्दहस्सणं दहस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगे महं पउमे पण्णत्ते जोयणं आ

लपणइं छइं तेत्रिगुणो एतले त्रणि योजन परिधि छइं अर्द्धयोजन जाडपणे छइं दसयोजन ऊंडपणइं छइं बे कोस पाणी ऊ

यामविक्खंभेणं तं तिउणं सविसेसं परिक्खेवेणं अद्धजोयणं बाहल्लेणं दसजोयणाइं उव्वेहेणं दो को

कोसं ऊंचो छइं एतले कांइंक अधिक दस योजन सर्वाग्र कहीइ तेकमलनो एहवो एतादृशरूप स्वरूपवर्णक विशेष आवीतरागे

से ऊसीए जलंताओ साइरेगाइं दसजोयणाइं सव्वग्गेणं पं तस्सणं पउमस्स अयमेयारूवे वण्णावा १५७

कहीइ तेकहेछइ वज्रमेंमूल छइं रिष्टरत्नमइं कांदो छइं वैडूर्यरत्नमइं नालि छइं वैडूर्यरत्नमइं बाहिरली पांखडी छइं जंबूनद स्वर्ण

सेपण्णत्ते तं वयरामया मूला रिट्ठामए कंदे वेरुलियामए नाले वेरुलिया बाहिरपत्ता जं

मइं मांहिली पांखडी छइं तपनीयमइं केसरा छइं सोनामइं कर्णिका छइं अनेक मणि पिंगुरकरस बुकामलका कहीनानी कलसा

बूणयामया अब्भिंतरापत्ता तवणिज्जमया केसरा कणगामई कण्णिया नाणामणिमया पुक्खरत्थि

भूग्रा छइं तेकर्णिका अर्द्धयोजन लांब पहुलपणइं पहिलपणे छइं तेत्रिगुणी सविशेष परिधि छइं एककोस जाडपणइं छइं

भुगा साणं कण्णिया अद्धजोयणं आयामविक्खंभेणं तं तिउणं सविसेसं परिक्खेवेणं कोसं बाहल्लेणं

सर्वकनकमइं स्वच्छ छइं जहनुं पुद्गल निःपन्न जालगनें प्रतिरूप छइं परइं घणो समोरमणीक भूमिभाग क... आरे कहेवो ९ तेकर्णिकाने ऊपरइं

सव्वकणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा तीसेणं कण्णियाए उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभा

गे तेघणो समोरमणिक भूमिभाग नइं घणो २ देसभाग घणो मध्यदेसभाग तिहां मोटो एक भवन घर कहीइ आवीतरागइं

गे पण्णत्ते तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स देसभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगेणं महं भवणे पं

कोस १ लांबपणइं अर्द्धकोस पहुलपणे छइं कांइंक ऊंणो कोस ऊंचो उंच पणइं छइं अनेकथंभ सहित छइं सौधर्मसभानी परइं सर्व कहिवुं जालगनें सूक्ष्म ... इति

कोसं च आयामेणं अद्धकोसं च विक्खंभेणं देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठं सवण्णं

तेसवननइंसगव्न आलिदिसइंबारणांकहीयांबइं तेकेहा पूर्वनोद्वार १ दक्षिण २ उत्तर ३ तेद्वारकेहवाछइं

तस्सणंलवणसितिसणंलवणस्सतिदिसंततोदारगापन्नत्ता तेपुरच्छिमेणंदाहिणेणंउतरेणंतस्सणंदार

पांचसेंधनुषऊंचावंचपणइंछइं अढीसइंधनुषपहिंलपणइंछइं तेतलोप्रवेशपणिछइं स्वेतवरप्रधांनकनकनी

स्सपंचधणुसयाइंउड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाधणुसयाइंविक्खंभेणंतावइयंचेवपवेसेणं सेयावरकं

रूपकासिषरछइं जांलगइंवनमालानीपरइंजांणवुं तेसवननोवलीविजयद्वारनीपरइं समोरमणीकभूमिभाग कहेछे तेजिम तेसवननोमध्यघणो

णगथूभियागजाववणमालाओतीतस्सणंलवणस्सअंतोबहुसमरमणिज्जेभूमिभागेपन्नत्तेसेजह

कोईदृष्टांत मादलनोपुडोजेहवो मांलगेंमणीनागंधफरस वर्णनपाछलीपरेंकीजें तेघणोसमोरमणिक भूमिभागनइं घणोमध्यदेसभाग तिहांमोटीए

हानामए आलिंगपुक्खरेइवाजावमणीणंवन्नओतस्सणंबहुसमरमणिज्जस्सभूमिभागस्सबहुमज्झदे

कमणिपीठकाकहीतेके वलीछइं पांचसेंधनुषलांबपणइंपहिंलपणइंछइं अढीसेंधनुषजाडपणइं मर्वमणिमइंछइं

सभाए एत्थणंमणिपीढीयापन्नत्ता पंचधणुसयाइंविक्खंभेणंअड्ढाइज्जाइंधणुसयाइंबाहल्लेणंसव्वम

तेमणिपीठकानइंउपरइं तिहांमोटीएकदेवतानीशय्याकही देवसय्यानोवर्णनपाछलीपरेंकरवोतेउपरअवें

णीमयातीसेणंमणिपेढियाए उवरिएत्थणंएगेमहंदेवसयणिज्जेदेवसयणिज्जस्सवण्णओसेणंपु

अनेएकएकसोआठ रत्नकमलपदमअष्टमांणछलीआइ माझाइं सघलइंकमलफेरवेष्टितछइं तेपदमकेहवाछे आईयोजनलांबपणइंपिहुल पणइंछइं

मेंअट्ठेणंअट्ठसएणंतदद्धुच्चत्तपमाणमित्ताणंसव्वओसमंतासंपरिक्खित्तेतेणंपउमाअद्धजोयणंआया

तेथकीत्रिगुणीपरधिछइं एककोसनोजाडपणोछइं दसयोजननोऊंडपणो छइं कोसएकपांणीथकीऊंचोछइं कोइंकच्छ मिकरस

मविक्खंभेणंतंतिगुणंसविसेसंपरिक्खेवेणंकोसंबाहल्लेणंदसजोयणंउव्वेहेणंकोसंऊसियाजलं

योजन सर्वाग्रइंकह्या तेकमलनोएहवो एतादृशरूपवर्णवासआदीनसगइंकह्योछइं तेकमलमइंमूलछइं

ताउंसाइरेगाइंदसजोयणाइंसव्वग्गेणंपन्नत्ताइंतेसिणंपउमाणंअयमेयारूवेवण्णावासेपं तंवइरामया

अनेकमणिमइंबीजनाप्रदेशछइं तेकर्णिकाकेहवीछइं एककोसलांबपणें पहिंलपणइंछें तेत्रिगुणीपरधिछें

यामूलानाणामणिमयापुक्खलत्थिभगाणाउणंकण्णियाओकोसंआयामविक्खंभेणंतंतिगुणंपरिक्खेवे

आईकोसजाडपणइंछइं सर्वसोवर्णमइं अछनिर्मलछइं इत्यादिक जांलगेंप्रतिरूपछेंमा स्वानपाछलीपरइं तेकर्णिकानइंउपरइं घणोसमोरमणीकभूमि

णंअद्धकोसंबाहल्लेणंसव्वकणगामईओअच्छाओजावपडिरूवाओतस्सणंकण्णियाणंउप्पिंबहुसमरमणि

भागकहिउं जांलगइंमणीसोवर्णगंधफरससर्वपाछलीपरइंजांणवो तेकमलथकीचोषके रनीदिसें उत्तरपूर्वइंसांनकूंणिनी दिसइं तिहांनीलवंतद्रहकुंमा

ज्जेभूमिभागेपं जावमणीणंवण्णोगंधेफासोतस्सणंपउमस्सअवरुत्तरेणंउत्तरपुरच्छिमेणंएत्थणंणीलं

रदेवतानां आरसहेंससामानिकदेवतानां च्यारसहसकमलवीनरागेक लो इमसर्वपरिवार पूर्वदिसे च्यार अग्रमहिषीनां च्यारसिंहासनइमसं घलोपरिवारवित

वंतद्दहकुमारस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि पउमसाहस्सीओ पं० एवं सव्वो परिवारो णवरं पउ

यदेवतानी परं णवरं एतलो विशेष सिंहासनसोनामइ तेकिहा त्रणि वलय मांहिं लोबीटयो १ मध्यम वलये २ बाहिरलो कमलकहें वाते पदमकमलम्हलागपुर्वेअनेरापदमपरित्र लिव लो बीटयोछइ

माणं तांणि परिक्खेवा से णं पउमे अन्नेहिं तिहिं पउमपरिक्खेवेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते तं अब्भिंतरएणं मज्झिमएणं

वलय १ मांहिलइं पदमनें वलयें बत्रीसलाषकमलवीतरागे कह्या मांहेली पदमनि परिखेपइं च्यालीसलाष

बाहिरेणं अब्भिंतरएणं पउमवरपरिक्खेवे बत्तीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमएणं पउमपरिक्खेवेणं

कमलवी तरागे कह्या बाहिरलो पदमपरिखेपें तिहांअडतालीसलाषकमलवीतरागें कहीउं इमएणें मेलें

चत्तालीसं पउमसयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरिएणं पउमवरक्खेवेणं अडयालीसं पउमसयसाहस्सीओ प-

समुर्वापरइं एककोडिपदमचपरइं वीसलाषकमलहुइं इमतिर्थंकरेकहिउं तेकिमतगवनइंमकहिउं

ण्णत्ताओ एवामेव सपुव्वावरेणं एगा पउमकोडी वीसं च पउमसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं से केणट्ठेणं भंते एवं

नीलवंतदहतेस्या मारें कहिउं गोयमा नीलवंतदहनइं तिहां पासइं २ अनेकसत्र अनेकगाइं सहसपत्र नीलवंत

वुच्चइ णीलवंतद्दहे णीलवंतद्दहे गो० णीलवंतद्दहे णं तत्थ तत्थ जाव उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं णीलवं १५५

नीवत्ताइं नीलवंतनी जेहवर्णछइ तथा नीलवंतदहनें मांहिं नागकुमारदेवता महर्द्धिक वसइछइ तेस्या माटइं गोयमा जे नीलवंतदह कह्यो

तप्पभाइं नीलवंततवण्णाभाइं नीलवंतद्दहकुमारे देवे महिड्ढीए परिवसइ से तेणट्ठेणं गो० जाव नीलवंत

तेनीलवंतदेवतानी राजधानी पाछिलाअजानी परइं कहेवा नीलवंतदहथकी पूर्वपश्चिमइं दूरी दसदसयोजननी अबाधनी परइं

दहे णीलवंतस णं देवस्स रायहांणी पुच्छा लिलाविणं नेयावा नीलवंतदहसे णं पुरच्छिमेणं दस २ जोय

धाइं मर्यादाइं तिहां दस २ कांचनपर्वतइं उत्तरइ छिलअे णिकह्या ते कंचनपर्वत एकसोयोजनऊंचोउंचपणइं छइ पचवीस २

णाइं अबाहाए एत्थ णं दस २ कंचणपव्वया पं० ते णं कंचणपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण

योजनऊंडाऊंडपणइंछइ मूलें सोयोजन विस्कंभ छइ मध्य पचनइ पंच्योतरयोजन लांब पहुलपणइंछइ

वीसं २ जोयणाइं उव्वेहेणं मूले एगमेगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्झे पण्णत्तरिं जोयणाइं आयामविक्खं

उपरिपांचसें जोजनपहुलपणैं छैं हवेपरधि मूलें त्रिणसइंसोल योजन कोइकविशेषाधिक परिधिकही कहैछइ

भेणं उवरिं पण्णासं जोयणाय विक्खंभेणं मूले तिण्णि सोले जोयणसयाए किंचिविसेसाहिया परि

मध्यकिंचिविसइंसतावीस २२७ योजन कांइकविशेषाधिकपरधिकही उपरिअठावनसइंयोजनविस्कंतपिहुल

क्खेवेणं मज्झे दोन्नि सत्ततीसे जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं उवरिं एगं अट्ठावण्णं जोयणस

ज्ञिवालिगम: २००

वलींछइ कंचनपर्वतनीएतलीपरिधिकही मूलेविस्तीर्णछैंसो योजनमाटे मध्यविस्तीर्णछइपंचोतरमाटइ उपरियानजोछैपंचासयोजनमाटै गायनापुछनइंसंस्थानइछइ
यंविक्खंभेणं किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं मूलेविच्छिन्ना मज्झेसंखित्ता उप्पिंतणुया गो पुच्छसंठाण
सर्वसोवर्णमयछइ निर्मलछैफटिकनी प्रत्येकेंर वनखंडवेष्टितछइ तेकांचनकपर्वतनइउपरइ घणोसमोरमणीकभूमिभागकह्यो
संठिया सव्वकंचणमया अच्छा पत्तेयं २ वणसंडपरिक्खित्ता तेसिणं कंचणगपव्वयाणं उप्पिंबहुसमर
जांजाइंदेवदेवीरमइछइत्यइ रमइछइ क्रीडा करैं तेकांचनपर्वतइ प्रत्येकेंर प्रासादावतंसक कह्याते प्रासादावतंसक केचढाछैकोसऊंचा साढियोजनलांबपणइछइ एकत्रीसियोजनउपरि
मणिज्झिलाभमलाणो जाव आसयंती पत्तेयं २ पासायवडिंसगा सक्कोसाइं बावट्ठिजोयणाइं आयामो
अर्द्धकोसपिहुलपणइछइ तेहमांमणिपीठकाछइयोजननीछैं सिंहासनसपरिवारकहेवा तेस्यामाटेंगौतम
णं एकतीसं जोयणाइं अद्धकोसं च विक्खंभेणं मणिपीढिया दोजोयणाया सीहासणं सिपरिवारा
इमकहीइं कंचनपर्वतमाटइं गौतम कांचनपर्वतनइविषइं तेह तिहां २ वाविनेंविषइं घणार उत्पलजाउस इंकांचन
सेतेणट्ठेणं गो एवं वुच्चइ कंचणगपव्वया गो कंचणएसुणं पव्वएसु तत्थ २ वावीउप्पलाइं जाव कं
वरणक कंचननामइदेवता महर्द्धिकजावजगैवसैंछइ कंचनपर्वतथकीउत्तरइं कांचननामइराजधांनीअनेरइं जंबूद्वीपइं ह्या
चणवण्णाइं कंचणगा जाव देवा महड्ढिया जाव विहरंती उत्तरेणं कंचणगाणं कंचणगाउ राय

२००

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

तिमजविजयराजधानीनीपरइंसर्व कहइंवो किमभगवनजंबूद्वीपइं उतरकुरावेत्रेउत्तरकुरुद्रहकह्यो गोयमा
हाणीउ अण्णंमि जंबुद्दीवे २ तहेव सव्वं भाणियव्वं कहणं भंते जंबुद्दीवे २ उत्तरकुराए उत्तरकुरुदहे पं
नीलवंतद्रहथकीदक्षिणें आठसेंचोत्रीसयोजनउपरिएकनासातह्मीयाभ्यारगेइम सघलोअमलावाकरहेवा जोनीलवंतद्रहकहियो तिमजद्र ने
गो नीलवंतस्स दाहिणेणं अट्ठचोत्तीसे जोयणसए एवं सोचेव गमो नेयव्वो जाव नीलवंतदहस्स तं
नोमइदेवतातिमजकहेवा सर्वनीराजधानी सर्वदिसइं कंचनपर्वतदिस २ कहेवाप्रमोणतिमजइहांकहेवा द्रहनाएकज नोमकहेवा एहनी
चेव सव्वं संसरस दहसरस नामया देवा सव्वेसिं उत्तरपच्छिमेणं कंचणगपव्वया दस एकप्पमाणा उत्तरं
राजधांनी अनेरोजंबूद्वी पछइं इमभालवंतद्रहमालवंतदेवतातेहनीराजधानीइम एकेकेसचैकहेवाहवैजंबूपीठनीवक्तव्यताकहेछै किहां भगवनउतरकुराइंजंबूपीठनामापीठ किहां कह्यो
णं रायहाणीए अण्णंमि जंबुद्दीवे एवं मालवंतद्दहे एवं एक्केक्का णायव्वा कहणं भंते उत्तरकुराए जंबु
हेगौतम जंबूद्वीपें मेरुपर्वतथकीउत्तरपूर्वविदिस्इं नइरुणइ नीलवंतवषारापर्वतथकी
पीढेणामं पीढे पण्णत्ते गो जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं नीलवंतस्स वासहरपव्वय
दक्षिणदिसिं मालवंतवषारपर्वतथकी पश्चिमनिदिसिसंधमादिन वषारापवर्तथकी पूर्वनीदिसि
स्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं

डिवाप्तिाम:
१०१

सीतामोटीनदीनी पूर्वनइं कांठइं । तिहां तेणि उत्तरकुराइं जंबूपीठ नामिं पीठ कह्यो तेपांचसें जोजन लांबपणि

सीयाए महानईए पुरत्थिमिल्ले कूले एत्थ णं उत्तरकुराए जंबूपीढे नामं पीढे पण्णत्ते पंच जोयणसयाइं ।

लंबपहुलपणइं छइं पनरसें एकासी जोजन कांइंक एक विसेषाधिक झाझो परधि । तेहनइं घणो मध्यदेसभागें

आयामविक्खंभेणं पण्णरस एक्कासीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं तस्स णं बहुमज्झ

बारयोजन बाहुलपणइं तिवार पछी मात्राइं २ प्रदेस २ ते ओछा थाइं छइं सर्वनें छेहडें

देसभाए बारसजोयणाइं बाहल्लेणं तयाणंतरं च णं मायाए २ पएसपरिहाणीए २ सव्वेसु चरमंतेसु

सर्वजंबूनंदमें निर्मल वेस सवेई जोगजोग रूप तेजंबूपीठना एक पदमवर वेदकाइं एकेक वनखंडें सघलें चोफेर वेष्टित छइं
बेंसर्व पाछली परि कहवुं

पं सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता

वरणन तिमज वेदका वनखंडनुं वर्णन करवुं तेजंबूपीठनिं च्यार दिसिं त्रिसोपान कह्या तिमज पाछली परिं जो लगें छत्र
उपरि छत्र

संपरिखित्ता वण्णओ तस्स णं जंबूपेढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता तहेव जाव

जां तोरण लगें तेजंबूपीठनउ परि घणुं समभूरमणी कभूमिभाग कह्यो तिमज पछइ तइं मादजनूं पहुं जे हवुं
कहवुं

ताइ वेत्ता जाव तोरणा तस्स णं जंबूपेढस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहानामए आ १०१

जेजंबूनयामयं जंबूपेढं उत्तरकुराए सीयाए पवहे पंचसय आयाम विखंभं १ पनरस एकासी एसाहइ परिहमज्झ बाहल्लं जो
यण डुन्ना कम सो हाय तितेसो दो कोसा २

लिंग मणिमय सर्व छइं तेघणुं समरमणिक भूमिभागनइं घणुं मध्यदेस भागें तिहां मोटी एक मणिपीठ

लिंग पुक्खरेति वा जाव मणिमये तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगा म

का कहीं तेकेहवी छइं आठयोजन लांबपणें पहुलपणइं छइं च्यार योजन बाहुलपणि छइं सर्वमणिमें अतिउज्जल
स्वर्ण छइं

हं मणिपेढियाए पं अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा स

जां प्रतिरूपादिक आरपद तेमणिपीठकानें उपरि तेह मोटो एक जंबूवृक्ष रत्नमय छइं आठयोजन उंचपणो छइं बेयोजन लगें

ण्हा जाव पडिरूवा तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महं जंबूसुदंसणा पं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्ते

भूमिदेशें छइं आठ जोजन विखंभपणि छइं योजननी उंचीनी कतीसपा छइं तेह घणो मध्यदेसभागइं आठ जोजन निविखंभ छइं

णं दो जोयणाइं उव्वेहेणं दो जोयणाइं खंधो अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं छ जोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जो

कांइंक आठजोजन उर्ध्व आठ धनी यगसर्वांग कह्यो वज्रमय मूल छइं रूपामें उंचीनी कली त्रिप्रसाखा छइं इसें सरूपना वर्णन
करवउं

यणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता वइरामयमूला रययसुपइट्ठियविडिमा

जां लगि प्रतिरूपादि आरपद तेजंबूसरस्वनाइं च्यार दिसिं च्यार साखा सोज्ञाति मुलइ च्यखंजाति पूर्वसाखा १ दक्षिणइ कसाखा २
रूपामे प्रथम

एवं चेइयरुक्खवण्णओ जाव पडिरूवा जंबूए णं सुदंसणाए चउद्दिसिं चत्तारि साला पं तं पुरत्थिमेणं द

जीवाभिगम
२०२

पश्चिमइ एक साषा उत्तरै एक साषा तिहां जेते पूर्वनी साषा तिहां मोटो एक भवन कह्यो एक कोस लांबपणो छइ

रिकुलेणं पुरच्छिमेणं उत्तरेणं तत्थणं जेसे पुरच्छिमिल्ले साले एत्थणं एगे महं भवणे पं कोसं आयामेणं

अर्ध कोस पहुलपणे कांइक ऊणो कोस उंचो उंचपणे छइ अनेक थांभा सहैस सहित वर्णन जोवा इ सघन द्वारनउ करवो

अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णओ जाव भवणस्स दारं

तिम ज प्रमाण जो लावो पांचसै धनुष ऊंचो उंचपणे छइ अढीसै धनुष पिहुलपणे छइ सो जेतां वर्णन माला नो कीधो छइ सो कहवो

णं तं चेव पमाणं पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं जाव वणमालाउ

कहैवो भूमिभाग उल्लोच तिम जपा बलीपरे मणिपीठ कां पांचसै धनुष ऊंची उंचपणइ छइ देवछंदा नो वर्णन तिम ज पाछली परइ तिहां जेते दषिणनी साषा छइ

भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पंचधणुसइय देवसयणिज्जं भाणियव्वं तत्थणं जेसे दाहिणिल्ले साला

तिहां एक मोटो प्रासाद वतंसक कहिउ ते केवडो छइ एक कोस ऊंचो उंचपणइ छइ अरध कोस आयाम विस्तरे सपणइ विष्कंभपणे छइ अब्भुग्गय देश उल्लोच सहित वर्णन कहेवो

ए एत्थणं एगे महं पासायवडिंसए पं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धकोसं आयामविक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियं

पाहैंस मीरमणी भूघणो भूमिभाग तेघणो समो रमणीक भूमिभाग घणो मध्य देश भाग तिहां सिंहासन परिवार उल्लोच वर्णन

अंतो बहुसमरमणिज्जं उल्लोया तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स बहुमज्झदेसभाए सीहासणं सपरि २०२

सहित वषाणइ तिहां जेते पश्चिमनी साषा छइ तिहां मोटो एक प्रासादवतंसक कहिउ तिम ज सिंहासन सपरिवार कहिवो

वारं भाणियव्वं तत्थणं जेसे पच्छिमिल्ले साले एत्थणं एगे महं पासायवडिंसए पं तं चेव पमाणं तहेव

तिहां जेते उत्तरनी साषा छइ तिहां एक मोटो सिद्धायतन कहेवो एक कोस लांबपणइ अर्धकोस बाहुल्यपणइ

सिंहासना सपरिवारा तत्थणं जेसे उत्तरिल्ले साले एत्थणं एगे महं सिद्धाययणे पणत्ते कोसं आया-

कोस कांइक ऊणो उंचो उंचपणै छै अनेक थांभा सहित थापित छइ पाछली परइ तेहनइ त्रणि दिसइ त्रणि द्वार छइ पांचसै धनुष ऊंचो उंचपणे

मेणं अद्धकोसं विक्खंभेणं देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठं वण्णओ तिदिसि

छइ अढीसै धनुष पिहुलपणे छइ मणिपीठका पांचसइ धनुष ऊंची छइ देवछंदा नो वरणक करवो पांचसै ध-

तओ दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं मणिपेढिया पंचधणुस

नुष विस्तरेपणइ कांइक अधिक पांचसइ धनुष ऊंचो उंचपणे छइ तिहां मोटो एक छंदो तिहां एक सो आठ जि-

याइं देवच्छंदए पंचधणुसयं विक्खंभेणं साइरेगपंचधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं तत्थणं देवच्छंदए अट्ठ

न प्रतिमा पांचसइ धनुष ऊंची इम सघली सिद्धायतननी वक्तव्यता कहेवी जां लगै धूपणा करइ तेहनी अनंत आका

सयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणेणं एवं सिद्धाययणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव धूवकडुच्छुआ

डिंवाविराम:
२०३

सोलसेहजारनेकरीउपसोभताछेइंमध्यमंगलीकछत्रचामरकलसभंगोरीप्रमुख बारपद्मवरवेदिकाइंसघलेंवी
लीइंसादिसजोनानेपगरणरत्नमेंछेसर्वविजयाएजधानीनीपरेंकहेंवुजंबूसुदर्शन
नोम
छेकरवेष्टितछइं
या अग्गमहिसीणं सोलसविदेहरियणीहिं नवसोलया जंबूसुदंसणाणं मूले बारसपउमवरवेइयाहिंस
परिक्षिप्त परि तेपद्मवरवेदिकाअंचीवंचपणींच्याछयोजनछइं पांचसेंधनुषविस्कंभपिहुलपणोंछइं
व्वओसमंता संपरिखित्ताताओणंपउमवरवेइयाओ अद्धजोयणं उद्धंउच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं
तेजंबूवृक्षदर्शनाथइइं अनेराबीजाएकसोआठजंबूवृक्षतेथकी सघलेवीष फेरफिरताछइं तेजंबूस्यारयो
रईथमोलमाथाइं
णं पण्णत्ते जंबूणं सुदंसणा अण्णेणं अट्ठसएणं जंबूणं तदद्धच्चप्पमाणमित्ताणं सव्वओसमंता संपरिखित्ता
जऊंचो ऊंचपणइं कोस१उपणों योजननोथकइं जेहनोकोसविस्कंभपणइं त्रणियोजननीसा तेहनोघ
षाछइं
णं जंबूणं तेसिणं चत्तारिजोयणाइं उद्धंउच्चत्तेणं कोसंचउव्वेहेणं जोयणं खंधेकोसंविक्खंभेणं तिन्निजोय
णोमधलताए आरयोजनविखंभपणइंपिहुलपणोंछइं कोइंकअधिकोंआरयो सर्वविस्तारक चल्लमइंमइउवें
जन सो
णाइं विडिमाबहुमज्झदेसभाए चत्तारिजोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं चत्तारिजोयणाइं सव्वग्गे
तिमजपूर्वनीपरेंवर्णनचेसम्हरूनीप जंबूवृक्षदर्शनथकीअपरउत्तरपूर्व लिदिसें तिहांअनादृतदेवता जंबूद्वीप
रेंजंबूपेढथकीअईथमाणछइं नुतरइंइंसामनकंणिआदि त्र
ना
णं वइरामयमूलासोचेववचेइयरुक्खवण्णओ जंबूएणं सुदंसणाए अवरुत्तरेणं उत्तरेणं अणाढि

२०३

आरसहेंससामानसदेव आरसहसजंबूपीढकहाथ्यावी२ जंबूवृक्षदर्शनाथकीपूर्वइं तिहांअनादृतदेवनइं
ना तरोनइं
यस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारिजंबूसाहस्सीओ पण्णत्ताओ जंबूसुदंसणए पुरच्छिमेणं अग्गिणं
आरअग्रमहिषीना आरजंबूपीढकहा इंमसपरिवारसहितसघलाजंबूपेढसिंहासननीपरइं जेतलाआतमर
कहेंवा जंबूवृक्षना
षाक
अणाढियदेवस्स चउण्हं अग्गमहीसीणं चत्तारिजंबूओ पण्णत्ताए एवंसपरिवारोसव्वोनेयव्वो जंबूणंजा
तेतलाजंबूवृक्ष जंबूवृक्षदर्शी त्रणिसइंयोजननांत्रणिवन संपरिक्षितपरिवेष्टित तेकिम पहेलोव
देवा नानइं थकसघलइंचोष फेर छइं नएक
वआयरक्खाणं जंबूएणं सुदंसणे तिहिंजोयणसएहिं वणसंडेहिं सव्वओसमंता संपरिखित्ता तंपढमे
सोनो बीजोवनएकसोनाजंबूदर्शीना पहिलोवन पंचासयोजनअ तिहांमाटोएकभवनघणोक
थकीथरवइं षेड गाहीनइं
णं दोच्चेणं जंबूए सुदंसणाए पुरच्छिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं जोयणाइं उग्गाहेत्ता एत्थणं एगेमहंभव
लो पावलीपरेंकहिउते सरषामानव आंजाओदिसथ्यासोजगाइं इमदक्षिणपश्चिमदि उत्तरदिसें जंबूसुदर्शन
ए सर्वआख्यान कहेवुं कहेंनी मइं कहेंवो थकी
णे पण्णत्ते पुरच्छिमिल्लभवणसरीसाणायव्वा जावसयणिज्जं एवं दाहिणेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं जंबूए
उत्तरपूर्वइसानकूणें पहिलोवनषेडपंचासयोजन अवगाहीनइंच जइइंतिहांच्यारनंदापुष्करणीकही तेकेही परषा
णं सुदंसणाए उत्तरपुरच्छिमेणं पढमं वणसंडं पण्णासं उग्गाहेत्ता चत्तारिनंदापुक्खरणीओ पण्णत्ता तं

[illegible] २०४

पद्म १ पद्मप्रभा २ कुमुदा ३ कुमुदप्रभा ४ ते नंदापुक्खरणीउ ते नंदापुक्खरणीनो मान कोस एक लांबपणइं अर्द्ध कोस पिहुलपणइं

पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुदप्पभा ताओ णं णंदापुक्खरिणीओ कोसं आयामेणं अद्धकोसं विक्खं-

पांचसें धनुष ऊंडपणइं स्फटिकनी परइं निर्मल सुंहाली सुकुमाल घस्या मठारी निःपंक रजविना जाव पडिरूप जोअवा जोग वर्णन पाछली परिं जाणवा तिहां परिवार वर्णन

भेणं पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिप्पंकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ व-

जाणवुं जाव तोरण लगइ परि कहिवो ते नंदापुक्खरणीनी घणी मध्यभागि तिहां एक मोटो प्रासाद अवतंसक कोस लांबपणो छो अर्द्ध कोस पहुलपणो

ण्णसंडपरिक्खित्ताओ जाव तोरणा भाणियव्वा तस्स णं णंदापुक्खरिणीबहुमज्झदेसभाए एत्थ णं पासायवडिंसए

तिम वर्णन पाछलीपरि कहिवो जाणवो सिंहासन परिवार तिहां जिमे कहिवुं इम दक्षिण पूर्व अग्नि कूणइं पंचास जोजन नुं क्षत्र ते

पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोसं विक्खंभेणं सो चेव से वण्णो जाव सीहासणं सपरिवारं एवं दक्खि-

नंदापुक्खरणी च्यार केही उत्पला १ गुल्मा २ नलिना ३ उत्पलोज्जला ४ तिमज प्रमाण पाछलीनी परि

णपुरच्छिमेणं वि पण्णासं जोयणाइं णंदापुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला

ते हवें तिमज प्रासाद वली तिमज प्रमाणें जोईनें जाणवो इम दक्षिण पश्चिम नैरति कूण पिण पांचसें जोजन ते च्यार नंदापुक्ख-

तं चेव पमाणं तहेव पासायवडिंसओ तप्पमाणो एवं दक्खिणपच्चत्थिमेणं वि पण्णासं जोयणाइं २०४

रणी नाम १ भृंगनिभा २ अंजना ३ कज्जलप्रभा ४ बाकीनुं सर्व पाछली परि तिमज अंबू सुदर्शनाथकी उत्तर पश्चिम मध्यकी वायव्य कूणइं पहिलो वन खंड

भिंगा भिंगणिभा चेव अंजणा कज्जलप्पभा सेसं तहेव जंबूए णं सुदंसणाए उत्तरपुरच्छिमेणं पढमं वण-

पंचास योजन अवगाहीनइं तिहां च्यार नंदापुक्खरणी कही ते केही श्रीकंता १ श्रीमहिता २ श्रीचंद्रा ३ तिमज श्रीनिलया ४ निश्चइं तिमज प्रमाण तिमज प्रासाद अवतंसक कहेवा जंबू सुदर्शनाथकी पूर्वदिसिना भवनथकी

संडं पण्णासं जोयणाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव

तह य सिरिणिलया तं चेव पमाणं तहेव पासायवडिंसओ जंबूए णं सुदंसणाए पुरच्छिमिल्लस्स भ-

उत्तरइं ईशान कूणना प्रासाद अवतंसकथकी दक्षिणनी दिसें तिहां मोटो एक कूट कह्यो आठ योजन ऊंचो ऊंचपणें

वणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमिल्लस्स पासायवडिंसगस्स दाहिणेणं एत्थ णं एगे महं कूडे पण्णत्ते अ-

छे मूलें बार योजन विस्तार छे मध्य विचि आठ योजन विस्तार उपरि च्यार योजन लांबपणें पिहुलपणें विस्तार

ट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोयणाइं विक्खंभेणं मज्झे अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभे-

मूलइं कांइंक अधिक सात्रीस योजन परिधि कही मध्य विचइं कांइंक अधिक पचवीस योजननी परिधि कहि उपरि कांइंक अधिक

णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेणं मूले साइरेगाइं सत्ततीसं जोयणाइं परिक्खेवेणं

चारयोजननी कूटनीपरंधिकहै मूलथकी विस्तीर्ण छै ऊपरियातलो गायनापुब्बनइंसंस्थानइं

मज्झेसाइरेगाइं पणवीसंजोयणाइं परिक्खेवेणं उवरिंसाइरेगाइं बारसजोयणाइं परिक्खेवेणं मूलेवि

सर्वजंबूसंदर्भ इ छइ निर्मलजाबूनदमयेै ब्रत्तिरूपछै एकपद्मवरवेदिका एकच

वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते पमाणं वण्णओ सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे तस्स णं कूडस्स

नखंडइं सघलइं चोपखेरपरिक्षिप्त वेष्टितछइ वेदिकावनखंडनोवर्ण नपावलीपरइंतेकूटनैऊपरइं घणीसमे

एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ तस्स णं कूडस्स उवरिं

रमणीक भूमीभाग कहिउ तिहांदेवताबइसइ रमइ तेघणोसमोरमणिक मइवाम सिद्धायतनएक एककोसप्र

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयंति तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स सिद्धायतणं कोस

इंमसिद्धायतननी वक्तव्यता पावलीपरें तेजंबूसुदर्शनाथ पूर्वइं पूर्वना वनथकीदक्षिणइं पूर्वनाप्रासादवतंसक

पमाणं सव्वा सिद्धायतणवत्तव्वया भाणियव्वा तेणं सुदंसणाए पुरच्छिमस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपुरच्छि

उत्तरइं तेमइ गामइं तिहांएकमोटो कूटकहिउ तिमजप्रमाणसिद्धायतननो पूर्व जेजंबूसुदर्शनाथ दक्षिणना

मिल्लस्स पासायवडिंसगस्स उत्तरेणं एत्थ णं एगे महं कूडे पण्णत्ते तं चेव पमाणं सिद्धायतणं च जंबूए सुदंस

कोपूर्वइं दक्षिणपूर्वविचें अग्निकूणिना प्रासादवतंसक एकमोटोकूटकहिउ तिमजजंबूवृक्षथकीदक्षिणें

णाए दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरच्छिमेणं दाहिणपुरच्छिमस्स पासायवडिंसए पच्चच्छिमेणं एत्थ णं कूडे पण्णत्ते तं चे

तवनथकी पश्चिमें नैरुतिकूणिना प्रासादवतंसकथकी पूर्वदिसैं तिहांमोटोएककूटक जेजंबूवृक्षथकी पश्चि

व जंबूए दाहिणिल्लस्स भवणस्स पच्चच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमिल्लस्स पासायवडिंसगस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं कूडे पण्णत्ते

मनावनथकी दक्षिणदिसिं पश्चिमदिसइं एतलेनैरुतिकूणना प्रासादवतंसकथकी तिहांमोटोएककूटकह्यो

जंबूए पच्चच्छिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपच्चच्छिमिल्लस्स पासायवडिंसगस्स उत्तरेणं एगे महं

तिमजप्रमाणसिद्धायतननो कहेंवो जंबूवृक्षथकी पश्चिमइं वनथकी उत्तरइं वायुकूणिना प्रासादवतंसकथकीदक्षि

कूडे पण्णत्ते तं चेव पमाणं सिद्धायतणं जंबूए पच्चच्छिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपच्चच्छिमिल्लस्स पासा

एककूंडकह्यो तिमनकह्यो जंबूथकी उत्तरना वनथकी पश्चिमइं वायुकूणिना प्रासादवतंस पूर्वदिसें एककूंडकह्यो तिमजसर्व

यवडिंसगस्स दाहिणेणं एत्थ णं कूडे पण्णत्ते जंबूए उत्तरिल्लस्स पच्चच्छिमेणं उत्तरपच्चच्छिमपासायवडिंसगस्स पुरच्छिमेणं एगे कूडे

जंबूथकी उत्तरना वनथकी पश्चिम उत्तरइं ईशानकूणिना प्रसादवतंसकथकी पश्चिमइं तिहांमोटोएककूडकह्योतिमजप्रमाण

तं चेव जंबूए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पुरच्छिमेणं उत्तरपुरच्छिमिल्लस्स पासायवडिंसगस्स पच्चच्छिमेणं एत्थ

जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति
२०८

सिद्धायतननो वर्णन पहेंला कह्यो तेम कहवुं तेजंबूसुदर्शन पूर्वे अनेरावी जतिक रूप तत नोमत सोलगों अन
णएणेमहंजंबुद्दीवपण्णत्ते तंचेवपमाणंतहेवसिद्धायणं जंबूणंसुदंसणाएणंहिंतिलएणहिंलवतेहिंजाव
तेलाइं कही सोलगेंस घतीचो पफेर परिषित जंबूसुदर्शननानाबार नाम कह्यो छइं तेकिम जाणइं सुदर्शननती
वेष्टित छइं तेके ताबकी सुदर्शना
रायरस्केहिं जावसव्वतोसमंतासंपरिखित्ता जंबूतेणंसुदंसणा तेउवाजसनामधेज्जापण्णत्ता तंदंस
निफलावती अमो रत्नादिके सर्वकाले बेंतेवतीफ बध्रायसधा पएमनवतीफमणसानिति सास्वती निति मंडिताजे
घेो एवतीयसोधरविदेहम ध्यवर्तजंबुक एनोद्रसनरइमंगली कतेजमरोषरहितछइं
णाअमोहायसुप्पबुद्धाजसोहराभद्दहा जंबूसेसाणसाणतियाणीयहुमंडियासदाणविसालाय
पासेनइं मनरुहोघाइ तेवली फमनारुहो दर्शनि नें नोम एहवा जंबूसुदर्शनाइं जंबूद्वीप नो अधिपति अना
बार सेरकसा
सुजायसुमणतियासुदंसणातेजंबूतेणामधेज्जाइवालिसंजंबूतेणंसुदंसणाते जंबूदीवाहि
वियनोमदेवतामहर्द्धिक सोलगें पलोपमनी थितें वसें छें तेतिहां च्यार सहस्र सामानिक सा थइं स परिवारक हें चो तेजंबू
वतीआणाढिएनामंदेवेमहड्ढीए जावपलिओवमंवितीपरिवसंतीसणंतच्छचउन्हंसामाणायसा
सुदर्शना
द्वीपते स्वामा हें तेअनाढिके जंबूद्वीपइं जंबू नाइं अनाढित राजधानीनइं विषइं सोलगेंवसें छें तेमाटें जंबूद्वीप कहें छइं
हस्सीणं जावजंबूदीवस्सजंबूएसुदंसणाए अणाढिआतेयसाहणीए जावपरिविसए कहणंभं
॥२०९॥
राय
२०९

किहां तगवन अनाढितदेव अनाढियदेवतानी राजधानी किहां कही गोतम जंबूद्वीपनोमाहीमेरथकी तिर्धा असंख्याता द्वी
तानी उत्तरइं पसमुद्र पछी
तेअणाढियस्सदेवस्सअणाढियानामंरायहाणीपन्नत्ता गो जंबूदीवेरमंदरस्सउत्तरेणंतिरीयं
अनेरेजंबूद्वीपतिम तिहां अनाढीया रायहाणी कहीजोमहर्द्धिक विजयाराजधांनी अथोम तहवें वली अनेरो प्रश्नोत्तर तगवनक
जसर्व परिमाणमतासर्वकहेंबो हें ते इंम कहइं जंबूद्वीपें तेलोर
एवंजहाविजयस्सहा २ जावसमत्ताएरायहाणीएमहड्ढिए अदुत्तरंचणं गोयमा एवंवुच्चईजं
रेबैतिहां घणाजंबू नारूरूजे वनावन एक जातीजेवनानतनखेंड निति पुष्पित छइं सोलगें रूखनी अस्या छइं अतीहें घणु
अनेक जाति वनखेंड
बूदीवेरतहिं २ देसे २ तहिं २ बहवेजंबुरुखाजंबूवणजंबूवणसंडानिच्चंकुसिमया जावसिरिया
सोभतो अकोरहइं छइं तेमाटइं हे गोतम इंम कहीयइं छइं जंबूद्वीपनो मइं वली अनेरा कारणा छें
अतीवउवसोभेमाणाचिट्ठंतिसेतेणट्ठेणं गोयमा एवंवुच्चईजंबूदीवेरअदुत्तरंचणं
गोतम जंबूद्वीपमा स्वातो एहवोनोम जिन अतित अनागत वर्त्तमान कालआश्रीनिति जंबूद्वीप कहीइं हतो जंबूद्वीपइं संख्याचंद
सदाथइं मास्वतो छइं पणवली परेंकरूं वो तेमाटें मानी कहें छइं जंबूद्वीप तणा नक्षेत
गो जंबूदीवस्सरसाएनामधिज्जेपणत्तेजिणकयाउणसिजावणजेहेजंबूद्दीचेणंतेकइंचं
लाचंद्रमा प्रताकरें छइं केतलासूर्यतप तपें छैं इंम चनकही केतलानक्षत्र केतलाजोग केतलाजोति केतलाथइं
तित आगाग तवर्त्तमान आश्री इं त्रेंबे ग बी
दापभासिसुवाकंइसूरीयातिवतिसुवातंचतिवातवतिसंतिवाकइणखत्ताजोयणंजोएसुवाजो

वारइंचालइंछइं वारेंचालेंछइं चारेंचालस्यइं केतलीताराणी कोडाकोडिअतीतकालेंसोहइंछइं

इतिवा कइमहग्गहाचारंचरिस्संतिवा चरंतिवा चरंसुतिवा केवइआ उताराणकोडाकोडीउ

वर्त्तमानकालें अनागतिकालइंसोभसैं गौतमजंबुद्वीपइंचेंचंद्रमाझ्नाकरीप्रभाकरइं बइंसूर्यतप्यातपइंछइंतपस्यइं सोभइंछइं सगावतकहैं छइं प्रभाकरस्यइं ३

सोहंसुवा सोभंतिवा सोभस्संतिवा गो जंबुद्दीवेणंदीवेदोचंदापभासिंसु सदोसूरीयातवइंसु

छप्पन्ननक्षत्रअठावीसनक्षत्रनीसंख्या एकसोछिहुत्तरमोहाग्रहचारीचा चाइंउपरि तेत्रीसमहस्रतेउपरिनवसइंतेउपरि इछेचंद्रमानानक्षत्रछप्पनरूइइं ३ चालइंचालस्यइं एकलाषसं खजुनिश्चे पंचासएकपल

वा३ छप्पन्ननक्खत्ताजोएंसुवा३ छावत्तरंगहसयंगहसयचारंचरिंसु३ एगेसयसहस्सातित्तीसंखलुभवेसहस्साइं न

लीकोडाकोडिसंख्याइंतारा सोभइंअतीतकालइं वर्त्तमानकालइंसोभइंछइं अनागतकालइंसो भविलवणसमुद्रनोवि भस्यइं चारसछइंलइं

वसयापण्णासा ताराणकोडीकोडिणंसोभंसोभंसुवा३ सोभंतिवा सोभस्संतिवा जंबुद्दीवद्दीवं

जंबुद्वीपनोमाहीपइछेलवणना वलयानेंसंस्थानइंसंस्थि सघलीदिसिविदसइंपरिक्षिप्तजंबुद्वीपनइंविंटीनइं लवणनोमा मासमुद्रवाटलुछं तछइं रहीउछइं सगवन

लवणेनामसमुद्देवट्टेवलीयागारसंठाणसंठियसव्वउसमंता संपरिक्खित्ताणंचिट्ठंति लव

समुद्रकंसमचक्रवालइंसंस्थि नप्रमाणकिंमविषमचक्रवालसंस्थानइंसं मचक्रवालइंसंस्थित पणिविषमचक्र तछइंबेंलाषयोज स्थितछइं हेगौतम छइं वालइं

वणेणंभंतेसमुद्दकिंसमचक्कवालसंठिए विसमचक्कवालसंठिए गोसमचक्कवालसंठिए नोव

सस्थीत नथी छेलेंलवणसमुद्रनोचक्रवालनोप्रमाणछेहेबेंलवणनोसगवन कहोजंबुद्वीपथीबिमणोअलइं हेंसकेहेलोलगा समुद्रनोमोहिलोचक्रवालविरक्रंतकेतलोहोइं चक्रवालविष्कंभ पनरलाखजोजनउपरिएकासीस इएक्यासीस

समचक्कवालसंठिए लवणेणंभंतेकेवइयाचक्कवालविक्खंभेणं पन्नरसजोयणसयसहस्साइ एक्का

हेंमउपरिएकसो कोइंकविरोषअनंतलोपरिधिनोमानकहिउंहनो तेपद्मवरवेदिकाइं केतलोवनषंडतेणेंक थुयालीस सिवारषत्रसमाससनाटीकाथकीजाणवो रीपरिक्षिप्तचोषफेर

सीइंचसयसहस्साइं सयंचउयालेकिंचिविसेसेणंपरिक्खेवेणपन्नते सेणंएक्काएपउमवरवे

लवणसमुद्रपरइंवेष्टितछइंसर्वदिसइं इमवेदिकाअनइं वनषंड एवेंनोवर्णनकरवो तेपद्मवरवेदिकाआधयोजनउंची उंचपणइंजगती

इयाए वेणयवणसंडेणंसव्वउसमंतासंपरिक्खित्ताणंचिट्ठइ दोन्हविवण्णउ साणंपउमवर

उपरिलीपरेंजाणीयें पांचसेंधनुषविष्कंभेंपहिल सघलेंचोफेरसरषीछइं घाकलोसर्वपूर्वनीपरइं तेवेदिकाबेउवलइं वनष पणइंचोषफेरजवलसमुद्रनेंसरखी व्यारव्यानकीजइं मकोकडेणाछइंयोज

अद्धजोयणंउच्चत्तंपंचधणुसयविक्खंभेणंलवणसमुद्दसमियापरिखेवेणंसुणसेसंतहेवसेणंवणसंड

नप्रमाणवनषंडजेंबूद्वीपनीवेदिकानीपरेंजाणवुंजोजनइंदेवताक्रीड्इंरमइं तगवनकेतलोद्वार च्यारद्वारकह्यातेकहेंछें लइंविचरइंछइं द्वारच्यारनीवर्णनजाणाकरो लवणसमुद्रें कह्याभगवाना विजय१ जयंत२

देसूणाइंजावविहरंति लवणस्सिणंभंतेसमुद्दस्सकइंदारापण्णत्ता गो चत्तारिदारापण्णत्ता तंविजयंते

वेजयंत३ अपराजित४ किहांभगवन लवणसमुद्रमांविजयनोमाद्वार कह्यो हेगौतम लवणसमुद्रनइंपूर्वनइं

विजयंतेअपराजिए कहिणंभंते लवणसमुद्दस्सविजयनामंदारेपण्णत्ते गो लवणसमुद्दपुरत्थि

अनइं धातकी षंडनें पूर्वनें पश्चिमनें दिसैं सीतामोटी नदीनइं उपरइं तिहां लवणसमुद्रनो विजयद्वार कह्यो

मपरंते धायइसंडे दीवपुरच्छिमद्धस्स पच्चच्छिमेणं सीतोदाए महानईए उप्पिं एत्थ णं लवणसमुद्दस्स वि

आठ योजन ऊंचो नेच पहोलो च्यार योजन पहिलं पहोलो तिम जंबूद्वीपना द्वारनी परइं सरव बोलवरणवतणो विशेष राजधानी कहेंवो तिमज घणा कहेवो सरव कहें पूर्वनी दिसइं

जयनामं दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं तं चेव सव्वं जंबूद्दीवस्स नवरं रायहाणी पुर

अनेरे लवणसमुद्रनी राजधानी कहो किहां भगवन लवणसमुद्रनो विजयंत नामा द्वार कह्युं गौतम लवणसमुद्रनी दक्षिण नेअंतइं

च्छिमेणं अण्णंमि लवणसमुद्दे कहण्णं भंते लवणसमुद्दे विजयंते नामं दारे पण्णत्ते गो० लवणसमुद्दे दा

धातकीषंडनेपा दक्षिणार्द्धथ उत्तरि जयंतनामा द्वार कहीनें घणा कहेवो तिमज विजयंत पणिजो एतलो विशेष जे नइं की सर्व णवो

हिणपरंते धायइसंडदीवदाहिणद्धस्स उत्तरेणं सेसं तं चेव सव्वं एवं जयंते वि नवरं सी

सीतामोटी नदी उपरि कहिवो इम अपराजीत विसेष एतलो दिसनो भाग सघलो कहिवो लवणसमुद्रनइं द्वारद्वारनी अंतर भगवन एहनो

याए महानईए उप्पिं भाणियव्वे एवं अपराजिए वि नवरं दिसीभागो भाणियव्वो लवणस्स णं भंते

एहनो केतलो अबाधाइं आंतरुं कह्यं गो त्रणि लाख जोजन उपरि पंचाणुं सहस्र कोइं बसइं असी प्रमाण जोजन एकको

समुद्दस्स ४ एसणं केवइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते गो० तिन्नेव सयसहस्सा पंचाणउइं च सहस्साइं दो

२०८

सएसी जोयण अंतरुं लवणसमुद्रनुं कहइं ते किम एकेका द्वारनुं पहोलपणुं च्यार योजनवें १९ योजन एकेका द्वारे च्यार साथ एकेका मनी एवं द्वार बें साथा ईम एणलोलार ड्राव कोसनें तेहनें लवणसमुद्रना प्रदेशा धातकीषंड

सया असीया एकोसो दारंतरा लवणे लवणस्स णं भंते समुद्दस्स पएसा धायइसंडं दीवं पुट्ठा हंता पुट्ठा

फरसाइ तिमज जंबूद्वीपनी परें व्याख्यान धातकीषंडनो जाणवो तिम सर्व कहेंवु लवणसमुद्रना जीव मरीनें धातकीषंडें उपजइं केतलाइंक उपजइं

धायइसंडं दीवं पुट्ठा तहेव जहा जंबूदीवे धायइसंडे तं चेव णवरं लवणे णं समुद्दे जीवा उद्दाइत्ता धाइ

उपजइं केतलाक उपजें इम धातकी षंडनी लवण समुद्रें केतलाक उपजें केतला न उपजें ते किम भगवन इम

यसंडे अत्थेगतिया नो पच्चायंति अत्थेगइया पच्चायंति एवं धायईसंडे वि अत्थेगइया आनो पच्चायंति

कहाइं लवणसमुद्रनो मैंने सा मार इं गौतम लवणसमुद्र कुंवर कुपोणी अवलस्वद्र रह्लर जनी परिमद्दल लवणनी पाल आंछीनदी

से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चई लवणसमुद्दे २ गोयमा लवणे णं समुद्दस्स उदए आविले रइले लवणे लिंदे

करसीवती खारक कडूवे रसलइं अपेय लवइं घणा द्विपद मनुष्य चउपद मृगपक्षीया सरीसप नइं एतली नीय तवइं पणि तिहां नागपना मनादिक तेहनी अंदे यनथी लवणसमुद्रकी

खारे कडुए अपेज्जे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरसिवाणं णण्णत्थ तज्जोणियाणं सत्ताणं सुंति

नपनामोटी नेहनी पेयवें सुस्थित नामेंनिहां जावपलोपमनो थिति आउ वसइंवइं ते माटइं गोतम लवणसमुद्र एहवुं नाम कहइं लवणाधिपदेवता महामोटा बनीती

ते एत्थ लवणाहिवई देवे महिड्ढीए जाव पलिओवमट्ठितीए परिवसइ से तेणट्ठेणं गो० एवं वुच्चई लवण

बेजोजन मांहिलें लीइं ती वारें अंदर योजन मूलेप कमा उपर धिमा हिंच्या काढी नें च्या र आगो विह चिइं निचारें अणिला ष पंचाणुं सहस्र से असी एकको सएतलुं तरुंपा मीइं ३ २

११

एउत्तर गोतम लवणसमुद्रएहवुं सासतुंनामछइंभगवंतेंकहो छइं जांलगेंनितिछइं धर्मास्तिकायनि परइं लवणसमुद्रनीभगवनकं तलाचंद्रमाप्रना

समुद्दे २ अदुत्तरं चणं गोयमा लवणसमुद्दस्स सासए णामधेज्जे पण्णत्ते जावणिच्चे लवणेणं भंते समुद्दे कइ

सकरेंछइंवसइं इमचंद्रमादिकनेप्रलको धकं गोतम लवणसमुद्रच्यारिचंद्रमाप्रजाकारीलइं उइंजा मन्नपरि सतसविसह

इ चंदा पभासिंसु वा ३ एवं पंचण्हवि पुच्छा गो लवणेणं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासेंसु वा दोण्णि य सयसहस्सा स-

सउंपरितवसेंतारा लवणसमुद्रनीकोडाकोडिसोलइंछइं किमभगवनलवणसमुद्रनी चउदसिअष्टमी

त्तट्ठिं च सहस्सा णवसया लवणजले तारागणकोडीकोडीणं सोलसेस भवा ३ कम्हाणं भंते लव

अमावास्यापूर्णमासीघणीवाधइं अतिसइन अनेंघटीनेसामाटइंभगवन गोतम जेंबूद्वीपनांमाहिपूर्वरूपर्व तथकीच्यारदिसि

णसमुद्दे चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अइरेगं २ वड्ढति वा हायति वा गो जंबुद्दीवस्स णं दीव

बाहिरलीवेदकानइंअनाधि लवणसमुद्रमांपंचाणुंयोजनअवगाहेंतीवा रइ तेच्यारमोटां आलि

स्स चउद्दिसिं बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ लवणसमुद्दं पंचाणउइं २ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ताइं एत्थणं च

जरतेमोटाकलसनासंस्थान तेमोटापातालकलसकह्या तेहनां नांम तेथकीपूर्वदिसवडवामुष १ दक्षिणकेउप २ पश्चिमरूप ३ उत्तरईसीत ४ तेच्यारमोटापाताल कलसानी

त्तारि महालिंजरसंठाणसंठिया महइमहालया पायाला वलयामुहे केऊए जूवए ईसरे तेणं महापाया

एकलाखयोजननिलकस्यानिसंस्थितामो मऊदसिसहसजोजनपहोलोछइंमध्यवचि एकेकइंछेदेत्र अेणाबाधती एकला रवि उपर तलपहोलछइं

ला एगमेगं जोयणसयसहस्सं उव्वेहेणं मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं मज्झे एगपएसियाए सेढी

बजोजनपेरवालयछेलोछइं उपरिछेदेसइं २ घरतिमुखमुल दससहस्रजोजननेपहुलपणेंछइं तेमाटइंमहापातालकलसने

ए एगमेगं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं मूले दस २ जोयणाइं सयसहस्साइं बाहल्लेणं तेसि णं महा

जाडपणुंकहाश्रपलीसरचीदसर जोजननी तारीकसाकहवी सर्वव्रजमइं विर्मलप्रतिरूपणछलीपरिवचलवुं तेहांघणाजीवतेम

पायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दस २ जोयणसयबाहल्ला पण्णत्ता सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरू

नोपुद्गलपृथ्वीकायनीअवक्रमेछइं जाइंछैं चुकमेतिनपजेंछैंचयमोपगछेती जाइंछइं सास्वतातेभगवनकलसआस्वाता कीवारइं असास्वतातेकिमभगवन

वा तत्थ णं बहवे जीवा पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासया णं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए

केवर्णधर्मेंअसास्वताछइं तेपातालकलसेंअारदेवतामह पाछलीपरि पल्योपमनीस्थितिवसइंछइं धिकजोलवा तेकेहा वडवामुष १ देवतो २ उपर ३ चेंतेव ३

वण्णपज्जवेहिं असासया तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया जाव पलिओवमट्ठिईया परिवसंति तं काले

इस्वरप्रत्तेजन ४ तेपातालकलसानाचलकें २ जाणिनाजाणि र स्वागक लए तेकेहा हेठिलात्रणिसा गर मध्येत्रिसा गर उपरिला त्रणिसाग

वेलंबे पभंजणे तेसि णं महापायालाणं तओ तिभागा पण्णत्ता तं हेट्ठिल्ले तिभागे मज्झिल्ले तिभागे उव-

जीवाभिगम
210

तेत्रीससाग केतलइं मानइं छइं तेत्रीसतेत्रीसयोजननें त्रणिसें तेत्रीसयोजन योजननात्रिजोभागमां बाहूल्य छइ तेणारपाताल

रिल्लेतिभागे तेणं तिन्निभागा तेत्तीसं जोयणसहस्साइं तिन्नि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च

कलसे तिहांजे हेठिलो त्रिभाग छै तिहां वाउकाय रहै छइं तेकलसनें मध्य त्रणि भागे तेहें वामइ तिहां वाउकाय अपकाय

जोयणं तीसे णं विवाहच्छेणं तत्थ णं जे से हेट्ठिल्ले तिभागे एत्थ णं वाउयाए संचिट्ठइ तत्थ णं जे से मज्झि-

हेठें छै एकहा तेकलसनें उपले त्रिभागे तिहां अपकाय रहे छइं वली बीजा प्रश्ननो अनेरो उत्तर गोयमा लवणसमुद्रइ

ल्ले तिभागे एत्थ णं वाउयाए य आउयाए य संचिट्ठइ तत्थ णं जे से उवरिल्ले तिभागे एत्थ णं आउयाए सं-

तिहां २ देसे २ नाना हांडलजर नान्हा कलशनि संस्थाने छइं नान्हा पाताल कलसा वली तरा गे कह्या हवें ते एक सहस

चिट्ठइ अदुत्तरं च णं गोयमा लवणसमुद्दे तत्थ तत्थ देसे २ खुड्डालिंजरसंठाणसंठिया खुड्डापायाला पण्णत्ता

योजन ऊंचपणइं पाताल कलसा छइं मूलें एकसो योजन पहिलपणें छइं मध्य एक प्रदेश छइं श्रेणिइ वृद्धि

ते णं खुड्डापायाला एगमेगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं मूले एगमेगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्झे एगपए-

थिति एक सहस्र योजन विस्कंभ छइं उपरि मुखपातलु छै एकसो योजननो पाताल कलसो पहिलो छइ तेनान्हा पाताल कलसनी कांठा

सीयाए सेढीए एगमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं उप्पिं मूले एगमेगं जोयणसयं विक्खंभेणं तेसिं णं खुड्डा-

210

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

उर्द्ध अनेचि
या पाताल खु
द्दालं जग सेवि
या उवले अवसी
याच्छुल सीया
सत्तसहस्सायस
वे वि॰ इति

सघली सरिखी दिसैं योजननी जाडी कांठा छइं सर्ववज्रमइं छइं निर्मल स्वच्छ जाव प्रतिरूपादि च्यार पद तिहां घणा जीवना पुद्गलनो लगें असास्वता

यपायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दस जोयणाइं सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्ग-

असास्वताना प्रश्न करवा कहे कलसे अर्द्धपलीयमनी थिति नादेवता सेतलइ परिग्रहा लियला छइं तेनान्हा कलसना तेहना त्रणि त्रणि २ भाग ते बाप्प बली पर्वे प्रसें छैं २

ला य सासया वि पत्तेयं २ अद्धपलिओवमट्ठितीयाहिं परिग्गहीआ तेसिं णं खुड्डापायालाणं तओ तिभागा

कह्या हेठिलोभाग मध्यलोभाग उपलोभाग तेत्रणि भाग केवडा छै त्रणिसें तेत्रीस योजन योजननो त्रणि भाग अधिकवा झल्यपणे

पण्णत्ता तं हेट्ठिल्ले तिभागे मज्झिल्ले तिभागे उवरिल्ले तिभागे ते णं तिभागा तिण्णि २ तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागं च बाहल्ले-

उदार उदगंत
णीयं प॰ हमेण
नीण स्कंधा उसे
भुनी उभयचमे
इं उदगं परिवंद
जलनही थुले॰

तिहां जे ते हेठिलो त्रिभाग तिहां वाउकाय रहे छइं मध्यमनो त्रिभाग तिहां अपकाय वाउकाय रहइ छइं उपरि एकलो अपकाय रहइ छइं इमए

णं तत्थ णं जे से हेट्ठिल्ले तिभागे एत्थ णं वाउआए संचिट्ठइ मज्झिल्ले तिभागे वाउयाए आउयाए य उवरिल्ले

वें अनुक्रमइं लवणसमुद्रइं सात सहेंस आठसें चोरासी लघु पाताल कलस में कह्या अनेरा तिर्थंकरे पिण कह्या छइं ते मोटा पाताल कलश हेठिलानो नाप

आउयाए एवामेव सपुव्वावरेणं लवणसमुद्दे सत्त पायालसहस्सा अट्ठ य चुलसीया पायालसया भवं-

वहिलइ घर २ छइं
पातालनें उजमा
लप्रइ छइ

तालकलस हेठिलाभागे मध्यमभागइं उपरलें भागइं घणो उदार वाय उदार संघातवानी शक्ति घणी छै जेहने उपजवानी अभिमुख थाये छइं समुच्छिम मला तेनी परें थया छैं खोभ छै असो नइं वायने प्रे

तीति मक्खाया तेसिं महापायालाणं खुड्डुगपायालाणं य हेट्ठिममज्झिमिल्लेसु तिभागेसु बहवे ओराला वा-

इ छइं संघटे बेहलाचेबैं तेसमदेसकालोचित परिणामें परणमें छइं जिवारें तेजर्द कलन्हा चोभलेंछइं जिवारें तेमाटापाताल

यासेसेयं तीसमुच्छंति एयंति कंपंति खुभंति घटंति फंदंति तं तं भावं परिणमंति जेणं से उन्नाहिं छइ जायाणं

कलसातणा पातालकल हेठिलो मध्यम मध्यमाजे त्रिभाग तेहनइ आधइ ता वायुकाय उपजवा ने महिमा ते मातानथी

मो ना स हताजे व्यापइ

महापयालाणं खुड्डगपायालाण य हेट्ठिल्लमज्झिमल्लेसु तिभागेसु बहवे ओराला वाया संसेयंती सम्

जल जानती पेरें हालबकी कांपबकी वेईबकी फंदतिदेसकालोचित परिणामें परणमनइं थ उदकपालीउं जिवारं

पाता छइ भु जति बकी घटती कइनथी पाताति वारें ते चोभलेंनही तेनाजे

च्छंति एयंति कंपंति खुभंति घटंति फंदंति तं तं भावं परिणमंति तयाणं से उदए उन्नामिज्जइ जयाणं ते

पातालकल आमध्यम तिभागइं

समीहेठी ते उदार वायना घणाजीव थोभता नवरिलां मेंपरम ति वारइं ते

नहीहालतानथी तेदेसकालोचि तानथी

सिखुड्डुपायालाणं महापायालाण य हेट्ठिल्लमज्झिल्लेसु तिभागेसु नो बहवे ओराला जाव तं तं भावं परिण

उदकउचो उछलतानथी वायुथको वायउदीरंती वारें विचलो छइं थ एवं खलु कहितां इं मनिश्चें

जलउच्चइ उदकेइं उदकउंचोउछ

मंति तयाणं से उदए णो उन्नामिज्जइ अंतरा वि य णं ते वायं उदीरंति अंतरा वि य णं से उदगं उन्नामिज्जइ

हे गोतम लवणसमुद्रइं चउदिशि अति में उनिमें उदीरइं इंलोल्या रें तपलोवधैबें घटै लवणसमुद्रं नगव

बइ न

एवं खलु गोयमा लवणे णं समुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा लवणे णं ते समुद्दे

चउदसिइं आठिमइं पुनमासीइं अतिरेक अधिक घटइछ लवणसमुद्रइं तग जीसमहूर्तमां केतलीवार अतिरेक

वाधइ इ वन हइ घणोर

चउद्दिसि पुन्नमासिणीसु अइरेगं वड्ढइ वा लवणे णं ते समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं कइ खुत्तो अइरेगं वं

वाधइछ घटइछ गोतम लवणसमु त्रीसमहूर्तमां बइवार अतिरेक अधिक वाधवा घटइं तेसा माटें तगवन

इ इ हइं हइ र धइछइं बइ

ड्ढइ वा हायइ वा गो लवणे णं समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अइरेगं अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा से केणं

इमकह्योछ लवणसमु त्रीसमहूर्तमां केतलीवा अतिरेक अधिक वधैछइं गोयमा जईनेंचा पाताल ना जलनी

इ इमे हइं इ नथा घटेछइं काजल

ट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ लवणे णं समुद्दे तीसाए मुहुत्ताणं दुक्खुत्तो अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा गोयमा उड्ढमंते

जलवाधइछइं पाता कलसउलालथकाव अणहुरणा थकाइं कहेंतो घट इमनो न्हा मोटा कलसनो जे तेमाटेंलव

धइछेइ इछइ तरकरीनें गोतम णसमुद्रे

सु पायालेसु वड्ढइ आपूरीतेसु पायालेसु वड्ढइ आपूरीतेसु पायालेसु हायइ से एएणं ट्ठेणं गोयमा लव

जीसमहूर्तमां अतिरेंक वा धैछैं घट हवें लवणसीपाए बैछैं लवणसमुद्रनी तलो फिरतो विरकंन पिरूलवण

हइ बेंवार सोछइ साथासीलगवनके इ

णे णं सामाए मुद्दे तो अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा लवणे णं भंते समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केव

केतलोजल अतिरेकवा नथाघटइं गोय लवणसमुद्रनी सीधा दससहेंसयो चक्कवालाइं विरकं पिरूलपलें कहा

धइ मा जननी छइं न उ

इयं अइरेगं वड्ढइ वा हायइ वा गो लवणसिहा णं दसजोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं देसूणं

उर्द्धे च:
अपि तरीयं
वेलंधरीतेल
वृणोदहि म
मनागाणं बा
यालीसमद
सा सहरी सह
श्राबाहरीया
सद्दि नाग स
हस्सा धरेंता
अ औदयंस
मुद्दस्सि

जिवाभिगम:
२१२

कांइक उं अर्द्धयोजनवत्तेजोको धइं घटइं एवं वेलंधरनी वक्तव्यता कहे छैं लवणसमुद्रनइं नातिकायवर्त्तीदेवताकेतली
एकं इकउंले वेगावव वइ वइ नागकुमारकेतलासहस्सनें नागकुमार नवनपति सीआग्रपली वाधीवेलिनें धरी

अद्धजोयणं अतिरेगं खवडुइ वा हायइ वा लवणस्स णं भंते समुद्दस्स कइ णागसाहस्सीओ अभ्भितरियं वे

वइंजं मांपइंसत्तीकेतलानासहस्स नागदेवताधसनकीथक मांपइंसतीवेलानें धेवारें वइं केतलानाग जलनेंधरेंवइं
बूद्वीप सहस्सदेवता अग्रोदयदेसेन जिनाई जलन परिवाधता गोयमा लवण

लं धारंति कइ नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारंति कइ नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति गो० लवण

समुद्रेबेताली सहस्सनागदेवता जंबूद्वी अभ्भिंतरमांहै वेलंधरनांमानागकुमार देवताधसनकीथकमांपइंसती
पमांपइंसतीवेलिनेंधरीराषेंछैं बहुत्तरसहस्स वेलिनेंवारइंवइं

स्स णं समुद्दस्स बयालीसं नागसाहस्सीओ अभ्भितरियं वेलं धारेंति बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं

साठिसहस्सनागदेवता अग्रोदकवाधसापंलीनें इमपूर्वापरसमुदायसर्व एकलाषनागकुमारदेवताउपरिबि
वारेंछै सिबाइं हुंतरसहस्सनागदेवतानीपंक्तिकरेकह्या

वेलं धारंति सट्ठिं नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति एवमेव सपुव्वावरेणं एगा नागसयसाहस्सी बावत्तरिं ना

एवंनागकुमारकहइंवइं केतलाभवननामादेवतानाराजा च्यारवेलंधरनागराजा कह्या तेकेहा गोतम
गोथक

गसहस्सा भवंतीति मक्खाया कइ णं भंते वेलंधरा नागराया पण्णत्ता गो० चत्तारि वेलंधरा नागराया पण्णत्ता तं०

गोथूभ शिवकी संख मनसिलाको एहनामभवन च्यारवेलंधनामराजादेवतानावसवानाकेतलाआवास गोतम
१ २ ३ ४ ना पर्वतकह्या म

गोथूभे सिवए संखे मणोसिलए एतेसिं णं भंते चउण्हं वेलंधरा नागराईणं कइ आवासपव्वया पण्णत्ता गो०

२१२

च्यारआवासपर्वतकह्यानागदे तेके गोथूभ दकभासि संख दकसी किहांवइंतग गोथूभ वेलंधरनागराजानो गोथू
वतानाराजाना हा १ २ ३ म वन

चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता तं० गोथूभे दगभासे संखे दगसीमए कहिं णं भंते गोथूभस्स वेलंधरना

सनोमा आवासपर्वतकह्या गोयमा जंबूद्वीपइं मेरुपर्वतथकी पूर्वइं लवणसमुद्रमो बइंतालीं

गरायस्स गोथूभे नामं आवासपव्वए पण्णत्ते गो० जंबूद्दीवे मंदरस्स पुरच्छिमेणं लवणसमुद्दं बायाली

सहस्सयोजन अवगाहीइं तिहांइं गोथूभ नांमावेलंधरनागराजानो गोथूभनांमइं आवासपर्वतकह्यो

संजोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं गोथूभस्स वेलंधरनागरायस्स गोथूभे नामं आवासपव्वए पण्णत्ते

सत्तरसइंएकवीसयोजन उंचोउंचपणइं वइं च्यारसैंत्रीसयोजनउपरिएककोसउंडपणइं मूलेंदससिंबावीस

सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि तीसे जोयणसए कोसं च उव्वेहेणं मूले दसबा-

योजनलांबपणइंपहिलपणइं वइं विचिंसातसैंत्रेवीसयोजनप्रमाणमध्यप्रदेसलांबोपिहुलोवइं उपरिच्यारसैंचोवी

वीसे जोयणसए आयामविक्खंभेणं मज्झे सत्ततेवीसे जोयणसए आयामविक्खंभेणं उवरि चत्तारि च

सयोजनप्रमांण लांबो पिहुलोवइं एवं मूलेंत्रणिसहस्सयोजनउपरि बिसैंउपरिबत्रीसयोजन कांइंकविसेषान
परधिकेतली न

उवीसे जोयणसए आयामविक्खंभेणं मूले तिन्नि जोयणसहस्साइं दोण्णि य बत्तीसं उत्तर जोयणसए किं

जीवाभिगमः
२१३

परधिछइ मूलमध्यविविंछइं

चिविसेसूणपरिक्खेवेणं मूले विछिंणे मझिणं संखित्ते उप्पिं तणुए गो पुछमझे दोजोयणसए किंचिवि

उपरि एक सहस्स जोजन त्रिणि सें बइंतालीस जोजन कांइक विशेष ऊणु परिधि परधि कही

सेसूणे परिक्खेवेणं उवरिं एगं जोयणसहस्सं तिंणि बईआले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खे

मूलें पहिलुं मध्यस्थानकें बुं उपरि पातलुं गोपुछनें संस्थानें करी संस्थित सर्वसोवर्णमइ निरमल जाजा उलिरूप आगव

वेणं मूले विछिंणे मझे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुछसंठाणसंठिए सव्वकणगामए अछे जाव पडिरूवे से

तु तेह वेदिका पद्मवरवेदिकाए एकें वनखंडइं संघलइं वीटित छइं वेदिका वनखंडनुं वर्णन पूर्वनी परि गोथूभ आवासि पर्वतन २

णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते दोन्हवि वण्णओ गोथूभस्सणं आवास

उपरि घणुं सम सुंदर खुंतां बेसें बइ रमणिक भूमिभाग कह्यो यां जगें पाखइ जो सर्व आछानस रख रत्नमें तिहां देवता रमइ छइ गो गोथूभ नामें आवास पर्व तें तिहां २ बेसि २ तेणार

पव्वयस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव थूभे आवासपव्वए २ तो गोथूभेणं आवासप

वावी २ घणी नानी मोटी थकी नान्हा वावि जोजगें गोस्तूपनें वर्णे काल तुं नाम वें तिहां वावि गोस्तूप स्तन तिहां गोथूभनो चिविधा रत्नमें गोस्तूप केहीइ गोस्तूपनो थूभ दिस वावी जोतर जेमा रइं में देवता मह

व्वए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूई २ खुड्डाखुड्डियाओ जाव गोथूभवण्णाइं तहेव जाव गोथूभे तत्थ देवे महिड्ढि २१३

द्धिक जेलगें पल्योपमनइं आउखेंव मइं छइं तेतिहां च्यारसहेंस सामानिक देवतासाबइ जेलगें परिवारें परवस्यो गोथूभनो आवास पर्वतनी गोथूभ

एज्ञाव पलिओवमट्ठिईए परिवसई सेणं तत्थ चउन्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव गोथूभस्स आवासपव्वयस्स

जधानीइं विचरता सोलगइ वारखवानकरतु पालवलीपरें तेमाटइं गौतम जेतिसबइं इछाकरइं ह वइं राजधानीनी गोथूभनो आवासपर्वत थकी पूर्वइं

गोथूभाए रायहाणीए जाव विहरई से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे रायहाणिपुछा गोथूभस्स आवासपव्वयस्स पु

असंख्याता द्वीपसमुद्र विति वइऊं। वितिक्रमीनइं अनेरें लवणसमुद्रे बारयोजन अवगाही तिहां गोथूभ नामें नागेंद्र देवता वसइ छइ जिम विजया राजधानीनी परेइं सर्व वषाणवुं

रछिमेणं तिरीयमसंखिज्जे दीवसमुद्दे वीतीवइत्ता अन्नंमि लवणसमुद्दे चेव पमाणं तहेव सिवं कहं णं भंते

जहां किहां गवनसिव नांमें वेलंधरनां नागराजा ननें उदकभासना मइ आवासपर्वतकह्यो गौतम जंबूद्वीपनामें दीप मेरुपर्वत थकी

सिवगस्स वेलंधरनागरायस्स दगभासे नामं आवासपव्वए पण्णत्ते गो जंबूदीवेणं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स

दक्षिणदीसें लवणसमुद्र बयतालीस योजन सहस्स अवगाहि नइं छइं तिहां सिव वेलंधर नामइं नागराजा ना उदकभास नामइं

दक्खिणेणं लवणंसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता एज्ञणं सिवगस्स वेलंधरंनागरायस्स दग

आवासपर्वत कह्यो जिम गोथूभनो प्रमाण दिक हितु तिम उदकभासनो प्रमाण कह्यो एतलो विशेष सर्व अंकमें बें निरमल जे लगइं श्रति रूप छइ जेमजरों

भासे नामं आवासपव्वए पण्णत्ते तं चेव पमाणं जं गोथूभस्स नवरं सव्वअंकामए अछे जाव पडिरूवे जाव अ

इम सर्वज्ञ कहे छे वेलंधर कासा सम पर्वतनो नाम तेसुं कारण जननप्रमाणछेत्रइं तेहनो जे उदकमाला तेम घणें वोषफर
वो गोयमा गौतम जनलसमुद्र घर की आछयो

वोलं लीयद्धो गोदत्ते लावन्नवामापव्वए लवणसमुद्दे अच्छडोयणाय खेतेनदयांसवन्नेसमंतान्ना
अक रत्नेतवंतिस्वपत्ताचउइवडमानी घरनी परेलासिंच देतु घाबीजो कारण कहि पर्वतइंदेवतावसइंछइं सांलगेतेह
परइंउद्योतकरइंछइं तेछैसर्वहहवा नाम लीं नीरज सं नीदखिलें

लसिए नच्चावइ तवतिपन्नासेइ तिसिवते तच्छदेवमद्दीट्टाइ जावरायहाणीसेदरिक्कणणंसिवगा
तिमजवर्णनवीबीजो सर्व तिमज किलांतग संखवेलंधरनागराजानोसंख आवीसपर्वतकिणांकहितेछइं गोयमा
पाळलीवरइं कहइछउ वन नामइं

दनुलांणीयवंतंचेवकहणंसतेसंखस्सवेलंधरनागरायस्ससंखेनामं आवासपव्वएपणत्ते गो जं
जंबूद्वीपनामे द्वीप मेरुपर्वतथकी पश्चिमनी दिसइं बयतालीसमहसवो तिहांसंखनामेंपर्वतनो संखनामें वेलंधरनाग
तिहां जनजइं इं

बूदीवेणंदीविमंदरस्सपव्वस्स पच्चत्थिमेणं बायालीसंजोयणाइं अत्थिणंसंखस्सवेलंधरस्सनामं
राजेदवसानो आवा जप्रमाणपिणपर्वतनी परें सर्वरत्नमें निर्मलछइं तेएकपदमवरवेदिका एकवनखंडवींटीआंछ
सपर्वतलिम कहवा एतलो विसइं छोइं तेतिमजदिगसासनीपर

आवासपव्वतां तं चेवपमाणानवरं सव्वरययामए अच्छिसेणंएगाए पउमवरवेइयाए एगेणंवणसंडे
इकहेंछो हवेइ सांनकारणकहेंछइं जांघणांतसलछइं संखनीपरइंछजजी संखनाजेहवोवर्ण संखवर्णनीपुलाछइं ते
घणीनान्हीवाविछइं नाटइंसंखपरवतकहीइं

जावअट्ठेबंऊतेखुड्डाखुड्डीयाने जावबहुहिंउपलाएसंखपभाएसंखवणाएसंखवणपभाएसंखे

हवेबीजो कारण संख महाऋद्धिवंतवइं तेहनी राजधानी पहवइं जवणसमु नामा आवास संखराजधानीनो प्रमाण तिमज
नामें देवता पश्चिमइं कहेंछो इ मांसंख पर्वतछे कहेंछो

तच्छदेवेमहड्ढीए जावरायहाणीए पच्चिठमेणंसंखस्सआवासपव्वयस्ससंखारायहाणीतंचेवप
कहेसाणवुनगो घसारायधानीपरइं करा मनोसि राजानो उदकसीमनामइं आवासपर्वतसगचेतइं कहेछो
नावेलंधरनां नाम

माणं कहणंसंतेमणोसिलस्सवेलंधरस्स वेलंधरनागरस्सनुदगसीमएनामं आवासपव्वएपणत्ते
गौतम जंबूद्वीपनामेरु वनरितिहांजवणस बेंतालीससहेंसयोजनतनइंथइं तिहांमणोसीलानामइं वेलंधरना
म घको फइं

गो जंबूदास्मंदरस्सउत्तरेणंलवणसमुद्दंबायालीसंजोयणसहस्साएच्छणंमणोसिलागस्स वेलं
नागराजानो उदकसीमनामइं आवासपर्वत तिमजरजप्रमाणसघलो कहेंछो एतलो विशेषसर्वफटिकमेंछइं निर्मलछइं
कहितु आंजणइंप्रतिरूपछइं गौतम

धरनागउदगसीमए नामंआवासपव्वएपणत्ते तंचेवपमाणंनवरंसव्वफलाहामए अच्छेजावसित्रच्छेगे
दगसीमनइ लागवनमणी वेलंधरनागराजानीमनोसीलानाम राजधानीकहीगोयमा दगसीमआवासपर्वतथ
सिज

गो दगसीमएणंसंतेमणोसीलागस्सवेलंधरनागरायस्समणोसिलानामरायहाणीगोदगसीमस्सआ
कीउत्तरइं त्रीबायणासमुद्रमुंकी अनेराजवणसमुद्र मनोसिलानामराजधानी कही तिमजगोच्छसानीपरिंप्रमाण
जिहांजगइंमनोसिलानामइं

वासपव्वयस्सउत्तरेणंतिरिअसंखेज्जेदीवसमुद्देवीइवइत्ताअन्नंमिलवणेएच्छणंमणोसिलायानामरायहाणीपन्नत्ता तंचेवपमाणंजा

देवतावसेवइ एतलें च्यार पर्वतकह्या तणदन वेलंधरनाआदेशवर्ति हेगौतम च्यारनोवेलंधरनागराजा
अनुयाई वेलिनेंधरे तेअनुवेलंधरनानागराजाकह्या
वमणो सिलाएदेवे कहणंतंतेअणुवेलंधरनागरायाणोपन्नत्ता गोयमा चत्तारिअणुवेलंधरनागराया
कह्या कर्कोट१ कर्दम२ कैलास३ अरुणप्रभा४ एहना तेहनाचत्र्यारआवासअणुवेलंधरराजाना
णोपन्नत्ता तं कक्कोडएकद्दमएकेलासेअरुणप्पभए तेसिणंभंते चउन्हं अणुवेलंधरनागरा
केतलाआवास पर्वत कह्या गौतम च्यारआवासपर्वत कह्या तेकेहवा तें कर्कोट१ कर्दम२ केलासि३
इणंकइआवासपव्वयापण्णत्ता गो चत्तारिआवासपव्वयापन्नत्ता तं कक्कोडएकद्दमएकइलासेअ
अरुणप्रभ४ किहांछतकर्कोटकनामाअनुवेलंधरनामा राजानो कर्कोटिकनाम नामाआवासपर्वतनाम गौतम कह्यो
रुणप्पभे कहणंभंते कक्कोडस्सअणुवेलंधरनागरायस्स कक्कोडएनामंआवासपव्वएपण्णत्ते गो जं
जंबूद्वीपेमेरुपर्वतथकी उत्तरपूर्वइ ईशानकूणि लवणसमुद्रइबेतालीसहसयोजनअवगाहीनइंजाइयइं कहिवें
बूद्दीवेमंदरस्सपव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमेणंलवणसमुद्दंबायालीसंजोयणसहस्साइंउगाहित्ता
तिवारइं कर्कोटकनागराजानो कर्कोटनाम आवासपर्वतकहिवें सातसइंएकवीसयोजनऊंचोऊंचपणइंछइं
एत्थणंकक्कोडस्सनागरायस्सकक्कोडएनामंआवासपव्वएपण्णत्तेसत्तरसएक्कवीसाइंजोयणस

तिमजपमाणसर्वगोथूभनीपरइंकहेवो एतलोविशेषसर्वरत्नमय निर्मलमजगइंनिरविशेषपणइं जांसिंहासनपरीवारसहीत
याइं तंचेवपमाणंजंगोथूभस्सनवरंसव्वरयणामएअच्छेजावनिरवसेसंजावसिंहासणंसपरिवा
नामनोकारणतिमजजेतलोघणाउत्पलछइ सोतइंछइं घाकनोस कर्कोटकपर्वतथकीईशानकूणिराज तिमजसर्व कर्कोटकनीछलाइं वि बेतिमजविशेष धानीकहेवोइंम कर्दमनो
रंअट्ठोसेबहुइंउप्पलाइंकक्कोडगप्पभाइंसेसंतहेवनवरंकक्कोडगपव्वयस्सउत्तरपुरच्छिमेणंए
तिमजआजावोएतलोविशेषयधूपकंदर्पमकुंकुमागरकर्पूरकस्तूरीमेलापकनुकंचकुंकुमागरकर्पूरकस्तूरीचंदना
नीचमहासोगंधिमतिकनामतोयकुकर्दमः तिहांघांहघणोजकुकर्दमनीगंधिवलकमतवावत एतेमाटेंनामएजकहु
वंतंचेवसव्वाकद्दमस्सविसोचेवगमोअपरिसेसिओनवरंदाहिणपुरच्छिमेणंआवासोविद्धुजि
तथाजकुकर्दमनामदेवतावसेंतेमाटइंकर्दमनामइमसर्वेक हंमजसर्वविशेषएतलोदक्षिणपश्चिमनैरति कूंणिकैलासनामइं
हेंवुमेरथकीअग्निकूणें राजधानीछइं
भाविरायहाणीदाहिणपुरच्छिमेणं आवासोविज्जुजिकईतासेविएवंचेवणवरंदाहिणपच्चत्थिमे
राजधानीतिमजसर्व३ इंमचोथोअरुणप्रभउत्तरपश्चिमेवायु कूणेंअरुणप्रभपर्वतथकीविदसें राजधानीथकीए कहेवी
णेकइलासाविरायहाणी ताएचेवदिसाएअरुणप्पभेवितत्तरे पुरच्छिमेणंरायहाणीविताएवि
च्यारपर्वतनोएकजप्रमाणलहाइं एसर्वरत्नमेंछइं दवें कस्सितरदेवता नोप्रभनकछइछइं किहांतगवनकस्थितनामइंलवणाधिप गौतमनामाद्वी नोरहइंवानोकामछइं
दीसाए चत्तारिविएगप्पमाणासव्वरयणामयाय कहणंभंतेसुट्ठियस्सलवणाहिवइस्स गोयमा दी

जीवाभिगमः २१६

पकिहांकह्यो जंबूद्वीपनामेरुपर्वतथकी पश्चिमें लवणसमुद्रमां बारयोजननासहस्रअवगाहीइंजइइं
बइं
वेपण्णत्ते गो० जंबूद्दीविमंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारसजोयणसहस्साइं उगाहित्ता
तिहांसुस्थितलवणाधिपनो गोतम नामाद्वीपकहीउ बारसहस्सजोजननोलांबपणें पहुलपणेंछइं
एत्थणंसुट्ठियस्सलवणाहिवयस्स गो० दीवपण्णत्ते बारसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं
कांइकविशे
साडत्रीससहस्रयोजनउपरि नवसैंअडतालीसयोजन
त्तीसंजोयणसहस्साइं णवयअडयालस्सजोयणसहस्साइं नवएअडयालेजोयणसए किंच
षाधिकपरिखेपपरिधिकही जंबूद्वीपनीदससाढिअढासी जोजनउपरि जोजननापंचाणुंयाअठ्यासीनाग
जोजननुं
विसेसाहिए परिक्खेवेणं जंबूद्दीवेर तेणंअद्धेकूणणउइजोयणसयाइं बइंतालीसंचपंचाणउइ
गोएतलुंपाणिमांथी लवणसमुद्रनाजलना अंतथकीवेंकोस पाणीथकोऊंचोछइं तेगोदीपएकपद्म
भागेजोयणसहस्साकसिएजलंताओ लवणसमुद्दंतेणंदोकोसेऊसिएजलंताओ सेणंएगाएपउ
वरवेदीका एकवनखंडइंकरीसंघलेंवेष्टीतछइं तेहपावलिपरिवर्णनवगोत तिमदीपनेमांहिघणुंसमरमणीक
इतुंकहवुं म
मवरवेइआए एगेणंवणसंडेणंसव्वओसमंता तहेववण्णओ दोण्हवि गो० दीवस्सेणंदीवस्सअंतोबहु २१९

भूमिभागकह्यो वितरागें तेजिमछित्योतिकोइ मदंगचर्मइंजोजाणइंदेवतास्य तेघणुंसमरमणीकघणुंपअच्छताणइं
अतिंग
बइंरमइंछें
संमरमणिज्जेभूमिभागेपण्णत्तेसेजहाणामए आलिंगपुक्खरेइवा आसयंती तस्सेणंबहुसमरबहुमज्झदेसभा
तिहांसुस्थित लवणाधिपनुं एकअक्रीडावासरम्यक्रीडानुंवासछइंतेणइंनामें बासठिजोजनलोऊंचो
भोमिविहारकह्यो
ए एत्थणंसुट्ठियस्सलवणाहिवयस्स आकीलावासेनामंभोमेज्जविहारेपण्णत्ते बावट्ठिंजोयणाइं उ
ऊंचपणइंछें एकत्रीसजोजनउपरिएककोसएतलुंपहुल अनेकथंभसहस्सेंजोबर्वलीन इमसर्बवर्णनएतलुंवर्णनकरवुं
उपलोछइं
ड्ढंउच्चत्तेणंएक्कतीसंजोयणाइंकोसंचविक्खंभेणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठे सच्चो भवणवण्णओभा
सर्वनिपरि अक्रीडावासनोमध्येंभोमिविहारनुंमांहि घणुंसमुंरमणीक भूमिभागकह्यो जोजनइंमांणवि
नु
कादि
णियव्वो आकीलावाससणंभोमेज्जविहारस्स अंतोबहुसमरमणिज्जेभूमिभागेपण्णत्ते जावमणि
वर्णनसर्व तेघणुंसमुंरमणीक भूमिभागनि घणुंमध्यदेसनागवविस्थानक तिहांमोटीएकपरमवरवेदकाकही
नाएरि
तस्सणंबहुसमरमणिज्जस्सभूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणंएगामणिपेढियाप
तेपदमवरवेदीकाजांव एकवनपणिंछइं जोजनजाडपणुंछइं सर्वमणीमयस्वच्छछइं तेमणिपीठकानीउपरि
पणें
सत्तासाएंदोजोयणाइं आयामविक्खंभेणं जोयणबाहल्लेणं सव्वमणिमईअच्छा तीसेणंमणिपेढि

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

तीहांमोटी१कदेवसिम्पाकही तेहतुंवर्णनकीजइ तेकिमभगवंतनिइंमकहछइ गौतम तेदीपतेनामेंसामारेंभगवंतेकहातेह२

थाएहंवरिएळ्ठणंदेवसएलीछेपणत्ते वएत्तंसिकेणठ्ठेणंसंतेएवंवुच्चइ गोयमा दीवेणंदीवेबहेहिं

घणाकमल जाजगइंगोतमवर्ननिकरवोकोइवरूविसेषतेह नाप्रजावुछइतेमाटइं गौतमकहीइंतभगवंतो सास्वतुंएहवुंनामछें किहांभगवन लवणद्वीपनासुसुस्थित

रवुड्ढाइंउप्पलाइं जावगोयमा पभासेतेणट्ठेणं गो जावणिच्चेकहिणंभंते सुट्ठियस्सलवणाहिवइ

नामें राजधानीकही गौतम दीपथकीपश्चिम त्रीजाअसंख्यातामुंकी जोअनेरूंलवणसमुद्रमा

स्स सुट्ठियानामंरायहाणीपणत्ता गोयमा दीवस्सपच्चच्छिमेणंतिरियमसंखिज्जेजीवअन्नंमिलवणेस

विंतिहां बारसहस्सयोजनजइइं तिहांसुस्थितदेवतानीराजधानीजांलगेंसर्व रमेंत्तसेंकही वर्णनुसत्नमिलोवाजोग्पछेतिहांसुस्थितदेवता माकेर२ किहांभगवन जंबूद्वीप

मुद्दे बारसजोयणसहस्साइं उगाहित्ता एवंतहेवसव्वंनायव्वा जावसुट्ठिएविदेवे२ कहिणंभंते जंबूदी

ना चंद्रदीपनांमदीपकह्या गौतम जंबूद्वीपनामेरूपर्वतथकीपूर्वदिसिं लवणसमुद्रइं

वगाणंचंदाणंचंददीवाणामंदीवापणत्ता गो जंबूदीवेदीवेमंदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमेणंलवणसमुद्दं

बारसेंजोजनअवगाहीजइइंतिवारें तिहांजंबूद्वीपनाचंद्रमाना चंद्रनामइं दीपकह्या जंबूद्वी

सि बारसजोयणसहस्साइं उगाहेत्ता एत्थणंजंबूदीवगाणंचंदाणंचंददीवानामंदीवापणत्ता जंबू २१७

पताइं साडंत्रघ्यासीयोजन पंचाणवयाध्यालिसीया तागयोजनजलमइंएमजाणेवोछइ ऊपरअजजथकीजे

दीवंदीवंतएणंअद्धेकूणणाउइजोयणाइं चत्तालीसंचपंचणउतिभागेजोयणस्स ऊसियायजलंत २

वणसमुद्रथकी छइंकोसऊजलथकीछइं बारसहस्सयोजनलांबपणइं पिहूलपणइं घणेसमोरमणिकतेउप

ओलवणसमुद्दं तेणंकोसेऊसियाउजलंताओबारसजोयणसहस्साइंआयामविक्खंभेणं बहुसमरम

रिप्रासादवतंसक बासठिजोजननोऊंचो घणोमध्यभागमणिपिठकाछेंयोजननी जांलगइंसींहासनसपरिवारपिणकहेंवा

णिज्जपासायवडिंसकाबावट्ठिजोयणाइं बहुमज्झमणिपेढियाओदोजोयणियाओजावसीहासणसा

ऊंचो तिमजअर्थकहेंवोएहवइनामकिमजेमाटइंतानीमोटीघणीवाविछइतेहनीप्रतेकइं चंद्रमाएहवइंनामइं घणोजसलचंद्रमानोवर्ण महर्द्धिकमोटीपरि

परिवारासीणियव्वा तहेवअट्ठ गोयमा बहूसुखुड्डाखुड्डियासुबहुहिंउप्पलाइंचंदवणाभाएचंदायपभा

छिनाधणी एहवापल्योपमनीथि आवइछइंवसइंछइं तेहनेतिहांप्रतेकइं२ च्यारसहस्ससामानिकदेवना जांलगइंचंद्र तिनइं

देवामहिढीया जाबपलीओवमाट्ठितीयायपरिवसंती तेणंतत्थपत्तेयं२ चउन्हंसामाणियसाहस्सीणं जा

द्वीपनादेवतानीराजधांनी अनेराघणायोतिषीनादेवताअनइंदेवांगना तेहनोआधिपत्यपणोकरतांजांलगइंविचरइं

वचंददीवा चदायणरायहाणीणंअणेसिंचबहूणंजोइसियाणंदेवाणयदेवीणयआहेवच्चंजाव

तेमाटेंगौतम चंद्रद्वीपनामकहेंवो जांलगाइंनित्यछइं किहांभगवन जंबूद्वीपनादेवता चंद्रमानी राजधांनीकिहांकही

विहरंतीसेतेणट्ठेणंगोयमाचंदद्दीवाजावणिच्चाकहिणंभंते जंबूद्दीवगाणंचंदाणंदाणुनामराया

गौतम चंद्रद्वीपथकीपर्वइं त्रीजाअसंख्याताद्वीपमुंकीनेअनेरोजंबूद्वीपैं बारसहसयोजनअवगाहीनइं

हाणीतोपणत्ताग्गो चंदद्दीवाणंपुरच्छिमेणंतिरियंजावअण्णमिजंबूदीवे२ बारसजोयणसहस्साइं

तेतिहांचंद्रराजधांनीछइं तेचेव पइंचंद्रद्वीपदेवताकू किहांभगव जंबूद्वीपमां सूर्यनासूर्यद्वीपकह्या तेकेहा

निश्चैप्रमाणजोज छिवतछइं न

ओगाहित्ता तंचेवपमाणंजावमहीड्ढीयाचंदादेवा२ कहिणंभंतेजंबूद्दीवगाणंसूराणंसूरदीवाणामंदीवा

गौतम जंबूद्वीपना मेरुपर्वतथकी पश्चिमदिसइं लवणसमुद्र बारसहसयोजन अवगाहीनें तिमजसर्व

पणत्ता गो जंबूद्दीवेदीवेमंदरस्सपव्वयस्सपच्चच्छिमेणंलवणसमुद्दंबारसजोयणसहस्साइं ओगाहित्ता

ऊंचपणो जाडपणो पिहुलपणोवेदिकावनखंडभूमीभागतिमजवर्षाणवुं जांलगेंदेवतारमेंछइं तिमजप्रमाणजाण

भासादचंतसकनो वो

तंचेवउच्चत्तंआयामविक्खंभेणंवेदियावणसंडाभूमीभागेजावआसयंतीपासायवडिंसगाणंतंचेवप

मणिपीठका सिंहासनपरिवारसहित नामनोअर्थकहेंछइं वाविउत्पलजसूर्यनी तथासूर्यनामदेवताजांजलगइंराजध

कहेंवो प्रासादछेतेमाटेंसूर्यद्वीपकहीयैंछइं नीपणेताना

माणंमणिपेढियासीहासणंसपरिवाराअट्ठोउप्पलाइंसूरप्पभाइंसूराइंएत्थदेवाजावरायहाणीओसा।

द्वीपथकी पश्चिमइं अनेरइंजंबूद्वीपइं२ थाकतोसर्वतिमजजांलगइंसूर्यदेवतावसेंछइं तेमाटइंसूर्यद्वीपकहीइं कि

हांभगवनलवणसमुद्रमांहिला

काणंदीवाणंपच्छिमेणंअण्णमिजंबूद्दीवेदीवेसेसंतहेवजावसुरादेवाकहिणंभंतेअब्भिंतरलावणगाणंचं

चंद्रमानाद्वीपक गौतम जंबूद्वीपमेरथकी पूर्वे लवण समुद्रबारसहसयोजन अवगाहीइं तिहां अभ्यंतर

ला

दाणंचंदीवापणत्ताणो जंबूमंदरपव्वयस्सपुरच्छिमेणंलवणसमुद्दंबारसजोयणसहस्साइंओगाहेत्ताएत्थ

लवणनाचंद्रमाना चंद्रनामाद्वीप कह्या जिमजंबूद्वीपनाचंद्र द्वीपकह्यातेमकहेंवा एतलोविशेष

णंअब्भिंतरलवणगाणंचंदाणंचंदादीवाणंदीवाणामंपणत्ता जंबूदीवगाणंचंदानहाणाणियच्वा न

राजधांनी अनेरोलवणसमुद्रथाकतोसर्वतिमज इंमलवणसमुद्रमांहिंजांसूर्यद्वीप लवणसमुद्रबारसहस

वरंरायहाणीओअण्णमिलवणेसेसंतंचेवएवंअब्भिंतरलवणगाणंसूराणंविलवाणं समुद्दा

योजनछइंराजधांनी तिमजसर्वराजधांनीकहेंवी किहांभगवनबाहिरलावणना चंद्रद्वीपकह्या धातकीखंडनइं

बारसजोयणसहस्सायतहेवसव्वरायहाणीओविकहिणंभंतेबाहिरलवणगाणंचंदाणंचंददिवाप

इंद्वीपांतथकीसाढीअगणीसीयोजनपंचाणवअयोजन एतलोपणीधीजेंचोरीसेंछइं लवणसमुद्रथकी

णत्ता धायइसंडदीवंतेणअट्ठेणंकुणणपंचाणउईसाणाजोयणसहस्सकासियालजंताओलवणसमुद्दं

बेकोसनंबारीसइंछइं बारसहस्रयोजनलांबपणइंविस्तारपणइंछइं पद्मवरवेदिकाछे वनखंडछ इं घणोसमोरमणीकभू मीभागछइं
तेणंदोकोसेऊसियाबारसजोयणसहस्साइंआयामविक्खंभेणंपउमवरवेइयावणसंडाबहुसमर
मणिपीठकाउपरिसिंहासनसपरिवारछइं तिमजअर्थ राजधानी पोतानाद्वीपथकी पश्चिमइं
मणिज्जेभूमिभागेमणिपेढीसीहासणंसपरिवारा सोचेवअट्ठोरायहाणीओसिगाणंदीवाणंपच्चत्थिमेणं
तीवारअसंख्यातासमु द्रपछी अनेरइंलवणसमु द्रइं तिमजसर्वकहेवुं किहांएगवनबाहिरलाजलवणना समुद्रथकी सूरयद्वीपकिहांक ह्या
तिरियमसंखिज्जेअन्नंमि लवणसमुद्दे तहविसवकहणंसंतेबाहिरलावणाणसूराणंसूरदीवा
लवणसमुद्रनें पश्चिमनीवेदिकानइंअंतइं लवणसमुद्रथकी पूर्वइं बारसहस्रयोजन धातकीखंड
पणत्ता लवणसमुद्देवपच्चत्थिमिल्लाओवेइयंताओलवणसमुद्दंपुरच्छिमेणं बारसजोयणसहस्साइं
द्वीपनेंअंतइं सातंअट्ठासीयोजन आलीसीयापंचाणुभागघाटेचपणइं लवणसमुद्रमां बेइंकोस
धायइसंडदीवंतेणंअट्ठासीजोयणाइंचत्तालीसंचपंचणउइभागेजोलवणंसदोकोसे
सऊंचाज बिजोसर्वथाक ओलगैंराजधानी पोतानाद्वीपथकी पश्चिमेंतीवाअसं ख्याता द्वीपसमुद्रमुंकीनेंअनेरेंलवणस मुद्रथकी ॥ तोतिमज॥
ऊसियासेसंतहेव जावरायहाणीओसगाणंदीवाणंपच्चत्थिमेणंतिरियमसंखेज्जेलवणेचेवचार २१९

मुद्रइं बारसहस्रयोजनजाईइंतिहांराजधानी आव्यइंसर्वकहिवो किहांभगवन धातकीखंडनाचंद्रमानाव चवनइं बारद्वीपकह्या गौतम धातकीखंडथ
सजोयणतहेवसव्वंरायहाणीयओकहियंधायइसंडदीवगाणंचंदाणंचंददीवापण्णत्ता गो धायइसंडस्स
कीपूर्वनीदिस द्वीपइं वेदिकाथकी कालोदधिसमुद्र बारसहस्रयोजन अवगाहीनइंजइइं तिहां धातकीखंड
दीवस्सपुरच्छिमिल्लेओवेइयंताओकालोयणंसमुद्दंबारसजोयणसहस्साइंओगाहित्ता एत्थणंधायइसंड
द्वीपनाचंद्रमाना चंद्रनामाद्वीपकह्या सघलइंबोधफेर बैंकोसपाणीथीऊंचाबें बारसहस्रयोजन तिमजविस्कंभे
दीवगाणंचंदाणंचंददीवापणत्ता सव्वओसमंतादोकोसाऊसियाजलंताओबारसजोयणास
परिस्केपपरिधि भूमिभाग प्रासादवतंसकमाहेंमणिपीठका सीहासनपरिवारसहित अर्थतिम ज
हस्साइंतहेवविक्खंभोपरिक्खेवोभूमिभागोपासाइवडेंसयामणिपेढियासीहासणपरिवारा अट्ठोत
राजधानीआपणाद्वीपथकी पश्चिमेंअनेरा धातकीखंडद्वीप बीजोसर्वथाकतोपाछलीपरेंजाण वो एमधातकीखंडनासूर
हेवरायहाणीओसकाणंदीवाणंपुरच्छिमेणंअण्णंमिधायइसंडेदीवेसेसंतहेव एवंधायइसंड
र्यद्वीपविचारोंछ एतलाधातकीखंडद्वीपथकीपश्चिमइं कालोदधिसमुद्र बारसहस्रयोजन तिमजसर्व
णविसूराणवरंधायइसंडस्स दीवस्सपच्चत्थिमिल्लाओकालोयणंसमुद्दंबारसजोयणतहवि

पाछलीपरेंराजधानीसूर्यद्वीपथकी पश्चिमइं अनेरइंधातकीषंडेंद्वीपराजधानीछइं तिमजसर्वकहेंवा किहांअगरन

जिवाभिगमं सव्वं जावरायहाणीसूराणंदीवाणंपच्चत्थिमेणं अण्णंमिधायईसंडेदीवेतहविकइणंभंतेका
२२० कालोदधिनाचंद्र चंद्रद्वीपकह्या किहां गौतम कालोदधीसमुद्रथकी पूर्वनीदीसइं
माना
लोयगाणंचंदाणंचंददीवाणामंदीवापन्नत्ता गोकालोयणस्ससमुद्दस्स पुरच्छिमेणंत्ता
वेदीकाथी कालोदधिसमुद्रथकीपश्चिमइं बारसहसयोजनअवगाहीनइं तिहांकालोदधीमाचंद्रमानाद्वीपछइं
जइइं
इंवईयंतानुकालोयणंसमुद्दंपच्चत्थिमेणंबारसयजोयणंउगाहेत्ता अत्थणंकालोयणंचंदाणं
चोफेरसघजइं वइं कोसउंचापाणीथकाछइं एकतोसर्वतिमज जोलगइंराजधानीपोतानीछइं

चंदाणंचंददीवोसव्वतुसमंतादोकोसाऊसियाजलंतातुंसेसंतहेवजावरायहाणीतुंसगाणं
दीपथकीअनेराकालोदधिसमुद्र बारसहसयोजनअवगाहीनइंजाइइं जोजगेंचंद्रमादेवतावसइंइमसूर्यद्वीप
तिमजसरवकहवा
दीवपुरच्छिमेणंअण्णंमिकालोएणसमुद्देबारसजोयणतहेवकाढं जावचंदादिवाएवंसूराणाव
काजो
दधीइंजेंतेथकीपश्चिमइं बारसहसयोजनअवगाहीनइंजइइं तिमजराजधानीपोतानाद्वीपथकी पश्चिमइं

एवरंकालोयणंपच्चत्थिमेणंबारसजोयणसहस्साइंउगाहेत्ता तहेवरायहाणीतुंसीणाणंदी २२०

अनेराकालोदधिसमुद्रइं तिमजसर्वकहेंवो इमपुखरवरद्वीपनें पूर्वनीदिसैंवेदिकाथीपुखरवरसमुद्र
वाणंपच्चत्थिमेअण्णंमिकालोयणंसमुद्देतहेवसव्वंएवंपुक्खरवरदीवस्सपुरच्छिमित्ताणंअवेइयं
बारसहसयोजनेचंद्रद्वीप अनेरापुखरवरद्वीपेराजधानीतिमजकहेंवी इमसूर्यनाद्वीप पुखरवर
तातुंपुक्खरसमुद्दंबारसजोयणचंददीवस्सपुक्खरवरदीवरायहाणीउतहेवएवंसूराणविपु
वरद्वीपथकी पश्चिमनीपासानीवेदिकाथीपुखरादिकसमुद्र बारसहसयोजन अवगाहीनइंतिमजसर्वक
क्खरवरदीवस्सपच्चत्थिमित्तातुंवेइयंतातुंपुक्खरोदंसमुद्दंबारसजोयणसहस्साइंउगाहेत्तातं
हेंवुंजोजगेंराजधानी द्वीपनी समुद्रनी राजधानीकुइंर एमाहेंजीपासेंद्वीपएकबाहिरलीणसाइंद्वीपइंम

हेवसव्वंजावरायाहाणीतुंदीवगाणंसमुद्देसामुद्दगाणसमुद्देवेवएगाणंअब्भिंतरपासेणाणंबा
राजधानीतेहनी द्वीपनेंनामेंसमुद्रसमुद्रनेंनामेंराजधानीसरिखी समुद्रसरिखानामकराराजधा एहवोनामकहेंवें
नामकहीइं नीकहीइं
हरपासेरायहाणीतें दीविच्चगाणंदीविसमुद्दगाणंसमुद्देसुसरिसनामएसुईएसुइमेनामाअणगं
जंबूद्वीपइं लवणसमुद्रें धातकीषंडद्वीपें कालोदधीसमुद्रेंद्वीपें खीरवरद्वीपेंघृतवरद्वीपें अरुणवर कुंडलरूचक
तंद्याजंबूदीवेलवणसमुद्दे धायइकालोदधीपुक्खरवरखीरघयखवयणंदीअरुणवरेकुंडलिरु

आभरणनाम वस्त्रनो नाम गंधनाम उत्पलनो नाम तिलकनो नाम पृथिवीनो नाम रत्न वर्णधरहनो नाम नदीनेनो नाम वृक्षनो नाम वक्षारपर्वतनो नाम कल्पनेनो नाम

थए आभरणवत्थगंधउप्पलतिलयपुढविनिरयणवासहरदहनईओविजयावक्खारकप्पिंदा

इंद्रने नामे पुरने नामे मंदिरने नामे आवास कुरु नक्षत्र चंद्रने नामे सूर्यने नामे देव नामे इंमसूर्य नामे एकरूप केटलासवा वेलंदीपना चंद्रमानो दीपकह्या

पुरमंदरमावास कूडानक्खत्तचंदसूराय एवं जाणियव्वं कहण्णं भंते दीवगाणं चंदाणं चंददीवा

गोतम देवद्वीपइं देवारिकसमुद्रइं बारसहस्स जोजन अवगाहीने तेणेअनुक्रमे पूर्वनी वेदी

णामं दीवा पण्णत्ता गो देवदीवस्स देवोदं समुद्दं बारसजोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता तेणेव कमेणं पु

कानी अंतरइं धारा राजधानी पोतानादीपथकी पूर्वदिसि देवोदीकसमुद्रइं असंख्याताजोजननेसहस्से

रच्छिमिल्लाओ वेइयंताओ जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं पुरच्छिमेणं देवोदं समुद्दं असंखिज्जाइं जो

अवगाहीनें देवदीपना चंद्रदीपना चंद्रनामा राजधानी कही थाकतो सर्व तिमज पाछली परइं कहेवो

यणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थ णं देवदीवगाणं चंदाणं चंदा नामं रायहाणीओ पण्णत्ताओ सेसं तं चेव दे

इं मसूर्यदीपनी इमजएतलोविसेस पश्चिमनी वेदिकाताइं पश्चिम दिसैं सर्व कहिवें तिमज पाछली परइं जाणवुं सहइं

राजधानी

वदीवचंदा दीवा एवं सूराण वि णवरं पच्चत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ पच्चत्थिमेणं च भाणियव्वा तेसु

हवइं किहांतगवजरे वसमुद्रथी चंद्रनो नामाद्वीप कह्या गौतम देवोदकथी पश्चिमनी दिसइं वेदिका

चेव समुद्दे कहण्णं भंते देवसमुद्दगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता गो देवोदगस्स समुद्दस्स पच्छिमिल्लाओ वे

नै अंतरे देवोदक समुद्रथकी पश्चिमैं बारसहस योजन अवगाहीनें एतलै अनुक्रमइं जोजेंस घलीराजधानीइं आपापणाद्वीपथकी

मइं सूर्यना द्वीप

इयंताओ देवोदगं समुद्दं पच्चत्थिमेणं बारसजोयणसहस्साइं तेणेव कमेणं जाव रायहाणीओ सगाणं दीवाणं

पश्चिमइं होइं देवोदगसमुद्रइं असंख्याता समुद्र सहस योजन अवगाहीनइं ईहां देवोदगसमुद्रनी चंद्रानामं

तिहां

दीवाणं पच्चत्थिमेणं देवोदगं समुद्दं असंखिज्जाइं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं देवोदगाणं चंदाणं

द्रमानी राजधानी कही तिमजइं मस्स नाद्वीपक हेवा एतलोविशेष देवोदकथकी पश्चिमनी वेदिकानइं अंतरइं देवोदकसमुद्र

चंदाओ णामं रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं चेव एवं सूराणं वि णवरं देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ दे

बारसहस्स योजन रणी अवगाहीनइं राजधानी छइं आपापणा द्वीपथकी पूर्वदिसइं देवोदकसमुद्र असं

वोदगसमुद्दं बारसजोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता रायहाणीओ सगाणं सगाणं दीवाणं पुरच्छिमेणं दे

थएते योजनेराजधानी छइं इमनागद्वीप यक्षद्वीप भूतद्वीप ए द्वीप समुद्रथकी असंख्या किहां तगवलसंयंजर

१ २ ३ ताजगैकहेंवा मणद्वीपना चंद्रमाना

वोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं एवं णागे जक्खे भूए वि चउण्हं दीवसमुद्दाणं कहण्णं भंते स

चंद्रनामा दीपकह्या स्वयंभूरमणनामा द्वीपथकी पूर्वनी वेदिकानइं अंतरइं संयंभूरमण
यंभुरमणदीवगाणं चंदादिवाणमदीवापणत्तासयंभुरमणमदीवस्सपुरच्छिमीलाओवइयंताओसयं
समुद्र बारसहस्सयोजन तिमजराजधानी आपापणा द्वीपथकी पूर्वइं राजधानी छइं
भूरमणोदगंसमुद्दं बारसजोयणसहस्साय तहेवरायहाणीओसगाणंरदीवाणंपुरच्छिमेणंसयंभुर
स्वयंभूरमणोदकसमुद्रइं असंख्याता योजन तिमजराजधानीवषांणवीइंम रमणसमुद्र पश्चिमनी वेदिकांतइं तिम
सूर्यनाद्वीपस्वयंभू थकी सराजधानी
मणोदगंसमुद्दंअसंखेद्याइंजोयणंतहेवएवंसूराणविसयंभुरमणस्सपच्छिमिल्लाओवेइयंताओराय
आपापणा द्वीपथकी पश्चिमइं छइं स्वयंभूरमणोदकसमुद्रइं असंख्याता योजनथाकतोतिमजकिहांवे लगवंन
स्वयंभूरमणसमुद्र
हाणीओ सकाणंरदीवाणंपच्चच्छिमेणं सयंभूरमणोदगसमुद्दं असंखेज्जासेसंतेवकहणंभंतेसयंभु
नामइंसमुद्र पूर्वजीवेदिकानइं अंतरइं स्वयंभूरमणसमुद्रथकी पश्चिमनीदिसें बारसहस्रयोजन अवगाहीनें
रमणसमुद्दकाणंपुरच्छिमिल्लाओ वेइयंताओसयंभुरमणंसमुद्दंपच्चच्छिमेणं बारसजोयणसहस्साइं
जइइं थाकतोसर्वणानजीपरैंकहीइं राजधानीआपणा आपणाद्वीपथकीपूर्वइंहोइं स्वयंभूरमणसमुद्र
उगाहित्ता सेसंतहेवएवंरायहाणीओसगाणंरदीवाणंपुरच्छिमेणंसयंभुरमणंसमुद्दंअसंखेज्जाइंजो २२२

असंख्यातासहैंस योजन अवगाहीनइं तिहां स्वयंभूरमणसमुद्रमांजगेंसूर्यद्वीपनासूर्यनामइंदेवताछइंमवंद्रसू
र्यद्वीपनासर्वअजाणवाकगमछइं तेमाटेंविस्तारीनथीकह्याछइं संगवनलवणसमु
यणसहस्साइंउगाहित्ता अच्छिणंसयंभुरमणंजासूरादेवा अच्छिणंभंतेलवणेसमुद्देवेलंधरानिबाणा
द्रइं वेलंधरनामइंनागराजाअषतिवानां विजातजलचरजी तासवुथीजीव पछइंसंजगवंत तिहांलवणसमुद्र बइंवेलंधरनांमानागराज
मकल्पाछइंसएतिजीवविशेष वविशेष विशेष छइं नइंविबइं
गंयाराअषतिवासहातिवा विजातित्तीप्रासवहीतिवाहंतीअच्छजहाणंभंतेलवणसमुद्दे अच्छिवेलंधा
देवताछइं तेकेहवाकह्याछइं जिमतराचंलवणसमुद्रइं बइंवेलंधरनामेंदेवताछैं अग्घाजलचरवि विजाजलचर
शेष
राइंवानागराया अषातिवासहातिवीजाति अच्छिजहाणंभंतेलवणेसमुद्दे अच्छिवेलंधराइंवा अग्घाजल
जीवीशेष हासवुणंजीववि तिमहासवुठीजी तिमबाहिरलेद्वीपसमुद्रे बेइंवेलंधरातिदेवतानागराजअ अग्घाजलच
शेष वविशेष मुप रजीवविशेष
चरविसेषविजातिप्रासवुहीइवातहाणंबाहानेसुतिसमुद्देसु अच्छिवेलंधराइंवानागराया अग्घाइंवा
संहजलचरजी बीजाइंजीव हासवुठीजीव नागोतमएअर्थ लवणसमुद्रइं सुंउछितोदकउंचो कइंअतिराकारीउदकवैं
वविशेष विशेष विशेष समर्थनथी नगवंत उदकछइं कइंअखुभितजलछइं
सहाइंवीजा तियाइंवाप्रासवहीइंवा नोइणठेसमठे लवणेणंभंतेसमुद्देकिंउसितोदगेपछिडोदगेअखुभि
गोतम लवणसमु उंचोउदक पिणप्रतिराकारीउदक खुभितजल पातालकलसाथति लवणसमुद्रउं
द्रइं छइं नथी छइं पणिअखुभितजल चोउदक छइं
यजलेगि लवणेणंसमुद्देऊसितोदगेपछिडोदगेखुभियजले नोअखुभीयजलेजहाणंभंते लवणसमुद्देऊं
श्री॥जिनिनमवन॥

अनेंभस्मितउदेकनवी अनेरकुस्तितजल नोबाहिरलेसमुद्रे सुंउमिलकसमुद्रेंव कइंप्रत्तिशेदिककइं रकुस्तितजलकइं
नवी दककइं

जीवाभिगमः
२२३
मितोदगा नोपबिडोदगा नोखुभियजले तहाएबाहिरगासमुद्दा किंऊस्सितोदगापबडोदगा खुभीयजला:
केंअरकुस्तितजल गौतम बाहिरलेसमुद्रे उसितउदकनवी प्रस्थितउदककइं रकुस्तितजलनवीपाता नावबीअणरवोसोजलव
लवइ म जलकजसअ इजजेकूरीरूलीवें
अखुभीयजला णो बाहिरगाणंसमुद्दा नोउसतोदगा पबडोदगा नोखुभीयजला अखुभियजलापुण्णप
स्वभमाणेंकरीजलपूर्णेकइं स्वाधइंवोसहमांनविशेषउसतणाकइंसमाभरणस्याबेंजेहनी वइलगवनलवणसमुद्रेंघणाउदारवला
हरानस्याकइंउनाइंतिमत पतलीसतावेंपरिमलीनस्याबेंसमासस्यघडानीपेरेरहेबें हकमेघसंस्वेदातीसंमूर्छिमवांनअ
माणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति अत्थिणं भंते लवणसमुद्दे बहवे उराला बाहका
त्तिमुखकुइंकइंतिवा छिमकइंपकइंवांणी लावर्षावरसेंबें जलवणसमुद्रेंकथ उदारमेघसमूर्छीनअत्तिमुखहोइकइंतथा
रइंपछीसमक वरसइंकइंगोतम जिमतगवन णा समर्छाइं
संसेयंति समुच्छंती वासंवासेतिहंता अत्थि जहणंभंते लवणसमुद्दे जहा वे उराल बलाहका संसेयंती
पकइंपांणीवरसइंकइं तिमबाहिरले समुद्रेघणा उदारमेघसमूर्छीवानअत्तिमुख. कइंनथासंमूर्छिमइं तथावरसइंकइं
समुच्छंती वासंवासेति ह बाहिरएसु वि समुद्दे सबलेहवे उरालाहका संसेयंती समुच्छंती वासंवासं
गोतम एअर्थसमर्थनही तेसामाटेंभग इमकहोकइं बाहिरलासमुद्र पूर्णप्रमांणप्रमाणस्यारहेंबेंविशेषभरस्यारहेबें
वन
ति णो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा: २२३

समासस्याघडानीपेरेंरहइंकइंरहइं तेकिम गोतम बाहिरलेसमुद्रे घणाउदकयोजनया जीवना पुद्गल
कइं
वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति गो बाहिरएसुणं समुद्देसु बहवे उदगजोणीया जीवा य पोग्
उदक पणइं उपकमइंजायेंकइं विनिकृतंना उपजेंकइंएकजातिवेंअनेरा गोतम इमकही बाहिरलासमु द्राउ
उपजेंतेमाटइं उ इ
गलाए उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति से तेणट्ठेणं गो एवं वुच्चइ बाहिरगाणं पूर
स्यासमाघडानीपरइंरहइंकइं लवणसमुद्रइं लगवलकेतलोउंधपरिवृद्धिवीतरागेकही गोतम लवणसमुद्रनें
समुद्दा पुन्न जाव समभरघडत्ताए चिट्ठंती लवणेणं भंते केवइयं उव्वेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते गो लवणस्स
कइंपासे पंचाणउ पंचाणउ प्रदेशमुंकीनइंएकप्रदेशेंउंधपरीवृद्धिकइंपकइंएमअनुक्रमेंसघलइंवधइ एमपंचाणउवालाग्र
रतालगइंउंधपरिवृद्धिकीजइं
णंसमुद्दस्स उभउ पासं पंचाणउइं पदेसे गंता सोलसपदेसं उव्वेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते पंचाणउइं वाल
मुंकीनें एकवालाग्रनीवरिवृद्धिविशेष इमपंचाणुवालाग्रजोईनइंएक इमपंचाणुलाषपरिवृद्धकरीनइंएकजूकापंचा
नीपरिवृद्धिकीजइं लाषवधारीइं णजूकाएकयव
गाइं गंता वालग्गं उव्वेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते एवं पंचाणउइं लिक्खा णं गंता लिक्खं उव्वेहपरिवुड्ढीए जवमज्झे अं
मध्यप्रजवमध्यएकअं एकवाघ९५वहेंथेंएकधनुष गाउएकसोगाउएकसोगाउएकंकीनें एकसहेंसयोजनइमचधतां
गुल९५अंगुलेंएकवहेंथ ९५धनुषेंएकगाउ९५ एकसहसयोजनप्रमाणउंधपरिवृद्धिकरी
गुलविहत्थिरयणीकुच्छिधणुउव्वेहपरिवुड्ढीए गाउयं जोयणसयं जोयणसहस्सं जोयणसहस्साइं गंता जोयण

वेवहेढे

पंचाणउइसह स्सं गंतूणं जोय णाणउसयोवि जणसहसमा लवणोणुग्रा होयहोई पांचाणउईवा वोगंतूणंजो यणाणउस यावि जोयण सेगंजवलोज गाहेणमुल यथा२

उत्सेध अंगुलें परिवृद्धि पणे ते लवणसमुद्र केतलुं उंचपणे परिवृद्धि कहेतां कह्यो पंनता गोतम लवण समुद्र बइ पासे
कहेतां कह्यो

स्सं उव्वेह परिवुड्ढीए पण्णत्ते लवणे णं भंते समुद्दे केवतीयं उस्सेह परिवुड्ढीए पं० गो० लवणस्स णं समुद्दस्स उभ-

पंचाणुं प्रदेश अंगुल कीजइ सोल प्रदेसनी उंचपणइं वधारीइं इम वधारतां थकां इम अनुक्रमे जोजन पंचाणुं

ओ पासं पंचाणउइं पदेसे गंता सोलसपदेसे उस्सेह परिवुड्ढीए पण्णत्ते एतेणेव कमेणं जाव पंचाणउ-

जोजन सहस्र जोइइं तिवारइं सोलसहस्र जोजन परिवृद्धि उंचपणइं कह्यो इम वीस्तार थयो तेह थकी लवण
समुद्र

उइं जोयणसहस्साइं गंता सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेह परिवुड्ढीए पण्णत्ते लवणस्स णं भंते समु-

नगवन केतलो मोटो गौतम थी कह्यो गोतम लवणसमुद्र थकी बइ पासें पंचाणुं सहस्र जोजन लगि गोतीर्थ क्षेत्र कह्यो

द्दस्स केमहालए गोतित्थे पण्णत्ते गोयमा लवणस्स णं समुद्दस्स उभओ पासिं पंचाणउइं जोयणसहस्साइं गो-

लवणसमुद्र नगवन केतलुं क्षेत्र गोतीर्थ विरहित गोतीर्थ वर्जित क्षेत्र कह्यो गौतम लवणसमुद्र

तित्थे पण्णत्ते लवणस्स णं भंते समुद्दस्स केमहालए गोतित्थविरहिए खेत्ते पण्णत्ते गो० लवणस्स णं समुद्द-

दस सहस्र जोजन गोतीर्थ रहित क्षेत्र नगवंतें कह्यो लवणसमुद्र नगवन केतलुं मोटुं विस्तार उदकमाल जि
शिखा की उदक चउ पास बालागें

स्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिते खेत्ते पण्णत्ते लवणस्स णं भंते समुद्दस्स केमहालए उद- २२४

केतलुं उदकमाल कहीइं दस सहस्र जोजन उदकमाल पाणीनुं विस्तार एह लवणसमुद्र नगवन किसे संस्थाने कह्यो गौतम गोतीर्थ संस्थाने
शिखा कही संस्थित पाणी

गमाले पण्णत्ते गो० दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते लवणे णं भंते समुद्दे किंसंठिए पण्णत्ते गो० तच्छसंठिए

पीवानें संस्थाने बधतो स्थानें सम छीपनी नाभ पुटनी संस्थान अश्वस्कंधनें संस्थाने वलभीनें संस्थाने बाटला बलयाकार संस्थानें करी सं
बइ नूतन हीउं चो विस्तार माटे उंचो सोलसहस्र माटइं वलभी घरनें संस्थानें स्थित कहीउ

नावासंठिए सिप्पिसंपुडसंठिए आसखंधसंठिए वलभिसंठिए वट्टवलयागारसंठाणसंठिए पण्णत्ते लवणे

लवणसमुद्र नगवन केतलो चक्रवाल विष्कंभपणइं कह्यो केतली परिधि कही केतलो ऊंडपणो कहीउ केतलो सर्व उंचपणो कहीउ

णं भंते समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं केवइयं उव्वेहेणं केवइयं उस्सेहेणं केव-

गोयमा लवणसमुद्र नगवन बइ लाख जोजन प्रमाण चक्रवाल विष्कंभपणइं पनरलाख जोजन परि-

इयं सव्वग्गेणं गोयमा लवणे णं भंते समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पनरस जोयणं

एकासी सहस एकसो उगुयाली कांइक ओछो अधिक परिधि कही एक सहस्र जोजन ऊंडपणइं कहिउ सोल सहस्र जोजन

सहस्साइं एकासीयं च उयालं किंचि विसेसूणे परीक्खेवेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं सोलस जो-

उंचपणइं कहीउ सतरसहस्र जोजन सोलसहस्र उंचो सहस्र ऊंडो एवं सिमिलीने जोतां नगवन लवणसमुद्र बइ लाख जोजन
जोजन सर्वाग्रपणे कहीउ

यणसहस्साइं उस्सेहेणं सत्तरि जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते जइ णं भंते लवणसमुद्दे दो जोयण

चक्रवालविष्कंभवडं पन्नरलाषयोजन प्रमांण एकासीहजारयोजनउपरि एकसोछुयालीस

 सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणंपन्नरसजोयणसयंसहस्साइं एकासीयंचसहस्साइं सयंचऊयालेकिं

कांइंकमसनपरिरखेप एकसहसयोजनउंडपण सोलसहसयोजनप्रमांणउंचपणइं सितेरसहसयोजन सर्वाग्रउंड
कहीउं इवडइं ढइंइमश्रीवीतरागेंकहीउं पणइंकहीउं

विसेसूणेपरिक्खेवेणंएगंजोयणसहस्सं उव्वेहेणं सोलसजोयणसहस्साइंउस्सेहेणंसतरजोयणसा

किंमसागवनलवणसमुद्र इं जंबूद्वीपनैं २ पीडतोनथी जावतोनथी जलेंबवणइंकरीनइंएकोदकपणेंसंघ
तीनथीकरतोतेस्यामाटइंजगचलकहिउ

हस्साइं सव्वग्गेणंपण्णत्ते कम्हाणंभंतेलवणसमुद्दे जंबूद्दीवरनोउवीलेईनोउप्पीलेईनोचेवणंएकोदा

गौतम जंबूद्वीपइं भरतऐरवखेत्रे अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव

णकरेइ गो जंबूद्दीवेणंदीवेणंदीवे भरहेरवएसुवासेसु अरिहंतोचक्कवट्टी बलदेवावा वासुदेवा:

चारणश्रमणजंघा चारणविद्या श्रमण साध्वीश्राविका श्रावकएसभमनुष्यमाद्रिकप्रतिभाराजनीउपेक्षाइंकहिउछइं
चारणविद्याचा चारण धू ऋषभमाद्रिकछइंतेमनुष्यनीतिप्रकृतिमन्याश्री कृतिलइंकप्रकृति

चारणाविज्जाहरा समणासमणीउ सावयासावयाउ मणुयागईलद्दयाएणईविणीयापगईउवसं

पसांतबइप्रकृतिमाणतलाक्रोधमानमायालोभ अल्पीनइंतुसंहीतइंक विनीता तेहनीप्रश्नान तेहनीलोपीनेंत
मदुमार्दवसंपनं घा बलसमफलजंबुकी

ताषगईपयणोकोहमाणमायालोभामउ मद्दवसंपन्ना अल्लीणाभद्दगाविणीयातेसिणंपणिहाएलवण

पनइंपीडतोन जावतोपिणनथी सघलइंएकोदकपणुंनथीकरतो गंगासिंधु रक्तारक्तवती
थी

समुद्देजंबूद्दीवेर नोउवीलेइउवीलेइनोउप्पीलेइनोचेवणंएक्कोदगंकरेइ गंगासिंधु रत्तारत्तवई

एच्यारनदीनाध्यारदेवता महर्द्धिक आंलगें पल्योपमनइंआउखेंवसीछें तेहनीप्रसादश्री आनइं लवणसमुद्रइं

रूसलीलासुदेवयामहिड्ढीयाउजावपलिउवमट्ठियाउपरीवसंतितेसिणंपणिहाए लवणसमु

आंजगेंएकपद जावतोनथी लघुहिमवंतसरी नांमावर्षधरपर्वतनारेचता महर्द्धिकचइं तेहनीप्रतापवइंनथी
करी थी

द्देजावनोचेवणं एगोदगंकरेइ चुल्लहिमवंत सिहरीवासहरपव्वएसुदेवामहिड्ढीयातेसिपणिहा

जावतोनथाहेमवंतऐरण्यवत प्रकृतिंभद्रकतेमा रोहिता रोहितांसी सौवर्णकूला रूप्यकूलाना
क्षेत्रमनुष्य रइंतथा

एहेमवएरणवएसुवासेसुमणुयाए पगइभद्दयारोहीति रोहितंससुवण्णकूलेरूप्पकूलासुसल

देवतामहर्द्धि आंजगेंपल्योपमनाथिति तेहनीप्रताजावीनथीजोप महाहिमवंतप रुपिवर्षधरपर्वतनारेवता महाऋद्धिवं
क करी तोपिणनथी वंतना त

लासुदेवया नवहाद्दीयाउजावपलिउवमट्ठियापणना महाहिमवंतरूप्पिवासहरपव्वएसुदेवामहि

आंलगेंपल्योपमनीथितिनोतेहनीश्री हरीवासरम्यकखेत्रे मनुष्यप्रकृतिंभद्रकतेहनें गाधावई मालवंत परी
श्रीनथीलोपनो आश्रीनइं

ड्ढीए जावपलिउवमट्ठितीयाहरीवासरम्मवासेसुवासेसुमणुयापगइभद्दया गाधावईमलवंतपरी

डिवालिगम
२२८

तावनो हनवैताढ्यप्रवर्तई देवतामहर्द्धिकतेहनी लोपीनइं नथी एकोदक करतो नीषध वासहर देवतामहर्द्धिक लोकवंत पर्वतइं तेहनी इंमी मघलाइंर लोपी नथी मा
तावि सुसुवेयदपव्वएसु देवा महीड्ढीयानीसहानिलवंतेसु वासहरपव्वएसु देवा महड्ढीया सव्वदह
तादेवताकरसा पदमद्रह तिगिछद्रह केसरीद्रहना वासीदेवता महारुद्धिवंततेहनेप्रसावइं मा श्रीनइ नथी लावतो सर्व
वतीसं तीयक्षा पउमदहा तातिगिछकेसरिदहावसाणेसु देवयामहड्ढीयानु तासवणित्तए सु
माहावि अपरपश्चिममहाविदेह देहक्षेत्र अरिहंतचक्रवर्त्ति बलदेव चारणश्रमण विद्याधरश्रमण श्रमणी
वेविदेहेसु अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वा चारणविज्जाहरा समणा समा
श्रावकश्राविका मनुष्य प्रकृतिभद्रक तेहनइं प्रभावनइं लवणस मुद्र जाव तो नथी सीतासीतानदीनादेवता
णीउ यसांवगासाविया उमणुया पगतिभद्दया तेसिं पणिहाए लवणसमुद्दे सीयासीओदगासु सलिलासु देवया
महर्द्धिकतेहनें देवकुरु उत्तरकुरुना प्रकृतिभद्रकतेहनइं लो पीनइं मेरुपर्वतइं देवतामहारुद्धिवं तप्रभावइं नथी जंबूसुदर्शनाइं
मनुष्य
महिड्ढीया देवकुरुउत्तरकुरुसुकुरासीमणुया पगइभद्दया मंदरेपव्वए देवयामहिड्ढीया जंबूएयसु
जंबूद्वीपाधिपति जंबूद्वीपनो अधिपति अनाढितनामइं देवता तेहना लवणनइं पल्योपमनी स्थितें वसइं तेहने प्रभावइं नथी लोपतो समुद्रलवणनामा
दंसणाए जंबूदीवाहिवई अणाढिते नामं देवे जाव पलिओवमट्ठिइए परिवसई तस्स पणिहाए २२८

गौतमसमच क्रवालसन चक्रवालसं स्थानइं संस्थि तबइं।

मर्यादालोपतो नथी झावतो पण नथी लवणसमुद्र जंबूद्वीपनइं नथी पीडतो नथी लोपतो एकोदक नथी करतो तथा वलीअनेरोकारण गौतम लोकनी एस्थिति छै लोकनो एमहि माछै॥
लवणे समुद्दे नो उवीलेइ नो उप्पीलेइ नो चेव णं एगोदगं करेइ अदुत्तरं च णं गो लोगठिई लोगा
जे लवणसमुद्र जंबूद्वीपनें पीडतो नथी लोपतो नथी झावतो नथी एकोदक पणुं नथी करतो एह वी स्थिति लोकनी छै बइं एतलो लवणस मुद्र सरइंश्र
णुभावे जे णं लवणसमुद्दे जंबूदीवं दीवं नो उवीलेइ नो उप्पीलेइ नो चेव णं एक्कोदगं करेइ लवणसमु
तथा बिह नामें द्वीपवारतो वलयाकार संस्था नइं सघलेजवलणसमुद्र वींटानइं रहैछइं धातकीखंडद्वीपभगवन्सुसमचक्र
लवणसमुद्र नी चक्रवालनी कही हवइं धातकीखंडनी अरूपणाकरे छइं।
द्दं धायइसंडे नामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता चिट्ठइ धायइसं
वातनें संखोनें संस्थितछइं किंविषमचक्रवालेंसंस्थि तछइं विणविषमचक्रवालिसंस्थानइं संस्थीतछइं नथी धातकीखंडद्वीप
डे णं भंते दीवे किं समचक्कवालसंठिते विसमचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए धाई ए
भगवनकेतलोचक्रवाल विख्कंभइं केतलो बाहिरलो परिधिकही गोयमा चारलाखयोजनचक्रवालइं
संडे णं भंते दीवे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पणत्ते गो चत्तारि जोयणसयसाय च वे
विष्कंभपणइं करो एकतालीसलाखयपरिरसहजार योजन उपरिनवसइंवपरिएकसठियोजन काइंकाचिरोषऊन
क्कवालविक्खंभेणं एगालीसं जोयणसहस्साइं दसजोयणसहस्साय नवएकसट्ठे जोयणसए किंचिवि

BHAU DAUJI

परिरक्षे पफिरसो कहिउं धातकीखंडएक पद्मवरवेदिकाएकवन खंडें करी सघलें वो धफेर परिवेष्टित छइं वेदिका वन खंड

सेसूणं परिक्खेविणंपण्णत्ते सेणंएगाएपउमवरवेइयाएएगेणं वणसंडेणंसव्वउंसमंतासंपरिक्खित्ते

नो वर्णन करवो धातकीखंडद्वीपें भगवन केतलां द्वारकह्यां विजयनांमा १ वैजयंत २ जयंत ३ अपरा

दोन्हविवण्णओधायइसंडेणंभंते दीवस्सणंभंते दीवस्सकइंदारापण्णत्ता विजएवेजयंते जयंतेअ

जित ४ किहांभगवन धातकीखंड नो विजयनांमइं पहिलो द्वार कहिउं तिमज प्रमाण तिमज राजधानी सर्व इंद्रसिंह समुं कहेवी

पराजये कहण्णंभंतेधायइ ऽसंडस्सविजयनांमादारेपण्णत्ते तंचेवपमाणंरायहाणीउ अण्णंमिधा

च्यार द्वीपनइं अंतरइं अनेरो धातकी खंड राजधा इम च्यार दिसिना द्वार ना देवतानी रा धातकीखंडद्वीपइं भगवन जधानी कहेवी नीनी अवस्था ना कहेवी

इयसंडेदीवेसाचसव्वयालोणियव्वा एवंचत्तारीविदारलोणियव्वा धायइसंडस्सणंभंतेदीवस-

द्वारद्वारनइं इहां एहनइं केतलो अबाधाइं अंतरो कहिउं गोयमा दससहस्सयोजन सत्तावीससहस्सयोजन सातसइं

एणएसणंकेवइयंअवाहाएअंतरेपण्णत्ते गो दसजोयणसहस्साइं सत्तवीसंचजोयणसहस्सा

पांत्रीस योजनअनइं त्रणिकोस एतलो द्वारनी अबाधायइं अंतरो कहिउं धातकीखंडनाद्वीपना

इं सत्तयपणतीसेजोयणंपतिण्णयकोसेदारस्सयअवाहाएअंतरेपण्णत्ते धायइसंडस्साणंभंते

भगवनप्रदेसइं कालोदधिसमुद्रनइं फरस्याछइंहा गौतम तेसुंभगवन कालोदधीसमुद्र धातकीखंडें फरस्याछइं गौतम धात मफर स्याछइं नाप्रदेश

दीवस्स पदेस्साकालोयणंसमुद्दंपुठाहंताफुठा तेणंभंतेकिंधायइसंडेदीवेकालोयणासमुद्दे गो धा

कीखंडनाप्रदेश्अणगुंजानीजंबूद्वीपनी परे धातकीखंडनाजीव चवीनइं तहां मरीनइं कालोदधीसमुद्रइं उपजइं अनाइ इहां कहेवी

यइसंखेनोखलुत्ते कालायणेसाएवं२कालोयणस्सोविधायइसंडेदीवेजीवा उद्दाइत्ता२कालोय

भगवंतकहें गौतम केतलाएकउपजइं केतलाएकनउपजइं इमकालोदधिनाधातकीखंडनाकेतलाउपजइं

णस्समुद्देपच्चायंतिगो अत्थेगइयापव्वयंति नोअत्थेगइयापव्वायंति एवंकालायणेविअत्थेगइया

केतलानउपजइं तेकिमभगवनइमक हीउं जेधातकीखंडद्वीपतेसामाटइं नामकहीइंभगवंतकहइं गौतम धातकीखंडद्वीपतिहांरदेसें२तिहां२घणाधातकीनावनखंड

णेपव्वासेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ धायइसंडेदीवे गो धायइसंडेदीवे तत्थ२देसेतहि२बहवेधाईरुक्खा

घणाधातकीनावनखंडनिसइं मांजरिंघणा सोहताअकारहेंछे धातकीरूख महाधातकीरूखनीलवंतगिरसमाप इंजंबूरूख सुफिनछइं नीपरइंसुदर्शन१प्रीयदर्शन२नामदेवतानामकहिंतलवंपल्योपमनइं आउखइं वसेंमाटें धातकीखंडकहीइंसइंछइं

धायइसंडादीवंकुसुमियंजाव उवसोभेमाणाचिट्ठंति धायइमहाधायइरुक्खेसुमुदंसणपियदंसणाइंवेदेवामा

तपाअनेरुं कारण गो मांजरिंमाय धातकीखंडना विकनीवस्तु नाकतानाम छे इहं धातकीखंडद्वीपकेहुन

हिड्डीया जावपलिउवमट्ठितीयापरिवसंती सेतेणट्ठेणंअदूत्तरंचणं गो जंबूनिचाधायइसंडेणंभंतेदी

सिवालिग

२२८

जावंद्रमा प्रतापति करी करवो केतला सूर्य तपइं ३ केतला महाग्रह चार करइं केतला नक्षत्र योग प्रतिं युगत जो केतली ताराणी
करस ३ पसी ३ मावा नित्र वर करइं तमो चंद्र सूर्य वा सी

वेकइचंदापभासेसुवा३केईसुरियातवईवा३कईमहग्घाचरि३जाकंयणरकत्ताजोग३ कईतारग

कोडाकोडि सोभा सोभंइ बइं सोभसइं गोतम धातकी षंडे बार चंद्रमा प्रभा इं मध्या सूर्य इं मनो नो संख्या इं कुइं बार चंद्रमा
इत्यादि त्रिकाल नक्षत्र सघलइं लीजइं ३ म सिवइं प्रभा करसी ३ बार सूर्य एकेका चंद्रमा नइं ३ नक्षत्र ते चारगुणा

णकोडाकोडीउसोभंसोभिसुवा३ गो बारसचंदापभासेसुवा३ एवंचउचउवीसंससिरविणोनक्खत्तसय २

करता त्रिण सइं छत्रीस नक्षत्र थाइं एकेका चंद्र नइ छहत्तरि सत्र ग्रह एतली ग्रहनी संख्या होइ कहीइं चालां नक्षत्रि सहस सातस
इं मानी ८८ ग्रहनी संख्या इं ते बार गुणा करता धातकी षंडइं तारानी संख्या

यतिण्णि बत्तीसाएगंचासयागहसहस्सं छप्पन्नंधायईसंडेअट्ठेवसयसहस्सातिन्निसहस्साइं सत्त

इं प्रमाण धातकी षंडे एतली ताराणी कोडाकोडि सोभा सोभइं बइं हवइं कालोदधि स धातकी षंडद्वीप कालोदधि नामा
मुद्रनी वात कहइं बइं फरइ बइं

यसयाइं धायइसंडेदीवेतारागणकोडीकोडीणं सोभंसुसोभिसुवा३ धायइसंडंणंदीवंकालोदेवंकं २

वालो बइं वलयाकार संस्थानइं संस्थित बइं सघलेंचो फेर धातकी षंडनें विटी रह्यो बइं कालोदधि समुद्र सम चक्र

लोदेनामंसमुद्देवट्टेवलयागारेसंठाणसंठिएसव्वउसमंतासंपरिक्खित्ताणंचिट्ठइ कालोदेणं

क्रवाले संस्थित बइं के विषम चक्रवाले सं स्थित बइं गोयमा सम चक्रवाल इं बइं पिण विषम चक्रवाल नथी संस्थान जेहनो कालोदधि

समुद्देणंकिंसमचक्कवालसंठिए विसमा गो समचक्कवालनोविसमइचक्कवालसंठिए कालोदे २२८

समुद्र नइं सम केतलो चक्रवाल वन केतलो फिरतो परिधि कालोदधी समुद्रनो कहो गोतम आठ लाख योजननो चक्रवाल न

णंभंतेसमुद्दे केवइयंचकइयंचक्कवालविखंभेणंकेवइयंपरिखेवेणंपणत्ते गो अट्ठजोयणसहस्सा

विष्कंभ पणो कहीइं हवइं परिधि कहेइं बइं एकाणुं लाख सित्तेर सहस्र छसइंनइं पांच योजन कोइंक विशेषाधिक परिधि कही

इंचक्कवालविखंभेणं एकाणनइंजोयणसयंसहस्साय पंचपंचुत्तरिजोयणसएकिंचिविसेसाहिए

एतले कालोदधि बइं एक पद्मवरवेदिका एक वनषंड इं करीनइं वेष्टित बइं एतइं नो वर्णन करवो पूर्वनी परें कालोदधि समुद्र इं भगवन जाणवो

परिक्खेवेणंपासेणंएगाएपउमवरवेईआए एगेणं वणसंडेणथदोण्हविपण्णत्ते कालोदसणंभंतेस

केतलां द्वार कह्यां बइं गोतम च्यार द्वार कह्यां बइं ते केहां विजय १ वेजयंत २ जयंत अपरा जित किहां भगवन कालोदधि समुद्रनो

मुद्दस्सकइदारापणत्ता गो चत्तारिदारापण्णत्ता तं विजए वेजयंते अपराजए कहणंभंते कालोदयस्स

विजय नो माहार किहइं केंको णे कह्यो गोतम कालोदधि समुद्र पूर्व परिं जर्णत रइं पुस्करवर द्वीप पूर्वार्धनी पश्चिमदीस इ

समुद्दस्सविजएनामंदारेपण्णत्ते गो कालोदस्समुद्दस्सपुरच्छिमपेरंतेपुक्खरवरदीव पुरच्छिमद्धस्स

सी तामोटी नदी उपरइं तिहां कालोदधि समुद्रइं विजय नामइं द्वार कह्यो बइं ते आठ योजननुं उंचो चउपलइं तिम जंबूद्वीप ना
नइं कह्या

पच्चच्छिमेणंसीतोदामहानईएउप्पिएत्थणंकालोदस्सविजएनामंदारेपण्णत्ते अट्ठजोयणाइं तंचेवपमा

बारनेंप्रमांणसर्वतिमजक ह्याउणंराजधानी अनेरीकालोदधिसमु उपरिकालोदधी विजयनांमद्वारकहीइ थाकनो मर्वजंन द्वीपना
द्रपुस्करवरद्वीपनइं पूर्वद्धि पश्चिमदीसइं सीतामोटीनदीइ समुद्रनो द्वारनी परइंजाणवो

णंजावरायहाणीतो पुक्खरवरदीवपुरच्छिमेणंसीयाएमहानईएउप्पिंजयंतेनामंदारेसेसंतहेवकालो:

कालोदधिसमुद्रनाद्वारनइंविचइं केतलीअबाधाइं २ आंतरोकहीउ गौतम २२ बावीस लाषउपरि ९२ बांणुं

दस्सणंभंतेसमुद्दस्सदारस्सय २ एसणंकेवइयंअबाहाएअंतरेपण्णत्ते गो बावीससयसहस्साइं बा

सहंसनिंश्चै ६४ बसइं ४६ छेंतालीस त्रणिकोसनोएतलो द्वार द्वारनइंआंतरोहोइं द्वारद्वारनैंएतलोआंतरोवीतरागेकह्यो

णउयंषलुसवेसहस्साइं छच्चसयाछायालादारतरंतिण्णिकोसेयदारस्सय २ अबाहएअंतरेपण्णत्ते का

कालोदधिसमुद्रनाप्रदेशपुरकरवरद्वीपनइंफरस्याछइं पुस्करवरद्वीपनाप्रदेसइंजीव मरीनइंकालोदधिमांउपजइंएसर्व
तिमजपाछलीपरइं इम पाछलीपरइंकहिवो

लोदस्सणंभंते समुपदेसापुक्खरवरदीवंतहेवएवंपुक्खरदीवस्सविजीवाउद्दाइत्तातहेवसेकेणट्ठेणं

तेस्यामाटइं तगवनइंमकहोउ कालोदधिसमुद्रइंतेस्या मारइं गौतम कालोदधीसमुद्रनो उदकआसिलमां स्वादमांयोग्यउदकरसमाहैंमां मलगुरू धर्मवलीना रेवैं

वुच्चइकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ कालोयएसमुद्दे २ गो कालोयस्सणंसमुद्दस्सउदकंआसलेमांसलेपेसले

पेसलमांस्वादमनोज्ञपलावलीपां डइ दरसरिखो घरूतिकरीउदकनास रिषोरसछइंजेहनो नथाअनेरोकारणका जमहाकालएछइं देवतामहर्द्धिकछइं सोलगेपल्योप मनीस्थिति
लीकालुंवारछइंकेहवोउ

कालेतेमासिरासेवण्णेते पत्तीलउदगरसेणंपण्णत्ते कालमहाकालायछदेवामहड्ढिजावपलीओ

कालोदधीसमुद्रनीपरिधि ९१ ७०६० द्वारमांयोजनकांठ ता ९१७०५६१ न धातेआरनागहरनां २२९२३६ धउनीसंक्रम

वसइंछइंतेमाटइं गौतम जावलीवीजोकारणजांणगइं हवइंकालोदधिसमुद्रइंचंद्रमादीककेटलाछइं कालोदधिसमुद्रइं
सास्वतोनांमछइं तगवनकेतलाचंद्रमाप्रकाशकरइंछइं करस्यइं एहवोप्रश्न

वमवविइयापरिवसंतिसेतेणट्ठेणं गोयमा जावणिच्चे कालोयएणंभंतेसमुद्दे कइचंदापभासिंसुवा ३

कीधो गौतम कालोदधीसमुद्रइंछइंताली सचंद्रमाप्रकाशकरइं करइंछइं बयतालीसदिनकरसूर्यदीप कालोदधीसमुद्रइंविच
अनइंकरस्यइं इमअतीतअनागतवर्त्तमानवचन तातेजवंत रइंछइं

पुच्छा गो कालोयएणंसमुद्दे बायालीसंचंदापभासेसुवा ३ बायालीसंदिणगरादित्ता कालोदधि

संबंधइछइं तेस्याजेहनी नष्यत्रसहस्सएक अग्यारसइं छसइं छिहतरि छसइंअनइं चंद्रप्रमांणग्रहहोइं अह्यासी ७६ चउ करतांजेमा
तेमां नष्याइं

मिएवंचरंति संबद्धालेसिणगाणरखत्तासहस्संएगमेगछावत्तरीचसयमाणं छच्चसयाछणसयाछा

षरोजांणयो नाणिसहेंसहजार अट्ठावीसलाषबारसहस नवसइं अनइं पंचासनाराणीकोडाकोडि

लसयाछण्णउयामहग्घहातिलियसहस्साअट्ठावीसं कालोदधिबारसयसहस्साइं णवसयापण

कालोदधीइंकइं सोसासोसेछइं सोसस्यइंहवइंपुरकरवरद्वीपनीव्यक्तव्यताकहेछइंकालोदधी वाटलोवलयाका
समुद्रइं धुनइंपुस्करवरनांमद्वीप रनइं

सातारागणकोडाकोडीणं सोभंसोभिंसुवा ३ कालोयएणंसमुद्दंपुक्खरवरेनामंदीवेवट्टेवलयागार

संस्थानइंसंस्थित छइं सघलेचोषफेरवा वलोछइं तिमजपाछली परइंजाणजो सममंडलचक्रवालसंस्थानइंकरी नइंसंस्थितछइं सघलेचोषफेरवे स्थितछइं तिमजजांणगइं

संठाणसंठिते सव्वतोसमंतासंपरिताहवजाविसमचक्कवालसंठाणसंठिते सव्वतोसमंतासंपरिताहवजाव

जीवाभिगम
२३०

समचक्रवालसंस्थानइसं संस्थानइं संस्थितछैसघलैचोफेर पुस्करवरद्वीपइंजावतक्रेतलोचक्रवालविस्कंभपणइके
स्थितछै निमज तलोपरिस्केपपरिक्षेपफरतो
समचक्कवालसंठाणसंठितोसव्वतोसमंतासंपरितहेव जाव समचक्कवालसंठाणसंठिते पुक्खरव
सोलजोयनयोजन प्रमाण चक्रवालविस्कंभइ एककोडि उपरि बाणुंलाखसहसएतलैबाणुंलाख णव्यासीसह
योजन सउपरि
रे णं भंते सोलसजोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं कोडिबाणउयं च खलु सयसहस्सा अउणा
आठसैचोराणुयोजन एतलो पुस्करद्वीपनोपरइं छिद्वाइं इगानी विद्याइंकरीपंकितयोजन पुस्करद्वीपपुंजइएकपदम
वरवेदिकाइं परिवेष्टितछइं वेदिकावनपंडनु
णउयं सवे सहस्साइं अट्ठसया चउणउया परिरएणं पुक्खरवरस्स णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वण
वर्णनु करवोपुस्करद्वीपइं जावत केतलाद्वारक गो च्यारद्वारकह्या तेकेहा विजय१ वेजयंत२
पर ला
संडेणं दोण्ह वि वण्णओ पुक्खरवरस्स णं भंते कइ दारा पण्णत्ता गो० चत्तारि दारा पण्णत्ता तं विजये वेजयंते
जयंत३ अपराजीत४ किहां पुस्करवरद्वीपइं विजयनामद्वार किहांछइं गो पुस्करवरद्वीपइं पूर्वदिसि
जावत
अपराजिए कहि णं भंते पुक्खरवरस्स दीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते गो पुक्खरवरदीवे पुरच्छि-
मेलइं पुस्करोदिकसमुद्रपश्चिम तिहां पुस्करवरद्वीपनइं विजयनामद्वारइं वीतरागंकह्या तिमजसर्वपाल
दसि जीपइं
मे पेरंते पुक्खरोदस्स समुद्दस्स पच्चच्छिमेणं एत्थ णं पुक्खरवरदीवस्स विजए णामं दारे पण्णत्ते तं चेव स २३०

पुस्करद्वसर्व०
५२० १ २८ ९८
४ तरमांवलीः
योजनद्वारमांवे
योजनबारमाघ
जोणवाइकोडी
इनिवाइएतजा
योजनरदइ
२८८८३९ एतजी
च्यारज्यावहिर
नाएकसागरे
तजाज्यावे४८
२२४९ योजन

इम च्यारद्वारकह्या राजधानी अनेरइं पुस्करसमुद्रमांतोसीतासी पुस्करवरद्वीपनइं जावतद्वारनइं एहनीकेतलीयोज
तोइनद्धीइंमनदेवनामकहवु
चए वचत्तारि वि दारा सीयासीतुदाण छित्ताणियवा पुक्खरवरसे णं भंते दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस णं के
नतुं आबाधाइं अंतरोकह्यो गो अडतालीसलाजोजन बावीसमसहसजोजनअडसठच्यारसइंतें आगणोतर एतलुं पुस्करवरद्वी
वइयं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते गो अडयालीसयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं अगुणत्तरा
पना द्वारनुं आंतरुंकह्युं एवेनाप्रदेसमांहेकरस्पोवइं जीवबइमांहोमांहिमांचाविउपजें तेणमांटइं जावतइमकह्युं पुस्करव
य चउरो दारंतरं पुक्खरवरस्स पदेसा दोण्ह वि पुट्ठा जीवा दोसु वि भाणियव्वा से केणट्ठेणं भंते एवं वु
रद्वीपइंनामतेसमांटेंकहीइं गो पुस्करवरद्वीपइंतेणइंठामें तिहांरदेसइंघणाइ पदमवृक्षपदमनीवरिविस्तिर्णवृक्षछइं पदमवरा
च्चइ पुक्खरवरदीवे २ गो पुक्खरवरे णं दीवे णं तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमरुक्खा पउमवर २=
नितइं फुलितकुसुमितनांनोरहीवइं तथा पदममहापदमनामांवृक्षतेलोवृक्षनिहां पदमपुंडरीकनामैबइ देवतामहरधिवंत
अनेकवप्रमनि पदमर
वणसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव चिट्ठंति पउममहापउमरुक्खेसु तत्थ पउम पुंडरीया नामं दुवे देवा मह
जावस्योपमनीथितिनइ आवबइंवसेलइं तेमाटइंइहां एहवुंनामकहीइं पुस्करवरद्वीपतेएतलांमाटइं वलीअनेरुंप्रमन
कहीइं जोमास्य
ड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति से तेणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ पुक्खरवरदीवे २ जाव

कं नामं भइ हवे पुष्कराद्ध चंद्रमादिक पुष्करद्वीपें न इमणं चतुर्थ एक्कसं विमाजीसत्वंद्रमा एकसो विमाजीसमर्य प्र
गवान के तला चंद्र प्रकाश करइ २ वइ श्र प्रमाण वइ मालकुंडं
पुक्खरवरेणं संते दीवे केवइया चंदा पभासेंसु २ एवं पुच्छा बायालं चंदसयं बावत्तरं च दिणयरसयं
पुष्करवरद्वीपइं वालनइ वइ उद्योत करइ बारसह सत्रनइ बत्तीस प्रमाण पुष्करार्द्धन क्षत्र कुंडं बारस
रीयाणं सयं पुक्खरवरदीवे चरंति एए पभासंता चत्तारि सहस्साइं बत्तीसं चेव हुंति नक्खत्ता
सलसइ बहु तर सतर सतर जाम ग्रह कुंडं चंद्रमा तत्तुं ला षकोडाकोडि च्यालीससहसकोडाकोडि बारसइ कोडाकोडि
दीव गुलइत्ता
च सया बावत्तरं महग्गहा बारस सहस्स वलनइं सय सहस्साचत्तालीसं नवे सहस्साइं चत्तारी
पुष्करवरद्वीपइं तारागण कोडाकोडि प्रमाण कुंडं सोलइ वइ वर्त्तमानका सोलसी नागत काल इं पुष्करवरद्वीपनी
अतीत काल इं लइं
सया पुक्खरवरे तारागणकोडाकोडीणं सोभं सोभंसु वा सोभंति वा सोभिस्संति व पुक्खरवर
घणे मध्य देस भाग वतली वचि तिहां मानुषोत्तर नामइं पर्वतक ह्यो वारजु वलय आकार निं संस्थिमन संस्थित
वइं
दीवस्स णं बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं माणुसुत्तरे पव्वए नामं पव्वए पण्णत्ते वट्टे वलयागारसंठा
ते पुष्करवरद्वीपनी कीहुन्न च करानें अर्द्ध कारीनइ रह्यो वइं माहिलुं पुष्करार्द्ध क्षेत्र बाहिरलुं
णसंठिए जेणं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठंति अब्भिंतर पुक्खरद्धं च बाहिर

२३१

पुष्करार्द्ध क्षेत्र हवे माहिल्या पुष्करार्द्धनें भगवन केतलुं चक्रवाल पणें वइं केतलुं परिधपरिध कहि गौतम लाष यो
र पुक्खरद्धं च अब्भिंतर पुक्खरद्धे णं भंते केवइयं चक्कवालेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ते गो अ
जन प्रमाण चक्रवाल विरकंभ वइं कह्यो एक कोडि बेतालीस लाष कोडि त्रीस सहस बसइं ओगणपंचास जोजन कांइक अधिक
ट्ठ जोयणसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं कोडी बायालीसा तीसं दोन्हीय सया अउणपा
बाधिक एतली पुष्करार्द्धनी परधि एतली ली मनुष्य क्षेत्रनी लोक फेर परधि तेस्या माटे भगवन इम माहिलुं पुष्करार्द्ध अनें
कही कह्या
ण पुक्खरअद्धे परिरओ एवं समणुस्सखेत्तस्स परिरओ से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ अब्भिंतर पुक्खरद्धे
मानुषोत्तर पर्वत सघलें चुफेर वीटीनइ रह्यो वइं ते भाटइ गौतम अभिंतर पु
फेर
य २ गो अब्भिंतर पुक्खरद्धे णं माणुसुत्तरेणं पव्वएणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते से तेणट्ठेणं गोयमाः
ष्करार्द्ध नइं कहीइ तथा अनेरुं कारण जीवास्वतुं नाम बोइं हवे पुष्करार्द्ध चंद्रादीकनी वक्तव्यता कहीइं अभिंतर पुष्करार्द्ध
भगवन केतला चंद्रमा प्रकाश करइ वइं
अब्भिंतर पुक्खरद्धे अदुत्तरं च णं जाव णिच्चे अब्भिंतर पुक्खरद्धे णं भंते केवइ आ चंदा पभासेंसु वा
तिमज बहुत्तर गुण प्रश्न जागइ तारानी कोडाकोडि होइ गो हवे संग्रहणीनी गाथाइं कहइ बहुत रि दिनकर सूर्य दीपतिवं
करवा बहुतेर चंद्रमा वइं तवइं पुष्करद्वीपें
३ साए वत्तव्वया जाव तारागणकोडाकोडीओ गो बावत्तरी व चंदा बावत्तरीमेव दिणयरा दित्ता

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

वीचरेंछइ एतलाप्रतानाकरचंद्रमासूर्यछे त्रणिसइछइ उपरिछत्रीस एतलापुष्करार्द्धमांमोटा नक्षत्रकेतलाकहइंछइ
ग्रहकह्या

पुक्खरवरदीवड्ढे बहाणि पन्नासे ताति णि सया बत्तीस छच्च सहस्सा महग्गहाणं तु णक्खत्ताणं तु भ

सहस्रएकलाखसोलनक्षत्र अडतालीसलाख बावीसमहस्रउपरि बसइंएतलापुष्करार्द्ध ताराना
कहइं

वेसोलह छव्वेस सहस्साइं अडयालसयसहस्सा बावीसं खलु भवे सहस्साइं दोसवयपुक्खरद्धे ता

कोडाकोडिकहइं तेमानाइंसोनिनछइं एतलीताराणीकोडाकोडि हेमनुष्यक्षेत्रनगवनकेतलुलांबपणइंपहुलपण
इंछइं

राग णकोडाकोडीणं सोलं तसठे तेसु चा तू समयक्खेत्तेणं तंत्ते केवइयं आयामविक्खंभेणं केवइ

केतलीपरिक्षेपपरधिछे गौतम पस्तालीसजोयणलाखप्रमाणलांबपण पहुलपणइंकहइं एककोडिजोजनबयतालीस
कहि कहइं लाषत्रीसमहस

यं परिक्खेवेणं पणत्ते गो पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगा जोयणको

बसइंओगणपंचासकोइंकअधिक परधिविझेपेकहवी जोजनेंओगणपंचासजगइंकहवो तेकिमनगवनइंइमकह्यामनुष

डीएं जाव अब्भिंतर पुक्खरद्धपरिरए से भवे मालीय वा छाव अनुण पणकोसे केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ

षेत्र गोयमा एहवुनामनेस्यामाटइं मनुष्यषेत्र त्रणिजेरेमनुषवसेंछइं ५५कर्मभूमिका ३०अकर्मभूमिका ५६अं
तेकेहा

माणुसखेत्ते २ गोयमा माणुसेसु सेणं तिविहा माणुसा परिवसेती तं कम्मभूमिगा य कम्मभूमगा अंतर

तरद्वीप तेमाटइं हेगौतम मनुष्यनांमतेएतलामाटे तवालानेरुकोमवली गौतम मनुष्यक्षेत्रनांमएहवुनांममास्व
टइंकहीइं तवइंजोजगइं तिनवइं

दीवगा से तेणट्ठेणं अंतर गोयमा एवं वुच्चइ मणुसखेत्ते अदूसरं च णं गोयमा समयक्खेत्ते सास

हविंमनुष्यषेत्रनासमस्तचंद्रमासूर्यनीवक्रमताकहइंछइंमनुष्यषेत्रें केतलासूर्यतपातपित गो एकसोबत्रीसचंद्र
केतलाचंद्रमाप्रभाकरेंछइं छइं माछइं

ए जप्पाणिच्छे मणुस्सखेत्तेणं भंते केवइ चंदा पभासे सिवा तू कइ सूरा तवइंसु वा तू गो बत्तीसं चंद

एकसोबत्रीससूर्यछइं सघलाइंमनुष्यलोकइं चालेछइंउद्योतकरताप्रकारहइंछइं इग्यारहजार छसइंनिं

सयं बत्तीसं चेव सूरियाणं सयं सयलं मणुस्सलोयं चरंति एपभासंती एक्कारस एसहसाए छस

सोलमहाग्रहत्रणिसहसछसइंछनु एतलाप्रमाण नक्षत्रकइं अग्यासीजाषत्रपरिछयसालिसहजार मनुष्यलोकें

य सोला महग्गहाणं तु तिन्नि सहस्सा छच्च याछन्न सया णक्खत्ता तिण्णि य सहस्सा अट्ठसीय सा

सातसइंत्रणिलाखजीसमहस्सएतलीताराणीकोडाकोडिथाइंइंमगणतेंसख्याइंकरीपंक्तिनिविचारीयोयो एतलानक्षत्रसोनामो
नीतछइं एताराणोसमाह

गो यं सहस्सा चत्तालीस सहस्सा मणुया लोगंमी सहस्सया अणूणा ताराग णकोडाकोडीणं सोसं सोसे

सर्वसंख्याइंमनुष्यलोककहेमनुष्यलोकबाहिरतारा असंख्यातद्वीपसमुद्रनीजेपेरुइंअसंख्यातजुगलोइं एत

सु वा तू एसो तारपिंडे सव्वासमासेणमणुयलोगंमि बहीया पुणताराअं जीणहिंसालीयाहंति अ

जिवाभिग: २३३

तीसंख्याइं ताराउं परिमाण जो मनुष्यलोकक ह्यो ते सर्वहुं वार । वास विपकिग चंद्रमा सूर्य नां मनुष्यलोक । वइं चंद्रमा वइं सूर्य
विमानरूप । कह्या

संखेज्जा एव तियं तारग्गं लोणियं द्वे माणुसंमि लोगंमि बावत्तिं पंतीयाई चंदाई वाणि मणुयलोगंमि दो

करीनइं एकसो छिकंतरे करीनें ग्रह एक पंक्ति । चारपंगतिकही । चंद्रमा सूर्यनी । मनुष्यलोकनें विषइं ।
वके ह्यी

चंदा दो सूरा य होंति एक्केक्कया पंती बावत्तरिं गहाणं पंतीसयं होइ एयं पि ए चत्तारि य पंतीनं चंदा-

वासठि प्रमाण २ । एकेकी पंगति कइं ताराग लोक । ते सर्व चंद्रमा सूर्य ग्रह नक्षत्र व सर्व मेरुने जिम प्रदक्षिणा । सेतुकी नें मंडलामां
रीमरु । वृत्ति । सर्व फरतुं रहेवे ग्रहादिकं आपणा आवर्णे मांडले । दिनकर सूर्य

इच्च मणुयलोगंमि बावत्तीर होंति एक्केक्कया पंती ते मेरु मणुचरंति पयाहिणावत्तमंडला सव्वे यर

अचलनहि वो संक्रमणचाल । तेवी जाणने स्वभावे करी त्रीजा मांडलाउं संक्रमण कइं सर्व अभ्यंतर मांडलाउं संक्रमण जिहां लगे वा
तु नथी । ह्य मंडले सर्व बाह्य मंडल थकी तिहां लगे जिहां अभ्यंतर मांडला रजनीकर चंद्रमा दिनकर सूर्य नक्षत्र

दिणयराणं नक्खत्त ग्रहेव संकमो नत्थि मंडलसंकमणं पुण अब्भिंतरबाहिरं तिरिए रयणियर दिण

नइं महाग्रह नइं रविसिवे करी नैरुक्ष ग्रह मनुष्यने होइ ते किम विद्युत्तर कर्म वइं । ते सूर्य चंद्रमा सर्व बाह्य मांडला थकी अभ्यंतर
ते किम सूत्र वेदनी असूत्र वेदनी नाम कर्मना विपाकसामां निहेन पावय । मांडले प्रवेस इं वीतापक्षेत्र प्रतिदिवसें अनुक्रमना
करीक हइं वइं इ विरे षेत्र काल आदि ४

यराणं नक्खत्ताणं महाग्गहाणं च वीरविसेसेणं पुणो सुहदुक्खं हवी मणुस्सणं तेसि पवंतासंठाणं-

भिन्न इम अनुक्रम चार अभ्यंतर मांडल थकी बाहिरनी । चंद्रमा सूर्य नइं छेते के जे चंद्रद्वीप वक्र चालवइ सिनी प्रविस्तर कइं बेबे सगवेननाय वृ
कजलें घरी सिवली सर्व बीजा मांडला थकी चारवाल । रते वा सूर्य अभ्यंतर मांडले इंम विवेसाग व ध इं मव द्रमा मंडले प्रेम के पूर्ण माणीइं
ना वइं । अनुक्रइं मांडला घ्रते वली सेलाग इम घय बाह्य अवनी म . घपेक ह्या

चक्खेत्तं वड्ढ पतियामा तेणेव कमेणं पुणो परिहायइ निक्खमंताणं तेसि कलेवयाए एवं सवयो २३३

जंबुद्वीपनें विषें ते नग्रा घ्रकलुरें नाणवाने चंद्र सूर्य वइं ते विसेष नो थे कृष्ण लंब पुरुफजानी । चंद्रमा अग्र आश्रय मनमव लें वइं अजूआ पखें चंद्रमा
कानीवरि संघातनमरद सें सकृष्णिन वइं अविलेनवपणे दिमवंन निपर नें करी इम । के मवधइ ते वा इंकार ते चंद्रमा रूप पखें किम
वलीवीजा घ्रथ चंद्र पुरुफमांइं चोथी पनतीथी मविस्तर स्नान जो ण को हवे वली । घटे वइं

कुंतितावखेत्तमहा अंतो वय संकुतावाहवि छेडा चंदसूराणं केणपवहइ चंदो परीहाणी केण

संकारणें एकपखें पुष्ट थाइ वइं अनें एकपखें हानी थाइ ते इम पूछइ थकइं गो । हवइं तिहां पर्व रा हते क होइं जेकि वोसे चंद्रमा सूर्य नइं आ
नमन इं अगवंत कहइं । हवे राहु ना बे भेद ते कहे छे एक पर्व राहु एक नित्य । वरे ते पर्व राहु कही इं । अनइं नित्य राहु ते कहीइं जेनि

होइ चंदस्स कालो वा जुन्हा वा केण णुभावेणं चंदस्स किण्हराहुविमाणं निच्चं चंदेण होइ अ

में चंद्रमा नइं पास । चमानें कालो वइं नित्य चंद्रमा थी अविरहित पणें घ्रार । कीतें पक्षा वें साग मथाइं आनाथी वइं पतिरे सागे देतो आर २
इ २ हिर ज राहुन्नि । जो पुनः अनुणा नित्य चंद्रमा मा वइं तालइ वइं चंइं । साग दिवस इम प्रतला पनरें दिवस पूरा मुकी इंम धया नाथ
माना थि मानना वा मुक्तिसा न

विरहीयं चउरंगुलमप्पत्तं हिट्ठा चंदस्स तं संचरइ बावट्ठी दिवसे सव्वे पपक्खस्स जं परिवड्ढ

साग मुकीइंम चंद्र प्रतली । कृष्ण पखें विमान ना चार स्ता गम्भा ला दिशुक्ल पखें चार २ साग पराती विवसां मुकी कृष्ण पखें पक्षे नेरि
मकी जोल तुं वइं । व सें राहु नां विमानना पनरमइं साग इम चंद्रमानां विमाननें अनेरा हूने याग इवथइ घटइ वइं

एवं दो खेव वइ तं चेव कालेणं पणरसविभागेण य चंदं पणरसमेव तं चरइ पणरसविभागे

राहु नें संयोगें करी चंद्रमानी पक्षप ष वधतुं विक्रुज लाविवइं एक पक्षइं चंद्र परीहानइं । अजूआ पक्षइं जलवइं वइं एक पखें राहु परिथ
हानि शुक्ल पध्य जलावइ वइं

णयतेणेव कमइ एवं वड्ढइ चंदो परीहाणी एव होइ चंदस्स कालो वा जोन्हा वा तेणणुभावेणं चंद-

मनुष्य क्षेत्र मांहे जयाति । ते मरव चायरें करी संयुक्त वइं । पांचे नंदया तिषी जे चइं । चंद्रमा सूर्य ग्रह गणादि सर्व मनुष्य
वी वइं । क्षेत्र मांहि विचरइं वइं

स्स अंतो मणुस्सखेत्ते हवंति चारोववायगउववत्ता पंचविहा जोइसिया चंदा सूरा गहगणा य तेणं

लिवारपछी एतलामनुष्य सुर्यग्रहतारा नक्षत्र ग्रहनीगति पोनापोतानेमांमेरनुबांधइविंदीपवतेचंद्रादि वेचंद्रमावेसूर्यजंबु
क्षेत्र बाहिरला चंद्रमा चारपणइनथी सकलस्वरूपकहइछइ द्वीपइछइ

परानेससाचंदाहिंवागहनाराणखत्ताणंजोगाईएविचाराअविवियातेमुणयवा एणजंबुदीवेऽ

तेधवकीलवणसमुद्रविमणाछइएतलइ लवणसमुद्रथकीधात एतलइबारसूर्यअनइबा बलीपाछोतरकइतेतमा चंद्रमाछमा
चंद्रमासूर्यच्यारछइ कीखंडइत्रिगुणाछइ रचंद्रमाधातकीखंडइ लीजंबुद्वीपइलोइ च्यारचंद्रमालवण

गणलवणच्चगुणाछंति लावणि गायतिगुणीयाससीसूराधाइसंडेदाचंदादुवरीवेचंतरि

समुद्रनाजलउपरिहोइ धातकीखंडद्वीपइबारसवे हवइधातकीखंडआदे एतलेबारइ तेत्रिगुणाकरतांजेचंद्रमासूर्यएतलं
रमाअनइबारसूर्यछइ जेचंद्रमाछइ चंद्रमा नारत्रीसथाइ पहलानांनामांहिमा

यसायरलवणतोये धायइसंडेदीवेबारहिचंदायसूराय धाइसंडपभिईउद्दिवणातिगुणिया

नीइ एतलेंबेतालीसथाइ तेकालोदधिइअनेपुष्करार्धइंबत्रीसपाविलाअगारनेद द्वीपसमुद्रइगणवानी तेहनाचंद्रमा
लेतां एकमोचुमालीसनक्षत्रछइ ग्रहतारा वाणाकरता

नवेचंदाआईछचीचंदसहियाअणंतिअणंतरखेत्तेरिक्खग्गहतारागदीवसमुद्देजइ इच्छ

सुंगणेजेजिमग्रहनक्षत्रतारानोमांनलो चंद्रमासूर्यचंद्रमानापरिमरअंनइकहीतेबइ मानुषोत्तरपर्वतनइ मनुष्यलोक
खेतिनगणीइ हवइमनुष्यक्षेत्रबाहिरला बाहिरइ चंद्रमा सूर्य नीपरेंयोगम

तवेतसिससीहिउगुणयं तिरिक्खग्गहतारागंतुविहियाउमाणुसणगस्सचंदसूराअ

दीतउद्योतकरे उद्योतकरतारहेंबइ उद्योत सूर्यपिणनक्षत्रनइयो तरपर्वतबाहिरचंद्रमानेसूर्यनइएबिहुनंनइमांहोमांहके
चंद्रमातेअभीचनक्षत्रतजयागइयुक्तछइ गइयुक्तबइमानुष्य तलोअंतरहोइ तेकहेछइ पंचासमहस्रयोजनछइअमो

वहियाजोगाचंदायअभिइजुत्ता सूरापुणहोतिपुसेहिंचंदाउसूरस्सयसूराचंदस्सअंतरं

च्यारचंद्रमाच्यार
सूर्य ११२ नक्षत्र
३४८ ग्रह १४२१९
००,००००००००
००००० बारबु
ईजाबसतसठी
सहस्रमेनिंवरस
तिलीतारानीको
डाकोडिछइ
लवणसमुद्रने
मंघलीगुणंता

तेअंतरो
होइ॥

अमपरिहूणनिंएतलेसूर्योचंद्र हवइसूर्यसूर्यनइचंद्र एतलोअंतरोहोइ मानुषोत्तरपर्वतनेंबाहिरइएकलाखयोजननो
मासूर्यनइपंचाससहस्रयोजन नाचंद्रमानइ अंतरोहोइ अभीअणिवलयानइआकारें

होइपणाससहस्साइं जोयणाणंअणूणाइंसूरस्सयसूरस्ससिणोयअंतरंहोइ माणुसणगस्सबहिया

नइलाखयोजननोअंतरु मनुष्यलोकबाहिरपंक्तिरूपासूर्यनइं जिचिअंतर प्रकासरूपछेंपणिचंद्रमाजीमसीतकालेंमंद
अंतरचंद्रमानेचंद्रमानेअंतरसूर्यलइतेजरीपतवंत लेस्या पजोकेंवीतरांसूर्यजिमउष्णकालेंउष्णहोय

तुजोयणाणंसहस्संसूरंतरियाचंदाचंदंतरीयायदिणयरादित्ताचित्तंतरलेसागासुहलेसामंद

अठ्यासीग्रह अठ्यासीनक्षत्र एतलुंएकचंद्रमानुपरिवारकह्यो तारानीसंख्याकही छासठिस

लेसायअठासीयंचगहअठावीसंचहोइनखत्ता एगससीपरिवारोपत्तो तारगणंवोछावट्ठि

हस्स नवसिपसांणिंपंचोतरएतली एतलुंएकचंद्रमानोपरि तारानीकोडाकोडिछइ मानुषोत्तर पर्वतनेंभ
कोडाकोडि वार

सहस्साइंणववसयाइंपंचसयाराइं एगससिपरिवार तारागणको डाकोडीणं माणुसुत्तरेणं

वन केतलोउचोपणेंछे केतलोधरणीछे केतलोमूलपछुलपणइ केतलोमध्यनागपहोलपणइ

भवणंभंते केवइयंउट्ठंउच्चत्तेणं केवइयंउव्वहेणं केवइयंमूलेविक्खंभेणंकेवइयंमझविक्खंले

केतलुंसिखरकुपरिपहुलुबइ केतलीमाहिलीपासापरधि केतलीबाहिलीपासापरधि केतलीमध्यनीच

णंकेवइयंसिहरेविक्खंभेणं केवइयंअंतोगिरीपरिरएणं केवइयंबाहरागिरिपरिरएणं केवइ

परधि केतलोउपरिपरिधिछै भगवन एहवा मांनुषोतरपर्वतनइं ७२१ सिनेरिमइं एकवीसयोजनउंचपणैं छइं
प्रश्नउग्राकह्या गौतम

यामंभंपरिरएणं केवईयं नवरिगिरिरएणं गो माणुसुत्तरेणं पव्वए सत्तरिएक्कवीसाइंजोयणसया

आरसइं त्रीसयोजन एककोसउपरि एतलोउंचपणोछइं मूल १०२२ दससेंबावीसयोजनपहिलो मझनागैं ७२३ यो
छइं

उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारीतीसेजोयणसए कोसंच उव्वेहेणं मूले दसबावीसेजोयणसए विक्खंभेणं मज्झे

जनमानुषोतरपर्वतपहिलोछै उपरिच्यारसेंयोजनचोवीस४२४योजनपहिलोछइं छइं मांहिलीपरिधिकहइं १४२३६एककोडि
छइं छितालीस

तेवीसजोयणसए विक्खंभेणं उवरिंचत्तारिचउवीसेजोयणविक्खंभेणं अंतोगिरिरएणं एगाजोयण

लाखबत्रीससहस्रउगणपचासयोजनकांइंक तेकहीइं १४२३६१४९ एककोडि बयतालीसपबत्रीसहजारउपरयोजन सातसै
विशेषाधिकमांहिंलापासानीपरिधिछइं बाहि
रलीपरिधि केतलीछइं न

कोडीबायालीसंच सयसहस्साइं दोण्णियएक्कोणवन्नेजोयणसएकिंचि छत्तीसंसहस्साइं सत्तय

चउदयो बाहिरलीपरिधिछइ केतली मानोषोतरपर्वतमध्यपासेपरिधि १४२३४८२३ एककोडियोजन उपरिबयता
जन तेकहइछइं लीस

चउदसुत्तरेजोयणसए परिक्खेवेणं मज्झेगिरिपरिरएणं एगाजोयणकोडी बायालीसंच सयसह

लाखउपरिवली चोत्रीसहजार अहतालीसत्रेवीसएतलोमानुषोतरमध्यपासानीपरिधिछै उपरलीपरिधिमानुषोत
रपर्वत १४२३२९३२

स्साइं चोत्तीसंच सहस्साइं अट्ठयतेवीसेजोयणसए परिक्खेवेणं उवरिगिरिपरिरएणं एगाजोयण

एककोडियोजन बयतालीसलाखयोजन बत्रीसहजारयोजन नवसइंयो बत्रीसयोजनप्रमाणउपरिलीपरिधिछइं मूलेपहुलोछइं
नउपरि जन जेमाटइं १०२२ योजन

कोडी बायालीसंच सयसहस्साइं बत्तीसहस्साइं नवय बत्तीसजोयणसए परिक्खेवेणं मूले विच्छिन्ने मज्झे

मध्यसांकडोछइं ७२३ मांहिंसम्मलम मध्यउदयप्रधान छइं बीजारूपनी मनपरिवसिधाइं छाहइं खुवछदेस छइं प्रासादहेविनंचोउचो
रिगातलोछइं ४२४ योजन बाह्योछइं कनयनइंमनतोदरनारछइं दपी जिमसीहबइंसइं तेहनइंआकारइंछै सर्वजंबुनद
सा देसु

संखित्ते उप्पिंतणुए अंतोसण्हमज्झेउदग्गेवाहदरिसणिज्जे इसिसण्णिसण्णेसीहणीसाइं उट्टजवारासीसंठाणे

मयछ जंबूनामापसुसोनरमोच्छ स्वब्भक्त भालगेकृति पाछलीपरेवल पदमवरवेदि पदमवरवेदिकाएइछनबंद तेलइं
इं हेमजवसंस्थानइं माल रूप उबेपासें का एकेक

संठिए सच्च जंबूणंनामए अच्छे सन्हेजावपडिरूवे उभत्तउप्पसेदोहपउमवरवेईहाहिं दोहिंवणसंडेहिं स

करीसघलेंचोफेर एवंबेनोवर्णनकी तेनगवनस्पामाटेंइमक जेमानुषोतरपर्वतनेसामाटइं गोतम मानुषोतरप
वेष्टितछइं जइं हीब कहीइं

व्वंसमंता संपरिखित्तो वण्णउदोन्हिविसेकेणट्ठेणं भंते एवंवुच्चइ माणुसुत्तरेपव्वए २ गोयमा माणुसु

र्वतनइं मांहइंमनुष्यनसइंछइं उपरिसुवर्णकुमारदेव बाहिरदेवनासामानि गोतम नघाअनेरोएकारणमानुषोत्तरपर्वतनथा
मारसइंछइं कवसइंछइं हिर मनुष्यविद्याधारणजं .घाचारण

त्तरस्सणंपव्वयस्स अंतो मणुया उप्पिंसुवण्णा वाहिं देवा अदुत्तरंचणं गोयमा माणुस्सुत्तरपव्वए णंमणुया

विनातथादेवशक्तिविमानकोमनुष्यअतीतकालेंगयानथीवर्तमानकालइं नलिकारणमुनीनइंजंघाचारण विनाजाइंनही तेमाट
जातानथीअनइंअनागति कालइंजासइंनही हपर्वीग विद्याधरदेवशक्ति

नकयाइंवितिवितिसुवा वीयीतयंतिवा वीत्तीवयसंतीवा अण्णत्थसावारणेणंवा विज्जाहरेणंवा

ततो मनुष्याना मु... सवच्छोय राऽलंघनीयत मानुषोत्तरः

अपवाद मध्यस्य स्पर्शो जंबूवद्दी... यद्वा गमीनगा र पि य नु मयस वा न ग्यामनेन संलंघ्या न ...

जिवाभिग
२२६

हेगौतम तथाणातमअनेरा गोतम मानुषोत्तरपर्वतजिहांलगैंतिहांज मानुषोत्तरपर्वतकहीइं अरिहंतआचारानां...
कारण गइ मनुष्यलोककहइ तेमाटे

वादेयकंमुणोवाविसतेणठेणं गो माणुसुत्तरेपव्वएताबंचणंअसिलोएतिपवुच्चइ जीवंचणंअस्सिला

वैसे ग्रीष्मजैनमतीमानुषोजोकककहीये धीएम...तरादिकदेवावर्षधरपर्वतहेमवंतादिकपर्वत दिकग्रहणजावाअवाना
एमवर्षधरादिपर्वतमानुष्यलोकबाहिरेन तिहांजो इमग्रहादिकनोघरदेवानो इमग्रहणएणा ग्रामादिक एसर्वग्रहण

एत्तिपवुच्चइ जावंचणं वासातिवा वासरातिवा ताबंचणंअसीलोएतिएवंवुच्चइ एवंचणंगेहातिवाग

हापलिमनुष्यलोकइहोइपिलबीजइगामइनहोइ पबलीपरेराजधानीसालगइमनुष्यलोककहीइ ज्योलगइ अरिहंत
पिणबीजइगामइनहोइ सोलगेंगृहादिकनी आवीरस्मगवानइमप्ररूपइ छइ

छावणाइवाताबंचणंसिलोगेतिपवुच्चइ जावंचणंगमातिवा जावरायहाणीतिवाताबंचणंअसिजो

चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव चारणश्रमणविद्याधर श्रमण श्रमणी श्रावकश्राविका मनुष्यप्रकृति

वेचणंअरिहंताचक्कवट्टीबलिदेवा वासुदेवा चारणविज्जाहरसमणसमणीउ सावगसाविगाउमणुया

तइकविनीतछइ तिहांजोमनुष्यलोककहीइ ज्यांलगें समयसूक्ष्म आवलीसंख्यातसमयजघन्यजगतासंख्या निष्पन्नदि
पतिमा एमहूर्त्तसत्तोतरेलव समकृत्ति

पगइभद्दगाविणीयाताबंचणंअसिलोपवुच्चइ जावंचणंसमयाइवा आवलिइवा मुहुत्ताइवा दिवसा

अहोरात्र३० पक्ष१५दि निफन्नमा २तिमासनि आयन मास निफन्न संवत्सर२मासैनिफन्न सोवरसे२०युग
मुहूर्त्तेनिफन्न वसैं स३० फन्न ६ २ पञ्चवरष नीफनचुरासी

इवा अहोरताइवा पक्खाइवा मासाइवा उऊइवा अयणाइवा वासंवितिराइवा जुगाइवा वाससो

डाक्तर भाउ दाजी संस्कृत... DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अढसर्वं
चणंग

२२६

८४लाखपूर्वेएकलाखपूर्वेगिरवरसंतसहसव उडंगगि८४लाखपू ८४लाखतुडितागे८४तुटि कृत८४एवंएक८४ ८४लपल
पैवरस१निष्फनसोसहसेनिष्फनलाखपूर्वेकु वे१०कतुडितांग नि.कइअडडेअवावा कृत्ति
होइ

याइवावाससयसहस्साइवापुव्वगाइवा पुव्वाइवा तुडियंगाइवा एवंपुव्वेतुडीएअडडेअववाहुएउ

८४उप ८४नली ८४निकु ८४अयु ८४चूलि ८४चुली ८४सीर्षप्रहेली सीर्षप्रहेलीकांपमएकसीर्षप्रहेलीकांइमपलो
म न र त का का पमकमप्रमाणदससकोडाकोडिपल्यापमे

प्पलपउमेनलिणे अत्थणिउरे अउए पउए य चूलियासीसीपहेलियंगाइवासीसपहेलियाइवाप

एकसागरोपम दस कोडाकोडिसागरो तिहांजगेंमनुष्यलोककहीइ एतलेएसर्वकालकहइ कृत्यातचीजलीचलीतसवपारील
पमेसूखमसुखमादिअरोअइ ब्रह्मीमनुष्यलोकमांछइ लोकनाहिरवि सीसरएजारवादितिलगइ

लिउवमेइवासागरोवमेइवा उसप्पणीइवा ताबंचणं अस्सिलोएतिपवुच्चइ डावंचणंवादरे

एमनुष्यलोककहीइ जावंचलंकहेतोजाहो घणाउदारनलाहकमेघलोपाणीउपजवासनमुखघाइछइ तघाउपजइछइ उपजी
नइ वरषावरसइछइ तिहांलगें

वच्छारेवायरेघणइसिहेताबंचणंअसिजाबंचणंबहवेउराला बलाहकासंसेयंतिसंमुवं

एमनुष्यलोकजिहांजिहांघणाकहीइ बादरतेजसकायनिहांलगइमानुष्यलोकक सांलेंरूपासोनानाआगरनिधानात
हीये मितति

तिवासावासंतीताबंचणंअसिलोएजावंचणंबायरेउअतिताबंचणंअसिलोएजावंचणंआ

एसर्वमनुष्यलोकमइछइ तिहांलगइमनुष्यकहीयइ तिहांलगइआकरूआनदीग तिहांजगेंलोकमनुष्यकहीइ
नदि

गराइवानिहीतीवाताबंचणंअसिलोएतिपवुच्चइ जावंचणंअगडाइवनदीइवाजावंचणंअसिलो

चलीजिहांजगइंचंद्रापरागचंदमाइंवलिजजकुंडं कुंडोचंदमानोमोटोकुंडाटि प्रतिचंदउसानलाभि प्रतिसूरीउयात
सूर्योपरागसूर्यइंवलिदेजीकाइलिइलतलीमेध्या

एजावंचणंचंदोविरागाईवासूरेविरागाइवाचंदपरिसाइवापडिचंडावा पडिसूराइवा तावंचणंश्री
योगउपजइं जिहांजगइं चंदमा सूर्य ग्रहादिक नक्षत्र तारारूप अतिगमानिसर्वबाहमंडल नरगमनअसंतर
वीअसंतरतरमांडचंपइंसता मांडलाधीबाल

सजोगेतिवा ज्ञावंचणचंदमासूरीयगहनरकंसतारासूवाणंअइगमणनिगमणबुद्धीनिवुद्धीश्रा
मंडलेवइंसवोद्दाइं वृद्धिशुकलपक्षइंचंद्रवृधिनिवृद्धिधुअश्नाचणतलाशुकलक्षपक्ष आतापादि पचमांहला ने
निसंजोगमनुष्यलोककहीयं पतेलोकबाहिरगतिआगति नविमनुष्य सु नग वेन

एविद्धतिसंवाणसंविश्रायविजतितावचणंश्रसिलोगेतिवुच्चइ श्रंतोणंसंतेमणुस्सखेत्तस्सजे
चंद सूर्य ग्रह नक्षत्र तारारूपयोतिषीनादेवता कइंसुंउर्ध्वपपन्नउंचानावसनार विमानइंसामास्फ
सु सुधर्म धर्मापरिदिकवइं पीउपना वइं

चंदीमसूरीयगणणारकंसतारारणंस्रूवाणंतेणंसंतेदेवाकिंउद्दोचिववणणसाद्देलक्रमुस्वइधि
चारा एष नमांदलोनिगति नमनाउपजइंवइं चार स्थिति स्थिति गतिसमापनवइंइवइं गाय तेदेव सोधर्मनीपरइंउर्ध्व गाय
स्थितिनाअनावइंजेहनइंगतिनइंचिषइंजेहनइंथीतिवइं सगवंतआयुगतिवारा मा ता पपननथी मा

माले वचनंगावारोववणगावारहितीयागइयाइसमावणगाय गे तेणंदेवाणउद्दोववण गे
इस्रानादिककल्पेउपनानथी विमानो चारोपपनमांहजानी तेनोअनावत्रेगतिनइंविषइंश्रातिवइं गति उर्ध्वमुपनलिकपु
पपनकइंविमानवइं गनइंसमनावइं समापन्नगतिकरीयक्तवइं फनइंसस्थानइं

नोकप्पोववणगाविमाणोविवगा चारोववणगा चारविइयागतिरइ्सागइसमावणगा उधमद्देक

नदलजा·मपतागो·अमुमदलजा·अयुतेर·अयुतंग·श्रीनदलजा·श्रीनत·नउतांगलोगसी दलजा·लीनयुतेलकर·नयुतिदलजा·
जोनजुत·चलीकांगदलजा·चूलिकांगइ·चलिकदलकाईसीर्षप्रहेलीकांगदलजा·सीर्षप्र

कलपोपन्नादे
वइसानादिक
पपन्नकपोत
नगा

२३७

दलजाबहुरित
·पद्मांग·महक
दलजाथमहक
मदनांगदलजा·
मदविद्यांग·एक
रनवदलजाबर
चंद·कुकुकांग
·कुकुकदलजा·
कुकुक·नुलपला
गदलजा·उत्पल
आंग·एकउत्प
लेउत्पले·पर
मांगदलजा·परमा
ग·नलीनांगदल
जाथनलिनांग·
एकनलीनदल
नलान·मर्थली
कुरंगदलमर्थ
कुरंगदलमर्घ
निकुरे·मपला

सम्पिनलवइंयोजनसहस्रगमेनेमानेअर्धकोवि एतापषेत्रअनेकसहस्रसंख्याइंसहस्रगमे णानारूपधारीणहवीविकुर्वी
नेआकारइंफटिकमइंलवइंयोजनसहस्रथमां करीनइं बाहिरनीविकुर्व परषदाइंकरीमाराः

लेस्साणुफंसंवाणसंट्ठिएहजोयणसहसएहिंतावखित्तेहसाहसियाहिंबाहरियाइवेत्तहिहय
नट्टक गीतवाजित्रवीणादितंतितलताल गलमइंगमोदं मोटापक्षादि वाजित्रनाशब्द मोटाअनकूकसिंहनाद
राबेंतिलपक्षउकय मादल क करी

परिसाहेंमेहयाश्नद्दगीयवायंतती तलतउडियघणमुयणंपडुप्पवाईयरावणंमहीयापुक्किधि
तेहनाराशब्देनलकलयादिक दशाश्तलइंकरीनइं विस्तीर्णफाजाविस्तिर्णसोगपांचेसेद तिकंफवोलइंमेरुअवेघणापर्वतनाश
कस्या सोगतलाधकामरुपु जाधादबिणवर्तमहजाव्यारकरी

यासीहानायचालकलयससद्देणंविउलाइ लोगलोगाइंजुजमांणी श्रबंपव्वयारायंपयहि
मेरुनइजिमकेलाधैराथीमेरुपुवइं जिवारइंसगचन तेदेवनायोतिषी इंद्रवइंवइतिवारइंइनाविरहकालनेविषइंतेदेवता
फिरइंलइं नजे केमकरइलइं नावलकहंगोतम आज

णंपुत्तंमेडलायारंमेरुअणुपरिवट्टी जावेलंसंतेतिसिदवाणंदेवपुरिसकहिसयापकरंतगाय
गंध्यारपांचसामानिकदेवतामअुद्राइंमलीनइंनेइंद्रस्थानेवसंपजिमाणलतेजेपहितवजिनइंविरह उपजइंतिहांजगपुतिवालइंठ
कालजगइंरमडुविनरइलइं लेइदुधांनकनइंपालइंलवइं आंजगइंतिहांअनेरा विविरहकालपहुत्तवइं

मां जावच्चसारिपंचसामाणियातहाणंपुवसंपजिताणंविहरंतीजावतत्थश्रनेदिदेवमुववलेलवि
इंद्रधीनिरानवनकेतलोकालविरह तिवारइंसगवंतकहंहेगोतम जघन्यथाकालनोएकसम उत्कृष्टथीघणोकालनोछमाम
उपजवानाकह्या यजीणवा विरहमनुष्य

तीवाणंलेनकेवईयंकालंविहरंती उववातेणगायमा ज्हहलेणंएकंसमयंउक्कोसेणछम्मासाबा

बेत्रबाहिर भगवन मनुष्यक्षेत्रमांहइं जे चंद्रमा सूर्य २ ग्रह नक्षत्र तारारूप ते भगवन सुरदेवता किं ऊर्द्धवउपना कल्पसुं
ऊर्ध्व लोकनइविषइं उपना छइं

जीवाभिगम २३८ हिरयाणं भंते मणुस्सखेत्तस्स जे चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवा तेणं भंते देवा किं उड्ढोववण्णगा
कल्पकहता पांचमइं बारमइं देवलोक सौधर्मादिकनी परइं कइं विमान स्थानकनो उपनाव छइं ते हेतुथकी गति गति प्राप्ति सहित भगवनकहइं
नो सामान्य रूपी उपना छइं मांहि ज्योतिनी गतिनइं मूकता छइं इ विषइं शोभित छइं छइं गोतम छइं

कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारट्ठितीया गइरइया गइसमावण्णगा गोयमा तेणं
ते देवता सौधर्मनी परइं कल्पइं उपना उपना नथी विमानक रहिक मइं उपना छइं चारोपपन मांहि ज्योतिनी च्यार करी चारनइं करता नथी
नथी कल्पनी परइं गतिनइं मूकता नथी गतिसाधि ग्रीनी जेहनइं

देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा णो चारोववण्णगा णो चारट्ठितीया णो गइर
गति समायन थिति शीति कलिकाइ रूपनइं संस्थानइं संस्थित छइं जेणीतेणइं आकारइं योजन सहस्रनइं मानना प्रदेश मान सहस्र
नथी पांमा पक्कीइ टिनइं आकारइं नीवीता नेह करी आलाप तु करता नाम

इया णो गइसमावण्णगा पक्किट्ठगसंठाणसंठिएहिं जोयणसाहस्सिएहिं तावखेत्तेहिं साहस्सियाहिं
बाहिर विकुर्वणानी परखदाइं घोरा २ घणा २ नाटिक नेत्र वरे दिव्य देवतानी भोगनी भोगवता विचरइं छइं भोजनइं
र करीनइं गीतवाजित्र

बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं महयाहयनट्टगीयवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरं
सुहीलेस्या छइं मंदलेस्या मंद्र आतपनी लेस्या छइं चित्तमंतर लेस्या कूटनी परइं एक स्थानइं रहइं छइं स्थानइं विस्तारवंत सूर्य नइं सह
प्रसिद्ध लक्ष्म सहस्र जोजन प्रमाणकइं योजन मान सहस्र प्रमाण वि बीपता तिमिर रिति प्रदेसं

ती जाव सुहलेस्सा सीयलेस्सा मंदलेस्सा मंदआतपलेस्सा चित्तंतरलेस्सा कूडा इव ठाणठिया २३८
णं

इ प्रकास सर्य प्रकाश स्थिर सूर्य प्रकाश चंद्र प्रकाश इं आस्थिर तेज लेस्याइं करइं नीपर उद्योत तेजकरइं तपइं त प्रकास करइं ब
इदककना प्रदेश मांहि नासकइं सान्नइ छइं छइं इ इंद्रनो विचार

अन्नोन्नसमोगाढाहिं लेस्साहिं ते पदेसे सव्वओ समंता ओभासेंति उज्जोवेंति तवेंति पभासेंति
पाछलीप जिवारइं ज्यारइं ते देवतानो जिवारइं इं इन्द्र विरहनइं विषइं देवता किम करइं छइं गोतम ओलगइं च्यार सा
रं इन्द्र चवइं छइं सामानिक कहइ.

जया णं भंते तेसिं देवाणं इंदे चयइ ते कहमियाणिं पकरेंति गोयमा जाव चत्तारि
मानिक मिली ते वामिव रहवजीनइं विचरइं रहइं छइं जिहां लगइं तिहां अनेरो इंद्र उपजता लगइं एतलइं ते मनुष्यलोक

पंच सामाणिया तं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव तत्थ अन्ने इंदे उववन्ने भवइ इंदट्ठाणे
बाहिरलाइं इन्द्र इंद्र उपजवानो विरह केतला कालनो गौतम जघन्यथी तो एक सम उत्कृष्टो तो छमासनो वि पुष्करवर
कहीइं म यलाइं रहलाइं द्वीपलेइ.

णं भंते केवइयं कालं विरहिए उववाएणं गोयमा जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा पुक्खर
पुष्करोद कनामइं स वालोवलयागार संस्थानइं पुष्कर वरनइं विंटीनइं पुष्करोदक समुद्र केतलो भगवन
ओडइ रहीउ छइं

वरं णं दीवं पुक्खरोदे नामं समुद्दे वट्टे वलयागारसंठाणे जाव संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ पुक्खरोदे
चक्रवाल विस्कंभपणइं छइं गोतम संख्याता योजन लाष चक्रवालविष्कंभपणइं छइं

णं भंते समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते गोयमा संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल

संख्याताला योजन फिरतो कह्यो श्री वीतरागदेवइं एवं पुस्करोदक समुद्रनी भगवन केतलो द्वार कह्यो

विक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं परिक्खेवेणं पन्नत्ते पुक्खरोदस्स णं समुद्दस्स कइ दारा प

गोतम च्यार द्वार कह्या वइं तिम जंबूनामसंज्ञा पाछली परइं जाणवी पुस्करोदकने छेहडे वरुणवर द्वीपनी पूर्वार्धदिसाथी बाहिरो पश्चिमइं

न्नत्ता गो चत्तारि दारा पं तहेव सव्वं पुक्खरोदपुरच्छिमपेरंते वरुणवरदीवपुरच्छिमद्धस

निलोप वम द्वार कह्यो इम यावत् त्रणि द्वार कहिता इम द्वारनों अन्तरो संख्याता सहस्र योजननी आबाधाइं अन्तरो कहीवो प्रदेश फरस्यानो प्रस्तावनाव

स्स पच्चत्थिमेणं एवं सेसाण वि दारंतरंमि संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते

अन्य यतो प्रश्न तिमज पण बलीपरे कहेवो तिमज जीव तेस्पामाटे हे भगवन इम कहीइं छइ जे पुस्करोदक समुद्र एहवुं नाम गोतम पुस्करोदक समुद्रनुं उदक पुस्करवरनी परेस्यो लोप थयु समान

पदेसा जीवा य तहेव से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ पुक्खरोदे समुद्दे गो पुक्खरोदस्स णं समुद्दस्स

तोय जाति थी जात स्वर्ण उत्पन्न तथा जीवा तोय नितान्त निर्मल तना पनोजीव तो पात लघु स्फटिक वर्ण नामदेव आशु त्वावतरस हीन जाति नथी नीप्रकृति निर्मल छे प्रकृति उदक रस कहीइ सिरी २ महर्द्धिक

उदगे अच्छे पच्छे सवे तणुए फलिहवण्णाभे पगईए उदगरसेणं सिरिधरसिरिप्पभा य एत्थ दो देवा महिड्ढीया

ज्योतिष नो आयुपानी स्थिति इहां वसइ छइ तेमाटे ज्योतिष इं निरंतर सास्वतो नाम छइ ज्योतिषीना विमान पुस्करोदक समु उपमनइं नक्षत्रपति सासे केतला चन्द्र

या जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे पुक्खरोदे णं भंते समुद्दे केवइया

२२९

केतला चंद्रमा प्रकाश कीधु छइ गोतम संख्याता चंद्रमा प्रकाश करइ छइ ३ ज्योतिर्गणतारानी कोडाकोडि संख्याती सोभा सोभेछइ सो पुस्करो

चंदा पभासिंसु वा संखेज्जा चंदा पभासेंसु वा ३ जाव तारागणकोडीकोडीओ सोभं सोभेंसु वा ३ पुक्ख

दक समुद्र एहने वारुणवर नामे द्वीप वर्तुल जयाकारइं वीटाईनइं ज्योतिर रह्यो छइ तिमज समचक्रवालसंस्थानइ छइ समुद्र पु

रोदं णं समुद्दं वरुणवरेणामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणसंठिए तहेव समचक्कवालसंठिते के

हवइ चक्रवाल केतलो परिधि कहेस जोइ गोतम संख्याता योजन नालो प्रमाण चक्रवाल विक्खंभ छइ संख्याता योजननो

वइयं चक्कवालविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं गोयमा संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं

लाख परिक्षेप परिधि छइ इम भगवंतइं कहीओ एक इं पद्मवरवेदिका छइ सविशेष वर्णन द्वारांतर असंख्याता प्रदेश ना जीव तिमज कहे

संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते पउमवरवेइया वणसंडे वण्णओ दारंतरं प

देस सर्व अधिकार कहीवो तेकिम भगवन स्या माटे कहीवो इम वारुणवर द्वीप ते स्या माटे छइ गोतम वारुणवर द्वीप तिहां देस २ घणी नानी मोटी

देसा जीवा तहेव सव्वं से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ वारुणवरे दीवे गो वारुणवरे णं दीवे तत्थ तत्थ देसे देसे तत्थ

ज्योलगइ पाछली परइं वावनी पुष्करिणी सर्व पाछली परइं कहे उत्प्रेक्षक २ पद्मवरवेदिका परिक्षिप्त छइ वेष्टित छइ वारुणी संख्यातनइ वारुणी सरीसइ पत्रि १ रस तेरी रहइ छइ

हिं २ बहूओ खुड्डाखुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ पत्तेयं २ पउमवरवेइयापरिक्खित्ताओ पत्तेयं २ वणसंडपरिक्खित्ताओ वारुणोद

नेषुडियानानीमोटीवाविनइं । जोजगइंविलिपंक्ति ननइंविषेनिर्मलजलसेकेंप्रसेकइं २ । परमवरवेदिकांइवनषंडेवे
दिषइं । छिनइं ।
पपडहकोपासाईयासुलंखुड्डाखुड्डियासुजाववलिवंतीआतंअडगपत्तियरपउमवरवेईया
वारुणीकहेंताजेमदिरातेणेकरी । जेवाविनेंवा घणाउसात्तिपर्वं । जोजगेंखरूहउस्थांनविशेषादिसर्वफटिकर
नरीथकीरहइंछइं । मइं । न । लमइं सर्वपाछलीपरइंवर्णतकरवो
परिक्खेवसंडपरिवासणोवाणपडहवसुबहवेउप्पायपव्वयाजावखडहडगासाहफलिहामयाअ
निर्मलछ तिमजवारुणरउत्तनो देव महर्द्धिकजोज वसइंछइंरह तेमाटइंवरुणवरसमु तद्यासारवनोनामछइं संष्याम
इं मेछइं ना गइं इंछइं इकहुइं इमचंद्रमादि चंद्र २
ज्ञातहेववसणप्पमाईदादेवमहद्धीयाजावपरिवसंति सेतेणट्ठेणंजावणिच्चेजोईसंसद्धसंख
संष्यातायहनषत्रतारानीसंष्याकोणाको वरुणद्वीपसु वलोरुदिनामसमुद्रवाटलोवलयाकारइंरहइंछइं
जिप्रमाणछइं वइं यावतत्राप्रथकी
ज्जगुणं जावतारागणकोडिकोडीउ वरुणदीवंचवरुणोदेनामंसमुद्देवट्टेवलयजावचिट्ठंति
समचक्रवालेंछइं विषमचक्रवाल कहेंवो विरकंसपणइंपरि संष्यातायोजननीपरिधिछांरा परमवररतनषंड
नथीतिम जेसर्वपाछलीपरें धि नरतिमजजाणवो जीवनाप्रदे
समचक्कवसमंतहेवसवलोणीयधु विरकंभपरिरकेवोसंबेचाईजोयणदारंतरंचपउमवर
ज्ञानोप्रश्नतिमजनिर्मलछइं गोल हवेनांमनोबंधनकहेंछइं वरुणोदकसमुद्रनोउदकपांणीनइंनांमइंस जेहनोछइंश्रु
नगवंतेइंमकहोउ म फल्लोनांमकिमलोकप्रसिद्धनो मइंप्रजाचंद्रमानीपरइं रविशाषति
वणसंडेजीवापदेसाअट्ठे णं वरुणोदसिणंसमुदस्सउदएजेहसिप्पलूतसंकारिसंतंतंपोसमास

मजनोमविशेष फपक्कइंकुरसअष्टचारपिष्टप्रशांननिफन्नसे आचीछ्धानवारुणीमदिराथकीघ जांबूनाफलनीपर
हवेमदिरानोस्वादजोणवो लोरसछइंजेहनो इंकोलिकवर्ण
सयजोसिवबयानिसवत्तकोसगअच्छपीढपुट्ठासुपइ अवावरवारणीअइरासंजंबूनांफलं
धांनकरणविशेषलोगरेकदोपनीअवलंबनीक हाइछइंजेहनीलगारेक लगारेकनेआशा कोमलकपोलनीकरनारीनें
रनारछइंआधिकमी आपइंछइंमिठासिनणी नीकरनारछइं जेमदीरा
पुट्ठवणसुजातिहोगावलंबिनीअहीयमकुरंपछइसीसिसरसनेसाकोमलकवोलिकरणीआ
जोजगइंआस्वाद संलापकरतां हर्षप्रीतिनिकरनारीछइं जेमदिरा फगांधआस्वादीथकी कंरणविषयनीवधारना
इंथकइं रछइं
कआसादीतावसंसीअनीङयसंलावककरुणाहारीसपीतजांणणीसुगंधआसायणीज्जानुप्पाय
सातानीघमाफणतार मदनकामनीवधारनार सर्वइंद्रीगात्रनइंप्रल्हादनीकरना आस्वादीय मासलते पेसलतेमनोरु
वइं वइंजेमदीरा रछइं की रुपी
णीज्जा पीणणिज्जादप्पणिज्जा मयणेज्जा सव्वेंदियगायपल्हायणिज्जा आसिलामुंसलापेसलावणे
उसमवर्णकरीउप गंधइंकरी रसइंकरी फरसेंकरी सहीतछ हवेपणतादशारुप नहीएअर्थसमर्थहोतम वरुणोदकसमु
पेतछइं इ पांणीहोइ नाचंतकहइं इना
णंउववेयागंधेणंउरसेणंउफासेणंउववेयाभवेयारुवेसीयानोइणट्ठेसमट्ठे गोवारुणोदस्सणं
उदकनो एथकीपणिअधिकोआस्वाद नांमार्थरछइंवेवर्णा वारुणकांतिनांमेंछइंदेवतामहर्द्धिकपल्योपमनीस्थितिनइंआ
कहोउ उथइंतसइंछइं तेमाटइंवारुणकहोइं
समुद्दस्सउदएएत्तोइट्ठयराएचेवजावआस्साएणंपणत्ते वरुणिकंतवरुणकंतेदोदेवामहि

२४७

जिवाभिगम
२४१

तथा वारुणवरद्वीपसाखंडीनामश्चंत्स यावत्तिसइंसर्वसंखिजयलीनायइंकहैंनाजाणवुं वरुणोयणसमुद्र त्रैं तेजातिविसष्याकइतिमजाणवुं

दीया जावपरीखित्ता संति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे सव जोसंखिज्जकणनायइं वरुणोदणं समुद्दं

खीरवरनामाद्वीपछइं वाटलोय तेहीवलइं । एसर्वसंख्यातायोजनमहीइंपहिं जाणवाइं । परिधिएसर्वे अर्थसंख्यातो कहीइं । घणीनानीवाविजाणजगइ

खरेणं नामं दीवे वट्टे जाव वट्टइ सव्वसंखेज्जाइं विक्खंभं परीक्खेवो य जाव अट्ठो बहूउ खुड्डावा

सरपंक्तिए सर्वेनाखीरनाजेहवोस्वादएहवीपाणीएभरीछइमननेप्रसनकारी । ते नाहनीवाविजिहांलगैं वलीपंक्तिवलि

वीउ जाव सिरपंतीइयाउ खीरोदगपडिहत्थाउ पासाइयाउ ... सुण खुड्डियासु जाव बहुलसंच

कातथाघणाउत्पातपर्वत सघलासर्वरत्नमयछइं । ज्यांलगैंजोवायोग्यछइं । पुंडरीक पुफदंतनांमइं बइंदेवता म

तियासु बहवे उप्पायपव्वयगा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा पुंडरीगपुप्फदंता य एत्थ दो देवा म

हर्द्धिक पल्योपमनीस्थितिंवसइं । तेमाटइं वसइंछइं । तेमाटइं एहवोयोनित्यक्रसर्वसंख्यातो द्वइं खीरवरद्वी पछइं ।

हिड्ढीया जाव परिवसंति से तेणट्ठेणं परिवसंति से तेणट्ठेणं जाव संसवं संखेज्जं खीरवरं दीवं

पछइं खीरोदनामासमुद्र छइं वलयाकारछइं संस्थानइं छइं संख्यातायोजननीपरिधि खीरवरद्वीपनेवींटी तेरहेछइं समचक्रवालसंस्थानछइं पणिविषम तिमजसर्वपरिधिजाव जाणवाइं

खीरोदे नामं समुद्दे वट्टे संठिए संबे छाइं जोयणसयसहस्साइं विक्खंभेणं परिक्खेवो तहेव सव्वं जाव अट्ठो

चक्रवालसंस्थानेनरीसंख्यातालाखयोजनजांबपणिं पिहुलपणिंछइं तिमजयोनिधीसर्वकहेंवासमुद्रजोअर्थकहैंवागात मः

अर्थगोखीरोदकनामासमुद्रनोउदककहैंतांजेपाणीतिमनकोइ रहेछेतइं । ऊद्ध्वसहितत्रणेसरसखंडकमालन्यछइं त्रणि सिरीपत्र सुको

गोखीरोयणस्स णं समुद्दस्स उदगे से जया नामं तसुठ्ठ सरा मासूपाद्ध अज्जुणतण सिरिसिवत्स को

मल आज्ञोनि मत्त वारुणी पत्र फलसेजदानामबकी चाउरंतचउकचयपर्यनअर्यनासुधनदीपांमइं पल्लव कंकोल सफल घणासुख प्रमुखतेल इकरीसदीत तेहवोउदक

मलंअभाणितिइणगापोडाणसंतुयारलीणंजवगपत्तिउप्पप्पत्रदकंकोलसफलचुरकबक्कक

घणासुखेकरी मीठउ मधुर पीप्पलीय फलित वेलीप्रधान वारुणी अल्पोदकइं प्रीतिरतिकारीवनीलाण सहित

छगुम्मकलितिल्लढिमधुरपत्तरटिपिप्पलीफलितवल्लिवरवासलीयंअपोदगइंसरसीकूलीलग

निर्लय सुषावती रोगरहितछइं रोगइं करीनइं विनिर्मुक्तछइं निरूपद्रवशरीरछे चारद्रसितोचक्रवर्त्ति चास्थांनपरिणत गोखीरनोमीठोरसहर्ष व

निव्वयसुहोसयणंसुपोसुयसुधाययाणं रोगपरिवज्जियाणं निरुवद्दयसरीराणं चाउरंत

चाली अर्क तिमइहांकदइंवा सविस्तर पणइं : घणइव्ययुक्तसंप्र युक्तबंधं मंदाग्निंकाल्यो आउत्कर्षंगोल तेणेउपपेत

दुहोछवतासरवीरोपुधरसिसवविगंध बणदवसांपन्नतेपत्तियंमंदाग्निसुकढिनोआनंतरखंडुम

राजाचक्रवर्तिनइं नाजननेअर्थइं इमसेजकीभीवें पयस्वादनीकछइं नेह छकीपणिविशेषइं ज्यांलगइं सर्वइंद्रीगात्रनइं करीनइं आस्वादवायोग्यछइं आलानीकछइं

खंडिनं ववेत रणो चाउरंतचक्कवट्टिस्स उवट्ठविते आसायणिज्जे सायणिज्जे पीणीणिज्जे जाव सव्विंदि

२४१

DR. BHAU DAJI

जीवाभिग
२४२

घआदनीकवइं सुवर्णउपपेत आलोगेअनकरसंउपपेत एहवोएनाइरूपखीर दवे तिवारे भगवंतकहे गोतम एअर्थ
वइ समुद्रनाजलनोस्वा समर्थनही तेखीरोदक

यएतेपल्हायणिज्जेवण्णेणंउववेतेजावफासेणंसवेयएरूवेसियानोइणट्ठेसमट्ठेखीरोदसिसे

उदक एकहीते स्वानोस्वादतेथकी पुष्टिइष्टतरस्वादएहनोजाणवो तथाविमलप्रभनामइं बइदेवतामहर्द्धिकवसेवइ
तेमाटे खीरोदककहीइं

उदए पत्तोतिहयांरावेजावआसाएणंपण्णत्ते विमलप्पभाईदोदेवामहिड्ढीयाजावपरिव

संख्यातस्वरूपमेंजाणिइं तारासंख्याताखीरोदकसमुद्रमइंतथावली घृतवरनामइंद्वीप वारतो
वलयाकारसंस्था

संतिसेतेणट्ठेणंसंखेज्जाचंदाजावतारा खिरोदंणंसमुद्दं घयवरेनामंदीवे वट्टेवलयागारसं

नइंसंस्थित जाणवइंवीटीनइंरही समचक्रवालेंवइं वलीविषमचक्रवालइंनथि परदेशेंनी वचपजइंमाहिमाहिं अर्थपा
छै उतइ विस्कंभपरिधिसंख्याताजोजननोहोइ वलीपरेकहइंछो हेगोतम

ठाणसंठिते जावपरिखिविचिठइ समचक्कवालेविसमसंखेज्जाविक्खंभपरिपदेसाजावअठोगो

घृतवरद्वीपइंतिहां२ घलीनान्हीमोटीवावि जाणवइंघृतोदकेंभरीरहीवइं जाणवइं उत्पातपर्वतसर्वरत्नम

यमा घयवराणंदीवे२तत्थ२बहवेखुड्डाखुड्डियावावीओजावघतोदगपडहच्छे जावबोदग

यछैपावडीपरेंसर्वस्वर्णमयछइं निर्मल जाणवइंप्रतिरूपकनक कनकप्रभनामइंबइदेवतामहर्द्धिकव
इ

नुप्पायपव्वयगाजावखडहडगा सव्वकंचणमया अच्छाजावपडीरूवाकणगकणगप्पभाइंदे २४२

चंद्रमासूर्यसंख्यातावै घृतवरद्वीपपूर्णइं घृतोदकसमुद्रआटलोवलयाकारसंस्थानइंसंस्थितवइं जाणवेंवइं

दोदेवामहिड्ढियाचंदासंखेज्जाजघयवराणंदीवंघतोदेनामंसमुद्देवट्टेवलियागारसंठाणसंठि

समचक्रवालेंछेतिमजद्वारांतरतिमजप्रदेशेंसर्वजीवप्रदेशनोअ गोतम घृतादिकसमुद्रनोउदक तेजिमरथोतें
छै

एजावचिट्ठइसमकंतहेवदारापदेसा२जीवायअट्ठो गोयमा घतोदस्सणंसमुदस्सउदए सेजहा-

वगलनाफूलसहतकीनाफूल मुकुलनां तेहनीकर्णिकानेसहि कोरंटचम्पनाफूलथकीघणोपीलोवर्णछइंस्नीग्धगुणेकरी
फूल तवइं घणोदीपतोतेजवंत

हांववाणकुलसज्झइविमुक्कोलकणियारसुविबुद्धकोरंटदामपडित्तरस्सणिद्धगुतेयदिखिवय

निरुपद्र विविधसुंदरतरवइं सुजाति दधिमथित तेदिवसइंग्रहीतें नवणीत रूपणवतंसिकढता
ते

नसवहितविसिद्धसुंदरतरससुजायदधिमथियतेदिवसगहियणवणीयरूढणावितसकं

स्थसुजातिचंतवाळीमाळीअगनिरूपेकोकढीउत्थधवकीत्र रवइंअधिककीटादिकाढ्यतेवुंपीवर आछोनीर्मलो सुघदाई
भिरूनीपरेउद्योतप्रमाणकरा

हितउद्याचिसद्धवीसंसदियससश्रीयंपीवरसुरहिगंधमणाधमेकरपरिणामंदरसणिज्जुसस

क्षेतोजननानोगनइंविषइं मरक्कालनो घृतनोमंडघृतसंघातेंउपरितरवंषंणीहोइं तेघृतमंडकहीइं घृतोदकनोएता
नीपनो इष्टास्वरूपस्वादहोइ एअर्थसमर्थनहि

पत्तिनिम्मलसुलेमणोपरसरयकालम्मिहोज्जा घीगयवरस्समंडेसवेदासेवे सियानोइणट्ठेस

देगोतम घृतदकसमुद्रनोघृतकीप जोलगइं आस्वादकही कांतिर सोकांतिनामार बेदवतामहर्धिक
तिदइतर जुबइं बइं

मट्टे गोयमा घयोदसणस्समुपन्नो इट्ठइ यर जाव आसाएणं पण्णत्ते कंतसुकंताइ बइ दोदेवा

ज्यां लगइं तारानीकोटाकोडिसोभइंबइं घृतोदकसमुद्रप्रवइं खीरोदवरनो

महिढीया जाव परिवसंतीसेसंतंचेव सेजाव ताराणकोडिकोडीनं घन्नं दणंसमुद्दं खोदवरेनं

माद्वीप वाटलोवलयाकारबइं ज्यांलगेंरहेबें तिमजव्यर्थवाचजी खीरोदवरद्वीप तिहांर देसइं२ तिहां२ नोमही
पदइं प

मंदीवें वट्टेवलयागारसंजावचिट्ठिए तहेवयाव अट्ठोखोयवरेणंदीवेतच्छ२ देसे२ तहिं२ खुड्डा

मोटीवावि ज्यांलगेंखीरोदकरसेंभरी उत्पातपर्वत सर्ववैडूर्यरत्नमइंबइं ज्यांवतिरूपबइं सुवत्समहाप्रतनाम
रहइंबइं इ

वावीजाव खोदोदयपरहच्छा उप्पायपव्विया सव्ववेसलियामया जाव पडिरूवोसुप्पसमहप्प

बइंद्रपनामहर्धिक ज्यांलगइंवसइंबइं तेमाटेंनामेंतिमजयोतिषीमर्वतिमजतारातिम खीरोदकवरद्वीपहरवइं
जे

भाय इच्छिदोदेवामहिड्डिया जावपरिवसंतीसेतेणं जाईसंतहेवजावतारा खोयवरेणंदीवं खो

खीरोदकनामइंसमुद्र वाटलोवलयाकारें ज्यांलगेंसंख्यातासेंयाजनपरिक्षेपपरिधि गोतम घानागोरवा
बइंज्यांतिमजनामनो अर्थकरइंवा तोदगसमु द्रना

दोदेनामसमुद्दे वट्टेवलयाजाव संखेज्जाइंजोयणसयेपरिक्खेवेणं जावअट्ठो गो घोदोदस्सणं २४२

उदकजिमते आस्वादनिकवें पचास्यवें सिग्धवें सुबुद्धिपुष्टवें सुजातवें सुकुमालसुकोमलनमीसागवें

समुदस्सउदएजहासे आसिलपसन्नेवीसंति निद्धसुबुद्धिउडाणसुजाताणसुकुमालन्नूमिलागसुवि

षेत्रत्नीशास्त्रविशेषंकरी इक्षुवीजवाविंधकी कामपत्रआदितेनोपुणविज्ञानइंपालतीथकीसुरूइंहष्टिकरीसु
हलंकरी षेतीकामलकइं

ते सुकंठजिद्धनिसवेट्टयबीयथावित्तसुकासागइपयत्तिनिउणपरिकम्मअणुपालियसुबुधबुध्ध

जातिनीपनी कीढिदोषे रहीत घलोयंत्रवीद्धारीथकीनयाइंसुंदरसेंकरीपराणिनइं मूढसुकुमालपाणपुष्पवी
पारदोष दिवइं

णंसुजाताणलवणनणदोसवज्जियाणंणयायपरिवट्टयाणंणिम्मायसुदराणपरिणयमउपीण

जंतुरहतपरलीपामा मधुरमीठ रतिंसहीतबइं जीवादिक्षुद्रम फरसतइंराजति अतिनवनम्रस
सुजाति गहवोइतु वातइंकरीपरी बइं फिकोलआदिनि

पोरंतंगुरसिजाइ महुररसिपुफविरइयाणं उवद्दिववज्जियाणंसीयपरिफासीयाणं अलिणवस

धाकरी रक्षरुद्रुनाअणमिलताछइर तेदवाइक्षुनावोनामना अनीतिमूल गंधकरीपरिशोधितउपस्पादेतोसागर
उ यावबाइं हरबइं बइंजेहेना हीनतवइंकरीनइं

याणं अभिलियाणंतिलायाणं बोडयवडाणंअविलयमूलाणं गंधपरिसोहियाणंकुसलनर

हाथिनरमनुष्यमे गहवाइखुनायंदकरीनइं चपलनरें चंपेंकरी गलीत्तबइं रसनेइनो गहवावेसफानोरसवल्लइं
लीकाधीबइं नइं करीनइंगलो बइं

किंप्पियाणं अठ्ठिणंजावपोरयाणं चलवगनिरजंदिजतिपरिताललमताणं खोयरसाहोइवट्ठ

स्वरूपस्वाद
तांइंतेमा
देदोषमका
इरना

चतुरीजातिकंकरीनेवास्योबेजेहनोरस अधिक प्रसस्यतेतहूणेकस्वापोछिहहो काइंकपाहक स्वादीसेघइं कनोपला
सहितवइं तिमज आस्वाद तेमोटं कोई लोपनमान्हाय घृदि हूद्रारूप

परिपूएवा तच्चायणासुवासिनी अदीयपछिलन्हकेवणेणं उववेते तहेव सव्वेयारूवे सियाणो
स्नगवंतकहंए इखुदकसमुद्रनो अधिक इष्ट आस्वाद करीउ सर्वजइ मांणिल्लइनांमाबद्देवतावसे वइं
अर्धसमर्थनदी पछकी

अणिहेसमहिरावोयरस्साणंसमुद्दस्साइंतोइएयरायवेअसाएणंपन्नेत्ते पुन्नभद्दमाणिभद्दाइंघरूवे
विहरं तिनामविचरेबे आकृतोसर्वेणा ज्योतिषीचक्र चंदसूर्य इखोदकस नंदीसरनांम वाटलोवलयाकारसं
बेलीपरइं सर्वसंख्याता मुद्रसवइ दीप स्थानेसंस्थितवइ

देवाजावविहरंतिसेसंतहेवजोइसंखिज्जांचंदाइखोअरसंसमुद्दे नंदीसवेरेनामंदीविवदेवलया
तिमजपरिखेपपरिधि परमवरवेदिका वनखं परिखे हारांतरा प्रदीपंआतीसर्व तिमज तेस्पमाटेलावनइंसकहीतनं
ड प दीसरहीप

गारसंठिएतहेवपरिखेवोपउमवरवणसंडपरिदारंतसप्पएसाजीवातहेवरसेकेणहेणंसेते
हगोत देसेरसेंघणीनोन्हीमो सांजणेविलपंक्तिखावोरकेंप्रतिसर्वलइं तरीलइं उत्पातपर्वतइं सर्ववज्जमयवे
म टीवावि

गोयमा देसेरबङ्गउं खुहावावीउ जावबलवंतिवाउखोयोदगपडिहस्थाउं उप्पायपव्वियगास
अच्छानिर्मलवे आंप्रतिरूपलइं अनेरो अश्रेनर गौतम नंदीसरहीपइं चक्रवालविष्कंभ घणोमध्य भाग

वव्वईरामया अबाजावपडिरूवा अदुत्तरंचणं गोयमा णंदीरवरंदीवचक्कवालविक्खंभबहु

त्वमांग केस र खुसोवि सुगंधत्रिजाति कमरत्वमय युक्त चतुरी जात कमूल्य ते २

आरहिसें अंजननामइं पर्वतकह्या वइं तेअंजनपर्वत८४चोरासीसहस्रयोजनप्रमांण उचो वपणे

मज्झदेसभाए एत्थणंचउद्दीसिंचत्तारिअंजणिपव्वयापणत्ता तेणंअंजणपव्वयाणाचउरासीइजोयण
एकसहस्रयोजन जमीमांहेरूपलइंछइं मूलेदससहस्रयोजन जोबा पिहुलोलइं तिवारपछी

सयसहस्साइं उडुंउच्चतेणंएगमेगंजोयणसहस्संउव्वेहेणं मूलेदसजोयणसहस्साइं आयामवि
मात्राइ २ प्रदेसइ २ घटतो २ थकी उपरि एकसहंस योजन जोवपणइपहिलपलइंलइं

क्खंभेणं तरंचणं मायापमायाए पदेसपरिहायमांणी २ उवरिएगमेगंजोयणसहस्सं आयाम
मुलइंपरिधिके तलीएकत्रीससहस्स ३१ २३ बसइं तेवीस योजन कांइकविशेषाधिकपरिधिकहीबे

विक्खंभेणं मूलेएकतीसजोयणसहस्साइं छच्चतेवीसजोयणसए किंचिविसेसाहियापरिक्खे
भिप्रतलेसीधरउपरि ३२ ६२ योजनप्रमांण एकसोबासहियोजन कांइकविशेषाधिक परिखेपपरिधिकहीलइं
त्रणिसहंस

वेणंसिहरीतलेतिन्निजोयणसहस्साय एगंबावट्ठिजोयणसयंकिंचीविसेसाहियापरिक्खेवे वे
मज्झेविस्ती मध्यमांहेइंसं उपरिपात गोपुच्छसंस्थानइं संस्थित सर्वअंजनरत्नम निर्मलआंजणप्रतिरूपछे
र्णी कीर्ण ला नइं यछइं कइ २

मूलविच्छिन्ना मज्झेसंषित्ता उप्पिंतणुया गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वंअंजणामयाअबाजावपडिरूवा २

परमवरवेदिकाइं वेष्टितछ वनषंडेंकरी वेष्टितबइं तेबेंनोवर्णगोतम तेअंजनपर्वतनेउपरइं प्रत्येकइं २ घणो
इत्येकं २ नमोयमा

पउमवरवेइयापरिखित्तेयं वणसंडपरिखित्ताउवण्णओ गो तस्सणं अंजणपव्वयाणं उवरिं पत्तेयं २ ब
मनोरमणीक भूमीभागकहीउ तेजिम दृष्टांतें मादलपुटनीपरइं एसर्ववर्णनजंबूद्वीपनीजगतीनी तेघणोसमोरम
समोभूमीभागबइं परंदेवतारमैछैवसैछै णीकरमीना

हुसमरमणिज्जोभूमिभागपण्णत्ता सेजहानामए आलिंगपुरकरेइ वाजावसयंती तस्सणंबहु
गनोघणुंमध्यदेशभागप्रत्येके२ पर्वतपर्वतदीवएक२ सिद्धायतनबइं एकसोयोजनलांबपणइंबइं

समरमणिज्जाणंभूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाएपत्तेयं २ सिद्धायणे एकमेगंजोयणसयं आया
पंचासयोजन पहिलपणैबइं बिहुंतरयोजन उंचोउंचपणइंबइं अनेकथंभसहित पर्वतबइं

मेणंपण्णासंजोयणाइं विखंभेणं बावत्तरिंजोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंनिविट्ठा
वर्णनकरवो सिद्धायतननइं प्रत्येकइं२ च्यारदिसइं च्यारबारकह्या तेकेहा देवबार१ असुरबार२ नागबार३

वण्णओ तस्सेणं सिद्धायणाणं पत्तेयं २ चउद्दिसिंचत्तारिदारापण्णत्ता तंदेवदारा असुरदारा नाग
सुवर्णबार४ तिहांच्यारदेवतामहर्द्धिकबइं जांजेंपल्योपमनीथितिंवसइंबइं तेकेहा देव१ असुर२

दारे सुवण्णदारे तत्थणंचत्तारिदेवामहिड्ढीयाजावपलिओवमट्ठिइयापरिवसंतीतं देवअसुर

नागकुमार३ सुवर्णकुमार४ तेबार सोलयोजनउंचोउंचपणइं आठयोजनविष्कंभपिहुलपणइंबइं तेतलोप्र
वेशमार्ग बइं

नागसुवण्णतेणंदारा सोलसजोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं अट्ठजोयणाइं विखंभेणं तावइयंचेव पवेस
थाकनो सर्वविजयबारनीपरें ज्यांलगें वनमालानोवर्णनइं निश्चइं तिमजप्रमा जिमपुष्पमंडपनाबारनी जिमजसर्व
मप्रेक्षघरमंडपआपि णकहेवो परइं एतलोवि

णंसेसंतंचेवजावणमालाओ एवंपच्छाघरमंडवाविं तंचेवपमाणंजमुहमंडवाणंदारावितहेव
शेष घणोमध्यदेशभागइं प्रेक्षघरमंड आषभामणिपीठका आठयोजनप्रमाण सिंहासनपरवारबीना
पइं

नवरंबहुमज्झदेसेपेच्छाघरमंडवाणंआखाडगामणिपीढीआओ अट्ठजोयणप्पमाणाओसीहासण
ज्यांलगइं दांमद्रयसर्वकहेवो थूभच्यारदिसैं तिमज एतलोविशेष सोलयोजनप्रमाण कांइंक अधिक सोल

सिपरिवाराजावदामाथूभाविचउद्दिसिंवहेवणवरंसोलसजोयणपमाणासाइरेगाइं सो
योजनऊंचाबइं थाकनोतिमजज्यांलगइं जिनप्रतिमा चैत्यवृक्षवृं तिमजच्यारदिसेंतिमजप्रमाणकेहेवो जिमवि

लसजोयसेसंतहेवजावजिणपडिमाओ चेइयरुक्खातहेवचउद्दिसिंतंचेवपमाणंजावविज
याराजधानीपरें सर्वएतलो विशेषः मणीपीठका योजनप्रसीद्धपोहलीबइं च्यारयोजनजाडीबइं मांहेंद्रध्वजचो
आव

याएरायहाणीएणवरंमणिपीढीयाओ अट्ठजोयणविखंभाओ चउजोयणबाहल्लाओ माहिंदज्झ

जीवाभिग
२५६

सठियोजनऊंचोछइ योजनएकऊंडोछे योजनविस्कंभछइ बाकतोसर्वपावलीपरें इमच्यारदिसें च्यारनंदा

यच्चउसट्ठिजोयणाइं जोयणंउव्वेहेणं जोयणविक्खंभोसेसंतंचेव एवंचउद्दिसिंचत्तारिनंदापु

पुक्करणीछइ विशेषसोयोजनलांबपणइं तिहांतिमानीसर्वतिमजऊंआलावोकहइवो तिमवेमानिकनासिद्धायतननी

दसयोजनऊंडपणइंछइ पचासयोजनपहिलपणइंछइ

क्करणीउंणवरंजोयणसयंआयामेणंपण्णासंजोयणाइंविक्खंभेणंदसजोयणाइंउव्वेहेणंसे

बाकतोसर्वविजयद्वारनीपरइं मनोगुलीका गोअडतालीससहस्र सर्वदिसइं सोलसहस्रपश्चिमइं आठ

मानसीका

संतहेवमणगुलियाणं गोमाणसीणयअडयालीसंसहस्सा चउरच्छिमेणंविसोलसपच्चच्छिमेणंदा

सहस्रदक्षिणइंछइं आवसहस्रउतरें बाकतोसर्वपावलीपरइंकहेवो उल्लोचभूमीभागसर्वतिम

सोलसहस्सादाहिणेणंविअट्ठउत्तरेणंविअट्ठसाहस्सीओ तहेवसेसंउल्लोयाभूमिभागाजावब

मांचलोमध्यदेशभागमणीपीठिका सोलजोजन बाहुल्यपणइंछइ तेमणिपीठिकानेउपरइं देव

हुमज्झदेसभागेमणिपीढियासोलसजोयणायवाबाहल्लेणं तस्सणंमणिपीढियाएणंउप्पि

छंदा सोलयोजनलांबपणें पिहुलपणइंछइ कांइंकअधिकोसोलयोजनऊंचोउंचपणेंछइ सर्वर

त्न

देवछंदएसोलसजोयणाइंआयामविक्खंभेणंसाइरेगाइंसोलसजोयणाइंउड्ढंउच्चत्तेणंस

२५६

मयछइ एकसोआठयोजनप्रतिमानीसर्वतिम जिमवेमानिकनासिद्धायतननीपरइंसर्वव्यक्तव्यतीक तिहांजेते सर्वनो

जऊंआलावोकहइवो कहइवी

वरयणाअट्ठसयंजिणपडिमाणंसव्वोसोचेवआलावोजावधूवकडुच्छुयासिद्धायणस्स तत्थणंजेसेपु

अंजननामापर्वत तेपर्वतथकी च्यारेदिसइं च्यारनंदापुष्करणीकहीछइ तेजहांकेहेतानां नंदोत्त

हनाम रा१

रच्छिमिल्लेअंजणपव्वतेसएतस्सणंचउद्दिसिंचत्तारिनंदापुक्करणीउंपण्णत्ताउंतंजहाणंदुत्तरा

आनंदा२ तेनंदापुष्करणीएकसहस्रयोजन लांबपणइं पिहुलपणइंछइ दसयोजनऊंडीछइ निर्मलछइ

यणंदाणंदपुक्करणीउंणंदाओजोयणसहस्सं आयामविक्खंभेणंदसजोयणाइंउव्वेहेणंअच्छा

सुकमालछे प्रत्येक२ वनषंडेविष्टितछे तिहां२ त्रिसोपानप्रतिरूपछइ द्वारनागइंतोरणछइ तेपुष्करणीनां

तेसण्हाउंपत्तेयं२ वणसंडपरिक्खित्ताउ२ जावंतिसोमाणपडिरूवगातोरणा तस्सणंपु

बहुमध्यदेशभागें प्रत्येकइं२ वनषंडेंप्रतिक्षिप्तछे तिहां२ त्रिसोपानप्रतिरूपकह्या तोरण

क्करणीबहुमज्झदेसभाएपत्तेयं२ वणसंडपरिक्खित्ता२ जावत्तिसोमाणपडिरूवगातो

सहित तेपुष्करणीनेंघणेंमध्यदेसभागइं प्रत्येक२ दधीमुखपर्वतकहीउं तेदधीमुखपर्वतइं यो

रणातस्सणंपुक्करणीणंबहुमज्झदेसभाएपत्तेयं२ दहिमुहपव्वतेपण्णत्तेतेणंदहिमुहपव्वतासाच

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जिवाभिग
२४७

सविसहस्रजोजन उंचोउंचपणइंछइं एकसहस्रयोजन उंडोउंडपणइंछइं सघलेंसरीषा पल्यंगनेंसंस्था
नसंठिआ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लंगसंठाण
नेंसंस्थितछें दससहस्रयोजन विष्कंभपणेंछइं एकत्रीससहस्रयोजन छसइं त्रेवीसयोजननी परिधि
संठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं एकतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसं जोयणसए परि
परीक्षेपकहीछइं तेसर्वरत्नमयछइं निर्मलछइं सांजणें अतिरूपछइं प्रत्येकें २ पद्मवरवेदिका वनखंडनोवर्णन
क्खेवेणं पन्नत्ता सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेयं २ पउमवरवेइया वणसंडे वण्णओ ब
घणोसमोरमणिकभूमीनागतिहां सिद्धायतननोजेतलोपरिमाण जिमअंजनपर्वतनीसघलीवक्तव्यताकहीतिं
मनिरविशेषपणेंकरीनइं कहेवी
देवतारमेंछइंबेसइंछइं
हुसमरमणिज्जा जाव आसयंति सिद्धायणं तं चेव पमाणं अंजणपव्वएसु सच्चेव वत्तव्वया निरव
ज्यांलगेंउपरिआव२ मंगलीकतिहांजेतेदधिमुखनोअंजनपर्वत तेहनीतिहां च्यारदिसइं च्यारनंदापुष्करणीकही
सेसं भाणियव्वं जाव उप्पिं अट्ठमंगलगा तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं
तेकेही कहीछइं तेकहेंछें नंदासेना१ अमोघा२ गोथूभा३ सुदर्शना४ तिमजसर्वकहेवो
चत्तारि नंदापुक्खरणीओ पन्नत्ताओ तंजहा नंदिसेणा अमोहा य गोथूभा य सुदंसणा तं चेव सव्वं

स २४७

सांजगें सिद्धायतनसांलगें तिहांजेते उत्तरनोअंजन पर्वत तेहनइं च्यारदिसइं च्यारनंदापुष्करणीकही
भाणियव्वं जाव सिद्धायणा तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदापु
तेंजसातेकेही विजया१ वेजयंत२ यथंती३ अपराजीता४ साकतोसर्वति सिद्धायतननीसर्ववि घरनोवर्णनकहेंवोजाण
मत्र कथ्यतावेदिका वो
क्खरणीओ पं तंजहा विजया वेजयंती जयंती अपराजिया सेसं तहेव जाव सिद्धायणा सव्वा चेइयघरवण्णणा
तत्थणंतिहांघणा भवन बाणव्यंतरदे योतिषी वैमानि देवता चोमासो तेहपडवे तथासंवत्सरी अने
पतिदेवता वता क नी
णेयव्वा तत्थ णं बहवे भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा चाउम्मासियपडिवएसु संवच्छरे
राघणा [illegible] ज्ञानोत्पत्तिज्ञानउपजतइं निर्वाणप्रसानें देवतानोकार्य देवता
एसु य अन्नेसु य बहूसु जिणजम्मणनिक्खमणनाणुप्पायपरिनिव्वाणमाइएसु देवकज्जे
एसमुदाएएकवारेदेवनेंसमुदाइं देवयोजनसर्वकस्यांएकठामि देवतासघला हर्षवंतक्रीडावंत प्रमुदितमनथका
लइंसमुदायइगतिथका
सु य देवसमुदएसु य देवसमिईसु य देवसमवाएसु य देवपओयणेसु य एगंतओ सहिया समुवाग
क्रीडाविनोदेंकरीयुक्त अष्टाह्निक अष्टाह्निकानामोमहोत्सव करतीदेवता करताथका पालनाथका सुखेंसमाधइं.
का मासाम
या समाणा पमुइयपक्कीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहं

सर्वसंख्यायां नंदीश्वरद्वीपे पंचासत्सिद्धाय तनानिशास्त्रे निर्दिष्टानि इति

विचरइ छइ कैलास १ हरिवाहन २ नामइं तिहां बेंदेवता महर्द्धिक पल्योपमनी स्थितिइं वसइ छइ तेस्या माटइं

सुहेणं विहरंती कइलासहरिवाहणा य तित्थ दुवे देवा महिड्ढिया पलिओवमट्ठितीया परिवसंती

गोतम नंदीश्वरद्वीपनि समास्वतो ज्योतिर्संख्या एवं नंदीश्वरद्वीपसं नंदीश्वरनामा समुद्र वाटलो वलयाका
लाकहवा वइ रइस

से तेणट्ठेणं गोयमा जाव णिच्चे जोइसं संखिज्जा णंदीसरवरं दीवं णंदीसरोते णामं समुद्दे वट्टे वल

स्थित छइ. जांलगें सर्वे तिमज अर्थ इखोदकसमुद्रनी परें जांलगें सुमनस सोमनस एबे देवता महर्द्धिक जांलगइं वसइ
वइ

यागारसंठाणसंठिए जाव सव्वं तहेव अट्ठो जो खोदोदगस्स जाव सुमणसोमणसा एत्थ दो देवा महिड्ढीया

रहइ छइ. जांलगें थाकतो सर्वे तिम तारा सूत्र नंदीश्वरसमुद्र एवं छइ अरुण नामद्वीप वाटलो वलयाकारइ जांलगें विटीनइ रह्यो छइ
कहेवो ज

जाव परिवसंति सेसं तहेव जाव तारग्गं णंदीसरोदं अरुणे णामं दीवे वट्टे वलयागार जाव संपरिक्खि

अरुणनामा सात्वनद्वीप सुं समचक्रवालें संस्थित छे कें विषमचक्रवालें संस्थित छइ. गोतम समचक्र

वित्ताणं चिट्ठइ अरुणे णं भंते दीवे किं समचक्कवालसंठाणसंठिए विसमचक्कवालसंठिते गो० स

वालें संस्थित पिण विषमचक्रवालइं संस्थित केतलो चक्रवालविष्कंभ संख्याता सहस्र योजन चक्रवालविष्कंभ कहेलो
छइ नथी तेनो जन

मचक्कवालसंठिते नो विसमचक्कवालसंठिते केवइयं चक्क संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं चक्क २४६

विष्कंभ पणें छइ. संख्याता योजननी लाष एवडी तो फिरती परिधि छइ. बे पदफेर छइ. पद्मवर वनषंड सहीत छइ. द्वारांतर ति

वालविक्खंभेणं संखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते पउमवरवणसंडदारादंत

म जाणवो. संख्याता योजनना सहस्र द्वारांतर जांलगें अर्थ सा मा जगइं वावि इखोदकसरिखे पांणी इं तरी छइ उत्पातपर्वत सर्व वज्ररत्नमय
जगइं छइ

राय तहेव संखिज्जाइं जोयणसयसहस्साइं दारंतरं जाव अट्ठो वावीतो खोतोदगपडिहत्थाउ उ

तिम कंदी पर्वत अनेक कंदी द्वीप ते पिण वज्ररत्नमय छे निर्मल सर्वे र अशोक १ वीतसोक २ नामइं बइं देवता महर्द्धिक
त्नमय छइ

प्पाय पव्वयकं दीपव्वयणदीवस्स वइरामया अच्छा असोगवीतसोगा इत्थ दुवे देवा महिड्ढी

जाव वसइ छइ. तेमाटइं तिहां सर्व संख्याय ज्योतिषी कहिइं अरुणनामा द्वीप वींटी छइ. समुद्र छइ तेहनी तिमज परिधि पहिलपणें छइ
अरुणोद कमाना

या जाव परिवसंति से तेणं जाव संखिज्जा य रा अरुणं णं दीवं अरुणोदे नामं समुद्दे तस्स वि तहे

अर्थ तिमज परिधि खोतोदनी परइं कहेवो विशेष भद्र १ सोमनस्त २ एबे देवता महर्द्धिक छइ. थाकतो सर्व तिमज

व परिक्खेवो अट्ठो खोतोदगा णवरि णं सुभद्द सुमणभद्दा इत्थ दो देवा महिड्ढीया सेसं तहेव अरु

अरुणोदक समुद्र एवं छइ अरुणवर नामइं द्वीप वाटलो वलयाकारें छइ. योतिषि सर्वे संख्याता जांलगें अर्थ इखोद

णोदं च समुद्दं अरुणवरे नामं दीवे वट्टे वलयागारसंठाणे तहेव संखेज्जगं सव्वं जाव अट्ठो खोदो

गइं सरीरद्वइंछइं उत्पात पर्वतः सर्ववज्रमयछैं निर्मलछइं अरुणवर तइ अरुणवरमहाभद्र एबेदेवता महर्द्धि

रमपडिरूवाओ उपायपव्वया सव्ववयरामया अच्छा जाव अरुणवरमाहासदा इत्थ दोदेवाम

कछइं एतलेमहाऋद्धिवंत अरुणवर द्वीपनामेंसमुद्र जाणवइं अरुणवर महाअरुणवरमहा एबेदेवता थाकतासर्व
ऋद्धिवंतछइं

हिड्डियाएवं अरुणवरादीवस्समुद्दे जावदेवा अरुणवरमहारुणवराइत्थइं दोसेसंतहेवअ

तिमज अरुणवरस्तसमु अरुणवर नासनामइं वलयाकार तिहांबइंदेवता अरुणवरोभासमहा एबइंदेवतामहर्द्धि
इतिहां द्वीपतेवाटलो छइ नइमहाभद्र कछइं

रुणवरद्दसमुद्दं अरुणवरोभासेनामंदीवेवट्टे जावदेवा अरुणवरोभासमाहाभद्दा एत्थदेवाम

जाणगइंइम अरुणवर द्वीपसमुद्रएतलेबिहुंबअरुणवरभास१ महावर२ एबेदेवता महर्द्धिकछइं
नामइं

हिड्डीयाजावएवं अरुणवरोभासेदिवसमुद्देणंवरंदेवा अरुणवरोभासमाहावरा अच्छदोदेवाम

कुंडलद्वीपइं कुंडलभद्रकुंडल एबइंदेवता कुंडलोदकसमुद्रइं चक्षु१ सुचक्षु एबेसुरदेवता कुंडलवर१
२

हिड्डीया कुंडलद्दीवे कुंडलभद्दोयदोदेवा कुंडलोदेसमुद्दे चक्खुसुचक्खुकंतादोदेवाकुंडल

महाभद्र एबइंदेवता महर्द्धिक कुंडलसमुद्र कुंडलवर कुंडलवरमहावर बइंदेवता महर्द्धिक
२

लवरेदीवे कुंडलवरमहाभद्दाइत्थदोदेवामहिड्डीयकुंडलवरोदेसमुद्दे कुंडलवरकुंडलमहा २४९

कुंडलवरोभास द्वीपकुंडलवरोभास समकइं१ कुंडलवरोभासइं एबेइंदेवता

वराएत्थदोदेवामहिड्डीया कुंडलवरोभासेदीवे कुंडलवरोभासेसुभद्द कुंडलवरोभासिमहा

कुंडलवर भास समकइं कुंडलवरोभास महावरनामइं बइंदेवता महर्द्धिक

भद्दाइत्थदोदेवाकुंडलवरोभासोतेसमुद्दे कुंडलवरोभासमहाविराइत्थदोदेवामहिड्डिया

जाणगइं पल्योपमनइंआउखइंतेसैंछइं कुंडलवरभासससमुद्र रुचकनामाद्वीपकहीत्रे वाटलोवलयाकारेछ
छइं इ

जावपलिउवमट्ठितीयापरिवसंति कुंडलवरोभाससमुद्दं रुयगेनामंदीवेपण्णत्ते वट्टेवल

सुंसमचक्रवालइंछइं कैंविषमचक्रवालेछैं समचक्रवालइंछइं पिणविषमचक्रवालेसंस्थितनथी केतलोचक्रवालप
गौतम

याजाववट्टइ किंसमचक्कवाल गोयमा समचक्कवालनोविसमचक्कवालसंठिए केवइयंच
णइं

कह्यो सर्वार्थ१ मनोरम२ एबेदेवतावसेछइं थाकतोसर्वतिमजरुचकोर गसमुद्रनी जिमखोतोदकसमु
पइइं इनीपरइं विस्त्रा

कवालंपण्णत्ते सव्वट्ठमणोरमाइत्थदोदेवावासेसंतहेव कयगोदेसमुद्दे जहाखोतोदसमु

प्रण्णतो हेगौतम संख्याताससहस्रजोजनचक्रवालप संख्याताजोजनसहस्रपरिधिकहीछइं कहांतर अपिनि
वैं णइंछइं

देणवरं गोयमा संखेज्जाइंजोयणसयसहस्साइं चक्कवालसंखेज्जाइंजोयणसहस्साइं परि

श्वेसर्वसंष्यातायोजनजाणवो। योतिबोसर्वपरिसंष्यातोकहेवोअनइ सर्वअर्धतिमजपाछ रवतोदकतिमजवि
वलीजाणवो जीवरइ जोब

रकेणंदारादारंतरंपिसंखेज्जाइं जोईसंसव्वंसंखेज्जाणंतां णीयव्वंअहोवितदेवरकोदोदसमण्व

एलतो रूमनसोमनसवइदेवतामहर्द्धिक तिमजरूचकनीपरेंकहेवो असंष्यातावि स्कंभपणइ संष्यातिपरि

रंसुमणसामणसाइच्छदोदेवामहिढीया तहेवरूयतहेवसयगाअहितंअसंखेज्जविरकंभेणंप

धिसंष्यातोद्धारांतर. योतिबोसर्वअसंष्यातोजाणवो कहेवो रूचकादिकसमुद्र रूचकवरनामाद्वीप

रिखेज्जोदारंचजोइतरंचजोइसंसव्वंअसंखेज्जलोणियव्वंरूयतोदणं समसयगवरेनामदीव

वारलो रूचकवर तइकरूचकवर महासइ २ बइदेवतारूचकवरोदारूचकवरद्वीपरूवर १ महावर २

वेव्वेरूयगवरोलहंरूयगवरमहासदाएछरूयगवरोदेरूयगवरारूयगवरमहावराइ

एबइदेवतामहर्द्धिक रूचकवरनासदीवइ रूचकवरवत्तास १ महासइदेवता रूचकनासद्वीपरूचकवर

छदोदेवामहिढीया रूयगवरोभासेदीवेरूयगवरोभासमहाभद्दा अच्छरोहगभासोतरूय

रूचकवरभासवर एबइदेवताहारद्वीपइ हारितइहार १ महाभइ २ बइदेवता हारवरसमुद्र

गवरोभासवररूयगवरोभासमाहावरइच्छहारादीवेहारंसहाहारमहालद्दएछहरो २५८

हार १ महावर २ हारितइ हारवरमहाभइ एबइदेवता महर्द्धिकमोटिकानइ हारि हारवर

दोदहरिवरहारवरमहावरइच्छहारावरेहारवरसदाहारवरमाहाभद्दइच्छदोदेवामहिढीया

महाहारवर बइदेवता हारवरोवभासद्वीप हारवतास हारवरवभासम हारवरवभास नामासमुद्र हारवर
हारइ

हारो तेहारवरवरहारमहावराइच्छहारवरोभासेदीवेहारवरोभाससद्दहारवरोभासमहाभ

हारवरवभास एबइदेवताइं ममघलइं त्रिप्रसावतारकरवा आगलिहारव रइम त्रिप्रसावतारैकरता

दाइच्छहारवरोभासतेसमुद्दे हारवरोभासि वरहावराइच्छएवंसव्वेतिपडोयारानयव्वाजावहा

देवद्वीपजाइं एहवोनामकहेवो सम्फइतो आपापणाभासोवे सवर १ वरदेवताजाणजोइं सर्वजरमण

रवरोभासोदेसमुद्देदीवेसिमहनामवरनामहोति नदद्धीसोजावपविमलावंवरावायवारादीसा

पर्वतजाइं नावि रवानोरकेंकरीसरीखइं पर्वत सर्वबजमैं देवद्वीप बइदेवतामहर्द्धिक देवतइ

सयंभुरमणंपावंतिसव्वावाउखोदगपरुच्छापव्वयकायसव्ववइरामयादेवदीवइदोदेवा

महाभइ इमंदेवोदसमुद्र देववर देवमहावर इमसघलेंकहेतोआजेंजैस्वयं महाभइ बइदेवतामहर्द्धिक
सरमण १ २

भदेवभद्ददेवमहाभद्दाइच्छदेवोदेदेववरदेवमहावराइच्छजावसयसुरमणेमहाभद्दइच्छदोदे

रूचकादिकद्वीपनीविधि नादिकवेदादिअसंष्यातदिवो

इम हारद्वीपहारोदसमुद्र हारवरद्वीप हारवरसमुद्र हारवरवभास

इम अर्द्ध हार द्वीप अर्द्ध हार समुद्र अर्द्ध हा रधभ्रवरसमुद्र हार अर्द्ध हार वर नाम द्वीप अर्द्ध हार दत्ता सर्द्द इम एम समध लोक हुँ वो देवे नाग जक्ख स्वयंभूरमण पर्यंत

सयंभूरमणद्वीपइं स्वयंभूरमणोद समुद्र वाटलो वलयाकार असंख्याता जोयणनो परिक्षेप असंख्याता जोयणनी परि
वामहिदियासयंभूरमणंदीवसयंभुरमणोदेनामंसमुद्देवट्टेवलयाजावअसंखेज्जाइंजोयणसयं
धि तिम जगती गोतम स्वयंभूरमणनो पांणी स्वच्छ आछो निर्मल जो निर्मल गंगाजल फटिकरत्न सरीखो प्रकृतिं
सहस्सायपरिक्खेवेणंजावअट्ठो गोयमा सयंभुरमणोदउदएअच्छेपच्छेजच्चेतणुएफालियवण्णा
उदक सरीखो कह्यो स्वयंभूरमण स्वयंभूरमण ऊपर वइं देवता घणा कहतो सर्व तिम जाणवो असंख्याता चंद्रादि तारानी
भेएपगतीएउदगरसेणंपण्णत्तेसयंभुरमणमहावराइच्छदोदेवामहिड्डियासेसंतहेवजावअसंखेज्जाउ ता
कोडाकोडि असंख्याती सोभइ सोभें वइं सोभ केतला भगवन जंबूद्वीप नामें केतला द्वीप कह्या गोतम असंख्याता जंबू
सोभइं
रागणकोडाकोडीउसोभेसुसोभेसुवा ३ केवइयाणंभंतेजंबुद्दीवानामधेज्जापण्णत्ता आसंखि
द्वीप नें नामें द्वीप कह्या वइं केतला भगवन लवणसमुद्र नामा समुद्र कह्या छै गोतम असंख्याता लवणसमुद्र नामें समु
द्र
ज्जाजंबुद्दीवानामधेज्जापण्णत्ता केवइआणंभंतेलवणसमुद्दा गोयमा असंखिज्जा लवणस
कह्या वइं इम धातकीखंड कहेवा इम असंख्याता सूर्य द्वीप चंद्र द्वीप नामा असंख्याता कह्या देव द्वीप नां
मुद्दानामधेज्जापण्णत्ता धायइयसंडेवि एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवानामधेज्जा देवे एगे दीवे पण्णत्ते
देवता इं अर्द्ध हार द्वीप अर्द्ध हार ... अर्द्ध हार वर द्वीप अर्द्ध हार वर समुद्र १ अर्द्ध हार वरभास द्वीप अर्द्ध हार वरभास समुद्र २ अर्द्ध हार
वर द्वीप नाद १ अर्द्ध हार वर महा नद २ इम चइं देवता कहिवा मर्त्य अर्द्ध समध सविंति नारी जाव॥

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

अर्द्ध हार द्वीप पछी नां द्वीप नें देव द्वीप लगी त्रिसावता र करी नें कहेवा॥

देव द्वीप आदिक पछी स्वयंभू रमण पर्यंत द्वीप समुद्र एक एक कहेवा

मइं एक जंबूद्वीप कह्यो देवोदक समुद्र एक जंबूद्वीप इम नाग द्वीप नाग समुद्र यक्ष द्वीप यक्ष समुद्र स्वयंभूरम
ण द्वीप जाणवइं स्वयंभूरमण समुद्र एक वइं नामइं एक समुद्र एक द्वीप कह्या वे
तेएगेदेवोदसमुद्देपण्णत्ते एवंनागजक्खेभूएसयंभूरमणेदीवेएगेसयंभुरमणेसमुद्देनामधेज्जे
लवणसमुद्रना पांणीनो भगवन केहवउ आस्वाद कहइं तो स्वाद कह्यो छइं तिवारइं हे गोतम लवणसमुद्रनो उ आइ
जगवंत कहइं दक जे पांणी ल
पण्णत्ते लवणस्सणंभंतेसमुद्दस्सउदएकेरिसएआसाएणंपण्णत्ते गो लवणसमुद्दस्सउदए आ
अस्वाछ आवीलो कंदे रइल जनी परइं मेलो अपथ्य किंदा वस्त्रपद लवण खिचइ मृगपशु पंखी नइं सरीसपनी पंक्ति एतला
मेला नथी वइं जलस्थित पाणी वइं मनुष्य करीइं सर्व नइं अपथ्य वइं एलि तिहां
इलेरइलेकिंदेलवणेकुडुएअपज्जेबहूणंदुपयचउप्पयमिगपसुपक्खिसरीसवाणणण्णत्थ
ता उपन्ना मच्छादिक तेह नें अपथ्य नथी ते समुद्रना जलनो भगवन केहवो आस्वादक हे गोतम आसिल मास्वाद वायो स
वा नि वती तिहां नपी इं वइं कालोद धी स्यो वइं उदक रस मांहइं
जोणिआणंकालयसणंभंतेसमुद्दस्सउदएकेरिसएणंपण्णत्ते गो असलमासलकालएणं
काला पांणी कालो पांणी केहवो तो आहादना उदक रसना सरिखो स्वाद छै एवं पुक्खरोद आवंत कहइं आवो जाचो
रो धर्म छइं अंबुन सरीखो वइ प्रकृतिं करी कय समुद्रना जलनो स्वाद केहवो स्वाद कह्यो छे गोतम स्वाद पातलो
सिरासिवण्णेपगइएउदगरसेणंपण्णत्ते पुक्खरोसणंभंतेसमुद्दस्स गोयमा अच्छेजावतणुए
फटिकनी परें प्रकृतिं प्रकृतिं उदक रस सरि एवं वारुणोदक समुद्रना जलनो स्वाद के आसला आस्वार वायो पवे
निर्मल वइं खो स्वाद वइं हवो कह्यो वइं तिजिमकोई दृष्टांतइं मांसल विसए आस्वादनी क
फालियवण्णेपगइएउदगरसेणंपण्णत्ते वरुणोदस्सणंभंतेसेजहानामए आसलामांसला
एहवे मान समुद्रादि जलनो स्वाद मांते समुद्र वण्णा
वे॥

पेसल गुरु धर्म लइ रूडे वर्ण जो लगे रुडे फरसें करी नाए अर्थ समर्थ वारुणोदक समुद्र एहथकी पाणि अधिक इ
लेकरी मनोज्ञ लइ सुष्टक लइ नही नापाणीनो इष्टतर निश्चे मनोहर

जीवाभिगम: पेसला वण्णेणं उववेता जाव फासेणं उववेते णो इणट्ठे समट्ठे वारुणे णं दए एत्तो इट्ठतराए चेव जा

२५२ स्वाद कह्यो खीरोदक समुद्र नो रंग नो केहवो आस्वाद कहें तो स्वा गौतम तेजिम कोई इ राजाचार दिसनाच
लइ उत्तरक इकसाव म ह्वांतइ क्रवर्तिनइ

व अस्साएणं पं खीरोदस्स णं भंते उदए केरिसए अस्साएणं पं गो से जहा णामए रण्णो चाउरंत

काजइ गायनो दूध ते यत्ने करी मंदाग्नि इं करी भ्रयत्न पणइ गोल खांड साकर युक्त तेलनी कलघकी जिम वर्णइं क
रली स्थोकढियो रीउपेत

चक्कवट्टिस्स चाउरक्के गोखीरे पयत्त मंदग्गि सुकढिए आउत्त खंड मच्छंडि उववेते वण्णेणं
जो लगइ फरसइं करी उपये तेपाणीनो स्वाद गौतम एअर्थ सम खीर समुद्रनो एहथकी इष्टतर अधि हवे घृतोदक
तहहवो कइं र्थ नही को स्वाद कहिउं समुद्रनो के

उववेए जाव उववेए जाव फासेणं उववेए भवे एयारूवे सिया णो इणट्ठे समट्ठे गो खीरोयस्स एत्तो इट्ठतराए जाव
हवो स्वाद होइ गौतम तं जिम कोइ दृष्टांतइं सरदकालनो मंद कव परिल वधोणी सलइ ना फूल ते हते कणयर का नास
कीक्षेणाय नो घृत नो जे हवो होइ रीबीजा नालइं जेहनी स्थोकढीत

एसाइ पण्णत्ते घयोदस्स णं से जहा नामए सारइए गोघयवरस्स मंडे सल्लइ कण्णियारि
उदार ते घीनी पतो सद्य तत्कालनो नीसंदित कणक रादिर हीत ते फरसइं करी उपपेत एं जघृतपाणी समुद्रनो एह
वर्णइं करी उपपेत जो लगइ लइ वो स्वाद द्राक्षा रूप

पुप्फवण्णे सुकढिय उदार सज्झवीसंदिते वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेते रसवे २५२

गौतम एअर्थ समर्थ नेषकी पाणि अधिक खोतोदक समुद्रनो केहवो कोई दृष्टांत सेलडीना जाचा पुंड हरीतनी जी
नही होइं होइ ते जिम इ करी

य एयारूवे सिया नो इणट्ठे समट्ठे एत्तो इट्ठतराए खोदरसस्स से जहा नामए उच्छूणं जच्चपुंडकाणं ह
इ रकु नी कालनी करी पोरापरी पक्क एहवी सेलडीनी त्रीजा भागनी छेदी बेदी साथी मूले थी कापीनइ वाढली ली बीजं बल
थी उपरि वंतनर घुरुषे जंत्रे करी

रियालपिंजराणं सरूणं कालपोराणं तिभागणिव्वडियवाडगाणं बलवगणरजंतपरि
गालीलइं जेह जेहनो सेलडीनो वस्त्रेंकरी गो चाउर्जातकें करीनइं वासो अधिक पथ्य लइं इ हलुउं वर्णइं करी
नो रस लो लइं जे रस ई उपपेत

गालियमित्ताणं जे य रसे होज्ज वत्थपरिपूए चाउज्जातग सुवासिए अहियपत्थलहुए वण्णेणं उव
युक्त ब जा एहवो स्वाद होइ तेहवु गाौतम एअर्थ समर्थ नही एथकी पाणि समुद्रनो स्वाद इमि एहवा इक्षुरसनो बोक एतलो
इ वरसक इनइं अधिक लरस्वाद होइं इमसघला हैं वो जिहां लगइ स्वयंभूरमणसमुद्र लगइं विशेष

वेते जाव भवे एयारूवे नो इणट्ठे समट्ठे एत्तो इट्ठतराए एवं सेसगाणं वि समुद्दाणं भेदो जाव सयंभु
स्वयंभूरमण समुद्रनो पाणी पुष्करोदकनो ते हवो स्वयंभूरमणनो रंग कहता एकें रस जल जल या कह्या लइं गौतम चार समुद्र
चारी बोध रस लइ जिमपु कहें वो केतला समुद्रनी लिवार रंग वेत कहइ

रमणस्स अच्छे जच्चे जहा पुक्खरोदस्स कइ णं भंते समुद्दा पत्तेगरसा पण्णत्ता गो चत्तारि स
ना प्रत्येकें भिन्न रसक लवण समुद्र १ खीरोदक घृतोदक ४ केतला भगवन समुद्र प्रकृतें उदकना रसक ह्या
ह्या तेकेहणु वारुणोदक २ ३

मुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता तं लवणे वारुणोदे खीरोदए घओदए कइ णं भंते समुद्दा पगतीउदगरसा

गोतम त्रणिसमुद्रनोजलप्रकृतिंउदकसरीषोरसक कालोदक १ पुष्करोदक २ स्वयंभूरम ३ बीजाजे घाकता
छोतइं तेकेहा २ जोणवा

णंपन्ना गो० ततोसमुदापगतीए उदगरसेणंपणत्ता तं कालोयणेपुखरोदेसुयंभुरमणे अवसेसा

समुद्र उसन्न प्राइं बाहुल्यइं खोदरसस श्रमणो आयुषमंतो केतलाएक घणामछ काछबा तेणइं करी कहे हे गोतम
रीषा कहीउ आकीर्णकिहतां सहीतइं सगवंत

समुद्दाउसिणंखोयरसापणत्ता समणाउसो कइणंभंते समुद्दा बहुमछकछभाइणापणत्ता गोयमा

त्रणिसमुद्रइं मछकछबा लवणसमुद्र कालोदधिस बीजाघाकताजेसमुद्र तीहां मछक ग्यावानइंक लवणसमुद्रइं केतली
कीर्णकहइं तेकेहा मुद्रस्वयंभूरमण बाकीनाथोडा उपजता छइं मछनीजातिनी

ततोपणत्ता लवणेकालोयणे सयंभुरमणे अवसेसासमुद्दा अप्पमछकछभाइणापणत्ता लवणेणं

कुलकोडि जेतेकहीवइं तेकहो स्वयंभूरमणसमुद्रइं साढीबारकुलकोडि कही जातिकुलकोडीयोनिप्रमुख सातसहस कहा
मछनी ष

भंतेसमुद्दे कइमछजाइकुलकोडी सयंभूरमणेणंभंतेसमुद्दे अद्धतेरसमछजाइकुलकोडी

हवेमछनी अवगाहना पूछइ छइं सगवन लवणसमुद्रइं मछना शरीरनी केवडी मोटी आवगाहना कही छइं सगवनकहे

जोणीपमुहसयसहस्सापणत्ता लवणेणंभंतेसमुद्दे मछाणं केमहालियासरीरोगाहणापणत्ता

गोतम जघन्यतो अंगुलनै असंख्यातमैं भाग उत्कृष्टी तो पांचसै योजननी अवगाहना इमकालोदधिइं सातसइं योजननी
म गै होइ

गो० जहन्नेणंअंगुलस्सअसंखिज्जइभागं उक्कोसेणंपंचजोयणसयाइं एवंकालोयणेसत्तजो

इमस्वयंभूरमणे जघन्य अंगुलनै असंख्यातमइ भा उत्कृष्टी तो एक हजार योजननी अवगाहना मछनी कही हवेद्वीपस
गइ होइ

यणसयाइं उक्कोसेणं सयंभुरमणे जहन्नेणं असंखिज्जइ उक्कोसेणं दसजोयणसयाइं केवइया

मुद्रनांनाम केतलां छइं समुद्रनां केहवां नाम गोतम जेतलां लोकमां शुभनां नाम स्वस्तिकादि फरसनां जेतलां नाम छै
छइं तिमइं छइं द्वीप म शुभवर्ण गंधरस

णंभंते दीवसमुद्दा नामधेज्जेहिंपणत्ता गो० जेवइया लोगे सुभानामा सुभावण्णा जाव सुभाफासा एवइ

एतलां द्वीपसमुद्रनां नाम छइं केतलां द्वीपसमुद्र छइं सगवन केतला उद्धारसागरोपमना समइं द्वीप गोतम जेतला अढी
सां समुद्र कह्या छइं म उद्धारसागरो

यादीवसमुद्दा नामधेज्जेहिंपणत्ता दीवसमुद्दाणंभंते केवइया उद्धारसमएणंपणत्ता गो० जावइया अ

पमें करीजेतला समय होइ संकल्पनाला द्वीपसमुद्र कह्या अढी उद्धारसा गरोपमना समय तेतला
नागुणा तुणा

ड्ढाइज्जाणं उद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमया एवंइयादीवसमुद्दा उद्धारसमएणं दीवसमुद्दा

द्वीपसमुद्र छइं सगवन किं पृथ्वी परिणामें आउपरिणामें जीवपरिणाम छइं पुद्गलपरिणाम छइं पृथ्वीपरिणाम छइं
छइं छइं

णंभंते किंपुढवीपरिणामा आउपरीणामा जीवपरिणामा पोग्गलपरीणामा गोयमा पुढवीपरिणा

आउपरिणाम छइं जीवपुद्गलपरिणाम छइं द्वीप छइं द्वीपसमुद्रइं सगवन सर्वप्राण बेंद्रीयादिक सर्वसत्व सर्वजी
प्यादि वपंचेंद्रीयादि

मावि आउपरीणावि जीवपोग्गलपरिणामावि दीवसमुद्देसुणंभंते सव्वपाणा सव्वभूया सव्व

सर्वजीवएकेंद्री सर्वसत्वपृथ्वि यादि व्यादिक पृथ्वीकाय पणि त्रसकाय पणि ऊपना हे गोतम एक वार वार अथवा

जीवकाभिगम २५४

जीवा सव्वसत्ता पुढविकाइएत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववणंपुव्वा हंता गो० असतिं अदुवा

अनंती वार ऊपना एतलेंद्वीपसमुद्रनो अधिकार कह्यो हवे विषय द्रव्य केतला इंद्रीना विषयनो पुद्गल परिणाम कह्यो हे गोतम

अणंतखुत्तो इति दीवसमुद्दा समत्ता ॥ कइविहे णं भंते इंदियविसए पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते गो०

पांच प्रकारे इंद्रीविषयनो पुद्गलपरिणाम कह्यो ते श्रोत्र इंद्री विषय यावत् फरस इंद्री विषय श्रोत्रेंद्रीविषयनो भगवन

पंचविहे इंदिएपोग्गलपरिणामे पण्णत्ते तं सोइंदियविसए जाव फासिंदियविसए सोइंदियविस

पुद्गलपरिणाम केतले भेदे कह्यो हे भगवंत हे गोतम बे भेदे कह्यो छे शुभशब्द परिणाम अशुभशब्दनो परिणाम इम चक्षु इंद्री

एणं भंते पोग्गलपरिणामे कइविहे पण्णत्ते गो० दुविहे पण्णत्ते तं सुब्भसद्दपरिणामेय दुब्भसद्दपरिणामेय

विषयनो परिणाम बे भेदे सरूप परिणाम १ कुरूप परिणाम २ इम नासिकाना विषय सुगंधपरिणाम १ दुर्गंधपरिणाम २ इम जिह्वाना विषय इम फरस परि

एवं सुब्भिगंधपरिणामेय

एवं चक्खुइंदियविसएहिं सरूवपरिणामेय दुरूवपरिणामेय दुब्भिगंधपरिणामेय एवं सुरसपरि

णाम इम दुरस परिणाम इम कायाना आश्री शुभस्पर्श परिणाम १ अशुभस्पर्श परिणाम २ ते स्या माटे हे भगवन इम कह्यो ऊंचा नीचा मध्य

णामेय दुरसपरिणामेय एवं सुफासपरिणामेय दुफासपरिणामेय से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ उच्चाव २५४

मध्यशब्दपरिणाम ऊंच नीच मध्य सरूपपरिणाम ऊंच नीच मध्य गंधपरिणाम ऊंच नीच मध्य परिणाम स्पर्शनी परी दुफासना परिणाम पर

एसु सद्दपरिणामेसु उच्चावएसु सुरूवपरिणामेसु एवं गंधपरिणामेसु फासपरिणामेसु दुफास

णमता थकां पुद्गलपरिणाम कहे नपरणमइ हे गोतम ऊंचनीचमध्यम शब्दना पुद्गल परणे परणामें परणमता

परिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमंतीति वत्तव्वं सिया हंता गो० उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु परिणा

पुद्गल बहु प्रकारे परणमें ऊंचनीच परिणामे परणामें तेनिश्चे भगवन शुभशब्द पुद्गल अशुभशब्द परिणमइ

मेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमंतीति वत्तव्वं सिया से नूणं भंते सुब्भसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए

अशुभशब्दना पुद्गल शुभशब्द परणमइ हे गोतम शुभशब्दना पुद्गल अशुभशब्द परिणमइ

परिणमंति दुब्भिसद्दा वा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति हंता गो० सुब्भिसद्दा दुब्भिसद्दत्ताए परिणमं

अशुभशब्दना पुद्गल शुभशब्द परिणमइ तेनिश्चे भगवन सरूपपणे परणमे कुरूप पुद्गल सरूप परणमइ भगवंत श्रीवीर कहे

अशुभ शब्द परिणमंति तिम शुभशब्दे परिणमंति ॥

ति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति से नूणं भंते सरूवा पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवा पो

कुरूप परिणमइ हे गोतम इम शुभगंधना पुद्गल दुर्गंधपणे परणमइ अशुभगंधना पुद्गल सुगंधपणे परणमइ इम सुग

ग्गला सुरूवत्ताए हंता गो० एवं सुब्भिगंधा पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधा पोग्गला सुब्भिगंधत्ता

२५५

रसनाथुफलअशुभरसपणइंपरणमइं असुभपणइंपरण हगोतमपरण इमसुभफरसअशुभपणेवर अशुभकर
रसनाथुफल अशुभरस मेमइं णमइं मसुभपण

एपरिणमंती एवंसुरसाउरसत्ताए उरसाय रसत्ताएहंता गो एवंसुफासदुफासत्ताएदुफासा

इपरणमइंप हगोतम हवइदेवता रणमइं
सुफासत्ताए हंतागोपरिणमंते

नामंफलनइंविषेमेफलीचूलीकाइंदेवताबेंगजगतीनीपालेंहांगनारहीने फलनाघकीकइंमुकेएतलेंदेवतामेरुपकीमचडीवपुचइंएकविसवारफि रीनेतेवलीपिंडनोपुफलकइंअणेपरूलीघकोपहइंएहवीगतिनोपणीतेएह

चीगतिकरीतेपुद्गलअनेरागतिनापुफलपण इनेगतिकरइंपणितेअणाली धइंगतिकरीम कइंनही एअरथपंक्तिनाफषवीजावंबो

हवइदेवतानइंभगवन तिमजभगवन सुतघाथतापुफल अशुभघाथप महर्द्धिक

देवेणंभंतेमहिड्ढीए तंचेवणंभंते सुब्भिसद्दापोग्गलाउ

लिंपरणमइं अशुभघाथतापुफल मनघाथपणेमरणमइं हगोतमपरणमइं तिमजभगवन शुभघाथताप

ब्भिसद्दत्ताएपरिणमंतीदुब्भिसद्दापोग्गलासुब्भिसद्दत्ताएपरिणमंसीहंता गो तंचेवणंभंतेसुभास

फलपरणमैं इमगंध मरूपते कुरूपतेयपणिवरणमइं इमगंधरसफरसआदिवावीसबोलविषयना तिमजने
कहइंवासही २२ हवइं

दादुब्भिसद्दाएदुब्भिसद्दासुब्भिसद्दात्ताए सुरूवादुरूवत्ताए एवंगंधाए रसायफासाए २२ तं

मफासतेफासपणइंपरिणमइंभगवंतकहइं हगोतमपण जाइंपरणमइंहवेंदेवतानीपुफलग्रहणनीशक्तिव
वालइछइ

चेवणंतेसुफासादुफासाताएपरिणमंतीहंता गो जावपरिणमंतिदेवेणंभंतेमहिड्ढीए ⊢ २५५

देवताभगवनमांजगैमहा पहिलोपुफलवेपिनांबीनइंहे पुचइंएकवीसवारफिरीनइंपुफल देवतामहर्द्धिक एकवीसवा
करावइं प्रनस्वामीतत्कालजंबूद्वीप प्रनइंग्रहइं हगोतमग्रहइं

जावमहाणुभावेपुव्वामेवपोग्गलंखेतापभूतमेवअणुपरियट्टत्ताणंगिन्हेत्ताएगो य सेकेणट्ठेणंभंतेते

रमहाफिरीनेलइंएहवोसकति किमहोइं तेसामाटेंभगवनएमपुफलषेत्रभमणे तेपुफलनीप्रथमसीघ्रगतिथइं
कहीते नइं

एवंवुच्चईदेवेणंमहीढीयाजावगणताणगोयमा पोग्गलेखेत्तेसमाणेपुव्वामेवसिग्घगइसि

तिवारपछीमंद अनेदेवतामहर्द्धिकघाइंजांमतानुतावतइंपहइं सीघ्रउतावलीगति उतावलीगतिकइंपणिपुफलप
गतिथायइं जातइंपछइं होइं देमंदगतिमोहोइं

वत्तातन्नेपच्छामंदगइभवइदेवेणंमहिड्ढीए जावमाहणुभावेपुव्विंविसीहेसीहगत्ताचेवउ

तेमाटइंकुंजेतेइमकहूंछुं गोतम एवंकुव्वइंकहंताइंम आजोगीतिमजजंबूद्वीपप्रवइं तेपुफलनइंदेवताग्रहइंवली
कहीते एकवीसवारफिरीनइं पुफलग्रहीनइं गतिकह

रीएउरीयाईचेवसेतेणट्ठेणंगो एवंवुच्चईजावतमेवअणुपरीयसाणंगिन्हहंताएदेवेणंसं

इलइंदेवताभगवनम आलुफजअणलीधइं वालछेदीनिंसेदीनइंश गोतमएअर्थसमर्थनही देवताभगवनह
हर्द्धिकबाहिर हैरूइं पहेला हइं

तेमहिड्ढीए बाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्ताप्पभूमेववालेछेत्तासेत्तापभूगिन्हित्तए नोइणट्ठेसमट्ठे

महर्द्धिक बाहिरलापुफजलेइनइं पहिलोवाल अछेदीनइं असेदीनइं प्रनग्रहइं एअर्थसमर्थनही

देवेणंभंतेमहिड्ढीएणं बाहिरेपोग्गलापरियाइत्ता पभूमेववालंअछित्ताअभित्ताएस्सादित्तए

जिम मनुष्य लोक माहि एक राजा थी एक राजा नम राधा बे राजा अप एमै राजा ना परिवार अविलव ते तिम थाति थी मां इम छइं.

देवता भगवन महर्द्धिक महा बाहिरला पुद्गल लेइ नइं पहिलो वाल छेदी नइं तथा वली भेदी नइं
तुलाव
नो इणट्ठे समट्ठे देवे णं भंते महड्ढीए जाव महाणुभावे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तामेव
ऊतरइं गौतम न समर्थ हुइं. वेकिय निश्चै ते हनो संधि छेदी छद्मस्थ जाणै देखइं न समर्थ हुइं. देवता भगवन म
वालं छित्ता भित्ता पभू गंठित्तए हंता पभू तं चेव णं संधिं छउमत्थे जाणइ पासइ सुहुमं च णं गंठिज्जा देव
हर्द्धिक पहिलो वाल छेदी नइं अछेदी नइं अल्प दीर्घ रूपे करी हस्व लघु रूप करइं. ए अर्थ समर्थ नही.
णं भंते महड्ढीए जाव पभू तामेव वालं अछित्ता अभित्ता पभू दीहीकरित्तए वा हस्सीकरित्तए वा नो इ
इम च्यार आलावा सरिषा करवा पहेलं बीजइं भागइं लेइं नइं एकत्रीजु अछेदी अभेदी थाक
णट्ठे समट्ठे एवं चत्तारि विगमा पढमबीयभंगेसु अपरियाइत्ता एगंतरियगा अछित्ता अभित्ता से
तो तिम ज तिम ज संबंध छद्मस्थ जाणइ देखइं. सूक्ष्म ना दीर्घ करइं. दीर्घ ना रहस्व करे ए लघु अ
दीर्घ करिवा पासेवा
संत देवत्तं चेव णं संबंधं छउमत्थे णं जाणइ पासइ सो एणं च णं दीहीकरिज्ज वा रहस्सीकरेज्ज वा अत्थि
छइं भगवन हेठ सामान्य बहु वचन पलं तारा रूप केतला ए पेसाइं ते घणा छइं थोडा छइं सरीषा छइं तथा
नइं सूर्य नइं. जे तेसा दिव्यां वी छइं केसरीषा छइं
णं भंते चंदिम सूरियाणं हिट्ठं पि तारारूवा अणुं पि तुल्ला वि समं पि तारारूवा अणुं पि तुल्ला वि उप्पिं २५६

छइं तारा ऊ थोडा छइं सरीषा छइं गो ते किम भगवन अर्थ इम कहो छइ भगवन चंद्रमा सूर्य
सम सर्व इम ज छइं
पि तारारूवा अणुं पि तुल्ला वि हंता अत्थि से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ अत्थि णं भंते चंदिम सूरियाणं
बहु वचन तारा रूप संबंध तारा रूप थोडा सरीषा ते ज कहितेसा कहे छे गो जिम २ ते देवता नइं तप बारे भेदे
माटे भगवन तम
हिट्ठं पि तारारूवा जाव उप्पिं पि तारारूवा अणुं पि तुल्ला वि गो जहा जहा णं तेसिं देवाणं तवनियमबं
नियम ब्रह्मचर्य अतिशय तीव्र जित ए देवता नइं एवं प्रज्ञापयंति केवली इम कहै छै थोडा सरीषा ते ज मैं कहि दे हसो
भेदे त्यां मत होइं. तिम २ ते धर्म इं घणा घणा छइं.
भचेराइं ऊसियाइं भवंति तहा तहा णं तेसिं देवाणं एवं पण्णायति अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा से तेण
छइं भगवन चंद्रमा सूर्य संबंध इं तारा रूप थोडा सरीषा ते ज कहिऊं इं ते माटइं कहीइं. एकेका भगवन चंद्रमा
घणा
ट्ठेणं गो अत्थि णं चंदिम सूरियाणं जाव उप्पिं पि तारारूवा अणुं पि तुल्ला वि एगमेगस्स णं भं
नइं सूर्य नइं केतला नक्षत्र नो परिवार कहिउं केतला महाग्रह नो परिवार कहिउं केतला तारा ए नी कोडाकोडि नो परिवार
ते चंदिम सूरियाणं केवइया नक्खत्त परिवारो पण्णत्तो केवतिया महग्गहा परिवारो पण्णत्तो केवतिया तारा
कहिउं भगवंत कहै. गौतम एकेका चंद्रमा सूर्य नइं अठ्यासी ग्रह होइं अठावीस नक्षत्र नो परिवार होइं
गण कोडाकोडीओ परिवारो पण्णत्तो गो एगमेगस्स णं चंदिम सूरियस्स अट्ठासीइं च गहा अट्ठावीसं नक्ख

DR. BHAU DAJI

एतलोएकचंद्रमानोपरिवारकह्यो हवेताराना परिवारनी संख्या कहे छे १ बासठिसहस्रकोडाकोडि नवसेंकोडाकोडि पंचोत्तरकोडाकोडि

थनक्खत्ता एगससीपरिवार एत्तोताराणवोछामि १ छासट्ठिसहस्साइं नवचेवसयाइं पंचसत्त

एतलोएकचंद्रमानोपरिवार कह्यो एतलीताराकोडाकोडि हुइ २ जंबूद्वीपइंभगवन् मेरुपर्वतथकी सर्वदिसइंआरेति

यराइं एगससीपरिवारोतारागणकोडिकोडीणं २ जंबूद्दीवेणंभंतेदीवेमंदरस्सपव्वयस्सपुरछि

तिर्यग्लोकमध्यवर्त्ति मेरुपर्वतथकी केतलीमर्यादाइं ज्योतिषमंडलनीगति चालइंछइं गोतम इग्यारसेंयोजनजइइं एतलीअबाधाइंमर्यादाइं ज्योतिषी

मिल्लाउचरिमंताउकेवतियंअबाहए जोइसेचारंचरइ गो एक्कारसहिएक्कवीसेहिंअबाहाए जो

चारचालइं इमदक्षिणनीपासाइं पश्चिमनीपासाइं उत्तरनीपासाइं इमइंआरेतिदिसइं इग्यारसेंएकवीसयोजनचारचालेछे

इसंचारंचरइ एवंदक्खिणिल्लाउ पच्चत्थिमिल्लाउ उत्तरिल्लाउ एक्कारसएहिं जोयणेजावचारंचरइ

अलोकथकीकेतलीमर्यादाइं भगवन्ज्योतिषीचालेछइं गोतम इग्यारसेंइग्यारोत्तरनीअबाधाइंमर्यादाइंज्योतिषी

लोगंतेणंभंतेकेवतियंअबाहाए जोइसेपण्णत्ते गो एक्कारसएहिंएक्कारेहिंजोयणसएहिंअबा

चालइछइं इमीसेणं आजि हेभगवन् रत्नप्रभापृथ्वीनो घणोसमोरमणीकन्हे भीताराचालइं तेहनो ति

हाए जोइसेपण्णत्ते इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाउभूमिभागाउकेवा २५७

हेठीकेतलीअबाधाइंसर्वहेठिलेंतारामंडलचारचालेछइं केतलीअबाधामर्यादाइं सूर्यविमानचारचालेछइं केतली

तियंअबाहाए सव्वहेट्ठिल्लेताराख्वेचारंचरंति केवतियंअबाहाए सूरविमाणेचारंचरंति

मर्यादाइंचंद्रविमानचारचालइछइं केतली [illegible] अबाधाइंमर्यादाइंसर्वउपरलातारा चारचालइछइं हेगोतम

यंअ केवतियंअबाहाए चंदविमाणेचारंचरंति केवतियंअबाहाए सव्वउवरिल्लेताराख्वेचारंचरंती गो इ

ए रत्नप्रभापृथ्वीनो घणोसमोरमणीकभूमीभागथी सातसइंनेउयोजननीमर्यादाइंचारचालेछे आठसेंयोजननी

मीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएबहुसमरमणिज्जे सत्तहिंणउएहिंअबाहाए चारंचरंती अट्ठहिंजो

अबाधाइं मर्यादाइं सूरविमानचारकरीचालइछे आठसेंअसीयोजननीमर्यादाइं चंद्रविमानचारइंकरीचालइछे

यणसएहिंअबाहाए सूरविमाणेचारंचरंती अट्ठहिंअसीएहिंजोयणसएहिंअबाहाए चंदवि

नवसइंयोजननीमर्यादाइं सर्वउपलोतारामंडलचारचालेछइं सर्वहेठिलातारामंडलथकीभगवन् केत

माणेचारंचरंति णवहिंजोयणसएहिं अबाहाए सव्वउवरिल्लेताराख्वेचारंचरइ सव्वहेट्ठि

लीअबाधाइंमर्यादाइं सूर्यविमानचारकरीचालइछइं केतलीमर्यादाइंचंद्रविमान चारचालइछइं

ल्लाउणंभंते ताराख्वाउ केवतियंअबाहाए सूरविमाणेचारंचरंति केवतियाएअबाहाए चंदवि

केतलीमर्यादाइ सर्वउपरलो तारारूप चारइं चालइं छइं. भगवंतकहे हेगौतम. सर्वहेठिलातारामंडल जथकी दसयो

माणंचारंचरंति केवतियं अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरंती गो सव्वहेट्ठिल्लाओ णं दस जो

जनइं सूर्यमंडलचार चालइं छइं. तारामंडल थकी नेउ योजननी अबाध मर्यादाइं चंद्रमंडल चार चरणइं चालइं छइं. हेठिला तारामंडल थकी स उपरला

यणाइं सूरविमाणे चारं चरइ णउए जोयणसए अबाहाए चंदविमाणे चारं चरइ णउत्तरे जो

तारामंडलइं एकसो दशयोजने तारारूप सूर्यना विमान थकी भगवन केतली मर्यादाइं चंद्रविमान चालइं छइं सूर्य चार चालइं छइं.

यणसए अबाहाए सव्वोवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ सूरविमाणाओ णं भंते केवतियं अबाहाए चंदवि

विमान थकी केतलेउपरलो तारारूप मंडल चारइं चालइं छइं. सूर्यविमान थकी असीयोजननी अबाधाइं मर्या

माणे चारं चरइ केवतियं सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरंती सूरविमाणाओ णं असीति जोय

दाइं चंद्रविमान चारे चालेछइं. सोयोजननी मर्यादाइं सर्वउपरला तारारूपमंडल चारइं चालइं छइं. चंद्रविमा

णेहिं अबाहाए चंदविमाणे चारं चरइ जोयणसए अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ

न थकी भगवन केतलीमर्यादाइं सर्वउपरलो तारामंडल इं चार चालइं छइं. गौतम चंद्रविमान थकी वीसयोजन

चंदविमाणाओ णं भंते केवतियं अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरंती गो चंदविमाणाओ णं वी

ननी मर्यादाइ सर्वउपरलो तारामंडल चार चालेछैं. इम सपूर्वापर सर्वसंख्याइं एकसो दसयोजनमां छइं. त्रीजा असं

सए जोयणेहिं अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चारं चरइ एवामेव सपुव्वावरेणं दसुत्तरे सए जो

ख्याता ज्योतिषीनो विषयचार क्षेत्र कहिउं. जंबूद्वीपे भगवन केतलां नक्षत्र अठावीस नक्षत्रमांहि केहां नक्षत्र सर्व

यणबाहल्ले तिरीयमसंखिज्जे जोइसविसए पण्णत्ते जंबूद्दीवे णं भंते दीवे कयरे नक्खत्ते सव्वब्भंतरि

अभ्यंतर मांडलै चालेछइं. किहांन नक्षत्र सर्वबाहिरला तारारूप मंडल चारे चालेछैं. किहांन नक्षत्र सर्वउपरिला से चालेछइं.

ल्लं तारारूवं चारं चरंती कयरे नक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं तारारूवं चारं चरंती कयरे नक्खत्ते सव्वउ

किहांन नक्षत्र हेठिला तारारूप चार करी चालइं छइं. हेगौतम जंबूद्वीपइं भगवन अभीजिन नक्षत्र सर्व मांडलां

सर्व अंतरमाई फलो पुलमवि चारे तो हाइं सवा व रतेमाइ स्वर णीपुनम वदि नमाया

वरिल्लं चारं चरंति कयरे नक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चारं चरेइ गो जंबूद्दीवे भगवन अभीइ नक्ख

चालइं छइं. वलि मूलनक्षत्र सर्व बाह्य मंडलइं तारीरूप चारे चालइं छइं. अभीजिन नक्षत्र सर्व मांडलां विचार इं चालेछइं. मूलनक्षत्र सर्व बाह्य मंडलै चार वलै चालइं तेस्वाति न

त्ते सव्वब्भंतरिल्लं तारारूवे चारं चरइ मूले नक्खत्ते सव्वबाहिरिल्लं तारारूवं जाव चारं चरइ साई न

क्षत्र सर्वउपरलो चारें चालइं छइं. भरणीनक्षत्र सर्वहेठिलें चारें चालइं छइं. चंद्रमानां विमान भगवन से संस्थाने कहीउं छइं सा आकार कहइ.

क्खत्ते सव्वउवरिल्लं चारं चरइ भरणी नक्खत्ते सव्वहेट्ठिल्लं तारारूवं चारं चरइ चंदविमाणे णं भंते

जिवाभिग

२५९

हे गौतम अर्द्धकोठिनें संस्थानें सर्वफटिकरत्न अतिमुष्य मसितविस्तस्याकिरणवइ प्रसाइ करी सहितवि
मयवइ अस्फटिकनेचो मानकलावइ इमस

किंसंठिएपण्णत्ते गो अद्धकविट्ठसंठाणसंठिए सव्वफालियामए अब्भुग्गयमूसियपहसितेपण्णत्ते एवंसू

यीविमान इमग्रहविमान इमनक्षत्रनांविमान इमतारानांविमान सर्वअर्धकोठनइसंस्थानइसंस्थित
छइ

रविमाणेवि एवंगहविमाणेविनक्खत्तविमाणेविताराविमाणेविसव्वे अद्धकविट्ठसंठाणसं

श्रीभगवंतेइम चंद्रमानोविमा भगवनकेतलोलांबोपिहलोकहीउं केतलिपरिधिफिरतोकहीउं केतलोजाडपणोकही
कहीउ न छइ उं

ठियापण्णत्ता चंदविमाणेणंभंते केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियंपरिक्खेवेणं केवतियंबाह

गौतम एकयोजनना एकसठियाछप्पनभागनो तेथकीत्रिगुणीविशेषाधिकपरिधिकही एगसठियाअठावीसभाग
लांबोपहिलोकहीउ योजनना

ल्लेणंपं गो छप्पन्नएगसट्ठिभागेजोयणस्सआयामंतंतिगुणंसविसेसंपरिक्खेवेणं अट्ठावीसंएगस

जाडपणोकहीउंचंद्रविमाननो इमसूर्यनाविमाननोप्रश्नकीधो गौतम एकयोजनना एकसठिया अडतालीसभागनो
लांबोपिहलोछइ

ट्ठिभागेजोयणस्सबाहल्लेणंपं सूरविमाणस्सवि पुच्छा गो अडयालीसंएगसट्ठिभागेजोयणस्स

तेथकीत्रिगुणीसविशेषपरिधिछइ योजननाएकसठियाचोवीसभागनो जाडपणोकहीउं इमग्रहनांविमान

आयामंतंतिगुणंसविसेसंपरिक्खेवेणं चउवीसंएगसट्ठिभागेजोयणस्सबाहल्लेणंपन्नत्तेएवं

२५९

अर्धयोजननेंलांबपणेंपिहुलपणइंछै तेथकीत्रिगुणीसविशेषपरिधिहोइ एककोसजाडपणइ नक्षत्रनांविमानएक
छइ कोसलांबपणेंपि

गहविमाणेवि अद्धजोयणंआयामविक्खंभेणं तंतिगुणंसविसेसंपरिक्खेवेणं कोसंबाहल्लेणं णक्ख

हुलपणइछइ तेत्रिगुणीसविशेषइपरि अर्धकोसजाडपणइहोइ तारानांविमानभगवनकेवडांहोइ अर्धकोसलांबप
धिहोइ

त्तविमाणेणंकोसंआयामविक्खंभेणं तंतिगुणंसविसेसं अद्धकोसंबाहल्लेणंपण्णत्ते ताराविमाणेणं

णेंपिहुलपणेंहोइ तेथकीत्रिगुणीपरिधिसविशेषहोइ पांचसेंधनुषजाडपणेंकहीउं हविइंविमाननावाहकनीसंख्याकहै
छै चंद्रमानाविमाननें भगवनकेतला

अद्धकोसआयामविक्खंभेणं तंतिगुणंसविसेसंपंचधणुसयाइंबाहल्लेणंपण्णत्ते चंदविमाणे

सहस्रदेवताविमाननइउपाडइवहइछइ हेगौतम सोलसहस्रदेवताविमाननइउपाडैछइ चंद्रविमाननेंपूर्वदिसैंतेहवासेतउ
जला

णंभंते कइदेवसाहस्सीओपरिवहंति गो सोलसदेवसाहस्सीओपरिवहंति चंदविमाणस्सणंपुरच्छि

भलागसोहागी रूडीप्रभाकांतिछइ संखतलजनीपरेंमलरहितनिर्मलजेदधीनोघनगोक्षीरनोफीण रजनीकरचंद्रमानोप्रकाश
तेहवोउजलाछइ जेहवोस्वेतहोइ तेहवोउजला

मेणंसेयाणंसुभगाणंसुप्पभाणं संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययणियरप्पगा

थिरदृढलष्टमनोहरप्रकृष्टवाटलोमांसलीगंधहस्तीतीक्षणमुखछइजेहनो कमलनोपत्रजेहवउं मउयकहेतां सुकुमाल
दाढाहतेणेंकरीविडंबीतमुख सुंहालो तालुजिह्वा

साणं थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहाणं रत्तुप्पलपत्तमउयसूमाल

जिव्हाप्रसस्तव लक्ष्मनोज्ञ वेदूर्यमइ जे दीप्तवंत करकडइ यो पहवा विसालविस्तीर्ण पुष्टजंघा स्कंधविस्तीर्णस्कंध
इ बइ हवी नबबइ जेहना बइ जेहनी बइ जेहना
तालजीहाणं पसत्थलट्ठवेरुलियभासंतकक्खडणखाणं विसालपीवरोरुपडिपुण्णविउलखंधा
मडस्कंध जोसत्री प्रसस्तसूक्ष्मलक्षणेकरीवंधेत केसराटोपतेणेंकरी सोभित चंक्रमणिवालवु लीलायेंकरी अनुक्रमइ
बइ जेहनो स्कंधपालविस्तीर्ण नबइ
णं मिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणविच्छिण्णकेसरसडोवसोहियाणं चंकमियललियलीलाया
वपलउतावं गर्वितगतिबइ जेह उंचो कीधो पुंछ तेणेंपाम्यो जोहवोलांगुल पुछ बवइ जेहवो वज्रमेनषबइ जेहना
ला नी छै
पुलियधवलगव्वियगईणं उस्सियसुणिम्मियजायअप्फोडियलंगुलाणं वयरामयणक्खा
वज्रमेंदाढाछैजेहनी वज्रमइदांत छेजेहना तपनीयमेंजीभबइ जेहनी तपनीयमइ तालुबबइ तेपनीयमेंरूंमो
णं वयरामियदाढाणं वयरामयदंताणं तवणतवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणि
ज्जेंकरी जोतस्यावइ कमनीय जेहनी प्रीतिकारीगतिबइ जे मनोज्ञगतिछैजे मनोरमगतिबइ मनोहरगतिबइ
गतिछै हनी हनी जेहनी जेहनी
ज्जजोत्तसुजोत्तगसुजोइयाणं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं मणोहराणं अमि
अमितगतिछै अमीतबलवीर्यबइ पुरुषाकारपराक्रमइक मोटाअप्फोटितसीहनादतेनाशब्दकलकलाटकीधाते
जेहनी जेहनो रीसहितबइ इहवा
यगइणं अमियबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमाणं महयाअप्फोडियसीहनायबोलकलयर

महुरेणमधुरइ मनोहरजोरेपुरित आकासदिसें सोभतावइ च्यारसहस्रदेवता सीहरूपधारी देवता पूर्वनीपासा
बइ
वेणं महुरेणमणहरेणयपूरेता अंबरदिसाउयसोभंताचत्तारिदेवसाहस्सीउसीहरूवधारी
इवहीनइ चालेबइ चंद्रमानइ विमानइ दक्षिणदिसें उजला सुभगसोभागी रूपीप्रभाइंसहित संखतलउ
णं पुरच्छिमिल्लंबाहंपरिवहंति चंदविमाणस्सदाहिणेणंसेयाणंसुभगाणं संखतलविमलनिम
जेहवाविमलउजलातबानिर्म जेहवो उज्ज रजनीकरचंद्रमानोप्रकाश वज्रमइकुंभस्थलमइ सुस्थितपुष्टवरप्रधानवज्र
जरधीजेहवो गावीरनोफीण जो सजेहवो उजलो जेहना सरीषी
लदधिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासाणं वयरामयाकुंभजोयलसुठीयपीवरपरिव
सुहिलइ केहवीबइदिम पद्मउत्पलसरीषो मोपुष्पबइ जे तपनीयनीपरें विसालविस्तीर्णचपल चंचलहवाजेहर
करकातिबइ उनत हना सजता
इरसोडवियदित्तसुरत्तापउमप्पगाससंकासमिउसुतलयमहालंतवणिज्जविसालचंचलचलं
स्त्रीनाकांत विमलमलरहितउजला मधरूडनासरिषीदीपती निर्मलघायालिद्रायरहितनेवर्णनरक्षपीतसेतवर्णाउणि
छै तइजातिजेहवा मधुबलबइ नेत्रजेहना आवर्त्तमानेरत्ननेमें जोवनछै जेहना
तिचवलकणविमलउज्जयाणं मधुवलसिसंतिणिद्धपिंगलइपतिजइतिवण्णमणिरयणलोय
अतिउंचापउमपलमालनी सोनातन सरीपासंस्थानछे रूपवंतरादिरोषरहितदेदी फटिकरतनमयनीपरइ स्फटिकरत
नीपरइ धवल जा जेहना प्रमाणछबइ स्मरोषरहीत
णाणं अब्भुग्गयमउलमल्लियाधवलसरससंठियनिव्वणदढमासिणफालियामयसुजायदंति

एहवा दंतुसल मुसले करीने कंचनकी चूडीमां दंतायनि अमल मल रहित मणि रत्नमई रू पेरस बेहना विचित्ररूपे
नीतळइ जेहना मणिनी पइवा मेल विरकहें तामनोहर जगई करी

जिवाभिगम: मुसलोवसोभियाणं कंचणकोसीपविट्ठदंतग्गविमलमणिरयणरुइलपेरंतचित्तरूवगा

विराजित सोभि तपनीय विस्तीर्ण तिलकपत्रप्रमुख ते अनेक मणिरत्नमई वरणादि ग्रैवेयक आसण विशेष बांधीने
२६१ तवइ मई लइकरी परिमंडित छे कनामत्तीरादिकवडे इंगलइ जेहनइ हेम घूघरा प्रध्या

विराइयाणं तवणिज्जविसालतिलगपमुहपरिमंडियाणं नाणामणिरयणमुद्धगेवेज्जबद्धगल

नक्खणरह वैडूर्यरत्नमई विचित्र दंड निर्मल यानुं प्रवालांड वज्रमई तीक्ष्ण लष्ठ मनोहर अंकुश जेहनै
णानइ नथी चामर बइ जेहनइ

पवरभूसणाणं वेरुलियविचित्तदंडनिम्मियवालवीयणाणं वइरामइतिक्खलट्ठअंकुसकुंभ

कुंभयुगल विषै थापीवइ जे तपनीयमई सुबध रुपा बांध्याबइ जे हस्ती वलइ जंबूनद सोवर्णमिं विमल निर्मल वरप
अंकुश बइ तथा करीनइ उत्कृष्ट बइ अंतघणनिबड मंडल मांड ता सहित

जुयलंतरोडियाणं तवणिज्जसुबद्धकच्छगवियकंठगरज्जुबद्धधरणंजं रुणयविमलंवरघणमंड

लाल अंक घंटायुगल तेहना मधुर स्वर मीठा स्वर मनहर ऊपजीत सूर्यवृक्ष प्रमाणोक बार जीमूत जालि जन्म रोध परिहित जप
रावइ कहइ एहवा स्वर बइ जेह घंटा ना रीलइ कइ बइ ण

लवयरामयालीलाललियताडणमणिहरघंटसरेणं मणमणिरयणघंटपासगरययाम

प्रसस्त कहे ताककांनेणे करी रमणीक बालाग्र युक्त एहवा हस्ती ना पुंछ बंधावितमास तपतिपूर्ण कान बानी प्रविनी
मनोहर प्रवेश्या बइ जेहना

यरज्जुबद्धलंबियघंटाजुयलजुकरमणहराणं अहीणपमाणजुत्तवट्टियसुयसुजायसुल- २६१

परें अवावइ लघुला घविक लाइ उपपेत एतलइ हल्त्या पगमाहे छै अंक रत्नमें स्वेत नख बइ तपनीय

रक्खणपसत्थरमणिज्जवालगत्तपरिपुंछणाणं उवचियपडिपुन्नकुम्मचलणलहुविक्कमा

मेरणती जीरखइ नखत पनीय नी परइ रत्नं तालुं जेवइ तपनीयमई रुपांजोत्र तेणे करी जोतरवाबइ जेह हस्ती

णं अंकामयनक्खाणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसुजोतिया

कामगति चालता प्रीति गति चालता मन वेगमती गतइ मनोरमगति अमित गतै अतुल बल वीर्य पुरुषाकार पराक्र
लता चालता करी चालता करी चालता मइ करीनइ

णं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं मणोरमाणं अमियगतिणं अमियबलवीरियपुरिसका

ते हस्ती जेते वाल मोट गंभीर गुलगुलाट शब्द तेणे करी मधुर मीवाम मनोहर दिसइ वर प्रधान तेणे करी आकाश
नोबइ टा ना नाद एहवा पूरीसइ

रपरिक्कमाणं महया गंभीरगुलगुलाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं पूरेंता अंबरं दिसाओ य सोभ

व्यार सहस्स देवता हस्ती नो रूप धरना देवता विमान नें दषिणनी पासाइ उपाडइ बइ ॥ चंद्रमाना विमाननी पछि

यंता चत्तारि देवसाहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति चंदविमाणस

मनी पासाइ उजला सुंदर मनोहर रूपी धूत बइ चंक्रमण लीलाइ लीला गोलाय मानं कुकडि इसा जीम सरीषा पा
जेहनी थबइ करें तो सोभायमानवइ सोनइ

णं पच्चत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सुप्पभाणं चंकमियललियपुलियचवलककुदसालीणं संनय

मजनतापासावइं सजातजन्मदोषरहीतपासा मतिप्रमाणोपेत पुष्टरतिंनीपनोवइं पा कथम बनासरिबीपांबनेसरीबास
वइं सांझेहनां जाततजन्मदोषरहित रूषवइं

डिवाप्रिग्प्र: पासा णं संगतितिपासा णं सुजातिपासा णं मियमाइयपीणरइयपासा णं झसविहगसुजायकु

२६२

जेहनीप्रशस्त मधनीगाजीजेहवीसीसंनी एहवापीजानरकंवइं विस्तीर्णपुष्टजंघावइं प्रतिपूर्णपुष्टविपुलविस्तीर्ण
गंधवइं कहेंसांदीस जेहना जेहनी पधवइं जेहना वाटला

च्छिणपसत्थनिद्धमधुगुलियतीसंसाफिगलणरवणं विसालपीवरोरुपडिपुणविपुलखंधाणं

सरीषाप्रतिपूर्णकाननाया लगारेकपानतमकषउद्द घणनिवडनि सकवहलपलौं विक्रमसहितललितचपलगतिव
साबइं जेहना नेलेंसाहितवे वषत वय उन्नत इंजेहनी

वट्टपडिपुन्नकणपासाणं दूसंआलयविसंसोविवाणं घणनिचाणं सुबद्धलक्खणुणयवक्क

पुष्टिवाट सकसंस्थितकटिप्रदेशावइंजेहनी अविलंबतेवांमिषलंबजोबाजेबायमांनप्रशस्तजष्णइंरमणीकवालगंडवा
ली मरवइंजेहनइं नमीसरषी

मियललियचवलाइंएंपीवरवट्टियसोसंठियकडाणं उवलंबपलंबलक्खणपसत्थरम

षुरावइं समासरीषीवलधनापुच्छवइं समजवितसमाप्रालेवाल्हणगीवबाउंचानी नतुच्छतंतसकष्पमसजातजन्म
जेहना वानहीएहवाशंगवइंजेहना दोषरहितविकलासिंगधोरी

णिच्छवालगंडाणं समखुरवालिधाणं समलिहिततिरकणगुणसिंगाणं तणुसुहुमसु

मनीचवीनाधरनारवइं तपवितपुष्टमांसलविसालविस्तीर्णपडिपूर्णपूरारकंधप्रमुषसर्वसं वैडूर्यरत्नतेलींसांसंलिदे
दरवइं दीप्यमान

जायनिद्धलोमच्छविधराणं उवचियमंसलविसालपडिपुनखंधपदेससुंदराणं जुत्तपमाणं २६२

करारूंसोनतिसोनराषिरूणिलोवनवइं कणगारकवाणरणविशेषतेलंकरीशोभितवइं रूपावा कंवास्मास्रणीति
जेहनायुक्तप्रमाणोपेतअश्वनप्रसस्तरूमली जेहपसतवाकवास्वरणविशेष धा शोभितवइं

पहीणपसत्थरमणिज्जगगगरगलसोभियाणं घघरगसुबद्धकंठमंडियाणं नाणामणिकणग

अनेकमणिमयकन चीबीसघायसकलतिसकरणी वरप्रधानघंटागलानिंगामेंकरीसोसनीआकार पदमसूर्य
करत्ननीघंटावें तिकारीवइं मालिकावइं वइंसांसायमांनवइं वकासी

रयणघंटियावेगच्छगसुकयरतिआमालियाणं वरघंटागलगलियसोभंतसस्सिरियाणं पउमु

उसलच्वंदविकासीतेहनीसघलीपांषडीतेहनी वज्रमइंखुरा विविधरत्नमइंखुरा फटिकरत्नमइंदांतवइंजेहवला
सगंधमालातेणेविभूषितसोभितवइं वइं वइं

प्पलसगलसुरभिमालाविभूसियाणं वइरखुराणं विविहरयणखुराणं फलियामयदंता

तपनीयमेरनोनालुतवइं तवणीयरातास्रवर्णमइंरूफाजोत्र कांमगतिंवालताप्रीतिकारी मननेंगमतीचालेचा
जेहवसनना वइंजेहना गतिवालना लता

णं तवणिज्जतालुयाणं तवणिज्जजोत्तगसोजोत्तियाणं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं

मनोहरगतिवा अमिप्रअतोल अमितबलवीरयपुरुषाकारपराक्रमसहि मोहटागंभीरबंकागर्जारवसहित
लता गतिवालना तवइंएहवावृषभ वइं

मणोहराणं अमियगईणं अमियबलवीरियपुरिसकारपरक्कमाणं महयागंभीरगज्जियरवेणं

मोहटामनोहरशब्देंपूरताआकासिनीदिसेसोभ च्यारसहस्सदेवतावृषभरूपनाधरणहार एहवाचंद्रविमांननेंवहइं
लषका

महुरमणहरेणं पूरंताअंबरादिसाओयसोभयंताचत्तारिदेवसाहस्सीओवसिसरूपधारणी

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

देवतापछिमनीपासाविमानवहेबइं हवइंसेइविमानथी उत्तरइं श्वेतवर्ण रूडीप्रभाइंकरी सुभग आसवंत वरप्रधान
वचन

जिवाभिगम: देवाणंपच्छिमिल्लंबाहंपरिविति चंदविमाणस्सणं उत्तरेणं सेयाणंसुप्पभाणंसुभगाणं:
२६३ नमाल्लबालहायनाधोवनवंतइ हरिमेलकावनस्पतीविशेषमालतीनीपरइंधोलीउजलीआंख रूडांबांधालक्षणेकरी
सर्ध: मिलइं घणनिबिडनिचय

जाच्चाणंतरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउलमल्लियच्छीणंघणनिचय सुबद्धल
उन्नत चंक्रमणचाल लीलाइंहाल पुलकितचपलचंचलगतिछइं टपवुउलंघवुवलगवुरणसीघ्रगमनगति वईतन
छइं लचो वो जेहनी

क्खणुन्नयचंकमयललिय पुलियचलचवलचंचलगईणंलंघणवग्गणधावणधोरा
करामनएहवीरूडीतसी संनतिपासा संगतिरूडांपासा रूडांजातपासांव मितमाइतपीनपुष्टरतिकारीपासाछेजेहना
थातसीखीवांगतिजेहनी छइं छइं इ

णवइजणसिक्खियगईणंसंनयपासाणंसंगयपासाणंसुजायपासाणंमितिमाइयपीण
झषमत्स्यविहंगमपंखीनीपरइंरूडाजातजन्मदोषरहित बाटलइंसंस्थानइंकरी कटिप्रदेसजे ओलंबपलंबलक्षणं
तनूपेटछइंजेहनी पीनपुष्टिपीवर संस्थितछइं छे मस्तकप्रमाणवंतरमणीकपूछ

रइयपासाणंझसविहगसुजायकुच्छीणंपीणपीवरवट्टियससंठियकडीणंओलंबपलंबलक्खणपस
वालागडकहेतांव तनुपातलासुक्ष्मरूडाजातजन्मदोषरहितस्निग्धप्र मृदुकोमलछइं उज्वलप्रसस्तसूक्ष्मलक्षणलोवि
नरछइंजिहां छवीरोमछवीनाधरनारछइं लीलाथेंछे स्तीर्णकेसपासस्त्रेणिनाधरनारछे

रमणिज्जवालगंडाणं तणुसुहुमसुजायणिद्धलोमछविधरणं मिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणवि
किन्नकेसरवालिधराणं २६३

लीलाइंचालतासोभातालाकरनारछइंआ विशेषपलाटे मुखमगुरटमस्तकीपोचामरआभरणविशेषधापथककआभरणविशेषते
णीसानइंआकारेपवरआभरणः धरनाछइं लंकरीमंडितशोभित कटिप्रदेसछइंजेहनातपनीयमेंखुरारानी

ललियवासगललाटपरिक्खिसूमिणाणंसुकुमगुटोचूलगचामरथासगपरिमंडियकडीणंतवणिज
छइंजेहनीतपनीयमइंजिह्वा तपनीयमेतालवीजोत्रीकरीजोतिस्याछइं कामितगतेंचालता प्रीतिगतेंचालता मननेंगमता
छइंजेहनी तेंचालता

खुराणं तवणिज्जजीहाणं तवणिज्जजोत्तासोजोत्तियाणं कामगमाणं पीयगमाणं मणोगमा
मनोहरगतिचा इंमअमितगतेचा अमितबलवीर्यपुरुषाकारपराक्रमछइंजेहनइं मोहटाघोडानाहेंसतहें कलकलाटमधु
लता लता शब्द

णंमणोहराणं अमियगाइणंअमीयबलवीरियपुरिसाणंपरिक्कमाणंमहयाहयहेसियकिल
रमीवामनोहरशब्दइंकरीतेणइं पूरीतछइंअंबरआकासनीदिसेंछइंजिहांएहवासो घोडानारूपधारीदेवताच्यारसहसउत्तरनइं
करीनइं रताच्यारसहसदेवता

लकिलाइयरवेणंमहुरेणं मणहरेणंयपूरंताअंबरदिसाउसोभयंताचत्तारिदीवासाहस्सी
पासइंउपाडइंछइंवहेछइं सूर्यनइंनामनसोलसहस्सदेवताक गोतम ग्रहनेनामइंलगवन केतलादेवताउपाडइं तेकिमसी
हेवा छइंआठसहसदेवताउपाडेछइं

तेहयरूववधारिणीदेवाणंउत्तरील्लंपासंपरविहंती णं अद्धदेवसाहस्सीउपरिविहंतीतंसीहरू
हरूपधारीणछइंसहेंसदेवताएरवदिसइंविमानउपाडइंछइं दक्षिणनीदिसेंहस्तीरूपधारीछइंसहेंसदेवता दक्षिणनइंपास
इ

वधारणीदोदेवसाहसीउपुरच्छिमिल्लंबाहंपरिविहंती दाहिणेणंगयरूवधारणीदोदेवासा

उपाजइछइ वेसहसदेवतावृषभस्वरूपधारीउत्तरनैंपासेंविमानउपाजइछइ वृषभरूप नतुप्रस्नकीधो पछिमनेंपासेंउपाडेंछें
पधारी देवता वेसहेंसपछिमनेंपासेंउपाजइछइ

हसीतदाहिणळेबाहंपरिवहंतिउसभरूवधारीणंदेवाणंपचछिमिल्लेबाहंएवंनखत्तवि
इमनष्यत्रविमान गौतम नष्यत्रनाविमाननेंच्यारसहेंसदेवताउ तेकेहा सीहरूपधारीएकसहसदेवतापूर्वनोपासोउपाडेंछइ
प्रश्नकीधो पाडइछइ

माणसविणवाणं गो चत्तारिदेवसाहसीउपरिविहंति तं सीहरूवधारिणीदेवाणंएगंदेवसाह
इमच्यारेदिसेंकहेंवा इमताराविमाननेंएतलोविशेष बइंसहेंसदेवताउपाडइछइ तेकिम सीहरूपध

सीउपुरच्छिमिल्लंबाहंएवंचउद्दसपिएवंतारागाणवइणवरीदोदेवसाहसीउपरिविहंती तंसी
रीपांचसइंदेवतापूर्वनोपासोविमाननोउपाडइछइ इमइंलीरीतइंच्यारदीसइंकहेंवा हवइएहनइं चंद्रमा सूर्य
देवता भागवन १ २

हरूवधारिणीदेवापंचदेवसयाउपुरच्छिमिल्लंबाहंपरिविहंती एवंचउद्दिसंपिएतेसणंभंतेचंदमसू
ग्रहगण नष्यत्र तारानइं केतलीउतावलीगतिहोइ केहइंनेंमंदगति गौतम चंद्रमाथकीसूर्यनीसीघ्रगति सूर्यथ
३ ४ ५ होइ तिहोइ की

रियगहगणनखत्ततारारूवाणंकयरेरहिंतोसिग्घगईवामंदगईवा गो चंदेहिंतोसूरासिग्घगईसूर
ग्रहनीसीघ्रगति एतलइंउतावलीगति ग्रहथकीनष्यत्रनीसीघ्रगति नष्यत्रथकीतारानीसीघ्रगति हवइंसर्वथकी
कहीछइं होइ होइ प्रकृतिगति

सिग्घगईसूरेहिंतोगहासिग्घगईगहेहिंतोनखत्तसिग्घगईनखत्तेहिंतोतारासिग्घगईसव्वि॥

२६४

चंद्रमानीकविशेषइ सर्वथकीतारानीगतिउतावली चंद्रमासूर्यग्रहनष्यत्रताराएयां कोकेहनइंथोडीअथवीघणीऋद्धि
सीघ्रहोइ होइतेभगवन चमोहइ केहइंथ इतेस्वामीकहातिवारे

तीणंचंदासव्विसिग्घगईतेतारारूवातेसिणंभंतेचंदिमजावतारारूवाणं कयरेरहिंतोअप्पट्टिया
भगवंतकहेंहे गौतम ताराथकीनष्यत्रमहर्द्धिकास्थितमाटइं नष्यत्रथीग्रहमहर्द्धिकजाणवा ग्रहथकीसूर्यमहर्द्धिक

वामहड्ढियावा गो ताराख्वेहिंतोनखत्तामहड्ढीया नखत्तेहिंतोगहामहड्ढीया गहेहिंतोसूराम
सूर्यथकीचंद्रमामहर्द्धिक सर्वथीथोडीऋद्धिनाधणीतारा सर्वथीघणीऋद्धिना जेबद्वीपइंभगवनताराताराइंविचइं
धणीचंद्रमा

हिड्ढीयासूरेहिंतोचंदामहिड्ढीसव्विप्पढियातारासव्वमहीढिया चंदाजंबूदीवेणंभंतेदीवेतारस्स
एहनइंकेतलीअबाधाइंमर्यादाइंच्यांतरोकहिउछैतिवारइं च्यांतराबिंतेदकह्याछें व्याघातपर्वतादि निर्व्याघातप
भगवंतकहें हेगौतम तेकेहा कहो र्वतादिवि

वसयरएसेणंकेवतियंअबाहाएअंतरेपणत्ते गो दुविहेअंतरेपणत्ते तं वाघातमयं तत्थणं
नाविणंजेतेव्याघा कइंतेजघन्यथोडोतोबिसेंबासठियोजननोच्यांतरो उत्कृष्टोतोबारसहसयोजनदसहजयसतालीसयोजन
तेजघं२६२योजन तनोच्यांतरो नषरूटच्यढीसइंनोच्याव्यायोजनचिपासावोलाचार नोच्यांतरोमेरुपर्वतनीउपेक्षाइंकरीनइंदसमहस

जेसेवाघातमये सेजहन्नेणंदोन्निछावट्ठेजोयणसए उक्कोसेणंबारसजोयणसहस्साइंदोणि
योजननोमेरुउपरसइएकवीसमेरपर्वतथकीबेगलाबाजइंबारसहसबइसइं तिहांजेतेव्याघातविना जघन्यप
बयतालीसयोजननोच्यांतरोहोइ हेगौतम

यबायालेजोयणसएतारारूवस्सयरस्सअबाहाएअंतरेपणत्ते गो तत्थणंजेसेनिव्वाघासिमे

णइ । पांचसइंधनुष उत्कृष्टोवइंगाउनोतारा २नोअंतरहोइ जगस्वभावछिं करीनइ चंद्रमानइंभगवन्

जीवाभिगम: सेजहन्नेणंपंचधणुसयाए उक्कोसेणंदोगाउयाइंताराइरूवसयाइं२जावअंतरेपण्णत्ते चंदस्सणंभं

२६५ योतिषेंद्रन योतिषीनाराजा केतलीअग्रमहिषीकहीछइ हेगौतम च्यारअग्रमहिषीकहीछइ तेकेहा चंद्रप्र
इ नइ म

तेजोइसिंदस्सजोइसरण्णोकइअग्गमहिसीउपण्णत्ताउ गो चत्तारिअग्गमहिसीउपण्णत्ताउ तंचंद

भा दोसिनाभा अर्चिमाली प्रभंकरा एहीमांएकेकीदेवीनइ च्यारच्यारसहस्रदेवीनोपरिवारकहीउंछइ सरीषांरूपअ
१ २ ३ ४ रूपमननीइ ओजाणीनइयोतानां

प्पभादोसिणाभंअच्चिमालीपभंकराएत्थणंएगमेगाएदेवीएचत्तारिदेवासाहस्सीउपरिवारोपण्

त्तेच्यारच्यारसहस्रदेवीनोपरिवारजाणी विकुर्वेवि चंद्रराजानीइंछइ इमपूर्वापरइअनुक्रमइ च्यारअग्रमहीषीनोसोलसहसदेवीनो

त्तोपभूणंतत्तोएगमेगाएदेवीएअण्णाइंचत्तारिदेवसाहस्सियायपरिवारंविउव्वित्तए एवंमे

परिवारहोइ चोकारइइं तुटितिएहवोनामअंतउरएतलोहोइ प्रभुसमर्थभगवन्योतिषेंद्र योतिषीनोराजा
मकहितउछइ

वसपुव्वावरेणंसोलसहस्सदेवसाहस्सीउपण्णत्ताउसेतंतुडिए पभूणंभंतेचंदेजोयसिंदे जोइ

चंद्रवतंसकविमानइ सुधर्मसभाइं चंद्रसिंहासनइं तुटितअंतःपुरसाथइं दिव्यदेवतानाभोगभोगवतोविचरइ

सरायाचंदवडिंसएविमाणेसभाएसुहम्माएचंदंसिसीहासणंसितुडिएणंसिद्धिं दिव्वाइंभोग २६५

भोगवतोकहइ । हेगौतम एअर्थसमर्थनहीं तेस्यामाटइंभगवनइंमकहीउंनहीनभोगवेंप्रभुचंद्रयोतिषीनोराजा

भोगाइंभुंजमाणेविहरित्तए णो इणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेणंभंते एवंवुच्चइ नोपभूचंदेजोइसरायाचंदव

चंद्रवतंसकविमानइं सुधर्मासभाइं चंद्रसिंहासनें तुटितअंतःपुरसाथे दिव्यदेवतानाभोगभोगवतोविचरेंनहीतेस्यामा
टे सगवंतकहइ

डिंसएविमाणेसभाएसुहम्माएचंदंसिसीहासणंसितुडिएणंसिद्धिं दिव्वाइंभोगभोगाइंभुंजमाणेवि

हेगौतम चंद्रमायोतिषीचंद्रयोतिषीनोराजा चंद्रवतंसकविमानइं सुधर्मसभाइं मानवकनामथंभइंवस्थासइं वज्ज

हरित्तए णो चंदस्सणंजोइसिंदस्सजोतिसरण्णोचंदवडिंसएविमाणेसभाएसुहम्माए माणवगंसिचेइ

मयइ गोलवृत्तडाबडामांहइं घणांजिनवंतनीदाढाघणीघणीछीरहइंछइं जेदाढाचंद्रयोतिषीना इंद्रानइं

यखंभंसिवइरामएसुगोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाउजिणसकहाउचिट्ठंति जाउणंचंदस्सजोइसिं

योतिषीनाराजा अनेरघणा योतिषीनादेवता देवांगनानइं अर्चनीकछइ जोपर्युपासना करवायोग्यछइ

दस्सजोइसरण्णो अण्णेसिंचबहूणंजोइसियाणंदेवाणयदेवीणयअच्चणिज्जाउ जाव पज्जुवास

अर्चनीकछइ पूजनी पासनाकरवा तस्सणंतेहनाआश्रयनेतेहनेंजोपीनें नकरइ राजा चंद्रयोतिषीभोगवताविचरेंनही
कछइ जावपर्यु योग्यछइ चंद्रवतंसकइ चंद्रसिंहासनइंभोग

णिज्जाउ तस्सणंपणिहायानोपभूचंदेजोइसरायाचंदवडिंसे जाव चंदंसीहासणेजावभुंजमा

तेस्यामाटइं गौतम नहीप्रभु चंद्रज्योतिषीराजा चंद्रवतंसकविमान सौधर्म्मसभाइं चंद्रनामासिंहासनइं

जिवाभिग: णोविहरित्तए सेतेणट्ठेणं गो० णोपभूचंदेजोइसरायाचंदवडिंसएविमाणेसभाएसुहम्माएचंदंसि

२६६ त्रुटितकहेतां अंतःपुरसाथिं दिव्यभोगभोगवताथका विचरइंनही तथा अनेरोकारण गौतम प्रभुचंद्रज्योति

सीहासणंसीतुडिएणंसद्धिंदिव्वाइंभोगभोगाइंभुंजमाणेविहरित्तए अदुत्तरंचणंगो० पभूचंदेजो

षी चंद्रवतंसकविमाने सुधर्मसभाइं चंद्रनामासिंहासनइं च्यारसहस्रसामानिकसाथ
राजा

इसराया चंदवडिंसएविमाणेसभाएसुहम्माए चंदंसिसीहासणंसिचउहिंसामाणियसाहस्सी

जांजगइं सोलसहस्रआतमरक्षकदेवतासाथि अनेराघणा ज्योतिषीना देवता देवांगनानेंसाथिंपरवर्‍यो

सी इंजावसोलसहस्सायरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिंबहूहिंजोइसीएहिंदेवेहिंदेवीहिंयस

मोहटो हत नृत गीतगान वाजीत्र तंत्रीवीणाप्र तालकांसि तालोटा ढोल घन मृदंग मोहटापडहनइंशब्दइं
कंबा ना

द्धिंसंपरिवुडेमहयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडीयघणमुयंगपडुप्पवाइयरवेणंदि

दिव्यमनोहरदेवतानाभोगभोगवता तेकेवलऋद्धिनाभोगनिंहेतइं नहुनिश्चपणिमैथुनअर्थिसें भोगवावासंबंधनइं
विचरइंछइं विनोदनइंहेतइंकरीनइं एतोनीमतिनहीसम्यक्तिकें तागवरजोतिसिरि

व्वाइंभोगभोगाइंभुंजमाणेविहरित्तए केवलंपरियारिद्धीए णोचेवणंमेहुणवत्तियं सूरस्सणंभंते २६६

सर्वचंद्रमाकविमानसंख्यात्वार देवलोकइंनव ग्रैवेयकें पुंचा नुत्तरविमानेंथ ईनइंचारगमी लाइसभानी सुगसअपरिग्रही सएपलतावी मानकहेवा

ज्योतिषीइनइं ज्योतिषीनाराजानइं अग्रमहिषीकही तावंतकहइंहे आस्यअग्रमहिषीकहीछइं तेकेही सूरप्रभा
केतली कइं गौतम १

जोइसिंदस्सजोतिसरण्णोकइअग्गमहिसीओपण्णत्ताओ गो० चत्तारिअग्गमहिसीओपण्णत्ताओ तंसू

आतमप्र अर्चिमाली प्रभंकरा इमथाकतोसर्वचंद्रमानी नवरंएतलोविशेषचंद्रवतंसकनेंठामइं चंद्रसिंहासननइंठा
२ ३ ४ पराइंकहइंवो सूर्यवतंसककहीइं मइंसूर्यसिंहासन

रप्पभाआयवाभाअच्चिमालापभंकराएवंअवसेसंजहाचंदस्स णवरंसूरवडिंसकेविमाणेसूरंस

नकहीइं इमसर्वग्रहादिकजणवीइंच्यार२अग्रमहीषी कहीइंछइं विजया१ वेजयंती२ जयंती३ अपराजति४
इ होइतेहनानाम

सीहासणंसितहेवसव्वेसिंगहाईणंचत्तारिअग्गमहिसीओ तंविजयावेजयंतीजयंतीअपरा

तेहनइंसर्वतिमजचंद्रमानीपरइं चंद्रमानाविमाननादेवतानिकेतलाकालनी इमजेहनीजेतलइंस्थितिकइंतेतलीतेहनीक
कहइंवो स्थितिकही हेवी आंजगइंतारानीस्थितिकही

जिता तेसिंपितहेवचंदविमाणेणंभंतेदेवाणंकेवतियंकालंठिईपण्णत्ताएवंजस्सजाठिईतस्स

आलगेतारानीस्थिति हवेंअल्पबहुत्वकहेंछइं एहनेंभगवनचंद्र१ ग्रह नक्षत्र तारा नइंकेहथकीथोडाकइं
लगंकहेंवो सूर्य२ ३ ४ ५

तहेवजावताराणं एएसिणंभंतेचंदिमसूरियगहणक्खत्ततारारूवाणंकयरे२हिं

घणाहोइं सरिखाहोइं विशेषाधिकहोइं गौतम चंद्रमासूर्य बेइंसरिखा अनेंसर्वथीथोडाछै अनेंअसंख्यातादीपसमु
सर्वथी इंअसंख्याताचतीतेथ

तोअप्पावाबहुयावातुल्लावाविसेसाहियावा गो० चंदिमसूरियाएएणंदोण्णितुल्लासव्वथोवाअ

चंद्रमानें जघन्य पल्योपमचउथो भाग उत्कृष्टपल्योपम१ वर्षलाख अधिकसूर्य नो पल्योपम१ नें वर्षसहस्र अधिकग्रहपल्योपम१ नक्षत्रनें पल्योपमअर्द्ध तारानें पल्योपमचउथोभा इमसपलइंज घन्यउत्कृष्टस्थि तिकहेवी

कीनष्यत्रसंष्यातगुणाच्य त्रष्यकीग्रहसंष्यातगुणाकाेइं तेथकीतारासंष्यातगुणाछइते चौथीप्रतिपत्तिनोउद्देसोसमा
ज्योतीसगुणाथतीतेनष्य कत्रअधिकत्रिगुणाथती ऋपीकोछइ मः संपूर्ण
संखेजगुणानक्खत्तासंखेजगुणागहासंखेज्जगुणा ततोतारगाउसंखिजगुणाउ वज्जोइसउद्दे
हवेवैमानिकनीवक्तव्य किहांभगवनवैमानिकदेवतानाविमां किहांभगवनवैमानिकनांमादेवतापरिवसंतिकहे
ताकहेछइ नकह्या तावसइछइ
सउसमत्तो कहणंभंतेवेमाणियाणंदेवाणंविमाणपणत्ता कहणंभंतेवेमाणियादेवाप
जिमपनवणानइबीजैथाणपदिंकहितिमइतिम एलोचि परिषदात्रणि२कहे जिहांजगेंग्राकेंमहाराय अनेराघणाइत
मर्बइहांकहेवोलवरंकहेवा शेष वी प्रकष ता
रिविसंतीजहाठाणपदेसिवाणंतीयद्याणवरंपरिसाउत्तंभणीयद्याउजावसकेअणेसीव
सोधर्म कल्पवासी वैमानिक देवता देवांगनाजोलगेंमकवइविचरइछइ हवेशक्रनैंभगवनदेवेंद्रदेवराजानइ
बहुणंसोहम्मकप्पवासीणंवेमाणियाणंदेवाणयदेवीणयजावविहरंतिसक्कसणंभंतेदेवर
केतलीपरषदाकहीतेकेही हेगौत समीता१ चंडा२ जाता३ माहिलीसमीतापरष मझिमयानीचंडापरषदाजाणवीबाहि
गौतमत्रणिपरषदाकही म दा रलीजातापरषदा
स्सदेवरणोकयपरिसाउंगोयं० समीयाचंडाजायाअभिंतरियासमीयामझिमयाचंडाबाहि
सक्रनइभगवनदेवेंद्रदेवरा माहिलीपरषदाइं केतलासहस्रदेवताकह्याछइ मध्यमपरषदाइंदेवतानी ष्याति
जानइ मजछइंछइ
रयाजायासक्कसणंभंतेदेविंदस्सदेवरणोअभिंतरियाएकइदेवसाहस्सीउपणत्ताउमझिम

डाक्टर बाबू ... स्मारक संग्रहालय
Dr. BABU ... MEMORIAL

भगवंतकहे हेगौतम शक्रनेंदेवेंद्रनइदेवनाराजा माहिलीपरषदाइं बारसहस्रदेवताकह्या मध्यमपरषदाइं
नइ
याएपरिसाएतहेवचुबागोसक्कसणंदेविंदस्सदेवरणोअभिंतरीयाएपरिसाएबारसदेवसा
चउदसहस्रदेवताकह्यावीतरागे बाहिरलीपरषदाइंसोलसहस्रदेवता
हसीउपणत्ताउमझिमयाएपरिसाएचउदसदेवासाहसीउबाहरियाएपरिसाएसोलस
कह्या इमदेवांगनानोप्रश्नकीधोतिवारे हेगौत सक्रदेवेंद्रदेवराजा मांहिलीपरषदाइं सातसइं
भगवंतकहइ म
देवसाहसीउएवादेवीणचिउबागोसक्कस्सदेविंदस्सदेवरणोअभिंतरियाएपरिसाएसत्त
देवांगनावीतरागेंकही मध्यमपरषदाइंछसइंदेवांगनाकही बाहिरनीपरषदाइंपांचसइंदेवांगनाकही हवइं
वीतरागे तेपरष दोना देवतानी
देवसियापणत्तामझिमयाएपरिसाएछदेवसयापं बाहिरयाएपरिसाएपंचदेवसयादेवां
स्थितिक मांहेलीपरषदानादेवतानें पांचपल्योपमनी थितिकही मध्यमपरषदानादेवतानइं च्यारपल्योपम
हइछइं
णंठिइ अभिंतरियाएपरिसाएपंचपलिउवमाणयठीतेपं मझिमयाएपरिसाएचत्तारिपलिउ
नीस्थिति बाहिरलीपरषदानादेवतानी त्रणिपल्योपमनी स्थितिश्रीवीतरागेंक हवइंदेवीनीस्थितिकहइछइं
कही ही
वमाठिइपं बाहिरीयाएपरिसाएदेवाएतिन्निपलिउवमाइंठिइपं देवीणंठिइअभिंतरी

जीवाभिगम
२६८

मांहेली [illegible] परषदानी देवीनी त्रणिपल्योपमनी स्थिति कही मध्यम परषदाइं देवीनइं बेपल्योपमनी स्थिति कही बाहिरली
याए परिसाए देवेणं तिन्निपलिओवमाइं ठिइ पं मज्झिमयाए दोण्णिपलिओवमाइं ठिइ पं बाहिरि
परषदानी देवीनी एकपल्योपमनी स्थिति कही तिमज सर्व जिमव्रनवासीनें कह्यो तिमकहेवो तिम कहेवो किहां व्रनवनइं ईशानदेवलोकनी विमान
याए परिसाए [illegible] गपलिओवमं ठिइ पं अट्ठो सो चेव जहा भवणवासीणं कहिणं भंते ईसाण
कह्यो बइ तिमज सर्व जिहां लगें ईशानदेवलोक देवराजा ज्यां विचरें बइ ईशानें भगवनदेवेंद्रदेवरा
याणं देवाणं विमाणा पण्णत्ता तहेव सव्वं जाव दूसाणे जत्थ देविंदे जाव विहरेइ साणंसि ते देविं
जानइं केतलीपरषदा कही गोतम त्रणिपरषदा कही तेज ते तेकेही समीता चंडा जाता तिमज सर्व कहे
दस्स देवरण्णो कई परिसाओ पण्णत्ताओ गो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं समिया चंडा जाया तहेव सिं चंन
वानलां विशे
वमांहेली परषदाइं दससहस्रदेवताकह्या मध्यपरषदाइं बारसहस्र देवताकह्या बाहिरली परषदाइं चउदसह
वरं अभिंतरियाए दस्सदेवसाहसीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए बारसदेवसाहस्सीओ बाहि
स्रदेवताकह्या हवेइशाननी परषदानी देवीनो प्रश्न कीधो अनंतर परषदाइं नवसइ देवां गना मध्यमपरषदाइं आठसइ देवांगना कहीछइ
रियाए चउदसदेवसाहस्सीओ पं देवीणं पुच्छा अभिंतरियाए णं देवसया पंमज्झिमियाए परिसा २६८

बाह्यपरषदाइं सातसें देवांगना आवी नराणेक हविदेवतानी स्थितिनो प्रश्न कीधो तगवंतक हेहे गोतम मांहेली परषदाना
दीठइं
ए अट्ठ देवसया पण्णत्ता बाहिरायाए परिसाए सत्तदेवसया पं देवीणं ठिइ पुच्छा गो अभिंतरीया
देवतानी सातपल्योपमनी स्थिति कही मध्यमपर्षदाइं देवतानी छपल्योपमनी स्थिति कही बाह्यपर्षदाइं देवतानी पांचपल्यो एमनी स्थिति कही हवें देवीनी
ए परिसाए देवाणं सपलिओवमाइं ठिइ पण्णत्ता मध्यमइ छपलिओवमइ बाहिरियाए पंचपलिओव
स्थितिनो प्रश्न कीधो मांहिली परषदानी देवीनी पांचपल्योपमनी स्थिति कही मध्यमपरषदानी देवीनी च्यारपल्योपमनी स्थिति कही
माइं ठिइ पण्णत्ता देवीणं पुच्छा अभिंतरियाए पंचपलिओवमाइं मज्झिमयाए परिसाए चत्तारि पलि
बाह्यपरषदानी देवीनी त्रणिपल्योपमनी स्थिति आवीतरागे कही अर्थ सर्व विकुर्वणानो ए तिमीनी चंडमानी इंगसन अग्रमहिषी तिमज कहेंवो तकुमा
ओवमाइं ठिइ पण्णत्ता बाहिरियाए परिसाए तिन्निपलीओवमाइं ठिइ पण्णत्ता अट्ठो तहेव सणं
रनो प्रश्न कीधो जिम पन्नवणानि बीजें पदें कहिवइ तिम आलावइ कहेंवो सनतकुमारदेवलोक त्रणि परषदा कही तेकेही समिता चंडा जाता तिमज एतलो
य ओसणं कुमाराणं पुच्छा तहेव वाणपदगमेणं जावसणं कुमारसतपरिसाओ समिया चंडा जाया
विशेष समीयाइं चंडा जाता इं आठसहस्रदेवकह्या मध्यमपर्षदाइं दससहस्रदेवताकह्या बाह्यपर्षदाइं
बाहिरली पर्षदाइं
देवणवरं अभिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सीओ पं मज्झिमए दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ·

जिवाभिगम: २६९ परियडीतारे वीइहोध्वैन ही

बारसहस्सदेवताकह्या हवेइहांथीदेवी माहेली परषदाइं देवता आउखुंसाढाच्यारसागरोपमउपरि पांचपल्योपम
नही नुं
बाहरियाए बारस देवसाहसीतो पण्णत्ता अभिंतरियाए परिसाए देवाणं ठिती अद्धपंचमाइ
एतली स्थिति होइ मध्यमपरषदाइं देवतानी साढाच्यारसागरोपम उपरि ६ च्यार पल्योपमनी आउखानी स्थिति श्रीवीतरागे कही
सागरोवमाइं पंचपलिउवमाइं ठिई पं मज्झिमयाए परिसाए अद्धपंचमाइ सागरोवमाइं चत्ता
बाहिरली परषदाना देवतानी साढाच्यारसागरोपम उपरि त्रणि पल्योपमनी स्थिति कही एतलो अर्थ तिमज
रि पलिउवमाइं ठिई पण्णत्ता बाहरियाए परिसाए अद्धपंचमाए सागरोवमाइं तिन्नि पलिउ
कहेवो ईसमा हेंद्र वाघें देवलोकइ तिम सांभलइं त्रणि पर्षदा जकहेवो कहीनवइ एतलो विशेष माहिली पर्षदाइं बसहस्स
वमाइं ठिई पण्णत्ता अट्ठो सो चेव एवं माहिंदस्स वितहेव जाव तओ परिसाओ नवरं अभिंतरियाए
देवताकह्या मध्यमपर्षदाना देवता आठसहस्सकह्या सातंचेनइं बा ह्यपर्षदाना देवतानी साढाच्यारसागरोपमनी स्थिति
छ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमयाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बहियाए परिसाए दस देव
उपरिसातपल्योपमनुं आउखुं कह्युं
साहस्सीओ पं ठितिदेवाणं अभिंतरियाए परिसाए अद्धपंचमाइ सागरोवमाइं सत्तपलिउवमाइं २६९

मध्यमपर्षदाइं साढाच्यारसागरोपम उपरिछपल्योपमनी स्थिति कही श्रीवीतरागदेवइं बाहिरली पर्षदाइं साढा
ठिई पण्णत्ता मज्झिमयाए परिसाए अद्धपंचमाए सागरोवमाए छप्पलिउवमाइं ठिई पं बाहरियाए प
च्यार सागरोपम उपरिपांचपल्योपमनी स्थिति तिमजसर्वइंद्रनै पल्लवणापदनै ओलावै मांनकहवइ तिच्यारपद्मीप तिलावकी जोलवी ईहा
रिसाए अद्धपंचमाए सागरोवमाइं पंचपलिउवमाइं तहेव सव्वेसिं इंदाणं ठाणपयागमेणं विमा
तिकहे वृसेकइं श्रवुं तिमजसर्वइंद्रनै स्मसहस्र पांचमेदेवलोके त्रणिपर्षदाकही माहेली पर्षदाइं आरसहस्स देवताकह्या मध्यमपर्ष
णाणं तओ पच्छा परिसाओ पत्तेयं २ वुच्चंति बंभस्सवि तओ परिसाओ अभिंतरियाए चत्तारि देवसा
दाइं छसहस्सदेवताकह्या बाहिरलीपर्षदा इं आठसहस्सदेवताकह्या एवैं देवतानी स्थितिकहेवें
हस्सीओ मज्झिमयाए परिसाए छ देवसाहस्सीओ बाहरियाए अट्ठ देवसाहस्सीओ देवाणं ठिई अभिं
माहेली पर्षदाइं साढाच्यावसागरोपम उपरिपांचपल्योपमनी स्थिति कही मध्यमपर्षदाइं साढाच्यावसागरोपम उपरि च्यारपल्योपमनी स्थिति वी
तरियाए परिसाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं पंचपलिउवमाइं मज्झिमयाए परिसाए अद्धनवमा
तरागेकही बाह्यपर्षदाइं साढाआइसाग रोपमउपरि त्रणिपल्योपमनी स्थिति कही पाछिलोअर्थ तिमज स्मवद्हा लांतकदेवलोकइं सांभल इं
इं चत्तारि पलिउवमाइं बाहरियाए अद्धनवमाए सागरोवमाइं तिन्नि पलिउवमाइं अट्ठो सो चेव

झिवाभिग २७७

त्रणिपर्षदाकही | परषदाइंबइंसहस्रदेवताकह्या | मध्यमपर्षदाइंच्यारसहस्रदेवताश्रीवीतरागेकह्या | बाहिरलीपर्षदाइं

लंतकस्सवि जावतओ परिसाओ जाव अब्भिंतरीयाए दो देवसाहस्सीओ मज्झिमसियाए चत्ता ॰देव

छसहस्रदेवताकह्या | हवेदेवतानीथितिकहेछइं | मांहिलीपरषदानादेवतानि | बारसागरोपम उपरि

रि देवसाहस्सीओ पन्नत्ताओ बाहरियाए छ देवसाहस्सीओ पन्नत्ताओ ठिइ तोणियइओ अब्भिंतरि

सातपल्योपमनीथितिकही | मध्यमपरषदाइंबारसागरोपम उपरिछ

याए परिसाए देवाणं बारससागरोवमाइं सत्तपलिओवमाइं ठिइ पं मज्झिमयाए बारससाग

ल्योपमनीथितिकही | बाह्यपर्षदाइं बारसागरोपमउपरि पांचपल्योपमनीथितिवीतरागेकही | तिमजअर्थपाछ

रोवमाइं छच्चपलिओवमाइं बाहरियाए परिसाए बारससागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं ठि

लीपरइं सातमाम हासुक्रनोमादेवतानो हेगौतम प्रश्नकीधो | सोलगइंमांहिलीपर्षदाइंएकसहस्रदेवताकह्यइं | मध्यमपर्षदाइं

इ पणत्ता अट्ठो चेव महासुक्क पुग्गणो जाव अब्भिंतरियाए परिसाए एगा देवसाहस्सीओ मज्झि

बइंसहस्रदेवताकह्यइं | बाहिरलीपर्षदाइं च्यारसहस्रदेवताहोइं | मांहिलीपरषदाइं साढापनरसाग

मयाए परिसाए दो देवसाहस्सीओ बाहरियाए परिसाए चत्तारि देवसाहस्सीओ ठिई अब्भिंतरि २७७

रोपम | उपरिपांचपल्योपमनीथितिकह्यइं | मध्यमपर्षदाइं साढापनरसागरोपम उपरिच्यारपल्योपमनीथितिकह्यइं

याए परिसाए अद्धसोलससागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं मज्झिमयाए अद्धसोलससागरोवमाइं चत्ता

बाहिरलीपर्षदाइंसाढापनरसागरोपम उपरित्रणिपल्योपमनीथितिकह्यइं | अर्थतिमजपाछलीपरइंसहस्रार आठमा

रिपलीओवमाइं बाहरियाए अद्धसोलससागरोवमाइं तिण्णिपलिओवमाइं अट्ठो सो चेव सहस्सा

देवलोकनोइंद्र कीधो | सोलगइंमांहिलीपरषदाइं | पांचसइंदेवताहोइं | मध्यमपरषदाइंएकसहस्रदेवताहोइं | बाहिरलीपरषदाइंबइंसहस्रदेवताहोइं

रस्सवि पुच्छा जाव अब्भिंतरीयाए परिसाए पंचदेवसाए मज्झिमयाए एगा देवसाहस्सी बाहरियाए

हवइंदेवतानीथितिकहेछइंमांहिलीपर्षदाइंसाढासत | रसागरोपमअनइंउपरि सातपल्योपमनीथितिहोइं | इमम ध्यमपर्षदाइं

दो देवसाहस्सीओ ठिइ अब्भिंतरियाए अद्धअट्ठारससागरोवमाइं सत्तपलीओवमाइं ठिइ पं एवं

साढासतरसागरोपमअनइंछपल्योपमनीथितिहोइं | बाहिरलीपर्षदाइंसाढासतरसागरोपमउपरिपांचपल्योपमनीथिति अनुपानी होइं | अर्थतिमजपाछलीपरइं कहेवो

अद्धट्ठारससंछपलीओ बाहरियाए अद्धट्ठारससागरोवमाइं पंचपलीओवमाइं अट्ठो सो चेव आ

आनतनवमुंपाणतदसमुदेवलोकतेहनो प्रश्नकीधो | सोलगइंसरवपाछलीपरेगणवरेएतलोविशेष | मांहिलीपर्षदाइंअढीसइंदेवताकह्याछइं | मध्यमपर्षदाइंपांचसइंदेवताकह्याछइं

णयपाणयाणं विपुच्छा जाव तओ णवरं अब्भिंतर अड्ढाइज्जा देवसया मज्झिमयाए पंचदेवसया बा

॰देव॰

जिवाभिगम:
२९१

बाहिरली पर्षदाइं एकसहस्र देवताकस्याहवइं स्थि तिकहइं छै माहेली पर्षदाइं वीसोसागरोपम ऊपरि पांच पल्योपम नु आयुषु होइ देवतानुं इंणी रीतइं मध्यमपर्षदाइं

हरियाए एगं देवसाहस्सी चडिई अभिंतरियाए गुणवीससागरोवमाइं पंचपलीउवमाइं मज्झिमया

गणीससागरोपम ऊपरि च्यार पल्योपमनी थिति कहीइं बाहिरली पर्षदाइं ओगणीससागरोपम ऊपरि त्रणि पल्योपमनी थिति होइं

एगूणवीससागरोवमा चत्तारिय पलीउवमाइं बाहरियाए परिसाए एगूणवीससागरोवमाइं तिण्णिय

तिम जन्मर्ध सर्व पालवीपरें कहेवा किहां लगइ न इण्यारमें आरणदेवलोक बारमुं अच्युतदेवलोकनाइंद्र तिम जन्म अच्युतदेवलोकें परिवार सहित छै

पलिउवमाइं ठिई अठो सो चेव कहणं ते आरण अच्चुयाणं देवाणं तहेव अच्चुए सपरिवारे च

अच्युतदेवलोकनाइंद्रनें त्रणि पर्षदा तगवंतें कही माहेली पर्षदाइं एकसो पचवीस १२५ देवताकस्या

व विहरइ अच्चुयस्स णं देविंदस्स तातो परिसातो पणत्ताउ अभिंतरपरिसाउ देवाणं पणवीसासया:

माहिम पर्षदाइं अढीसें देवता होइं बाहिरली पर्षदाइं पांचसें देवता होइं हवइं थिति कहइं छै अभ्यंतर पर्षदाइं एकवीससागरोपम ऊपरि

मज्झिमयाए अड्डाइज्जासया बाहिरियाए परिसाए पंचसया थिई अभिंतरीए एक्कवीससागरोवमसत्त

सातपल्योपमनी थिति होइं मध्यमपर्षदा इंएकवीससागरोपम ऊपरि छ पल्योपमनी थिति होइं बाहिरली पर्षदाइं एकवीससागरोपम ऊपरि पांच पल्योपमनी थिति कहीइं इंणी रीतइं

सयपलिउवमाइं मज्झिमयाए एक्कवीसं सागरोवम छपलिउवमाइं बाहिरिए एक्कवीससागरोवमपं

२९१

किहां वइं भगवन रे विमाणीक ग्रैवेयकनादेवता परिवार सहित रहे छै जिम पश्चइं न वखाणनें बीजो तिणइं पदे कह्या छें तिम जाणवा इंमम मध्यमग्रैवे

लीउवमाइं ठिई पं कहणं भंते हेट्ठिम गेविज्जगा देवा परिवसंति जहा ठाणपए तहेव एवं म

वेयकनाउपरला ग्रैवेयकना पंच अनुत्तरविमानना देवता सर्व देवता अहमेंइ कस्या आपापणें ठामइं इंस्त्रीपरें कल्पलोग वगल्यारहित छइं अहो श्रमणा आयुष्मंतो वैमानिक

ज्झिमगेविज्जगा उवरिम गेविज्जगा णुत्तरा य जाव अहमिंदा नामं ते देवा पणत्ता समणा उसो प

तापहेलो उद्देसो समाप्त थयो।। हवें विमानपीठ तो अधिकार कहे छे सौधर्म इशानदेवलोकविमाननापीठ पहेलै विमाननी पृथवी सइं आधार रहीछइं तागवतकहैं

ढमो वेमाणियउद्देसो समत्तो ।छ: सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणपुढवी किं पइट्ठिया पण

हे गोतम घनवातप्रतिष्ठितकस्या सनतकुमार माहेंद्र कल्पथ विमाननापीठ सइंआधारें रह्या छइं

त्ता गो घणोदहिपइट्ठिया पं सणंकुमार माहिंदेसु णं कप्पे विमाणपुढवि किं पइट्ठि

गो ब्रह्मदेवलोकें लातंतविमाननापीठ तोप्रश्न कीधे घनवातप्रतिष्ठित कस्याछइं ब्रह्मलांतक नो प्रश्न कीधे

या पं बंभलोए णं भंते कप्पे विमाणपुढवी णं पुच्छा घणवातपइट्ठिया पं लांतकेणं भंते

हे गोतम घनोदधिघनवातप्रतिष्ठितकस्याछै महाशुक्र सहस्रार ७ ८ घनोदधिघनवातप्रतिष्ठितकस्याछइं आनतप्राणतआरण अच्युतकल्पेसात वन

पुच्छा गो सउसयपइट्ठिया पं महासुक्क सहसारे सउसयपइट्ठिया पं आणयजाव

घनवातनें
गो घण
ण्णाधारेरुद्या
वायपइट्ठि
वइ
या

नवंत कल्पथा
विमानपृथवी
किंप्रतिष्ठिता
कल्पतत प्रति
ष्ठिता किमाश्र
श्रयाकीमाथ
गइसर्वकुमा

पीठस्यानुपरिंधनिश्चितकह्या गोतमअवकासंतरप्रतिष्ठि नकह्या ग्रैवेयकविमाननापृथ्वी प्रश्नकी गोतम अवकासंतरप्रतिष्ठि

अनुत्तरेसुणं भंते कप्पेसु पुच्छा ओवासंतरपइट्ठिया पं गेविज्जविमाणपुढवीणं पुच्छा गो ओवासंतर

नकह्या अनुत्तर ५ नो प्रश्नकीधोतेकीधेथकेंभगवंतनइं अवकासंतरप्रतिष्ठितकह्या हवइं बार देवलोकेंपृथ्वीनाजाडपणानो मानपूछइंछइं स्वामी देवलो

पइट्ठिया पं अणुत्तरोववाइयाणं पुच्छा ओवासंतरपइट्ठियापन्नत्ता सोहम्मीसाणेसुविमा

कविमाननीपृथ्वीकेंतलीजाडपणइं कहीतिवारइं भगवंतकहइं. हेगोतमसत्तावीससेंयोजनविमानपृथ्वीजाडपणइं कहीइंइमसर्व वनाप्रश्नकरवी यथा सनतकुमारइं माहेंद्रइं ४

णपुढवीकेवतीयंबाहल्लेणंपुढवीकेवि पं गो सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं एवंपुच्छास

प्रश्नकीधातिवारइंभगवंतकहइं. छवीससेंयोजननीजाडपणइं कहितुं ब्रह्म देवलोकप लांतकट पचवीससेंयोजननीजाडपणो महाशुक्र ७ सहस्रार ८

णंकुमारमाहिंदेसुपुच्छा छवीसं जोयणसयाइं बंभलोयलंतए पणवीसं महासुक्कसहस्सारेसु

देवलो.	सौ. ई.	स. मा.	ब्र. लां.	शु. स.	आ. प्रा. आ. अ.	ग्रैवेयक	पंचानुत्तर
पृथ्वीपि	२७०००	२६०००	२५००	२४०००	२३०००	२२०००	२१०००
विमान	५००	६००	७००	८००	९००	१०००	११००

चोवीससेंयोजननीजाडपणो आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२

चउवीसं आणयपाणयआरणअ

तेवीससइंयोजननीजाडपणो ग्रैवेयकविमाननीपृथ्वीबावीससइंयोजननीकहइं अनुत्तरविमाननीपृथ्वीएकवीससइंयोजननीजाडपणइं

च्चुएसु तेवीसं सयाइं गेविज्जविमाणपुढवी बावीसं अणुत्तरविमाणपुढवीएकं

यअनुत्तरहियपइत्थाण मरत्तगणारेसुकंतिकप्पेस तवायपइट्ठाणा तउतयउपयचिया तिसर तेणपरिउवरिमगा आगासमंतरइठियासेवसंपयठाणविदितहदलोगजेमाणाणं २

पणइंकहीछइं हेगोतम हवइंविमाननोउंचपणोपूछइछइं सोधर्मइशानदेवलोकेंहवेंछइं विमाननोकेतलोउंचपणोकह्युं तिवारेंभगवंतकहइंहेगोतम

वीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं सोहम्मीसाणेसुणं भंते कप्पेसु विमाणाकेवतियं उड्ढं उच्चत्तेणं गो

पांचसइंयोजननुंउंचपणुंकहीइं सनतकुमार ३ माहेंद्र ४ छसइंयोजननोविमाननोउंचपणो कहीउं ब्रह्मदेवलोकपलांतक देवलोक ८ सातसेंयोजन

पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सणंकुमारमाहिंदेसु छजोयणसयाइं बंभलोगलंतगमहासुक्कस

महाशुक्र ७ सहस्रार ८ आठसेंयोजननुंविमाननुंउंचपणोछइं आनतादिकच्यार देवलोकनवसेंयोजननुंविमाननुंउंचपणो ग्रैवेयकविमानकेतलागवननुंबारसेंयोजननुंउंचपणइंछइं

हस्सारेसु अट्ठ आणयपाणयआरणअच्चुएसु नव गेविज्जविमाणेणं भंते केवतियं उड्ढं उच्चत्तेणं दस जोयणसयाइं अणुत्तर

अनुत्तरविमाननीविमानइंग्यारसेंयोजननुंउंचपणइं हवइंसंस्थाननीप्ररूपणापूछइंछइं सोधर्म १ ईशानइं २ देवलोकइंभगवन विमानस्यइं एहवीरीतिंविमाननोसंस्थानकह्युं

विमाणाणं एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सोहम्मीसाणेसुणं भंते कप्पेसु विमाणा किंसंठि

संस्थानेंकह्या गोतम विमानबेंप्रकारेंकह्यां तेकेंहां एकआवलीश्रेणिप्रविष्ट १ एकआवलीबाह्यपुष्पावकीर्ण २ तेहमां जेआवलीश्रेणिप्रविष्टिछइं तेत्रणि

आपण्णत्ता गो दुविहा पं तं आवलियपविट्ठा य आवलियबाहिरा य तत्थणं जे ते आवलियपविट्ठा ते

केहवाछइंतेकहइं. वाटला १ त्रंस २ चोखूणा ३ तिहांजेतेविमानबाहिरछइं तेअनेकसंस्थानेंकह्यांस्वस्तिकादिकअनेकसंस्थानइंकह्यांछइं

तिविहापण्णत्ता तं वट्टा तंसा चउरंसा तत्थणं जेसे आवलियबाहिरा तेणं नाणासंठाणसंठिया पं

जिवाभिग
२९७

इम ओनवग्रैवेयकऊपरइं कहेछे | हवइ अनुत्तरविमानना वइं तेहकरया ऊदइं तेजल तेकेहा | वारजोविचित्रआरपासी व्यारत्रिकूणाहोइ एवं वट्टने साधुरियअणुत्तरविमाण इति वचनात्

एवं जाव गेविज्जविमाणा। अणुत्तरोववाइयविमाणा दुविहा पण्णत्ता तं० वट्टे य तंसे य। सोहम्मीसा-

हवइ विमानने आयामपणो कहेवइं सौधर्म ईशानइं २ भगवन विमानना | केतलो लांबपणो पिहुलपणो कहिउं | एह विमानोनी केतली परिधि चोफेर कहीवै | गोतम

णेसु णं भंते कप्पेसु विमाणा केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ता गो० दु-

विमानना बेहु भेद कहेला छइ | संख्याता विस्तार संख्याता सहस्र योजन प्रमाण एक असंख्यात | विस्तार असंख्याता योजन सहस्र प्रमाण जिम नरगवासाना विस्तार | तिम अनुत्तर विमान कहेवा

विहा पण्णत्ता तं संखेज्जवित्थडा य असंखेज्जवित्थडा य जहा नरगा तहा जाव अणुत्तरोववाइया

संख्यातविस्तार विमान होइ वली | असंख्यातविस्तार विमान होइ तिहां जे ते संख्यातविस्तार ते जंबूद्वीपने प्रमाणे एक लाख योजन ते पण परिधि त्रिण लाख सोल सहस्र बिसे सत्तावीस योजन अने त्रिण कोस अठावीस धनुष साढी तेर आंगुल

संखेज्जवित्थडा य असंखेज्जवित्थडा य तत्थ णं जे से संखेज्जवित्थडे से जंबूद्दीवप्पमाणे असं-

हवइ जे ते असंख्यातविस्तार विमान छइं ते असंख्याता सहस्र योजन लंबपणइं पीहुलपणइं जाणवा परिखेपकहे ते पण परिधि पण तिम कहि छइं | सौधर्म ईशान विषे देवलोकेनं भगवन विमानना केतला वर्ण कहया

खेज्जवित्थडा असंखेज्जाइं जोयणसयाइं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ता सोहम्मीसाणेसु णं

भगवंत कहे हे गोतम | पांचवर्ण कह्या | कालो विमान १ नीलो २ रातो ३ पीलो ४ धोलो ५ | सनत्कुमार माहेंद्रस्यां रवर्णनां विमान कालो

भंते विमाणा कतिवण्णा पं० गो० पंचवण्णा पण्णत्ता किण्हा नीला लोहिता हालिद्दा सुक्किल्ला सणंकुमा

२९७

वर्ण मूकीनइं नीलो १ रातो २ पीलो ३ धोलो ४ च्यार वर्ण होइ | ब्रह्म देवलोक लांतक देवलोके त्रिणि वर्ण नां विमान कालो नीलो वर्ण मूकीनइं रातो १ पीलो २ धोलो ३ ए त्रिणि वर्णनां विमान होइं | महाशुक्र सहस्रार इ

रमाहिंदेसु चउवण्णा नीला जाव सुक्किल्ला बंभलोगलंतएसु तिवण्णा लोहिता जाव सुक्किल्ला म-

पहिला त्रिणि वर्ण मूकीनइं पीलो १ धोलो २ ए बिं वर्णनां विमान होइ | आनत १ प्राणत २ आरण ११ अच्युत १२ एक धोलो वर्ण होइ | ग्रैवेयकनां विमान श्वेत होइ

हासुक्कसहस्सारेसु दुवण्णा हालिद्दा य सुक्किल्ला य आणयपाणयआरणच्चुएसु सुक्किल्ला गेविज्जवि-

अनुत्तरविमानना परम श्वेत उज्जल वर्ण विमान सीघकरे कह्या | हवइ विमाननी प्रभा कांति हवइ छइं | सौधर्म विमाननी ईशान विमाननी भगवन

माणा सुक्किल्ला अणुत्तरोववाइयविमाणा परमसुक्किल्ला वण्णेणं पण्णत्ता सोहम्मीसाणेसु णं

केहवी प्रभा कांति कही छइं | भगवंत कहइं हे गोतम | निसालोका नथी अंधकार नो आश्रय जिहां नथी निसें उद्योत छइ स्वयं विमान | नीपरें उद्यो

भंते कप्पेसु विमाणा केरिसया पभाए पण्णत्ता गो० णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयं पभाए णं पं० जाव

तेहने पोतानी प्रभाइं सहित छइं जाव अनुत्तर विमान निरंतर इसइं | अंधकार विना निसें उद्योत पोतानी प्रभा सहित विमान करयानइं | हवइ ते वार देवलोक नां गंध कें | हवै ते प्रभव होइं सौधर्म ईशान भगवन

अणुत्तरोववाइयविमाणा णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयं पभाए पण्णत्ता सोहम्मीसाणेसु णं भंते

विमाननो केहवो गंध कहिउ छइं हे गोतम ते जिम कोई रूपवंत | कोष्टपुटनी जेहवो गंध अथवा जेहवो | ए सकोइ उत्तर मनोज्ञ गंध विचारइं भगवंत कह ते | गंध ते हवो इम जाणवो | करया छइं जाव अनुत्तर

विमाणा केरिसया गंधेणं पं० गो० से जहा नामए कोट्ठपुडाण वा जाव गंधेणं पण्णत्ता एवं जाव एत्तो इट्ठ

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

विमानलोकहेवो हवइं विमाननो फरस सोधर्मइशान२देवलोकेविमाननाकेहवा फरस हेगोतम तेजिमकोइद कमायो
पलइ लइ कहाजइस्वामीतु स्थवर्णमाच्छेले छूले म हांतइ चर्मजे

जीवाभिग २९५

तराचेव जाव अणुत्तरो विमाणा सोहम्मीसाणेसु विमाणा केरिसया फासेणं पं गो से जहानामए आइ

हवोलइपायोरू तिमजसर्वस्पर्शाजोलकहे माजर्गमअनुत्तरविमानसालोगेएवोसर्वोक सोधर्मइशानेसग वलकेव
जेरुवो लेइ वोइरुविस्तारे देवो हवे विमाननो मोटानो प्रश्न छ लइं कोमोटो विमानकहांछे

णेइ वा रूतेइ वा नवणीएइ वा सवोसंलीयवा जाव अणुत्तरोववाइणयविमाणा सोहम्मीसाणेसु णं भंते के

तिवारेलगवंतकहे हेगोतम आजंबूदीपसर्वद्वीपसमुद्रमांमध्यलाखयोजनप्रमांण त्रिसेंसताविसयोजनत्रणिकोसअठावीस
जोवपलोप्रिछलयणइत्रणित्ताबसोलहजार धनुषतेरआंगुलकाइकवित्राधिकछे

वतिए महालया पं गो अयण्णं जंबूदीवसमुद्दाणं सो चेव गमो जाव छम्मासे वीइवएज्जा जाव अत्थेग

जंबूद्वीपपूर्वेकोइकदेवतानीगतितेणदिगदिगत्रणिचपटीयेजंबूद्वीपफेरवइं तोकोइपारपांमेकोइपारनपामइएवडामोटाविमा
एकवीसवारफिरइंएहवीगतिकरतोइकदिनेविदिनेमांजगेछमाससलगेफिरइ नवइंआंलगइंअणुत्तरविमानसांलगइंकहिवो

तिया विमाणा छम्मासं वीइवएज्जा अत्थेगतिया नो वीइवएज्जा जाव अणुत्तरोववाइयविमाणा अत्थे

कोइविमानबवइंफिरीसकेंकोइविमां एहवामोहटाविमांन सोधर्मइदेवलोकनाइशानदेवलोकनांविमांनसामयेक
नइ वहइं फिरीनसकइं छइं स्याछेहेगवन

गतिया विमाणा वीइवएज्जा अत्थेगतिया नो वीइवएज्जा सोहम्मीसाणेसु णं भंते विमाणा किंमया प

हेगोतम सर्वरत्नमयकह्या तिहांघणाजीवपृथ्वीकायनापुद्गलअपक्रमीजाइचिक्रमउपजइं छइं सास्वतांविमांनक
छइं चवइं छइं

ण्णत्ता गो सव्वरयणामया पं तत्थणं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंती विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासया २९५

द्रव्यार्थकी पणिसास्वतां छइं करसगंधपर्यायकरी सास्वतां छैंआंलगें अनुत्तरविमानसांलगइं सोधर्म
नइं फरइ छइं तेमाटें साश्वताकीअ कहइंवो इणीपरिपारीइं इशान

णं ते विमाणा दव्वट्ठयाए जाव फासपज्जवेहिं असासया जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा सोह

देवलोकनादेवकांकिहांथकीउपजइं इमउपजवानोअधिकारपन्नवणाथकीजांणवोतिर्यंचमनुष्यगर्भजपंचेंद्रीथकोउपजइं
संमूर्छिमवर्जीनइं उपजवानो अधिकार पन्नवणाथकी जांणवो वक्रांतपदइंमकहिउ छइं तिमजांणवोइहां

म्मीसाणेसु णं देवा कओहिंतो उववज्जंति गो उववाओ नायव्वो जाव वक्कंतीए तिरिक्खमणुएसु पंचिं

पंचेंद्रीयगर्भजनाइं थकी संमूर्छिमथी वर्जीया एअनुत्तरविमांनलगेंउप सोधर्मइशानदेवताएकसमें केतलाउपजइं
जवुं कहइं छु

दिएसु मुच्छिमवज्जेसु उववाओ वक्कंती एवं गमेणं जाव अणुत्तरो सोहम्मीसाणेसु देवा एगसमएणं

तिवारइंसगवंतकहइं गोतम जघन्यथकी एकउपजइंबे त्रणिवलिन उत्कृष्टानोसंख्याता असंख्याताप णिउपजइं
म की उपजइं पजइं उपजइं

उस्सप्पिणीजेतलासमय तेतेनलारै वेताचइ

केवइया उववज्जंति गो जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखिज्जा वा उववा

इमसांमहस्नारलगइंउप [illegible] इहांएक देवाकहे त्रणिमान उत्कृष्टानोनुपजइं प
जइं आनतादिकचार ग्रैवेयक ५ अणुत्तर ५ नांबे गइं णिअसंख्याता न

ज्जंति एवं जाव सहस्सारे आणत आइ गेविज्जा अणुत्तराय एक्केणं दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा उ

पजइंजदी सोधर्मइशानदेवलोकेंलगवदेवतानइंसप अपहरमांणाकहेंता अपहरतेंथकइंकेतलेंकालेंअपहरीसकीइं
यइं२समसमयइंएकदेवनोले अपहरता २ असंख्यातीउत्सर्पिणीनेंसमयइं

ववज्जंति सोहम्मीसाणेसु णं भंते देवा समए २ अवहीरमाणा २ असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं २ अ

हिबालिन
२७५

अपहरइं नहीं इम जो स एहस्रार देवलोकलगइं कहेवो | आनंतादिक च्यारे | मादेवतासमइं समयं अपहरतें असंख्यातकाल
एतलइं सीत्रर्थ | वेयक | अपहरी इए चुन्तकी अ प्रश्न नो उपनय मात्र

वहीरसाणं चेव णं अवहीया जाव सहस्सारे आणयादीसु चउसु विमाणेसु य णं ए अव

नइं पलिकहीइं केतलें अपहरीनइं | तेअसंख्यातासमयें | अपहरतें | थकइं | गोतम | तेअसंखिजे कालें अ असं ख्यातें कालइं अपहरीइं | पलिअवहरीसकीइं नहीं एतल
तग वनउपनय कहइं | इअसंख्याता कालमानेतला स

हीरमाणा केवइया कालेणं अविहिया सिया गो० तेणं असंखेज्जा समए २ असंखिज्जेणं कालेणं

मय तेतलइं अमाणइं देवता | इम अनुत्तरवासी देवता नो प्रश्न कीधउ | श्री गोतम | तेअसंख्याते समयें समयें अपहरतें थकें क्षेत्रपल्योपमनें असंख्यातमा भागमात्र जेतला समय ते
बइं

अवही रंती नो चेव णं अवहियासया अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा से णं असंखेज्जा समए २

तलें समयइं अपहरइं तो | एतलें क्षेत्रपल्योपमना असंख्यातमा भागना जेतला समय तेतला पंचानुत्तरविमाननां
हिपलि अपहरीइं नहीं | देवताइं

अवहीरमाणं पलीओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तेणं अवहीरंति नो चेव णं अवहियासया

सौधर्म इशांन | गवनकलें | केवडी मोटी शरीरनी अवगाहना श्री वीतरागे कहीइं | हेगोतम | बइं से शरीरनी अ
तिवार इंसार्ध कहइं मांसजो | वगाहना कही

सोहम्मीसाणेसु णं भंते कप्पेसु देवाणं केमहालया सरीरोगाहणा पणत्ता गो० दुविहा सरीरो

बइं | तेकेही | भवधारणीक १ उत्तरवैक्रीय | तिहांजे तेभवधारणीक | तेतो जघन्यतो अंगुलनइं असंख्यातमइं भाग
२ | बइं | मात्रक इं | अपर्याप्ता | वस्थाइं

गाहणा पं तं भवधारणिज्जा उत्तरविउव्वियाय तत्थ णं जे से भवधारणीज्जे से जहणेणं अंगुलस्स

२७५

उत्कृष्टी तो पर्याप्तावस्थाइं सातहाथ रे | तिहांजे उत्तरवैक्रीय कइं ते जघन्य प्रथमतो | अंगुलनें असंख्यातमइं
होइं | भागमात्र इं कइं

असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सत्तरयणीउ तत्थ णं जे से उत्तरवेउव्वीए से जहणेणं अंगुलस्स

अनइं उत्कृष्टो लाखयोजन अवगा | उत्कृष्टी तो पर्याप्तावस्थाइं सात हाथ शरीर होइं तिहांजे उत्तरवैक्रीय कइं ते जघन्यथकी तेम
हनशरीर मान | तिक होइं सौधर्म इशांनें मान हाथ शरीर कहीइं सनतकुमार माहेंद्रे छ हाथ शरीर कइं उत्कृ

संखिज्जइभागं उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं एवं एक्केक्का ओसारेत्ताणं जाव अणुत्तराणं एक्कारय

लांतकें पांच हाथ महाशुक्र सहस्रारें च्यार हाथ आनत प्राणत आरण अच्युतें | त्रणें नवग्रैवेयकें पंच अनुत्तर विमानें एकहाथ
नाली हाथ ग्रैवेयकें बे हाथ अनुत्तरें एक हाथ शरीर होइं एहमान कहिवो | लीक बइं उत्तरवैक्रीयहिं नहीं वैक्रीय करवानी

णी गेविज्जणुत्तराणं एगे भवधारणीज्जे सरीरए उत्तरवेउव्विया तत्थ सोहम्मीसाणेसु देवाणं स

शक्ति छै पणि प्रयोजन नहीं सौधर्म इशांन देवलो | कनें संघयण माहइं | देवता असंघयणी स | रीर अस्थि नहीं स्नायु नहीं नसाजालनथी
कना देवतानें केहवें संघयण कहिउं हेगोतम | एकें संघयण नहीं | वइं कहया छै तथा

रीरगा किंसंघयणा पणत्ता गो० छण्हं संघयणाणं असंघयणा पणत्ता नेवट्ठि नेव छिरा णेव ण्हारू

नेमाटइं संघयण नथी तेथु | इष्ट वल्लभ कांतिक मनी | ते पुद्गल हवा रूपा पुद्गल ते नइं संघातपणइं परिणमइं एतलें संघयणनो
छज | यबइं | अस्ताव अनुत्तर विमान लगें कहिवो

नेव संघयणमत्थि जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव एतेसिं संघायत्ताए परिणमंति जाव अणुत्तरोववाइया

हवइं सौधर्म इशान देवतानां | संस्थांन कइंस्यें आकारें पणत्ता | हेगोतम | देवतानां बें प्रकारें शरीर | एक तें भवधारणीक शरीर १
शरीर | कह्यो नाकस्यां | कह्या छै

सोहम्मीसाणेसु णं देवाणं सरीरगा किंसंठिया पं गो० दुविहा सरीरगा पं भवधारणिज्जा य

बीजोउत्तरवैक्रीयशरीर तिहांजेतेभवधारणीकशरीर तेतोसमचउरंससंस्थानइंकरीसंस्थित तिहांजेतेउत्तरवैक्रीयशरीर

उत्तरवेउव्वियायतच्छणंजेतेभवधारणिज्जा तेसमचउरंससंठाणसंठिया पं तच्छणंजेतेउत्तरवे

तेअनेकसंस्थानेंसंस्थितकह्यांजिहांअच्युतकल्प जगउपरांतवैक्रीयनोअभावछइ नवग्रैवेयक पांचअणुत्तराणंइहांभवधारणीकसमचउरंससंस्थानेंसंस्थितछइ उत्तरवइनथी हवइदेवतानाशरीरनोवर्ण

उव्वियातेनाणासंठाणसंठियापण्णत्ता जावअच्चुएकप्पेगेविज्जअणुत्तराणंभवधारणिज्जसमच

कहइछइ उत्तरवैक्रीयशरीर सौधर्म१ईशानदेवतानाकेहवावर्णकह्याछइ हेगोतम तपाव्यासोनानीपरइं शरीरनीआनीकांति

उरंससंठियाउत्तरवेउव्वियाणत्थि सोहम्मीसाणेसुदेवा केरिसयावण्णेणंपण्णत्ता गो कणगत्तयरिस

छइजेह सनतकुमारदेवलोकअनेमाहेंद्रदेवलोकेदेवतानी शरीरनोवर्णपद्मनाकेसरासरिखोवर्णकह्योछइ ब्रह्मदेवलोकेंभगवनदेवताकेहवइवर्णइंकह्याछैंभगवंतकहें

आभावण्णेणं पं सणंकुमारमाहिंदेसुणंपउमपम्हगोरावण्णेणं पं बंभलोगेणंभंते केरिसयावण्णेणं

हेगोतम नीलामधुकरपीतश्वेतमिश्रएहवावर्णनीआभाकही श्वेतवर्णदेहनीआ इमग्रैवेयकना अनुत्तरवासीदेवतानाशरीरना ज्योंलकइभगवनकेहवोवर्णकह्योछइ हेगोतम भाकही

पं गो मधुगवण्णाभावण्णेणंपण्णत्ता लंतएणंभंते गो सुक्किलावण्णेणं पं एवंजावगेवेज्जा अणुत्तरो

रीरना परमउत्कृष्टोश्वेतउज्जलोवर्णकहिवोछइ सौधर्मईशानदेवतानोभगवनशरीरनोगंधकेहवोश्रीवीतरागेकहीउछइ वैगंधएछइछइ तेहवोकहोस्वामी

ववाइयापरमसुक्किलावण्णेणंपण्णत्ता सोहम्मीसाणेसुणंभंते कप्पेसुदेवाणंसरीरगाकेरिस

हेगोतम तेजिमकोईइष्टकांतइं कोष्टपुटकनेतलजेहवोतिमजसर्वथाजलीपरइंगंधवखाण्योतेहवोगंधकहेवो जावअणुत्तरविमानलगेंक

गागंधेणं पं गो सेजहानामएकोट्ठपुडाणवा तहेवसव्वं जावमणुत्तरयाचेवगंधेणं पं जावअणु

हवोहवैफरसनोप्रश्न सौधर्मईशानदेवतानाशरीरनोकेहवोफरसकह्योछइ हेगोतम थिरदृढमउको मल स्नीग्धसुकुमालएहवीशरीर

त्तरोववाए सोहम्मीसाणदेवाणंसरीरगाकेरिसयाफासेणं पं गो थिरमउयणिद्धसुकुमाला

नीछवीकहीछै इमजांअनुत्तरविमानलगइसर्वसरीखो कहेंवा सौधर्मईशानदेवतानइं केहवापुद्गलउस्सासपणेंपरिणमेंती

छवीफासेणं पं एवंजावअणुत्तरोववाईयाणं सोहम्मीसाणदेवाणं केरिसगापुग्गलाउस्सा

भगवंतकहें गोतम जेपुद्गलइष्टकांतिमनोज्ञकांतजांलगेतेहनेउस्सासपणइंपरिणमइं जांअनुत्तरविमानलगइंइम जउस्सासपुद्गलकहेंवाइम

सत्ताएपरिणमंति गो जेपोग्गलाइट्ठाकंताजावतेतेसिंउस्सासत्ताएपरिणमंतीजावअणुत्तरोव

आहारनेपुद्गलइंइष्टकां आहारपरणमेंजांलगइंअनुत्तरविमानलगेंअनुत्तरविमानसी जोकतिमनाहर हेवो सौधर्मईशानदेवतानइंकेतली लेश्याछइं भगवंतकहें हेगोतम

वाईयाएवंआहारत्ताएवंजावअणुत्तरोववाईयासोहम्मीसाणदेवाणंकइलेसाओपण्णत्ताओ गो

एकतेजोलेश्याकही सनतकुमारमाहेंद्रइं एकपदमलेश्याकही ब्रह्मदेवलोक पद्मलेश्याइ जांलकादिकइंनाकुजपणेंशुक्ललेश्याकइंभनवग्रैवेय

एगातेउलेस्सासणंकुमारमाहिंदेसुएगापम्हलेसा पं एवंबंभलोगेविपम्हासेसेसुएक्कालेसाअ

कणगतयस्ता
नाकरकसता
दोसकोनीक
पेसकसोहति
पह्लनागोरा
लावरणमन
किहेगा

श्रीवासिभग॰

२९९

कपांचानुत्तरविमानइंएकपरमतत्त्वदृष्टीसुक सौधर्मइशांनदेवतासुंसम्यग कइंमिथ्यादृष्टीहोइंसम्य गोतम त्रणिदर्शन
जेस्याकइं हवइंदर्शनदर्शइंछइं दृष्टीहोइं गमिथ्यादृष्टीहोइं म होइंजावग्र

णुत्तरोववाइयाणंएणावरिऊलेस्सासोहम्मीसाणेदेवाकिंसम्मदिट्ठीसम्मामिच्छादिट्ठीविमो तिन्निवि

ग्रैवेयकनादेवतासम्यग्दृष्टीहोइंमिथ्यादृष्टी दृष्टीनहोइंतेहनइंस्यातात अणुत्तरविमाननादेवता
लिहोइं होइं पणिसम्यग् वली

जावअचुए गेविज्जादेवासम्मादिट्ठीविमिच्छादिट्ठिवि नोसम्मामिच्छादिट्ठीअणुत्तरोववाइयासं

सम्यग्दृष्टीहो पणिमिथ्यादृष्टी मिश्रदृष्टीपणि हवइंज्ञानपूछइंछइंसोधर्मइशांनदेवलोकदेव गोतम ज्ञानीअज्ञानी
इं नोहुइं नोहुइं तासुंज्ञानीकइं अज्ञानीहोइं बइंहोइंतेमिश्र

मदिट्ठीनोमिच्छादिट्ठीनोसम्मामिच्छादिट्ठी सोहम्मीसाणेदेवाकिंनाणीअन्नाणी गो दोवितिन्नि

अपणिहोइंत्रणिज्ञानहोइंअ॰ निवेंआंग्रैवेयकलगें इंमअनुत्तरविमाननोप्रश्नकरी हेगौतम अनुत्तरवासीदेवताज्ञा
म॰ श्रुत एत्रणिहोइं कहेवो धर्मेगवंतकहे म नीकुंइंमतिश्रुतिअवि

नांणी तिन्निअन्नाणाणायमाए जावगेविज्जाअणुत्तरोववाइयाणंपुच्छा गो अणुत्तरोववाइयाणं

धिएत्रणिकुइंपुणिअज्ञाननोहुइंहवेंयोगपूछेंछइंसोधर्म उपयोगवेतेरेहोइंसा इंमसर्वनइंअनुत्तरवासीलगइंकहेवो
इशांननादेवताने त्रणितेहे निश्चइंयोगहोइंमनर वचनरकायर का॰ निराकार २

णाणीनोअणाणीतिन्निनानियमातिहिजोगेदुविहेउवउ गो सव्वेसिंजावअणुत्तरोववाईआणं

सौधर्मइशांननादेवताअवधिज्ञानेंकरी केतलोक्षेत्रजांणेदेषें हेगौतम जघन्यतोअंगुलनोअसंख्यातमोभागदेषेंपछें

सोहम्मीसाणेदेवाउहिणाकावतियंखेत्तंजांणंतीपासंती गो जहण्णेणंअंगुलस्सअसंखेज्जइभा

२९०

वाधतोरहेवीरअप्रज्ञाजगेंदेषेंअनेंऊंचोदेषेंतो पोतानाविमाननीचूलीकालगेंदेषइंइंम नीचुंदेषइंजोअसंख्यातादीपसमुद्रलग
पन्नवणानाअवधिपदथीइंजांणवुं इंदेषइं

गंउक्कोसेणंजावअहेरयणप्पभाएपुढवीउड्ढंजावसाइंविमाणाइंचूलियातिरियंजावअसंखे

इंमगाथाकहीछ इंमसौधर्मइशांननादेवतापहिलीप्रथ्वीनाचरमांतलगेंदेषइंसनतकुमारमाहेंद्रनादेवताबीजीप्रथ्वीनाच
इं रमांतलगेंदेषइं ब्रह्मलांतकनादेवताबीजीनाचरमांतलगेंदेषेंशुक्रसहस्रारनादेव

ज्जादीवसमुद्दाएवंसक्कासाणंपढमंदोच्चंचसणंकुमारमाहिंदातच्चंचबंभलंतगासुक्कस

ताचोथीप्रथ्वीनाचरमां आंनतप्राणतनादेवताअ पांचमीप्रथ्वीनाचरमांतलगइं तिमजवली आरणअच्युतना अवधि
तलगइंदेषइं १ वधिज्ञानेंकरी देषइं देवता ज्ञाने

हस्सारगंचउत्थि १आणयपाणयकप्पदेवापासंती पंचमंपुढवी तंचेवारणअच्चय नेही

करीछठीप्रथ्वीनाचर हेठलात्रिकनामध्यमत्रिकनादेवताअवधिज्ञानेंकरीसातमी त्रीकना पंचानुत्तरविमाननादेवतासंपूर्ण
मांतलगइंदेषइं २ प्रथ्वीलगइंदेषइं उपरात्रीजा लोकनलिचउदराजलोकप्रमाणलोक

लाछंणवासंती २ ग्गोविज्जहिट्ठिममज्झिम गेविज्जसत्तमंचउवरिल्ला संभिन्नलोगनालि पासंती

नालिदरीदेषेंसविमाननी सौधर्मइशांननादेवतानेंलावतकेतलासमुद्घातकह्या पांचसमुद्घातकह्या तेकेहा एकनो
चूलीकाविना ३ नगवंतकहे सांभलो हेगोतम वे

अणुत्तरोदेवा ३ सोहम्मीसाणेसुणंतेदेवाकइंसमुग्घाया पंगो पंचसमुग्घाइंपंगोतंवे

वेदनीसमुद्घा कषायसमुद्घातबी मरणसमुद्घातत्री वैक्रीयसमुद्घात पांचमोतेजससमुद्घात ५
त॰१ जो २ जो ३ ४

दनासमुग्घाय कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेसिसमुग्घाए:

किन्हानीलाका
उ तेउलेसाय
जवणव्यंतरी
याज्ञोइसोहम्मी
सामुणतेउप
लेसा मुकोपम्ना
१ कप्पेसणंकुं
मारमाहेंदेव
बंभलोगेयएए
नुपम्हलेस्सा
नेणपइं विं
शुकलेसा ३२

वैमानिकआंल
मंछान नागमसं
षजहस्तोहोइं
उवनाएपरिन
वानअवनोहो
इनोपद्धा ११

इम अच्युत लगें पांच ग्रैवेयक ए अनुत्तरविमान हे जी त्रणि समुद्घात करता सौधर्म इशानना देवता केहवी नगर सिरिजो
समुद्घात करी इ नपनि होय

एवं जाव अच्चुए गेविज्ज अणुत्तराणं आइल्ला तिण्णि समुग्घाया पं सोहम्मीसाणे देवा केरिसयं खु
गवता धका विचरइ छइ नहीं सूष नहीं तरसि एहवे निरामय थका इं क ष सातासोग चता विचरे छै सोजगइ कष सा
ओं जगइ अनुत्तर विमान नाइ

हपिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति गो णत्थि खुहपिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति जाव अणुत्तरो
विचरे छै एक हे गो सौधर्म इशान देवता सं एक रूप एक रूप विकुर्वइ कइ बहुत्व घणा रूप विकुर्वे गोतम एक रूप पृथुत्व

ववाइया सोहम्मीसाणे देवा किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए गो एगत्तं पि पहू
विकुर्वइ घणा रूप पिण पृथुत्व विकुर्वइ एहवे ते एक रूप विकुर्वता थका एकेंद्री ना रूप सांजगें पंचेंद्री ना रूप पृथ्वत इ

विउव्वित्तए पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए एगत्तं विउव्वेमाणा एगिंदियरूवं वा जाव पंचेंदियरूवं वा पु
पृथुत्व रूप विकुर्वता थका घणा एकेंद्री ना रूप सांजगें घणा पंचेंद्री ना रूप विकुर्वे ते संख्याता विकुर्वइ असंख्याता विकुर्वइ

हुत्तं विउव्वेमाणा एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा ताइं संखेज्जाइं पि असंखेज्जाइं पि
संबद्ध आत्म असंबद्ध इं प्रदेश सरखा स्वजाति मा असरिखा न जयाए हवा अनेक पदें पोताना मन ना कार्यनी पजावइ
प्रदेश युक्त थकी युक्त नही जिम वज्र दृष्टव्य ते दे रूप विकुर्वी करवा न इ

संबद्धाइं पि असंबद्धाइं पि सरिसाइं पि असरिसाइं पी विउव्वंति विउव्वित्ता अप्पणो जहिच्छाइं कज्जाइं क
२९८

इम अच्युत लगें विकुर्वणा क हवे नवग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान नै एक रूप विकुर्वइ तथा पृथुत्व घणा रूप विकुर्वइ हे गोतम
होइ

रेंति एवं जाव अच्चुए गेविज्ज अणुत्तरोववाइया किं एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए गो
न संपत्ता या रूप तवै कुवीरूप विकुर्वइ हीन सौधर्म इशान इंद्र नगव न देवता केहवी साता सुख ए आकार रूप सोग चता थका रे
विकुर्वी नही विकुर्वसइ नुही ३ वता घणा सुख भीया पणाइ

नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा ३ सोहम्मीसाणेणं भंते देवा केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणा
विचरइ हे गोतम मनोज्ञ शब्द जाव मनोज्ञ मनोज्ञ फरस संलीनो जाव ग्रैवेयक लगइ अनुत्तर विमान इं वज्र स्पर्श शब्द दिव्य विषै
छइ म शब्द लगी स्पर्श ना गवता विचरे छै यसो ग वता थका विचरइ छइ देवता सदा काल इ

विहरंति गो मणुण्णसद्दा जाव मणुण्णफासा जाव गेविज्जा अणुत्तरोववाइया अणुत्तरा सद्दा जाव फा
सौधर्म इशान ना देवता नइ परिवरणी कस्या छइ हे गोतम घणी ऋद्धि ना भोग युक्त सांलोंमो हयो महिमा एहवो वर्णे सोध
केहवी ऋद्धि करी धणी इ नपाछली परइ जाणवो सु

सा सोहम्मीसाणे देवा केरिसगा इड्ढीए पण्णत्ता गो महिड्ढीया महज्जुईया जाव महाणुभागा पण्णत्ता जा
तजगइ कहें नवग्रैवेय पांच अनुत्तर विमान सर्व मोह राम हर्षिक सांजोंम सर्व मोह योम ओंइ विलास जाग सेवइ पोताने गांमें सर्व इंद्र जीपर
वो हिमाछइ गइ इंद्र देवता नाम ना कस्या

व अच्चुए गेविज्ज अणुत्तरा य सव्वे महड्ढियं जाव सव्वे महाणुभावा अणिंदा जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा
अहोअमुलो अप्युं सौधर्म इशान देवता केहवा विलस विभूषा गारस्रगा वंतेक गोतम ते देवता नइ बेलेर एक वैक्रीय शरीर
षमंता नइ स्याछइ कह्या ते के ए १

पण्णत्ता समणाउसो सोहम्मीसाणेदेवा केरिसया विभूसाए पण्णत्ता गो दुविहा पं तं वेउव्वियसरी

MEMORIAL

एक अविकुर्वितशरीर तत्र अलंकारनी कहि छे जे वैक्रीयशरीर छइ ते हारमुकुटइं जोति वंत छइ जेहनो शोभाईदिसोदी
२ विराजमान छइं शरीर सेउद्योत
रीरायअविकुव्वियसरीराय तत्थणंजेतेविकुव्वियसरीरतेहारविराइयवच्छा जावदिसवि
अनुआसकरता प्रभाकरता छइं शोभाप्रतिरूपजोवायोग्य तिहांजे तेअवैक्रीय अलंकारनी तेआभरणवस्त्ररहितप्रक
छइ छइरूपजेहना कशरीरछइ तिस्वांनविभूषाछइस्व
सातेउज्जोवेमाणापभासेमाणा जावपडिरूवातत्थणं जेतेअविउव्वियसरीरयातेणंआभर
भावइ जविभूषणनी परइं मनोहररूपछइं तेणे अपधिवे हे देववांगनानी सौधर्म ईशानकल्पइं विषइं भगवन देवांगनाने केह
कोमूलगार केनही प्रश्नस्थले वीविभूषा शृंगारकहिया भगवंतकहे हे
णवसिणरहियापगतत्थाविभूसाएपण्णत्ता सोहम्मीसाणेसुणं भंते कप्पेदेवीओकेरिसाओविभ
गौतमदेवांगना बेसे तेकेहा एकतो वैक्रीशरी एकअवैक्रीशरी तिहांजेउत्तरवैक्रीयशरीर तेकेहवांआभरणोप
रकला रीर१ २२
साओ पं गो दुविहा पं तं वेउव्वियसरीरायअविउव्वियसरीराय तत्थणंजाओविउव्वियसरीरा
विधांननिघोषयुक्त आभरणछइं कनकवर्णविस्तरणीयुक्त वेश प्रवरवस्त्र प्रधान चंद्रमानी सरीखीमुखें चंद्रमानी परेंविलासक
नाकलाइ वस्त्रपहिर्यांछइं छइजेहनो रीयुक्तछइदेवांगना
यताओणं सुवण्णसद्दालाओ सुवण्णसद्दालाइं वत्थाइं पवरपरिहियाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चं
अर्धचंद्रमा नी सरिखानिलाड छइं जे देवांगनानो शृंगारइं करी चारुम नोसंगतिगति हसित मुखविकार लावन्यादयुक्तछइ
नोहर विशेष छइ जेहवा शोभाइं मन प्रसन्नकारी वैं शोभाप्रतिरूप जेहनें
दविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगयजावपासादीयाओजावपडिरूवा २७८

तो छइं रूपवती जोनवीती तिहां जेते अवैक्रीयक शरीरछइं ते आभरणवस्त्र एकस्वभावी कविन बीजे बाकतदेवलोके देवगनान
रूपवीना छइं शोभाइं विभूषा पाधि बीजांजेगैगैअनुसार
एतत्थणंजाओअविउव्वियसरीराओताओणं आभरणवसणरहियाओ पं सेसेसुदेवाणदेवीओण
लगइं कहें छे नवग्रैवेयकनादेवतानइं केहवी विभूषाक हे गौतम आभरणवस्त्ररहीत एकस्वभावी वैक्रीनी तिहां विभूषा छइं
हीछइं अनेरीं विभूषानथी
अ जावअच्चुएणेविज्जादेवाकेरिसयाविभूसाए पं गो आभरणवसणरहियाएतत्थविभू
इमपांचअनुत्तरविमानेंक सौधर्म ईशानना रे केहवा कामभोग भोगवइ देवता सदाकाल इं विचरंतिकहइ तांवि हेगौत
हेंवो वला नायका चरइंछइं म
साए पं एवंअणुत्तराविसोहम्मीसाणेदेवाकेरिसएकामभोगेपच्चणुब्भवमाणाविहरंति गो
इष्टशब्द इष्टरूप इष्टरस इष्टगंध इष्टफरस एपांचवंसेंदे इम शोभाइं नवग्रैवेयकपंचानुत्तरविमाननाइं देवतानइं अनुत्तर
भोगभोगवताविचरइंछइं अल्पकामंजइ इच्छादिक पूंछ
इट्ठासद्दाइट्ठारूवाइट्ठाजावफासा एवंजावगेविज्जाणुत्तरोववाइयाणंअणुत्तरास
विषयस्पर्शपर्यंत विषयस्पर्शपर्यंत भोग सौधर्म ईशानदेवलोकइं भगवन केतलाकालनीछि इमदेवतानी स्थितिकहें वीपलच
वताविचरइंछइं तिकहीछइं णना छिति प्रस्तीउपरूइं
द्दाजावअणुत्तराफासा सोहम्मीसाणेसुणं भंते केवतियंकालंठिती पं इमसव्वेसिंठिती

सौ	ई	स	मा	ब्र	लां	शु	स	आ	प्रा	आ	अ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५
ज. प	अधि	सा.ग २	२ऽ	७	१०	१४	१७	२०	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३१	३१	३१	३३
उ. सा. २	साग ३२	७	७	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३३	३३	३३	३३	३३

कीचिन्नू एगत्ताउ नमी विल्सान

तथा यंत्रनी उपे इंमदेवाणानानी स्थितिकहै चवीनइंजेजिहां उपजेतेतिम सर्वकहैं तोगर्भज तिर्यंचमनुष्यमां संख्याता वर्षायुउप
न्नाइ कहैंछे वीह वइंतिहांथी जेइमपन्नवणानिच्छइ पूर्वे कह्यो तपरिकहीइछे

सिंणाणियव्वा एवं देवीणवि अणंतरं चइयं चइत्ता ॥ जे जहिं गच्छंति ता सि तं भाणियव्वं सोहम्मी सा

तिमइहांसरवकहैं सोधर्मे सर्वत्रसर्वप्राणसर्वजी रेवलोकनां एधवीमांजावनस्पतीकायपणइ देवत्वपणे
इशांनदेवलोकइं वस्रवसत्व

णेसुणं भंते कप्पेसु सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देव

देवीप आसनसिंहासनपणइं सयापलं दिक उपगरणरीछयीवपणे भगवंत अनेकवार उपनापूर्व अथवा अनंतीवा
णे कादिपणइं जाणा चंम कुल लारकं कलवस्त्रादिमां उपना पूर्वे गोतम र उपना सर्व वार सिफिरता अनंती

त्ताए २ आसणसयणजाणभंडोवकरणत्ताए उववण्णपुव्वा हंता गोयमा असई अदुवा अणंतखुत्तो

वार उपना एतलो विस्तारसोधर्मईशांनदेवीपणइनथी उपना सौधर्मइशांनउपरइं तेदेवांनानंदी तेमाटे इमयेत्रे सर्वार्थसिद्धदेव
वेयकलगइं कहैं वारइमच्यार अनुत्तरविमारउपना तापणइं एकवा

सेसेसु कप्पेसु एवं चेव नवरं नो चेव णं देवत्ताए जाव गेवेज्जगा अणुत्तरोववाइएसु एवं नो चेव

र उपना बइं जे तिहां गया पछी मोक्ष सामान्यपणइं सवस्थितकायस्थितिकहइंछइं गोतम नारकीनेंभगवंन सव स्थितिथी
माइंतेमाटे एवं चारुगतिआश्री कही श्रीकेतला कालनी थिति जघन्य

णं देवत्ताए सेत्तं देवा ॥ नेरइयस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता गोयमा जहण्णेणं दसवाससह

दससहस्रवरसनी सवथितिकही रत्नप्रभाना पहिलापरंग त्रीससागरोपमनी थिति होइं सातमी नर्गना अप्रयठाणे एवं तिर्यंचवनइं भगवन
प्रतरनी अपेक्षाइं उत्कृष्टीतो नारकीनी सवस्थितिते णानगगावासानी अपेक्षाइं जाणवुं सवस्थितिकेतला काल नीकही

स्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं सव्वेसिं पुच्छा तिरिक्खजोणियाणं केवतियं का

हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी सवस्थिति कहइं उत्कृष्टी तिनइं देवकुरु क्षेत्रनी अपेक्षाइं इम मनुष्य
तोत्रणि पल्योपमनी सवस्थिति निंतिर्यंचनी परें देवतानुं नारकीनी

लं ठिती पण्णत्ता गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं एवं मणुस्साण वि देवाणं ज

परइं सवस्थितिक देवीइं मच्यार गतिनी जिम सवस्थितिक तिर्यंचयोनीयानी कायस्थिति जघन्य तो अंतर्मुहूर्त अनइं वलीव
हीति मसंचिठणा काज कहें छे उत्कृष्टी तो असंख्याता काल लगमी मनुष्यपणो पामी नस्पती

हा नेरइयाणं तहा भाणियव्वं ॥ सव्वे संचिट्ठ सव्वे संचिट्ठणा तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहु

मां उपजै इम असंख्यपुद्गलपरावर्त्त क्षेत्र थकी पुद्गलपरावर्त्त आवलीने असंख्यातमे भागसमैं एवं म पामी जेने अंतर कह्यो
नुष्य नें स्त्रगवनमनुष्य पणो मुक्तीने मनुष्यपणो केतले कालें जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनइं

त्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो मणुस्से णं भंते मणुस्से त्ति कालओ केवच्चिरं होति गोयमा जहण्णेणं अं

अनेरी गतिमां जइ मनुष्य तोत्रणि पल्योपम पूर्वकोडि पृथुक्त्व प्रमांण ते महाविदेहें सात भव मनुष्यना पूर्वकोडि वर्षनइं आ
पणो पामी उत्कृष्ट उठ्या विमेंत्तवें देवकुरु क्षेत्रइं उपजइं पछे मनुष्यनो भवमुकीनइं देवतामां वेस्त्रीयपणो उपजे

तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं ॥ नेरइयस्स णं भंते अंतरं कालओ केवच्चिरं हो-

एतलो अंतर कहिवे नारकीने मनुष्य नें देवताना अंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्त नो नारकी एवं तिर्यंचयोनिया नि आंतरो जघन्यतो अंतर्मुहूर्त
नें तंदुलमच्छपणो पामी अंतर्मुहूर्त्तनइं आंतरे नरकमां उपजइ × नेतलिमि अंतर्मुहूर्त्तलिमितिर्यंचमार ही ने वली पणो

त्ति गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो तिरिक्खजोणियस्स अंतरं जहण्णेणं

तिर्यंचपणो पामे उत्कृष्टो तो सागरोपम शत पृथुक्तनो आंतरो काइक अधि एतलो सवस्थिति कायस्थिति अंतर कह्यो एवं वह्न
कहोइ तिरियसय पृथक्त्व मसहियं तेतलो आंतरो होइं अवफ्तवकह्या तेतलो तेणनारकी तिर्यंच मनुष्य नें देव

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं ॥ एतेसि णं भंते नेरइयाणं जाव देवाणं

पामी उत्कृष्टो वनस्पतीनी परइं काज कहें छे

जिवाभिग
२८१

एहमांके हांकुहाथ की थोडाघणाकुइं भगवंत कहैं सर्वथी थोडा मनुष्य अतिसंख्यातगुणा कीदेवता असंख्यातगुणा पनरतानाम
वर्तिदेवता सिध मांलब्धे तेथकी नारकी असंख्यातगुणा अति तिजेनतां आका होर्द्द करुमीजोणवाते थकी तिर्यंच अनं
णयकयरे२ अप्पावा४ सव्वथोवा मणुस्सा नेरइया असंखिज्जगुणा देवा असंखिज्जगुणा तिरिक्खा अ
तगुणावतस्पतीना जीव भेदुं जेआगरे कडेसंसारसमापन्नजीव कह्या एतले हवई पांचभी प्रतिपत्ति कहेछइं तिहां जे ते कहतला
चौथी प्रतिपत्ति विमाने ते अधिकारे बीजो भेद सोसमाम घयो एतले इं चोथी आचार्य इम कहैं छइं पांच भेदे संसारसमापन्नजी
णंतगुणा से तं चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ३ तत्थ जे ते एवमाहंसु पंचविहा संसार
व कह्या छइं श्री वीतराग इं सविस्तर थकी ते इम कहे छइं जे पांच भेदे संसारसमापन्नजीव कह्या तिवारें ते भगवंत पांच
तेकीहा जाणवा भेद वर्णवई छइं
समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं एवमाहंसु
तेकिम एकेंद्री१ बेंद्री२ तेंद्री३ चउरेंद्री४ पंचेंद्री५ हवे एकेंद्रीना बे भेद कह्या ते केहा एकतो पर्याप्ता१
तं जहा एगिंदिया बेंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया से किं तं एगिंदिया दुविहा पं० तं० पज्ज
एकतो अपर्याप्ता२ इमजां लगे पंचेंद्रीना बि भेद कह्या पर्याप्ता१ अपर्याप्ता२ एहनाबि एकेंद्रीनइं भगवन केतला
सूत्र कहैं ता
त्तगा य अपज्जत्तगा य एवं जाव पंचिंदिया दुविहा पं० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एगिंदियस्स णं भंते
कालनी स्थिति कही जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टो तो बावीस सहस्र वरस एकें
गौतम द्रीपणे रही बेंद्री मांउपजीव लीए केंद्री मांउपजे बेंद्रीनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त छइं
केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं बेइंदि २८१

अनेरा त्तवमां तामी बेंद्रीपणें कांमइं अनइं उत्कृष्टो मुहूर्त उत्कृष्टी तो ओगणपचास दिननी स्थिति कइं
तो बार वरसनी स्थिति होइं इम तेंद्रीने जघन्य अंतर्मु चउरेंद्रीने जघन्य अंतर्मुहूर्त
यस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि एवं तेइंदियस्स एगूणपन्नराइंदिया
उत्कृष्टी तो छमासनी स्थिति होइं पंचेंद्रीने जघन्य तो अंतर्मुहूर्त नी स्थिति होइं उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपम पांचानुत्तर देव पंचें
द्रीनी जुवे छइं हवइं अपर्याप्तानी स्थिति कहे छइं
इं चउरिंदियस्स छम्मासा पंचिंदियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं अ
अपर्याप्ता एकेंद्रीनें भगवन केतला कालनी स्थिति क जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनी स्थिति उत्कृष्टी पिण अंतर्मुहूर्तनी स्थिति
हीबें तेक हो तिवारइं भगवंत कहैं हे गौतम स्थिति कहीबे स्थिति कइं
पज्जत्ता एगिंदियस्स णं भंते केवतियं कालं ठिती पं० गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतो
इमजां लगें बेंद्री तेंद्री चउरेंद्री पंचेंद्रीनी जघन्योत्कृ एकेंद्रीनइं भगवन केतली पर्याप्तानी कालनी स्थिति कहीबे ते कहो
ष्ट अंतर्मुहूर्तनी स्थिति होइं तिवारें भगवंत कहइं हे गौतम
मुहुत्तं एवं पंचिंदियाणवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं एगिंदियस्स णं भंते केवतियं पज्जत्ताकालं ठि
जघन्य अंतर्मुहूर्त पर्याप्तिनो उत्कृष्टी तो बावीस सहस्र वरस अंतर्मुहूर्त ऊणा एतली पर्याप्ताकालनी स्थिति अंतर्मुहूर्त ऊणा
काल कइं कइं इम उत्कृष्ट स्थिति पण
ई पन्नत्ता गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं एवं उक्को
नसरिखी स्थिति होइं सघलेंमा पापणा अ उघा मांथ की अंतर्मुहूर्त कहीहवे कायस्थिति कहें छइं एकेंद्रीनइं भगवननइं के
हूर्तइंकीइं जाइं एतलें अपर्याप्तिनी स्थिति द्रीपणो केतलइ कालें पामें भगवंत कहइं
सेण वि ठिई अंतोमुहुत्तूणा सव्वेसिं पज्जत्तगाणं कायव्वा एगिंदिए णं भंते एगिंदिएत्ति कालओ केव

हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टौ तो वनस्पती बेंद्रीनें लाग वनें बेंद्री पणो मुंकी केतले काले बेंद्री पणो पामइ
इ पामइ नो काल जाणवो जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त इ पामइ

जीवाभिग २८२ चिरं होति गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो बेइंदिएणं भंते जहण्णेणं अंतोमुहु

उत्कृष्टौ तो संख्याता सहस्र वरसे तेइंद्री संख्याता दिन चउरिंद्री पामइ पचेंद्री लाग वनें पचेंद्री पणो मुंकी केतले कालइ प
बेंद्री पणो पामइ जाव तेंद्री ते संख्याता मासे चउरिंद्री वलो चेंद्री पणो पामइ गौतम तिम जघन्य अंतर्मुहूर्त्तइ पामइ

त्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं जाव चउरिंदिए संचिट्ठं कालं पंचिंदिएणं भंते केवतियं जहण्णं अंतो

उत्कृष्टौ तो काइक अधिक सहस्र सागरो हवइ अपर्याप्ता नी स्थिति प्रश्न अपर्याप्ता एकेंद्री नइ लाग वनें काल थकी
पमे वली पाछो एकेंद्री पणो पामीइ केतला काल नी स्थिति होइ हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त

मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सहस्साइं सातिरेगं अपज्जत्तएगिंदिएणं भंते २ कालउ केवचिरं होइ गो० ज

स्थिति अपर्याप्ता उत्कृष्टौ पणि अपर्याप्ता एकेंद्री इम पचेंद्री अपर्याप्तानी स्थिति हवइ एकेंद्री पर्याप्ता नि पर्याप्ता नि प
र्याप्ता नी होइ ते अंतर्मुहूर्त्त नी स्थिति होइ अंतर्मुहूर्त्त नी हवइ ते काल थकी केतला का

हण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं जाव पंचिंदियाऽपज्जत्तगए पज्जत्तगएगिंदिएणं भं

ल नी स्थिति होइ लागवे जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त नी उत्कृष्टौ तो संख्याता बावीस सहस्र वरस नी उपरें काइ सकल्या
तकहे हे गौतम स्थिति होइ सहस्र वरस संख्याता सहस्र वरस इम बेंद्री

ते २ केवचिरं होइ गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं एवं

नी स्थिति विशेष एतलो जे संख्याता इम तेंद्री नइ संख्याता दिवस रात्री नी संख्या इम चउरिंद्री नी संख्याता मास नी स्थिति
कहेवी वरस कहीइ इम स्थिति जाणवी ओधो पणो कही

बेंदियवणवरं संखेज्जाइं वासाइं तेइंदिएणं संखेज्जाइं राइंदियाइं चउरिंदियाणं संखिमासा २८२

पंचेंद्री नइ सागरोवम सत पृथुक्त्व काइक अधिक एकेंद्री नें लाग वनें एकेंद्री पणो मुंकी एकेंद्री पणो केतलें कालइ
एतली स्थिति कही हवइ आंतरो कहइ छइ पामें तिवार इ लाग वतक छइ हे गौतम

पण्णत्ता पंचिंदिए सागरोवम सयपुहुत्तं सातिरेगं एगिंदियस्सणं भंते केवतीयं कालं अंतरं होइ

जघन्य अंतर्मुहूर्त्तइ लाग वपामी मुंकी अंतर्मुहूर्त्तइ आंतरो उत्कृष्टौ तो बइ सहस्र सागरोपम अ संख्याता वर्ष सहस्र अधिक
एकेंद्री थाइ किम एकेंद्री पणो एतलें कालइं वली एकेंद्री पणो पामें दो सागर सहस्र इति वचनात्

गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो सागरोवम सयसहस्साइं संखेज्जा वासमब्भहियाइं

हवइ बेंद्री बेंद्री पणो मुंकी वली बेंद्री पणो अंतर्मुहूर्त्त गति नें द्री थको आंतरें आ उत्कृष्टौ तो वनस्पती ना काल नी परि थि
केतलइ कालइ पामइ जघन्य तो तरइ वली पाछो बेंद्री पणो पामइ रीतइ पाछो बेंद्री पणो पामइ

बेइंदियस्सणं अंतरं कालउ केवचिरं होइ ज० हण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो

इम तेंद्री नें इम चउरिंद्री इम पचेंद्री नइ आंतरो अपर्याप्ता नो जा णीवरें जघन्य उत्कृष्टौ वनस्पती नो काल पर्याप्ता नें इम ज
इ नइ णवाइं मचेव निश्चइ पाछ पाछली परें जघन्य अंतर्मुहूर्त्त नुं आंतरुं जाणवुं अनइ

एवं तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदियस्स अपज्जत्तगाणं एवं चेव पज्जत्तगाणंवि एवं चेव एतेसिणं भंते

उत्कृष्टौ वनस्पती नी परें आंतरो कहइ हवइ अल्प बहुत्व कहइ छइ हे लाग वनें एकेंद्री हे गौतम सर्व थोडा पचेंद्री जे
नइ बेंद्री नइ संद्री नइ एह मांहि केहु थोडा घणा कुण सरिखा इ ४ हे गौतम न कोटाकोटि प्रमाण

एगिंदिय बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदियाणं कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ गो० सव्वथोवा पंचिंदिया

विशेषाधिक तेह थकी चउरिंद्री विशेषाधिक छइ तेह थकी तेंद्री त्रिणि कोटि प्रमाण तेह थकी बेंद्री विशेषाधिक छ प्रमाण
धिक त्र जतसंख्यय याजन कोडा वी विष्कंभ सूचि संख्यय योजन कोडी कोडि तेह थकी

चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया एगिंदिया अणंतगुणा एवं

विष्कंभ सूची
अंगुल प्रमाण
संख्याता
वर्ग मूल संख्यय
श्रेणि गत आ
काश प्रदेश प्र
देश राशि प्रमा
ण तेह थी ५५

एकेंद्रीअ वेतगु अतीनाकाळ हवें पर्याप्ताअपर्याप्तानो बीजो अल्पबहुत्व कहें छइ एहने भगवन पर्याप्ताअपर्याप्तामांहि
ण इ अपर्याप्ता पांचबोल कहें हार थकी थोडा घणा हुइ सर्वथोडा चउरंद्री पर्याप्ता तेथकी पंचेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक होइ
वलीपरे व नं वा

पज्जत्तगाण य एतेसिणं पज्जत्तापज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ सव्वथोवा चउरंदियापज्ज

सयुक्तिमिनाले वा थकी तेथकी तेथकी तेंद्री पर्याप्ता विशेषा पर्याप्ता विशेषाधिक जाणवा इहांस
चउरंद्री विशेषाधिक होइ धिक होइ तेथकी बेंद्री

त्तगा पंचेंदियापज्जत्तगा विसेसाहिया तेंदियापज्जत्तगा विसेसाहिया बेंदियापज्जत्तगा

विस्तारपणइ तेथकी एकेंद्री पर्याप्ता अनंतगुणा वनस्पतीकायना लेवा थकी सदाइ हवें जो अल्पबहुत्व कहें छइ ए
नता पामी एह वा अपर्याप्ता हनें पांचमां अपर्याप्ता केहा

विसेसाहिया एगिंदियपज्जत्तगा अणंतगुणा एतेसिणं अपज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४

हे गोतम सर्वथोडा पंचेंद्री अपर्याप्ता एक प्रतरने प्रमाणछइ तेथकी चउरंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक तेथकी तेंद्री अपर्याप्ता वि
तना अंगुलमात्र असंख्यातभागमात्र खंड अनूत प्रतर अंगुल असंख्यातभागखंड प्रमाण शेषाधिक अनूत रांगु

गो सव्वथोवा पंचेंदियाअपज्जत्तगा चउरंदीयापज्जत्तगा विसेसाहिया तेंदियअपज्जत्तगा

ल असंख्यातभागखंड बेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रतरांगु तेथकी एकेंद्री अपर्याप्ता अनंतगुणा अनंतापामइ
मात्र प्रमाण तेथकी ल असंख्यातभाग खंड मात्र प्रमाण छइ वनस्पतीकाय अपर्याप्ता सदाइ तेमाटें तेथकी

विसेसाहिया बेंदियापज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदियपज्जत्तगा अणंतगुणा सइंदियाप

सेंद्री निगोदि अपर्याप्ता विशे हवें सेंद्री निगोदनो थोडा अल्पबहुत्व कहें छें हार थकी थोडा घणा छइ सरिखा होइ विशे
षाधिक छइ एह भगवन सेंद्री पर्याप्ता अपर्याप्तामांहे षाधिक होइ ४ भगवंत कहें हे गोतम

ज्जत्तगा विसेसाहिया एतेसिणं सतेसइंदियाणं पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयरे २ अप्पावा ४

सर्वथी थोडा सेंद्री अपर्याप्ता छइ विइं ग्रहणनि पर्याप्ता असंख्यातगुणा छइ असंखि इम एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरंद्री पंचेंद्री सोक्षधीक
होइ तेमाटइ थोडा छइ तेथकी सेंद्री जगुणा इति वचनात् हेवा हवइ बेंद्रीयादि पंचेंद्री पर्याप्तानो पां

गो सव्वथोवा सइंदियाअपज्जत्तगा सइंदियपज्जत्तगा संखेज्जगुणा एवं एगिंदियावि एतेसिणं तेबे

च मोटा सेकें अल्पबहुत्व कहइ छइ भगवनबे हार थकी थोडा घ थी थोडा बेंद्री प तेथकी बेंद्री अपर्याप्ता असंख्यातगुणा
द्री तेंद्री चउरंद्री पंचेंद्री प्रसेकें २ एकेंद्री एहमांके णा होइ सर्व र्याप्ता होइ छइ

दियाणंपज्जत्तगापज्जत्तगाणय कयरे २ अप्पावा ४ गो सव्वथोवा बेंदियापज्जत्तगा अपज्जत्तगा

इम तेंद्री कहेंवा चउरंद्री कहेंवा पंचेंद्री कहेंवा हवइ सोको अल्पबहुत्व मिष्ट सर्वनोक नइ एगिंदियाणं बेंद्रीन तेंद्रीन
हइ छइ भगवन सेंद्री इ इ

संखेज्जगुणा एवं तेंदियाचउरंदियापंचेंदियावि एएसिणं सतेसइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदि

चउरंद्रीनइ ४ पंचेंद्रीनइ ५ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ मांहे केहा थकी बार बोले करी थोडा सर्वथोडा चउरंद्री पर्याप्ता होइ
घणा छइ सरिखा होइ विशेषाधिक छइ ४

याणं तेंदियाणं चउरंदियाणं पंचेंदियाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणय कयरे २ अप्पावा ४ गो सव्व

तेथकी पंचेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक होइ २ तेथकी बेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक होइ तेथकी तेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक छइ

थोवा चउरंदियापज्जत्तगा पंचेंदियापज्जत्तगा विसेसाहिया बेंदियपज्जत्तगा विसेसाहियाते

इ ४ तेथकी चउरंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक छइ ५ तेथकी तेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक होइ ६

दियापज्जत्तगा विसेसाहिया ४ चउरंदियापज्जत्तगा विसेसाहिया ५ तेंदियअपज्जत्तगा विसे

तेथकी बेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक कह्यइं ७ तेथकी पंचेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक समु छिमना ८ तेथकी एकेंद्री

साहिया ६ बेंदियाअपज्जत्ता विसेसाहिया ७ पंचेंदियाअपज्जत्ता विसेसाहिया ८ एगिंदिया

अपर्याप्ता अनंतगुणा ९ ॥ तेथकी निगोदि अपर्याप्ता विशेषाधिकः १० तेथकी एकेंद्री असंख्यातगुणा अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे ११

अपज्जत्ता अनंतगुणा १० संइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया १० एगिंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा ११

तेथकी निगोदि पर्याप्ता विशेषाधिक कहइं. एतलेते पांचे भेदे संसारी जीव कह्या बइं. पंचविह इति पांच प्रकारे प्रतिपत्ति परि. हवे छट्ठी प्रतिपत्ति कहेछेः एहनी नावनो सर्वथा छजीव रे पाठी अमासः ५

संइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया से तं पंचविहा संसारसमावण्णा पंचविहा पडिवत्ती सम्मत्ता त

तिहांजे ते केतला एक आचार्य ईम कहे छे बइं छ भेदे संसा कहाते ते कहे छे पृथ्वीकाय १ अप २ तेउ ३ वाउ रसमापन्निजीव कह्या छे ते ईम कहे छे

त्थणं जे ते एवमाहंसु छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पं तं एवमाहंसु तं पुढविकाइया तेउ

४ वनस्पति ५ त्रस ६ हवे पृथ्वीकायना बे भेद कह्या छे ते कहे छे सूक्ष्मपृथ्वीकाय १ बादर

वाउवणस्सईकाइया तसकाइया से किं तं पुढविकाइया दुविहा पं तं सुहुमपुढविकाइ

पृथ्वीकाय २ ते सूक्ष्म पृथ्वीकायना बे भेद कह्या छे ते कहे छे पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ ईम बादर पृथ्वीकायने जाणवा ईम सूक्ष्म बादर अपर्याप्ता ३ ईम सूक्ष्म

आ सुहुमपुढवी दुविहा पं तं पज्जत्तगा इ अपज्जत्तगा इ एवं बायरपुढवीकाइयावि एवं २८४

म अपर्याप्ता अप तेउ २ वाय ३ वानस्पति ४ ए सोल भेद सूत्रे करी जाणवा हवे त्रसकायना बे भेद कह्या छे एकजी ते कहे छे

चउक्कएणं नायव्वा आउतेउवाउवणस्सइकाइयाणायव्वा से किं तं तसकाइया दुविहा पं तं

पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ हवे ते वस्थी ति काय स्थिति कहीइं बइं पृथ्वीकाईयाने भगवन केतला कालनी स्थिति कहीबइं तिवारे श्री कहे छे बइं गौ ० म ० हे जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति

पज्जत्ताणाय अपज्जत्ताणाय पुढविकाइयस्स णं भंते केवइयं कालं ठिती पंगो जहण्णेणं अं

हूर्त्त कह्यइं. उत्कृष्टो बावीस सहस्र वरसनी स्थिति कह्इं. ईम सर्वनी स्थिति अपकाईया वाउकायने दस त्रिणमी स्थिति कह्यें सात सहस्र वरसनी स्थिति छे ते कउकायने त्रण सहस्र वर्षनी स्थितिः वनस्पतीनी इ त्रसकायने जघन्य अंतर्मु

तो मुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं एवं सव्वेसिं ठिती नेयव्वा तसकाइयस्स जहन्ने

हूर्त्तनी स्थिति कह्ये उत्कृष्टो तेत्रीस ३३ सागरोपमनी स्थिति कही छे देव नारकी नी कह्ये छे हवे अपर्याप्तानी स्थिति छे अपर्याप्ताः जघन्य उत्कृष्टो ए णे अं सर्वनी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति

णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अपज्जत्तगाणं सव्वेसिं जहण्णेणं वि उक्कोसे णं

कहे छे पर्याप्ता सर्वनी उत्कृष्टी स्थिति मांथकी अंतर्मुहूर्त्त न्यून करी स्थिति कहीइं ईम सघलइं कहे छे हवे काय स्थिति कहे छे बइं पृथ्वीकाय पणे केतलो काल रहइं बइं

वि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगाणं सव्वेसिं उक्कोसिया ठिई अंतोमुहुत्तूणा कायकाउ पुढवीकाइयस्स का

आगवंतजी कहइं बइं हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त लगे अनेरा उत्कृष्टो असंख्यातो काल अवसर्पिणी उत्सर्पिणी रूप तिवारे इतली पृथ्वी मांहे आवे सर्वलोक कालइं कहइं क्षेत्र थकी असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश

लं तं केवच्चिरं होइ गो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखिज्जकालं जाव असंखिज्जालोया

आउप्रमाणछइ ईमयालोग तेउसकाईयानेः वाउकायनें अंगुलअसंख्यातिभागनाजेतलाआकासप्रदेश तिकहेवुं वनस्पतीकायनें अनंतुकालजाविसबद्धकी सारकूकलप्रमाणपरावर्त्तकंयउ

एवंजावतेउक्काइयाणंवाउकाइयाणंवणस्सइकाइयाणंअणंतकालंजावआवलीयाए ।

त्रसकायनइं जघन्यअंतर्मुहूर्त्तकाईस्थितिरहइं उत्कृष्टतोबेसहस्रसागरोपमनीथितिरहैअसंख्यातिवर्षअधिक एतलीकायस्थिति छइः

जावअसंखिज्जसागरतस्सकाईएणंभंतेउहन्नेणंअंतोमुहुत्तंउक्कोसेणंदोसागरोवमसाहस्स

अपर्याप्ताछतेदेवानाजीवनइंजघन्यपणेउत्कृष्टपणेअंतर्मुहूर्त्तनीकायस्थितिरहैपछेपर्याप्तामाप्रति [illegible] य सहसवर्ष नइं संख्या तोसर्वपर्याप्तास

सीउं असंखजावसमत्थहियाइंअपज्जत्तगाणंजहन्नेणंवितउक्कोसेणंवित्रअंतोमुहुत्त

सनीकायस्थितिपृथवीनीऊदकनेंवायनेंवनस्पतिनेंपर्याप्तानीसंख्याता०स०८ तेजसकायनइंसंख्यातदिवसनीथिति सहेसपरसनीथितिछइः २२।७।३ [illegible] नीजुवेछइः छइः त्रसकायनइं

संसंख्यातोवाससहस्साइं संखेजपुढविद्गावायवणस्सतीतेउराइंसंखा तेससागारस

सागरसतपृथुकनीथितिछयें एसर्वप [illegible] पर्याप्तानीथितिकहीछइ [illegible] कालनुअंतरकुंहोइं तिवारेप्रश्नकरेछे हेगौतम

यपत्तगाणियापज्जत्तगाणंविसविसेसं एवंपुढविकाइयस्सणंभंतेकेवतियंकालंअंतरंहोः

जघन्यतोअंतर्मुहूर्त्तनेंअंतरें उत्कृष्टउवनस्पतीनीपरइंअनंते ईहांअपतेकवाकननईईमजअंतरोजांणवोवनस्पतीकायनेंजिमपृथवीनीकायस्थितिकहीछै [illegible] कालेनइंअंतरेंपृथवीकायपणइं [illegible] उपजइंछइ

इ गो जहन्नेणंअंतोमुहुत्तंउक्कोसेणंवणस्सइकालोजाववाउकायस्सणंवणस्सइकायस्सपुढ

तेवनस्पतीनुंअंतरूंजांणवुंई [illegible] अपर्याप्तानुंअंतरुंपणवनस्पतीनीपरेंअनंतकालछईसपर्याप्तावनस्पतीनइंपृथवीनुंकालजांणवुं असंख्यातोकालअसंख्यातीउत्सर्पिणीअवसर्पिणी

विकायकालोएवंअजत्तगाणंविवणस्सइकालोवणस्सतीणंपुढवीकालोपज्जत्तगाणविएवं ।

पेत्रथी सर्वथीअसंख्यातलोकाकाशप्रदेसप्रमाणछइं [illegible] तेथकीतेजसकायअसंख्यातगुणलोकाकाशप्रदेशप्रमाणतेथकीअप [illegible] सर्वथोडात्रसकायबेइंद्रीयादि

वेविअपीबद्धंसविथोवा२ तस्सकाईयातेउकाइयाअसंखेज्जपुढविकायायाविसेसाहिया आउ

कायविशेषाधिकप्रमाण प्रदेशप्रमाणतेथकीवाउका [illegible] लोकाकाशप्रदेसप्रमाणछइंतेथकीव [illegible] अपर्याप्तानुंबी [illegible] संख्यातलोकाकास यविशेषाधिकअनंतगुणा [illegible] नस्पतीकायअनंतेगुणीअनंतीछइ हवें

काइयाविसेसाहिया वाउकाइयाविसेसाहिया वणस्सइकाइयाअणंतगुणा एवंअपजत्तगा

[illegible] पृथवीकायनइंपर्याप्तानेंअपर्याप्तानें [illegible] सर्वथोडापृथवीकायनइंअप [illegible] थोडाघणाछइं तिवारेंजगवंतकहेछइः गो तम यप्ता

विएतेसिणंपुढविकाइयाणंपजत्तिगाणंअपज्जत्तगाणंकयरे२हिंतोअप्पावाबहु गो सव्वथोवापुढ

वियहुणतिराणीइंतुहितेमाटइं तेथ सर्वथोडाअपकायअपर्याप्ताछइंतेथकीपर्याप्ताअसंख्यातगुणा हेगौतम कीपर्याप्ताअसंख्यातगुणाछै यावनस्पतीईमज सर्वथोडा

वकाइयाअपजत्तगाअसंखिज्जगुणं सव्वथोवाआउकाईयाअपजत्तगाणेकयरे२अप्पावाबहु

सर्वथोडात्रसकायप तेथकीअपर्याप्ता२त्रसकायअसंख्यातगुणाकारणपाछलीपरेंतेथकीतेजसकाय२ [illegible] अपर्याप्ताअसं [illegible] ख्यातगुणा ३ र्याप्ताछइ

गो सवथोवापुढविकाइयाअपजत्तगाअसंखेज्जगुणं सव्वथोवाआउकाईयाअपजत्तगाअ

त्रसकायपर्याप्तानेंथकीअपर्याप्ताअसंख्यातगुणा [illegible] कहेछइ [illegible] पर्याप्ता

पअपजत्तगाअसंखिज्जगुणाजाववणस्सईकाईयासव्वथोवातस्सकाईयापजत्ताअपजत्तगाअसंखेज्जगु

तेकलेकेआउकोसणकेवं अनंतगुणा इति ३२
णाएतेसिणंतेपुढविकाइयापजत्तगाण

तेथकी पृथ्वीकाय ४ अपकाय ५ वाउकाय ६ ॥

पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा जाव वणस्सइकाइया सव्वथोवा तसकाइया पज्जत्ता अपज्जत्तगा असं

खिज्जगुणा एएसिं णं भंते पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं य कयरे २ अप्पा वा ४ गो० सव्वथोवा त

पर्याप्ता विशेषाधिक छइ तेजसकाय पर्या

सकाइया पज्जत्तगा १ अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २ तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ३

प्ता असंख्यातगुणा छइ ७ ॥ पृथ्वी ८ अप ९

पुढविकाइया ४ आउ ५ वाउ ६ पज्जत्तगा विसेसाहिया तेउ पज्जत्ता संखिज्जगुणा पुढवि ८ आउ ९

वाऊ पर्याप्ता विशेषाधिक १० तेथकी वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनंतगुणा ११ त्रसकाय अपर्याप्ता विशेषाधिक छइ

वाउ विसेसाहिया १० वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा ११ सकाइया अपज्जत्ता विसेसा

१२॥ तेथकी वनस्पतीकाई पर्याप्ता असंख्यातगुणा १३ तेथकी त्रसकाय पर्याप्ता विशेषाधिक छइ १४

हिया १२ वणस्सइकाइया पज्जत्ता असंखिज्जगुणा १३ सकाइया पज्जत्ता विसेसाहिया १४ सुहु

हवे सूक्ष्मनुं सामान्यपणइं निगोद रू पनेहने हे गोतम जघन्यतो अंतमुहूर्त्तनी थिति छइ उत्कृष्टइं पणि अंतमुहूर्त्तनी थिति छइ ईम जो सूक्ष्म मनिगोदनि सूक्ष्म

हुमस्स णं भंते केवतियं कालं ठिई पं० गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं एवं जाव

म पृथ्वी अप तेऊ वाऊ वनस्पतीने ईम अपर्याप्ताने ईम पर्याप्ताने जघन्यपणे उत्कृष्टपणे अंतर्मुहूर्त्तनी थितिक थे हवे कायस्थिति कहे छे सूक्ष्म मने भगवन्

सुहुमनिगोयस्स एवं पज्जत्तगाण वि अपज्जत्ताण वि जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं सुहुमे णं

सूक्ष्मपणि निगोदरूपनें तेहनें केतला कालनी थिति छइ गोतम ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी कायस्थिति छइ उत्कृष्टइं तो असंख्याता कालनी थिति छइ असंख्याती उत्सर्पणी अवसर्पणी काल होइ

भंते सुहुमेत्ति कालाओ केवचिरं होइ गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव

यां क्षेत्रथकी असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण पृथ्वीनुं ईम सूक्ष्म मनि सघलानुं कहेवुं जालगे सूक्ष्म मनिगोदनइं पृथ्वीनु का उ कहेवुं जघन्यपणे

असंखेज्जा लोया सव्वेसिं पुढविकाइयो जाव सुहुमनिओयस्स पुढविकाइओ अपज्जत्तगाणं सव्वेसिं

अपर्याप्ता निगोद सर्वनें उत्कृष्टपणे करी अंतर्मुहूर्त्तनी थिति छइ ये ईम पर्याप्ता सर्वनइं पणि जघन्यपणे उत्कृष्टपणे अंतर्मुहूर्त्तनी थिति कहेवी हवे सूक्ष्म मनें भगवन् सूक्ष्म मपणे

जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं एवं पज्जत्तगाण वि सव्वेसिं जहण्णेणं वि अंतोमुहुत्तं

केतले काल अंतर सूक्ष्मपणे पामइ हे गोतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त बादरपणुं पामी वली सूक्ष्मपणे पामे उत्कृष्टो तो असंख्याता कालनो अंतरो कहिउ जाव कालथकी

सुहुमस्स णं भंते केवतियं कालं अंतरं होइ गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं

असंख्यातीअवसर्पिणीउत्सर्पिणीकालनो तेतला लोकाकाशप्रदेशप्रतिसमयेंअपहरे इम सूक्ष्म वनस्पतीका
आंतरोकह्यो केतला कालनो असंख्या तइं असंख्यातकालनो होइ यतइं इम जिहां

जावअसंखेज्जाओउस्सप्पिणीओसप्पिणीओकालओखेत्तओअंगुलस्सअसंखेज्जइभागोएवंसुहम

लगइ इम सूक्ष्म निगोदने विषइं इम आंगुलनी असंख्याती भागें जेतलासमय काइक अधिक वनस्पतीना
जिहां लगइ तेतला पुद्गलपरावर्तनो आंतरो होइ पृथवी कालनो आंतरो होइ

वणस्सइकाइयस्सवि सुहमनिगोयस्सवि जावअसंखेज्जइभागो पुढविकाइयाईणं वणस्सइकालो

इम अपर्याप्तानइं पर्याप्तानइं जिम इम सूक्ष्मनो अल्पबहुत्व थोडा तेउकाय तेथकी सूक्ष्म पृथवीकाय विशेषाधिक
जाणवो कहवो थइं

एवं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं वि एवं अप्पाबहुगं सव्वत्थोवा सुहमतेउकाइया सुहमपुढविका

कइं लोकाकाशप्रदेश तेथकी अपकाय वाउकाय सूक्ष्म निगोद असंख्या तेथकी सूक्ष्म वनस्पतीकाय अनंत
विशेषाधिक कहइं तेथकी तगुणा होइ गुणा थइं निगोदथकी स्वभाव

इयाविसेसाहियाआउवाऊविसेसाहियासुहमनिगोयाअसंखेज्जगुणासुहमवणस्सइका-

इ तेथकी सामान्य सूक्ष्म विशेषें अपर्याप्ता विशेषाधिक कहवे जे पर्याप्ता अप एहमांकेहा थकी थोडा घणा सरि
कसूक्ष्म आदि घालतइं इम अपर्याप्तानइं इम जकहें पर्याप्तानो अल्पबहुत्व कि विशेषाधिक कीहा जाणवा ४

इयाअणंतगुणा एवंअपज्जत्तगाणवि एवं चेव एएसिणं भंते सुहमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे

भगवंत कहइं सर्वथी थोडा सूक्ष्म अपर्या तेथकी सूक्ष्म पर्याप्ता असं तेथकी सूक्ष्म वनस्पतीकाय अनंतगुणा इ
णे सम्म ता होइ ख्यातगुणा जाणवा म पर्याप्तानी परइं सूक्ष्मनिगोद विशेषाधि

२ अप्पाबहुगं सव्वथोवासुहुमा अपज्जत्तगा सोहमा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा एवं जाव सुहम

दै बइं एहने सामान्य सूक्ष्म नइं
पर्याप्ता अपर्या

ककहीइं इम जाव थकी सूक्ष्म अपकाय वाउका तेथकी सूक्ष्म निगोद असंख्यात तेथकी सूक्ष्म वनस्पतीकाय अनंतगु
तने य विशेषाधिक होइ गुणी जाणवी णी जाणवी सविस्तर थकी

निगोयाविसेसाहिया आउवाऊविसेसाहिया सोहमनिगोयाअसंखेज्जगुणा सोहमवणस्स

इम पर्याप्तानी परइं निश्चइं कहीनइं इहां यातिनो त्रीजो अल्प एहनइं सामान्य सूक्ष्म पृथवीकाय सूक्ष्म अपकायनइं
जाणवुं एवइ समुदा बहुत्व कहें छइं सूक्ष्म तेउकायनइं सूक्ष्म वाउकायनइं सूक्ष्म वन

काइयाअणंतगुणा एवं पज्जत्तगाणं वि एवं चेव एएसिणं भंते सुहमाणं सुहमपुढविकाइया

स्पतीकायनैं सूक्ष्म पर्याप्तानइं एहमां केहा थकी थोडा घणा सरिखा विशेषाधिक कहोइं ४ सर्वथी थोडा सूक्ष्म तेउकायपर्या
म निगोदनइं पर्याप्तानइं अ एवा रे बोल करीनें तेकहो हेगौतम प्ताइं एहना कारणथी

णंजावसुहमनिगोयाणपज्जत्ताणयअपज्जत्ताणयकयरे२ अप्पाबाहुगं सव्वथोवासुहु

वलीपरइं जाणवा १ तेथकी सूक्ष्म पृथवीकायपर्याप्ता विशेषाधि इम सूक्ष्म अपकाय अपर्याप्ता विशेषाधिक
कबइं २ बइं ३

मतेउकाइयापज्जत्तासुहमपुढविकाइयापज्जत्तगाविसेसाहियासुहमआउअपज्जत्ताविसे

इम वाउ अपर्याप्ता विशेषाधिक तेथकी सूक्ष्म तेउकाय असंख्यातगुणा होइ ५ इम सूक्ष्म पृथवी ६ अप ७
बइं ४

साहियावाउअपज्जत्ताविसेसाहियासोहमतेउकाइयाअपज्जत्तासंखेज्जगुणासुहुमपुढ

वाउ ८ विशेषाधिक होइ तेथकी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगु तेथकी सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता असंख्यात
णा कहइं ९ गुणा बइं १०

विआउवाउविसेसाहियासुहमनिगोयअपज्जत्तगाअसंखेज्जगुणासुहुमनिगोयापज्जत्तगाअ

जीवाभिग
२६६

तेथकी सूष्म वनस्पती काय अपर्याप्ता अनंतगुणा प्रतिज सूष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतिकाय पर्याप्ता असं
निगोदिया अनंता जीव भणी अनंतगुणा ११ तेथकी होइ १२ तेथकी सूष्म व ष्यातगुणा सूष्म पृथ्वी

संखेज्जगुणा सोहमवणस्सइ काइया पज्जत्तगा अणंतगुणा सुहुमअपज्जत्तविसेसाहिया सुहुमवणस्सइ

काइया तिहांघाल थकी सूष्म पर्याप्ता विशेषाधिक हवि बादरत्रस आश्री स्थिति बादरनइ तणावन
तेथकी १३ ते थकी सूष्म अपर्याप्ता थकी पर्या केतला कालनी थिति कही ते कहे छे गौतम

पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सोहमपज्जत्तगा विसेसाहिया बादरसणं भंते केवतियं कालं ठिइ पं

जघन्य अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति दोय त्रीस सागरोपमनी बादरत्रस कायनी अपेक्षा वइ विशेषाधिक कहे छे वइ
बादरत्रस आश्री उत्कृष्ट स्थिति होइ देव नारकी इ ए सोमास कही बइ इमइ इम बादरत्रस कायनै जोणवु

गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं ठिती पं एवं बायरतसकाइयस्स

बादर पृथ्वी कायनै जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो बावीस सहस वरसनी थिति इम बादर तेऊ काय नै त्रणि दीवसनी
होइ बादर अपकाय नै सात ७ सहस्र वरसनी स्थिति होइ थिति होइ बादर वाऊ कायनै त्रण

वि बायर पुढवि काय स्स वि बायर आउस्स सत्त वास सहस्सा बायर तेउस्स तिन्नि राइंदियाइं

सहस्र वरसनी थिति होइ बादर वनस्पतिनी दस सहस्र वरसनी स्थिति होइ इम प्रत्येक शरीरी बादर
र वनस्पती कायनइ

बायर वाउस्स तिन्नि वास सहस्साइं बायर वणस्सइ दसवाससहस्साइं एवं पत्तेयसरीर बादि

द सहस वरसनी अपर्याप्ता निगोदनि जघन्य पणइ उत्कृष्ट पणइ इम बादर निगोद मइ अपर्याप्तानइ
थिति होइ ॥ साम अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति होइ

यरनिओयस्स जहन्नेणं वि उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं एवं बायरनिओयस्स वि अपज्जत्तगाण

२६६

सर्वनइ अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइ पर्याप्तानइ उत्कृष्टी थिति अंतर्मुहूर्त्तनी कहेवी अं हवै सर्वनइ काय स्थि
तर्मुहूर्त्त काढी सर्व्व पर्याप्तानी स्थिति लेषवीइ ति कहे छे सर्व बा

वि सव्वेसिं अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगाणं उक्कोसं या ठिती अंतोमुहुत्तूणा कायट्ठिई सव्वेसिं बायरणं

दरनइ त्रण वनका लथकी केतलो जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइ उत्कृष्ट पणौ तो असंख्याता काल जवी
काल काय स्थिति पणै रहइ कायस्थिति रहै काल थकी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

भंते बायरत्ति कालओ केवचिरं होति जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं

काल काय स्थिति रहइ क्षेत्र थकी आंगुलनइ असंख्यातमइ निर्लेपपणइ बादर पृथ्वी काय बादर अप
भागनइ प्रमाण इ समय अपहराइ ते प्रमाण समय काय

असंखिज्जाइं उस्सप्पिणि ओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जइभागो बायरपु

वाउकाय तेउकाय प्रत्येक सरीरी बादरवनस्पती कायनै बादरनिगोदनइ एहनइ काय स्थिति जघन्य

ढवीकाइया आउ वाउ तेउ पत्तेय सरीर बायरवणस्सइ काइयं सी बायरनिओयस्स य

अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइ उत्कृष्टी तो सत्तर सागरोपमनी स्थिति होइ कोटाकोटि संख्याता समय प्रमाण क्षेत्र थकी आंगुल
नइ अ संख्या

एतेसिं णं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवम कोडाकोडीओ संखाइयाओ

तमै भागइं तिम ज असंख्याता उत्सर्पिणी बादर उत्कृष्ट अनु बंधइ ते थकी कहतां वो छे उत्सर्पिणी अवसर्पिणी
लोकाकाश प्रमाण कहतां कह्यु काल

समा अंगुल असंखभागे तहा असंखेज्जाओ हेयबायरतस अणुबंधेसे समत्थो वं अवसप्पिणी

सासंख्यातगुणा
कहइ जे अप
र्याप्ता विशेषाधि
क अपर्याप्ता अ
संख्यातगुणा
जो अपर्याप्ता तेथ
की सामान्य सू
ष्म पर्याप्ता वि
शेषाधिक सूष्म
नथी आश्री पो
तनो हे कालनो
२४

जीवाभिग
२८७

अद्धोधुकृत्यपल्योपमप्रमाण । बइसहेंससागरोपमनीखलुनिश्चैंकाइक अंतर्मुहूर्त्तनोकाल अपर्याप्तासर्व
स्थितिकही अधिककहइ त्रसकायनइं होइ.

स्सअद्धछ्ठापोग्गलंपरियट्टादोन्नदहसहस्सारवलुसहस्साऊंतीतसकाए अंतोमुहुत्तंकाले

नोकालहोइं पर्याप्ताबादरत्रसकायएहनीस्थिति सागरोपमशतपृथुक्त्वप्रमाणकाइंकअधिकहोइं तेज

होइअपज्जत्तगाणंसव्वेसीपज्जत्तबायरतसकाइयस्सचिएतेसंठितीसागरोवमसहस्सा

स्कायनेंसंख्यातादिवसनिस्थितिहोइं बइसेदेनिगोदमाहइं सबधाकतासर्वनइंसंख्यातासहस्सवरषनीस्थितिहोइं.
अंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिहोइं

यरणंतेतस्ससंखेज्जरायेंदीयाउविहाणितुएमऊंतेएससाणंसंखिज्जावाससहस्सा

सर्वपर्याप्तानइं अंतरोहोइं बादरवनस्पतीनइं निगोदनइं बादरनिगोदनइं सां असंख्यातालोका

उसव्वेसिंपज्जत्तगाणंअंतरबायरवणस्सइस्सनिगोयस्सबायरनिगोयस्सजावअसं

काशप्रदेशाऊइं थाकतासर्वनइंवनस्प इंमपर्याप्तानइं अंतरोहोइं बादरनइंजघइं बादरस्थूनइं
तीनोकालहोइं

खेज्जालोयासेसाणंवणस्सईकालो एवंपज्जत्तगाणंवि अंतरं जहेयबायरजहेयबा

उत्सर्पिणीअसंख्यातप्रमा बादरनिगोदनइंअसंख्याताकाल थाकतासर्ववनस्पतीनोकायएलो हवेबादरनोअ
णहोइं नोहोइंअंतरोसेष अंतरोजाणवो अल्पबहुत्वकहे

यरतंतसप्पिणीउस्सयबायरनिगोयकालमसंखेज्जंतरांसेसाणंवणस्सईकालोअप्पाब २८७

DABHAU DAJI MEMORIAL

इंबइं सर्वथीथोडाबादरत्रसकाइयाहोइं तेथकीबादरअसंख्यातगुणागुणामनुष्यलोकमांपामीतेमाटइंतेथ
कीप्रत्येकबादरवनस्पतीकाय

हूससव्वथोवाबायरतसकाइयाबायरतेउकाइयाअसंखेज्जगुणापत्तेयसरीरबा

असंख्यातगुणा तेथकीबादरनिगोदीअसंख्या तेथकीबादरपृथवीकायअसंख्यातगुणातेथकीबादरनेसंख्या
तगुणा तगुणाहोइं

दरवणस्सइअसंखेज्जगुणाबायरनिगोयसंपेबायरपुढविअसंखेज्जाउवाउअसंखि

तेथकीबादरवनस्पतीकाय असंख्यानंतगुणाबइं बादरनिगोदतेरलतांतेथकी इंमपर्याप्ताजोवोथोडाल्पबहु
सर्वविशेषाधिकहोइं त्वकहैबइं

ज्जगुणाबायरवणस्सईकाईयाअणंतगुणाबायरविसेसाहिया एवंअपज्जत्तगाण

सर्वथीथोडाबादरतेजस्काइयाऊइंतेथकीबादरत्रसकाईयाअसंख्यातगुणाहोइ तेथकीप्रत्येकसरीरीबा
दरअसंख्यातऊइं

यपज्जत्तगाणंसव्वथोवाबायरतेउकाईयाबायरत्रसकाईयाअसंखिज्जगुणापत्तेय

सेषथाकतासर्वनिमजया जोबादरविशेषाधि हविपांचमोअल्पबहुत्वकहेबइंएहनइंसागवनबा
कहोइं दरपर्याप्ता

सरीरबायरअसंखिज्जगुणासेसंतहेवजावबादरविसेसाहिया एतेसिणंभंतेबायरा

अपर्याप्तानेएहमांकेहा२ गोतम सर्वथीथोडाबादरपर्याप्ताहोइंतेथकीबादरअपर्याप्ताअसंख्यातगुणाहू
थोडाघणाहूइं सारवलकहे इं एकेकीपर्याप्तानीनेश्राइंअसंख्याता

णंपज्जत्तापज्जत्तगाणंकयरे२ गो सव्वथोवाबायरापज्जत्तगाबायराअपज्जत्तगाअसंखिज्ज

भिवतिग २५७

बादरअपर्याप्ताअपजत्ता ईमसर्वथी बादरत्रसकायना जीव कहेवा बेउ अल्प अनंतवन बादरपृथ्वीकायअपा
धिकमती बहुतकहेवाई एहने जीबादरत्रसकाय

गुणा एवं समे विजाव बायरा तसकाईआ एएसि णं भंते बायराणं बायरपुढविकाइयाणं जा

नेपर्याप्ताअपर्याप्तानकेला २ थकी कहाअल्पजीवोछा घ ६ सर्वथी थोडा बादरकायअजापत्ता बहते
णा ऊंयबइ अनवंतकहेबइ मोतम थकीतो

व बायरतसकाईआण य पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ गो सव्वथोवा बायरतेउकाइया पज्ज

बादरत्रसकायनेअपर्याप्ताअसंख्यातगुणाछई प्रत्येकशरीरी बादरवनस्पतीकायअजापता

त्तगा बायरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरा बायरवणस्सईकाइया

असंख्यातगुणाछइ बादरनिगोदपर्याप्ताअसंख्यातगुणाछइ तेथकी पृथवी अपवाऊ ३ अजापत्ताअ
संख्यातगुणा

पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायरनिओया पज्जत्तगा असंखेज्जपुढविआउवाउपज्जत्तगा असं

बादरत्रसकायपर्याप्ता असंख्यातगुणाछइ तेथकी प्रत्येकशरीरी बादरअसंख्यातवनस्पतीअसंख्या
तगुणा होयइ

खेज्जगुणा बायरतेउपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबायरवणस्सइ असंखेज्ज

तेथकी बादरनिगोदअपर्याप्ताअसंख्यगुणा तेथकी पर्याप्ताअसंख्यातगुणा तेथकी बादरवनस्पतीकाय
बादरपृथ्वीअपवाऊ पर्याप्ताअनंतगुणाछइ तेथकी

बायरनिओया पज्जत्तगा असंखेज्ज बायरपुढविआउवाउपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बा २५७

बादरपर्याप्ताविशेषा बादरवनस्पतीकायपर्याप्ताअसंख्यातगुणा बादरअपर्याप्ताविशेषाधिकहोइ तेथकी
धिकहोइ ते थकी बादरविशेषाधिकहोइ

यरवणस्सई पज्जत्ता अनंतगुणा बायरपज्जत्तगा बायर... वणस्सइ पज्जत्ता असंखेज्जगुणा बा

हवेसामान्यथी अल्पबहुत कहे छे एहने अनवनस्पतीकायनई सामान्यमनिगोदनें बादरपृथ्वीकायअप्पजीवा
दरत्रसकायनई

यर अपविसेसाहिया बायरा विसेसाहिया एएसि णं भंते सुहमपुढवीकाइयाणं जाव सुह

एहमो केहा केहा थकी थोडा घणा सरिषा विशेषाधिक हुयइ सर्वथी थोडा बादरत्रसकायछइ तेणवंतजी कहे छे

मनिओयाणं बायरपुढविकाईयाणं जाव बायरतसकाइया जाव कयरे २ हिंतो अप्पा वा

हे गौ सर्वथी थोडा बादरत्रसकायछे तेथकी सूक्ष्म असंख्यातगुणा छइ तेथकी प्रत्येकशरीरी बादरवनस
तम तीकाय असंख्यातगुणा तेथकी बादरवाऊकाय असं

ध गो सव्वथोवा बायरतसकाइया सुहमा असंखिज्जगुणा पत्तेयसरीरबायरवणस्सई

ख्यातगुणाछइ तेथकी सूक्ष्मतेजसकाई असंख्यातगुणाछइ तेथकी सूक्ष्मपृथ्वी विशेषाधिकहुये

असंखेज्जगुणा तहेव जाव बायरवाउकाईया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा

तेथकी अपसूक्ष्मवाऊ विशेषाधिकहुयइ तेथकी सूक्ष्मनिगोदअसंख्यातगुणा तेथकी बादरवनस्पती

सुहमपुढविविसेसाहिया आउसुहुमवाउ विसेसाहिया सुहुमनिओया असंखेज्जगुणा बा

कायअनंतगुणाः तेथकी बादरविशेषाधिकः तेथकी सूक्ष्म वनस्पती कायअसंख्येयगुणाः

थरवणस्सईकाईयाअणंतगुणा बायराविसेसाहीया सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुं

तेथकी सूक्ष्म विशेषाधिक ईम अपर्याप्ता नें ईम जे जाणवो ए लजो बादर तेजसकाय पज्जत्ताकूई तेथकी

विशेषः सर्व थोका

णा सुहुम विसेसाहीया एवं अपज्जत्तगाविएवरं सव्वथोवा बायरतेउकाइयापज्जत्ता बाय

बादर त्रसकाय असंख्यातगु प्रत्येकशरीरी बादर सर्व पाछिली परें जाणवो सुक्ष्म एवं जाव सूक्ष्म

णाहूई यथा विशेषाधिक कहई त कहें हें ए

रतसकाइयाअसंखेज्जगुणापत्तेयसरीरंसेसंतहेवजावसुहुमपज्जत्ताविसेसाहीयाएएसिं

सूक्ष्म नें बादर नें पर्याप्ता अपर्याप्ता नें सर्व थोका बादर पर्या तेथकी बादर अपर्या

बहूत्वें केहा केहा थोका घणा कूई कहें हें गौतम पत्ताकूई पत्ता असंख्यातगुणा

सोहुमाणं बायराणयपज्जत्तापज्जत्ताणंकयरेकयरे गो सव्वथोवाबायरापज्जत्ता बायराअपज

कूई एक कनिश्राइ असंख्यः प्रत्येकशरीरी तिमज जाणवो सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषा बीकाय दिपर्याप्ता नुं

शेष धिक कूई एवं सूक्ष्म पृथ्वी सकहाई अल्प बहुत्व

त्ताअसंखिज्जगुणापत्तेयसरीरंसेसंतहेवजावसोहुमपज्जत्ताविसेसाहीया एएसिंसुहुमा

कहईछई कहो भगवन् सूक्ष्म नें बादर नें थोका घणा कूई हे गौतम सर्व थी थोका बादर पर्याप्ता कूयई

पर्याप्ता अपर्याप्ता नें केहा २ थकी

णं बायराणइ पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ अप्पा वा ४ सव्वथोवा बायरा अपज्जत्तगा बा

॥ प्रथम सूक्ष्म बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता नुं अल्प० बीजुं सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायदि पर्याप्ता अपर्याप्ता नुं ३ त्रीजुं सूक्ष्म बादर ३ पकाय पर्याप्ता नुं ३ चोथुं सूक्ष्म बादर तेजपर्याप्ता अपर्याप्ता नुं ४ पांचमो सूक्ष्म बादर वनस्पती पर्याप्ता नुं अपर्याप्ता नुं ६ आठमुं सूक्ष्म बादर पृथिव्यादिनुं ८॥

तेथकी बादर असंख्यातगुणा कूई तेथकी सूक्ष्म अपर्याप्ता असंख्यगुणा असंख्यातगुणाछे ईम सूक्ष्म पृथ्वी

तेथकी सूक्ष्म पर्याप्ता

थराअसंखिज्जगुणासाहुमाअपज्जत्तगाअसंखिज्जगुणासुहुमायपज्जत्ताअसंखेज्जगुणाएवं

बादर पृथ्वी जाणवो सूक्ष्म निगोद जे कहें हुं पणि प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पती नी सर्व थी पर्याप

एतलो विशेष छे ई तातेथकी अपर्याप्ता असं

सुहुमपुढविबायरपुढविजावसुहुमनिओयाणंणवरं पत्तेयसरीराबायरवणस्सा

ख्यातगुणा जेछे हे गौतम नियमा असंख्यजा काय सर्व पर्याप्ता नें केहा केहा थकी थोका घणा कूई तिवारें

वनस्पति थकी ईम बादर त्रस तेजसजी कहें छे हे गौतम सर्व थी थोका

इसव्वथोवापज्जत्ताअपज्जत्तगाअसंखेज्जगुणाएवंबायरतसकाइयाविसव्वसिंपज्जत्तमा

बादर तेजसकायपर्याप्ता कूई तेथकी बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा कूई वली तिमज पर्याप्ता

पणि

एयकयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ सव्वथोवा बायरतेउकाइयापज्जत्ता बायरतसकाइया

असंख्यातगुणा होई तेथकी प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पती पर्याप्ता वली तेथकी बादर निगोद पर्याप्ता असं

असंख्यातगुणा कूयई ख्यातगुणा कूई

पज्जत्ताअसंखिज्जगुणा तंचेवपज्जत्तगाअसंखेज्जगुणापत्तेयसरीराबायरवणस्सइपज्जत्तगा

तेथकी बादर पृथ्वी असंख्यातगुणा तेथकी अप २ वाउ २ पर्याप्ता असंख्यातगुणाः तेथकी बादर ते

असंखेबादरनिगोयापज्जत्तगाअसंखेज्जाबायरपुढविअसंखेज्जगुणाआउवाउपज्जत्ताअसं

जसकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणाकहइं तेथकी बादरपृथ्वी अप१ वाऊ२ असंख्यातगुणा बादरतेजसकाय

खेबायरतेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा बादरपुढविआउवाउअसंखेबायरातेउकाइ

अपर्याप्ता असंख्यातगुणा तेथकी बादरपृथ्वी अप काय वाऊ काय इपर्याप्ता

य अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा बायरपुढविआउवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा

असंख्यात गुणा कहइं तेथकइं सूक्ष्मतेजसकाइं अपर्याप्ता असंख्यातगुणा

सुहुमतेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविआउ सोहमतेउकायपज्जत्ता

विशेषातेमज सुक्ष्मपृथ्वी १ अप२ सूक्ष्मतेजसकायपर्याप्ता विशेषाधिककहइ तेथकी अ

गा विसेसाहिया अपज्जत्ता विसेसाहिया सोहमपुढविआउवाउपज्जत्तगा विसेसाहिया

पर्याप्ता विशेषाधिक कहइं सुक्ष्मपृथ्वी अप वाऊ पर्याप्ता विशेषाधिक कहइं सूक्ष्म मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा कहइं ते थकी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणा कहइं तेथकी बादरवनस

सुहुमनिगोया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमनिगोयपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर

तीकाय अपर्याप्ता अनंतगुणा कहइं तेथकी बादरपर्याप्ता विशेषाधिक कहइं तेथिकु बादरवनसतीप

वणस्सइ यापज्जत्तगा अनंतगुणा बायरा पज्जत्ता विसेसाहिया बायरा वणस्सईपज्जत्ता

सघिलइंहाव निगोदजीवा आयविशेष निगोदजीवा निलवतेज सकर्मणाजी

र्याप्ता असंख्यातगुणा कहइं तेथिकु बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक कहयें तेथकु सुक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता अ

असंखेज्जबायरा ऽपज्जत्ता विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज

संख्यातगुणा तेथिकु सुक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक कहइं तेथिकु सुक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा तेथिकु सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक कहइं पहेंलु निगोदादिनी वि

गुणा सोहमा ऽपज्जत्तगा विसेसाहिया सोहमवणस्सयकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सुह

नी व्यक्त थता हवइं कइं केतला भेदे निगोद कह्या कहइं बे भेदे निगोद कह्या ते केहा ॥ एक निगोद बीजा निगोद जीव ए तिवार पछी अल्पबहुत्व कहवो हवइं हे गोतम लिप बे निगोद सुक्ष्म बादर पाछिली परे अप्याबहु बे निगोदना

मा पज्जत्ता विसेसाहिया कइविहा णं भंते निगोया पं गो दुविहा निगोया पं तं निगोया नि

भेद हवइं कइं निगोदना भगवन केतला भेद कह्या हे गोतम निगोदना बे भेद कह्या ते केहा एक सूक्ष्म निगोद एक बादर निगोद हवइं सूक्ष्म निगोदना भगव

गोदजीवाय निगोयाणं भंते कइविहा पं गो दुविहा पं तं सोहमनिगोआए बादरनिगोआ

न केतला भेद कह्या तिवारइं भगवंत कहइं हे गोतम बइं भेद कह्या ते केहा एक पर्याप्ता १ एक अपर्याप्ता २ इम बादरनिगोदना बे भेद कह्या एक पर्याप्ता १

य सोहमनिगोयाणं भंते कइविहे पं गो दुविहा पं तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय पज्जत्तगा या अ

एक अप हवइं सामान्य पणइं निगोद संख्या हवइं हवइं निगोद भगवंत कहइं इबे एक सूक्ष्म निगोदना एक बादर निगो र्याप्ता २ ना जीव ना भगवन केतला भेद कह्या हे गोतम बे भेद कह्या ते केहा जीव १ दना जीव २

पज्जत्तगा या निगोयजीवा णं भंते कतिविहा पं गो दुविहा पं तं सुहुमनिगोयजीवाय बादर

जिवाभिगम
२७५

सूक्ष्मनिगोदिया जीवना बे भेद कह्या छइ । नेजहा कहे छे । नेके ला
एक पर्याप्ता १ एक अपर्याप्ता २ इम बादरनिगोद जीवना बे भेद कह्या छइ तेजहा नाम से के ला

निउदजीवा य सोहमनिउदजीवा दुविहा पंनता पज्जत्तगा य एवं बायरनिउदजीवा दुविहा पं

एक पर्याप्ता १ एक अपर्याप्ता २ निगोद अनंत जीवनइ समुदायरूपनी संख्याती कही कइं असंख्याती कही कें अनंती कही हे गोतम

तं पज्जत्ताय अपज्जत्ताय निगोदाणं भंते दव्वठ्याए किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता गो

संख्याता नही असंख्याता छइ अनंता नही सूक्ष्मनिगोद असंख्याता इम पर्याप्ता सामान्य निगोद सूक्ष्म पर्याप्ता सामान्य निगोद हे संख्याता
लोकाकाशप्रदेश प्रमाण अनंता × सूक्ष्म अपर्याप्ता कहे वात धाता मान्य निगोद सूक्ष्म × गोतम नही १

नो संखेज्जा असंखेज्जा नो अणंता सोहमनिउदाणं भंते दव्वठ्याए किं संखेज्जा पुछा गो नो संखे

असंख्याता होइ पिण द्रव्यथकी अनंता नही
इम पर्याप्ता १ इम अपर्याप्ता २ इम बादरनिगोद पणइ पर्याप्ता कहे वा अपर्याप्ता कहे वा २

ज्जा असंखेज्जा नो अणंता एवं पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि एवं बायरावि पज्जत्तगावि अप

पिण संख्याता न कहे वा असंख्याता कहे होइ अनंता न कहे होइ निगोद जीवनइ अनंत जीवनइ समुदायथकी संख्याता होइ कइं असंख्याता होइ

ज्जत्तगावि नो संखेज्जा असंखेज्जा नो अणंता निउयजीवाणं भंते दव्वठ्याए किं संखेज्जा अ

कइं अनंता होइ हे गोतम संख्याता नो होइ असंख्याता पिण नो होइ अनंता होइ इम सूक्ष्मनिगोद जीवनइ पर्याप्तानइ अपर्याप्तानइ २

संखेज्जा अणंता गो नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता एवं सोहमनिउयजीवावि पज्जत्तगा २७५

× निगोद सूक्ष्म बादर निगोद सूक्ष्म जयाकहे वा पाठ लिपइ हवे सूक्ष्म निगोद स्थानथकी सूक्ष्मसंख्याता असंख्याता अनंता सूक्ष्मनिगोद थकी अनंतजीव स्थानर सूक्ष्म रूपइ छइ ते कहता छइ

× पलोनदोअसंख्यातमात्र इम सूक्ष्मात्र अवगाहना इ सर्व लोकमा पी

कहे छे इम बादरनिगोदना जीव पर्याप्तानइ अपर्याप्तानइ कहे वा नव सूत्र कहे वो हवे प्रदेशार्थ नव सूत्र कहे वा प्रथम सामान्य थकी निगोद सूत्र कहे छे निगोद प्रदेशथकी संख्याता असंख्याता प्रदेश न

वि अपज्जत्तगावि बायरनिउयजीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि निउदाणं भंते पदेसठ्याए

हो अनंता प्रदेश होइ एकेक निगोदमां छइ अनंता जीव मांहे इम सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता नइ अपर्याप्तानइ चि प्रदेश लाइ

किं संखेज्जा पुछा गो नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता एवं सुहमनिउयाय पज्जत्तगावि पज अ-

सर्व अनंता प्रदेश कहे वा इम बादरनिगोदना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता प्रदेशा चिंताइ सर्व अनंता कहे वा आगसूत्रे करीनइ निगोदनो अल्पबहुत्व कहे छइ

त्तगावि पएसठ्याए सव्वे अणंता एवं बायरनिगोदजीवावि पज्जत्तगावि पएसठ्याए

एतावन्न निगोदनइ सूक्ष्म बादर नइ पर्याप्तानइ अपर्याप्तानइ द्रव्यथकी प्रदेशथकी द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ ज्या

सव्वे अणंताए एसणं भंते निउयाणं सोहमाणं बायराणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं दव्वठ

थइं केहवा थकी थोडा घणा होइ ना व्रत कहइ हे गोतम सर्वथी थोडा बादरनिगोद पर्याप्ता इ द्रव्यथकी बादरनिगो

याणं पदेसठ्याए दव्वठपएसठ्याए कयरे गो सव्वथोवा बायरनिउयापज्जत्तगा दव्वठ

द अपर्याप्ता द्रव्यथकी असंख्यातिगुणा कइं एक पर्याप्ता नी नेश्राइं असंख्याता माटइ सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता द्रव्यथकी असंख्यातगुण

याए बायरनिगोदा अपज्जत्तगा दव्वठ्याए असंखेज्जगुणा सोहमनिउयापज्जत्ता दव्वठ्याए

गोलाय असंखेज्जा असंखेज्ज निगोय हवइ गोलाइ थकी मी निगोद अणंतजीवा मुणेय व्वा एगो असंख्यलागो वरइस्सवइ लावद्ध यंपि ज्यानिगोद निवे वसेसेसमवसर व्यि अंतो मुहुत्त नमिअनवि इनि गायणजत्तनि दिनापच्चादेती निगोया नवहो तो मुहुत्तेण २

होइं इमप्रदेशार्थ इमजकहेवोइअप्रदेशाअसयार्थ सर्वथीथोडा बादरनिगोदपर्याप्ता द्रव्यार्थनिगोदघणीमा

असंखेज्जगुणा एवंपएसठ्ठयाविदव्वठ्ठयाए संठियाए सव्वथोवा बादरनिगोयपज्जत्ता

रइंजांलगेंसूक्ष्मनिगोदप द्रव्यथकीअसंख्यातगुण सूक्ष्मनिगोदथकी पर्याप्ता द्रव्यथकी बादर
र्याप्ता होइं

दव्वठ्ठयाए जावसोहुमनिगोयापज्जत्तादव्वठ्ठयासंखेज्जगुणा सोहुमनिगोदेहिंतोपज्जा

निगोद पर्याप्ता प्रदेशथकी अनंतगुणाहोइं तेथकीबादरनिगोद अप्रदेशार्थ असंख्यातगु

त्तएहिंदव्वठ्ठयाए बायरनिगोदापज्जत्तापएसठ्ठयाए अणंतगुणाबायरनिगोदाअपदेस

णाहोइं सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता प्रदेशार्थअसंख्यातगुणाकहइं इमनिगोदजीवनइं एतलो विशेष संक्रमो

ठ्ठयाए असंखेज्जानेसुहुमनिगोयापज्जत्तापएसठ्ठियाए संखेज्जगुणा एवंनिगोयजीवा

णजांलगेइं सूक्ष्मनिगोदनाजीवथकी पर्याप्ताथकी द्रव्यार्थ बादरनिगोदनाजीव पर्याप्ताप्रदेशार्थचिंताइं

विणवरंसंकमणेजावसुहुमनिगोयजीवेहिंतोपज्जत्ताएहिंतोदव्वठ्ठयाएबायरनिगोय

असंख्यातगुणाहोइं थाकतोसर्वपाछलीपरे जांलगेइंसूक्ष्मनिगोदनाजीव प्रदेशचिंताइं असंख्यातगुणाकहइं

जीवापज्जत्ताए पएसठ्ठयाएअसंखेज्जगुणा सेसंतहेव जावसोहुमनिगोयजीवापएसठ्ठ २५४

MEMORIAL

एहनइंसमवननिगोदनइं सूक्ष्मनइं बादरनइं पर्याप्तानइं अपर्याप्तानइं द्रव्यथकी प्रदेश

याएअसंखिज्जा एएसिणंभंते निगोदाणंसोहुमाणंबायराणंपज्जत्ताणंअपज्जत्ताणंदव्व

थकी द्रव्यार्थप्रदेशार्थइंपरस्परेंकीजोअल्पबहुत्वकहइंछइं हेगौतम सर्वथीथो बादरनिगोदपर्याप्ता
म न छइं

ठ्ठयाएपएसठ्ठयाए दव्वठ्ठपएसठ्ठयाएकयरे२अप्पावा४ गो सव्वथोवा बायरनिगो

द्रव्यथकीतेथकीबादरनिगोद एकैकपर्याप्तानिश्राइंअपर्याप्ताअसं सूक्ष्मनिगोदप्रदेशार्थअसंख्यातगुण
अपर्याप्ताअसंख्यातगुणा ख्यातउपजइं तेथकी होइं

दापज्जत्ता दव्वठ्ठयाएबायरनिगोदाअपज्जत्ताअसंखेज्जगुणा सोहुमनिगोयपदेसठ्ठया

तेथकीसूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताद्रव्य पर्याप्ता असंख्यातगुणाछइं तेसूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताथकी द्रव्यथकी बादर
थकी

एअसंखेज्जगुणासोहुमनिगोयापज्जत्तदव्वठ्ठयाएअसंखेज्जगुणासुहुमनिगोएहिंतोपज्ज

निगोदनाजीवपर्याप्ता द्रव्यथकीअनंतगुणकहइंएकेकेंनिगोदइंअनंताजीवमा तगुणाहोइंनिगोदअसंख्याता
रइं तेथकीबादरनिगोदजीवअपर्याप्ताअसंख्या

त्तएहिंतोदव्वठ्ठयाए बायरनिगोदजीवापज्जत्तादव्वठ्ठयाएअणंतगुणाबायरनिगोदजी

तीअसंख्याताकहइं बादरनिगोदजीव पर्याप्ता१ द्रव्यार्थइंअनंतगुणाहोइंएकेकैंनिगोदइंअनंताजीवमा
रइं

वाअपज्जत्तादव्वठ्ठीयाएअसंखेज्जगुणाबायरनिगोदजीवापज्जत्तादव्वठ्ठीयाएअणंतगुणाबा

पर्याप्ताथैप्रदे
शेंपर्याप्तापदे
थेइंबादरसंठि
याएबादरनि
गोदजीवपर्या
प्ता२०र्याप्ताप्र
देशार्थएसंठि
याएबादरनि
गोदजीवबाय
रनिगोदजीव

बादरनिगोदजीव अपर्याप्ताद्रव्यार्थ असंख्यातगुणाहोइ सूक्ष्मनिगोदजीवपर्याप्ताद्रव्यार्थई असंख्यातगुणा

जीवाभि यरनिगोयजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा सोहुमनिगोयजीवपज्जत्ता दव्व

२५५ होइ प्रदेशार्थप्रदेशचिंताइ सर्वथीथोडा बादरनिगोदजीव अपर्याप्ता प्रदेशार्थे संख्यातगुणा सूक्ष्मनि

ट्ठयाए असंखेज्जगुणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा बायरनिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता बा

गोदजीवअपर्याप्ता प्रदेशचिंताइ असंख्यातगुणाहुइ तेहथकी सूक्ष्मनिगोदजीवपर्याप्ताप्रदेशार्थइ

पएसट्ठयाए संखेज्जा सुहुमनिगोदजीवा अपज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सुहुमनि

ताइसंख्यातगुणाहोइ सूक्ष्मनिगोदजीवथकी प्रदेशार्थ बादरनिगोद पर्याप्ता प्रदेशार्थे

गोदजीवापज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा सोहुमनिगोदजीवेहिंतो पदेसट्ठयाए बा

करी अनंतगुणाहुइ बादरनिगोद अपर्याप्ता प्रदेशार्थइ असंख्यातगुणाहोइ जाणवाइ सूक्ष्मनिगोदथ

यरनिगोदपज्जत्ता पएसट्ठयाए अणंतगुणा बायरनिगोया अपज्जत्ता पएसट्ठ संखेज्जगुणा

र्याप्ता प्रदेशार्थ असंख्यातगुणाहोइ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ सर्वथीथोडा बादरनिगोदजीव

जाव सुहुमनिगोया पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए सव्वत्थो २५५

पर्याप्ताहुइ द्रव्यथकी बादरनिगोदजीव अपर्याप्ता द्रव्यथकी असंख्यातगुणाहुइ जाणवाइ

३ वा बायरनिगोदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायरनिगोदजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्ज

सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताद्रव्यथकी असंख्यातगुणाहोइ सूक्ष्मनिगोदथकी द्रव्यथकी बादरनिगोदजीव

गुणा जाव सुहुमनिगोदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुमनिगोयपदेसत्ताए दव्वट्ठयाए

पर्याप्ता द्रव्यथकी अनंतगुणाहुइ थाकता पाठजीवथकी है वो जाणवो सूक्ष्मनिगोदजीवपर्याप्ता द्रव्यथकी

सर्व

बायरनिगोदजीवापज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा सेसा तहेव जाव सुहुमनिगोदजीवा प

असंख्यातगुणाहोइ तिर्यंचयोनियानेजघन्यतो अंतर्मुहूर्तसूक्ष्मनिगोदजीवथकी पर्याप्ताथकी

ज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जा तिरियजोणियस्स जहन्नेणं सोहुमनिगोदजीवेहिंतो पट्ठ

द्रव्यार्थे बादरनिगोदजीवअपर्याप्ता प्रदेशार्थे असंख्यातगुणाहुइ थाकतुंसर्वपाछिलीपरइ जाणवो

सएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरनिगोयजीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तहेव

सूक्ष्मनिगोदजीवपर्याप्ता जीवा प्रदेशार्थे संख्यातगुणाहुइ तेहथकी सूक्ष्मनिगोदजीवपर्याप्ता प्रदेशचिंताइ अ

संख्यातगुणाहोइ सर्वजाव

जाव सोहुमनिगोदजीवापज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुमनिगोदजीवापज्जत्ता पए

जिवाभिग
२५६

नाविचारीनेआपापणाकारणसघलोकहेंछेः हवेंसमासकहेछे एहसूत्रदेजीवकहीइंएतलेछभेदनी ६ सातमेभेद
प्रतिप्रतिसमाप्तथईतिहांजेतेकेतलाएकआचार्यइंमकहेंछे

मट्ठयाए संखेज्जगुणा सेत्तं छव्विहा संसारसमावण्णगा छव्विहा पडिवत्ती सम्मत्ता ६ तत्थ

संसारसमापन्नजीवकहेछेतेइमकहेंछइं तेकेहा॥ नारकी १ तिर्यंचयोनियानीस्त्री २ मनुष्य ४ मनुष्यनीस्त्री ५

जेते एवमाहंसु सत्तविहा संसारसमावण्णगा ते एवमाहंसु तं नेरइया तिरिय जोणीया

देवता ६ देवांगना ७ हवेंएहनोंक्रमेंसातनीअवस्थितकेछेनारकीनीथितिजघन्यतोदससहेंसवरसनीथितिकहीइंरत्न
प्रभानीअपेक्षाइं उत्कृष्टतेत्रीस ३३

तिरिक्खजोणीणीओ मणुसा मणुस्सीओ देवा देवीओ नेरइ संठिई जहन्नेणं दसवाससाहस्सीओ उ

सागरोपमनीथितिकहीइंसातमीनरगनीअपेक्षाइंतिर्यंचनेजघन्यतोअंतर्मुहूर्त्तनीथितिकहीइंउत्कृष्टदेवकुरादिनीअ
पेक्षाइंउत्कृष्टत्रिणपल्योपमपूर्वकोडिअधिकथितिकहीइं

क्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

देवकुरुउत्तरकुरुक्षेत्रनीअपेक्षाइं एमतिर्यंचनीस्त्रीनेकहेंछेंजुईमनुष्यनितिर्यंचपुरुषनीपरइंदेवतानीथितिजि
होयइं मनारकीनीतिमजो

तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपहुत्तमब्भहियाइं एवं तिरिक्खजोणिणीए वि एवं मणु

णवीदेवांगनानेजघन्यदससहेंसवरसनीथीतिभुवनपती उत्कृष्टपंचावनपल्योपमनीथितिकहीइंसो
व्यंतरीनीअपेक्षाइं ननीदेवीनइंअपरग्रहीतनी

स्साण वि मणुस्सीण वि देवाणं ठिई जहा नेरइयाणं देवीणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

२५६

अपेक्षाइंनारकीजेमभवस्थितितिमकायस्थितिकहीयइं तिर्यंचयोनियानेआवनतिर्यंचनीकायाइंकेतलोकालर

इं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं नेरइयदेवदेवीणं जच्चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा तिरि

हइंजगवंसकहइंछे हेगौतम जघन्यअंतर्मुहूर्त्ततिर्यंचमांरहे उत्कृष्टवनस्पतीनीपरेअनंतोकाल

वलीनारकअ
पानेआगेंजे
नतोसमयते
प्रमाणपृथकृत
परावर्त्तकहइं
तिर्यंचयोनि
नीस्त्रीनेजघ
न्यतोअंतर्मुह
र्त्तउ०३

क्खजोणिएणं भंते तिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो० जहन्नेणं अंतोमुहु

रहेंकालथकीअनंतीउत्सर्पणीअवसर्पणीकालथकीअसंख्यात नीथितिहोइंकेउत्कृष्टतोत्रणपल्योपमनी
क्षेत्रथप्रमाणपुद्गलपरावर्त्त प्रमाणकायस्थितिहोइं

त्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो तिरिक्खजोणीणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं ति

पूर्वकोडिअधिकसंघातेंकुरुंदेवकुरुनी इंममनुष्यपुरुषनइंईमम जोणजुंसातपूर्वकेंहवेंतोआंतराकहेंछइं
अपेक्षाइंकहीइं नुष्यनीस्त्रीने नारकीनेआंतरइं जघन्यतोअंतर्म

न्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपहुत्तमब्भहियाइं एवं मणुस्स मणुस्सीए वि नेरइयस्स

हूर्त्तअंतेतेनरकथीनेअप्रशस्तअध्यवसायनारकीमांउपजेउत्कृष्टतोवनस्पतीनाआंतरेनारकीमांउपजेइंम
सर्वमनुष्यनइंतिर्यंचयोनिआनेजघन्यतोअंतर्मुहूर्त्तनुआंतरुंकहइंतत्रप्रथमसमेनारकीनानारकीउ

अंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो देवाणं एवं मणुस्साणं तिरि

प्रथमसमयसवेदनोः प्रथमसमयनारकायुधार्दसमयउतनइंएवंतिर्यंचयोनिकादयोभवनीयाः उत्कृष्टंतोसा
गरोपमसतपृथक्कहीइंअधिकएतलेंआंतरुंकहइंनिहवेंसात ७ नेहआसरबहुत्वकहेंछे

क्खजोणियाणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं अ

जिवाभिग
२७१

सर्वथी थोडा मनुष्यनी स्त्री छइ. अठावीस २८ आंकनी संख्याइ वर्त्तीते थकी मनुष्य असंख्यातगुणा समुर्छिममनुष्य असं
ख्यासप्रदेशराशि प्रमाण लइ. ते थकी नारकी असंख्याततगुणा छै ते थकी तिर्यंचनी स्त्री असं

पाबहुयं सव्वथोवाओ मणुस्सीओ मणुस्सा असंखिज्जगुणा नेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजो

ख्याततगुणी घनसंघात आकास प्रदेशप्रमाण ते थकी देव असंख्याततगुणा वाणमंतर योत की ते थकी देवांगना
संख्याततगुणी सत्तावीस गुणा वर्त्ती: ते थकी तिर्यंचयोनिया अनंततगुणा अनंतानामा है

णीओ असंखेज्जगुणाओ देवा असंखिज्जगुणा देवीओ संखिज्जगुणाओ तिरिक्खजोणिआ

वनस्पतीना जीवनाल्हनेसा एतले ७ तेहनी प्रतिपत्तिसमाप्तथै तिहां जेतेकेतला एक ७ हवे आठ भेदे
तेनेटे संसार समापन्नजीव कह्या छइ. आचार्य ईम कहइ छइ

अणंतगुणा सेत्तं सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा सत्तविहापडिवत्ती समत्ता ७ तत्थ

सर्वजीव कह्या छइ. ते ईम कहे छै ते कहे छै केते ह:: प्रथमसमयना ना अप्रथमसमयनानारकी २ प्रथम
रकी २

जेते एवमाहंसु अठविहा जीवा ते एवमाहंसु तं पढमसमयनेरइया अपढमसमयने

समैना तिर्यंच ३ अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया ४ प्रथमसमयना मनुष्य अप्रथमसमयना मनुष्य
६

रइया पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरिक्खजोणीया पढमसमयम

प्रथमसमयना देवता ७ अप्रथमसमयना देवता: तिहां प्रथमसमयना नारकीनुं आयु प्रथम समय सर्वदा अप्र
थमसमयना नारकीनुं आयु अनेरा समे कहीइ इम तिर्यंचने योनिया कहिवा हवे ए अहनीया अनो क्रमै स्थितिक

णुस्सा अपढमसमयमणुस्सा पढमसमयदेवा पढमसमयनेरइयस्स णं केवतियं २७३

थितिकाल

हवे स्थवइ प्रथमसमयना हणे प्रथमसमयना नारकीने जघन्य एकसमैनी थितिकुइं उत्कृष्टे पण एक समे
नारकीने केतला काल नी तम नी स्थिति कहै छै अप्रथमसमैना नारकीने

कालं ठिई पं गो पढमसमयनेरइयस्स जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेण वि एक्कं समयं

जघन्य दससहस्रवरसे एकसमे उणा एतली स्थितिकुइं अवस्तानी कूपेक्षाइ उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोप

अपढमसमयनेरइयस्स णं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं समयऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं

मनी स्थिति छइ. सातमी नर पहेला समयना तिर्यंचयोनीयाने जघन्यतो एकै समयनी थिति छइ. उत्कृष्ट पण ए
कनी अपेक्षाइ

सागरोवमाइं समयऊणाइं पढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसे

क समयनी थिति कहै छै अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनियाने जघन्यतो क्षुल्लकभवग्रहण एकै समे उणुं छइ.
थिति कह्यइ. केतलुंउत्कृष्टे अनंतरेण ३.

णं एक्कं समयं अपढमसमयतिरिक्खजोणियाजहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समऊणं उ

पल्योपमनी थिति एकै समे उणी थिति छइ. इम तिर्यंचनी परे मनुष्य तिम तिर्यंचयोनी आनइ कहिवुं तिम मनुष्यने सर्व
देव कुरु क्षेत्रनी कुपेक्षाये ने कहेवुं कहे छै हवे आगला कहे छै नारकीने

क्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं समयऊणाइं एवं मणुस्सा वि जहा तिरिक्खजोणियाणं देवाणं ज

जन्म थिति कही छै तिम जदेवताने थिति सघली कहेवी ते थति तिमसंचिटणा काल कहे छै एतले केतला स्थिति कही
कहीतकलुं मजवनिकही छै ने पहेले समैना तिर्यंचयोनियाने

हा नेरइयाणं ठिई नेरइयदेवाणं जा चेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणाइ वि पढमसय

म

जिवाभिग:
२०५

कालथकी केतला कालनुं आंतरुं हुइ: हे गो जघन्यपणे एकसमेंनो आंतरुं हुइ: उत्कृष्टोपणे एकसमें
तेकहे छे: नम नो आंतरो होइ २

तिरिक्खजोणिएणं भंते कालओ केवच्चिरं होइ गो जहन्नेणं एक्कं उक्कोसेणं वि एक्कसमयं अ

अप्रथमतिसमयना तिर्यंचयोनियानें जघन्यतो एकसमेंऊंनः क्षुल्लकभवग्रहणनुं आंतरुं हुइ उत्कृष्टुं तो वनस्पतीनुं कालनुं आंतरुं हुयें २ प्रथमसमयना मनुष्यनें जघन्यतो

पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं उक्कोसेणं वणस्सइ

एकसमयनो आंतरुं हुइ: उत्कृष्टोपणि एकेसमेंनो आंतरो हुयइ १ अप्रथमसमयनां मनुष्यनें जघन्यतो एके
समेंऊंन क्षुल्लकभवग्रहण करें हुइ

कालो पढमसमयमणुस्साणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एक्कं समयं अपढमसमयम

उत्कृष्टोपणि ३ पल्योपम पूर्वकोडि पृथुक अधिक एतलुं आंतरुं हुयइ २ अप्रथमसमयना नारकीन

णुस्साणं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयूणं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहु

इ आंतरुं हुइ छे जघन्यतो दस १०००० वरसनुं अधिक आंतरुं हुइ रत्नप्रभाना प्रथम प्रतरनी अपेक्षाइ उत्
तरु पहुंत नाप्रथम प्रतरनी अपेक्षाइ उत्कृष्टो तो ३३ तेत्रीस सागरो

त्तमब्भहियाइं अपढमसमयनेरइयस्स जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं

पमनो आंतरुं हुइ सातमी नरकनी अपेक्षाइ ३३॥ तिर्यंचनें मनुष्यनें जघन्य अंतर्मुहूर्त तो वनस्पतीना कालनुं
जे नारकीनां परें देवतानें जाणवुं ४॥ हुर्त उत्कृष्टो आंतरुं हुयइ

उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं देवाण वि तिरियमणुस्साण वि जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

२०८

अप्रथमसमेंतो जघन्य अंतर्मुहूर्तनो आंतरुं हुइ वै अनुं आंतरुं हुइ: प्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानें जघन्य
उत्कृष्टोतुं वनस्पतीनां का नो क्षुल्लकभवग्रहण करें इ

उक्कोसं वणस्सइकालो अपढमसमयनेरइयस्स णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो प

एतलो आंतरुं हुइ उत्कृष्टो तो वनस्पतीना कालनुं आंतरुं हुइ अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनीयानें जघन्यतुं समें अधि

ढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं विदो खुड्डागं भवग्गहणाइं उक्कोसेणं वणस्सइका

क क्षुल्लकभवग्रहण नुं आंतरुं हुइ उत्कृष्टो तो सागरोपम शत पृथुक्तनुं काइक अधिक आंतरुं हुयें प्रथमसम
यना मनुष्यनें जघन्य समेंऊंन बे क्षुल्लक भवग्रहणनुं आंतरुं हुइ

लो अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं सा

ते किम क्षुल्लक मनुष्यनुं भवग्रही: वली तिर्यंचमांथी अजें तेजोण बुं ते किम: प्रथमसमें मरनती यें क्षुल्लक भवग्रहवा जे
मनीपनो क्षुल्लक भवग्रहे इम बे क्षुल्लक भवसमेंनो आंतरुं हुइ वनस्पतीनां कालनुं आंतरुं हुइ अप्रथमसम

गरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं पढमसमयमणुस्सस्स जहन्नेणं दो खुड्डागभवग्गहणाइं समयूणं

यना मनुष्यनुं जघन्यतो एके समें अधिक क्षुल्लकभवग्रहणनुं आंतरुं हुइ उत्कृष्टो तो वनस्पतीना कालनुं आंत

इं उक्कोसेणं वणस्सइकालो अपढमसमयमणुस्सस्स खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्को

रुं हुइ देवतानें जघन्य नारकीनी परें दससहस्स वरस ए अंतर्मुहूर्त अधिक आंतरुं हुइ उत्कृष्टो तुं वनस्पतीकायनें
कालनुं आंतरुं हुइ अप्रथमसम

सेणं वणस्सइकालो देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं

जीवाभिग
२९९

यनादेवता जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं आंतरुं छै उत्कृष्टो अनंतो कालनुं आंतरुं छै इहां चारि प्रथमसमैनो अ
ल्पबहुत्व कहै छै इहां नारकी प्रथम समयना नारक

सुक्कोसेणं वणस्सईकालो अपढमसमय जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो

कीनै प्रथमसमयना तिर्यंचनइं २ प्रथमसमयना मनुष्यनै ३ प्रथमसमैना देवतानइं ४ एह मांहि वे प्रश्न जी कहा केह
थकी थोडा घणा छइं हे गौतम

अप्पाबहुयं एएसिं णं भंते पढमसमयनेरइयाणं जाव पढमसमयदेवाण य कयरे २ अ

सर्वथी थोडा प्रथमसमैना मनुष्य बे असंख्याता जाणवा मात्र बे ते थकी प्रथमसमैना नारकी असंख्यातगुणा अतिशय
कर्ता एकेके समै असंख्याता ऊपजै ना माटइं ते थकी प्रथमसमयना देवता ४ असंख्यातगुणा व्यंतरनै भवनप

प्पा वा ४ गो० सव्वथोवा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखिज्जगुणा पढमसमयदेवा

ती २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ ए केके समै असंख्याता ऊपजवा माटइं ते थकी प्रथमसमैना तिर्यंच असंख्यातगुणा कहा बे
इं नारकी दिक नाम ३ जे तिर्यंच पहिला समइं छइं व्यार ४ अप्रथमसमयना अल्पबहुत्व कहै छै

असंखेजगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखिज्जगुणा अपढमसमयानेर

इं अप्रथमसमयना नारकी प्रथमसमयनानी | अप्रथमसमैना तिर्यंचयोनिया अनंतगुणा | जे वा माटइं चरकालस्थि
परे कहइं वे इ नवरं वनइं एतलो विसेष | सामा देवन सती प्रतइं ... ऊपजे ना ऊप | यामाटइं अनंतगुणा छइ

इयाणं देवाणं एवं चेव अप्पाबहुं णवरं अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा

वे प्रथमसमयना अप्रे | बहुत्व कहि छइं ते सगवंतजी प्रथमसमैना नारकीनइं अप्रथमसमयना नारकीनइं केहा केहा
क २ जूज्या अ | थोडा घणा होइं पूछजी ते केहै | हे गौतम | सर्वथी थोडा प्रथमसमयना नारकी

एएसिं पढमसमयनेरइयाणं अपढमसमयनेरइयाण य कयरे २ अप्पा वा ४ गो

अनुयोगद्वारस
व्याख्यानगम
त्रवइं

२९९

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

प्रतिसमय असंख्याता ऊपजवा माटे | नारकी असंख्यातगुणा छइं जे माटे प्रतिसमै २ चरकालस्थायी ऊपजवा माटे
थोडा छे ते थकी अप्रथम समयना | असंख्यातगुणा छइं मनुष्य तिर्यंच देवतासूत्र बे कहेवा ते प्रथम अप्रथम स

सव्वथोवा पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया असंखेजगुणा एवं सव्वेसिं णवि सव्व

दाई आठे बोलनुं अल्पबहुत्व कहइं छइं सर्वथी थोडा प्रथमसमयना ऊपजवा माटइं ते थकी अप्रथमसमैना मनुष्य संख्या
तगुणा छइं इहां समुर्छिमनी वाथकी असंख्यातगुणा कह्या ते थकी अप्रथमसमयना नारकी असंख्याता

थोवा पढमसमयमणुसा अपढमसमयमणुसा असंखिज्जगुणा पढमसमयनेरइया अ

ऊपजवा माटे संख्यातगुणा नारकी थकी देवता ते थकी प्रथमसमैना देवता असंख्यातगुणा प्रतिसमइं ऊपजवा माटइं ते नि
ना प्रथमसमै ते थकी प्रथमसमै ना तिर्यंच असंख्यातगुणा ऊपजता ते थकी इं वलि वनस्पती ने थकी थइं

संखिज्जगुणा पढमसमयदेवा असंखेजगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखिज्ज

ते थकी अप्रथमसमैना नारकी असंख्यातगुणा चरकाल प्रतिसमै २ ऊपजवा माटइं ते थकी अप्रथमसमयना देवता असं
ख्यातगुणा ४ च्यार निकायना प्रतिसमै २ नारकी थकी असंख्यात ऊपजवा माटइं ते थकी अप्रथमसमयना तिर्यंच यो

गुणा अपढमसमयनेरइया अपढमसमयदेवा असंखिज्जगुणा अपढमसमयति

नियानगोद अनंतगुणा अनंता माटइं प्रतिसमै अनंता ऊपजता माटै एतलै आठ भेदना संसारसमापन्नजीव श्री वीतरागे
कह्या अनंतगुणा होइं इति अष्टविधप्रतिपत्तिसमाप्तः ८

रिक्खजोणिया अणंतगुणा सेत्तं अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता अट्ठविहा पडि

तिहां जे ते केतला एक आचार्य ईम कहै छइं नव भेदे संसारसमापन्न जीव कह्या छइं तेई म कहै छइं ते केहा प्रथवी

वत्ती समत्ता ८ तत्थ जे ते एवमाहंसु णवविहा संसारसमावण्णगा ते एवमाहंसु तं पु

काय १ अपकाय २ तेजसकाय ३ वाऊकाईया ४ वनस्पतीकाय ५ बेइंद्री ६ तेंइंद्री ७ चोरेंद्री ८ पंचेंद्री ९

ढविकाइयाआउकाइयातेउकाइयावाउकाइयावणस्सइकाइयाबेंदियातेंदियाचउरिं

नवथितिसर्वनीनवसूत्रेकरीकहेंछे प्रथवीकायनीकाइस्थितिप्रथवीनाकालनीपरेंजांणवुं योवाऊकायनेकाय स्थितिपाछलीपरेंकहेंछे वनस्पती

दियाविइसव्वेसिंतांणियव्वा पुढविकाइयाणंसंचिट्ठणापुढविकालोजाववाउकाइया

कायनेकालनजांणवो बेइंद्रीनेत्रेंइंद्रीनइंचोरेंद्रीनइंसंख्यातोकालजईएतावनीपाछलीपरेंपंचेंद्रीनइंसहस इसागरोपमप्रमांणकाईक

णंवणस्सईणंवणस्सईकालोबेंदियतेंदियाचउरंदीयासंखेज्जकालंपंचेंदियाणंसा

अधिककायस्थितिहुइं हवेआंतरुंकहेंछे सर्वनइंजघन्यतोअंतर्मुहूर्त्तनुंहोइंउत्कृष्टतोसर्वनइंअनंतो कालनुंआंतरुंहोइं वनस्पतीमांआ

गरोवमसहस्ससाइरेगंअंतरंसव्वेसिंअणंतकालोवणस्सइयाणंअसंखेज्जकालंअ

तीवनस्पतीकायनेंअनंताकालनुंआंतरुंहोइ : प्रथवीकायाथि दिमांजातिथ्रकें : हवेंअल्पबहूत्वकहेंछेइ सर्वथोडापंचेंद्रीजीव यजनकाईटाकोटी :॥ तेथकीबेइंद्रीविसेषाधि ककहिबुतेथकीतेजसकायअसंख्यातगु

प्पाबहूगंसव्वथोवापंचेंदियाचउरंदियाविसेसाहियातेंदियाविसेसाहियातेउकाइयाअ

णाकहइं प्रथवी १ अप २ वाउ ३ विशेषाधिकतेथकूवनस्पतीकायअनंतगुणा एतलेंए नवेनेंदसंसारसमापनजीवक तेथकी तेवइं लेइं ॥ श्री ॥ ह्याइं

संखेज्जगुणापुढविआउवाउविसेसाहियावणस्सइकाईयाअणंतगुणासेतंनवविहा

× तेथकीचउरेंद्रीविशेषाधिकहुइं तेथकीतेंइंद्रीविसेषाधिकहुइं तेंदियाविसेसाहीया ३०१

एतलेंनवमीप्रतिसेपत्तिसमाप्तिहुइं ॥ ९ ॥ तिहांजेतेएकेतलाएकआचार्यइंनकहें

संसारसमावन्नगाजीवापण्णत्ता नवविहपडिवत्तीसमत्ता ९ तत्थजेतेएवमाहंसु

छइदसं१०भेदेसंसारसमापनजीवकह्याछइं तेईमकहेंछें तेकहेंछे प्रथमसमयनाएकेंद्री १ अप्रथमसमयनाए

दसविहासंसारसमावण्णगाजीवा पं तंएवमाहंसु तं पढमसमयएगिंदियाअपढम

केंद्री २ प्रथमसमेंनाबेइंद्री ३ अप्रथमसमयनाबेइंद्री ४ जीवप्रथमसमयनातेंद्री अप्रथमसमयनातेंद्री ६

समयएगिंदियापढमसमयबेंदियाअपढमसमयबेंदिया जावपढमसमयपंचेंदि

प्रथमसमयनाचोरेंद्री ७ अप्रथमसमयनाचोरेंद्री ८ प्रथमसमेंपंचेंद्री ९ अप्रथमसमयनापंचेंद्री १० हेगौतमा वेतजीकहेंछे

या अपढमसमयपंचेंदिया पढमसमएगिंदियासणंभंतेकेवतियंकालंठिइ पं गो

जघन्यएकसमय नीथितिहुइं उत्कृष्टीपणिएकसमेंनीथितिहुइं अप्रथम समयनाएकेंद्रीजघन्यतोएकक्षुल्लकभवग्रहणसमय न्यूनकरि

जहन्नेणंएक्कंसमयंउक्कोसेणविएक्कंसमयंअपढमसमयएगिंदियस्सजहन्नेणंखुड्डागं

उत्कृष्टतोएकसमयन्यूनबावीसहजारवरसनीथितिहोइ २२००० एमसघलाप्रथमसमयनानइं एकसमेंनी जघन्यतो

भवग्गहणंसमऊणंउक्कोसेणंबावीसंवाससहस्साइंसमऊणाइं एवंसव्वेसिंपढमस

थितिहोइ उत्कृष्टो एकएक समेंनी थितिकहइ अप्रथम समयनानइं जघन्यनें एक क्षुल्लक भवसमेंनो न्यूनकरइ

मयकाणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एक्कं समयं अपढमसमयजहन्नेणं खुड्डागं भ-

उत्कृष्टो तो जेहनी कहइ तेहमांथकी समय अउछो करीइं यांजों एकेंद्रीनें जघन्य तो अन्तर्मुहूर्तनी थितिमनुष्यति
र्यंचनी थाइ कपे कहाइ उत्कृष्ट तो तेत्रीस ३३ सागरोपमनी थितिसमें न्यून देवनारकीनी तिहें पछि कहाइ

वग्गहणं समऊणं उक्कोसेणं जीवस्सवि ईसा समऊणाइं जाव पंचिंदियाणं तेत्तीसं सागरो-

हवें संचिट्ठणा कायस्थिति प्रथम समयनानइं जघन्य एक समेंनी थितिकहइ उत्कृष्टो एक समे नी थिति कहियइ हवे अप्रथम समयनाएकेंद्रीनइं

वमाइं समऊणाइं संचिट्ठणा पढमसमयकस्स जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं एक्कं समयं

एक समें न्यून क्षुल्लक भवग्रहणनी थितिजघन्य होइ उत्कृष्टो तो एकेंद्रीनें वनस्पतीनी परें अनंतो कालकायस्थितिकहइ वनस्प तीनें बादर की बेंद्री तेंद्री चौरेंद्री ४ एहनें

अपढमसमयकाणं खुड्डागं भवग्गहणं समऊणं उक्कोसेणं एगिंदियाणं वणस्सइकालो बें

मनुष्य समय न्यून क्षुल्लक भवग्रहण उत्कृष्टो तो संख्यातो संख्या तो कालकायस्थितिहोइ पंचेंद्रीनें जघन्य क्षुल्लक भव उत्कृष्टो काई कअधिक सहस सागरोपमनी कायस्थिति होइ हवें दसएअंतरनाजीव नें अन्तर

दियाचउरिंदियाणं संखेज्जकालं पंचिंदियाणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं पढमस

कहितें प्रथम समेंना एकेंद्रीनइं अन्तर ते कितला कालनुं अन्तरकहइ जघन्य बे क्षुल्लक भवसमें न्यून एतलो अन्तर होइ ते किम बेइंद्रीक्षु क्षुल्लक भव ग्रहण पूरी वली एकेंद्री माकरएजेटलो एकें समें न्यून एकेंद्री क्षुल्लक भवग्रहणलबेंद्री

मयएगिंदियाणं केवतियं अंतरं होइ जहन्नेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समऊणाइं उक्को-

यमें आवि अंतर बइं क्षुल्लक भवग्रहण करीकृत्कृष्टं तो वनस्पतीना कालनुं अन्तर कहोइ अप्रथमसमेंना एकेंद्री
क क्षुल्लक भव ग्रहणनुं अन्तर कहइ ते किम बेइंद्री अनें अन्तेरु जघन्य समयाधिक क्षुल्लक भव ग्रहणे एकेंद्री

सेणं वणस्सइकालो अपढमसमयएगिंदियअंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहि-

मा कपजे ते प्रथम समयआधिक उत्कृष्टो तो बे सहस सागरोपम संख्यात वर्ष अधिक अन्तर होइ जेतलो त्रस नें काय
स्थिति कहइ ते तलुं एकेंद्रीनें अन्तर कहोइ बीजा थाकता आवश्नेद नें प्रथम समयनानइं अन्तर कहतुइं बें क्षुल्लक

य उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं सेसाणं सव्वेसिं पढमस

क्षुल्लक भव ग्रहण समें न्यून बेइंद्री नो क्षुल्लक भव करी वली एकेंद्री क्षुल्लक भव करी उत्कृष्टो वनस्पतीनो पा छिलो कालकहोवइं तिम जाणवउं अप्रथम समय नाम:

मयकाणं अंतरं जहन्नेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समऊणाइं उक्कोसेणं वणस्सइका-

या कतो आमनेद नानइं जघन्य अन्तरं क्षुल्लक भवसमेंप उत्कृष्टो सो वनस्पतीना कालनुं अन्तर कहइ
समर्व बेइंद्री तेंद्री चौरेंद्री ४ पंचेंद्री नें प्रथमसमय अप्रथम समयनुं जघन्य उत्कृष्टं तो अन्तर कहनें

लो अपढमसमयकाणं सेसाणं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं व-

हवें एकेंद्रीयादि पहसमय सर्वथी थोडा प्रथम समयना पंचेंद्री तिसमें पंचेंद्रीनुं उपजवुं थोडो कहइं ते थकी प्रथमसमय नुं अल्पबहुत्व कहें छइं चौरेंद्री विशेषाधिक कहइं ते थकी प्रथम समय ना

णस्सइकालो पढमसमएकाणं सव्वत्थोवा पढमसमयपंचेंदिया पढमसमयच-

तेंद्री विशेषाधिक कहइं ते थकी प्रथम समयना बेंद्री विशेषाधिक होइ ते थकी एकेंद्री विशेषाधिक होइ

उरिंदीया विसेसाहिया तेइंदिय विसेसाहया बेइंदिया विसेसाहिया एगिंदिया विसे

हवें एकनंद नी त्रेवक्किनकु हें छे प्रथम समे ना एकेंद्री नें त्र यवनके तना कालनी थिति कहे

उ(?)त्तिना आवालबदीइ पण निगोद तेबदीइ इमज्ञ अप्रथमसम अप्रथमसमयना एकेंद्री अनंतगुणा चरकलकी
यनानु अजबहु कहे बेइ मज कहीइ पणणनां जोविरोध कहेइ स्थायी निगोद हवे प्रथमसमय अप्रथमसमय
साइया एवं पढमसमयकाउ्वाणउ्रपढमसमयएगेंदियाअणंतगुणा दोन्हवि अप्पा
नोत्रीजो अल्पबहुत्व कहे छे सर्व थोडा प्रथमसमयना एकेंद्री वल उत्तिना आया प्रथमसमयना तेथको
अप्रथमसमयना एकेंद्री अनंतगुणा वनस्पतीना अनंतमाटे चिरकालस्थायी माटे सर्वथी थोडा इम बेथा
कहाा बेइंद्री
बहुसव्वथोवा पढमसमयएगिंदिया अपढमसमयएगेंदिया अणंतगुणा सेसाणं सव्वथो
तेइंद्री चोरेंद्री ४ पंचेंद्री ५ इम प्रथमसमयना अप्रथमसमय कहीइ अप्रथमसमयना बेइंद्री २ प्रथमसमयना तेइंद्री प्रथ
मसमयना चोरेंद्री ४ अप्रथमसमयना चोरेंद्री ४ प्रथमसमयना पंचेंद्री अप्रथमसमयना पंचेंद्री ए कह्या
वा पढमसमयगा अपढमसमया असंखिज्जगुणा एएसि णं भंते पढमसमयएगेंदियाणं
एकजीव परसार कह्या कहे छे थोडा घणा कहे छे तिवारे हे भगवन् सर्वथी थोडा प्रथमसमयना पंचेंद्री
नाबतजी कहे छे सांचउ तेथकी प्रथमसमयना
जाव पंचेंदियाणं अपढमसमयपंचेंदियाण य कयरे२ अप्पा वा ४ गो सव्वथोवा प
चोरेंद्री विशेषाधिक इम कहतरता २ थका यावत् अप्रथमसमयना पंचेंद्री अनंतगुणा इम बे थकी एवि
एकेंद्री विशेषाधिक त्यां लगे कहीइ इम हवे त्यां लगे जीवरी ते सर्व तेथकी अप्रथमसमयना चोरेंद्री वि
ढमसमयचउरिंदिया विसेसाहिया एवं हेट्ठामुहा एगेंदिया विसेसाहिया जाव अपढम
धिक कहेइ ए तते खेद सेतेरे संसारसमापन जीव कह्या ले इम तेइंद्री चोरेंद्री विशेषाधिक कहेइ इम कतरतां त्यां लगे
अप्रथमसमयना तेहने ए दससमद संसारसमापन जातनि मए केंद्री अनंतगुणा होइ
समयपंचेंदिया अनंतगुणा सेतं दसविहा संसारसमावण्णगा पण्णत्ता सेत्तं संसारस

नतगोद ना अनंता वली चिरकालस्थायी माटे इ हवे संसार असंसारसमापन्न जीवाभिगम आश्री प्रश्न कहे
इति दसभा प्रतिपत्ति समाप्त ॥ १० ॥ बेइ हवे आगले कहे छे सर्व जीवाभिगम आश्री
मावण्णगजीवाभिगमे दसविहपडिवत्ती सम्मत्ता १० से किं तं सव्वजीवाभिगमे सव्वजीवे
सर्वजीवनी एह वीन वमी प्रतिपत्ति समाप्त थइ ॥ ते के हा एक आचार्य इम कहे छे जे बे भेदे सर्व जीव कह्या छे इम जो लोको कहे इम कहे छे बे भेदे तेदे सर्व जीव क ह्या छे तेइम कहे छे
सुणं इमाउ नवपडिवत्तीउ एवमाहिज्जंति तंजहा एगे एवमाहंसु दुविहा सव्वजीवा पण्ण
ते सीधी कर्मबंधनी अविकली अगति सिद्धि ते संसारी जीव सीधी पिलिंगना सादि छइ संसार मकुनलीथा पलि अपनवसि
वन काल थकी केतला कालनी स्थिति होइ ने अनंत नथी
त्ता एवमाहंसु तं सिद्धा चेव असिद्धा चेव सिद्धे णं भंते सिद्धेत्ति कालउ केवच्चिरं होइ गो
अने रंग तिरूप जवुं नथी हवे असिद्धी संसारी जीव संसारी पणे कहा कहे छे असीद्धी संसारी जीव
ते केतली केतला काल रहे तिवारे भगवंत गौतम ने बे भेदे कहे छे ते कह्या
साईरेणाईएअपज्जवसिए असिद्धे णं भंते असिद्धेत्ति कालउ गो असिद्धे दुविहे पण्णत्ते
ए कह्या अनादि अपर्यवसित एक नी आदी नथी ते अभव्य कहीइ एकने आदि नथी मोक्ष जास्ये तेमाटे ते ह
अने मोक्ष पणे जावुं नथी ते भव्य कहे २ हवे अंतर
अणाइए अपज्जवसिए अणाईए वा सपज्जवसिए सिद्धस्स णं भंते केवतियं काल
कहे छे भी वन केतला कालनुं अंतर होइ आ ताराने तो नथी अपर्यवसितमाटे अंतरं नुहइ भगवन कहे
सीने तर लो आ ते के संधि सादि अपर्यवसित सीधीने असीधी पलिकेत ला कालनु आ कहे
अंतरं होइ गो साईए अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं असिद्धस्स णं भंते केवतियं अंतरं

जीवाभिगम:
३०३

होइ गो० अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अणादियस्स सपज्जवसियस्स

णत्थि अंतरं एतेसि णं भंते सिद्धाणं य असिद्धाणं य कयरे २ अप्पा वा ४ गो० सव्वत्थोवा सि

द्धा असिद्धा अणंतगुणा अहवा दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता सइंदिया चेव अणिंदि

या चेव सइंदिए णं भंते कालओ केवचिरं होति गो० सइंदिए दुविहे पं० तं० अणातीए वा अ

पज्जवसिए अणाईए वा सपज्जवसिए अणिंदिए साइए वा अपज्जवसिए दोण्हवि अंतरं

णत्थि सव्वत्थोवा अणिंदिया सइंदिया अणंतगुणा २ अहवा दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तं स ३०३

काइया चेव अकाइया चेव एवं सवेए एवं सजोए चेव अजोए चेव तहेव सरीरा चेव असरीरा चेव संचिट्ठणा अंत

रं अप्पाबहुं जहा सइंदियाणं तहा सकाइयाणं अहवा दुविहा सव्वजीवा पं० तं० सवेदगा चे

व अवेदगा चेव सवेदके तिविहे पं० गो० सवेदे तिविहे पण्णत्ते तं० अणाइए अपज्जवसिए अणा

इए वा सपज्जवसिए साईए वा सपज्जवसिए तत्थ णं जे से साईए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसे

णं अणंतकालं जाव खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं एवेदए णं भंते अवेदएत्ति कालओ

केवचिरं होइ गो० अवेदए दुविहे पण्णत्ते तं० साईए वा अपज्जवसिए साईए वा सपज्जवसिए तत्थ

अणिगतिनी जेहने जघन्य एकसमय अवेदी हुय तर्फ हूर्त अवेदी हुइ ते मरण पामी वली सवेदी पकरणकूपजे इसम
अलपाप तिसमयहुइ उत्कृष्ट थी रोआ उत्कृष्ट उत्कृष्टे अंतर्मुहूर्त हवे आंतरु कहइ छै सवे दाने

णं भंते साईए सपज्जवसिए से जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं सवेदे णं भं

आंतरु केतला काल नु आ अनादि अनंत अपर्यवसित ने आंतरु नथी मोहजातु अनादि सपर्यवसित ने
तरु होइ ॥ गोतम नथी ते माटे आंतरु नथी

ते केवतियं कालं अंतरं होइ गो अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अणाइय

आंतरु नथी संसारना अभाव तिहां जे सादि सपर्यवसित जघन्य तो एकसमयनु आंतरु उपसम श्रेणि वेदी होय
थीवती इ तेन्हुं उत्कृष्ट तो अंतर्मुहूर्त नु आंतरु

स्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं तत्थ णं सादीए सपज्जवसिए जहन्नेणं एक्कं समयं उक्को

मरण पामे ते वली वेदी हुयइ हवे वेदक नी आवतिने केतला कालनु आंतरु सादि सपर्यवसित ने आंतरु उत्कृष्ट
उत्कृष्ट ॥ गो तमा

सेणं अंतोमुहुत्तं अवेदस्स णं भंते केवतियं कालं अंतरं होइ गो साइयस्स अपज्जव

वेदी थई वेदन ही पामइ ते माटइ सादि सपर्यवसित ने उपसम श्रेणि गत ने श्रेणि समाप्ति वेदी थई जघन्य अंतर्मुहूर्त
उत्कृष्ट थी तो काल २ पढी आने ती ३ सर्प्पणी काल हुइ क्षेत्र थकी कांइ ऊणा अ

सियस्स णत्थि अंतरं साईयस्स सपज्जवसियस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणं

पार्ध पुद्गल परावर्त्त नो अंतर हुइ एकवार उपसम श्रेणि पडिवजी तिहां अवेदी थई श्रेणि समाप्ते वेदपणइ तिवार
जर ही वली अवेदक थाइ हवे अल्पबहुत्व कहे छइ ॥ सर्व थोडा अवेदी छइ सीद्धयो भावनी ते थकी

तं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं अप्पाबहू० सव्वथोवा अवेदगा सवे ३०४

सवेदी अनंतगुणा छइ वनस्पती नाले वा थकी ईम सकषाई जिम सवेदकनी किस्यो विशेष पनथी ४ अथवा बेभेदे
स्थिति आंतरा कल्याण सकषाई आकषाई नेक हेतुबीजु सर्व जीव कहया छइ

दगा अणंतगुणा एवं सकसादी चेव अकसाई चेव जहा वेदे सवेयगे तहेव भा-

ते कहे छे ॥ सलेसी संसारी जीव अलेसी सीद्ध २ जिम सी द्ध असिद्ध कह्या छइ तिम जाणवा सर्व थी थोडा अलेसी
हवइ अल्पबहुत्व कहे छै येसी थकी भावली ॥ मति

णीयव्वा अहवा दुविहा सव्वजीवा सलेसा य अलेसा य जहा असिद्धा सिद्धा अप्पाबहु स-

ज्ञानी रीमां नमति ज्ञानादिनो व ते थकी सलेसी अनंतगुणा छइ निगोद आने एक ज्ञानी होइ अज्ञानी जीव
रमस्त कन आतादि सपर्यवसित जीव तेनगुणा वली अथवा बे भेदे सर्व जी व कह्या छै ते सिद्ध ज्ञानी ते जाणवा

व्वथोवा अलेसा सलेसा अणंतगुणा अहवा दुविहा सव्वजीवा नाणी चेव अन्नाणी चेव नां

केतला काल थकी केतला कालमां स्थिति हुयइ ज्ञानी ज्ञानी ना बे भेद कह्या छै ते कहे छे ॥ कहीय इ तिहां जे समादि सपर्य
सादि अपर्यवसित केवलज्ञानी कहीयइ सादि सपर्यवसित मतिमति ज्ञानने लक्ष्य वसित छे मति ज्ञानी छइ

णी णं भंते केवतियं कालं दुविहे पन्नत्ते साइए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए त

ते स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त नी एतलु छइ ते कहइ ज्ञान पामइ ते अन्नाण कहीइ अनादि सपर्यवसित आन
स्थिति तथ ज्ञानी ने जघन्य काल स्थिति छइ थी विराणि समकित नो मरूप कथणि पामइ सादि सपर्यवसित जे सम

त्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावहिसागरोवमाइं सा-

कित पामी आन ऊर्ध्व ते पछे अन्नाण तो संसार अपार्द्ध पुद्गल परावर्त कइ ज्ञानकृष्ट ते आमहीं सागरोपमे कांइ अधिक एतली स्थि
ति हुइ मनःपर्यव ज्ञान नी उत्कृष्ट तो काल सम कहीं पडिवजे जघन्य जाणवु ते कहे छै अज्ञानी सवेदी नी परे आंतर

इरेगाइं अन्नाणी जहा सवेदए नाणिस्स अंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं अव

Dr. Bhau Daji Memorial

अनादिअपर्यवसित १ अना | अपर्यवसित हवे आंतरं कहे छे ज्ञानीनो आंतरं जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं आंतरुं
दिसपर्यवसित २ हवे आद्य नादि | उत्कृष्टो तो अनंतो काल ... आंतरुं अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल

होज्जा ग्गलपरिअट्टं देसूणं अणाणिस्स दुविहस्स आदिअणाणिअंतरं सादियस्स सपज्जवसि

क्षेत्रथकी काइंक ऊणो अर्ध पुद्गल | नीतेनहीतेमाटे एहने आंतरं नथी सादिसपर्यवसितने ज्ञान ... जघ
परावर्त्त एतला काल पडीरहे ४ | न्य आंतरुं ... अंतर्मुहूर्त्त ... उत्कृष्टो ...

यस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं साइरेगाइं अप्पाबहुं सव्वथो

छ सागरोपम उत्कृष्टो काइंक अधिक ... | सर्व जीव बे भेदे कह्या छइ आहारी ने अना
अधिक एहवे अल्पबहुत्व कहइ छइ ॥ सर्वथी थोडा ज्ञानी ... | हारी ... आहारी ...

वा णाणी अणाणी अणंतगुणा अहवा दुविहा सव्वजीवा पं॰ तं॰ आहारगा चेव अणाहारगा चेव

हवे आहारीकने भगवन् जी केतला काल | आहारी ना बे भेद कह्या छइ | तेके० एक छद्मस्थ आ | एक केवली अ
नी थिति होइ ... हे गोतम | | हारक १ | हारिक २

आहारए णं भंते जाव केवचिरं होइ गो॰ आहारए दुविहे पण्णत्ते तं॰ छउमत्थआहारए

एबेभेद कह्या छइ हवे छद्मस्थ आहारकने भगवन् जी कहो जी केतला | जघन्य समय ... उत्कृष्टो
कालनी थिति होइ भगवान कहे छे हे गोतम | छद्मस्थ आहारकनी थिति होइ अनाहा

केवलिआहारए य छउमत्थआहारए णं भंते जाव केवचिरं होइ गो॰ जहण्णेणं खुड्डागभव

२ क्षुल्लक भवग्रहण ... समयनी विग्रह गति ... असंख्यातो काल ... उत्कृष्टो
ते असंख्याता कालनी थिति होइ कालथकी ... असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ... समय १ समय २ अपर
हारिक २

ग्गहणं दुसमयऊणं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव कालओ खेत्तओ अंगुलस्स असंखिज्जए

निर्लेप थाइ केवली आहारकने भगवन् केतला कालनी थिति होइ तिवारे प्रभु कहे छे हे गोतम जघन्य अंतर्मुहू
र्त्तनी थिति होइ ... केवलीनी ... उत्कृष्टो ... ९ वरसे ऊणी पूर्व कोडि ... केवली थाइ

भागं केवलिआहारए णं जाव केवचिरं होइ गो॰ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा

तेहनी ... हवे अनाहारी अनाहारिने भगवन् जी केतला कालनी थिति ... गोतम अनाहारी ना बे भेद कह्या
छे ते कहे छे छद्मस्थ अनाहारी १ एक केवली अनाहारी २

पुव्वकोडी अणाहारए णं भंते केवचिरं होति गो॰ अणाहारए दुविहे पं॰ तं॰ छउमत्थअणाहार

हवे छद्मस्थ अनाहारकने भगवन् जी केतला कालनी थिति ... तिवारे | गोतम | जघन्य एक समय ... गति
... भगवान जी ... | नी ... होइ

ए य केवलिअणाहारए य छउमत्थअणाहारए णं भंते जीवे केवचिरं होति गो॰ जहण्णेणं

उत्कृष्टो बे समयनी गतिनी ... आहार ... समय ... वाटे ... बे समयनी
... हवे केवली अनाहारिकने भगवन् केतला कालनी थिति होइ गोतम केवली अनाहारकना बे भेद कह्या

एक्कं समयं उक्कोसेणं दो समया केवलिआहारए णं भंते गो॰ केवलिअणाहारिए णं दुवि

ते के० | सिद्धकेवली अनाहारक १ | नाहारक २ ए बे भेद कह्या छे सिद्ध केवली अनाहारिकने भगवन् केतला
बीजो भवस्थ केवली अ

हे पण्णत्ते तं॰ सिद्धकेवलिअणाहारिए भवत्थकेवलिअणाहारए य सिद्धकेवलिअणाहा

भेद कह्या छे | हे गोतम | सादिअपर्यवसित सिद्धि निगोद ... सादिअपर्यवसित माटे थिति होइ हवे भवस्थ के
वली अनाहारिकना भगवन् केतला भेद कह्या छइ ॥ हे गोतम

रिए णं भंते कालओ केवचिरं होइ गो॰ साइए अपज्जवसिए भवत्थकेवलिअणाहारए णं

छद्मस्थकेवलीना बेनेदकहावइ तेकेहाः सयोगी छद्मस्थकेवली अनाहा एक अयोगी छद्मस्थकेवलीअ
रकः अयोगी नाहारकः २॥ हवे सयोगीनाव

संते कइविहे पं० गो० दुविहे पं० तं० सयोगिछउमत्थकेवलिअणाहारए य अयो
त्थाकेवली अनाआहारिक नइ जावन केतलाकालनी थिति रहइ छइ ॥ जघन्य तीन समय उत्कृष्ट
समय केवलीसमुद्घात ॥ सोजनो हेगोतमः पलीसमयइ रहइ ते

गिछउमत्थकेवलीअणाहारए य सजोगिछउमत्थकेवलिअणाहारए णं भंते कालओ केवच्चिरं
किमः आचवस्थाइं जीजोत्रीथो पांचमो समय तिहां केवली कार्मणयोगीहोइ तेतलु ऋद्धो कार्मणशरीरयोगी चतुर्थक
पांचमत्रीजे समये त्रेयप्ति समुद्घात स्पनाहारको नियमात् ईम त्रु समेज्ञ अनाआहारी हुइ हवे अयोगी छद्मस्थकी

होइ गो० जहन्नेणं तिन्नि समया अजोगिछउमत्थकेवलिजहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
वली अनाहारिकनें जघन्य अंतर मुहूर्त्त उत्कृष्टो पणि अंतर्मुहूर्त्तनी थिति हुइ ते किम जे माटे अयोगी तो पांच लघु अक्षर
इ निश्चे अनाहारिक हुइ उदारिक काययोगनी अभावमाटे अनेसंज्ञी नी घातनु जघन्य उत्कृष्टो अंतर मुहूर्त्तनी

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं छउमत्थआहारगस्स केवलियं कालओ अंतरं गो० जहण्णेणं
स्थिति छे हवे आंतरो कहे छे ॥ छद्मस्थ आहारकनें जावन केतलाकालनें आंतरइ हुइ जावे सकहे छे गोतम॥
जघन्य एक समैनु आंतरु हुइ उत्कृष्टो तिम ज बे समयनी कपेक्षाइ उत्कृष्टो बे समयनो आंतरु हुइ विग्रह

एकसमयं उक्कोसेणं दो समया केवली आहारस्स अंतरं जहन्नेणं उक्कोसेणं तिन्नि स
हवे छद्मस्थ अनाहारिकनुं आंतरु कहे छे जघन्य बे समय उत्कृष्टो असंख्यकालनुं आंतरु कहे छे
अंगुलना असंख्यातमो भाग कालनुं आंतरु हुइ काल थकी असंख्याती उत्सर्पिणी कालनुं आंतरु हुइ क्षेत्र थी अंगुलनो असंख्यात
मो भाग मात्रे सर्व प्रदेश हरतां

मया छउमत्थअणाहारगस्स अंतरं जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं दुसमऊणं उक्कोसेणं अ
त्रि ३। ४ अथवा ४ पांचमो समय केवलकर्म णयोग मारइ केवली आहा
रिकनें आंतरु जघन्य उत्कृष्टो तीन ने बे समय

छद्मस्थ पनिकइ पणि ईहां बाकी अपमाण माटे बेसमै कह्या छे नी आनन्दीधा विग्रहगतिः २ वन्नइः सिद्धि केवली अना
एतलो छद्मस्थ अनाहारकनें आंतरु हुइ एतलो काल हारक ने सादि अपर्यवसः

संखिज्जं कालं जाव अंगुलस्स असंखिज्जइभागं सिद्धि केवलिअणाहारगस्स साइ:

सिमाहे॥ ... नवग्रहणं ... केवली ... ईहांइ ईहां ... १७ ...
... ॥ ... ॥ १॥ श्री ॥ ... २ ... ३७ ...
४ः ॥ ... ५
... ॥ श्री ॥ नु॥

आंतरु ... संयोग छद्मस्थ केवली अनाहारकनें जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो आंतरु होइ उत्कृष्टो पण अंतर्मु
हूर्त्तनुं आंतरु हुइः अयोगी छद्मस्थ केवलीनी थिति ते संयोग छद्मस्थिति केवली नु आंतरु कहीइ ते जसी ना
वे अंतर्मुहूर्त्तनो आंतरु हुइः अयोगी छद्मस्थ केवली अनाहारकनें यो नमनि थी

अपज्जवसियं सयोगिअंतरं सजोगिछउमत्थकेवलीअणाहारगस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

जिवाभिग
३०७

एअयोगी अवस्थाइं सरीचअनाहारी वइः | हवे अस्सवन्लत्वकहेछे एहनें अणगवतः अणाहारीनें अनाहारीनइ कहीइ अक्जीके

उक्कोसेणं विअंतोमुहुत्तं अयोगिभवत्थकेवलीअणाहारगस्स णं भंते अंतरं एते सेणं सं

हा केहा बकीछेकाघणाहोइतिबारइं अगवंत कहइछइः | गोतम | सर्वथोक अनाहारी सिद्ध विग्रहगतापन्न समुघात सम्मुघातगति सयोगकेवलीएकां च ५

ते आहारगाणं अणाहारगाणं य कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ गो सव्वत्थोवा अणाहार

अनाहारी हुइः तेथकी आहारी जेषा तिगुणा सवथ कीवनस्पतीनाजीव अनंता छइं एलईहा | अथवा प्रकारांतरइं वे अनुपान गुणा कहा छइं प्रत्त समे विग्रहवंत घणापांमीः इतेमाटे संख्याततगुणा कहा कह्यं | तेहे सर्वजीव कहा छइः विग्रहगाईमाः

गा आहारगा असंखिज्जगुणा आहारगाणं य अहवा दुविहा सव्वजीवा पं तं सा

छइः ते केहा बन्नाषा वंत संसारीनइं कहीइं हवे स्थितिकहेछइ भाषवंतनइं भाषकपणाइं | गोतम | जघन्य एक समय | अभाषसीध कहीयइर | केतला काल | रहइ | यकृत्यु गतिस

सभासगा य असभासगा य सभासए णं भंते सभासेत्ति कालओ केवचिरं होइ गो जहन्नेणं एक्कं

मय करमण सरीराः | अनेरे वांसं ऊपजव नाकहइं अंतहुत्त अनंतमुहूर्त निरंतर | भाषाय लनिसरग संजवसिमः भाषक अभाषकतें | अगवंत एकातली हणोक थितिहुइंछइ

समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं असभासे णं भंते असभासेत्ति कालओ केवचिरं होइ गो असभासए दु

सादि अपर्यवसित कही १ | सादि सपर्यवसित २ पृथ्वीवादि | कहयेति तेजे सादिसपर्यवसित तेज प्रथ्व्यादि स्थिति जघन्यतो भाषावेलपछी अंत मुहूर्त भाषापणो ऊपजइं पृथ्व्यादिना जघन्येः अंतर्मुहूर्त अनुमानइं छइः

विहे पं तं साइए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए तत्थ णं जे से साइए स

उ० जीव: विग्रहगाई मनना: कर्षाण सम्बन्ध्या अयोगी य: सिद्धाश्च एणाहारा साशा आहारगाजी वा २

३०७

उत्कृष्टवेतो वनस्पतीनो काल २ थकी अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालजेएतलो काल वनस्पतीनो अनाषकपणेरहे हवे नो अंतरकहइछइ ॥ | भाषिकनइं भगवन

पज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं अणंता उस्सप्पिणीओ वणस्सइका

केतला कालनुं अंतर हुइं छे तिवारे भगवंतजी कहै छे हे गोतम ॥ | जघन्य अंतर्मुहूर्त अभाषकपणे पृथ्वीवादिनें जघन्य मारइं उत्कृष्टो तो

लो भासगस्स णं भंते केवतियं कालं अंतरं होति गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अ

अनंतिकालनुं वनस्पतीनी परें अंतरकहइं छइं | भाः अंतर नथीः अपर्यवसित भेदइं सादिसपर्यवसितनइं जघन्य हवे अभाषिकसीछते सादिसपर्यवसिति | तो एकसमय उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त

णंतकालं वणस्सइकालो असभासगस्स साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं साइय

भाषकनें अभाषिकना अंतर वारीनी | अंतर्मुहूर्तनुं आंतरु शैलेसी प्रतिपन्न नीरूपे काइं हवे अल्प अल्पबहुत्व कहे छइः | सर्व थी थोडा | भाषकथी ते आंतर हुइः उत्कृष्टो ता | थकी

स्स सपज्जवसियस्स जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं अप्पाबहु सव्वत्थोवा भा

अभाषक अनंतगुणा छइः सधवनसपतादि | बेन्द्रे सर्वजीवना क | सरीरीसंसारी कहीइं असरीरीसिद्धजमसि ताना लेवा थकीः अथवा प्रकारांतरइं | ह्या छइं ते कहा ॥ | ध अससिद्धना सूत्र छै तिम

सगा असभासगा अणंतगुणा अहवा दुविहा सव्वजीवा ससरीरा य असरीरा य जहा सिद्धा थोवा अ

कहेवाः ताइ असरीरीः सिद्धा थोडा छइ ॥ | सरीरी अनंतगुणा छइ ॥ कार्मणतेजसिनी रूपे हुयइः अथवा प्रकारांतरें बे भेदे सर्वजीव कहा छइः ॥ | चरिम भव्य जिमो भव्य गामी ॥ अचरीम अभव्य २

सरीरा जहा सिद्धा ससरीरा अणंतगुणा अहवा दुविहा सव्वजीवा पं तं चरिमा चेव अचरिमा चेव

ज्ञीवाभिगमः
३०८

हवइं स्थितिकहइं छइ॥ चरिमनागवनः कालथकी केतलो कालहोइ सिद्धि अनादिसपर्यवसीतिचरिमलागइं अ
केतलो कालरहइं नावतकहइं छइ हेगोतम योगिपर्यांतिसिद्धितिरूढइं अचरिमनाबेभेदकह्याछे॥

चरिमेणंभंते चरमेत्तीकालतोकेवचिरंहोति गो चरिमेअणादीएसपज्जवसिए अचरिमेदु

अनादिअपर्यवसितिअ सादिअपर्यवसीतिसिद्धिकहीइं एबेनेअ हवेआंतरकहेछे सर्वथोडाअचरि
मकहीइं तरुनहीः कहीइं छइ॥ मअनअकहेइं

विहेअणादिएवाअपज्जवसिए साईएवाअपज्जवसिए दोन्हंपि णत्थिअंतरं अप्पाबहुं सवि

अनंतगुणा छइं सअघणामा अथवा बिप्रकारांतरइं सर्वजीवना साकारोपयुक्त छइं स्म मत्यादिसर्वजीव
टेसीइनालेवा थकीः बेनेरकह्याछइं कह्या छइ॥

त्थोवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा अहवा दुविहा सवजीवा पं सागारोवउत्ता य अणागारो

अनाकारोपयुक्त केवली अंतरमुहूर्त घमते अंतर्मुहूर्त बढइ एक समयनी थितिः थितिरूढइं अंतर्मु
सीढकहीइं बेनरहीवानी थितिः॥ अनेअंतर्मुहूर्तइ उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनु इं घणोहोइ॥

वउत्ता य दोण्हंपि संचिट्ठणावि अंतरंपि जहन्नेणं अंतोमुहुत्तंपि उक्कोसेणं अंतमु

अल्पबहुत्वक सर्वथोडा अनाकारोपयोगासीमी टेअनाकारनुथोडाकालछइ अबो अथोडापामीइंतमा
हे छइ टेतथकी साकारोपयोगी असंख्या तगुणा छइ चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी घणा पामीइं

त्तं अप्पाबहुं सवत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता असंखेज्जगुणा सेत्तं दुविहा सवजी

एतले बेनेरसर्वजीवकह्या अष्टीः बीजी एतलेसंसारी असंसारी तिहांजेतेके तलाएक आचार्य ईमकहेछे
प्रतिपत्ती समाप्ति थइ॥२॥ श्री॥ त्रणे भेदेसर्वजीव केह्या छइ तेइमकहेछे

वा पण्णत्ता दुविहपडिवत्ती समत्ता तत्थणंजेएवमाहंसु तिविहा सव्वजीवा पन्नत्ता एवमा ३०८

सम्यगदृष्टी १ मीथ्यादृष्टी २ हवीनकालस्थितिकहेछे सम्यगदृष्टी नेनागवनकालथकीके सम्यगदृष्टी
केतलो समामिथ्यादृष्टी ३ तलाकालनीस्थितिहोइ नाखंनेकहे हेगोतम॥ नानाछे

हंसु तं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी सम्मदिट्ठीणं भंते कालतो केवचिरं होइ गो सम्म

ते छकह्या सादिअपर्यवसित क्षायकसम्यगदृष्टी सपर्यवसितक्षायकउपसमक सम्यगदरसनी तिहांजेतेसादि
बे कहीयइ १ एकसादि सपर्यवसितेक्षायोपसमिक सम्यगदर्शनी तेहनेजघमतो

दिट्ठी दुविहे पं तं साईए वा अपज्जवसिए साईए वा सपज्जवसिए तत्थणं जे से साईए सपज्जव

अंतर्मुहूर्तनी थितिहोइ कर्मपरिणामिबे ३ घडीसमकतरहीवलीजु॥ तउत्कृष्टानुमनुष्यजन्म अधिक ६६ बासठि
सागरोपमवजयादिगमननहोइ हवेतोवलीमाथ्यादृष्टीनाउत्रणभेदकह्या छइ

सिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं मिच्छादिट्ठी तिविहे

अनादिअपर्यवसितिअभव्यकहीइं १ अभव्यकहीइं॥ अनादिसपर्यवसि उपसमश्रेणप्रतिपन्नथकी
तिअभव्यकहीइं सादिसपर्यः वसितकह्या इ ३ पडानकहीइं

अणाईए वा अपज्जवसिए १ अणाईए वा सपज्जवसिए साईए वा सपज्जवसिए ३ तत्थ जे से सा

तिहांजेतेसादिसपर्यवसितउपसमश्रेणथीपामानइं तेहनेजघन्य अंतरमुहूर्तनी थितिहुइं उत्कृष्ट अनं
तकालथकी अनंतीअवसर्पणीः उत्सर्पणीकालेकहिइं क्षेत्रथकी अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तकाईक

ईए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियं

उणोकहीइं॥ सम्यगमिथ्यादृष्टी अंतर्मुहूर्त्तनी थितिहुइं उत्कृष्टपणि अंतर्मुहूर्त्तनी थितिहोइं हवेंआंतरुंकहे
नीजघन्य सम्यगमिथ्यात्वनी तुकालेइहलो छइ छइ॥

ट्टं देसूणं सम्मामिच्छादिट्ठी जहन्नेणं वि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं सम्मदिट्ठीस्स कें

सम्यगदृष्टि एकसादि... सादिसपर्यवसितउपसमिक सम्यगदर्शनी तेहनेजघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छासठि सागरोपम साधिक गमन नहोइ

जिवाभिग
३०९

सम्यग्दृष्टीनें केतलो सादि सपर्यवसित नें अंतर संनथी अनें सादि सपर्यवसित ऽनें समकित थकी प कोईक सम
अंतर ऊं हुई बइ: अपर्यवसिती माटइ: । तिनइ समकीचेति फिलिवेलाइ । कीन अंत
वत्तियं अंतरं साइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं साइयस्स सपज्जवसियस्स जहन्नेणं
मुहूर्त्त इं पाम्या जघन्यं एतले उत्कृष्टो तो अनंतो काल कालचक्र थकी अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त होइ बे हवें नो ईहां अंतर कंक
अनंती उत्सर्पणी २ हवें मीथ्यादृष्टी अपर्यवसिति अनादि
अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं मिच्छादिट्ठिस्स अणाइयस्स
अनाद्यनंत अंतर नथी मिथ्यात्व अ नें अंतर नथी अनादि माटइ: सादी सपर्यवसित तनइ समकीत पामीनइ
परीत्याग माटइ अनादि सपर्यवसिति नो जघन्य तो अंतर मुहूर्त्तनुं
अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि साइसपज्जवसियस्स जहन्नेणं
काल हुई जघन्य तो समकितनउ अनइ उत्कृष्टतो छासठि सागरोपम मनुष्यनां भव अधिक सम्पग हवें मि
कालएतलो अंतर हुइ दर्शनीनुं एतला काल माटे अंतर हुइ बइ: ॥
णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं साइरेगाइं मिच्छादिट्ठिस्स जहन्नेणं अंतोमुहु
थ्यादृष्टिनें जघन्य अंतर्मुहूर्त्त अनंतो काल नुं अंतर अनंती अवसर्पणी अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तनुं अंतर कांई कउणउं
नु अंतर हुइ उत्कृष्टतो कालनुं अंतर हुइ चक्र थकी २
त्तं उक्कोसं अणंतकालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं सम्मामिच्छादिट्ठिस्स जहन्नेणं उक्को
केतलो मोहनी पामें सम्यग्मिथ्यादृष्टीनें जघन्य उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त्तनुं अंतर हवें मिश्रनु काल एतलो हुवें
हवें अल्पबहुत्व कहें छे सर्वथी थोडा सम्यग्मिथ्यादृष्टी ते परीणाम नुं थोडो काल छे थोडा समें थोडा पामी इं तेमाट सम्यग्दृष्टी
सेणं वि अंतोमुहुत्तं अप्पाबहुं सव्वत्थोवा सम्मामिच्छादिट्ठी सम्मादिट्ठी अणंतगुणा मिच्छादि ३०९

अनंतगुणा सिद्धि: माटइ अनंता वनस्पती अनंतगुणा ते कहे छे: अपरित्ता नोपरित्ता अपरि ३
अनंत वनस्पती अनंता वती: अथवा प्रकारे तरे सर्व अल्पाकदीइ १ ता सिद्धि कहीइ
ट्ठी अणंतगुणा अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं० परित्ता १ अपरित्ता नोपरित्ता नोअप जीव ३ आणे २ कल्प बइ ४
हवइ स्थिति कहइ छइ प्रत्येक आश्रित भगवन् कालथकी केत बइ ते क कायपरित प्रति संसार परीति
तो कालनी थिति होइ बइ परतो नाम ने दकुला गो० सरीरी कहीइ अपाईपुद्ग
रित्ता २ परित्ते णं भंते कालओ केवच्चिरं होइ परित्ते दुविहे पं० तं० कायपरित्ते य १ संसारप
नाम बोलक हे बहे ~ लपरावर्त्त: संसार कायपरीत्तनें भगवन् हे गो० जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी थि उत्कृष्टतो प्रत्येक मांहे असंख्याता काल रहें संख्यान
कीधो २ केतली थिति कहीनि वारे गो० तिहइ: अंतर्मुहूर्त्त प्रत्येक:
रित्ते य कायपरित्ते णं भंते गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं जाव अ
लोकाकाश प्रमांणउ उत्सर्पणी रहें: संसार परत्ती अपार्द्ध पुद्गलीनइ कालथ गोतम जघन्य तो अंतर मुहूर्त्त लगें रहइ अंतगडकेव
इ काल लगइ रहे कालनी थिति कीक तलो काल रहें ति वारें भगवंत कहें जीवु काल ईहां लेवा: उत्कृष्टो तो अनंता कालनी
संखिज्जा लोगा संसारपरित्ते ति कालओ केवच्चिरं होइ गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं
थिति होइ यां लगइ: अंतर्मुहूर्त्त रहइ कउणउ अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त लगें रहें: हवें अपरित्त अल्प व्याख्यान भगवन् सा
केतलो काल रहइ अपरित्तना बे भेद कहा छे ॥ ते कहे छे: एक काया परित्ता १
अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं अपरित्ते णं भंते अपरित्ते दुविहे पं० तं०
धारणनें कहीइ: संसार ने अपरी तो कहे तस्य साधारणनें जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त कांई प्रत्येक उत्कृष्टोतो अ
अपरीत कीकहीयइ: काय अपरि शरीर मां जाइ: वली साधारण थाइ: नंतो काल वनि
काय अपरित्ते य संसार अपरित्ते य काय अपरित्ते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंत

सतीनी परे अनंतो तउसर्पिणी तवसर्प्पिणी अनंतो घापुद्गलरा बेअेद कह्या ते केहवो कृष्णपाषा ॥ अनादि
वर्त्तन इ प्रमाण हुइ: हवे संसार अपरीतना अपर्यवसितो अनेन वा कहीइ १

कालं वणस्सइकालो संसारअपरित्ते दुविहे पं. तं. अणादीए वा अपज्जवसिए अणादीए वा स
अनादि पर्यवसीतत्र नोअपरित्ता सिद्ध कहीयइ: भवि जि सज गे हुइ: हवे अंतरो कहै छे कायपरित्तानें जघन्य
वा कहीइ २ नोपरीत्ता एवेनी थिति सादि अप अंतर्मुहूर्त्तनी थिति: अंतर्मुहूर्त्त साधारणमा जई वली
पज्जवसिए नोपरित्ते नोअपरित्ते सादीए अपज्जवसिए कायपरित्तस्स अंतरं जहन्नेणं अंतो
प्रत्येकमां आवे ते माटे अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो उवनस्पती नो काल लगे साधारणमां र: बालः कायअपरित्तानें जघ
हें पछे वली प्रत्येकमां आवे: संसार परीत्ता ति आंतरुं नथी मुक्त प्रतिपात संत अंतर्मुहूर्त्त ते बु.
मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो संसारपरित्तस्स णत्थि अंतरं कायपरित्तेणं जहन्नेणं
क शरीरमां रहीइ: वली कायपरित्तामें आवे उत्कृष्टे तो असंख्यातकाल रहे प्रत्येक शरीरीनें पृथवीका
यनी परें असंख्य काल हुयइ पुढवी काल प्रत्येक सरीर काल इ सर्व संसार अपरीत्ती अनंत वनें अनादि
अंतोमुहुत्तं उक्कोसं असंखिज्जं कालं पुढवीकालो संसारअपरित्तस्स अणाइअपज्ज
अपर्यवसित ति पाटें आंतरुं नथी अपर्यवसी न थी: संसारपरित्ता माटें वली संसार अपरीत नुं आंतरुं नथी केमनें
त माटें अनादिसपर्यवसित नवनें आंतरुं माटें आंतपरित्ता नोअपरित्ता साथीनें आंतरुं नथी अपर्यव
वसियस्स णत्थि अंतरं अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं नोपरित्ताअपरित्तस्स वि
सित माटइं सदा काल तद्रूप हवे अल्पबहुत्व कहे छे सर्वथी थोडा परीत्ता संसारी थोडा माटें सर्वथी थोडा कुयें ते थकी नोप
रित्ता नोअपरिता अनंतगुणा हुइ सीध अनंता माटें अनंतगुणा कहीयइ: तेथकी: अपरीत्ता अनंतगुणा अ
णत्थि अंतरं अप्पाबहुं सव्वत्थोवा परित्ता नोपरित्तानोअपरित्ता अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणा अहवा तिविहा सव्वजी ३१०

सक ८ हु समण पा स्व्री मां छिन्न ता अपर्यापित इः नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता सिद्ध कहीइं हवइ कायस्थिति कहे छे पर्याप्ता
ने नाम तेनी के तलो कायस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त: अपर्याप्तामां रहे नें वली पर्याप्ता मां उपजिवानुं अपर्याप्तानुं
वा पं. तं. पज्जत्तगा अपज्जत्तगा नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा पज्जत्तगाणं भंते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ
कालनें ते पछी इंतिवार पछी अपर्याप्ती मां ऊपजइं ते विचें कपरा एवम मयः उत्कृष्टो पणि अंतर्मुहूर्त्तनी थिति: हुइं
अपर्याप्ता मल बाध जघन्य उत्कृष्ट वलि एतला ज काल हुइ ब इं ॥ नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता सीह ने सादि अपर्याव
क्कोसेणं विअंतोमुहुत्तं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ताएणं साइए अपज्जवसिए पज्जत्तगस्स अंतरं ज
सित जेणे थिति हुइ: अविरघित नावानुः पर्याप्तानी चितां ६ आंतरुं जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं हुइ: उत्कृष्ट पणि अंतर
मुहूर्त्तनुं अंतरुं हुइ अपर्याप्ता मां नी तरुं कहीइ: जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं आंतरुं हुइ छे उत्कृष्टो तो काइ क अधि
हन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं विअंतोमुहुत्तं अपज्जत्तगस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को
कसा गरोपम सात प्रथु क पर्याप्तानुं कालनुं उत्कृष्टो तुं एतलो काल छे अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्व जीवनी कुंप हुइ नोप
त वल्प अपर्याप्ता कांसि ह जीवों ते नोपर्याप्तानुं अनेंअतरुं नथी: हवइ: पर्याप्तामां छे थोडा इ ते भिक्षु पर्याप्ता असं
सेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं तइयस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुं सव्वत्थोवा नोपज्जत्तगा
ख्यातगुणा हुइ सा माटें फरस्या थकी अपर्याप्ता असंख्यातगुणा हुइ तेथकी अपर्याप्ता अनंतगुणा छे निगोद जीव अपर्या
प्ता अनंतगुणा पामी ते माटें: अथ वा प्रकारांतरइं सर्व जीव बेभेद कह्या छइ. ते केहा
नोअपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा अपज्जत्तगा अणंतगुणा अहवा तिविहा सव्वजीवा
सुक्ष्म बादर २ नोसुक्ष्म नोबादर नें सी सुक्ष्मनें जगवनजीव कष्यम पणो काल थकी केतलो काल रहे अनें जघन्य तो अंत
र कहीइ हवे ई काकायस्थिति कहीइ छइ: सुक्ष्मनी थिति ऊर कोई जीव सुक्ष्म थी बादर मां आवी अनें उत्कृष्टो
सुहुमा १ बायरा २ नोसुहुमानोबायरा ३ सुहुमेणं भंते सुहुमेति कालओ जहन्नेणं अंतो

जीवाभि
३११

असंख्याता काल असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल पृथ्वीकाय थकी ईमज बादर । एम बादरनो काल नी परे जाणवुं ईम बादर
रनो कहे छे एवं असंख्याता कहे छे ॥ सूक्ष्मनुं आंतरुं ते बादर काल कहीइं । बादरनुं आंतरुं ते सूक्ष्म काल कहीइं

मुहुत्तं उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं पुढविकालो सुहुमस्स अंतरं बायरकालो बा

ईमज घणे कालि त्रीजा प्रतिषेधी सिद्धनी जाति ने आंतरुं नथी ॥ अल्पबहुत्व कहे छे ॥ उभय प्रतिषेधी सिद्ध ते
ते थकी बादर अनंतगुणा सिद्ध थकी बादर निगोद अनंतगुणा ते थकी बादर अनंतगुणा बादर थकी

यरस्स अंतरं सो सुहुमकालो तइयस्स अंतरं णत्थि अप्पाबहुं सव्वत्थोवा नोसुहुमनोबा

सूक्ष्म असंख्यातगुणा माटे ॥ अथवा प्रकारांतरे त्रिविध जीव कहीइं संज्ञी मनसहित १ असंज्ञी
मन विना २ नोसंज्ञी

यरा बायरा अणंतगुणा सुहुमा असंखेज्जगुणा अहवा तिविहा सव्वजीवा पं० तं० सण्णी असं-

नोअसंज्ञी सिद्ध केवली ३ ॥ हवे कायस्थिति कहे छे ॥ ए संज्ञीनी स्थिति केटली कहे छे ॥ जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइ किम कोई असंज्ञी
संज्ञीने जघन्य काल थकी केटलो काल रहे जे संज्ञी मांहे रहे ते संज्ञी मांहि उपजे ॥

ण्णी नोसण्णीनोअसण्णी सण्णी णं भंते कालओ केवचिरं होइ गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोव-

उत्कृष्टो उत्कृष्टो कोइक अधिक सागरोपम सत प्रथक्त्वनी स्थिति ॥ असंज्ञी
अंतर्मुहूर्त्त संज्ञीनी स्थिति उत्कृष्टी वनस्पतीनी

मसयपुहुत्तं साइरेगं असण्णी जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सईकालो नोसण्णीनोअ-

उत्सर्पिणी कालनी स्थिति ॥ सादि अपर्यवसित लागे ॥ संज्ञीनुं आंतरुं जघन्य अंतर्मुहूर्त्त
उभय प्रतिषेधी सिद्धने ॥ नुं ॥ संज्ञीनी स्थिति असंज्ञी

सण्णी साइए अपज्जवसिए सण्णिस्स अंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सईकालो ३११

नुं आंतरुं ॥ उत्कृष्टो वनस्पतीनी परे अनंता कालनुं आंतरुं ॥ असंज्ञीयानुं आंतरुं कहे छे ॥ ज
घन्य अंतर्मुहूर्त्तनुं आंतरुं उत्कृष्टो कोइक

असण्णिस्स अंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं तइयस्स णं

अधिक सागरोपम शत प्रथक्त्वनुं आंतरुं ॥ संज्ञीना कालनि प्रमाणे आंतरुं ॥ उभय प्रतिषेधी सीधने आं
तरुं नथी ॥ एवं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ सर्वथोडा संज्ञी देव नारक मनुष्य गर्भज थोडा माटे ते थकी उभय प्रतिषेध - व. रती अनंतगुणा थानी

णत्थि अंतरं अप्पाबहुं सव्वत्थोवा सण्णी नोसण्णीनोअसण्णी अणंतगुणा असण्णी अणंतगुणा

गुणा: अनंता माटे कह्या छे अल्पबहुत्व कारणे अंतरं सी अनंतगुणा माटे वनस्प ॥ सर्वजीवना त्रण भेद ॥ भवसिद्धीया ते भव्य ॥ अभवसिद्धीया ते ॥ उभय प्रतिषेधी
ते सिद्धि थकी ते अनंता ॥ कह्या छे ते कहे छे ॥ कहीइं ॥ नथी कही ॥

अहवा तिविहा सव्वजीवा पं० तं० भवसिद्धिआ अभवसिद्धिआ नोभवसिद्धियानोभवसिद्धि

सिद्ध कहीइं ३ ॥ हवे स्थिति कहे छे ॥ भवसिद्धीया भव्य अनादि सपर्यवसित ॥ भवसिद्धक भव्य सिद्धने अ
ते भगवन्त केतलो कालनी स्थिति ॥ माटे लागे ॥ सिद्ध ॥ अभव्य नादि अप

आनोअभवसिद्धिआ ३ भवसिद्धिए णं भंते अणादिए सपज्जवसिए अभवसिद्धिए अण-

र्यवसित लागे ॥ अभव्यसिद्धिक भव्य सपर्यवसित लागे ॥ हवे आंतरुं कहे छे भव्यसिद्धीने आंतरुं नथी ॥ अना
दि भव्य प्रतिबंध भव्य सिद्धनी सादि नथी ॥ अनादि सपर्यवसीना माटे अभव्य सिद्धने भव्य

ादिए अपज्जवसिए नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धिय साइए अपज्जवसिए भवसिद्धियस्स ण

भवसिद्धीने आंतरुं नथी ॥ भवसिद्धी एहने थी ॥ नथी अपर्यवसित माटे ॥ एवं अल्पबहुत्व कहे छे ॥ भवसिद्धी
ते माटे ॥ उभय प्रतिबंध भवसिद्धने आंतरुं ॥ अभव्य ते माटे ॥ ते थकी भव्य

त्थि अंतरं एवं अभवसिद्धियस्सवि तइयस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुं सव्वत्थोवा अभवसिद्धि

याणोभवसिद्धियाणोअभवसिद्धियाअणंतगुणाभवसिद्धियाअणंतगुणा अहवा तिविहा स

व्वजीवा पण्णत्ता तं तसा थावरा नोतसानोथावरा सेणं भंते तसेत्ति कालओ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ

क्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं साइरेगाइं थावरस्स संचिट्ठणा वणस्सईकालो नोतसनोथा

वरे साइए अपज्जवसिए तसस्स अंतरं वणस्सईकालो थावरस्स तसकालो नोतसथावरस्स णत्थि अं

तरं अप्पाबहुयं सव्वत्थोवा तसा नोतसानोथावरा अणंतगुणा थावरा अणंतगुणा सेत्तं तिविहा स

व्वजीवपण्णत्ता तिविहा पडिवत्ती समत्ता ३ तत्थ जे ते एवमाहंसु चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता ते

एवमाहंसु तं मणजोगी १ वयजोगी २ कायजोगी ३ अजोगी ४ मणजोगी णं भंते जहन्नेणं

एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं एवं वयजोगी वि जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सई

कालो अजोगी साइए अपज्जवसिए मणजोगस्स अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सईकालो तं चे

व वयजोगस्स वि कायजोगस्स जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं अजोगीस्स णत्थि

अंतरं अप्पाबहुयं सव्वत्थोवा मणजोगी वयजोगी वि असंखेज्जगुणा अजोगी अणंतगुणा

कायजोगी अणंतगुणा एहवा चउव्विहा जीवा पं तं इत्थिवेदगा १ पुरिसवेदगा २ नपुंसवेदगा

अनेंआवरीसि स्त्रीवेदी आवनस्त्री वेदपणेकेतलो कालरहइं तिवारइं आगवंतकहें हंगोतमएहांजिमश्रीज्ञीप्रतिपत्ति
६४ कही तेहोंलाआदेसजे तहलोणं एकसमय उत्कृष्टो एकसोदसपल्योपमरंस आधावइत्तरपल्योप

माइं अवेयएणं भंते अवेयएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो पलियासयं
मपृथुत्कइं मपाञ्जली परेंसर्वपावकहें यो प्रथमा विस्तारमाटेंन पुरुषवेदी पुरुष जघन्य अंतर्मुहूर्त स्त्रीवेदीथकी पुरुषवेदें
थीकहणो उपशामश्रेणि तिनेकुइं समयनी स्थिति जघन्यपणइं वेदपणइं अंतर्मुहूर्तरहइं हवेजघन्यपणेएक

दसुत्तरं २ अट्ठारसत्तरं चउद्दस ४ पलियपहुत्तं समयो जहण्णो पुरिसवेदस्स जहण्णेणं अं
वली स्त्रीमांउपजें उत्कृष्टो तो सागरोपम सतपृथुत्क कांइंक अधिक होइं एहनो अर्थ पाछलो पासी तोनोलपावीजाण
वानपुंसकवेदीनइं जघन्य एकसमय उपशामश्रेणिगतनइं होइं

तोमुहूत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं नपुंसगवेदस्स जहण्णेणं एकं समयं
उत्कृष्टोतो वनस्पतीनीपरें अनंता वइ तेह कह्या वइं तेकेहा सीदिअपर्यवसित तनइं आंतरो सादिसपर्यवसि
कालनो आलबेपावलीपरइंनी नथी अपर्यवसितमाटें तनइं उपशाम

उक्कोसेणं अणंतकालं वणस्सइ कालो अवेयए दुविहे पं तं साइए वा अपज्जवसिए साइए
श्रेणिगतिनइं जघन्य एकसमय उपशामश्रे ऊहोतो अंतर्मुहूर्तश्रे स्त्रीवेदने आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्त स्त्रीवे
णिसमाटें तनइं थकें उत णिसमाटें नें अंतर्मुहूर्त दी थीउ सषवेद लेइ वलीस्त्री वेदमांउप

वा सपज्जवसिए जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं इत्थिवेयस्स अंतरं जहण्णेणं
जइं तमाटइं अं उत्कृष्टो वनस्पतीनी परइं पुरुषवेदीनइं आंतरो जघन्य एकसमय उ उत्कृष्टो वनस्पती
तर्मुहूर्तें : अनंताकालपावलीपरइं पशामश्रेणिनइं संमारं नइं होइं परें अनंता कालनो

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो पुरिसवेदस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं वणस्स
धमु अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो तो सागरोपमपृथुक्त्वकांइकहिनें वेइवैतिलो विग्रहना लिआरें सी विसमय वकी जिहां लगें औदारीकशरीर
पर्याप्ता नी समाप्ति तिहांलगें उत्कृष्टो तो अंतर्मुहूर्त इंमवस्ता दंटी काइकी जाणवो ॥

होइं ॥ नपुंसकवेदीनें जघन्य आंतरो अंतर्मुहूर्त अन्यवेद उत्कृष्टो तो सागरोपम सतपृथुत्क कांइंक अधिक आंतरो
मांरहीवली नपुंसकमां उपजइं वेदमां रहीवली पाछोनपुंसकवेदमां उपजइं

ईकालो नपुंसकवेदस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपहुत्तं साइरेगं अ
अवेदीनोकाल तिमज सर्वेंअल्पबहु सर्वथीथोडा पुरु कीस्त्रीवेदी संख्यातगुं णी देवीबत्रीसगुं तेथकी अवेदी अनंत
पावलीपरइं कहेवो तेकहइं छइं षवेदी छइं तेथ ला मनुष्यीसत्तावीसगुणी तिर्यंचागणी कही गुणासिद्धना अनंताव

वेदगाण जहा हेट्ठा अप्पाबहु सव्वथोवा पुरिसवेदगा इत्थिवेदगा संखिज्जगुणा अवेदगा अणंतगु
तेथकी नपुंसकवेदी अनंतगुणा निगोदा अथवा सर्वजीव त्यारें तेदकहावें चक्षुदर्शनी चउरेंदी पंचें
दिवनी सिद्धअनंता तेकेहा २ आलावा तेकहें छइं: द्रीयादि

णा नपुंसगवेयगा अनंतगुणा अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पं तं चक्खुदंसणी अचक्खुदं
अनइं अवधिदर्शनी अनें केवलद चक्षुदर्शनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त चक्षु चक्षुदर्शनीमां आवइं उत्कृष्टो
अवधिज्ञानी र्शनी दर्शनमां थी अचक्षुदर्शनीमां रही वली होइं कअधिक सहस्र साग रोप

सणी ओहिदंसणी केवलदंसणी चक्खुदंसणी णं भंते २ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सा
मनीस्थितिहोइं पंचेंद्रीनी स्थिति एतली होइं तेमाटें अचक्षुदर्शनी अनादिअपर्यवसित अनादिसपर्यवसित तते थकीपंक्ति
उत्कृष्टी नाबिजन्रकह्या तेकहातेकहें छइं अनअवसितनेन्यवक मगकहींइं अवधि तमरणअ
होइं

गरोवमसहस्सं साइरेगं अचक्खुदंसणी दुविहे पं अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्ज
वधिदर्शननीनें जघन्यपणे एकसमय अवधिमुकी कांइं मरणपांमीनें अवधिनो पडवो एकेसमयें कइइं उत्कृष्टो तो बेछासठी सागरोप
वली विभंगज्ञान पांमें पर्वपाले कोदियुं तिर्यंचमां उपनो तिहांथकी वली मति ज्ञानएकनासठी इसकुकइंविमविभंगज्ञानोनी तिर्यंचपंचेंद्री
न कहइं हेठी सातमी इंउपनो तिहालें त्रीस सागरोपम होव

वसिए वा ओहिदंसणस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दो छावठ्ठी सागरोवमाणं साइरेगा
विभंगज्ञानी सातमीइं तिहां विचइं सम्यक्त्वपांमें विभंगनाथीनाकालमाटें उत्कं च : विभंगनाणीणं एकसमयं उक्कोसेणं तेत्तीसं
सागरोवमाइं उ०५

तिहां चवीनइं समये समकित पा ४ अनइं केवल दर्शनि अंत चक्षुदर्शनीनें अंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्त चक्षुदर्शनीनां थकी अ
दर्शनी नइं सादि अपर्यवसित मिनसिद्धनी लेवा थकी ए कहें छे नर्महूर्तनो चक्षुदर्शनीनो नचवोनी चक्षुदर्शनीनो उत्कृष्टो

उकेवलदंसणी साईए अपज्जवसिए चक्खुदंसणी णं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्स

वनस्पतीमांहे अनंता कालनो आंतरो होइ अनइं अचक्षुदर्शनी अनादि अपर्यवसित अनइं अनादि सपर्यवसित ते अंतरो नथी अपर्यवसित माटें
अनादि सपर्यवसित सिद्धने आंतरो नथी ... [illegible] ... आंतरो नथी अवधि
दर्शनीनें जघन्य एक समय ... [illegible] ... एक समय अवधि ... [illegible]

इकालो अचक्खुदंसणस्स दुविहस्सवि णत्थि अंतरं ओहीदंसणस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोस

तेहनो अंतर्मुहूर्तनो आंतरो होइ उत्कृष्टो वनस्पतीनो ... केवलदर्शनीनें आंतरो नथी सादि अपर्यवसित माटें ... सर्वथी थोडा अवधिदर्शनी देवता नारकी मनुष्य कोइक तिर्यंच ते थोडा माटें ते थकी चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा ... तिर्यंच पंचेंद्रीय चउरेंद्री

वणस्सइकालो केवलदंसणीस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुयं सव्वथोवा ओहीदंसणी चक्खुदंसणी

ते थकी केवलदर्शनी अनंतगुणा सिद्धना अनंता वली ते थकी अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा एकेंद्रिया दि अचक्षुदर्शनी मांहे घालेवा ॥

असंखेज्जगुणा केवलदंसणी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंत

अथवा च्यार भेदे सर्व जीव कह्या छें तेकहे संयत साधु चारित्रिया १ असंयती मिथ्यात्वी २ संयतासंयती श्रावका त्रयप्रतिषेध सिद्ध कहीइं ४ एहवे

तगुणा ॥ अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पं० तं० संजया १ असंजया २ संजयासंजया नोसंजया

कायस्थितिक हइं संयत नइं जघन्य एक समय सर्वविरति परिणाम समयानंतर समये कोइ मरतें थकें ते एतला समय मात्र काल संयत होइ उत्कृष्टो कोइक केवली पूर्वकोडि नी स्थिति होइ

नोअसंजया नोसंजयासंजया ४ संजए णं भंते जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी अ

असंयतिनें मिथ्याज्ञानीनी परि जाणवुं ते किम संयतनो चवि अनादि अपर्यवसित अनादि सपर्यवसित ३ संयता
संयत श्रावकनें जघन्य अंतर्मुहूर्त स्थिति होइ अनादि सपर्यवसित संयतासंयतानि ... [illegible]

संजया जहा अन्नाणी संजयासंजए जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी नोसंजयानो

अंतर्मुहूर्तनो काल उत्कृष्टो कोइक केवली पूर्वकोडिनी स्थिति होइ त्रीय प्रतिषेधी सिद्ध ते सादि अपर्यवसित ४ ॥ संयतनें संयतासंयतनें एबेनें सरीखो आंतरो होइ केतलो आंतरो होइ ते कहइं छइं जघन्यतो अंतर्मुहूर्तनो आं

असंजयानोसंजयासंजए साईए अपज्जवसिए संजयस्स संजयासंजयस्स दोन्ह

तरो कोइक अंतर्मुहूर्तइं पाछलिं समकित ... [illegible] पुद्गलपरावर्त्त कोइक तेणे कालथकी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनो आंतरो होइ असंयत आदि बेइ नइं आंत
रो नथी सामाटइं अनादि अ

वि अंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं असंजयस्स आ

पर्यवसित माटइं सादि सपर्यवसित नें जघन्य एक समय अंतर्मुहूर्त आंतरो पिण होइ ते हमो ... [illegible] ... कोइक उत्कृष्टो कोइक केवली पूर्वकोडि ... [illegible]

इदुवेणं णत्थि अंतरं साइयस्स सपज्जवसियस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा

त्रणि प्रतिषेधी सिद्ध नइं आंतरो नथी सादि अपर्यवसित माटें ... सर्वथी थोडा संयत संख्याता कोडाकोडि प्रमाण ते थकी संयतासंयत देशविरतिना पालनार असंख्यातगुणा तिर्यंच ... [illegible] ... संख्या

पुव्वकोडी चउत्थगस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुयं सव्वथोवा संजया संजयासंजया असंखि

तगुणा पर्लो ... तिर्यंच मांहे कोइ कह्यार्इं ते थकी त्रयप्रतिषेधी सिद्ध ते थकी असंयत अनंतगुणा वनस्पती ... [illegible] ... सिद्धना अनंता वली अनंतगुणा कहीइं ... [illegible]

ज्जगुणा नोसंजयानोअसंजयानोसंजयासंजया अणंतगुणा असंजया अणंतगुणा से

आर्यसुधर्मस्वामी इं जंबूस्वामी प्रति एतलइं चोथी प्रतिपत्ति समाप्त थइ तिहां केतला एक आचार्य पांचे भेदे सर्वजीव कह्या
एतलइं अधिकारकहिउ छइ। ईहचइं पांचमी प्रतिपत्ति कहइं छइ इम कहइं छइं ते तकिम कहिया छइं तेजण

तं चउव्विहा सव्वजीवा पन्नत्ता चउव्विहपडिवत्ती सम्मत्ता तत्थ जे ते एवमाहंसो पंचविहा सव्वजीवा

केहता तेकिम नारकी तिर्यंचया मनुष्य देवता सिद्ध ५ कह्या एहनी कायस्थिति अंतरांजि
१ तिर २ ३ ४ छइं महवइं चोथी प्रतिपत्ति कह्या

पं तं एवमाहंसु तं नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सिद्धा संचिट्ठणं तराणि जहा तहा

हीउं छै तिम इहां द्वैं अल्पबहुत्व थोडा मनुष्य तेथकी नारकी असंख्यातगुणा छै तेथकी देवता तेथकी
जाणवु सुगम माटे कहें छइं सर्व गर्भज मनुष्य असंख्यातगुणा छै
नथी लख्या

णं सिद्धा अप्पाबहुं सव्वथोवा मणुस्सा नेरइआ असंखेज्जगुणा देवा असंखिज्जगुणा सि-

सिद्ध अनंतगुणा छइं तेथकी तिर्यंच अनंतगुं अथवा पांचे भेदे सर्वजीव तीर्थंकरे कह्या छइं ते केहा क्रोधकषाय
णा वनस्पति नालवा थकी

द्धा अनंतगुणा तिरिया अनंतगुणा ब अहवा पंचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं कोहकसाई मा-

मांनकषाई मायाकषाय लोभकषाय अकषाई सिद्ध क्रोधकसाई मानकसाई मायाकसाई
२ ३ ४ ५ १ २ ३

णकसाई मायाकसाई लोभकसाई अकसाई कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो पिण अंतर्मुहूर्त नी थिति कहइं क्रोधादि त्रणि उपयोग काल थोडा माटें लोभ कषायनें जघन्य एक समय उपशमश्रेणि पडतो थको लोभ कषायोदय प्रथम समय मानें तरं मूंई थकं क्रोध उदय एक समय रणा उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त नी थिति

णं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं लोभकसाइयस्स जहन्नेणं एक्कं उक्कोसं

थपणें मरतें नही ४

इं अकषाई बेभेदें सादि अपर्यवसित केवली सादि सपर्यवसित उपशांत कषाय तेहनें जघन्य एक समै नी थइ समइं ४ हवें अंतर कहें छें क्रोधकषाय २ मानकषाय ३ एहनो अंतर जघन्य एक समय उपशममाया वेतरां इं मरण वली कोइ निज

ण वि अंतोमुहुत्तं अकसाई दुविहे जहा हेट्ठा कोहकसाई माणकसाई मायाकसाए णं अं-

कृष्टो अंतर्मुहूर्त लोभने उदय एक समय कइं अंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्त नो अंतर होइ उत्कृष्टो प
कइं मांनकषाइनो अंतरो कहें छे लोभकषायनो अंतरो

तरं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसं अंतोमुहुत्तं लोहकसायस्स अंतरं जहन्नेणं अंतोमु-

ण अंतर्मुहूर्त नो अंतरो हो तिम जपावली परें सादि अपर्यवसितनें अंतरो नथी हवइं अल्पबहुत्व थोडा अकषाइ
इं अकषाइनें अपर्यवसित माटइं सादि सपर्यवसितनें जघन्य ४ कहें छइं सर्व कइं सिद्ध ना लेवा थी

हुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं अकसाई तहेव जहा हेट्ठा अप्पाबहुं सव्वथोवा अकसाई

तेथकी मांनकषाई अनंतगुणा निगोद तेथकी क्रोध मांन माया लोभ ए अनुक्रमें विशेषाधिक जांणवा मांन थकी क्रोधवि
नाजीवनइं मांनकषाइ घणा कइं ते माटें ४ रकाल रहें तेथकी माया लोभ चिरकाल स्था थी माटइं विशेषाधिक वालवा एतलें

णो मांणकसाई तहेव अनंतगुणा कोहमायालोभे विसेसमहिया मुणेयव्वा सेत्तं पंचवि-

पांचे भेदे सर्वजीव तीर्थंकरे कह्या एतलें पांचमी प्रतिपत्ति समाप्त थई श्री सुधर्मस्वामी इं जंबू प्रति कहीउं ५ तिहां केतला एक आचार्य छ भेदे सर्वजीव कह्या छै ते इम कहइं छइं

हा सव्वजीवा पंचविहापडिवत्ती सम्मत्ता ५ तत्थ जे ते एवमाहंसो छव्विहा सव्वजीवा पं त

कहइं छइं ते केहा एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री पंचेंद्री पांच निरिंद्री सिद्ध एहनी स्थिति अंतर जिम पाछलि क
१ २ ३ ४ ५ कहीइं ह्या छै तिम इहां पिण जांणवा हवें अल्प

एवमाहंसु तं एगिंदिया बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अणिंदिया संचिट्ठणं तरा जहा

सिद्ध थकी अनंतगुणा सिद्ध अल्पत्व तथा सुगम जांणवा
थी निगोद अनंता वली ३-४ एतला नाकालवइं ४ ३ ली ४

मरण क्रोधने उदयें मकषा इं पांमि तुहइं कु ष्टो अंतर्मुहूर्त उपशांत मोह गुणठांणे लेइ काल बहेक ते जांण कहइं ए कहें छें जघन्य अंतर्मुहूर्त जो उपशांत मोहे लेइ जघन्योत्कृ ष्ट अंतर्मुहूर्त नी थिति हो १४

अंतर्मुहूर्त नी अंतर स्यो हुइं उत्कृ ष्टो नो अंतर नो काल एत जे काल नें ऊपज कइ माइं ५ लोभने

जीवाभिग
३१६

बहुत्व कहै छै सर्वथी थोडा पंचेंद्री छइ तेथकी चउरेंद्री विशेषाधिक छइ तेथकी तेंद्री विशेषाधिक छै तेथकी बेंद्री विशेषाधिक छइ तेथकी पांचनिंद्री सिद्ध अनंत

णा अप्पाबहुसव्वथोवा पंचेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेंदिया बेंदिया विसेसाहिया अ-

गुणा छइ अथवा छ एतले सर्वजीव कह्या छइ उदारिकशरीर १ वैक्रीयसरीर २ आहारकशरीर ३ तेजसहार्क हेतांते केह्

णिंदिया अणंतगुणा अहवा छव्विहा सव्वजीवा पं तं उरालइसरीरा वेउव्वियासरीरा आहार

तेजसशरीरी २४ कार्मणशरीरी २५ अशरीरी सिद्ध करीइ हवे स्थि तिकहै छइ उदारिकशरीरनी स्थिति केतला कालनी स्थिति होइ तिवारे स्नावनक हेछ हे गोतम जघन्यथी क्षुल्लक भव छइ सम

गसरीरा तेयसरीरा कम्मगसरीरा असरीरा उरालएसरीरेणं भंते कालउ केविचिरं हो-

ये स्नानसा सनी पहेला वे समय विग्रहगतिना तिहां कार्मणशरीरकं तेमाटइं उत्कृष्टो तो असंख्याता काल अव सर्पणी उत्सर्पणी अनंत कालनो संख्यातो असंख्यातमा भागना आकाश प्रदेश प्रमाणइ अपहरीइ

इ गो जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं जाव अंगुलस्स असंखेज्जइभा

वैक्रीयशरीरनइं जघन्य एक समय विकुर्वणा समयानंतर एक समय स्थिति कहइ वैक्रीयशरीरनी उत्कृष्टी तो तेत्रीस मरणसमय तिहां विग्रहगति विना अनुत्तर देवतानइ पजइं इम अं सागरोपम अंतमुहूर्त अधिक से किम कोइ तिर्यच मनुष्य अधिक वैक्रीय समुद्घात करी मरी

गे वेउव्वियसरीरा जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भ

सिद्धवक्री सरीर करी अंतमुहूर्त जीवी स्थिति होइ आहारकशरीरनो काल जघन्य उत्कृष्ट तेजसशरीरना बइ भेद पण अंतमुहूर्तनी स्थिति होइ आहारकशरीरनो एतलो ज काल होइ अविछिन्न पणइ कह्यो छइ इकहाना छइ

हियाइं आहारगसरीरा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं तेयसरीरा दु ३१६

एक अनादि अपर्यवसित पर्यवसित अभव्य जीवने कार्मणशरीरना बइ भेद असरीरीनी स्थिति सादि अपर्यव अनंत कही छइ अनादि स मी कही छइ भव्यजीवना सित तेने होइ छइ

विहे अणाइए वा अपज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए एवं कम्मसरीरावि असरीरा-

हवे अंतरो कहै छइ उदारिकशरीरनो जघन्य एक समय अंतरो ते किम बइं समयनी विग्रहगति करे तिहां पहेले समै कार्मणशरीर छइ पछइ उदारिक होइ तेमाटै एक समयनो अंतरो कह्यो छइ उत्कृष्टो

साएवा अपज्जवसिए अंतरं उरालियसरीरस्स जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं ते

तो तेत्रीस सागरोपमनी अंतमुहूर्त अधिक होइ ए अंतरो कह्यो हवे वैक्रीयशरीरनो अंतरो जघन्य तो अंतर्मु वैक्रीनो उत्कृष्टो काल एतलो छइ उदारिकने हुवे ने अंतरो वली वैक्रीय करे उत्कृष्टो तो वनस्पतीनी परइं

त्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं वेउव्वियसरीरा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को

अनंतो काल प्रगट कह्यो छइ आहारकशरीरनइ अंतरो ना हवे वली अंत रो कहै छइ जघन्य तो अंतर्मुहूर्तनो अंतरो होइ अने उत्कृष्टो तो अनंता कालनो अंत

सेणं अणंतकालं वणस्सइकालो आहारगसरीरस्स जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसे

रो होइ ते लगइ कांइ कउणो अर्द्ध पुद्गलपरावर्त्तन लगइ अंतरो आहारकशरीरनइ होइ तेजसशरीर १ कार्मण शरीर २ ए बेनइ अंतरो नथी अनादि अपर्यवसित ने अंतरो नथी सिद्धने अंतरो नथी हवे अल्प

णं अणंतं कालं जाव अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं तेयगसरीरस्स य दुन्हवि णत्थि अंत

बहुत्व कहै छइ सर्वथी थोडा आहारक शरीरी आहारकइं उत्कृष्टो सहस्र पृथक्त्व प्रमाण माटइं तेथकी वैक्रीसरीरी असंख्यातगुणा गुणा आहारकशरीरी ते गुणा कोइ तिर्यच मनुष्य तान कायनइ एतला शरीर तेकिमइ हो अनंते देवता ना

रं अप्पाबहुसव्वथोवा आहारगसरीरा वेउव्वियसरीरा असंखेज्जगुणा उरालियसरीरी

संख्यातगुणा का कोइ पणि ओदारिक शरीर अनंत गुणा महासिद्ध अनंता वली अ सरीरी अनंत गुणा अनुक्रम टीका कार्मण शरीर रहित शरीरी अनंत गुणा सिद्ध॥

एकी मांटइं असंख्या जीव करी एक उदारिक सरीर तेथकी तेजस १ कार्मण २ शरीरी अशरीरी थी तेथकी तेजस १ करूं
कइ तेइहां उदारिक शरीरनी थी ते मांटे ४ अनंतगुणा अनइं बइ सरिखा जाणवा इहां जीव प्रति तेजस

असंखिज्जगुणा असरीरी अनंतगुणा तेयकम्मा तेयकम्मासरीरा दो वि तुल्ला अणंतगुणा से

कार्मण शरीर कुइं निगोद सिद्धथकी एतलइं छेहडनी प्रतिपत्ति समाप्त थई हवइं लिहां केतलाएक आचार्य इम कहइं
अनंती बइ ते मांटइं अनंता छै एतलें सातमी प्रतिपत्ति कहइं छइ ६ २ बइ सात तेहनें देसई जीव कल्या बइ
बइ देसई जीव कह्या बः

त्तं अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ८ अट्ठविहा पडिवत्ती समत्ता ८ तत्थ जे ते एवमाहंसु सत्तविहा

तेइम कहइं तेजहा तेकेहा पृथवीकाय १ अपकाय २ तेजसकाय ३ वाउकाय ४ वनसतीकाय ५ त्रस
बइ

सव्वजीवा ते एवमाहंसु तं पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्स

काय ६ अकाई सिद्धभगवान कही ७ एहनी कायस्थिति अनें अंतर जिम पाछिलि कहि तेम जाणवी हवै अल्पबहुत्व कहै छइ सर्वथकी थोडा त्रस

इकाइया तसकाइया अकाइया संचिट्ठणंतराइं जहा हेट्ठा अप्पाबहु सव्वथोवा तस

काई थाइं तेथकी तेजसकाईया असंख्यातगुणा तेथकी पृथवीकाईया विशेषाधिक तेथकी पृथवीकायना जीव वि
पत्र पलिओपम प्रमाण एसलीस लाख योजन प्रमाण काय छइ पोथी शेषाधिक बइ

काइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा पुढवीकाइ विसेसाहिया आउ विसेसाहिया वा

तेथकी वाउकाय विशेषाधिक बइ तेथ की सिद्ध अनंतगुणा बइ तेथकी वनस्पतीकाय अनंतगुणा सर्व प्रमाण पाछली परे कहीइ अथवा इत्ली सात तेहनें देसर्व

उ विसेसाहिया सिद्धा अणंतगुणा वणस्सइकाइया अणंतगुणा अहवा सत्तविहा स- ३१७
उदर्कशरीरी वांव सरीरा थेक्राया असंखवता रितिसा सरीरी तो अनंत गुणा सिद्धनाम नव्वात॥

जीवक्कला छइ तेजहा तेकेहा कृष्णलेस्या १ नीललेस्या २ काँपोतलेस्या ३ तेजोलेस्या ४ पद्मलेस्या ५ शुक्ललेस्या ६ अलेसी सीद्ध क होइ

व्वजीवा पं० तं० किण्हलेसा काउलेस्सा तेउलेस्सा सुक्कलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा अलेसा

हवै कायस्थिति कहै छइ कृष्णलेस्या एणइं कालथकी केतला काल होइ हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त तिर्यंच मनुष्य
कृष्णलेस्यानें संगा तन लनी स्थिति होइ त्यारें कहइ छइ म नइं होइ उत्कृष्टी ते त्रीस सागरोप

किण्हलेसे णं भंते किण्हलेसेत्ति कालओ केवच्चिरं होति गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं

म अंतर्मुहूर्त्त अधिक नारकीनइं पाछलीना तेनी लेस्यानो अंतर्मुहूर्त्त नीललेस्यानी जघन्य अंतर्मुहूर्त्त तिर्यंच मनुष्यनी उपेक्षाइं
नें आरंनी समयनुं ब एतली मांतमी नरकनी उपेक्षाइं एतली स्थिति होइ उत्कृष्टी तो दस सागरोपम उपरि पल्योपम असंख्यातें

तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं णीललेसे णं भंते जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उ-

भागें अधिक धूमप्रभा नारकीना पाथडा नारकीनी एतली स्थिति मांटइं पहेलें अधिक इं काँपोतलेस्यानी स्थिति जघन्य अंत
तवै तेहलइं अंतर्मुहूर्त्त पल्योपमनें असंख्यातमें भागें अंतइं एतली स्थिति होइ र्मुहूर्त्तनी मनुष्य तिर्यंचनी उपेक्षा

क्कोसं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमब्भहियाइं काउलेसे णं भंते जहण्णे

उपेक्षाइं उत्कृष्टी तो त्रणी सागरोपमनी स्थिति कइं वालुप्रभानें पहिलें पाथडें काँपोतलेस्यानी उपेक्षाइं अधिका जे वलें पल्योपम
नो असंख्यातभागें अधिक स्थिति कइं तेजोलेस्यानइं जघन्य

णं अंतो उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमब्भहियाइं तेउलेसे णं

जघन्य अंतर्मुहूर्त्त देवमनुष्यनी उपेक्षाइं उत्कृष्टी तो बइ सागरोपम संख्यातमइं भागइं अधिक ईशान देवतानी उपेक्षाइं
नी स्थिति पल्योपमनइं अ एतली स्थिति कइं इंली परइं जाणिइं

भंते जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं दोन्नि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखिज्जतिभागमब्भहि

पद्मलेस्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त तिर्यंच मनुष्यनी उपजइ । अनइं उत्कृष्टी तो दस सागरोपमनी स्थिति होइं । ते तो ब्रह्म देवलोकना देवतानी उपजइं जाणवी ।

यांइं पम्हलेसेणं भंते २ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं सुक्क

शुक्ललेस्यानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी मनुष्य तिर्यंचनी उपजइं एतलीकहइं । उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपम तेतलइ अंतर्मुहूर्त्त अधिक अनुत्तरवासी देवतानी उपजइं शुक्ललेस्यानी स्थिति जाणवी । अलेसी भगवन केतली स्थिति

लेसेणं भंते २ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं

सादि अपर्यवसित तेहनें भगवन हवइं आंतरो कहइं छइं । कृष्णलेस्यानें भगवन केतला कालनो आंतरो हुइं । गौतम जघन्य तो

अलेसेणं भंते २ सादीए अपज्जवसिए किण्हलेसेणं भंते अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ जहण्णे

अंतर्मुहूर्त्त देवतामनुष्यनें पलटाइं छइं । उत्कृष्ट तो तेत्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्तइं अधिक आंतरो होइं शुक्ललेस्यानें आंतरें दिन वपलटाते लेस्या पिण पलटाइं तेमाटइं आंतरो इम जाणवो इम । नीललेस्यानो आंतरो जघन्य कृष्ण जाणवो इम कापोतलेस्

णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं एवं नीललेस्सवि काउ

स्यानो आंतरो जाणवो हवइं तेउ । तेजोलेस्यानइं भगवन केतलो आंतरो हुइं तिवारइं भगवंत कहइं हे गौतम सांभलो । जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त तेतीर्यंच मनुष्यनी उ । पछइं तो वनस्पतीनो काल एतलो आंतरो हुइं ।

उलेसस्सवि तेउलेसस्स णं भंते अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ

इम पद्मलेस्यानो आंतरो जाणवो । इम लेस्यानो आंतरो जाणवो । अलेसी सिद्धनें आंतरो भगवन केतला कालनो होइं भगवंत कहइं हे गौतम सादि अपर्यवसित

कालो एवं पम्हलेस्सवि एवं दोण्हवि एवं मंतरं अलेसगस्स णं भंते अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ गोयमा सादिअ

नालोगामाटइं आंतरो नथी अपर्यवसित माटइं । हे भगवन जीवनइं कृष्णलेस्यानइं नीललेस्याना कापोतलेस्याना आंतरो नथी हवइं अल्पबहुत्व कहइं छइं ।

पज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुयं एएसिं णं भंते जीवाणं किण्हलेसाणं नीलकाउतेउ

तेजो पद्म शुक्ल लेस्या । अलेसी सिद्धनें केहा थकी थोडा घणा छइं । सर्वथी थोडा जीव शुक्ललेसी लांतकादिक उपरला देवलोकें तिर्यंच मनुष्य नइं होइं तेमाटइं शुक्ललेस्यावाला थोडा । तेथकी पद्मलेस्या संख्यातगुणी सनत्कुमार ३ मा ४ ब्रह्म ५ घणा

पम्हसुक्कअलेसाण य कयरे २ सव्वत्थोवा सुक्कलेस्सा पम्हलेसा असंखिज्जगुणा तेउलेसा

गर्भज तिर्यंच मनुष्यनें कहइं तेमाटइं असंख्यातगुणा कह्या जघन्यपदें संख्यातगुणा । तेथकी तेजोलेस्या सौधर्म ईशान एतला माटइं असंख्यातगुणा तेथकी अलेसी सिद्ध अनंतगुणा । तेथकी नीललेस्या विशेषाधिक नारकी मनुष्य तिर्यंच भवनपति तेथकी कृष्णलेस्या नाजी

असंखिज्जगुणा अलेसी अनंतगुणा काउलेसा अनंतगुणा नीललेस्सा विसेसाहिया किण्हा

व विशेषाधिक कोइक एकेंद्रिय स्वभावइं । बारइं गतिमां मीडं तेमाटइं एतला लेसाते ते देवें सर्वजीव कह्या भगवानइं । एतलें साते नेरजीवनी प्रतिपत्ति समाप्तः १ हिवइं आठ हवें आठमी प्रतिपत्ति कहइं छइं । केतला

लेसा विसेसाहिया सेत्तं सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता सत्तविहापडिवत्ती सम्मत्ता ७ तत्थ जे

एक आचार्य इम कहइं छइं जे आठ भेदे सर्वजीव कह्या छइं । ते इम कहें छइं ते कहे छइं ते केहा: नारकी १ तिर्यंच २ तिर्यंचनी स्त्री ३ मनुष्य ४

ते एवमाहंसु अट्ठविहा सव्वजीवा पं तं एवमाहंसु तं नेरइया १ तिरिया २ तिरिक्खी ३ मणु

मनुष्यनी स्त्री ५ देवता ६ देवतानी स्त्री ७ सिद्ध ८ हवें स्थिति कहें छइं । नारकीनें भगवान नारकीपणइं केतला कालरहइं तिवारइं भगवंत कहइं हे गौतम

सा ४ मणुसी ५ देवा ६ देवी ७ सिद्धा ८ नेरइएणं भंते नेरइएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो ज

सौधर्म ईशानें तेजोलेस्या असंख्यातगुणा नीललेस्या तिर्यंच मनुष्य वनस्पति अनंतगुणा तेमाटइं ३.३

मीडं नाटकनें नारकी तेथकी कापोत लेस्या अनंतगुणा वनस्पतीनें कापोतलेस्या माटइं ३.३ ३.२ ३.४:

जघन्य दससहस्र वरसनुं आउखुं पाले तेहनो अंतर। तेत्रीस सागरोपम सातमी नरक तिर्यंच योनियानइ जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त। पाछि मानी उपजइ करी नइ उत्कृष्टो नी उपजइ थिति जाणवी नी थिति होइ
दसणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमाइं तिरिक्खजोणिएणं भंते २ जह
उत्कृष्टो तो वनस्पतीनी परइं नी स्त्रीनइं भगवन जघन्य अंतर्म तो त्रण पल्योपम पूर्वकोडि पृथक्त्व अधिक
ते तो कालनो आंतरो होइ तिर्यंच मुहूर्त्तनी थिति होइ उत्कृष्टी थिति होइ देवकुरु उत्तरकुरुनी उपजइ
णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो तिरिक्खजोणीणं भंते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं
थिति जाणवी इम तिर्यंचनी परें मनुष्यी कहेवी देवतानी थिति जिम नारकीनी तिम जघन्य थिति क थितिसंवनपतीनी
मनुष्य कहेवा मनुष्यनी परइ देवी देवइ देवीनी भगवन जघन्यतो दससहस्र वरसनी सरनी उपजइ करी
पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं एवं मणुस्स मणुस्सीदेवे जहा नेरइए देवीणं भंते जहन्नेणं द
नइ उत्कृष्टी तो पचावन पल्योपमनी स्थिति इसाने अपरिगृहितनी उपजइ सादि अपर्यवसित नइ तो गइ होइ
सिद्धनइ भगवन सिद्धिपणै केतला कालपणइ रहे गोतम हवे आंतरो कहइ छइ
सवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं सिद्धेणं भंते सिद्धेत्ति कालओ केवचिरं होइ गोयमा साईए
नारकीनइ भगवन केतलो कालनो आंतरो हे गोतम सादि तो जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो तंदुलमच्छादिकनो
होइ ते कहो स्वामी तिवारे भगवंत कहे नीनरकमां उपजै उत्कृष्टो वनस्पती
अपज्जवसिए नेरइयस्स णं भंते अंतरं कालओ केवचिरं होइ गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं व
नी परे अनंतो कालनो आंतरो होइ तिर्यंचयोनीनइ भगवन आंतरो कालथकी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो आं
तरो होइ अंतर्मुहूर्त्त बीजो भव तेणवी वली तिर्यंचनो आवइ उत्कृष्टो तो सागरोपम सत पृथक्त्वनो आंतरो
णस्सइकालो तिरिक्खजोणियस्स णं भंते अंतरं कालओ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम

इक अधिक होइ आयरसयपुहुत्तम स्त्रीनइ भ आंतरो कालथकी केतला कालनो आंत जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो
अहिय स्त्रीवचनात् तिर्यंचनी भवन रो होइ भगवंत कहे हे गोतम आंतरो होइ उत्कृ
सयपुहुत्तं साइरेगं तिरिक्खजोणीणं भंते अंतरं कालओ केवचिरं होति गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं व
ष्टो तो वनस्पतीनी परइ इम मनुष्यनो पिण आंतरो क देवतानो देवीनो इम ज इम सिद्धनइ भगवन केतलो सादि अप
अनंतो कालनो होइ हेवो मनुष्यणीनो कहेवो आंतरो जाणवो आंतरो जाणवो इहां र्यवसि
णस्सइकालो एवं मणुस्सस्स वि मणुस्सीए वि देवस्स वि देवीए वि सिद्धस्स णं भंते अंतरं सादी
तने आंतरो नथी अपर्यवसित माटइ आंतरो नथी अपर्यवसित माटइ नें भगवन नार तिर्यंचनइ तिर्यंचनी स्त्री मनुष्यनइ ४ मनुष्य
हवे अल्पबहुत्व कहइ छइ ९६ कीने १ २ नइ ३
यस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं एतेसि णं भंते नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्ख "मणुस्साणं
नी स्त्रीनइ देवतानें देवांगनानइ सिद्धनइ एह मांहे कोण थोडा सर्वथी थोडी म तेहथकी मनुष्य असंख्यातगुणा समुर्छिम
५ ६ ७ णा घणा होइ हे गोतम नुष्यनी स्त्री छै नाजे वाथकी असंख्याता कहा होइ
णुसीणं देवाणं देवीणं य सिद्धाणं कयरे २ गोयमा सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ मणुस्सा असंखिज्जगुणा
तेहथकी नारकी असंख्यातगुणा तेहथकी तिर्यंचनी स्त्री असंख्यातगुणी समुद्रादिक असंख्याता असंख्यातगुणी व
क्षेत्र विस्तार माटइ वली तेहथकी देवता असंख्यातगुणा छइ तेहथकी देवांगना असंख्यातगुणा वली
नेरइया असंखिज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखिज्जगुणाओ देवा असंखेज्जगुणा देवीओ
तेहथकी सिद्ध अनंतगुणा तेहथकी तिर्यंच अनंतगुणा वनस्पतीना जीवा थकी अथवा वली माहें तेहें सर्व जीव कहा
तेके ०
संखेज्जगुणाओ सिद्धा अनंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा अहवा अट्ठविहा सव्व-

डिवाशिग
३२६

मयनीस्थिति होइ ओहल्पइं चवनसमुचइं उतकृष्टीनो आवेवरसे गलीपूर्वको डिनीस्थितिकुं इ

आसिणीबोहियनाणीकहेता मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानी २ अवधिज्ञानी ३ मनपर्यवज्ञानी ४ केवलज्ञानी ५ मतिअज्ञानी अतअज्ञानी विभंगअज्ञानी

जीवा णं ते आभिणिबोहियनाणी सुयनु ओहि मण केवली मती अन्नाणी सुत अन्नाणी विभंग

हवइं स्थितिकहैवइं मतिज्ञानीनइं भगवन मतिज्ञान पणइं कालथकी केतलाकालनी स्थिति होइ स्वामी तेकहो तिवारे भगवंत कहै हेगौतम जघन्य अंतर्मुहूर्तनी स्थिति

अन्नाणी आभिणीबोहियनाणी णं भंते आभिणीबोहियनाणीत्ति कालओ केवच्चिरं होति

उत्कृष्टीलो बासठि सागरोपमनी स्थितिकोइंक अधिककुइं बइंवार इंमश्रुतज्ञानीनी अवधिज्ञानीनेभगवन विजयादिगमनइं करीनइं मनपर्यवज्ञानीनइं भगवन जघन्य एक स स्थितिजांणवी हवइं नेजघन्यचववानो

गो जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं ओहि वि एवं सुयनाणी वि ओहिनाणी

एकसमयनी स्थिति उत्कृष्ट थोडो पूर्वकोडिनी स्थितिजांणवी केवलज्ञानीनइं भगवन केतलीस सादि अपर्यव सितजाणइं कुइं सिद्धनालेखाथकी मतिअज्ञानीनइं भगवन मति

णं भंते २ जह एक्कं समयं देसूणा पुव्वकोडी केवलनाणी णं भंते २ साइए अपज्जवसिए म

अज्ञानपणै केतलाकालनी स्थिति होइ तिवारइं भगवंत कहै हे गौतम अज्ञानी त्रणभेद कह्या तेकहा अनादि अपर्यवसित तेने कहीइं

इ अन्नाणी णं भंते मइ अन्नाणी केवच्चिरं होइ गो अन्नाणी तिविहे पण्णत्ते तं अणाइए वा अ

मतिज्ञान अनादि सपर्यवसित तेजे ज्ञान पांमी नपांमइं नपांमी मोक्षइं जाइं सादि सपर्यवसित तेजे अज्ञान पांमी वलीज्ञान पणै पांमइं तिहांजे ते सादि सपर्यवसित तेजघन्य अंतर्मुहूर्त्त काल अज्ञानीनी स्थिति पां मीः

पज्जवसिए अणाइए वा सपज्जवसिए वा साइए वा सपज्जवसिए तत्थ णं जे से साइए सपज्जव ३२७

पडैज्ञानी नीमंध्या उत्कृष्ट तो अनंता कालमांकोइंक उणाअर्द्ध पुद्गलपरावर्त्त लगइं मतिअज्ञानीमांरहै तिहां अनादि सपर्यवसितपणो वली परंजांणवो श्रुतअज्ञानी

सीए से जह अंतो उक्को अणं तकालं जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं सुयअन्नाणी ए अ

इंमज मतिअज्ञानीनीप रइंजांणवो विभंगज्ञानीनइं भगवन विभंग पणइं केतला कालनी स्थिति जांण वीः जघन्य एकसमयं च्यवनसमय पछी सम्यक्त्वलाभ विभंगज्ञानी नो अभावथकुं इं उत्कृष्टीनो कोइंक उणा तेत्रीस सागरो

वं चेव विभंगनाणी णं भंते विभंग णं भंते २ जहन्ने णं एक्कं समयं उक्को तेत्तीसं सागरोवमा

पमपूर्वकोडिअधिक स्थितिकुइं सातमी पृथ्वी अपर्तिष्ठान आदि नरकें वीइं जावो सातमी नरकें हवइं अंतरो कालनो होइ गौतम जघन्य अंतर्मुह

इं देसूणाइं पुव्वकोडी अब्भहियाइं आभिणिबोहियनाणी से णं भंते अंतरं कालओ जहन्ने

र्त्तनो अंतरो उत्कृष्टीतो अनंता कालनो अंतरो कुइं जोलगइं कोइंकउणो अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त नो अंतरो होइं इंमश्रुतज्ञाननो अंतरो अवधिज्ञाननो अंतरो

णं अंतो उक्को अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं एवं सुयनाणस्स वि ओही

इंमजमनपर्यवज्ञान नो अंतर कहैवो केवलज्ञानीनइं भगवन अंतरो सादि अपर्यवसितनइं लागइं अपर्यवसित माटइं अंतरो नहि

नाणीस्स वि मणपज्जवनाणस्स वि केवलनाणीस्स णं भंते अंतरं साइयस्स अपज्जवसियस्स

मतिअज्ञानीनइं भगवन अपर्यवसितनइं अंतरो नथी नअंतरो अनादि अज अनेज्ञानपांमवो नथी तेमाटें सादिसपर्य

णत्थि अंतरं मइ अन्नाणीस्स णं भंते अंतरं अणाइयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं साइया-

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य पुस्तकम्

वमितनइं जघन्यअंतर्मुहूर्त्तनो आंतरो होइ उत्कृष्टोतो काइंक अधिक छासठि सागरोपमनो आंतरो कहइं विचार मातमीनी उपेक्षाइं इम मतिअज्ञानिनइं परं श्रुतअज्ञानीनइं जाणवो

स्स सपज्जवसियस्स जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं साइरेगाइं एवं सुयअण्णाणिस्स वि

विभंगज्ञानीनइं भगवन केतला कालनो आंतरो जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनो आंतरो होइ उत्कृष्टो तो वनस्पतिनी परें अनंताकालनो आंतरो होइ हवइं अल्पबहुत्व कहइं छैं हवइं भगवन जीवनइं

विभंगनाणिस्स णं भंते अंतरं जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं वणस्सइकालो एएसि णं भंते जीवा

मतिज्ञानी नइं १ श्रुतज्ञानी नइं २ अवधि ३ मनपर्यव ४ केवलमइं ज्ञानी श्रुतअज्ञानी नइं विभंगज्ञानी ते एह मांके हार थकी थोडा घणा होइ

णं आभिणिबोहियनाणीणं सुयनाणीणं ओहि मण केवल मइ सुय अन्नाणि विभंगनाणीण य कयरे

हे गौतम सर्वथी थोडा मनपर्यवज्ञान साधुनइं होइं ते माटइं तेथकी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा होइं देवता नारकी तिर्यंचनइं होइं ते माटइं जाणवा मतिज्ञानी

रे० गो० सव्वथोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखेज्जगुणा आभिणिबोहियनाणी

श्रुतज्ञानी एबेसरिषा छइं मइनाणी तत्थ सुयनाणी इति वचनात् अनइं विशेषाधिक पणि छइं तेथकी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा मिथ्यादृष्टी घणा माटइं तेथकी केवलज्ञानी अनंतगुणा सिद्ध अनंता छइ

सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया विभंगनाणी असंखिज्जगुणा केवलनाणी अणं

मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी एबे सरिषा छैं जत्थ मइअन्नाणी तत्थ सुयअन्नाणी इति वचनात् अनइं अनंतगुणा … वनस्पति माहइं अनंता कह्याइं …

तगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा से तं अट्ठविहा सव्वजीवा अट्ठविहा पडिवत्ती

सर्वजीव कह्या एतलइं आठमी प्रतिपत्ति समाप्त थई तिहां जे ते नवेद सर्वजीव तेइं मइ कहैंछैं ८ केतला आचार्य इम कहै छैं नव कह्या ते केहा एकेंद्री १ बेंद्री २ तेंद्री ३

ती सम्मत्ता ८ ॥ तत्थ जे ते एवमाहंसु नवविहा सव्वजीवा ते एवमाहंसु तं० एगिंदिया बेंदिया

चउरेंद्री ४ पंचेंद्री ५ तिर्यंच योनिया प्रमुख ६ नारकी ७ मनुष्य ८ देवता ९ सिद्ध ९ हवें स्थिति कहइं छइं

तेंदिया चउरिंदिया पंचेंदियातिरिक्खजोणिया णेरइया मणूसा देवा सिद्धा एगिंदिए णं भंते

एकेंद्रीनइं हे भगवन एकेंद्रीपणइं केतला कालनी स्थिति होइ भगवंत कहइं हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति छइं उत्कृष्टी तो वनस्पतीनी परइं अनंतो काल होइं बेंद्रीनइं भगवन जघन्य अंतर्मुहूर्त्त

एगिंदिएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो० जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं वणस्सइकालो बेंदिए णं भंते जहन्नेणं अं

नी स्थिति उत्कृष्टो तो संख्याता कालनी स्थिति होइ कहैं छैं इम तेंद्रीनइं इम चउरेंद्रीनइं कहैं छैं नारकीनइं भगवन जघन्य तो दस सहस्र वरसनी स्थिति होइं उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरनी उपेक्षाइं

तो उक्कोसं संखिज्जकालं एवं तेइंदिए चउरिंदिए वि नेरइयाणं भंते जहन्नेणं दसवाससहस्सा

उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपम नी उपेक्षाइं पंचेंद्री तिर्यंच योनीयानइं भगवन जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति होइं उत्कृष्टी तो त्रिणि पल्योपमनी स्थिति पूर्व कोडि पृथक्त्व

स्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पंचेंदियाइं तिरिक्खजोणिए णं भंते जहन्नेणं अंतो उक्कोसेणं ति

अधिक होइं देवकुरुनी अपेक्षाइं एवं इम मनुष्यनें तिर्यंचनी परइं कहैं बोल देवतानी स्थिति जिम नारकीनी तिम जाणवी सिद्धनी स्थिति सादि अपर्यवसित नइं होइं छइं

न्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं एवं मणूसे वि देवा जहा नेरइए सिद्धे णं भंते

हवे आंतरो कहै छै एकेंद्रीनइं भगवन केतला कालनो आंतरो होइ ते आवंतर कहइ हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो तो बे सहस्र सागरोपमनो आंतरो

साई अपज्जवसिए एगिंदियस्सणं भंते अंतरं कालओ केवचिरं होइ गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दो सा

रो कइं संख्यात वरस अधिक कहइं त्रसनो काल तेएकेंद्री बेंद्रीनइं भगवन केतला कालनो आंतरो होइ हे गौतम

नो आंतरो कहइं तेसे सुदो सागर सहस्साइं प्रति वक्तव्यनात्

गरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं बेंदियस्सणं भंते अंतरं कालओ केवचिरं होइ गो

जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्तनो उत्कृष्टो तो वनस्पतीनो परइ अनंतो काल इम तेंद्रीनो आंतरो चउरेंद्रीनो आंतरो नारकीनो आंतरो पंचेंद्रीनो आंतरो ते उत्कृष्टो तो वन नो आंतरो होइं ए जाणवो ए जाणवो तेरे जाणवो आंतरो

जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं वणस्सइकालो एवं तेंदियस्सवि चउरंदियस्सवि नेरइय

जाणवो तिर्यंचयोनी आंतरो जाणवो मनुष्यनो आंतरो देवतानो आंतरो इम सरवनो आंतरो सिद्ध भगवन आंतरो काल थकी केतला

स्सवि पंचेंदियतिरिक्खजोणियस्सवि मणुस्सवि देवस्सवि सव्वेसिं अंतरं भाणियव्वं सिद्धि

कालनो जाणवो सादि अपर्यवसितनो इं आंतरो नथी हवे अल्पबहुत्व कहइ एहनइं भगवन एकेंद्रीनइं बेंद्रीनइं तेंद्रीनइं

सेणं भंते अंतरं कालओ सादीयस्स अपज्जवयस्स णत्थि अंतरं एतेसिणं भंते एगिंदियाणं बेंदिया

चउरेंद्रीनइं नारकीनइं पंचेंद्री तिर्यंचयोनीयानइं मनुष्यनइं देवतानइं सिद्धनै केहा २ थकी थोडा घणा होइ गौतम

णं तेइंदिय चउरिंदि नेरइयाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणं कयरे २

सर्व थकी मनुष्य थोडा छइं तेह थकी नारकी असंख्यातगुणा छै तेह थकी देवता असंख्यातगुणा छै तेह थकी पंचेंद्री तिर्यंचयोनीया

गो सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखिज्जगुणा पंचेंदियतिरिक्खजोण

असंख्यातगुणा छइं तेह थकी चउरेंद्री विशेषाधिक छइं तेह थकी तेंद्री विशेषाधिक छै तेह थकी बेंद्री विशेषाधिक छै

या असंखिज्जगुणा चउरंदीया विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिं

तेह थकी सिद्ध अनंतगुणा छै तेह थकी एकेंद्री अनंतगुणा वनस्पतीना जीव थकी अथवा नव प्रकारे सर्व जीव कह्या छइं ते केहा पहेला समयना नारकी

या सिद्धा अणंतगुणा एकेंदिया अणंतगुणा अहवा नवविहा सव्वजीवा पं तं पढमसम

अप्रथमसमयना नारकी प्रथमसमयना तिर्यंच अप्रथमसमयना तिर्यंच प्रथमसमयना मनुष्य प्रथमसमयना देवता अप्रथमसमयना देवता

यनेरइआ अपढमसमयनेरईया पढमसमए तिरिक्खा अपढमसमय मणुसा पढमसमए देवा

सिद्ध एह नव छइं स्थिति कहै छै प्रथमसमयना नारकीनइं भगवन केतली स्थिति कही गौतम एक समयनी स्थिति कही अप्रथमसमयना नारकीनइं भगवन केतली स्थिति कहीइं जघन्य तो दस सहस्र वरस एक समय ऊणी

सिद्धा पढमसमइं नेरइयाणं भंते २ गो एक्कं समयं अपढमसमयनेरयस्सणं भंते २ जहन्नेणं द

उत्कृष्टी तो तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कहइं नारकीनै हवे प्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानै भगवन केतली स्थिति होइ

सवाससहस्साइं समयऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समऊणाइं पढमसमय तिरि

जीवाभिगमः
३२२

एकसमयनी स्थिति होइ. अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानइं लगवनके जघन्यतो एकसमये ऊणो क्षुल्लक
न जीविति होइ. भवग्रहण करइ
रिक्खजोणियाणं भंते एक्कं समए अपढमसमयतिरिक्खजोणिआणं भंते जहण्णेणं खुड्डा
उत्कृष्टो वनस्पतीनी परइं अनंता काल. प्रथमसमयना मनुष्यनइं लगवनके एकसमयनी स्थि अप्रथमसम
नी स्थिति होइ. न जीविति होइ. ति होइ. मयना
गं भवग्गहणं समऊणं उक्कोसं वणस्सइकालो पढमसमयमणुस्से णं भंते एक्कं समय अपढम
मनुष्यनइं लगवनके कतलो जघन्यतो एकसमये ऊणो एक उत्कृष्टो त्रणि पल्योपमनी स्थिति पूर्वकोडि पृथक्त्व
स्थिति होइ. भवग्रहण करइ. इं अधिक होइ.
समयमणूसे णं भंते जहन्नं खुड्डागं भवग्गहणं समऊणं उक्कोसं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वको-
देवतानी स्थिति जिम नारकीनी कही. सिद्धनइं लगवनके कतला कालनी स्थिति सादि अपर्यवसित लगइ.
तिम जाणवी. कहीइ हे गौतम
डीपुहुत्तमब्भहियाइं देवे जहा नेरइए सिद्धे णं भंते सिद्धेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो सादि
कइं अपर्यवसित हवइं आंतरो कहे छइ प्रथम लगवनके आंतरो काल थकी के एकसमयनो अप्रथमसमयना
याइ. समयना नारकीनइं नलो होइ. आंतरो नारकीनइं
यस्स अपज्जवसिए पढमसमयनेरइयस्स णं भंते अंतरं कालओ एणं समयं अपढमस
जघन्य एकसमय ऊन दससहस्र आंतरो जा उत्कृष्टो तो समय ऊन तेत्रीस सागरोपमनो आंतरो होइ.
सवरसनो णवो
मयनेरइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं [illegible] उक्कोसेणं तित्तीसं सागरोवमा ३२२

इम देवतानइं जिम नारकीनइं कहीउं तिम जाणवो. प्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानइं लगवनका लथकी केतला कालनो आंतरो
इं स[illegible]णाइं एवं देवाणं जहा नेरइयाणं [illegible] पढमसमयतिरिक्खजोणिया-
जघन्य बइं क्षुल्लक भवसमइं ऊन करइ एतलो आंतरो. उत्कृष्टो वनस्पतीनी परइं अनंता कालनो आंतरो
सेणं भंते अंतरं कालओ जहन्नेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समऊणाइं उक्कोसेणं वणस्सइकालो
अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया कालथकी केतला कालनो आंतरो होइ. हे गौतम जघन्यतो एक क्षुल्लक भवनो समय अ
नना वेतक हइं. म धिक आंतरो होइ. उत्कृष्टो
अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्स णं भंते अंतरं कालओ गो जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं
तो सागरोपम सात पृथक्त्व कोडि कन अधिक. प्रथमसमयना मनुष्यनइं जिम पहेला समयना तिर्यंचयोनियानइं क
आंतरो होइ. होउं तिम कहेवो
समयाहियं सागरोवमसयपुहुत्तं साइरेगं पढमसमयमणुस्सस्स जहा पढमसमयति
अप्रथमसमयना मनुष्यनइं लगवनका जघथकी केतलो आंतरो होइ. जघन्यसमयाधिकइं क्षुल्लक भवनो आंतरो होइ
रिक्खजोणियस्स अपढमसमयमणूसस्स णं भंते अंतरं कालओ जहन्नेणं खुड्डागं भवग्ग
उत्कृष्टो वनस्पतीनी परइं अनंता कालनो आंत. प्रथमसमयना देवतानइं प्रथमसमयना नारकीनइं तिम जाणवो
रो होइ. आंतरो जिम
हणं समयाहियं उक्कोसेणं वणस्सइकालो पढमसमयदेवस्स जहा पढमसमयनेरइय

अप्रथमसमयनादेवतानि प्रथमसमयनानारकीनइंकह्यो सिद्धनइंभगवन आंतरोकेतलो सादिअपर्यवसित
आंतरोजिम तिमजाणवो होइ माटइंआंतरोनथी

स्स अपढमसमयदेवा स जहा अपढमसमयनेरईयस्स सिद्धस्स णं भंते अंतर सादीयस्स अ

एवंएहनोआरअल्पबहुत्वकहेछेवइंपहिलोप्रथमसम प्रथमसमयनानार प्रथमसमयनातिर्यंच प्रथमसमय
यनाअल्पबहुत्व१ बीजोअप्रथमसमयनाअ४ की१ २

पज्जवसियस्स णत्थि अंतरं एएसिणं भंते पढमसमयनेरईआणं पढमसमयतिरिक्खजोणि

नामनुष्य३ प्रथमसमयनादेवता४ एहमांकेहा२थकीथोडाघ हेगोतम सर्वथीथोडाअप्रथमसमयनामनुष्य
णाहोइ तावेतकहइ छइ१

याणं पढमसमयं मणुस्साणं पढमसमयदेवाणं कयरे २ गो सव्वथोवा पढमसमया मणु

तेथकीअप्रथमसमयनानारकीअसं तेथकीअप्रथमसमयनादेवताअसंख्यातगुं अप्रथमसमयनाति
ख्यातगुणाछइ२ णाछइ३ तेथकी र्यंच

सा अपढमसमयनेरईया असंखिज्जगुणा पढमसमयदेवा असंखिज्जगुणा पढमसा

अनंतगुणानिगोदअनंतावतीछेवेत्रीजोमिश्रअ एवइंएसूनइंभगवनअप्रथमसम अप्रथमसमयनानार
अल्पबहुत्वकहइछइ असंख्यातगुणासामा४ यनोनारकीनइं१ कीनइंएहमांकेहा२थकी

मयतिरिक्खजोणिया असंखिज्जगुणा एतेसिणं भंते पढमसमयनेरईआणं अपढमसा

थोडाघणासरिखाविशेषाधिकछेअप्रथमसमयनातिर्यंच२ अप्रथमसमयनामनु सर्वथीथोडाप्रथमसम
ष्य३ अप्रथमसमयनादेवता४ एहमांकेहाथोडाघणाकहेवा हेगोतम यनामनुष्यछइ१

मयतिरिक्खाणं अपढमसमयमणुस्साणं अपढमसमयदेवाणं कयरे २ गो सव्वथोवा अ

तेथकीअप्रथमसमयनानारकीअसंख्यातगुं तेथकीअप्रथमसमयनादेवताअसंख्यातगुणाछइ तेथकीअ
णाछइ प्रथमसमयनातिर्यंचअनंतगुणाछइ

पढमसमयमणुस्सा अपढमसमयनेरईआ असंखिज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंखिज्ज

निगोदअनंतावती एवइंत्रीजोमिश्रअल्पबहुत्व एहनइंभगवनप्रथमसमयनानारकीनइंअप्रथमसमयना
कहइछइ एवइं नारकीनइंएहमांकेहा२थकीथोडा

गुणा अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अणंतगुणा एतेसिणं भंते पढमसमयनेरईयाण

घणासरिखाविशेषाधिकछइइतिवारइंभग सर्वथीथोडाप्रथमसमयनानारकीका तेथकीअप्रथमसमयनाना
वेतकहइ हेगोतम जथोडावती रकी

य अपढमसमयनेरईयाण य कयरे २ गो सव्वथोवा पढमसमयनेरईया अपढमसमया

असंख्यातगुणाकालमां एहनइंभगवनप्रथमसमयनातिर्यंचयो अप्रथमसमयनातिर्यंचयोनियामांकेहा२
नथणावती तिञ्जानइं थकीथोडाघणा

यनेरईआ असंखेज्जगुणा एएसिणं भंते पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयतिरि

भगवंतकहेछे हेगो सर्वथीथोडाप्रथमसमयनाति तेथकीअप्रथमसमयनातिर्यंचयोनियाअनंतगुणाछेनि
तम र्यंचछइ१ गोदमांछइतेजतोतेमाटइ

क्खाणं कयरे २ गो सव्वथोवा पढमसमयतिरिक्ख अपढमसमयतिरिक्खजोणिया अ

इमनुष्यदेवतानोअल्पबहुत्वजिमनारकीनोकहियुंतिमजाणवो एहनेभगवनप्रथमसमयनानारकीनइं
एवेचोथोसमुदायनोअल्पबहुत्वकहेछेअइं

णंतगुणा मणुयदेवाणं अप्पाबहुयस्स जहा नेरईयाणं एएसिणं भंते पढमसमयने

अप्रथमसमयनानारकीनइं १ प्रथमसमयनातिर्यचनइं ३ अप्रथमसमयनातिर्यचनइं ४ प्रथमसमयनामनुष्यनइं ५ अप्रथमसमयनामनुष्यनइं ६

इयाणं अपढमसमयनेरइयाणं पढमतिरि अपढमतिरि पढमसमयमणुस्साणं अपढमसम

प्रथमसमयनादेवतानइं ७ अप्रथमसमयनादेवतानइं ८ तथा वली सिद्धनइं ९ एहमांहे केहा थकी घणा होइं सर्वथीथोडा प्रथम

यमणुस्साणं पढमसमयदेवाणं अपढमसमयदेवाणं सिद्धाणइ कयरे २ गो सव्वत्थोवा पढम

समयनामनुष्य १ तेथकी अप्रथमसमयनामनुष्य असंख्यातगुणा छइं समूर्छिमनालेवाथकी २ तेथकी प्रथमसमयनानारकी असंख्यातगुणा छइं ३

समयमणुस्सा अपढमसमयमणुस्सा असंखिज्जगुणा पढमसमयनेरइआ असंखेज्जगुणा

प्रथमसमयनादेवता असंख्यातगुणा ४ तेथकी प्रथमसमयनातिर्यच असंख्यातगुणा छइं ५ तेथकी अप्रथमसमयनानारकी असंख्या

पढमसमयदेवा असंखिज्जगुणा पढमसमयतिरियसंखिज्जगुणा अपढमसमयनेरइ

तगुणा ६ तेथकी अप्रथमसमयनादेवता असंख्यातगुणा छइं ७ तेथकी सिद्ध अनंतगुणा छइं ८ तेथकी अप्रथमसमयनातिर्यंच अनंतगुणा

आ असंखेज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंखिज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा अपढमसमयति

निगोदमांहइं ते ९ एतलइं नवविधे सर्वजीव पन्नताक हेता कला नवविधनी प्रतिपत्ति समाप्त थई ९ हवे दश तिहां के लता एक आचा

रिक्खा अणंतगुणा से तं नवविहा सव्वजीवा ० ० नवविहापडिवत्तीसम्मत्ता ९ तत्थणं

र्य इम कहे छइं दसे भेदे सर्व जीव कह्या छइं जिम कह्या छे तिम कहे छइं प्रथवीकाय १ अपकाय २ तेउकाय ३

जे ते एवमाहंसु दसविहा सव्वजीवा पन्नत्ता ते णं एवमाहंसु तं पुढविकाइया आउकाइया ते

वाउकाय ४ वनसपतीकाय ५ तथा वली बेइंद्री ६ तेइंद्री ७ चउरेंद्री ८ पंचेंद्री ९ अनेंद्री सिद्ध १०

उकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया बेंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदीया अणिंदिया

हवइं कायस्थिति कहइं छइं प्रथवीकायनइं भगवन प्रथवीकायपणइं केतला कालनी स्थिति रहइं इति वारे भगवंत कहइं हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टी तो असंख्याता काल

पुढविकाइए णं भंते पुढविकाइए त्ति कालओ केवच्चिरं होइ गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असं

नी स्थिति होइ ६ काल थकी असंख्याती उत्सर्पिणी काल होइं स्थिति नी क्षेत्र थकी असंख्याता लोकाकाशप्रदेश प्रमाण छइं इम अपकाय तेउ वाउ नइं पिण कहेवा

खिज्जं कालं असंखिज्जाउ उसप्पिणी उसप्पिणी कालउ खेत्तउ असंखेज्जाउ लोया उ एवं आउ

वनसपतीकायनें केतला कालनी स्थिति होइं हे गौतम जघन्यतो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टी तो अनंता कालनी स्थिति होइं बेंद्रीनी हे भगवन केतला काल नी स्थिति

तेउवाउ वणस्सइकाइए णं भंते २ गो जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो बें

जघन्यतो अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्टी तो संख्याता काल नी होइं इम तेंद्रीनें कहेवो इम चउरेंद्रीनें कहेवो पांचेंद्रीनइं भगवन केतला काल नी स्थिति

दिए णं भंते जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं एवं तेंदियवि चउरिंदिएवि पंचिंदिए णं भंते र

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्
MEMORIAL

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्
MEMORIAL

हे गो जघन्यतो अ उत्कृष्टीतो काइंक अधिक हजार साग नइं लगावनके तलो का सादि अपर्यवसितनइं हवे पृ
तेम तर्मुहूर्त्तनी रोपमनी थितिहोइ अनेंद्रीसिद्ध उनी थितिहोइ गइं जो लव्या थवी

गो जह अं॰ उ॰ को सागरोवम सहस्सं साइरेगं अणिंदिए णं भंते २ साइए अपज्जवसिए पु

काइयादिकनो अंतरो पृथ्वीकायनेंलगवनस्पतीनरोकेत जघन्य अंतर्मुहू उत्कृष्टे तो वनस्पतीनी पर्इं
कहइंछेइं जो कालनो होइ हे गोतम र्त्तनो अनंतो कालनो आंतरो होइ

ढविकाइयस्से णं भंते अंतरं कालउ केविचिरं होति गो जह अंतो उ॰ को संवणस्सइ कालो

इम अपकायनें आ तेउकाय वाउकाय इमज क वनस्पती कायन तलो कालनो आं आंजीगें पृथ्वीका
तरो कहेंचो नइं नइं हेंवा इं लगावनके तरो होइ यनी थिति

एवं आउकाईयस्स तेउवाउकाइयस्स वि वणस्सइकाइयस्से णं भंते अंतरं कालउ जाव

कहीतेतलो आंतरोवन वेंद्रीन तेंद्रीन चउरंद्रीन पंचेंद्रीन एएआरनो आंतरो जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्तनो
स्पतीनइं होइ इ इ इ इ आंतरो जो लवा

पुढविकाईयस्स संचिट्ठणं बिंअतियचउरंदियपंचेंदियाणं एएसिं णं चउण्ह वि अंतरं

उत्कृष्टो तो वनस्पतीनी परें अनंत डी सिद्धनें आंतरो नथी आंतरानो का हे गोतम सादि अपर्यवसितमा
ता कालनो आंतरो होइ अनें अपर्यवसित माटइं ल टइं

जहा ओ सोहो वणस्सइ कालो अणिंदियस्स णं भंते २ अंतरं कालउ २ गो सादीयस्स अ

सिद्धनइं आंतरो हवइं अल्प बहुत्व कहेंछइं हवइं एहनें लगावु न पृथ्वी अपन तेउनें वाउ वनस्पतीनइं
नथी कायनें इ नइं ५

पज्जवसि॰ स्सणत्थि अंतरं ए॰ णाअकु एएसिं णं भंते पुढविकाइयाणं आउतेउवाउवण

बेंद्रीनइं ६ तेंद्रीनइं ७ चउरंद्रीनइं ८ पंचेंद्रीनइं ९ अनेंद्रीसिद्धनइं १० एहमां केहा २ थकी थोडा सर्वथी थोडा
घणा होइ हे गोतम ते पंचें

स्सइ बेंदि॰ तेंदियाणं चउरिंदीयाणं पंचेंदियाणं अणिंदियाण कयरे २ गो सव्वथोवा पं

द्रीछइं तेथकी चउरंद्री विशेषा तेथकी तेंद्री विशेषाधि तेथकी बेंद्री विशेषाधिक छइं तेथकी तेउकाय असंख्या
धिक छइं २ क छइं ३ ४ तगुणी छइं ५

चेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिया तेउकाइ

तेथकी पृथ्वीकाय विशेषाधिक छें ६ तेथकी अपकाय विशे तेथकी वाउ विशेषा तेथकी अनेंद्री सिद्ध अ
षाधिक ७ धिक ८ नंतगुणा छइं ९

या असंखिज्जगुणा पुढविकाइया विसेसाहिया आउ विसेसा वाउ विसेसा अणिंदि

तेथकी वनस्पतीकाय अनंतगुणी छइं १० अथवा दसेसें दसर्वजीव कह्या तेकेहा छइं प्रथमसम

या अणंतगुणा वणस्सइकाइया अणंतगुणा अहवा दसविहा सव्वजीवा पं तं पढ

यनानारकी अप्रथमसमयनानारकी प्रथमसमयनातिर्यंच अप्रथमसमयनातिर्यंच ४ प्रथमस
१ २ ३

मसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया पढमसमयतिरिक्खा अपढमसमयति

मयनामनुष्य ५ अप्रथमसमयनामनुष्य ६ प्रथमसमयनादेवता ७ अप्रथमसमयनादेवता ८

रिक्खा पढम॰ समयमणुसा अपढमसमयमणुस्सा पढमसमयदेवा अपढमसमय

प्रथमसमयनासिद्ध १ अप्रथमसमयनासि द्धकायस्थितिक प्रथमसमयनानारकीनइंभगवनकालथ
द्ध २० हे भइ कीकेतलाकालनीथितिहोइ हेगोतम
जीवाभिगम ३२७ देवा पढ[illegible] सिद्धा अपढम[illegible]सिद्धा पढमसमय[illegible] भंते[illegible]केवचिरंकालठिईकेवि
जघम[illegible] एकसमय अप्रथमसमयनानारकीनेभगवनजघम[illegible] एकेसमयेदसहस
नीस्थितिहोइ वरसनीस्थितिहोइ[illegible]
ठिईहोइ गो जहन्ने[illegible]एक्कंसमयंअपढमसमय[illegible] भंते जहन्नेणंदसवासा
उत्कृष्टीस्थितितोतेत्रीससागरोपमनीमाथव प्रथमसमयनातिर्यंचयोनियानइंभगवनजघम एक
तीनीजपेक्हाइं समयनीस्थितिहोइं
सहस्साइंसमऊणाइंउक्कोसंतेत्तीसंसागरोवमाइंसमऊणाइं पढमसमयतिरिक्खजो
अप्रथमसमयनातिर्यंचनइंजघमस्त्रोएकसमयऊनक्षुल्लकभव उत्कृष्टीतोवणस्सइकालोवनस
नीस्थितिहोइं तिनीपरइंअनेताकालनीथितिहोइ
णिएणंभंते २ एक्कंसमयंअपढमतिरिक्खजहन्नेणंखुड्डागंभवग्गहणंसमऊणं उक्कोसं
प्रथमसमयनामनुष्यनइंभगवन होइएकसमय अप्रथमसमयनामनुष्य कालनीथितिहोइ जघम
केतलाकालनीथिति नीथितिहोइं नइंभगवनकेतला तोसमये
वणस्सइकालो पढमसमयमणूसेणंभंते २ एक्कंसमयंअपढमसमयमणुसेणंभंते ज
ऊनएकक्षुल्लकभवनी उत्कृष्टत्रिणपल्योपमनीथितिपूर्वकोडिपृथक्त्व देवतानिजिमथिति
स्थितिहोइं अधिकस्थितिहोइदेवकुरुक्षेत्रनीअपेक्षाइं कहीतिमनार
हन्नेणंखुड्डागंभवग्गहणं[illegible]उक्कोसेणं[illegible]वमाइंपुव्वकोडिपुहुत्तमब्भ

कीनीथिणजोणवी पहेलासमयनासिद्धनेंभगवनए अप्रथमसमयनासिद्धनेंभग कही सादिअ
कसमयनीथितिहोइं वनकेतलाकालनीथिति पर्यवसि
हियाइं[illegible]सिद्धेणंभंते[illegible]समयंअपढमसमयसिद्धेणंभं
तइंस्थितिहोइ हवेअंतरकहइछइप्रथमसमयनानारकीनइंभगवनका वरसअंतर्मुहूर्तइंकरीअ
लथकोकेतलोअंतरोहोइं जघमतोदससहस धिकएतलोअंतरो
ते[illegible]अपज्जवसिए पढ[illegible]यस्सणंभंतेअंतरंकालओ २ जहन्नेणंदसवा
होइउत्कृष्टतोअनंतोकालवनस्पतिनीपरइंल अप्रथमसमयनानारकीनइंभ
वजीनरकपणइंआवइं नेतोकालनोअंतरोहोइं गवन
ससहस्साइंअंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसंवणस्सइकालोयअपढमसमयनेरइ
कालथकोकेतलाकालनोअंतरोहोइं हेगोतम जघम अंतर्मुहूर्तक्षुल्लकभवादिकनो जतोअंतरोहोइं
उत्कृष्टोतोवनस्पतीनीपरेंअनंतोका पहेलासमयना
यस्सणंभंतेअंतरंकालओकेवचिरंहोइ गो जहन्नं अंतोमुहु उक्कोसंवणस्सइकालोपढमसम
तिर्यंचनइंकालथकोकेतलाकालनोअं बइक्षुल्लकभवनेंसमउणअंतरो उत्कृष्टोतोवनस्पतीनीपरइंअ
तरोहोइ हेगोतम होइं नंतोकालनोअंतरोहोइं
[illegible]तिरिक्खअंतरंकालओकेवचिरंहोइ गो दो[illegible]भवग्गहणाइंसमऊणाइं उक्कोसंव
अप्रथमसमयनातिर्यंचयोनियानइंभगवन जघमएकक्षुल्लकभवथकीसमयअधिकअंतरोहोइं
केतलोअंतरोहोइं
णस्सइ[illegible]अपढमसमयतिरिक्खजोणियस्सणंभंते[illegible] जहन्नेणंखुड्डागंभवग्गहणंस

उत्कृष्टोतोसागरोपमसत पृथक्त्व काइंक अ प्रथमसमयनामनुष्यनइंआंतरोकालथकीकेतलाकाल
धिकहोइ नोआंतरोहोइ

जीवाभिगमः २२८ मयाहियं उक्कोसं सागरोवमसयपुहत्तं साइरेगं पढमसमयमणुस्सस्सणं भंते अंतरं

जघन्यतोबइंक्षुल्लकभवग्रहणसमयन्यू उत्कृष्टोतोवनस्पतिनीपरइंअने अप्रथमसमयनामनुष्य
नेआंतरोहो ताकालनोआंतरोहोइ नइंजगवनकालथकी

कालतो जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं समऊणाइं उक्कोसं वणस्सइकालो अपढमसमय

केतलाकालनोआं समयेंअधिकक्षुल्लकभव उत्कृष्टोतोवनस्पतीनीपरेंअ देवतानोआंतरो
तरोहोइजघन्यतो वनोआंतरोहोइ नंताकालनोआंतरो जिमनारकी

मणुस्सस्सणं भंते अंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसं वणस्सइकालो देवस्सणं

नोतिमजा प्रथमसमयनासिद्धनइंअंतरोनथीरजी अप्रथमसमयनासिद्धनेकालथकीभगवनकेतलोआं
णवो सिद्धनथीपडवोतेमाटइ तरोहोइत्तिवारइंभगवंत

तरं जहा नेरइयस्स पढमसमयसिद्धस्सणं भंते केवइयं अंतरं अपढमसमयसिद्धस्सणं भंते

श्रीवीरविहरूकहइंबइ हेगोतम सादिअपर्यवसितमाटइंआं हवइंअल्पबहुत्वकहेंछेइंआरअल्पबहु
तरोनइंनही त्वकहेंछेइ प्रथमसमयनो १ अप्रथमस

२ अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ गो साईयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अप्पाबहुएणं एएसिणं

मयनो २ प्रथमअप्रथमसमयनो ३ सर्वसमुदायनो ४ यनातिर्यंचयोनीया प्रथमसमयनाम प्रथमसमय
अल्पबहुत्वकहेंछेइहवइंभगवनप्रथमसमयना ना नइं २ नुष्यनइं ३ नादेवतानइं ४

भंते पढमसमयनेरइयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमयमणुस्साणं पढम २२९
रकीनइं १ प्रथमसम

प्रथमसमयनासिद्धनइं ५ एहमेंकेहाघणा सर्वथीथोडाप्रथमसमयनासिद्धएककसमें तेथकीप्रथमसमय
थोडा भगवंतकहें हेगोतम अठएकेंसमयेंपामीइंतेमाटइं १ नामनुष्यअसंख्या

समयदेवाणं पढमसमयसिद्धाणं कयरे २ गो सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा पढमसमय

तगुणासम्मूर्छिमनालेवाथ तेथकीप्रथमसमयनानारकीअसंख्यातगुणा ३ एहनी प्रथमसमयनादेवता
कीअसंख्यातगुणा २ भावनापहेलाअधिकारथीजाणवीतेथकी असंख्यातगुणानइं

मणुस्सा असंखेज्जगुणा पढमसमयनेरइया असंखेज्जगुणा पढमसमयदेवा अ

तेहथकीप्रथमसमयनातिर्यंचअसंख्यातगुणामामाटेंगतित्रणिनाआ असंख्यातगुणाकह्याहवेंअप्र
वीपहेंजापहेलेंसमयेंवर्त्तइं पहेलेंसमयेंतिर्यंचयोनीतेकहीइंतेमाटें प्रथमसमयनोअल्पबहुत्वकहें

संखिज्जगुणा पढमसमयतिरिक्खजोणिया असंखिज्जगुणा १ एएसिणं भंते अपढम

छइं एहनेभगवनअप्रथमसमयनानारकी १ यनामनुष्य ३ जोणवाथोडा अप्रथमसमयनादेवता
अप्रथमसमयनातिर्यंच २ अप्रथमसम णाइंकह्या ४

समयनेरइयाणं अपढमसमयतिरिक्खअपढमसमयमणूसाणं अपढमसमय

अप्रथमसमयोनासिद्धएहमोकेहा २ थकीथोडा सर्वथीथोडाअप्रथमसमयनामनु तेथकीअप्रथमस
घणाहोइ हेगौतम ष्यहोइ १ मयना

देवाणं अपढमसमयसिद्धाणं य कयरे २ गो सव्वत्थोवा अपढमसमयमणुसा अपढ

नारकीअसंख्यातगुणाहइ २ तेथकीअप्रथमसमयनादेवतानाअसं तेथकीअप्रथमसमयनासिद्धअ
ख्यातगुणाहइ ३ नंतगुणा ४

मसमयनेरइया असंखिज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंखेज्जा अपढमसमयसिद्धा

तेथकी अप्रथमसमयना तिर्यंच अनंत गुणा ५ जोणवा हवइ त्रीजो अल्पबहुत्वक हइ छइ एहनइ भगवन प्रथमसमयना नारकी अप्रथमसमयना नारकी

अनंतगुणा अपढमसमयतिरिक्ख अनंतगुणा २ एएसि णं भंते पढमसमयनेरइयाणं

एहमांके कुण २ थोडा घणा हे गौतम सर्वथी थोडा पहिला समयना नारकी १ तेथकी अप्रथमसमयना नारकी असंख्यातगुणा छइ २

अपढमसमयनेरइयाणं २ जो सव्वत्थोवा पढमसमयनेरइया अपढमसमयनेरइया

एहनइं भगवन प्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया एहमांके कुण २ थकी थोडा घणा होइ भगवंत कहइ

असंखिज्जगुणा एएसि णं भंते पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं अपढमसमयतिरिक्ख

हे गौतम सर्वथी थोडा प्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया होइ तेथकी अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनिया अनंतगुणा होइ निगोद

जोणियाण य कयरे २ जो सव्वत्थोवा पढमसमयतिरिक्खजोणिया अपढमसमयति-

नाजेलाथकां २ एहनइं भगवन प्रथमसमयना मनुष्यनइं अप्रथमसमयना मनुष्यनिके कुण २ थकी थोडा घणा होइ भगवंत कहइ हे गौतम

रिक्खजोणिया अणंतगुणा एएसि णं भंते पढमसमयमणुस्साणं अपढमसमय कयरे २

सर्वथी थोडा प्रथमसमयना मनुष्य छइ तेथकी अप्रथमसमयना मनुष्य असंख्यातगुणा छइ जिम मनुष्यनि मं देवतानें जोणवा

जो सव्वत्थोवा पढमसमय[illegible] अपढमसमयमणुस्सा असंखिज्जगुणा जहा मणुस्सा-

एहनइं भगवन अप्रथमसमयना सिद्धनें अप्रथमसमयना सिद्धनइं एहमांके कुण २ थकी थोडा घणा छइ भगवंत कहइ हे गौतम

तहा देवा वि एएसि णं भंते पढमसमयसिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण य कयरे २ अप्पा-

सर्वथी थोडा प्रथमसमयना सिद्ध एकसो आठ तेथकी अप्रथमसमयना सिद्ध असंख्यातगुणा हवे चोवीस सिद्धनइं पांच मार्गणाइं बोलकरा ये अल्पबहुत्वके हइ छै

वा ४ जो सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा अपढमसमयसिद्धा अणंतगुणा एएसि णं भंते प-

एहनइं भगवन प्रथमसमयना नारकीनइं १ अप्रथमसमयना नारकीनइं २ प्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानें ३

ढमसमयनेरइयाणं अपढमसमयनेरइयाणं पढमसमयतिरिक्खजोणियाणं

अप्रथमसमयना तिर्यंचयोनियानइं ४ प्रथमसमयना मनुष्यनइं ५ अप्रथमसमयना मनुष्यनइं ६

अपढमसमयतिरिक्खजोणियाणं पढमसमयमणुस्साणं अपढमसमयमणुस्साणं प-

प्रथमसमयना देवतानइं ७ अप्रथमसमयना देवतानइं ८ प्रथमसमयना सिद्धनइं ९ अप्रथमसमयना सिद्धनइं केहा २ थकी थोडा घणा छै होइ भगवंत

ढमसमयदेवाणं अपढमसमयदेवाणं पढमसमयसिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण य क-

कहइ हे गौतम सर्वथी थोडा प्रथमसमयना सिद्ध एकसो आठ प्रमाण तेथकी पहिला समयना मनुष्य असंख्यातगुणा ३ तेथकी अप्रथमसमयना मनुष्य असंख्यातगुणा होइ

यरे २ जो सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा पढमसमयमणुस्सा असंखिज्जगुणा अपढमसमयमणुस्सा-

पहेलासमयनानारकीअसंष्या तेथकीप्रथमसमयनादेवताअसंष्यातगुणाहोइ तेथकीप्रथमसमयना
तगुणाहोइ तिर्यचअसंष्यातगुणाछै घणाकालमाटइ असंष्याताकह्या

जीवाभि: असंषिज्जगुणा पढमसमयनेरइआ असंखेपढमसमयदेवा असंखेज्जपढमसमयतिरि
३३० तेथकी अप्रथमसमयनानारकी असंष्यातगुणाछेत्र अप्रथमसमयनादेवताअसंषातगुणाआरनिका
नाविस्तारमाटइ तेथकीवली यनासेहेलेतइथकइ तेथकी

रखा असंखेज्ज अपढमसमयनेरइया असंषिज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंषिज्जा
अप्रथमसमयनासिद्धअनंत तेथकीअप्रथमसमयनातिर्यचअनंतगुणा निगोद जालवीलतेद सेत
गुणाजाणवा माहेलेतेथकेतावनासर्वथावजीवरे देकरीसावतेइ

गुणा पढमसमयसिद्धा अणंतगुणा अपढमसमयतिरिक्खा अणंतगुणा सेत्तं विहा
जीवकह्याकहा एतलेसिद्धसहितसर्वजीवना एतलाइजीवनोअधिगमकह्योश्रीसुधर्मा इतिश्री
इहांसेदसविधकह्या स्वामीइश्रीजंबूस्वामीआगलइसर्वअर्थकह्यो जीवाभि

जीवापन्नत्ता सेत्तं सव्वजीवा दसविहापन्नत्ता सेत्तं जीवाभिगमे सेत्तं सव्वसद्धा इतिश्री
गमनामात्रतीयउपांग कारकह्यावइप्रतिपत्तिछकीदसलगइसंसारीअसंसारीवइअधिकारइवीस
नइविषइ वेइअर्थ वृत्तिपत्तिकहीवर्त्तताइकरीमइषित्रिष्यनइसमफाववावर्त्तकोधीपंडितेअफ

तृतीयउपांग जीवाभिगमाभिधानेसूत्रसमाप्तमिति श्रेयोस्तुः ग्रंथसंख्याश्लोकसंख्यास्
धजाणीशुद्धकरवीकसर्वपंडितनासेवकछइतेमाटेअशुद्धहोइतेषमयोकमर्षिवुइमजीवाभिकह्नोकह
ताहवा ग्रंथाग्रं ४७०० संवत १८८७ नोवर्षेशाके १६८२ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे अस्वनमासे शुक्ल

ग्रंथाग्र ४७०० भइं संवत् १८८७ वर्षे साके १६८२ प्रवर्त्तमाने: मासोत्तम मासे अस्वनमासे शुक्ले ३३०

पक्षे दसमी तिथौ रवीवासरे लिषीतंमया श्रीमहावीरजिनेंद्रचरणप्रसादात् जइकल्याणः

पक्षे दसमी तिथौ रवीवासरे लिषितंमया श्रीमहावीरजिनेंद्रचरणप्रसादात् सदस्तु यातःवः
यथाछनाइमयालि जेहचुंउपरलुपरतीइदीवुतेहवुंमिंपितजष्युलैतेहमोलषलोअशुद्ध १ वलीपुस्तिकाइ
खितास्ति अशुद्धलष्याएहहोयतोफरुनइ दोषदेसोमां मकहेछैवइ

याद्रशं पुस्तकं दृष्ट्वा ताद्रशं लिषितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते १ जलाइ
जेमुफनेपांणीथी अलगीराषयोवलीसिथल पणकेहाथिमदेयो इसपुस्तिकालिषनारनइ १ इतिश्री
नथ्यासेलथी बांधणाथीषणिराषयो फरुनइ करहइवइइसोपमा वे:

रक्षेत्तैलाद्रक्षेत् रक्षेत्सिथलबंधनात् परहस्तगताद्रक्षेत् एवंवदतिपुस्तिका १ इतिश्री

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

जिवाभि
गमसू·प
३३१

का०१ प०१

३३१